बुनियाद

विश्वास में निर्माण

अध्ययन पुस्तिका के साथ

बुनियाद

विश्वास में निर्माण

मसीह यीशु, चट्टान पर नींव डालना

लूका 6:48

द्वारा

पास्टर ड्रू फ्रीमेन

का प्रकाशन

विलेज मिनिस्ट्रीज़ इन्टरनेशनल

www.villageministries.org

© 2009 by
Village Ministries International, Inc. (VMI)

VMI authorizes any individual to copy and distribute these materials and use them for the purpose of teaching others about Christ and the Word of God; however, no one may alter, amend or make any changes to the text (regardless of how minor such changes may be). No one may charge any individual or groups of individuals for the use of these materials, it being understood that VMI has a policy of grace and does not charge for the use of its materials.

Any copying, retransmission, distribution, printing, or other use of Foundations must set forth the following credit line, in full, at the conclusion of the portion of Foundations that is used. No one may charge any individual or groups of individuals for the use of these materials, *nor may any "suggested offering" be requested.*

Copyright © 2001 Village Ministries International, Inc. Reprinted with permission. Foundations is a publication of Village Ministries International, Inc. www.villageministries.org

All Scripture quotations taken from the Hindi OV Bible from Bible Society of India.

Partners in Equipping
A Project of Evangelical Fellowship of India (EFI)
New Delhi, India
Phone: +91-11- 41618219
E-mail: partnersinequipping@gmail.com

Printed in India

विषय सूचि

आभार पूर्ति		**8**
प्रस्तावना		**8**
अध्याय 1:	**आरम्भ करना**	9
भाग 1	व्यक्तिगत तैयारी	10
भाग 2	बाइबल	12
भाग 3	ऐतिहासिक पुनरावलोकन	14
भाग 4	काल क्रमानुसार अवलोकन	17
भाग 5	बाइबल अध्ययन की तैयारी	21
अध्याय 2	**पुराने नियम का सर्वेक्षण**	**25**
	परिचय	26
भाग 1	व्यवस्थाः प्रथम पांच पुस्तकें	27
	उत्पत्ति	27
	निर्गमन	28
	लैव्यव्यवस्था	30
	गिनती	32
	व्यवस्थाविवरण	33
भाग 2	**ऐतिहासिक पुस्तकें**	**35**
	यहोशू	35
	न्यायियों	36
	रूत	38
	1 शमूएल	39
	2 शमूएल	41
	1 राजा	42
	2 राजा	43
	1 इतिहास	46
	2 इतिहास	47
	एज्रा	50
	नहेम्याह	51
	एस्तेर	52
भाग 3	**कविताओं की पुस्तकें**	**54**
	इब्रानी कविता	55
	अय्यूब	56
	भजन संहिता	58
	नीतिवचन	64
	सभोपदेशक	66
	श्रेष्ठगीत	68
भाग 4	**बड़े भविष्यद्वक्ता**	**69**
	यशायाह	71
	यिर्मयाह	73
	विलापगीत	75
	यहेजकेल	77
	दानिय्येल	78
भाग 5	**छोटे भविष्यद्वक्ता**	**80**
	होशे	81
	योएल	83
	आमोस	84

	ओबद्याह	85
	योना	86
	मीका	86
	नहूम	88
	हबक्कूक	89
	सपन्याह	90
	हाग्गै	91
	जकर्याह	92
	मलाकी	93
अध्याय 3	**नये नियम का सर्वेक्षण**	**95**
	परिचय	96
भाग 1	ऐतिहासिक पुस्तकें	100
	मत्ती	101
	मरकुस	104
	लूका	106
	यूहन्ना	108
	प्रेरितों के काम	112
भाग 2	पौलुस की पत्रियां	114
	रोमियों	117
	1 कुरिन्थियों	119
	2 कुरिन्थियों	122
	गलातियों	123
	इफिसियों	124
	फिलिप्पियों	125
	कुलुस्सियों	126
	1 थिस्सलुनीकियों	127
	2 थिस्सलुनीकियों	128
	1 तीमुथियुस	129
	2 तीमुथियुस	130
	तीतुस	131
	फिलेमोन	132
भाग 3	सामान्य पत्रियां	133
	इब्रानियों	133
	याकूब	135
	1 पतरस	137
	2 पतरस	138
	1 यूहन्ना	139
	2 यूहन्ना	141
	3 यूहन्ना	142
	यहूदा	142
भाग 4	भविष्यवाणी की पुस्तक	144
	प्रकाशितवाक्य	144
अध्याय 4	**अनुवाद के आधारभूत सिद्धान्त**	**147**
	परिचय	148
भाग 1	नियम 1 : तथ्यों को ढूंढकर प्राप्त करना	149
	सिद्धान्त 1: परमेश्वर के तत्व का अध्ययन	149
	सिद्धान्त 2: मसीह के द्वारा प्रगट किये मार्ग की खोज करना	150

भाग 2	नियम 2 : तथ्यों को समझने की खोज	154
	सिद्धान्त 3: पहचानना कि प्रकाशन उन्नतिशील है	154
	सिद्धान्त 4: सही/वास्तविक अनुवाद करना	155
	सिद्धान्त 5: विशेष बातों पर ध्यान देना	156
	सिद्धान्त 6: प्राथमिक हिस्सों का अध्ययन	157
	सिद्धान्त 7: मानव की इच्छा शक्ति को पहचानना	158
	सिद्धान्त 8: वाचाओं का स्मरण	158
भाग 3	नियम 3 : बुद्धिमान बनें	163
	सिद्धान्त 9: भिन्नताओं को देखें	163
	सिद्धान्त 10: संदर्भ पर ध्यान दें	165
	सिद्धान्त 11: तुलनात्मक अनुवाद करें	166
	सिद्धान्त 12: मेल–मिलाप खोजें	167
	सिद्धान्त 13: वितरण पर ध्यान दें	168
	सिद्धान्त 14: भविष्यवाणी से सावधान रहें	170
भाग 4	नियम 4 : मसीही जीवन जीने की खोज करना	172
	सिद्धान्त 15: सही उपयोग	172
अध्याय 5 :	**परमेश्वर के व्यक्तित्व की धार्मिक शिक्षाएं**	**177**
भाग 1	त्रिएकता	178
भाग 2	परमेश्वर के नाम	183
भाग 3	परमेश्वर पिता	186
भाग 4	परमेश्वर पुत्र	193
भाग 5	परमेश्वर पवित्र आत्मा	205
अध्याय 6	**परमेश्वर के उत्पादन की धार्मिक शिक्षाएं**	**214**
भाग 1	सृष्टि	216
भाग 2	स्वर्गदूत	217
भाग 3	मनुष्य	223
भाग 4	स्वर्गदूतों का संघर्ष	234
अध्याय 7:	**परमेश्वर की योजनाओं का सिद्धान्त**	**235**
भाग 1	प्रकाशनः बाइबल	236
भाग 2	समस्याः पाप	237
भाग 3	समाधानः उद्धार	240
भाग 4	सुरक्षाः परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं	244
भाग 5	भविष्यकालः भविष्यवाणी	247
अध्याय 8:	**परमेश्वर के अभिप्राय की धार्मिक शिक्षाएं**	**251**
भाग 1	व्यक्तिगत मसीही जीवन	252
भाग 2	सम्मिलित मसीही जीवन	262
अध्याय 9:	**कार्यांविन्त करना/लागू करना**	**267**
	परिचय	268
भाग 1	पुस्तक से परिचित होना	269
भाग 2	पुस्तक की रूपरेखा बनाना	270
भाग 3	अपने अध्ययन क्षेत्र को छोटा बनाना	272
भाग 4	सम्बन्धों को देखना	274
भाग 5	अप्रत्यक्ष सन्दर्भों का विश्लेषण	277
भाग 6	अपने अध्ययन का विस्तार करना	279
भाग 7	बिन्दुओं का निर्माण	282
सम्पादकीय नोट		**283**
उत्तर		**284**
ग्रन्थ सूचि		**301**

आभार पूर्ति

बुनियाद को विलेज़ मिनिस्ट्रीज इंटरनेशनल के निर्देश में विकसित किया गया है। आरम्भ ही से वी.एम.आई. का कार्य या उद्देश्य संसार के दूर–दराज़ ग्रामीण क्षेत्रों में मसीह यीशु के सुसमाचार को पहुंचाना है। अक्सर मिशनरियों की गतिविधियों के लिये सुअवसरों की खिड़की बहुत थोड़े समय के लिये होती है। हमारी संस्था का लक्ष्य है कि ऐसे काबिल लोगों की खोज करें जो वही के रहने वाले हों जिन्हें उचित बाइबल शिक्षा से सुसज्जित किया जा सके कि जब विदेशियों का इसमें शामिल होना बन्द हो जाये तो वे इस कार्य को जारी रख सकें–इस प्रकार जो महान आज्ञा हमारे उद्धारकर्ता ने हमें दी है उसकी पूर्ति कि वे "चेले बनाकर" कर सकें।

अध्याय 2 एवं 3 को जे हेम्पटन कीथले III की अनुमति से शामिल किया गया है ***पुराने और नये नियम का संक्षिप्त सर्वेक्षण।*** श्री कीथले का पूर्ण किया गया कार्य इन्टरनेट पर बाइबल आधारित फाउन्डेशन जो निःस्वार्थ सेवा संस्था है कि अनुमति से उपलब्ध है।

www.bible.org

विलेज़ मिनिस्ट्रीज इंटरनेशनल श्री कीथले को उनके सर्वेक्षण को इस्तेमाल करने हेतु धन्यवाद देना चाहती है। वास्तव में बाइबल अध्ययन का ये एक मूल्यवान साधन है। बाइबल की कुछ तिथियों के लिये पहले **बुनियाद** के प्रकाशन में कुछ सुधार किया गया है।

वी.एम.आई. उन स्थानों में जहां प्रशिक्षण की आतुरता से आवश्यकता है, पर सुविधाएं उपलब्ध नहीं है वहां अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने की आशा करती है। इस सेवकाई के माध्यम से वी.एम.आई. बड़ी तीव्रता से पास्टरों व शिक्षकों की संख्या बढ़ रही है उन्हें प्रभावशाली रूप से उचित व अच्छी बाइबल शिक्षा की सामग्री उपलब्ध कराने में सक्ष्म है।

इस सामग्री को तैयार करने में हम बहुत से लोगों का धन्यवाद करना चाहते हैं। सबसे प्रथम हम अपने प्रभु यीशु मसीह जिसने अपनी करूणा से हमें महान उद्धार दिया है और जीवन की हर आवश्यकता को दिया है धन्यवाद देना चाहते हैं (2 पतरस 1:3)। दूसरा इस प्रकार का कोई भी प्रयास जिन बहुतों ने अपना निःस्वार्थ समय, और योग्यता इस दर्शन की वास्तविकता लाने में योगदान किया उनका भी धन्यवाद। वे अदृश्य नायक हैं।

प्रस्तावना

वी.एम.आई. का सुसज्जित कार्यक्रम का हिस्सा **बुनियाद** कहलाता है जो परमेश्वर के वचन के नये विद्यार्थी हैं उनकी सहायार्थ बनाया गया है जिससे वे ***"मसीह यीशु के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जायें"*** (2 पतरस 3:18)। इसलिये पूरे **बुनियाद** में केवल परमेश्वर के वचन की गहराई से समझ और विशेषता पर जोर नहीं दिया गया है पर साथ ही विद्यार्थियों के आत्मिक जीवन के विकास को भी जोड़ा गया है।

बुनियाद इसलिये भी विद्यार्थियों को सुसज्जित करने हेत् बनाई गई कि जब विद्यार्थी में एक बार इस सिद्धान्त को अपनी आत्मा में उतार लिया है तो दूसरों को भी सिखाये।

इस पुस्तक में आधारभूत सूचनाएं हैं जिन्हें परमेश्वर को वचन के विद्यार्थी को जानना जरूरी है। अध्याय 1 "आरम्भ करना" आत्मिक तैयारी की महत्ता को देखता और परमेश्वर के वचन का अवलोकन कराता है।

अध्याय 2 और 3 – बाइबल की हर पुस्तक का संक्षिप्त सर्वेक्षण देते हैं – जो लेखक और पुस्तक के विषय को बताता है। अध्याय 4 मूल सिद्धान्तों की ओर विद्यार्थी को ले जाता है जो धर्मशास्त्र को समझने का मार्गदर्शक है।

अध्याय 5 से 8 में विद्यार्थी को मूल विचारधारा प्रस्तुत करता है, बाइबल शब्दों का सारांश है– अध्याय 9 जो सीखा गया उसे उपयोग में कैसे लाना वो बताया गया है – वास्तव में बाइबल अध्ययन तैयार करके।

ये हमारी ईमानदारी की प्रार्थना है कि **बुनियाद** आपको यीशु मसीह को और अधिक रूप से ग्रहण करने और उसके वचन में विश्वास से आत्मिक चलने की तैयारी को करने में सहायता करता है।

परमेश्वर के वचन की उत्सुकता में आने का स्वागत है!

अध्याय 1

आरम्भ करना

भाग 1
व्यक्तिगत तैयारी

क. बाइबल अध्ययन की व्यक्तिगत तैयारी के छः सिद्धान्त

1. यीशु पर विश्वास करो

धर्मशास्त्र के अध्ययन में व्यक्तिगत तैयारी पर अधिक जोर नहीं दिया जा सकता है। पहले विद्यार्थी को प्रभु यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करना चाहिये क्योंकि "स्वाभाविक मनुष्य" (मसीह के बिना मनुष्य) स्वीकार नहीं कर सकता या परमेश्वर की चीज़ों को समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 2:14)। इसलिये उद्धार केवल मसीह पर विश्वास करने से है (इफिसियों 2:8–9)। परमेश्वर का आत्मा विद्यार्थी को आत्मिक चीज़ों को पहचानने देता है।

2. स्वीकार करें कि बाइबल ईश्वरीय रूप से प्रेरित की गई है

परमेश्वर का वचन स्वयं दावा करता है कि वह ईश्वरीय रूप से प्रेरित है (2 तीमुथियुस 3:16–17)। वचन का कोई भी अध्ययन तथ्य की स्वीकृति से आरम्भ होना चाहिये। विश्वास की "कूद" की आवश्यकता नहीं है केवल तथ्य की स्वीकृति, कि बाइबल सही और सत्य है।

3. प्रार्थना करें

धर्मशास्त्र को समझने के लिये प्रार्थना की आवश्यकता है। परमेश्वर का वचन निर्देश देता है कि जिस किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह मांगे और परमेश्वर उसे बिना उलाहना के देगा (याकूब 1:5)। जबकि प्रार्थना का उत्तर सही ज्ञान और पहचान से मिलेगा क्योंकि ये परमेश्वर की इच्छा के अन्दर है (1 यूहन्ना 5:14 तुलना करें मत्ती 7:7–8)।

4. ध्यान से अध्ययन करें और धीरज धरें

जबकि परमेश्वर के वचन के बहुत से हिस्सों को नहीं समझा जा सकता है बुद्धिमानी और धीरज की अध्ययन में आवश्यकता है (2 तीमुथियुस 2:15)। हम जब सीमित मनुष्य होकर परमेश्वर के असीमित ज्ञान को समझने का प्रयत्न करते हैं तो हमें जानना चाहिये कि एक सही समझ को भी समय लगता है।

5. लगातार अपने पापों का अंगीकार करें

पापों का लगातार अंगीकार करना महत्वपूर्ण है, हमारे जीवनों को साफ करने के लिये परमेश्वर को अनुमति देते हैं जिससे कि उसके साथ महान संगति हो सके (1 यूहन्ना 1:6–10)। पाप अंगीकार की आवश्यकता को अहसास करें जो हमारे विचारों, बोल या कार्य जो परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं है उसके प्रति चेतन्य करते हैं।

6. परमेश्वर की इच्छानुसार जीने की इच्छा रखना

प्रभु यीशु मसीह ने कहा, ***"यदि कोई उसकी (परमेश्वर की) इच्छा पर चलना चाहे तो वह इस उपदेश के विषय में जान जायेगा"*** (यूहन्ना 7:17)। यदि उद्देश्य जीवित परमेश्वर के साथ सम्बन्ध विकसित करने का है तो जो भी ज्ञान प्राप्त किया गया है उसे उस सम्बन्ध को स्पष्ट और सहारा देना चाहिये। बिना प्रेम के ज्ञान का परिणाम घमंड होता है (1 कुरिन्थियों 8:1)। यदि आपका उद्देश्य केवल ज्ञान की खोज करना है पर जीवित परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने का नहीं है तो जो जो ज्ञान आप प्राप्त करते हो उसमें कमी है और वह नष्ट हो जायेगा।

ख. परमेश्वर के वचन से व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के पांच लाभ

1. महान विश्वास

कलीसिया के महान धार्मिक शिक्षक पौलुस प्रेरित ने स्वयं कहा, कि ***"हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं"*** (2 कुरिन्थियों 5:7)। हम सब विश्वास ही के द्वारा अनुग्रह से उद्धार में प्रवेश करते हैं (इफिसियों 2:8–9) और पौलुस के अनुसार जैसा हम प्रवेश कर गये हैं तो वैसे ही चलें (कुलुस्सियों 2:6–7)।

2. नया ज्ञान

परमेश्वर के वचन के द्वारा नया ज्ञान प्राप्त होता है – ***जब हम प्रभु यीशु मसीह की पहचान और अनुग्रह में बढ़ते हैं*** (2 पतरस 3:14–18)। ये ज्ञान हमें उसके अनुग्रह की महान प्रशंसा की ओर ले जाता है। पर ज्ञान में बढ़ने के साथ

जब हम परमेश्वर का वचन धर्मशास्त्र से "सुनते" हैं तो विश्वास में बढ़ते हैं (रोमियों 10:17) और हर बात के लिये उस पर विश्वास करते हैं।

3. हमारे जीवन की शुद्धता

हमारे जीवन की शुद्धता के लिये परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है क्योंकि उसका वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)। यद्यपि हम विश्वासी हैं हमें हमारे जीवनों में पाप से समस्याएं हैं (1 यूहन्ना 1:6–10)। तो क्या पाप हमारे जीवनों में है उसे जानने के लिये परमेश्वर के वचन को सिखाने की आवश्यकता है। तब हम शुद्धता और चंगाई के लिये प्रार्थना कर सकते हैं (भजन 51)। कृपया नोट करें कि मसीहियों को अक्सर परमेश्वर के वचन से जोड़ा जाता और ये धार्मिकता के कारण अतिरिक्त जोड़ हो जाता है। ये "कानूनी" कहलाता है जिसका अर्थ है कि मनुष्य ने अपनी व्यवस्था की धार्मिकता बना ली है। प्रभु यीशु ने इसकी स्पष्टता से चुनौती दी है (मरकुस 7:1–13)। इसलिये हमें सावधान होना चाहिये और सावधानी से परमेश्वर के बताये स्तर पर ध्यान देना चाहिये।

4. सेवकाई में सामर्थ

हमारे जीवनों में काम के दौरान पवित्र आत्मा के साथ जब हम "यीशु मसीह के दिमाग" का अध्ययन करते हैं (1 कुरिन्थियों 2:14–16) तो हमारी सेवकाई में सामर्थ होगी (इफिसियों 2:10)। हम शैतान और उसकी सेना के साथ युद्ध में हैं, इसलिये हमें अपनी योग्यता से ऊपर सामर्थ चाहिये (इफिसियों 6:10–18)। सामर्थ हमारे परमेश्वर की इच्छा में समर्पण करने से आती है क्योंकि ये परमेश्वर है जो हमारे अन्दर कार्य कर रहा है, ***"अपनी सुइच्छा निमित्त मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है"*** (फिलिप्पियों 2:13)।

5. सेवा के लिये हथियार

परमेश्वर के वचन के इस ज्ञान के साथ हम प्रभु यीशु के सत्य को व्यवहार में ला सकते हैं (कुलुस्सियों 3:16–17) और खोये हुए और मरते हुए संसार के लिये दावा कर सकते हैं (यूहन्ना 17:17–19; इब्रानियों 5:12)। परमेश्वर के वचन के संचार के लिये प्राथमिक उद्देश्य ये है, ***"जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जायें और सेवा का काम किया जाये और मसीह की देह उन्नति पाये"*** (इफिसियों 4:11–13)। दूसरों को सुसज्जित करने में पहले अपने आपको सुसज्जित करने की आवश्यकता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 1 – भाग 1

1. **"स्वाभाविक" के लिये यूनानी शब्द (पसुचीकोस) 1 कुरिन्थियों 2:14 में पाया जाता है, साथ ही 1 कुरिन्थियों 15:44, 46; याकूब 3:15 और यहूदा 1:19 में भी पाया जाता है (जहां इसका अनुवाद "संसारिक–मानसिकता" किया गया है) इन पदों को पढ़ें तब आगे इस शब्द "स्वाभाविक" का वर्णन करें।**
2. **पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16–17। परमेश्वर के वचन में कौन से 4 लाभ पाये जाते हैं? उद्देश्य क्या है?**
3. **जिनको बुद्धि की कमी है उनके लिये याकूब 1:5 क्या वायदा करता है?**
4. **पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:15। परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी होकर हमें किन बातों में बुद्धिमान होना है? हमारा उद्देश्य क्या होना चाहिये?**
5. **पढ़ें 1 यूहन्ना 1:6–10; हमारे पापों के अंगीकार पर क्या दोहरा वायदा दिया गया है?**
6. **यूहन्ना 7:17 परमेश्वर की इच्छा की शर्त स्थापित करता है। वह क्या है?**
7. **पढ़ें कुलुस्सियों 2:6–7 और इफिसियों 2:8–9। कौन सी दो चीज़ें हमारे मसीही जीवन की विशेषता हैं?**
8. **पढ़ें 2 पतरस 3:14–18। पद 14 में क्या मसीही उद्देश्य बताया गया है और पद 18 में क्या कौन सी चीज़ें वर्णन की गईं जिसमें हमें बढ़ना है?**
9. **1 यूहन्ना 1:6–10 दोबारा पढ़ें। कौन सी दो चीज़ें हैं जो विश्वासी को उनके पापों से शुद्ध होना है?**
10. **पढ़ें इफिसियों 6:10–18। वास्तविक शत्रु कौन है और हमें कैसे लड़ना चाहिये?**
11. **पढ़ें इफिसियों 4:11–13। "मसीह की देह के निर्माण" में कौन से तीन उद्देश्य वर्णन किये गये हैं?**

भाग 2

बाइबल

क. बाइबल क्या है?

1. परमेश्वर का लिखित वचन

बाइबल एक सामान्य पुस्तक नहीं है। ये 40 लेखकों से अधिक द्वारा लिखी गई है जिनके जीवन क्षेत्र 1,500 वर्ष है। यीशु मसीह ने इसे "पुस्तक" कहा (इब्रानियों 10:7)। इसके बिना मानव धार्मिकता के स्तर को नहीं जान सकता, ना ही उसके जीवन में अनुग्रह की आवश्यकता को जान सकता है। परमेश्वर ने अपने वचन को चाहा कि लिखित हो जिससे उसका स्तर स्पष्ट हो जाये। लिखित वचन विश्वास के द्वारा स्वीकार किया जाता है और इतिहास के द्वारा साबित किया गया है (घटनाएं जो पहले ही हो चुकी हैं)। मानव परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा बात करता है। परमेश्वर प्रारम्भ में मनुष्यों से अपने लिखित वचनों द्वारा बात करता है।

अधिकांश लोग धर्मशास्त्र की मूल भाषा के अनुवाद को इस्तेमाल करते हैं। पुराने नियम का अधिक भाग इब्रानी में लिखा गया था। केवल दानिय्येल की पुस्तक का अध्याय 2–7, और एज्रा की पुस्तक अध्याय 4–7 अरामी भाषा में लिखे गये थे – जो इब्रानी की बहन–भाषा थी। जिसे उस समय के यहूदी बोला करते थे जब पुस्तक लिखी गई थी। पूरा नया नियम (सामान्य) यूनानी भाषा में लिखा गया है।

इन हिस्सों को आसान बनाने के लिये जब मनुष्य को प्रेरणा मिली तब अध्यायों और पदों को तोड़ा गया। इस प्रकार के परमेश्वर की ओर से प्रेरित नहीं थे पर ये मूल्यवाद अभिप्राय इन हिस्सों को समझने में सहायता करते हैं।

2. प्रेरणादायक परमेश्वर का वचन

बाइबल का हर भाग परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है (2 तीमुथियुस 3:16–17) और इस प्रकार लाभदायक है। "प्रेरणा" मनुष्य की योग्यता से विचारधारा या प्रगटीकरण से ऊपर है क्योंकि ये ईश्वरीय भाग लिया गया है। ये परमेश्वर की "स्वांस" है जो मानव के व्यक्तित्व के द्वारा बताई जाती है।

3. परमेश्वर के जीवित वचन का प्रगटीकरण

बाइबल हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर के जीवित वचन का प्रगटीकरण है। "प्रगटीकरण" का मतलब है कि नई सूचना देना, जब पवित्र आत्मा हमारे अन्दर कार्य करता और "प्रगट" करता तब वह "दर्शन" बन जाता है जो परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी को समझने योग्य होता है। लिखित वचन जीवित वचन नहीं है ये प्रभु यीशु मसीह का ईश्वरीय वर्णन है (इब्रानियों 4:12; यूहन्ना 5:39–47)।

ये महत्वपूर्ण विशिष्टताएं बताने को हैं। कागज़ और स्याही में शक्ति नहीं है पर कागज़ और स्याही के पीछे परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ है जो लोगों के जीवनों में भिन्नता लाती है। वचनों को शक्तिशाली अपने आप में दिखने के लिये लेखक के बिना जुड़े विषय में चूक जाते हैं (इब्रानियों 12:3)।

ख. बाइबल का संघटन

1. दो बड़े भाग हैं

बाइबल दो भागों में विभाजित है, पुराना नियम व नया नियम।

"पुराना नियम और नया नियम" में पूरी 66 पुस्तकें हैं – 39 पुराने नियम में और 27 नये नियम में और पुराना नियम 30 से अधिक लेखकों द्वारा और नया नियम 10 लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। इनमें 1,189 अध्याय हैं। पुराने नियम में 929 और 260 अध्याय नये नियम में हैं। पुराने नियम में 23,214 पद हैं – नये नियम में 7,959 पद हैं (पूरे धर्मशास्त्र में 31,173 पद हैं)।

"नियम/वर्णन" एक वाचा है या एक अनुबन्ध या इकरारनामा है जो कुछ मूल्य किसी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है – तब दूसरे व्यक्ति द्वारा स्वीकार किया जाता है उदाहरण के लिये – जब कोई किसी उत्पादन को खरीदने की इच्छा करता है तो प्रस्ताव को स्वीकार या ठुकराया जा सकता है। जब प्रस्ताव स्वीकार किया जाता तो एक वाचा या अनुबन्ध हो जाता है। वाचा में बहुत से वायदे होते हैं जो दोनों पार्टी के सम्बन्धों के बीच होते हैं। वाचा का अच्छा उदाहरण विवाह में लिये जाने वाले वायदे हैं। ये वायदे वो वाचा हैं जो दूल्हा–दुल्हिन के बीच लिये जाते हैं जो सम्बन्ध की आधारशिला का कार्य करते हैं।

पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के साथ बांधी गई वाचा है जिसमें आने वाले 'मसीहा' की प्रतिज्ञा दी गई है। हमारे अध्ययन में बाद में इन वाचाओं की जांच करेंगे।

2. पुराने नियम के पांच विभाग

पुराने नियम को इस प्रकार बांटा गया हैः

क) "व्यवस्था" जो इब्रानी में "तोराह" या यूनानी में "पेन्टाय्यूच" कहलाती है (यूनानी में इसका अर्थ पांच पुस्तकें हैं) जिसमें उत्त्पति, निर्गमन, गिनती, लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण हैं।

ख) ऐतिहासिक पुस्तकें (बारह) : यहोशू, न्यायियों, रूत, 1 शमूएल, 2 शमूएल, 1 राजा, 2 राजा, 1 इतिहास, 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, ऐस्तर।

ग) काव्य पुस्तकें (पांच) : अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत।

घ) बड़े भविष्यद्वक्ता (पांच) : यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल और दानिय्येल

ङ) छोटे भविष्यद्वक्ता (बारह) : होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह, मलाकी।

3. नये नियम के तीन विभाग

नया नियम मसीहा के आगमन के दस्तावेज़ हैं और उसके बाद नई वाचा बांधी गई है।

पुस्तक में विभिन्न विषय हैं, ऐतिहासिक पुस्तकें, उदाहरण के लिये कुछ भविष्यवाणी हैंः (मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21) जिस प्रकार भविष्यवाणी की पुस्तक में कुछ पत्रियां हैं (प्रकाशितवाक्य 2–3)। किसी भी पुस्तक की सामान्य उपाधि उसके पूरे विषय पर आधारित है नये नियम को तीन झुण्डों में विभाजित किया गया हैः

क. पांच ऐतिहासिक पुस्तकेंः मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना और प्रेरितों के काम।

ख. ऐतिहासिक पुस्तकों के पीछे 21 पत्रियां हैंः रोमियों, 1 कुरिन्थियों, 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, 1 तीमुथियुस , 2 तीमुथियुस, तीतुस, फिलैमोन, 1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना, 3 यूहन्ना, 1 पतरस, 2 पतरस, याकूब, इब्रानियों, यहूदा।

ग. एक पुस्तक भविष्यवाणी की – प्रकाशितवाक्य।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 1, भाग 2

1. पढ़ें इब्रानियों 10:1–7 लिखित वचन क्या नहीं कर सकता?

2. इब्रानियों 10:1–7 में भी, लिखित वचन क्या करने के लिये रचा गया है?

3. पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16–17। परमेश्वर के प्रेरणादायक वचन का क्या लाभ है?

4. पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:17 के अनुसार धर्मशास्त्र के दोहरे अभिप्राय क्या हैं?

5. पढ़ें यूहन्ना 5:39–47 – जो धर्मशास्त्र का अध्ययन करते हैं उन्हें यीशु क्या चितौनी देते हैं?

6. एक "वाचा" या "वर्णन" की प्रारम्भिक चीज़ क्या है?

7. पुराने नियम के पांच विभाग क्या हैं?

8. क्या बड़े और छोटे भविष्यद्वक्ताओं को केवल "भविष्यद्वक्ता" कह कर पुकारना स्वीकार्य है?

9. नये नियम के तीन विभाग क्या हैं?

भाग 3
ऐतिहासिक पुनरावलोकन

परमेश्वर के वचन की सुन्दरता भागों में उसकी आंतरिक सुसंगति के कारण है, भले ही ये बहुत से लेखकों द्वारा बड़े लम्बे समय में लिखा गया था – इतिहास उन घटनाओं को देखता है जो पूर्व में घटी है।

नीचे दी गई घटनाओं की रूपरेखा की श्रृंखला में इसे खोलने पर अद्भुत क्रिया को दिखाता है और तब मानव इतिहास को पकड़े रहते हैं। इन विशाल घटनाओं को देखने के द्वारा हम आसानी – स्पष्टता से इस अद्भुत कहानी के परिचय और समाप्ति को खोज कर सकते हैं। हम स्पष्टता से विचारकों के प्रश्नों को जो सदियों से पूछे जा रहे हैं उनके स्पष्ट आंतरिक उत्तर प्राप्त कर सकते हैं: "हम यहां क्यों हैं?"

नीचे दी गई रूपरेखा इस प्रकार बनाई गई है कि उसे पुनः देखा जा सके। हम अपने बाकी के जीवनों को विस्तार को भरने में बिता देंगे। अभी के लिये आइये हम ऐतिहासिक बड़ी घटनाओं से सीखें जो परमेश्वर ने हमारे सामने रखी हैं। इस पाठ में बाद के हिस्से में हम परमेश्वर के लगातार अद्भुत सर्वोत्तम योजना को देख सकेंगे।

क. घटनाओं का वर्णन

1. सृष्टि

बाइबल के आरम्भ में उत्पत्ति आकाश और पृथ्वी की सृष्टि के मूल दस्तावेज को रखता है (उत्पत्ति 1:1, 2 पतरस 3:6)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अन्त में मूल सृष्टि को नाश कर दिया गयां है – नये आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि के लिये मार्ग बना दिया है (प्रकाशितवाक्य 21–22)।

2. शैतान का विद्रोह

मनुष्य की सृष्टि के कुछ पहले शैतान ने परमेश्वर के साथ विद्रोह किया (यशायाह 14:12–14; यहेजकेल 28)। इस प्रथम विद्रोह का अभिप्राय सम्पूर्ण धर्मशास्त्र में जटिलता से बुना गया है और इस पूरे संघर्ष की बातों को आसानी से नहीं समझा गया हैं। जो समझा गया वो ये है कि शैतान और परमेश्वर के बीच एक युद्ध मनुष्य की सृष्टि से पहले चल पड़ा था (प्रकाशितवाक्य 12) और कि शैतान का अन्तिम विद्रोह यीशु के धरती पर 1000 वर्ष के राज्य के बाद होगा, नये आकाश और पृथ्वी की सृष्टि के कुछ पहले (प्रकाशितवाक्य 20:7–10)।

3. पृथ्वी एवं सूर्य

परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना मनुष्य के निवास के लिये बनाई (उत्पत्ति 1:2–2:3) एक फुट नोट में शब्द "बेडौल" (इब्रानी में तोहू) और "सुनसान" (इब्रानी में बोहू) का मतलब न रहने योग्य और जनसंख्या का न होना) समस्या ये है एक हमलावर था – शैतान जो लगातार परमेश्वर को चुनौती देने का सोचता। जब प्रभु उसे 1000 वर्ष के लिये गड़हे में बन्द करेगा (देखें प्रकाशितवाक्य 20:1–3; यीशु मसीह का 1000 वर्ष का राज्य) वह एक बार फिर मनुष्य के लिये पृथ्वी को सिद्ध करेगा (यशायाह 60–66)।

4. प्रथम और अन्तिम आदम

प्रथम मानव, आदम, की सृष्टि समस्त सृष्टि पर अधिकारी बनाया गया था (उत्त्पति 1:28, 2:4–25)। उसे अदन की बारी में रखा गया था कि उसकी रक्षा करें और खेती करे। "अन्तिम आदम" प्रभु यीशु मसीह (1 कुरिन्थियों 15:45)। वह वास्तविकता में शारीरिक रूप से 1000 वर्षों तक अधिकार रखेगा (प्रकाशितवाक्य 20:4)। वह अन्तिम है इसका अर्थ है कि और कोई भी दूसरा अस्तित्व में नहीं आयेगा।

5. शैतान के साथ मनुष्य की लड़ाई

जब आदम अदन की वाटिका में "गिर गया" वह शैतान का शिकार बन गया जो "संसार का शासक" है (उत्पत्ति 3, यूहन्ना 12:31; 16:11)। बाद में परमेश्वर शैतान को यीशु का शिकार बनायेगा उसके 1000 वर्ष के राज्य के पहले (प्रकाशितवाक्य 20:1–3)।

6. समस्त मानव जाति का न्याय किया गया

परमेश्वर मनुष्य को बुराई में गिरने देता है, पर वह समस्त मानव जाति से निपटेगा–उत्पत्ति 4–10 में हम उसकी पृष्ठभूमि देखते हैं जो महान जल प्रलय की ओर ले गया। जो मनुष्य की अवज्ञा वा परमेश्वर की अप्रसन्नता के कारण हुआ (उत्पत्ति 6:1–13)। परमेश्वर एक बार फिर मनुष्यों से निपटेगा जब यीशु मसीह का दूसरा आगमन होगा। सात साल के क्लेश के पश्चात्। उस समय वह भेड़ों (विश्वासी) और बकरियों (अविश्वासियों) को अलग करेगा (मत्ती 25:31–46)।

7. बाबुल

नूह के जल प्रलय के बाद पृथ्वी फिर मनुष्यों से भर गई – पर शीघ्र ही लोग गलत दिशा की ओर परमेश्वर से मुड़ गये। बाबुल में उन्होंने एक मीनार का निर्माण किया (उत्पत्ति 11)। जो उनके अपने बचाव का संकेत था। उन्होंने सोचा कि यदि वे अधिक ऊंचा गुम्मट बना लें तो परमेश्वर के क्रोध से बच सकेंगे (जैसा ये जलप्रलय के समान) स्वर्ग पर चढ़ने के द्वारा। जिस नेव पर वे गुम्मट का निर्माण कर रहे थे वह धर्म "मानवता" के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ सोचा जाता था कि मनुष्य अपने आपको धर्म के द्वारा या आर्थिक रूप से बचा सकेगा। इसी प्रकार का विश्वास संसार के धर्मों का आधार बना। केवल मसीहत ये महसूस करती है कि मनुष्य अपने आप को नहीं बचा सकता, इसलिये मनुष्य को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। कुछ मानवता के व्यवहारों का वर्णन बाइबल में किया गया है – वे जो जीवित परमेश्वर के विरुद्ध खड़े हुए थे। ऐसा व्यवहार पूर्व में बाबुल में देखा गया था (यशायाह 47) और (यहेजकेल 26–27) और आज भी हमारे साथ रहता है। यही व्यवहार संसार के धर्मों में पाया जाता है जो ऐसा मानते हैं कि मानव ईश्वरत्वता में ऊपर अवस्था में बढ़ता है और इस प्रकार अपने को बचाता है, सताव के दौरान परमेश्वर बाबुल की संस्थाओं को नष्ट करेगा जो बनाई गई हैं (प्रकाशितवाक्य 17–18)।

8. इस्राएल

बाबुल से लोगों को तितर बितर करने के बाद और देशों को विभिन्न भाषाएं देने के बाद, परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया कि एक नये देश इस्राएल का स्थापक हो (उत्पत्ति 12)। उसके आश्चर्यजनक रूप से पुत्र के गर्भ में आने से और उसके पोते याकूब के जन्म से जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने मसीह के विषय में दी थी जारी रही (उत्पत्ति 22:1–18, 28:14)। इस्राएल के लोग वास्तव में अपने देश से निकाले गये और समस्त संसार में अपनी मूर्तिपूजा के लिये फैल गये। पर प्रभु की प्रतिज्ञा बनी रही। इस्राएल पुनः एक साथ मिलेगा – क्लेश के बाद और 1000 वर्ष के शताब्दी के राज्य में आशीष के साथ (मत्ती 24:29–31)।

9. मसीह यीशु का आगमन

मसीह यीशु का प्रथम आगमन परमेश्वर की योजनानुसार इतिहास के लिये सही समय पर हुआ (1 तीमुथियुस 2:6)। सुसमाचारों मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में मसीह यीशु के अद्‌भुत जन्म, सेवकाई, मृत्यु, गाड़ा जाना, पुनरुत्थान के बारे में वर्णन किया जाता है। मसीह यीशु स्पष्टता से "यातना सहने वाला सेवक" था। जिसे सुन्दर तरह से यशायाह 53 में बताया गया है मसीह का दूसरा आगमन क्लेश के बाद होगा, जब वास्तव में यीशु अपना पैर धरती पर रख कर अपने शत्रु का नाश करेगा (जकर्याह 14:1–8; प्रकाशितवाक्य 19:11–19), इस प्रकार शताब्दी के राज्य में प्रवेश करेगा। इस बार वह "विजयी राजा" के रूप में आयेगा।

10. सेवकाइयों का विरोध

सुसमाचार बड़ी सुन्दरता से मसीह यीशु की सेवकाई की तस्वीर खींचते हैं (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) मसीह की एक सेवकाई दूसरों के लिये थी (मत्ती 20:28)। ये मसीह विरोधी की सेवकाई के बिल्कुल विपरीत है (इसे "अधर्म का मनुष्य" के नाम से भी जाना जाता है) जिसकी "स्वयं – सेवा" की सेवकाई होगी, और सारा ध्यान और आराधना अपनी ही ओर खींचेगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12; प्रकाशितवाक्य 6–16)।

11. कलीसिया

प्रभु यीशु के पुनरुत्थान और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठने के बाद "कलीसिया" को क्षमा के सुसमाचार को जो मसीह के बलिदान के द्वारा है इसे फैलाने के लिये "बुलाया गया"। (प्रेरितों के काम) कलीसिया "समस्त संसार में चेला बनाने" की जिम्मेवारी लेती है (मत्ती 28:18–20)। जब तक कि दूल्हा उसके विवाह के लिये न बुला लिया जाये (1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18; 1 कुरिन्थियों 15:50–58; प्रकाशितवाक्य 19:7–10)।

ख. सारांश

बयान किये गये आगमन पर जब हम विश्लेषण करते हैं तो हम एक अद्‌भुत सही नमूने को देखते हैं। यह प्रगट है और तब मानव इतिहास बन जाता है। ये नीचे दिये गये चार्ट के द्वारा प्रगट किया जाता है। ये गिनती के साथ मिलता है और आप परमेश्वर की योजना का अवलोकन कर सकेंगे।

1. मूल आकाश और पृथ्वी की सृष्टि – उत्पत्ति 1:1, 2 पतरस 3:6
2. शैतान का पहला विद्रोह – यशायाह 14:12–14; यहेजकेल 28
3. पृथ्वी मनुष्यों के लिये बनाई गई – उत्पत्ति 1:2–2:3
4. प्रथम आदम का अधिकार – उत्पत्ति 2:4–25
5. मानव शैतान का शिकार बना – उत्पत्ति 3
6. सब मानव का न्याय किया गया – उत्पत्ति 4–10
7. बाबुल के गुम्मट का निर्माण होना – उत्पत्ति 11
8. इस्राएल एक देश कहलाया – उत्पत्ति 12
9. मसीह का प्रथम आगमन – मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना
10. मसीह यीशु की बुलाहट – मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना
11. कलीसिया की बुलाहट – प्रेरितों के काम
11. कलीसिया बुलाई गई – 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18; 1 कुरिन्थियों 15:50–58
10. मसीह विरोधी की सेवकाई – 2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12; प्रकाशितवाक्य 6–16
9. मसीह का द्वितीय आगमन – प्रकाशितवाक्य 19:11–19
8. इस्राएल का पुनः देश की तरह जमा होना – मत्ती 24:29–31
7. बाबुल की संस्था का विनाश – प्रकाशितवाक्य 17–18
6. सभी मानव का न्याय किया जाना – मत्ती 25:31–46
5. शैतान मसीह का कैदी – प्रकाशितवाक्य 20:1–3
4. अन्तिम आदम का अधिकार – प्रकाशितवाक्य 20:4
3. मानव के लिये पृथ्वी सिद्ध की गई – यशायाह 60–66
2. शैतान का अन्तिम विद्रोह – प्रकाशितवाक्य 20:7–10
1. नये आकाश और पृथ्वी का निर्माण – प्रकाशितवाक्य 21–22

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 1, भाग 3

1. पढ़ें उत्पत्ति 1–2 एवं प्रकाशितवाक्य 21–22। ये क्या प्रगट करते हैं?
2. पढ़ें यशायाह 14:12–14; प्रकाशितवाक्य 20:7–10। शैतान का मूल पाप क्या है और उसकी अन्तिम मंजिल क्या है?
3. पढ़ें उत्पत्ति 1:2–2:3 और यशायाह 60–66। उत्पत्ति में पृथ्वी सिद्ध बनाई गई थी आदम के पाप में गिरने के कारण से ये अपूर्ण हो गई। तो यशायाह का हिस्सा किसका संकेत देता है?
4. पढ़ें उत्पत्ति 3; 1 कुरिन्थियों 15:45; 1 पतरस 2:22–24। "प्रथम" और "अन्तिम आदम" में क्या फर्क है। "यीशु मसीह" कौन है?
5. पढ़ें इफिसियों 6:10–18। हमारे असली शत्रु कौन हैं और हम उनसे कैसे लड़ते हैं?
6. पढ़ें उत्पत्ति 6:13; मत्ती 25:31–46। इन अध्यायों का सामान्य विषय क्या है?
7. पढ़ें प्रकाशितवाक्य 17–18। बाबुल का धर्म "मानववाद" था – मतलब कि मनुष्य अपने को बचा सकता है। इन अध्यायों के निशानों को पहचाने बिना पता करें कि ये दो मुख्य तरीके प्रगट करने को बताते हैं (संकेतः अध्याय 17 एक तरह है, 18 अध्याय दूसरा है)।
8. पढ़ें उत्पत्ति 12:1–3; इब्रानियों 11:8–12; प्रकाशितवाक्य 21:10–27। अब्राहम की प्रतिज्ञाएं कब पूरी होंगी?
9. पढ़ें यशायाह 53, जकर्याह 14:1–8 और प्रकाशितवाक्य 19:11–19। मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमन की भिन्नता बताओ।
10. पढ़ें 2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12 और मत्ती 20:28। मसीह की सेवकाई और मसीह – विरोधी की सेवकाई में क्या अन्तर है?
11. पढ़ें मत्ती 28:18–20; प्रेरित 1:8; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18। जब तक कलीसिया न बुला ली जाये उसका कार्य क्या है?

भाग 4

एक कालक्रिया का दृष्टिकोण

बाइबल के विद्यार्थियों को तिथि, शृंखला व बहुत सी मुख्य घटनाओं के सम्बन्धों को जानना चाहिये। इस हिस्से में तीन क्रिया काल का वर्णन किया गया है। प्रथम सूचि में दस बड़ी घटनाएं जो बाइबल में पाई जाती हैं और उनकी तारीखें, सारांश और हर एक का महत्व। दूसरा काल क्रम पुराने नियम की घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करता और बाइबल की उन पुस्तकों का जो इनका बयान करती पहचान कराती है। तीसरी सूचि नये नियम की पुस्तकों की हैं।

तारीख जो "B.C." कहलाती मतलब "मसीह के पहले" वे जो "A.D." कहलाती है, वे मसीह के पश्चात् की हैं। (A.D. लेटिन भाषा से लिया गया "ऐनौ – डोमिनी" इसका मतलब है "प्रभु का वर्ष")।

तारीखें जो दी गई हैं वे परमेश्वर के वचन की वास्तविक अनुवाद का आधार हैं। बहुत से लोग जिन्होंने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया है – वे तारीखों की भिन्नता पर आये हैं जो इस समय बहुत सी भिन्नता बताने योग्य नहीं हैं। कृपाकर इन भिन्नताओं को न आने दें। घटनाओं की शृंखलाबद्धता को सीखना इस हिस्से का महत्वपूर्ण भाग है।

बुनियाद के पहले प्रकाशन में 60 वर्षों का वर्णन करने में असफल रहे थे जो उत्पत्ति 11:26–12:5 के बीच है जिसका संदर्भ प्रेरितों के काम 7:4 में दिया गया है। प्रेरितों के काम में ये वर्णन दिया गया कि अब्राहम ने तेरह की मृत्यु के पश्चात हारान को छोड़ा। तेरह हारान में 205 वर्ष का होकर मर गया (उत्पत्ति 11:32) और अब्राहम 75 वर्ष की आयु में तेरह की मृत्यु के बाद हारान छोड़कर चला गया (प्रेरित 7:4)। इसका मतलब है कि जब अब्राहम उत्पन्न हुआ तो तेरह 130 वर्ष का था। 70 वर्षों का संदर्भ उत्पत्ति 11:26 में दिया गया है जिसे नाहोर या हारान का संदर्भ देना चाहिये (उत्पत्ति 11:28)। आशानुसार ये पुनः उन सिद्धान्तों को लागू करेगा जिसे हर विद्यार्थी को धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र के साथ तुलना करते रहना चाहिये और वे स्वयं इसका अनुवाद करें।

क. दस बड़ी घटनाएं व उनकी तिथियां

1. आदम का पतन (ई.पू. 3958)

वास्तविक अनुवाद जो (जन्म का कालचक्र दिया है) परमेश्वर के वचन में दिया गया है आइये उसकी तारीख पर आयें जो लगभग ईसा पूर्व 3958 मानी जाती है कि आदम पाप में गिर गया। वे बाइबल आधारित कालचक्र इस प्रकार दिया गया है कि हमें आदम के प्रारम्भ के बिन्दु से आगे कार्य करना चाहिये और सुलैमान के चौथे वर्ष से पीछे की ओर कार्य करना चाहिये (1 राजा 6:1)। बाइबल हमें बड़ी घटनाओं के बीच की सूचनायें देती हैं। जब हम बाइबल आधारित घटनाओं को संसार के इतिहास की जानी हुई तारीखों से सम्बन्ध जोड़ते हैं तो संसारिक और बाइबल आधारित इतिहास को साथ जोड़ सकते हैं।

2. नूह के समय का जल प्रलय (ई.पूर्व 2302)

जो समय हम उत्पत्ति 5 को देखते हैं तो पाते हैं कि आदम के पाप में पड़ने के समय से 1,656 वर्ष बीत चुके थे जब जल प्रलय आया। ये हमें ई.पूर्व 2302 की तारीख देता है।

3. अब्राहम के साथ प्रतिज्ञा (ई.पू. 1875)

जो समय हमें उत्पत्ति 11:10–26 में दिया गया है ये स्थापित करता है कि अब्राहम का जन्म नूह के जल प्रलय के 352 वर्ष बाद हुआ या आदम के बाद 2008 में। ये संकेत करता है कि उसका जन्म ई.पूर्व 1950 में हुआ। हम उत्पत्ति 12:4 में देखते हैं कि अब्राहम 75 वर्ष का था जब उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्राप्त की। ये अब्राहम की वाचा बन गई। इसका अर्थ होगा कि वाचा ई.पूर्व 1875 में बांधी गई।

4. इस्राएलियों का निष्कासन (प्रस्थान) (ई.पू. 1445)

उत्पत्ति 12–50 में हमें अब्राहम के वंशज की सीधी सूचना दी जाती है। याकूब की सन्तान (अब्राहम का पोता) मिस्र को गया जहां वे दासत्व में घिर गये (निर्गमन 1)। परमेश्वर ने उन्हें मूसा के हाथों द्वारा मिस्र की दासत्वता से छुड़ाया। पौलुस प्रेरित हमें बताता है कि अब्राहम की प्रतिज्ञा दिये जाने के बाद से 430 वर्ष बीत चुके थे (गलातियों 3:17)। वहां से निष्कासन की तारीख ई.पूर्व 1445 थी या आदम के 2,438 वर्षों बाद।

5. सुलैमान का चौथा वर्ष (ई.पूर्व 965)

सुलैमान इस्राएल का तीसरा राजा था अपने पिता दाऊद और राजा शाऊल के पीछे, 1 राजा 6:1 में हमें बताया गया

है कि सुलैमान के चौथे वर्ष तक मिस्र से निकलने के बाद 480 वर्ष बीत चुके थे जब उसने मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ किया। ये हमें तारीख गिनने में सहायता करती कि ये ई.पू. 965 वर्ष या आदम के बाद 2,918 वर्ष था।

हम दूसरे ऐतिहासिक रिकॉर्ड द्वारा सुलैमान के चौथे वर्ष की गणना कर सकते हैं। ये हमें सही तारीख स्थापित करने देता है जिसमें हम पीछे निष्कासन की तारीख स्थापित कर सकते हैं, जब अब्राहम को प्रतिज्ञा दी गई तथा नूह का जल–प्रलय और आदम के विषय। मानव खुदाई की खोज के द्वारा बाधित किया गया है जिसका 100 वर्षों में संसार के इतिहास के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया है। ये विभिन्न तारीखों के सिस्टम के कारणों का एक भाग हैं।

6. उत्तरी राज्य का पतन (ई.पू. 721)

सुलैमान की मृत्यु के बाद, इस्राएल दो राज्यों में बंट गया – जो "उत्तरी राज्य" या इस्राएल कहलाने लगा और "दक्षिण–राज्य" या "यहूदा" कहलाने लगा। ई.पू. 721 में उत्तरी राज्य आरामी राज्य के आधीन हो गया और राज्य समाप्त हो गया।

7. दक्षिणी राज्य का पतन (ई.पू. 586)

ई.पू. 586 में दक्षिणी राज्य बाबुल राज्य के आधीन हो गया और इस्राएलियों को वापस जाने की अनुमति ई.पू. 516 में दी गई जो 70 साल की बंधुवाई का समय था।

8. मसीह यीशु का जन्म (ई.पू. 1)

ये ई.पू. और A.D. यीशु के आने के बाद छठवीं सदी में तारीख रखने की पद्यति विकसित हुई। ये इस प्रकार रखी गई कि उसके जन्म की ऐतिहासिक तारीखों का संदर्भ दिया जा सके। जब कलीसिया ने इस पद्यति को स्थापित किया, तो ये उन गलत समझ के आधार पर था जब राजा हेरोदेस जीवित था (जिसका वर्णन बाइबल में यीशु के जन्म के समय किया गया है – लूका 1:5)। काफी समय बाद ये पता चला कि 1 या 2 साल की गलती की गई है, पर पद्यति अच्छी तरह स्थापित हो गई थी तो इन सब तिथियों को बदलने के बदले जो पहले ही स्थापित कर दी गई थीं, ये निर्णय किया गया कि यीशु या तो 1 या 2 ईस्वी में पैदा हुआ था।

जूलियन कैलेन्डर जो जनवरी से आरम्भ होता है उसमें और यहूदियों के कैलेन्डर जो सितम्बर में आरम्भ होता है बहुत भिन्नता है। इसीलिये आप देखेंगे कि तारीखें "1 या 2 ई.पू." या "966–965" ई.पू. लिखी गई हैं।

9. मसीह यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और फिर जी उठना (ई.पश्चात 32–33)

अधिकतर बाइबल शोधकर्ता मसीह यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान की तारीख A.D. ई. पश्चात 32–33 मानते हैं।

10. बाइबल की अन्तिम पुस्तक (ईस्वी 96)

ये तारीख प्रेरित यूहन्ना के पतमुस टापू में बन्दी बनाये जाने से सम्बंधित है (प्रकाशितवाक्य 1:9)। रोमी डोमेशियन के राज्य के दौरान की है जब बाइबल पूरी हुई (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)।

ख. पुराने नियम की पुस्तकों का काल – चक्र

1. आदम से प्रलय तक (ई.पूर्व 3898–2242)

उत्पत्ति 1–5

2. प्रलय से अब्राहम से प्रतिज्ञा (ई.पूर्व 2242–1875)

उत्पत्ति 6–12

3. अब्राहम की प्रतिज्ञा – निष्कासन (ई.पूर्व 1875–1445)

उत्पत्ति 12–50; अय्यूब की पुस्तक

4. निष्कासन से सुलैमान का चौथा वर्ष (ई.पूर्व 1445–965)

क.	निर्गमन	ङ.	यहोशू	झ.	2 शमूएल
ख.	लैव्यव्यवस्था	च.	न्यायियों	ण.	1 राजा 1–5
ग.	गिनती	छ.	रूत	ट.	भजन संहिता
घ.	व्यवस्थाविवरण	ज.	1 शमूएल	ठ.	1 इतिहास

5. सुलैमान के चौथे वर्ष – यहूदा का पतन (ई.पूर्व 965–586)

क.	1 राजा 6–22	छ.	ओबद्याह	ड.	यशायाह
ख.	2 राजा	ज.	योएल	ढ.	नहूम
ग.	2 इतिहास	झ.	योना	ञ.	सपन्याह
घ.	नीतिवचन	ण.	आमोस	त.	हबक्कूक
ङ.	सभोपदेशक	ट.	होशे		
च.	श्रेष्ठगीत	ठ.	मीका		

6. बाइबल की बंधुवाई का समय (ई.पूर्व 586–516)

क.	यिर्मयाह	ग.	यहेजकेल
ख.	विलापगीत	घ.	दानिय्येल

7. बाबुल की बंधुवाई से पुराने नियम की समाप्ति (ई.पूर्व 516–400)

क.	एज्रा	ग.	जकर्याह	ङ.	मलाकी
ख.	नहेम्मियाह	घ.	हाग्गै		

ग. नये नियम की पुस्तकों का काल–चक्र

उस शृंखला में जिसमें लेखकों ने नये नियम की पुस्तकों को लिखा जो नीचे दिये क्रम के अनुसार हैं:

1. मसीह के जीवन का इतिहास तथा प्रारम्भिक कलीसिया (ई.पश्चात 55–85)

क.	मत्ती	ग.	मरकुस	ङ.	प्रेरितों के काम
ख.	लूका	घ.	यूहन्ना		

2. कलीसियाओं के लिये पत्रियां (ई. पश्चात 46–85)

क.	याकूब	ज.	फिलेमोन	ञ.	इब्रानियों
ख.	गलातियों	झ.	इफिसियों	त.	1 पतरस
ग.	1 थिस्सलुनीकियों	ण.	कुलुस्सियों	थ.	2 पतरस
घ.	2 थिस्सलुनीकियों	ट.	फिलिप्पियों	द.	यहूदा
ङ.	1 कुरिन्थियों	ठ.	1 तीमुथियुस	ध.	1 यूहन्ना
च.	1 कुरिन्थियों	ड.	तीतुस	न.	2 यूहन्ना
छ.	रोमियों	ढ.	2 तीमुथियुस	प.	3 यूहन्ना

3. भविष्यवाणी (ई. पश्चात 96)

प्रकाशितवाक्य

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 1, भाग 4

1. इन घटनाओं को सही क्रम में लगाएं :

उत्तरी राज्य का पतन

नूह का जल प्रलय

दक्षिण राज्य का पतन

अब्राहम से प्रतिज्ञाएं

मसीह यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान

इस्राएल का मिस्र से निकलना

सुलैमान का चौथा वर्ष

मसीह यीशु का जन्म

आदम का पतन

बाइबल की अन्तिम पुस्तक

2. **पुराने नियम की कौन सी दो पुस्तकें हैं जो सृष्टि की रचना से मिस्र से निकलने का वर्णन करती हैं?**

3. **धर्मशास्त्र के इन हिस्सों को काल (समय) के अनुसार रखोः**

1 शमूएल	यहोशू	2 शमूएल
1 राजा 1–5	व्यवस्थाविवरण	लैव्यव्यवस्था
गिनती	रूत	भजन संहिता
न्यायियों	1 इतिहास	निर्गमन

4. **पुराने नियम के इन हिस्सों को सही काल–चक्र के अनुसार रखोः**

2 इतिहास	यशायाह	होशे
1 राजा 6–22	नहूम	योएल
2 राजा	आमोस	सपन्याह
नीतिवचन	मीका	हबक्कूक
सभोपदेशक	योना	
श्रेष्ठगीत	ओबद्याह	

5. **पुराने नियम की इन पुस्तकों को काल–चक्र के अनुसार रखोः**

नहेमिय्याह	यहेजकेल	सपन्याह
दानिय्येल	मलाकी	विलापगीत
यिर्मयाह	एज्रा	हाग्गै

6. **नये नियम की इन ऐतिहासिक पुस्तकों को क्रमानुसार लगाएंः**

मत्ती	लूका	प्रेरितों के काम
मरकुस	यूहन्ना	

7. **नये नियम की इन पुस्तकों को काल–चक्र के अनुसार क्रमानुसार लगाएंः**

रोमियों	2 थिस्सलुनीकियों	2 पतरस
1 कुरिन्थियों	1 तीमुथियुस	1 यूहन्ना
2 कुरिन्थियों	2 तीमुथियुस	2 यूहन्ना
गलातियों	तीतुस	3 यूहन्ना
इफिसियों	फिलेमोन	यहूदा
फिलिप्पियों	इब्रानियों	प्रकाशितवाक्य
कुलुस्सियों	याकूब	
1 थिस्सलुनीकियों	1 पतरस	

भाग 5

बाइबल अध्ययन की तैयारी

पिछले दो हिस्सों में जो घटनायें पूर्व समय में घटी हैं हमें उनके महत्व को जानने का परिचय दिया गया था (भाग 3) और किन श्रृंखला में वे घटीं (भाग 4)। हम उत्तर की सहायता के लिये नींव डाल रहे थे कि महत्वपूर्ण प्रश्न में एक को जब बाइबल अध्ययन कर रहे तो पूछना चाहिये: "कब"? जब हम बाइबल को समझने का प्रयत्न करते हैं हम अपने आपको प्रश्नों के उत्तर पाने में लगातार पाते हैं कि ***"परमेश्वर के वचन के सत्य को सही तरह से देखना होगा"*** (2 तीमुथियुस 2:15)। परमेश्वर हमें हमारे सभी प्रश्नों के साथ आने का निमंत्रण देता है (मत्ती 7:7–8)।

हमें हर पद के लिये आधारभूत प्रश्न पूछना बहुत आसान है: ***कौन, क्या, कब, कहां, क्यों और कैसे?*** मसीही जीवन के प्रति दो प्राथमिक प्रश्न रखकर उसके उत्तर को देखना चाहिये। ये किस प्रकार हमारे प्रभु यीशु के साथ करीबी सम्बन्ध बनाने में सहायता करता है (फिलिप्पियों 3:10) और तब हम कैसे जियेंगे (यूहन्ना 7:17)?

क. हर पद के लिये छः मूल प्रश्न

1. कौन?

जैसा हम पूछते हैं कि हम "कौन" हैं, को खोज रहे कि हम से कौन बोल रहा है और किसके लिये कहा गया है। एक उदाहरण उत्पत्ति 22:2 में पाया जाता है जब परमेश्वर ने अब्राहम को उसके पुत्र को बलिदान करने को कहा जो उसके लिये एकलौता पुत्र था। इस हालत में परमेश्वर ने अब्राहम से सीधे बात की किसी और से नहीं। इसलिये हम जो परमेश्वर का वचन सुनने वाले हैं, उसकी आज्ञा मानने को बाधित नहीं हैं।

2. क्या?

"क्या" शब्द उस वास्तविकता से निपटता है जो कुछ कहा गया। मसीह यीशु को प्रकाशितवाक्य 5 में "मेमने" की तरह बताया गया है। इसका मतलब ये नहीं कि वह चार पैर का जानवर है पर उसके बलिदान को जो पाप के लिये बताता है (यूहन्ना 1:29), जो वास्तविक है।

3. कब?

प्रश्न "कब" समय सीमा को बताया है जो कुछ विशेष हिस्सा संदर्भ में देता है। उदाहरण के लिये अब्राहम का विवाह उसकी आधी बहन सारा को अनैतिक बताया जाये जब तक पाठक ये समझता है कि ये विवाह व्यवस्था देने के पहले हुआ था, जो ऐसी चीज़ की मनाही करती है। जबकि व्यक्तिगत पाप कोई विषय नहीं है जबकि कोई व्यवस्था नहीं है (रोमियों 4:15)। अब्राहम के मामले में हम उसके विवाह को पाप नहीं मानते हुए समाप्त करते हैं। प्रश्न "कब" का स्पष्ट उत्तर समझ पूरा करने के लिये जटिल है।

4. कहां?

"कहां" भूगोल से और उस संस्कृति से सम्बन्ध रखता है जिसमें ये हिस्सा लिखा गया है। बाइबल में हम शीघ्र शीघ्र पाते हैं ये कहावत "यरूशलेम तक"। बहुत सी संस्कृतियों में ये कहावत "वहां तक" का मतलब होता है उत्तर की ओर यात्रा करना। फिर भी बाइबल आधारित उद्देश्य निर्देश देना नहीं पर ऊपर उठाना है। जब यीशु गलील से आया और यरूशलेम की ओर जा रहा था वह वास्तव में दक्षिण की ओर यात्रा कर रहा था और ऊपर चढ़ाई पर जा रहा था।

5. क्यों?

प्रश्न "क्यों?" अक्सर उत्तर देने को बहुत कठिन होता है। उत्तर अक्सर दूसरे हिस्से को अध्ययन करने पर पाया जाता है। यदि एक यशायाह 7:14 के शब्दों को पढ़ता है जो ये कहता है, ***"और कुवांरी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इमानुएल रखा जायेगा"।*** स्पष्ट प्रश्न होगा कि एक कुंवारी क्यों? हम इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दें "कि इस प्रकार ही परमेश्वर चाहता था" जबकि ये उत्तर सही है पर पूरा नहीं है।

जब हम उत्तर का इन्तजार करते हैं हम रोमियों 5 में वह हिस्सा पायेंगे जो बताता है कि आदम के पाप का असर मानव जाति पर पड़ता है। हम पाते हैं कि मनुष्य के द्वारा आदम (के द्वारा) मानव जाति के हर सदस्य को पाप का स्वाभाव दिया गया है। यदि यीशु का संसारिक पिता होता, तो उसका स्वाभाव भी पापमय होता। "क्यों" का उत्तर इस मामले में मसीह की योग्यता में पाप का दाम चुकाने के लिये गम्भीर है।

6. **कैसे?**

प्रश्न "कैसे" का भी उत्तर देना अक्सर कठिन होता है। शायद हम पूछें, "कि यीशु पानी पर कैसे चला?" साधारण उत्तर है कि वह पवित्र आत्मा पर निर्भर रहा (लूका 4:18)। हम ये भी पूछ सकते हैं, "परमेश्वर इतिहास को कैसे नियंत्रित करता है जब कि मानव जाति के पास चुनने की स्वतंत्रता है?" इस प्रश्न का उत्तर आसान नहीं है इसको हम अपने अध्ययन में बाद में खुलासा करेंगे।

ख. दो महत्वपूर्ण व्यक्तिगत प्रश्न

1. **हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ करीबी व्यक्तिगत सम्बन्ध विकसित करने में ये किस प्रकार सहायता कर सकता है?**

ये महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक है जिसे हम पूछ सकते हैं। ज्ञान जो हमने परमेश्वर के वचन के अध्ययन से प्राप्त किया है उसे विश्वास के साथ जुड़ जाना चाहिये (इब्रानियों 11:6)। जिससे हमारा प्रभु के साथ सम्बन्ध बढ़ेगा। हमें परमेश्वर के वचन पर सही और निर्भर रहने के लिये विश्वास करना चाहिये। परिणाम ऐसा सम्बन्ध प्रभु के साथ होगा जिसका आधार या नींव उसका प्रेम होगा और जो मानव ज्ञान से परे होगा। पौलुस प्रेरित ने स्पष्टता से कहा – इफिसियों 3:14–19 में जब उसने लिखाः

> ***"मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक घराने का नाम रखा जाता है कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें ये दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ, और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेंव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ, कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊंचाई और गहराई कितनी है और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे हैं कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ"।***

यदि हम साधारण तौर से परमेश्वर के वचन का अध्ययन अपने ज्ञान के लिये कर रहे हैं और परमेश्वर के प्रेम और दूसरों के प्रेम में बढ़ना नहीं खोज रहे (मरकुस 12:29–31) तो हम अक्खड़ या घमन्डी बन रहे हैं (1 कुरिन्थियों 8:1)। पौलुस प्रेरित जो दूसरों की अपेक्षा अधिक धार्मिक शिक्षा जानता था (2 कुरिन्थियों 12:1–4) ने ये कहकर अपनी महानतम इच्छा प्रगट की, ***"कि मैं उसे जानूं"*** (फिलिप्पियों 3:10)। पौलुस, फरीसी होकर वह पहले ही से बौद्धिकवाद की यात्रा में रहा था पर एक मसीही होकर वह जीवित परमेश्वर के साथ विशाल सम्बन्ध बनाने लगा।

परमेश्वर के वायदों की ओर देखो और उन पर भरोसा करो, ***"जिससे कि आप अपने प्रभु यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ"*** (2 पतरस 3:18)।

2. **तब हम कैसे जियेंगे?**

एक बार जब हम जिन पदों का अध्ययन कर रहे उसके अर्थ को समझ लेते तो पता करना है कि वह किस प्रकार प्रतिदिन के जीवन में लागू होता है। हमें इब्रानियों 12:1–3 में इस विचारधारा का सुन्दर उदाहरण दिया है। पद 1 और 2 ये बताते हैंः

> ***"इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है तो आओ हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा"।***

इब्रानियों के लेखक ने जो उदाहरण इन दोनों पदों में चुना वह ये है कि एक दौड़ को दौड़ना है। लोग मंच पर से देख रहे हैं (अध्याय 11 के नायकानों को) दौड़ में गति और दूरी है और जीतने वाले को सम्मान का स्थान मिलता है। भाग लेने वाले अतिरिक्त भार को निकाल देते हैं नहीं तो वह उन्हें धीमा कर देगा या कोई रुकावट उसे रोक दे। उसकी आंख अन्तिम रेखा पर लगी रहती है। एक (यीशु) जो पहले ही दौड़ दौड़ चुका है और जीत चुका है, खड़ा होता है। विशेष आनन्द थकान की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है इस प्रकार दौड़ने वाला अनुभव करता है।

तब पद 3 में लेखक दो पदों को हमारे जीवनों में लागू करता है और लिखता है:

> ***"इसलिये उस पर ध्यान करो जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना बड़ा वाद–विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो"।***

जब हम परीक्षा और विरोध का सामना करते हैं, पीड़ा और दुःख, शर्म और मसीह की खातिर निन्दा का सामना करते हैं तो हमें 'अपने अगुवे पर' ध्यान देकर उसके द्वारा प्रोत्साहित होना चाहिये! ये अहसास करें, ***"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला"*** (इब्रानियों 4:15)।

ग. यदि हम सब प्रश्नों का उत्तर न दे सकें तो क्या?

प्रश्न और उनके उत्तर महत्वपूर्ण हैं, हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमारे जीवित परमेश्वर के साथ का सम्बन्ध का आधार विश्वास पर है (इफिसियों 2:8–9; कुलुस्सियों 2:6) तो हम सभी उत्तरों को नहीं पा सकते। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी है कि हमारे सारे प्रश्नों का उत्तर दिया जायेगा (1 कुरिन्थियों 13:12)। हमें जीवन में अगुवाई करने के लिये धर्मशास्त्र काफी सूचनाएं उपलब्ध कराता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 1, भाग 5

1. पढ़ें यिर्मयाह 39:1–2 और छः आधारभूत प्रश्नों का उत्तर दें – हर पद पर ये पूछें:

कौन? =

क्या? =

कब? =

कहाँ? =

क्यों? =

कैसे? =

2. पढ़ें मरकुस 12:29–31; हमें किन चार चीज़ों के साथ प्रभु से प्रेम करना चाहिये?

3. पढ़ें इब्रानियों 11:6 और 1 यूहन्ना 2:7–11 मसीही जीवन के लिये कौन सी दो चीज़ें आवश्यक हैं?

अध्याय 2

पुराने नियम का सर्वेक्षण

परिचय

यह पुराने और नये नियम की पुस्तकों का छोटा सर्वेक्षण है। इसका लक्ष्य ये है कि पाठकों को लेखक के विषय में जानकारी देना, लिखने की तिथि, मुख्य लोग, विषय और अभिप्राय उसके साथ वह सारांश कि इस पुस्तक में किस प्रकार मसीह को चित्रित किया गया है। हर पुस्तक में उसके लेखन सामग्री की रूप–रेखा दी गई है।

बाइबल की हर पुस्तक का सर्वेक्षण परमेश्वर के वचन के विद्यार्थियों के लिये महत्वपूर्ण है जिससे विद्यार्थी सामान्य घटनाओं और बाइबल के विषयों के प्रति समझ प्राप्त कर सके। यह स्पष्ट है कि जितना अधिक समय हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन में व्यतीत करते तो उसके विषय में और अधिक जान पायेंगे। पर जैसा इस अध्ययन का रूप रहा है – हम बड़ी तस्वीर की खोज में है जिससे बाद में हम सही तरह से विस्तार से देख सकें। अध्याय 1 में पूरी बाइबल का दृष्टिकोण दिया गया है। ये अध्याय हमारे अध्ययन को व्यक्तिगत पुस्तक के पुनःदृष्टि को सकरा बनाकर आरम्भ करता है।

पुराने और नये नियम की तुलना

मसीह बाइबल की सभी पुस्तकों का विषय और आशा है। बहुत से अवसरों पर, मसीह ने दावा किया कि वह पूरे धर्मशास्त्र का विषय हैः–

1. मत्ती 5:17 में उसने कहा, ***"मैं भविष्यद्वकताओं की पुस्तकों को लोप करने नहीं पर पूरा करने आया हूं"।***
2. जब इमाऊस के रास्ते में चेलों के साथ चलते हुए लूका हमें बताता है, ***". . .मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करने सारे पवित्र शास्त्रों में से अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया"*** (लूका 24:27)।
3. बाद में उस शाम को प्रभु ने बाकी दस चेलों से इसके विषय में बातें की। लूका 24:44–47 में रिकार्ड करता है, ***"फिर उसने उनसे कहा, ये मेरी वे बातें हैं जो मैंने तुम्हारे रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं सब पूरी हों। तब उसने उन्हें पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी। और उनसे कहा, यों लिखा है कि मसीह दुःख उठायेगा और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन–फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से लिया जायेगा"।***
4. यूहन्ना 5:39 और 40 में जब यहूदियों से वार्ता होती तो यीशु ने कहा, ***"तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है और ये वही है जो मेरी गवाही देता है, फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते"।***

साथ में, हमें प्रकाशितवाक्य 19:10 में बताया गया है, ***". . . क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है"।*** दूसरे शब्दों में भविष्यवाणी का स्वाभाव और अभिप्राय और पूरे धर्मशास्त्र में इसका मतलब मसीह यीशु को प्रगट करना है। स्पष्ट है कि मनुष्य के पतन और उसकी आवश्यकता में – मसीह ही दोनों पुराने और नये नियम का विषय है क्योंकि ये केवल उसी के ही द्वारा है कि हम अनन्त जीवन और बहुतायत का जीवन पा सकते हैं (यूहन्ना 10:10)।

पुराना नियम		
मसीह के लिये – की नींव मसीह के लिये – तैयारी कविताएं – मसीह के लिये प्रेरणा भविष्यवाणी – मसीह की आशा	तैयारी एवं नींव	पुराना नियम मसीह के आगमन की नींव रखता है उद्धारकर्ता की नाईं, उसे भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा की नाईं लेना और यातना सहने वाला उद्धारकर्ता जिसे राज्य करने से पहले मानव के पापों के लिये मरना है।

नया नियम		
सुसमाचार	प्रगटीकरण	लम्बे समय से उद्धारकर्ता के आने की कहानी बताता है जो महायाजक, भविष्यद्वक्ता और राजा की नाईं होगा, उसका व्यक्तित्व वा कार्य
प्रेरितों के काम	विस्तृत करना	पवित्र आत्मा द्वारा कार्य, प्रेरितों के काम दावा करता है कि उद्धारकर्ता आ गया है
पत्रियां	वर्णन एवं लागू करना	मसीह के व्यक्तित्व व कार्य के पूर्ण विशेषता विकसित करता है, और इसे मसीही चाल में किस प्रकार असर डालना चाहिये – मसीह के संसार में राजदूत होकर।
प्रकाशितवाक्य	अन्त	अन्त की घटनाओं और प्रभु के वापस आने की घटनाओं की आशा करना, उसके अन्त समय का राज्य और अनन्त राज्य।

कृपया नोट करें कि हर व्यक्तिगत पुस्तक की रूपरेखा, शीर्षक आयतों के हिस्सों के लिये नहीं दिये गये हैं। ये विद्यार्थी को करने के लिये हैं। हर हिस्से का अध्ययन कर उसका शीर्षक दें।

भाग 1

व्यवस्था : प्रथम पांच पुस्तकें

बाइबल की प्रथम पुस्तकें "पेन्टाटयूट" कहलाती हैं जिसका अर्थ "पांच पुस्तकें" है। वे व्यवस्था की पुस्तकों के नाम से जानी जाती हैं क्योंकि उनमें व्यवस्था और परमेश्वर द्वारा दिये गये निर्देश हैं जो इस्राएली लोगों को मूसा के माध्यम से दिये गये हैं। इन किताबों को मूसा ने लिखा – केवल व्यवस्थाविवरण के आखरी हिस्से को छोड़ क्योंकि ये उसकी मृत्यु के बारे में बताती है। ये पांच पुस्तकें मसीह के आने की नींव रखती हैं कि यहां उसमें परमेश्वर चुनाव करता और इस्राएल जाति को अस्तित्व में लाता है। परमेश्वर के चुने हुए लोग होकर इस्राएल पुराने नियम को रखने/मानने वाला बन गया – प्रतिज्ञाओं की वाचाओं को प्राप्त करने वाले और मसीह का वंश (रोमियों 3:2; 9:1–5)।

उत्पत्ति

(प्रारम्भ की पुस्तक)

लेखक एवं पुस्तक का नाम : मूसा ने इस पुस्तक को लिखा। उत्पत्ति का मतलब "आरम्भ" है और इसे सेप्टुआजिन्ट (LXX) से लिया गया है। जो पुराने नियम का इब्रानी से यूनानी में अनुवाद है।

लेखन की तिथि : ई.पूर्व 1450–1410

विषय और अभिप्राय : उत्पत्ति को साधारण पढ़ना ये प्रगट करता है – आशीष और श्राप का बड़ा विषय। आज्ञाकारिता और विश्वास के लिये उसमें आशीष हैं जैसे अदन की वाटिका में, पर आज्ञा उल्लंघन के लिये श्राप है। पूरी पुस्तक इसी विषय पर ही है। पर शायद मुख्य विषय अब्राहम और उसकी वाचा के द्वारा एक जाति या देश का चुनाव करना है। अब्राहम के द्वारा परमेश्वर जातियों को आशीष देता है (उत्पत्ति 12:1–3; 15:1–21)।

उत्पत्ति का अर्थ केवल "आरम्भ" नहीं है, पर ये प्रारम्भ की पुस्तक है। उत्पत्ति की पुस्तक हमें ऐतिहासिक संदर्भ देती है जिससे बाकी के सभी प्रगटीकरण आगे बढ़ते हैं। उत्पत्ति की पुस्तक में बाइबल के सभी बड़े विषयों का मूल–आरम्भ है। ये कई शुरुआतों की पुस्तक है। इसमें हम सृष्टि का आरम्भ, पुरुष व स्त्री, मानव पाप, और मानव जाति का पतन, परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा और इस्राएल जाति का परमेश्वर की चुनी हुई जाति का आरम्भ क्योंकि उनके लिये परमेश्वर का विशेष अभिप्राय जो उद्धारकर्ता मसीह का वंश है ये सारी बातें हम देखते हैं। उत्पत्ति में हम आदम और हव्वा के बारे में सीखते हैं, परीक्षा लेने वाले शैतान के विषय, नूह के जल प्रलय के विषय, अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ और उसके भाइयों के विषय। इसमें विवाह का आरम्भ, परिवार, कार्य, पाप, हत्या, बड़ी सजा, बलिदान, जातियां, भाषाएं, संस्कृतियां, सब्त – एक सरकार बनाने का प्रयास, बाबुलवाद (धर्म जो बाबुल के गुम्मद के समय विकसित हुआ) बाइबल ऐतिहासिक प्रगटीकरण है। ये इतिहास में परमेश्वर की गतिविधियों का लेखा–जोखा है।

उत्पत्ति में एक सामान्य बात पाई जाती वह है "ये इनकी सन्तान है"। इसका परिचय करने के लिये ये ग्यारह बार इस्तेमाल किया गया कि अगला हिस्सा पाठक के लिये ये जानकारी कि महत्वपूर्ण घटनाओं और इस्राएल के लोगों के साथ क्या हुआ।

मुख्य लोग : आदम, हव्वा, नूह, अब्राहम, सारा, इसहाक, रिबका, ऐसाव, याकूब, राहेल और यूसुफ।

मसीह उत्पत्ति में देखा जाता है – भविष्यवाणी के रूप में : पतन के शीघ्र बाद में उद्धार का वायदा स्त्री के बीज के द्वारा दिया गया (उत्पत्ति 3:15) पर मसीह के सम्बन्ध पूरी उत्पत्ति में बताये गयेः शेत का वंशज (4:25), शेम की सन्तान (9:26), अब्राहम का परिवार (12:3), इसहाक का बीज (26:3), याकूब के पुत्र (46:3) और यहूदा की जाति 49:10)।

बहुत सी कुंजियां "प्रकार" की है जो उद्धारकर्ता की तस्वीर उत्पत्ति में बताती हैं **आदम** मसीह के प्रकार (तरह) का है (रोमियों 5:14)।

आदम पुरानी सृष्टि का सिर है और मसीह नई आत्मिक सृष्टि का सिर है।

हाबिल के बलिदान का खून मसीह की ओर संकेत करता है जो हमारे लिये मरेगा। कैन के द्वारा हाबिल को घात किया जाना भी मसीह की मृत्यु का उदाहरण है।

मलिकीसिदिक एक राजा और याजक मसीह के प्रकार का है (इब्रानियों 7:3)।

यूसुफ जिसे उसके पिता ने बहुत प्यार किया, अपने भाइयों के द्वारा पकड़वाया गया, पर फिर भी उनके छुटकारे का साधन बन गया – मसीह की तरह।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

जिन हिस्सों का शीर्षक नहीं दिया गया उनके शीर्षक दें। आपके शीर्षकों में उस एक दूसरे के सम्बन्धों को दिखाने का प्रयास करें। उदाहरण के लिये, भाग ग में, निम्नलिखित एक शीर्षक दे सकोः–

1. *नूह का प्रलय के लिये तैयारी*
2. *प्रलय में नूह*
3. *प्रलय का समाप्त होना*
4. *नूह के साथ वाचा*
5. *नूह का परिवार*

1. चार घटनाएं (1:1–11:32)

क. संसार एवं मनुष्य की सृष्टि (1:1–2:25)

1:1–2:3	2:4–25	

ख. मानव का भ्रष्टाचार, पतन (3:1–5:32)

3:1–24	4:1–24	4:25–5:32

ग. मनुष्य व विनाश, जल प्रलय (6:1–9:29)

6:1–22	8:1–22	9:18–29
7:1–24	9:1–17	

घ. मानव का तितर–बितर होना, जातियों का (10:1–11:32)

10:1–32	11:1–9	11:10–31

2. चार लोग – एक जाति का चुनाव और छुटकारा देने वाले की तैयारी (12:1–50:26)

क. अब्राहम (विश्वास का और इस्राएल देश का पिता) (12:1–23:20)

12:1–20	17:1–27	21:1–34
13:1–18	18:1–33	22:1–24
14:1–16	19:1–29	23:1–20
14:17–21	19:30–38	
16:1–16	20:1–18	

ख. इसहाक (प्रतिज्ञा का प्रेम पुत्र) (24:1–26:35)

24:1–67	25:19–34	26:26–35
25:1–11	26:1–17	
25:12–18	26:18–25	

ग. याकूब (षड़यंत्र बनाना और ताड़ना) (27:1–36:43)

27:1–46	31:1–55	34:1–31
28:1–22	32:1–23	35:1–8
29:1–35	32:24–32	35:9–29
30:1–43	33:1–20	36:1–43

घ. यूसुफ (यातना सहना और महिमा) (37:1–50:26)

37:1–36	40:1–41; 57	49:1–50:21
38:1–30	42:1–45:28	50:22–26
39:1–23	46:1–48:22	

निर्गमन

(प्रारम्भ की पुस्तक)

लेखक और पुस्तक का नाम : मूसा ने इस पुस्तक को लिखा। निर्गमन एक लेटिन भाषा का शब्द है जो यूनानी *"एक्सोडोस"* से लिया गया है। इसका नाम उन लोगों ने दिया जिन्होंने इसका अनुवाद यूनानी सेप्टुआजिन्ट (LXX) में किया। शब्द का अर्थ है "बाहर जाना"।

लेखन की तिथि : ई.पू. 1450–1410

विषय और अभिप्राय : निर्गमन में दो विषय आते हैं (1) छुटकारा जैसे फसह की तस्वीर और (2) मिस्र की दासत्वता के बन्धनों से छुटकारा जैसा मिस्र से बाहर उनके निकास में देखा गया है और लाल समुद्र का पार किया जाना।

मिस्र में बढ़ने के करीब 200 साल बाद। परमेश्वर के चुने हुए लोगों का निष्कासन का इतिहास जारी रहा, इस्राएल का देश और उनका मिस्र से छुटकारे का वर्णन और व्यवस्था का दिया जाना। ये जन्म का बयान करता, इतिहास और परमेश्वर के द्वारा मूसा का इस्राएलियों को मिस्र के बन्धन से छुटकारा प्रतिज्ञा को देश में पहुंचाने की बुलाहट, कनान की धरती। फसह के मेमने के द्वारा पहलौठों को छोड़ देना, दस विपत्तियों के साथ आश्चर्यकर्म और लाल समुद्र का पार करना, परमेश्वर ने अपने लोगों को दिखाया कि वह न केवल मिस्र के फिरौन से अधिक शक्तिशाली है पर सार्वभौम परमेश्वर है – यहोवा, छुटकारे और प्रगटीकरण का परमेश्वर है।

एक बार जब लोगों ने लाल समुद्र को पार कर लिया था और जंगल में आ गये थे। परमेश्वर ने उन्हें अपनी धार्मिक व्यवस्था दी और ये घोषणा की कि वे एक बहुमूल्य सम्पत्ति हैं और याजकों का राज्य होगा, एक पवित्र देश जो देशों के लिये गवाही होगा (निर्गमन 19:4–7)। ये पवित्र व्यवस्था, दस आज्ञाओं के साथ, परमेश्वर की पवित्रता को प्रगट किया, उन्हें सिखाया कि किस प्रकार परमेश्वर से और एक दूसरे से प्रेम करना है, पर इस प्रक्रिया में इसने ये भी दिखाया कि सब किस प्रकार उसकी पवित्रता से रहित हैं और परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये क्षमा की आवश्यकता है जो वह देता है। ये वाचा के तम्बू में उपलब्ध कराया गया था, बलिदान और लेवियों का याजकपन।

विशेष लोग : मूसा, हारून, मरियम, फिरौन

मसीह निर्गमन में देखा गया : जबकि निर्गमन में मसीह के बारे में सीधी भविष्यवाणी नहीं है, बहुत से सुन्दर उद्धारकर्ता के समान हैं। बहुत से तरीकों से, **मूसा** एक प्रकार से मसीह के समान है। व्यवस्थाविवरण 18:15 दिखाता है कि मूसा एक भविष्यद्वक्ता होकर मसीह की तरह समझा जाता है। दोनों नाते–रिश्तेदार छुड़ाने वाले हैं जो बचपन ही में खतरे में थे, दूसरों की सेवा करने के लिये अपनी शक्ति का तिरस्कार किया और बिचवई की नाई कार्य किया, व्यवस्था देने वाले और छुड़ाने वाले।

फसह एक विशेष प्रकार का मसीह है जो परमेश्वर का पाप रहित मेमना है (यूहन्ना 1:29,36; 1 कुरिन्थियों 5:7)।

सात भोज – हर एक उद्धारकर्ता की तस्वीर बनाता है।

स्वयं निष्कासन, जिसे पौलुस बपतिस्में से जोड़ता है, मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में हमारी पहचान मसीह के साथ करता है (1 कुरिन्थियों 10:1–2; रोमियों 6:2–3)।

मन्ना और पानी दोनों मसीह की तस्वीर दिखाते हैं (यूहन्ना 6:31–35, 48–63; 1 कुरिन्थियों 10:3–4)।

तम्बू उद्धारकर्ता की तस्वीर प्रगट करता – उसके सामग्री, रंग, फर्नीचर, प्रबन्ध और बलिदान चढ़ाने को (इब्रानियों 9:1–10:18)।

महायाजक – स्पष्टता से मसीह और उसकी सेवकाई के विषय में बताता है (इब्रानियों 4:14–16, 9:11–12, 24–28)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. मिस्र से छुटकारा (1:1–18:27)

क. बंधुआई में (1:1–12:32)

1:1–7	5:1–23	9:8–17
1:8–14	6:1–13	9:18–35
1:15–22	6:14–30	10:1–20
2:1–14	7:1–7	10:21–29
2:15–25	7:8–13	11:1–10
3:1–9	7:14–25	12:1–13
3:10–22	8:1–15	12:14–22
4:1–13	8:16–32	12:23–32
4:14–31	9:1–7	

ख. बन्धन से बाहर (खून और सामर्थ से छुटकारा) (12:33–14:31)

12:33–41	13:1–16	14:1–12
12:42–51	13:17–22	14:13–31

स. सीनै की यात्रा (शिक्षा) (15:1—18:27)

15:1—21	16:8—21	17:8—16
15:22—27	16:22—36	18:1—16
16:1—7	17:1—7	18:17—27

2. परमेश्वर से प्रगटीकरण (19:1—40:38)

क. व्यवस्था का देना (19:1—24:18)

19:1—17	22:1—15	23:20—33
19:18—25	22:16—31	24:1—18
20:1—26	23:1—9	
21:1—36	23:10—19	

ख. तम्बू की संस्था (25:1—31:18)

25:1—9	26:31—37	29:31—46
25:10—22	27:1—8	30:1—21
25:23—30	27:9—21	30:22—33
25:31—40	28:1—43	30:34—38
26:1—14	29:1—9	31:1—11
26:15—30	29:10—30	31:12—18

ग. व्यवस्था का तोड़ना (32:1—34:35)

32:1—10	33:1—11	34:10—28
32:11—18	33:12—23	34:29—35
32:19—35	34:1—9	

घ. तम्बू का निर्माण (35:1—40:38)

35:1—9	36:8—38	39:1—43
35:10—19	37:1—29	40:1—33
35:20—35	38:1—20	40:34—38
36:1—7	38:21—31	

तम्बू का नक्शा

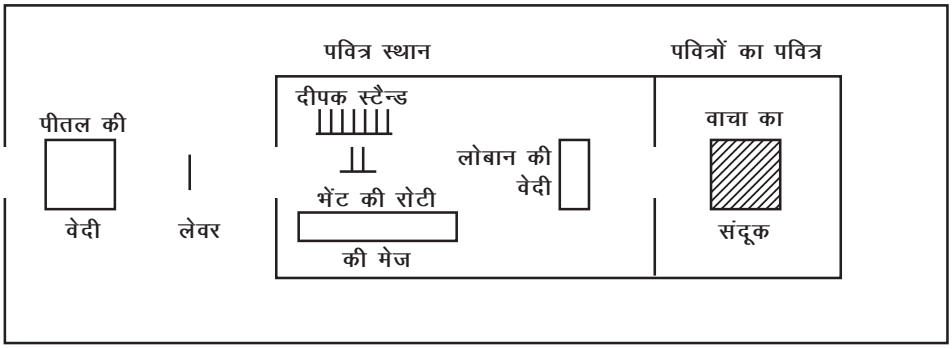

लैव्यव्यवस्था

(पवित्रता की पुस्तक)

लेखक और पुस्तक का नाम : इस पुस्तक को मूसा ने लिखा। लैव्यव्यवस्था नाम इसका "सैप्टुआजिन्ट" से लिया गया है जिसका अर्थ "लेवियों से सम्बंधित" है। लेवी वो याजक थे जिन्हें परमेश्वर ने देश की सेवा के लिये चुना था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में परमेश्वर के दिये हुए बहुत से नियम हैं उन्हें सीधे परमेश्वर की अराधना के विषय में याजक का कार्य करने को दिये हैं।

लेखन तिथि : ईसा. पूर्व 1450—1410

विषय और अभिप्राय : लैव्यव्यवस्था 11:45 कहता है, ***"पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूं"*** जो निर्देश इसमें दिये गये हैं ये पुस्तक दिखाती है कि इस्राएलियों को परमेश्वर के सन्मुख पवित्र लोगों की तरह चलना है। लैव्यव्यवस्था इस प्रकार बनाई गई कि इस्राएलियों को सिखाये कि (1) कैसे आराधना करना है और परमेश्वर के साथ चलना है। (2) किस प्रकार पूरे देश को याजकों के देश की बुलाहट को पूरा करना है। लैव्यव्यवस्था का महान विषय **"पवित्रता"** है। एक को पवित्र बनाने की प्रक्रिया शुद्धिकरण करना है। पवित्र परमेश्वर के पास केवल याजकों के मनन के बलिदान के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

विशेष लोग : मूसा और हारून

लैव्यव्यवस्था में जैसे मसीह को देखा गया : निर्गमन के समान बहुत से प्रकार के मसीह लैव्यव्यवस्था में दिखाई दे सकते हैं।

पांच प्रकार के बलिदान – सभी मसीह के पाप रहित जीवन और परमेश्वर के प्रति समर्पण के कार्य को बताते हैं जिससे कि हम परमेश्वर के साथ संगति कर सकें।

महायाजक लैव्यव्यवस्था में बहुत ही विशिष्ट प्रकार का मसीह माना जाता है।

सात भोज भी उद्धारकर्ता के समान की शिक्षा हमें सिद्ध व्यक्ति बनने को दी जाती है। उसके बदले में बलिदान, उसका मृतकों में से जी उठना और उसका दाम देकर छुड़ाने का कार्य ऐसी शिक्षा दी जाती है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. बलिदान की व्यवस्था (1:1–17:16)

क. परमेश्वर तक पहुंचने हेत् (1:1–7:38)

1:1–17	4:1–35	6:8–30
2:1–16	5:1–19	7:1–38
3:1–17	6:1–7	

ख. याजकों के लिये (8:1–10:20)

8:1–36
9:1–14
9:15–24
10:1–20

ग. शुद्धता के विषय (11:1–15:33)

11:1–12	13:1–59	15:1–33
11:13–47	14:1–32	
12:1–8	14:33–57	

घ. राष्ट्रीय छुटकारे के विषय (16:1–17:16)

16:1–28	16:29–34	17:1–16

2. शुद्धिकरण की व्यवस्था (18:1–27:34)

क. परमेश्वर के लोगों के लिये (18:1–20:27)

18:1–30	19:9–37
19:1–8	20:1–27

ख. परमेश्वर के याजकों के लिये (21:1–22:33)

21:1–24	22:1–16	22:17–33

ग. आराधना में (23:1–24:23)

23:1–25	24:1–16
23:26–44	24:17–23

घ. कनान की भूमि पर (25:1–26:46)

25:1–22	25:35–46	26:1–13
25:23–34	25:47–55	26:14–46

ङ. मन्नतों के विषय (27:1–34)

27:1–13	27:14–34

गिनती

(जंगल में भटकना)

लेखक और पुस्तक का नाम : इस पुस्तक को मूसा ने लिखा। इसका नाम इसके अध्याय 1 और 26 के इस्राएलियों की गिनती लेने के कारण पड़ा। पहले सीनै पर्वत पर और फिर दोबारा मोआब की धरती पर।

विषय और अभिप्राय : ई.पू. 1450–1410

विषय और अभिप्राय : यद्यपि इसका नाम लोगों की गिनती लेने पर पड़ा। ये प्रारम्भिक रूप से लोगों के 40 वर्ष तक जंगल में भटकने से सम्बंधित है। यात्रा जो केवल ग्यारह दिन की होनी चाहिये थी पर 38 वर्ष की यातना लोगों के अविश्वास और आज्ञा उल्लंघन के कारण बन गई। गिनती दिखाती है कि लोगों का परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से विश्वास को मिलाने की असफलता रही (इब्रानियों 3:16–4:2)। अतिरिक्त अधिक गिनती हमें सिखाती है, जबकि जीवन में "जंगल/बयाबान" का अनुभव होता है तो परमेश्वर के लोगों को उस दशा में नहीं ठहरना है। जो चुनाव हम करते हम अपनी ही दिशा चलने का चार्ट बना लेते हैं। इसे यहोशू बाद में दिखायेगा।

गिनती की पुस्तक में दूसरा महत्वपूर्ण विषय दिखाया गया है कि परमेश्वर की लगातार बार बार अपने लोगों की देखभाल भले ही उनके विद्रोह और अविश्वास दिखाया गया हो। उसने अद्भुत रीति से उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की। उसने उन्हें पानी, मन्ना और बटरें उपलब्ध कराईं। वह लगातार लोगों से प्रेम करता और क्षमा करता रहा – यहां तक कि उन्होंने शिकायत की, बड़बड़ायें और उसके विरुद्ध विद्रोह किया।

मुख्य लोग : मूसा, हारून, मरियम, यहोशू, कालेब, बालाक

गिनती में मसीह देखा गया : शायद कोई स्थान नहीं जहां मसीह को स्पष्ट रूप से और उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने को दिखाया गया केवल इसके कि सांप को ऊपर लटकाया गया (गिनती 21:4–9; यूहन्ना 3:14)।

चट्टान जिसने लोगों की प्यास बुझाई वह मसीह की तरह है (1 कुरिन्थियों 10:4)।

प्रतिदिन **मन्ना** मसीह की तस्वीर बताता जो रोटी स्वर्ग से उतर कर आई (यूहन्ना 6:31–33)।

बादल का खम्बा और **आग का खम्बा** मसीह की अगुवाई प्रगट करता है और शरण स्थान के शहर मसीह को हमारा न्याय से शरण स्थान दिखाता है।

अन्त में **लाल कलोर** भी मसीह की तरह है (गिनती 19)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. सीनै पर तैयारी (पुरानी पीढ़ी) (1:1–10:36)

क. लोगों के स्थान और उनकी गिनती (1:1–4:49)

1:1–46	3:1–24	4:1–20
1:47–54	3:25–39	4:21–28
2:1–34	3:40–51	4:29–49

ख. परमेश्वर का ज्ञान और लोगों का शुद्धिकरण (5:1–9:14)

5:1–10	6:22–27	8:5–22
5:11–31	7:1–89	8:23–26
6:1–21	8:1–4	9:1–14

ग. प्रतिज्ञा किये हुए देश की ओर भक्ति यात्रा (9:15–10:36)

9:15–23	10:1–10	10:11–36

2. पुरानी पीढ़ी की असफलता (11:1–25:18)

क. मार्ग में असन्तुष्ट होना (11:1–12:16)

11:1–9	11:16–30	12:1–16
11:10–15	11:31–35	

ख. कादेश–बर्ने में अविश्वास (13:1–14:45)

13:1–24	14:1–10	14:20–38
13:25–33	14:11–19	14:39–45

ग. प्रभु की ओर से अनुशासन (15:1–25:18)

15:1–13	18:8–32	21:21–35
15:14–31	19:1–22	22:1–21
15:32–41	20:1–7	22:22–41
16:1–40	20:8–22	23:1–30
16:41–50	20:23–29	24:1–25
17:1–13	21:1–5	25:1–9
18:1–7	21:6–20	25:10–18

3. नई पीढ़ी की तैयारी (26:1–36:13)

क. इस्राएल की पहचान (26:1–27:23)

26:1–65	27:1–14	27:15–23

ख. मन्नत और दान के नियम (28:1–30:16)

28:1–31	29:1–40	30:1–16

ग. देश की पहचान (31:1–36:13)

31:1–24	33:1–49	35:1–5
31:25–54	33:50–56	35:6–34
32:1–42	34:1–29	36:1–13

व्यवस्था विवरण

(व्यवस्था का पुनरावलोकन)

लेखक और पुस्तक का नाम : मूसा ने इस पुस्तक को लिखा। अंग्रेजी शीर्षक जो सेप्टुआ जिन्ट से आता है जिसका अर्थ "दूसरी व्यवस्था देना" है और 17:18 के गलत अनुवाद से आता है जिसका अनुवाद होना चाहिये था "इस व्यवस्था की प्रतिलिपि"। व्यवस्था विवरण दूसरी व्यवस्था नहीं है पर पुनःदृष्टि करना है और सीनै पर दिये गये व्यवस्था का विस्तार है।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 1410

विषय और अभिप्राय : ***"ध्यान देते रहो कहीं भूल ना जाओ"।*** चालीस वर्ष जंगल में भटकने के बाद इस्राएली प्रतिज्ञा किये देश में प्रवेश करने पर थे। इससे पहले कि वे गये ये आवश्यक था (कहीं वे भूल ना जायें कि परमेश्वर ने क्या किया है और वे कौन थे) कि उनको स्मरण दिलाया जाये कि परमेश्वर ने उनके लिये सब कुछ जो किया है और परमेश्वर की पवित्र व्यव्यस्था के विषय में जो उनकी उस देश में बने रहने की योग्यता इतनी विशाल थी और कि परमेश्वर के पवित्र देश में कार्य करने और याजकों का देशों में राज्य जैसा (व्यवस्थाविवरण 4:1–8)। इस विषय का भाग होकर या अभिप्राय, पुस्तक भी इस पर जोर डालती है उस शिक्षा की आवश्यकता पर कि बच्चे परमेश्वर को प्रेम करना और परमेश्वर की आज्ञा मानना सीखें।

व्यव्यस्थाविवरण परमेश्वर की इस्राएल के साथ वाचा के नवीनीकरण से समाप्त होती है (अध्याय 29)। यहोशू की नये अगुवे की तरह नियुक्ति (अध्याय 31) और मूसा की मृत्यु (अध्याय 34)।

विशेष लोग : मूसा और यहोशू

मसीह जैसा व्यवस्थाविवरण में देखा गया : मूसा के विषय में वर्णन 18:15 में दिया गया वह मसीह की स्पष्ट तस्वीर बताता है कि ये इस प्रकार पढ़ा जाता है, ***"तेरा यहोवा परमेश्वर . . . मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना",*** उसके आगे मूसा मसीह के प्रकार का है मसीह के अलावा भविष्यद्वक्ता के तीन स्थानों की पूर्ति करने वाला अकेला व्यक्ति था (34:10–12), याजक (निर्गमन 32:31–35) और राजा (यद्यपि मूसा राजा नहीं था, पर उसने इस्राएल के शासक की नाईं कार्य किया (33:4–5)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. परिचय (1:1–5)

2. इतिहास का दुहराया जाना (1:6—4:43)

1:6—18	2:26—37	4:1—43
1:19—46	3:1—17	
2:1—25	3:18—29	

3. व्यवस्था का दोहराया जाना (4:44—5:33)

4:44—49	5:1—21	5:22—23

4. व्यवस्था का लागू करना (6:1—11:32)

6:1—25	9:1—29	11:1—32
7:1—26	10:1—11	
8:1—20	10:12—22	

5. अतिरिक्त व्यवस्था (12:1—26:19)

12:1—32	18:9—22	23:1—25
13:1—18	19:1—13	24:1—5
14:1—29	19:14—21	24:6—22
15:1—23	20:1—20	25:1—19
16:1—22	21:1—23	26:1—19
17:1—20	22:1—12	
18:1—8	22:13—20	

6. वाचा की स्वीकृति (27:1—30:20)

27:1—26	28:15—68	30:1—14
28:1—14	29:1—29	30:15—20

7. अगुवे का बदलना (31:1—34:12)

31:1—13	32:1—52	34:1—12
31:14—30	33:1—29	

सारांश विषयों को स्मरण रखना

उत्पत्ति	देश का चुनाव
निर्गमन	देश का छुटकारा
लैव्यव्यवस्था	देश का शुद्ध किया जाना
गिनती	देश का निर्देशन
व्यवस्थाविवरण	देश की शिक्षा

भाग 2
ऐतिहासिक पुस्तकें

पुराने नियम का हर विभिन्न हिस्सा मसीह के सम्बन्ध में विशेष ध्यान केन्द्रित करता है। यहोशू से ऐस्तर तक हम पुस्तक के दूसरे झुण्ड पर आते हैं जो इस्राएल देश के इतिहास को बताता है। ये पुस्तकें देशों के जीवनों को उनके भूमि की सम्पत्ति से दो बंध ुवाई में जाना और धरती की हानि उठाना – अविश्वास और आज्ञा उल्लंघन करने के द्वारा। करीब इस्राएल के 800 वर्षों के इतिहास को संजोए रहता है। ये बारह पुस्तकें कनान को पराजित करना और ले लिया जाना बताती है, न्यायियों का राज्य, राजाओं की स्थापना, इस्राएल का दो भागों में विभाजित होना – उत्तरी और दक्षिणी राज्य। आरामी सेना के आधीन उत्तरी राज्य का चला जाना, दक्षिण राज्य का बाबुल की बंधुवाई में जाना और यरूशलेम में व्यक्ति जैसे नहेमिय्याह और एज्रा की अगुवाई में वापस आना।

जैसे ये पुस्तकें हमें मसीहा के आने की तैयारी कराती हैं – वे नीचे दिये गये विषयों का वर्णन करती हैः–

ऐतिहासिक पुस्तकें : मसीह के लिये तैयारी		
यहोशू न्यायियों रूत	देश के द्वारा जमीन लेना और देश का शोषण	परमेश्वर द्वारा शासितः ये पुस्तकें ई.पू. 1405–1043 के समय को दर्शाती हैं – जब इस्राएल पर परमेश्वर का शासन था।
1 शमूएल 2 शमूएल 1 राजा 1–10 1 राजा 11–22 2 राजा 1–17 2 राजा 18–25 1 इतिहास 2 इतिहास	देश की स्थापना देश का विकसित होना देश की महिमा देश का विभाजन उत्तरी राज्य का बिगड़ जाना दक्षिणी राज्य का बंधुवाई में जाना मंदिर की तैयारी मन्दिर का विनाश	राजा का राज्यः ये पुस्तकें इस्राएल के राज्य की इतिहास का पता लगाती हैं इसकी स्थापना से लेकर इसके ई.पू. 586 के विनाश तक।
एज्रा नहेम्मियाह ऐस्तर	मन्दिर की पुनः स्थापना यरूशलेम का पुनः निर्माण देश के लोगों का बचाव	पुनः स्थापना : ये पुस्तकें 70 साल की बंधुवाई के बाद की पुनः वापसी का वर्णन करती हैं (ई.पू. 605–536)

यहोशू
(अधिपत्य व विजय)

लेखक एवं पुस्तक का नाम : इस पुस्तक को यहोशू ने लिखा। पुराने नियम की प्रथम पांच पुस्तकों की तरह, इस पुस्तक का सही नाम पुस्तक के मुख्य मानव व्यक्तित्व के नाम से यानी यहोशू जो मूसा का सेवक था उसी के नाम से था। यहोशू का असली नाम होशे था (गिनती 13:8; व्यवस्थाविवरण 32:44)। जिसका अर्थ "उद्धार" है। पर बयाबान में भटकने के दौरान मूसा ने उसका नाम बदलकर यहोशू रख दिया जिसका मतलब है "यहोवा उद्धार" है (गिनती 13:16)। यहोशू – यहोशुआ का छोटा रूप है। ये भविष्यवाणी के पूर्व विचार और यहोशू के लिये याद दिलाने वाला था, भेदियों के लिये और लोगों के लिये कि शत्रुओं के ऊपर विजय और अधिप्तय मानव बुद्धि और शक्ति की अपेक्षा प्रभु की सामर्थ के द्वारा होगी। इस पुस्तक का नाम यहोशू इसलिये दिया गया कि यद्यपि यहोशू संसार की सबसे महान सेना की योजना का इतिहास था, उसकी बुद्धि और सेना की उपलब्धि प्रभु के द्वारा आई, केवल वही हमारा उद्धार है। ये स्वयं प्रभु था जिसने इस्राएल को विजय दिलाई और इस्राएल के शत्रुओं को परास्त करके उस भूमि का अधिपत्य/स्वामित्व दिया।

लेखन की तिथि : ई.पूर्व 1400–1370

विषय और अभिप्राय : प्रतिज्ञा की हुई भूमि का अधिपत्य, हराया जाना और विभाजित करना यहोशू का विषय और अभिप्राय है। यहोशू की पुस्तक परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उसकी प्रतिज्ञा के प्रति दिखाने के लिये बनाई गई है। इस्राएल के लिये ठीक वही करना जिसकी प्रतिज्ञा की गई है (उत्पत्ति 15:18; यहोशू 1:2–6; 21:43–45)। घटना जिसे यहोशू में रिकार्ड किया गया है चुना हुआ हिस्सा हैं कि परमेश्वर के विशेष हस्तक्षेप को लोगों के बदले सब प्रकार की विपरीत दशाओं में दिखा सके। परमेश्वर की प्रतिज्ञा अब्राहम और सारा के पुत्र इसहाक के जन्म में साबित होता है और उसके शहरपनाह के शहर को ले लिये जाने में दिखता

है। ये सब परमेश्वर का कार्य है जिसे मनुष्य कभी भी नहीं कर सकता था भले ही वह कितनी कड़ी परिश्रम कर लेता (रोमियों 4)।

मुख्य लोग : यहोशू, राहाब, कालेब

मसीह जैसा यहोशू में देखा गया : यद्यपि मसीह के विषय सीधे भविष्यवाणी तो नहीं थी बहुत से प्रकार हैं जो उद्धारकर्ता की ओर संकेत करते हैं। यहोशू उसी प्रकार का मसीह है दो मुख्य तरीकों से प्रथम उसका नाम – यहोशुआ का छोटा रूप यहोशू जिसका अर्थ "यहोवा उद्धार है" ये यूनानी नाम यीशु के समान है। प्रेरित 7:45 में यहोशू वास्तव में यीशु का नाम बुलाया गया है। दूसरा – यहोशू को मसीह के प्रकार के रूप में देखा गया उसके कामों में – जब उसने इस्राएलियों को "विजय" दिलाकर बाकी के प्रतिज्ञा किये स्थान पर ले गया, कनान की धरती पर (इब्रानियों 4:8) ये वो उदाहरण है जैसा हम विश्वास से मसीह में प्रवेश करते हैं। यहोशू निश्चय की उद्धारकर्ता की छाया है जो बहुत से पुत्रों को महिमा में अगुवाई करता है (इब्रानियों 2:9–10)। 5:13–15 में यहोशू की भेंट प्रभु की सेना के अधिकारी से हुई। ये विनाशक मसीह के मनुष्य रूप धारण करने का एक दृश्य है (जो मसीही फैना कहलाता है) जो वहां यहोशू को सिखाने के लिये था कि वह पक्ष लेने नहीं आया था पर पूर्ण सेनापति बनने आया था। अन्त में राहाब की लाल डोरी (2:21)। मसीह की मृत्यु, खून के उद्धार प्रगट करता है (इब्रानियों 9:19–22)। इस अन्यजाति की वैश्या ने परमेश्वर के सामर्थी कार्यों के विषय सुना, विश्वास किया और भेदियों की छिपाया, तब जब यरीहो को नष्ट किया गया वह छुड़ा दी गई और मसीही की वंशावली में पाई जाती है (मत्ती 1:5)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूपरेखा

1. **कनान का हमला (1:1–5:12)**

1:1–9	2:1–24	4:1–24
1:10–18	3:1–17	5:1–12

2. **कनान पर विजय (5:13–12:24)**

5:13–15	8:1–35	10:29–43
6:1–27	9:1–27	11:1–23
7:1–15	10:1–15	12:1–24
7:16–26	10:16–28	

3. **कनान का विभाजन (13:1–21:45)**

13:1–33	17:1–18	20:1–9
14:1–15	18:1–10	21:1–45
15:1–63	18:11–28	
16:1–10	19:1–51	

4. **समापन (22:1–24:33)**

22:1–34	24:1–28
23:1–16	24:29–33

न्यायियों

(धर्म–त्याग का चक्र, न्याय एवं छुटकारा)

लेखक और पुस्तक का नाम : रीति–रिवाज़ हमें बताते हैं कि इस पुस्तक को शमूएल ने लिखा, पर इसके लेखक के विषय में अनिश्चित है। न्यायियों के समय में शमूएल ने कुछ दस्तावेजों को इकट्ठा किया होगा। भविष्यद्वक्ता जैसे नातान और गाद का हाथ इसे समाप्त करने में हो सकता है (1 इतिहास 29:29)।

इब्रानी शीर्षक "शोफेटिम" है जिसका मतलब "न्यायियों, शासकों, छुटकारा देने वाले, या उद्धारकर्ता होता है। "शोफेट" न केवल न्याय बनाये रखने के विचार को रखता है और झगड़े को निपटाता है, पर इसका इस्तेमाल इस मतलब से भी किया जाता है "स्वतंत्र करना और पहले न्यायी लोगों को छुटकारा देते हैं तब वे शासन करते और न्याय देते हैं – छुटकारा देना"।

पुस्तक का नाम इसलिये दिया गया क्योंकि बहुत से अगुवे जो न्यायी कहलाते हैं जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल को उनके शोषण करने वालों से छुटकारा दिलाया। इस पुस्तक का शीर्षक सबसे उत्तम 2:16 में दिया गया है, ***"तौभी यहोवा उनके लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे"।*** अन्त में, फिर भी परमेश्वर इस्राएल का न्यायी और छुड़ानेवाला

इसलिये था कि स्वयं परमेश्वर इस्राएल के धर्म–त्याग के कारण उन्हें अनुशासित करने के लिये शोषण होने देता था (विश्वास जो गलत था) और तब न्यायियों को ठहराता था कि उन्हें छुड़ायें – उस समय जब पूरे देश ने पश्चाताप किया और सहायता के लिये चिल्लाये (11:27; 8:23)।

लेखक तिथि : ई.पूर्व 1050–1000

विषय और अभिप्राय : यहोशू और न्यायियों के बीच विरोधाभास हो रहा है। इस्राएल विजय के जोश से पराजय की पीड़ा में जाते, स्वतंत्रता से शोषण और आगे बढ़ने से वापस पीछे हटते। तो पुस्तक क्यों?

ऐतिहासिक रूप से : न्यायियों ने यहोशू के समय से शमूएल भविष्यद्वक्ता के बीच की खाई को पुल की नाईं पाटा और राज्य के आरम्भ तक जो शाऊल और दाऊद के समय की थी। ये लगातार गिरावट, शोषण, प्रार्थना और छुटकारे के ऐतिहासिक चक्र का रिकार्ड रखता है। ऐसा करने में, ये बयान बन जाता और इस्राएल में राजा की आवश्यकता का कारण बन जाता। हर व्यक्ति वही करता जो उसकी दृष्टि में ठीक था (21:25), देश को एक धार्मिक राजा की आवश्यकता थी।

धार्मिक सिद्धान्त अनुसारः न्यायी हमारा ध्यान बहुत से महत्वपूर्ण सत्यों की ओर खींचते हैं। जैसा परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण में चितौनी दी थी, आज्ञाकारिता आशीष लाती है पर आज्ञा उलंघन का परिणाम परमेश्वर का अनुशासन और उत्पीड़न/दमन होती है। पर न्यायी भी हमें ये याद दिलाते हैं कि जब लोग प्रभु की ओर मुड़ते, उसे पुकार उठते और पश्चाताप करते परमेश्वर जो अनुग्रहकारी, दयालु है, छुटकारे में उसका उत्तर देता है। न्यायी लोग परमेश्वर से दूर चले जाने के चक्र का वर्णन उसके विषय को खोलने पर करते हैं – उसके बाद उन्हें उत्पीड़न में पड़ना पड़ता है जो दैविय अनुशासन होता, उसके बाद लोगों के द्वारा बिनती और पश्चाताप किया जाता, उसके पश्चात् परमेश्वर द्वारा न्यायी ठहराये जाते जो उनको छुटकारा दिलाते थे।

मुख्य लोगः न्यायी – ओतनिएल, ऐहूद, शमगर, दबोरा, और बाराक, गिदोन, तोला और ज़ैर यिप्ताह, इब्जान, इलोन, अबादोन और शिमशोन। जाने माने सबसे उत्तम न्यायी ये थेः दबोरा, गिदोन और शिमशोन।

न्यायियों में मसीह देखा गयाः जबकि हर न्यायी ने न्यायी छुड़ाने वाले के रूप में कार्य किया उन्होंने उद्धारकर्ता की तस्वीर की तरह सेवा की उसके कार्यों में उद्धारकर्ता की तरह, और धार्मिक छुड़ाने वाले राजा की तरह।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पतन – एक परिचयः न्यायियों के समय के कारण (1:1–3:8)**

1:1–26	2:1–5	2:11–23
1:27–36	2:6–10	3:1–8

2. **छुटकारा – इतिहास और न्यायियों के समय का शासन (3:8–16:31)**

3:8–14	7:19–25	12:11–12
3:15–30	8:1–27	12:13–15
3:31	8:28–35	13:1–25
4:1–24	9:1–22	14:1–11
5:1–31	9:23–57	14:12–20
6:1–8	10:3–18	15:1–20
6:9–27	11:1–28	16:1–17
6:28–35	11:29–40	16:18–27
6:36–40	12:1–7	16:28–31
7:1–18	12:8–10	

3. **दुष्टता – धर्मशास्त्र और राजशाहीः न्यायियों के समय का बिगाड़ (17:1–21:25)**

17:1–13	20:1–17	21:8–25
18:1–31	20:18–48	
19:1–30	21:1–7	

रूत

(न्यायियों के साथ जोड़)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा न्यायियों के साथ है, लेखक अनजान है, यद्यपि यहूदी रीति रिवाज़ शमूएल की ओर संकेत करते हैं। पुस्तक का नाम उसके मुख्य चरित्र के द्वारा दिया गया, मोआब की एक जवान लड़की। दाऊद की परदारी और जो यीशु की वंशावली में हैं (मत्ती 1:5)। बाइबल की दूसरी पुस्तक एक स्त्री के नाम से है – वह है ऐस्तर।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 1050।

विषय और अभिप्राय : रूत की कहानी एक इस्राएली दम्पति की है जो अकाल के समय मोआब को चले गये। वहां उसका पति व दोनों पुत्रों की मृत्यु हो गई और पीछे वह स्त्री (नाओमी) अपनी दो बहुओं के साथ (ओरपा और रूत) के साथ रह गई। नाओमी ने इस्राएल वापस जाने का इरादा किया और रूत ने उसके साथ जाने का आग्रह किया। इस्राएल में वे सहायता के लिये अपने एक सम्बन्धी बोआज़ के पास गये। अन्त में रूत ने बोआज के साथ विवाह कर लिया।

एक चमकीले हीरे की तरह रूत भी न्यायियों की पुस्तक के अन्धकारमय दिनों के बीच चमक उठी। रूत एक विश्वासयोग्यता, शुद्धता और प्रेम की उन दिनों की कहानी है जब राज शाही, स्वार्थ और भ्रष्टता का राज्य था। इस प्रकार रूत विश्वास की सकारात्मक तस्वीर की तरह कार्य करती है और धर्म त्याग के मध्य आज्ञाकारिता और दिखाता है कि विश्वास किस प्रकार आशीषें लाता है। रूत प्राचीन राजा दाऊद के बीच की एक कड़ी के रूप में थी और जैसा वर्णन किया गया मसीह के वंशज में पाई गई। रूत का दूसरा अभिप्राय इस प्रकार देखा जाता है जो सम्बन्धी छुड़ाने वाले के सत्यों का उदाहरण में देखा गया है, यहां तक कि महान धर्मत्याग के बीच में ईश्वरीय उपस्थिति और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उनके लिये जो विश्वास से उसके साथ चलेंगे। जबकि रूत एक अन्य जाति की थी, पुस्तक परमेश्वर की इच्छा का उदाहरण देती है कि अन्य जाति द्वारा संसार को परमेश्वर के परिवार में लेकर आना।

ये आश्चर्यजनक महसूस होगा कि एक जो परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करती वह मोआबिन है। फिर भी उसकी इस्राएल के प्रति विश्वासयोग्यता जो उसने विवाह के द्वारा प्राप्त की और उसकी अपनी अकेली सास के प्रति भक्ति इस प्रकार का निशान लगाती मानो वह इस्राएल की सच्ची पुत्री है और दाऊद की योग्य पुरखन है। वह उस सत्य का उदाहरण है जो परमेश्वर के आने वाले राज्य के सहभागी हैं, खून और जन्म के द्वारा नहीं पर एक के जीवन की परमेश्वर की इच्छा में आज्ञाकारिता के द्वारा विश्वास से आता है (रोमियों 1:5)। उसका दाऊद के वंशज में स्थान ये बताता है कि सभी देश दाऊद के महान पुत्र के राज्य में प्रस्तुत किये जायेंगे।

विशेष लोग : रूत, नाओमी, बोआज़

रूत में मसीह जो देखा गया : पुराने नियम में यदि व्यक्ति का राज्य बंधुआई में बेच दिया जाता है तो वे छुड़ाये जा सकते हैं यदि कुछ विशेष आवश्यकताओं को किसी सम्बन्धी छुड़ाने वाले के द्वारा पूरी की जाती है। ऐसा छुड़ाने वाला इब्रानी में "गोएल" कहा जाता है जिसका अर्थ "करीबी रिश्तेदार" होता है। ये उद्धारकर्ता का छुड़ाने वाले कार्य का सिद्ध उदाहरण है।

गोएल खून का रिश्तेदार होता है जो छुड़ाता है (व्यवस्थाविवरण 25:5, 7–10, यूहन्ना 1:14; रोमियों 1:3, फिलिप्पियों 2:5–8, इब्रानियों 2:14–15) छुटकारे का दाम चुकाने योग्य होना (2:1, 1 पतरस 1:18–19), दाम चुकाने का इच्छुक हो (3:11, मत्ती 20:28, यूहन्ना 10:15,19; इब्रानियों 10:7), स्वयं स्वतंत्र हो जैसे मसीह पाप के श्राप से स्वतंत्र था, पाप–रहित हो (2 कुरिन्थियों 5:21, 1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **समाधान और रूत की वापसी (1:1–22)**
   1:1–5 | 1:6–18 | 1:9–22
2. **रूत के अधिकार (2:1–23)**
   2:1–3 | 2:4–17 | 2:17–23
3. **रूत की विनती (3:1–18)**
   3:1–4 | 3:5–9 | 3:10–18
4. **रूत का पुरुस्कार (4:1–22)**
   4:1–12 | 4:13–17 | 4:18–22

1 शमूएल
(न्यायियों से राजतन्त्र में परिवर्तन)

लेखक और पुस्तक का नाम : हम निश्चत रूप से नहीं कह सकते कि 1 और 2 शमूएल किसने लिखा। यहूदियों की विधि संग्रह की रीति रिवाज़ कहती हैं कि ये शमूएल ने लिखा। हालांकि 1 और 2 शमूएल का नाम भविष्यद्वक्ता शमूएल से लिया गया है, हो सकता है भविष्यद्वक्ता ने 1 शमूएल के भाग से अधिक न लिखा हो, जबकि उसकी मृत्यु का रिकार्ड अध्याय 25 में दिया गया है। 1 शमूएल 10:25 में हमें बताया गया कि शमूएल ने एक पुस्तक लिखी। 1 इतिहास 29:29 भी ये संकेत देता है कि नातान और परमेश्वर ने भी शमूएल की रिकार्ड की गई घटनाओं को लिखा।

मूलतः 1 और 2 शमूएल इब्रानी बाइबल में एक साथ रखे गये थे। ये दोनों पुस्तकें इस्राएल के प्रारम्भिक राजाओं का इतिहास बताती हैं। विशेष रूप से 1 शमूएल राजा शाऊल के विषय बताता और 2 शमूएल राजा दाऊद के विषय बताता है।

यद्यपि असली एक पुस्तक, 1 और 2 शमूएल अनुवादकों द्वारा (सेप्टुआजिन्ट – पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) दो पुस्तकों में विभाजित किया गया है। ये विभाजन बाद में जेरोम द्वारा लेटिन में (लेटिन में बाइबल का अनुवाद) और आधुनिक अनुवादों द्वारा किया गया।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 1010 (और बाद में)

विषय और अभिप्राय : शमूएल के जन्म से आरम्भ करके उसके मन्दिर में प्रशिक्षण तक 1 शमूएल बयान करता है कि किस प्रकार इस परमेश्वर के जन ने इस्राएल की अगुवाई एक भविष्यद्वक्ता, याजक और अन्तिम न्यायी होकर की। शमूएल की अगुवाई के दौरान इस्राएल के लोग दूसरे देशों की तरह राजा की मांग करते रहे। परमेश्वर के निर्देश के आधीन तब शमूएल ने शाऊल को प्रथम राजा होने के लिये अभिषिक्त किया। पर परमेश्वर के द्वारा शाऊल का तिरस्कार किया गया, उसकी आज्ञा उल्लंघन करने के कारण। फिर परमेश्वर की दिशा–निर्देश के आधीन शाऊल का विकल्प – दाऊद का शमूएल ने अभिषेक किया, ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के हृदय के करीब था इस्राएल का राजा बन गया। बाकी की पुस्तक जलन रखने वाले शाऊल और ईश्वर भक्त दाऊद के बीच के संघर्ष का वर्णन करती है।

1 शमूएल इस्राएल के इतिहास को जारी रखता है न्यायियों को शमूएल के बाद शिमशोन के पश्चात् छोड़ दिया गया (न्यायियों 16:31)। ये पुस्तक देश में न्यायियों से राजाओं तक के परिवर्तन को बताती है – धर्मतन्त्र से राजतन्त्र। न्यायियों के समय के दौरान इस्राएल के लोगों ने यहोवा को अपने जीवनों पर शासन नहीं करने दिया – हर व्यक्ति अपनी दृष्टि में जो सही समझता वही करता था (न्यायियों 17:6, 21:25)। राजतन्त्र ने स्थिरता लाई क्योंकि पृथ्वी पर के राजा के पीछे चलने के इच्छुक थे। प्रभु ने शमूएल को बताया, ***"वे लोग जो कुछ भी तुझ से कहें उन्हें मान लें क्योंकि उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है कि मैं उनका राजा न रहूं"*** (8:7)।

परमेश्वर ने इस्राएल को एक राजा देने का इरादा किया (उत्पत्ति 49:10, व्यवस्थाविवरण 17:14–20)। परन्तु लोगों ने परमेश्वर के राजा के इंतजार की अपेक्षा अपने चुनाव के राजा का आग्रह किया। शाऊल को परमेश्वर ने तिरस्कार किया क्योंकि वह सत्य को सीखने में असफल रहा कि ***"बलिदान से उत्तम आज्ञा पालन करना है"*** (15:22)। वह अपने मानसिक असंतुलन के कारण विशिष्ट बन गया, बैर/जलन करने लगा, मूर्खता और अनैतिकता में लग गया। दाऊद ने सिद्धान्त का उदाहरण प्रगट किया, ***"प्रभु यहोवा ऐसा नहीं देखता जैसा मनुष्य देखता है"*** (16:7)। परमेश्वर ने दाऊद की आज्ञाकारिता, बुद्धि और परमेश्वर पर निर्भर रहने के कारण दाऊद की मंजिल को स्थापित किया।

ऐतिहासिक रूप से अभिप्रायों में से एक 1 शमूएल का दाऊद के राज्य का दैविय मूल का रिकार्ड करना है।

विशेष लोग : शमूएल भविष्यद्वक्ता, अनाज्ञाकारी राजा शाऊल और चरवाहा दाऊद

मसीह जो 1 शमूएल में देखा गया : शमूएल मसीह की दिलचस्प तस्वीर बनाता है उसमें वह भविष्यद्वक्ता था, एक याजक और यद्यपि वह राजा नहीं था, वह न्यायी था जो परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किया गया कि वह नये युग का आरम्भ करें जिसमें राजा लोग राज्य करेंगे।

'मसीहा' वास्तव में "अभिषिक्त किया हुआ है" और शमूएल बाइबल की पहली पुस्तक है जो शब्द "अभिषेक" को इस्तेमाल करती है (2:10)। मसीह के प्रति प्रारम्भिक वर्णनों में से एक दाऊद के जीवन में पाई जाती है। वह बैतलहेम में पैदा हुआ था, एक चरवाहे की तरह काम किया, इस्राएल के ऊपर शासक था और मसीह का पूर्वज दाऊद के राजवंश का मूल बन गया। नये नियम में मसीह को शरीर के भाव से ***"दाऊद का वंश"*** का बताया गया है (रोमियों 1:3)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. शमूएल, अन्तिम न्यायी (1:1—8:22)

क. शमूएल की बुलाहट (1:1—3:21)

1:1—18	2:12—17	3:1—21
1:19—28	2:18—21	
2:1—11	2:22—36	

ख. शमूएल का कार्य (मिशन) (4:1—7:17)

4:1—22	6:1—21
5:1—12	7:1—17

स. शमूएल की चिन्ता (8:1—22)

8:1—9	8:10—22

2. शाऊल, प्रथम राजा (9:1—15:35)

क. शाऊल का चुनाव (9:1—12:25)

9:1—14	10:17—27	12:12—25
9:15—27	11:1—15	
10:1—16	12:1—11	

ख. शाऊल का तिरस्कार (13:1—15:35)

13:1—23	14:24—46	15:1—9
14:1—23	14:47—52	15:10—35

3. अगला राजा दाऊद (16:1—31:13)

क. दाऊद, चरवाहा चुना हुआ, अभिषिक्त (16:1—23)

16:1—11

16:12—23

ख. दाऊद, दानव को मारने वाला, शाऊल के दरबार में प्रशंसनीय (17:1—58)

17:1—19	17:20—30	17:31—58

ग. दाऊद, योनातन का मित्र, पर शाऊल द्वारा तिरस्कृत (18:1—19:24)

18:1—9	18:20—30
18:10—19	19:1—24

4. दाऊद, भगौड़ा, शाऊल के द्वारा किया गया (20:1—26:25)

क. दाऊद को योनातन द्वारा बचाया गया (20:1—42)

20:1—29	20:30—42

ख. दाऊद अहीमेलेक द्वारा बचाया गया (21:1—9)

ग. आकीश द्वारा दाऊद बचाया गया (21:10—15)

घ. दाऊद और उसके लोग (22:1—26:25)

22:1—23	24:1—22	25:18—38
23:1—14	25:1	25:39—44
23:15—29	25:2—17	26:1—25

5. फिलिस्तीन की सीमा पर दाऊद का शरण लेना (27:1—31:13)

क. दाऊद पलिश्तियों का सेवक बन जाता है (27:1—28:2)

ख. शाऊल एन्दोर को सम्पर्क करता है (28:3—25)

ग. दाऊद को पलिश्तियों द्वारा निकाला जाना (29:1—11)

घ. दाऊद अमालेकियों को नष्ट करता है (30:1—31)

ङ. पलिश्ती और शाऊल की मृत्यु (31:1—13)।

2 शमूएल

(दाऊद का राज्य – देश का विकास)

लेखक और पुस्तक का नाम : जबकि 1 और 2 शमूएल प्रारम्भ में एक ही पुस्तक थी और बनावटी रूप से इसे विभाजित किया गया, 1 शमूएल में लेखक के विषय पहले चर्चा को देखें।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 1010 (और बाद में)

विषय और अभिप्राय : इस्राएल के राज्य की कहानी में कोई वास्तविक टूट–फूट नहीं है, 2 शमूएल इस्राएल के राज्य के आरम्भ की कहानी जारी रखता है साथ ही शाऊल की मृत्यु के साथ दाऊद के राज्य के आरम्भ को वर्णन करती है। ये दाऊद के 40 वर्षों के राज्य की स्पष्टता है (5:4–5) और उसकी विजय और पीड़ामय को प्रगट करती है, जिसमें उसके व्यभिचार का पाप, हत्या और परिवार पर और देश पर परिणाम भी शामिल हैं। 2 शमूएल का विषय दाऊद के राज्य का लेखा जोखा है जिसका सारांश किया जा सकता है, "कैसे पाप विजय को परेशानी में बदल देता है", जबकि राज्य शाऊल के आधीन स्थापित हो गया था। इसे दाऊद ने विकसित किया। शाऊल के राज्य ने इस्राएल को न्यायियों के समय से स्थिरता प्रदान किया, पर दाऊद के राज्य ने बढ़ावा व विकास किया। बाइबल के अजीब फैशन में जो हमें खुले आम इसके अगुवों की कहानी बताती है। 2 शमूएल दाऊद के जीवन की अच्छी और बुरी बातों की तस्वीर पेश करती है।

विशेष लोग : दाऊद, बेतशीबा, नातान, अबशालोम, योआब, अम्मोन और अहीतोपेल

मसीह जो 2 शमूएल में देखा गया : दाऊद के पाप को छोड़कर – वह मसीह की तरह इस्राएल का राजा बना रहता है। ये पुस्तक में है कि परमेश्वर दाऊद की वाचा को दृढ़ करता है जो अन्त में मसीह में पूर्ण होती है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. दाऊद की विजय (1–10)

क. राजा का मुकुट पहनना (1:1–5:5)

1:1–16	2:12–32	3:31–39
1:17–27	3:1–5	4:1–12
2:1–7	3:6–25	5:1–5
2:8–11	3:26–30	

ख. राज्य का सुदृढ़ होना (5:6–6:23)

5:6–25	6:1–11	6:12–23

ग. राज्य के प्रति वाचा (7:1–29)

7:1–7	7:8–17	7:18–29

घ. राजा की जीत (8:1–10:19)

8:1–18	9:1–13	10:1–19

2. राजा का अपराध (11:1–27)

क. राजा द्वारा व्यभिचार (11:1–13)

ख. राजा द्वारा हत्या (11:14–27)

3. राजा की परेशानियां (12:1–24:25)

क. घर में परेशानी (12:1–13:36)

12:1–14	12:24–25	13:1–23
12:15–23	12:26–31	13:24–36

ख. राज्य में परेशानी (13:37–24:25)

13:37–39	17:1–14	20:13–26
14:1–20	17:15–29	21:1–22
14:21–33	18:1–18	22:1–51
15:1–12	18:19–33	23:1–7
15:13–37	19:1–7	23:8–39
16:1–4	19:8–43	24:1–14
16:5–14	20:1–9	24:15–17
16:15–23	20:10–12	24:18–25

1 राजा

(दाऊद की मृत्यु – राज्य में गड़बड़ी)

लेखक और पुस्तक का नाम : लेखक अनजान है, यद्यपि यहूदी इसके लेखन के लिये यिर्मयाह को श्रेय देते हैं। जैसे डॉक्टर चार्ल्स राइरी बताते हैं:

> जो भी इन पुस्तकों का लेखक या संयोजक था उसने ऐतिहासिक साधनों को उपयोग किया (11:41, 14:19,29)। हो सकता है वह एक बंधुवाई में से कोई बाबुल में का हो शायद अनजान या एज्रा, या यहेजकेल या यिर्मयाह (यिर्मयाह से अलग किसी ने 2 राजा के अन्तिम अध्याय लिखे हों – जबकि यिर्मयाह मिस्र में मर गया था–बाबुल में नहीं; यिर्मयाह 43:6–7)।

प्रथम और द्वितीय राजा, मूलतः एक पुस्तक (1 और 2 शमूएल, 1 और 2 इतिहास की तरह) और साधारणतः इब्रानी में "राजाओं" ही कहा जाता था और सही तरह से इसका नाम दिया गया जबकि उन्होंने इस्राएल ओर यहूदा के राजाओं के इतिहास को सुलैमान के समय से बाबुल की बंधुवाई तक की खोज की। 1 राजा उल्टा सीधा अन्त औहन्याह के राज्य के आरम्भ से करता है ये ई.पूर्व 853 में किया गया।

लेखन तिथि : लगभग ई.पूर्व 550। यहोयाकीन की बन्दीगृह से रिहाई आखिरी घटना है जिसका रिकार्ड 2 राजा में किया गया है। ये उसके कैद में के 37वें वर्ष में (ई.पूर्व. 560) हुआ। इसलिये पहला और दूसरा राजा इस घटना के पहले नहीं लिखा जा सका होगा। ऐसा लगता है कि यहूदियों का बाबुल की बंधुवाई से 516 ई.पूर्व में यरूशलेम की वापसी हो गई थी। उस समय जब पहला और दूसरा राजा लिखे गये थे यदि ये हो गया था तो लेखक इसका संदर्भ तो देता। शायद 1 और 2 राजा 560 और 516 के बीच पूरे हुए होंगे।

विषय और अभिप्राय : दाऊद की मृत्यु के बाद (अध्याय 1–2), उसका पुत्र सुलैमान राजा बन गया। अध्याय 1–11 में सुलैमान के जीवन और राज्य का वर्णन है, जिसमें इस्राएल अपनी उच्च महिमा को पहुंच गया था, देश का राज्य फैल गया था और मन्दिर का व यरूशलेम में महल का निर्माण किया गया, पर सुलैमान के बाद के वर्षों में वह अपने परमेश्वर से भटक गया था इसका कारण उसकी मूर्तिपूजक पत्नियां थीं। जिन्होंने उस पर गलत असर डाला और उसका हृदय परमेश्वर की अराधना से दूर हो गया।

राजा ने अपने विभाजित हृदय के साथ अपने पीछे विभाजित राज्य को छोड़ा। आगामी सदी के लिये 1 राजा की पुस्तक दो राजाओं के राज्य और दो देशों के अनाज्ञाकारी लोग जो विभिन्न रूप से परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं और (सिद्धान्तों) के साथ बढ़ रहे थे।

अगला राजा रेहोबोआम था जिसने राज्य का उत्तरी भाग खो दिया। इसके बाद उत्तरी राज्य जिसमें 10 गोत्र शामिल थे, इस्राएल के नाम से जाना जाता था और दक्षिणी राज्य जो यहूदा का और बिन्यामिन का गोत्र शामिल था–यहूदा का राज्य कहलाता था। 1 राजा के अन्तिम अध्यायों में, दुष्ट राजा आहाब पर ध्यान केन्द्रित किया गया है और धार्मिक भविष्यद्वक्ता ऐलिय्याह जिसने आहाब की दुष्टता और इस्राएल के आज्ञा उल्लंघन की निन्दा की।

इसलिये केन्द्रिय विषय ये दिखाता है कि आज्ञा उल्लंघन किस प्रकार राज्य को विनाश की ओर ले गया। देश की समृद्धि की अगुवाई की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करती है और लोगों का परमेश्वर की वाचा के साथ चलने पर निर्भर होती है। 1 राजा न केवल तीन राजाओं के इतिहास का रिकार्ड बताता है पर ये प्रगट करता कि किसी भी राजा की सफलता (और देश की) परमेश्वर के प्रति उसकी व्यवस्था का पालन या सच्चाई पर निर्भर करता है। पुस्तक सच्चाई से उदाहरण देती है कि कैसे ***"जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है"*** (नीतिवचन 14:34)। परमेश्वर की वाचा का विश्वासघात का परिणाम पतन और बंधुवाई में हुआ।

विशेष लोग : सुलैमान, यरोबोआम, रहोबोआम, ऐलिय्याह, और एलीशा, आहाब ओर जेज़बेल।

1 राजा में मसीह देखा गया : दाऊद की तरह सुलैमान भी पुराने नियम में मसीह के प्रकार का है मसीह की तस्वीर उसके पृथ्वी पर के भविष्य राज्य की दिखाता है। सुलैमान विशेष रूप से इसे करता है जैसा उसकी प्रतिष्ठा, महिमा, धन और सम्मान ये सब मसीह के विषय उसकी धरती पर के राज्य के विषय बोलते हैं। सुलैमान भी बड़ी बुद्धिमानी दिखाकर मसीह की तस्वीर प्रगट करता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **संयुक्त राज्य : सुलैमान का 40 वर्ष का राज्य (1:1–11:43)**
   क. सुलैमान का राज्यारोहण (1:1–2:46)

1:1—10	2:1—9	2:28—35
1:11—37	2:10—18	2:36—46
1:38—53	2:19—27	

ख. सुलैमान की बुद्धि (3:2—4:34)

3:1—5	3:10—15	4:1—19
3:6—9	3:16—28	4:20—34

ग. सुलैमान का मन्दिर (5:1—8:66)

5:1—12	7:13—51	8:54—61
5:13—18	8:1—11	8:62—66
6:1—38	8:12—21	
7:1—12	8:22—53	

घ. सुलैमान की प्रतिष्ठा (9:1—10:29)

9:1—9	10:1—13
9:10—28	10:14—29

ङ. सुलैमान का पतन (11:1—43)

11:1—13	11:14—40	11:41—43

2. विभाजित राज्य : दो राज्यों के प्रथम 80 वर्ष (12:1—22:53)

क. विभाजन का कारण (12:1—24)

12:1—15	12:16—24

ख. **इस्राएल** में यरोबोआम का राज्य (12:25—14:20)

12:25—33	13:11—34
13:1—10	14:1—20

ग. रहोबोआम का राज्य **(यहूदा में)** (14:21—31)

घ. **यहूदा** में अबिय्याम का राज्य (15:1—8)

ङ. **यहूदा** में आसा का राज्य (15:9—24)

च. **इस्राएल** में नादाब का राज्य (15:25—31)

छ. **इस्राएल** में बाशा का राज्य (15:32—16:7)

ज. **इस्राएल** में ऐला का राज्य (16:8—14)

झ. **इस्राएल** में जिमरी का राज्य (16:15—20)

ञ. **इस्राएल** में ओमरी का राज्य (16:21—28)

ट. **इस्राएल** में आहाब का राज्य (16:29—22:40)

16:29—34	19:1—8	21:11—29
17:1—16	19:9—21	22:1—12
17:17—24	20:1—12	22:13—28
18:1—19	20:13—25	22:29—40
18:20—35	20:26—43	
18:36—46	21:1—10	

ठ. **यहूदा** में यहोशापात का राज्य (22:41—50)

ड. **इस्राएल** में अहज्जयाह का राज्य (22:51—53)

2 राजा

(छिन्न—भिन्नता / छितराव — जानबूझ कर किये पाप का दुःखद अन्त)

लेखक और पुस्तक का नाम : जबकि 1 और 2 राजा मूलतः एक पुस्तक थी और फिर कृत्रिम रूप से इसका विभाजन किया गया — पहली चर्चा को देखें जो 1 राजा के विषय में दी गई है।

लेखन तिथि : लगभग 550 ई.पूर्व (1 राजा की जानकारी देखें)

विषय और अभिप्राय : 2 राजा ऐलिय्याह और उसके उत्तराधिकारी के इतिहास को जारी रखता है। ऐलीशा पर ये उसे भी जारी

रखता जो कहलाती है "दो राज्यों की कहानी" जैसे ये इस्राएल के उत्तरी राज्य के इतिहास को जारी रखती है साथ ही यहूदा के दक्षिणी राज्य को भी उस समय तक जब तक कि ये बंधुवाई में न चले गये। इस्राएल ई.पूर्व. 722 में आरामी के आधीन हो गया और यहूदा ई.पूर्व. 586 में बाबुल के द्वारा परास्त किया गया। दोनों राज्यों में भविष्यद्वक्ताओं ने लगातार लोगों को चितौनी दी कि यदि वे पश्चाताप न करें तो परमेश्वर उन्हें दन्डित करेगा।

दूसरा राजा हमें सिखाता है कि जानबूझ कर देश के द्वारा किये गये पाप का अन्त दुःखद होता है। 1 और 2 शमूएल में देश उत्पन्न हुआ, 1 राजा में ये विभाजित हुआ, और 2 राजा में ये छिन्न–भिन्न किया गया। भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लोगों के साथ वर्षों तक आग्रह करने के बाद परमेश्वर का धीरज अन्त में अनुशासन में बदल गया जैसा उसने प्रतिज्ञा की थी। इसलिये कि दोनों पुस्तकें आरम्भ में एक ही थीं – 1 और 2 राजा करीब करीब वही एक सी बातें लक्ष्य बताते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि कैसे विश्वासघात (परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन और विद्रोह) परमेश्वर के अनुशासन की ओर ले जाता है यहां तक कि राजतंत्र फैंक दिया जाता है। दोनों राज्य समाप्त हो गये क्योंकि राजा लोग धार्मिकता से शासन करने में और परमेश्वर के सत्य पर चलने में असफल रहे।

विशेष लोग : ऐलिय्याह, ऐलीशा, योशिय्याह, नामान, हिज़कियाह

2 राजा में मसीह को देखा गया : ऐलिय्याह स्वाभाविक रूप से मसीह का अग्रदूत माना गया है यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (मत्ती 11:14,17:10–12, लूका 1:17)। ऐलीशा कई तरीकों से हमें मसीह यीशु की सेवकाई का स्मरण दिलाता है। इरविंग एल जैनसन तुलना करता और उनकी सेवकाइयों का सारांश इन शब्दों में करता है:–

> ऐलिय्याह को महान समाजिक कार्यों के लिये नोट किया जाता है, जबकि ऐलीशा ने कई बड़े आश्चर्य कर्म किये, बहुत से तो व्यक्तिगत जरूरतों के लिये थे। ऐलिय्याह की सेवकाई में परमेश्वर की व्यवस्था पर जोर दिया जाता है, न्याय और उसकी अधिकता पर। ऐलीशा ने इसे परमेश्वर की दशा, प्रेम और कोमलता को कार्यों में करके दिखाया। ऐलिय्याह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समान था – पापों से मन फिराव का धमाकेदार प्रचार करता था। ऐलीशा ने इसका अनुसरण किया जैसे मसीह ने किया, दया के कार्य करके और आश्चर्यकर्म करने के द्वारा ये साबित किया कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन परमेश्वर की ओर से थे।

रायरे जो निर्देश के विरोधाभास प्रगट कर रहे हैं उन्हें ध्यानपूर्वक नोट करें जो वह 1 और 2 राजा में हमें बता रहे हैं। ये विरोधाभास स्पष्टता से सत्य और जानबूझ कर के पापों का दुःखद अन्त बताते हैं।

1 और 2 राजा में विरोधाभास	
1 राजा	**2 राजा**
राजा दाऊद से आरम्भ करता है	बाबुल के राजा से आरम्भ होता है
सुलैमान की महिमा से खुलती है	यहोयाकीम की शर्म से बन्द होता है
आज्ञाकारिता की आशीष से आरम्भ होती है	अनाज्ञाकारिता के श्राप से समाप्त होता है
मंदिर के निर्माण से खुलती है	मन्दिर के जलाये जाने से बन्द होता है
धर्म त्याग की बढ़ौतरी का पता लगता है	धर्म त्याग के परिणाम का वर्णन करता है
दिखाता है कि किस प्रकार राजा परमेश्वर के लोगों पर राज्य करने में असफल रहे	उस असफलता का परिणाम वर्णन करता है
ऐलिय्याह का परिचय	ऐलीशा भविष्यद्वक्ता का परिचय
यहोवा के धीरज पर जोर दिया गया	परमेश्वर के पास के प्रति दण्ड की पुष्टि करता है

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **विभाजित राज्य (1:1–17:41)**
   - क. **इस्राएल** में अहज्याह का राज्य (1:1–18)
   - ख. **इस्राएल** में यहोराम का राज्य (जोराम) (2:1–8:15)
     - 1) ऐलिय्याह का अनुवाद (2:1–14)
     - 2) ऐलीशा की सेवकाई का आरम्भ (2:15–25)
     - 3) मोआब के विरुद्ध यहोराम की खोज यात्रा (3:1–27)
     - 4) ऐलीशा की सेवकाई (4:1–8:15)

       4:1–7 5:15–27 7:3–14

4:8–17	6:1–7	7:15–20
4:18–37	6:8–23	8:1–6
4:38–44	6:24–33	8:7–15
5:1–14	7:1–2	

ग. **यहूदा** में यहोराम का राज्य (8:16–24)
घ. **यहूदा** में अहज्जाह का राज्य (8:25–29)
ङ. **इस्राएल** में येहू का राज्य (9:1–10:36)

9:1–13	9:33–37	10:34–36
9:14–26	10:1–17	
9:27–32	10:18–33	

च. **यहूदा** में रानी अतल्याह का राज्य (11:1–16)
छ. **यहूदा** में यहायादा का राज्य (11:17–12:21)

11:17–20	12:4–18
11:21–12:3	12:19–21

ज. **इस्राएल** में यहोआहाज का राज्य (13:1–9)
झ. **इस्राएल** में योआश का राज्य (13:10–25)
ञ. **यहूदा** में अमस्याह का राज्य (14:1–22)
ट. **इस्राएल** में यरोबाम का राज्य (14:23–29)
ठ. **यहूदा** में उज्जियाह का राज्य (15:1–7)
ड. **इस्राएल** में जकर्याह का राज्य (15:8–12)
ढ. **इस्राएल** में शल्लूम का राज्य (15:13–15)
ण. **इस्राएल** में मनाहेम का राज्य (15:16–22)
त. **इस्राएल** में पेकिय्याह का राज्य (15:23–26)
थ. **इस्राएल** में पेकाह का राज्य (15:27–31)
द. **यहूदा** में योथाम का राज्य (15:32–38)
ध. **यूहदा** में आहाज का राज्य (16:1–20)
न. **इस्राएल** में होशे का राज्य (17:1–41)
1) इस्राएल की पराजय (17:1–6)
2) इस्राएल का पाप (17:7–23)
3) इस्राएल का तितर–बितर किया जाना (17:24–41)

2. यहूदा के राज्य का बचना (18:1–25:30)

क. हिज्जकियाह का राज्य (18:1–20:21)

18:1–6	19:1–7	19:20–37
18:7–12	19:8–13	20:1–11
18:13–37	19:14–19	20:12–21

ख. मनश्शै का राज्य (21:1–18)
ग. आमोन का राज्य (21:19–26)
घ. योशिय्याह का राज्य (22:1–23:30)
ङ. यहोआहाज का राज्य (23:31–33)
च. यहोयाकीम का राज्य (23:34–24:7)
छ. यहोयाकीन का राज्य (24:8–16)
ज. सिदकियाह का राज्य (24:17–25:21)
1) बाबुल के विरुद्ध विद्रोह और मन्दिर का नष्ट किया जाना (24:17–25:10)
2) बाबुल में तीसरी बंधुवाई में जाना (25:11–21)
झ. गदल्याह का शासन – कठपुतली सरकार (25:22–26)
ञ. बाबुल में यहोयाकीन की रिहाई (25:27–30)।

1 इतिहास
(मन्दिर का तैयार किया जाना)

लेखक और पुस्तक का नाम : 1 इतिहास और दूसरा दोनों एक ही पुस्तक थे – लेखक की पहचान नहीं करते, पर यहूदी मत के अनुसार एज्रा को लेखक माना जाता है। पूरी पुस्तक का सामंजस्य/सुसंगीत ये संकेत करती है कि यद्यपि पुस्तक को बनाने में बहुत से साधनों का इस्तेमाल किया गया पर एक सम्पादक ने उत्पादन का अन्तिम रूप दिया। विभिन्न साधनों में भविष्यवाणी के रिकॉर्ड शमूएल ने (1 इतिहास 29:29), यशायाह ने (2 इतिहास 32:32) और दूसरों ने (2 इतिहास 9:29, 12:15, 20:34,33:19) किया पर विशेष रूप से एक साधन जो "यहूदा और इस्राएल के राजाओं की पुस्तक" कहलाता है (2 इतिहास 16:11; 25:26)। ये विषय याजकीय लेखन का सुझाव देती है क्योंकि मन्दिर पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया, याजकपन, दाऊद का वंश और यहूदा का दक्षिण राज्य। ऐसा माना जाता है कि इस पुस्तक का संकलन (इक्ट्ठा करना) एज्रा ने किया इस बयान को एज्रा के सामान्य विषय और इतिहास के मन्दिर के निर्माण और समर्पण इसकी पुष्टि करते हैं।

यद्यपि 1 और दूसरे इतिहास की पुस्तकें उसी यहूदी इतिहास को बताती हैं, इसका महत्व बिल्कुल भिन्न है। जबकि विषय एक सा ही है पर ये दुहराना नहीं है, पर इस्राएल के लोगों के इतिहास की आत्मिक टीका है। राजाओं की पुस्तकें मनुष्यों के दृष्टिकोण को सम्बंधित करते हैं जबकि इतिहास की पुस्तकें परमेश्वर के ज्ञान का बोध कराती हैं।

मूलतः 2 इतिहास की एक पुस्तक (ई.पू. 180) के इब्रानी शीर्षक का अर्थ "दिन के वचन" (मामला) जो इस्राएल के इतिहास का संदर्भ आदम से लेकर बाबुल की बंधुवाई तक देता है और क्षर्यश की वाचा/सन्धी यहूदियों को वापस जाने की अनुमति देती है। एक समझ में ये "छोटा पुराना नियम" है जो पुराने नियम के बहाव में इतिहास की खोज कर रहा है।

जब सेप्टुआजिन्ट का उत्पादन हो रहा था तो अनुवादकों ने इतिहास को दो हिस्सों में बांट दिया। उस समय इसका शीर्षक "वस्तुएं जो हटाई गईं" दिया गया, उन चीज़ों का संदर्भ दे रहा था जो शमूएल और राजाओं से अलग कर दी गई थीं। नाम "इतिहास" उस शीर्षक से आता है जिसे जेरोम ने अपनी लेटिन वलगेट बाइबल में दिया था (ई.पश्चात् 385–405) जेरोम का मतलब उसके शीर्षक में इस विचार से था – "समस्त संसारिक इतिहास का लेखन"।

लेखन तिथि : 450–425 ई.पू.

विषय और अभिप्राय : पहला इतिहास आदम से लेकर राजा शाऊल की मृत्यु के इतिहास की रूप रेखा से आरम्भ होता है। बाकी की पुस्तक राजा दाऊद के राज्य के विषय है इतिहास की पुस्तकें लगता है शमूएल और राजाओं की पुस्तकों का दुहराया जाना है पर वे बंधुवाई से लौटने के बारे में लिखी गईं कि उन्हें स्मरण दिलाया जाये कि वे दाऊद के राजकीय वंश से हैं और परमेश्वर के द्वारा चुने हुए लोग हैं। वंशावलियां ये बताती हैं कि दाऊद की वाचा की प्रतिज्ञाएं जिनका स्रोत उन प्रतिज्ञाओं में था जो अब्राहम को दी गई थीं कि वह उसे महान जातियों का पिता बनायेगा, जिसके द्वारा से सभी जातियां आशीष पायेंगी। मुख्य विषय ये है कि परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है।

इतिहास की पुस्तकें व्यवस्था, याजकपन, और मन्दिर की भूमिका पर जोर देती है। यद्यपि सुलैमान का मन्दिर चला गया था – दूसरा मन्दिर पहले पुराने अवशेषों से सम्बन्ध जोड़ा जा सकता था। इस पुस्तक ने ये भी सिखाया कि पूर्व काल वर्तमान के पाठों के लिये गर्भ था। धर्म का त्याग, मूर्तिपूजा, अन्यजातियों के साथ विवाह और एकता की कमी उनके विनाश के अभी के कारण थे ये विशेष बात है कि देश से निकाले जाने के बाद इस्राएल ने फिर कभी दूसरे देवताओं की उपासना नहीं की।

विशेष लोग : जैसा वर्णन किया गया, ये पुस्तक दाऊद के विषय है, यद्यपि दूसरे 1 शमूएल में विशेष थे यहां महत्वपूर्ण हैं जैसे नातान, बेतशीबा और उरियाह।

पहले इतिहास में मसीह जैसा देखा गया : जो 1 और 2 शमूएल में दाऊद के लिये कहा गया कि मसीह के प्रकार का है यहां भी वैसा ही उपयुक्त है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **आदम से दाऊद तक की वंशावलियां (1:1–9:44)**
   - क. आदम से अब्राहम तक (1:1–27)
   - ख. अब्राहम से याकूब (1:28–54)
   - ग. याकूब से दाऊद (2:1–55)
   - घ. दाऊद से बंधुवाई (3:1–24)

ङ. बारह गोत्रों की वंशावलियां (4:1–8:40)

4:1–23	7:1–5	7:20–29
4:24–43	7:6–12	7:30–40
5:1–26	7:13	8:1–32
6:1–81	7:14–19	8:33–40

च. यरूशलेम के निवासी (9:1–34)

छ. शाऊल का परिवार (9:35–44)

2. दाऊद का उदय एवं अभिषेक (10:1–12:40)

क. शाऊल की मृत्यु (10:1–14)

ख. दाऊद का राज्यारोहण (11:1–3)

ग. यरूशलेम का ले लिया जाना (11:4–9)

घ. दाऊद के वीर (11:10–12:40)

3. दाऊद का राज्य (13:1–29:21)

क. दाऊद और वाचा का संदूक (13:1–17:27)

1) दाऊद संदूक को कीदोन लाता है, उज्जाह की मृत्यु (13:1–14)
2) दाऊद की पलिश्तियों पर विजय और प्रतिष्ठा (14:1–17)
3) दाऊद संदूक को यरूशलेम में लाता है (15:1–29)
4) दाऊद का जश्न और संदूक के लिये प्रबन्ध (16:1–43)
5) दाऊद की मन्दिर बनाने की इच्छा : दाऊद की वाचा (17:1–27)

ख. दाऊद के युद्धः (18:1–20:8)

18:1–17	19:10–19
19:1–9	20:1–8

ग. दाऊद का गिनती कराने का पाप (21:1–30)

घ. दाऊद की मन्दिर की तैयारी (22:1–23:1)

ङ. दाऊद की लेवियों की संस्था (23:2–26:32)

1) लेवियों की गिनती और उनके काम (23:2–32)
2) लेवियों को 24 झुण्डों में बांटना (24:1–31)
3) संगीतकारों की नियुक्ति (25:1–31)
4) द्वारपालों की नियुक्ति (26:1–29)
5) खजांचियों की नियुक्ति (26:20–38)
6) न्यायियों का बंटवारा/कार्य सौंपना (26:29–32)

च. दाऊद के जनता के अगुवे (27:1–34)

छ. दाऊद का लोगों और सुलैमान को अन्तिम निर्देश (28:1–21)

ज. दाऊद की भेंट और आराधना (29:1–21)

4. दाऊद की मृत्यु और सुलैमान का राज्यभिषेक (29:22–30)

2 इतिहास

(मन्दिर का विनाश)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा पहले वर्णन किया जा चुका है कि 1 और 2 इतिहास एक ही पुस्तक थी। जैसा 1 इतिहास के विषय नहीं बताता कि किसने इसे लिखा, पर यहूदियों की मान्यता है जो एज्रा को इसका लेखक बताते हैं और दृष्टिकोण का सामंजस्य और शैली ये सुझाव देती है कि ये उस व्यक्ति का कार्य है जिसे इतिहास के लेखक का संदर्भ दिया जाता है। एज्रा को सहारा देने के लिये कि वही लेखक है कुछ विशेष समानताएं जैसे बड़ी सूचि है, लेवी और मन्दिर। जो भी लेखक था उसके बहुत सा अधिकृत साधन थे जैसेः–

1. इस्राएल और यहूदा के राजाओं की पुस्तक (27:7, 35:27, 36:8)
2. यहूदा और इस्राएल के राजाओं की पुस्तक (16:11, 25:26, 28:26, 32:32)
3. इस्राएल के राजाओं की पुस्तक (20:34; 33:18)

4. राजाओं की पुस्तक का रिकार्ड (24:27)
5. नातान की पुस्तक, अहिज्याह की भविष्यवाणी, और इद्दो का दर्शन (9:29)
6. शेमेय्याह का इतिहास (12:15)
7. इद्दो के रिकार्ड (13:22)
8. यशायाह भविष्यद्वक्ता की लेखनी (26:22)
9. होशिय्याह का कथन (33:19)
10. विलाप (35:25)
11. दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की लेखनी (35:4)

लेखन तिथि : 450–425 ई.पूर्व

विषय और अभिप्राय : जबकि 1 इतिहास, पहले और दूसरे शमूएल समानान्तर है, 2 इतिहास दाऊद के वंश के इतिहास को जारी रखता है और 1 और 2 राजा के समानान्तर है। ये नोट करना अच्छा है कि 1 इतिहास उत्तरी राज्य की अनदेखी करता है – लोगों के अविश्वास के कारण और किसी भी ईश्वर भक्त राजा की अनुपस्थिति के कारण जो दाऊद के बाद अपने जीवन का उदाहरण देता हो। इसके विपरीत 2 इतिहास उन राजाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है जो दाऊद के जीवन की नाईं चले। अध्याय 1–9 मन्दिर के निर्माण का वर्णन करता है जो सुलैमान के राज्य के दौरान हुआ। अध्याय 10–36 यहूदा के दक्षिण राज्य के इतिहास का वर्णन करते हैं जो यरूशलेम का अन्तिम विनाश और लोगों का बाबुल की बंधुवाई में जाना है। इसलिये ये उन राजाओं के प्रति हिस्सों को बढ़ाते हैं जिन्होंने जाग्रति और देश में सुधार लाये – जैसे आसा, यहोशापात, योआश, हिजकियाह और योशिय्याह राजा।

इतिहास की पुस्तकें कुछ वहीं इतिहास को जैसा शमूएल और राजाओं की पुस्तकें बताती हैं वर्णन करती हैं पर कुछ विशेष बातें बताने के लिये भिन्न उद्देश्य है – 1 इतिहास में दाऊद ही विषय है जबकि 2 इतिहास में ये दाऊद का घर है। राजाओं में देश का इतिहास सिंहासन से दिया गया, जबकि इतिहास में ये वेदी से दिये गये हैं (मन्दिर) राजाओं में महल मुख्य विषय है, पर इतिहास में ये मन्दिर है। राजाओं में राजनीति के इतिहास पर ध्यान केन्द्रित है जबकि इतिहास में धार्मिक और इस्राएल के इतिहास की आत्मिक बातों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

इतिहास की पुस्तकें केवल ऐतिहासिक रिकार्ड से अधिक हैं। ये दाऊद के राज्य की आत्मिक विशेषताओं पर परमेश्वर की टीका है। इसके कारण ध्यान यहूदा के राज्य पर है जो दक्षिणी राज्य है जहां आत्मिक जाग्रति थी और दाऊद के वंश से ईश्वर भक्त राजा थे पर क्यों उत्तरी राज्य जिसमें ईश्वर भक्त राजा नहीं थे उसकी अनदेखी की गई।

विशेष लोग : योशिय्याह, रेहोबोआम, सुलैमान

दूसरे इतिहास में जैसे मसीह को देखा गया : दाऊद के सिंहासन को नष्ट कर दिया गया, पर दाऊद का वंश बना रहा। हत्याएं, धोखा, युद्ध और बंधुआई सताने मसीह की वंशावली को खटका पैदा किया पर ये स्पष्ट बना रहा और आदम से यरूबाबेल तक बिना टूटे बना हुआ है, मसीह में इसकी पूर्ति मत्ती की वंशावली में देखी जा सकती है – मत्ती 1 और लूका 3।

2 इतिहास में मन्दिर जो इतना विशिष्ट है – मसीह की सुन्दर तस्वीर है (मत्ती 12:6, यूहन्ना 2:19, प्रकाशितवाक्य 21:22)

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. सुलैमान का राज्य (1:1–9:31)

क. सुलैमान का उद्घाटन (1:1–17)

1:1–13	1:14–17	

ख. सुलैमान का मंदिर (2:1–7:22)

2:1–10	5:1–10	7:4–7
2:11–18	5:11–14	7:8–10
3:1–2	6:1–11	7:11–22
3:3–17	6:12–42	
4:1–22	7:1–3	

ग. सुलैमान की प्रतिष्ठा (8:1–9:28)

8:1–18	9:1–12	9:13–28

घ. सुलैमान की मृत्यु (9:29–31)

2. यहूदा के राजा (10:1–36:21)

क. रहोबोआम (10:1–12:16)

10:1–19	11:14–17	12:1–8
11:1–13	11:18–23	12:9–16

ख. अबिय्याह (13:1–22)

13:1–3	13:4–19	13:20–22

ग. आसा (14:1–16:14)

14:1–15	15:8–19	16:7–14
15:1–7	16:1–6	

घ. यहोशापात (17:1–20:37)

17:1–2	18:28–34	20:14–19
17:3–19	19:1–4	20:20–25
18:1–7	19:5–11	20:26–34
18:8–11	20:1–4	20:35–37
18:12–27	20:5–13	

ङ. यहोराम (21:1–20)

च. अहिज्जयाह (22:1–9)

छ. अतलिल्याह (22:10–23:15)

22:1–4	22:8–12	23:12–15
22:5–7	23:1–11	

ज. योआश (23:16–24:27)

23:16–21	24:3–7	24:20–22
24:1–2	24:8–19	24:23–27

छ. अमस्याह (25:1–28)

25:1–13	25:14–16	25:17–28

ज. उज्जियाह (26:1–23)

26:1–5	26:6–15	26:16–23

झ. योथाम (27:1–9)

ण. आहाज़ (28:1–27)

28:1–4	28:5–15	28:16–27

त. हिजकिय्याह (29:1–32:33)

29:1–4	30:13–27	32:9–19
29:5–19	31:1–2	32:20–33
29:20–36	31:3–21	
29:20–36	32:1–8	
30:1–12		

थ. मनश्शै (33:1–20)

33:1–9	33:10–20

द. आमोन (33:21–25)

ध. योशिय्याह (34:1–35:27)

34:1–7	34:22–30	35:20–27
34:8–13	34:31–33	
34:14–21	35:1–19	

ण. यहोआहाज (36:1–4)

ट. यहोयाकीम (36:5–8)

ठ. यहोयाकीन (36:9–10)

ड. सिदकियाह (36:11–21)

3. कुस्रू की राज आज्ञा (36:22–23)

एज्रा

(मन्दिर का पुनः निर्माण और लोगों का पुनः स्थापित होना)

लेखक और पुस्तक का नाम : यद्यपि एज्रा की पुस्तक अपने लेखक का नाम नहीं देती, यहूदी रीति–रिवाज़ जैसे तालमुड में रिकार्ड किया गया है एज्रा को इसका लेखक के रूप में पहचान करता है। एज्रा ने ये पुस्तकें कई दस्तावेजों को इस्तेमाल करते हुए लिखीं (4:7–16), वंशावलियां (2:1–70) और अपने साधनों के रूप में व्यक्तिगत नोट्स को उपयोग किया (7:27–9:15)

ये सही है कि एज्रा – एज्रा के बड़े भाग का विशेष चरित्र है। और ये उसके लेखक होने पर सहायता करता है। वह उन घटनाओं में हिस्सा लेता है जिसका वर्णन अध्याय 10 में और नहेम्याह के 8–10 अध्यायों में है। दोनों हालात में जो हिस्से लिखे गये हैं वह पहले व्यक्ति में लिखे गये हैं।

परम्परा ये बताती है कि एज्रा "महान प्रार्थनाभवन" का संस्थापक था (अर्थ एक महान कलीसिया) जहां पुराने नियम की पुस्तकें इक्ट्ठी की गई थीं। दूसरी परम्परा कहती है कि उसने बाइबल की पुस्तकों को एक इकाई में इक्ट्ठा किया और उसने प्रार्थना भवन को आराधना का रूप दिया।

प्राचीन इब्रानी बाइबल में, एज्रा और नहेमियाह एक ही पुस्तक समझी जाती थी और "एज्रा की पुस्तक" कहलाती थी। आधुनिक इब्रानी की बाइबल जैसा अंग्रजी अनुवाद में है इन्हें दो पुस्तकों में प्रबन्धित हैं, एज्रा और नहेम्मयाह। आगे जोसेफस (प्राचीन यहूदी इतिहासकार) और जरोम (लेटिन वलगेट का लेखक) ने भी एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों को एक ही बताया।

लेखन तिथि : 457–444 ई.पूर्व

विषय और अभिप्राय : ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जहां 2 इतिहास समाप्त होता है एज्रा वर्णन जारी रखता है और यहूदियों की बाबुल की बंधुवाई से वापसी और मन्दिर के पुनः निर्माण के इतिहास का वर्णन करता है। आत्मिक और आत्मिक–सिद्धान्तों के दृष्टिकोण से। एज्रा ये प्रगट करता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया जो उसने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था कि 70 वर्ष की बाबुल की बंधुवाई के बाद वह अपने लोगों की पुनः प्रतिज्ञा किये देश में वापसी करेगा। जैसा इतिहास में था एज्रा एक याजक होकर मन्दिर के महत्व को दिखाता है और उसकी आराधना देश के जीवन में परमेश्वर के लोगों की तरह दिखाता है। ये क्षयर्ष राजा की राजाज्ञा से जो फारस का राजा था आरम्भ होता है जिसने बचे हुए लोगों को वापस आने की अनुमति प्रदान की। लोगों ने बड़े उत्साह के साथ मन्दिर के पुनः निर्माण कार्य को आरम्भ किया पर इसे उत्तर के शत्रुओं द्वारा 18 वर्ष की देरी हो गई। अन्त में राजा दारा की आज्ञा से इस कार्य को समाप्त किया जा सका (एज्रा 1–6)। अध्याय 7–10 हमें एज्रा याजक की वापसी के विषय में बताते हैं, जिसने लोगों को व्यवस्था सिखाया और देश की आत्मिक जीवन का सुधार किया।

विषय का सारांश इस प्रकार दिया जा सकता है कि बचे हुए यहूदियों का जो यरूब्बाबेल और एज्रा की अगुवाई में वापस आये और उनके आत्मिक नैतिक और सामाजिक पुनः स्थापना हुई।

विशेष लोग : क्षयर्ष (फारस का राजा जिसकी राज–आज्ञा से वापसी हुई) एज्रा, (याजक) यहोशू, (महायाजक)

एज्रा में जैसे मसीह देखा गया : दाऊद की वाचा को कायम रखने और परमेश्वर की प्रतिज्ञा मसीह के लिये दाऊद के वंशज को कायम रखने में, दाऊद का पुत्र, एज्रा और नहेम्याह दिखाते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को लोगों को उनको देश में पुनः स्थापित करने में पूरा किया।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पुनः स्थापनाः जरूबाबेल के आधीन प्रथम यरूशलेम को लौटना (1:1–6–22)**
   - क. क्षयर्ष की राजाज्ञा (1:1–11)
     - 1:1–4
     - 1:5–11
   - ख. लोगों की गिनती किया जाना (2:1–70)
     - 2:1–35
     - 2:40–60
     - 2:36–39
     - 2:61–70
   - ग. मंदिर का निर्माण आरम्भ (3:1–13)
     - 3:1–7
     - 3:8–13
   - घ. विरोध (4:1–24)
     - 4:1–7
     - 4:8–16
     - 4:17–24

ङ. निर्माण का नया किया जाना (5:1–6:12)

5:1–5 5:6–17 6:1–12

च. मंदिर का पूरा होना (6:13–22)

6:13–18 6:19–22

2. लोगों का सुधार (परिवर्तन); एज्रा के आधीन वापसी (7:1–10:44)

क. यरूशलेम को लौटना (7:1–8:36)

7:1–10 8:1–14 8:33–36

7:11–26 8:15–20

7:27–28 8:21–32

ख. यरूशेल की आत्मिक जाग्रति (9:1–10:44)

9:1–4 10:1–17

9:5–15 10:18–44

नहेम्याह

(शहर का पुनः निर्माण किया जाना)

लेखक और पुस्तक का नाम : यद्यपि कुछ लोग मानते हैं कि नहेम्याह ने इस पुस्तक को लिखा उसके शब्दों के अनुसार, ***"हक्ल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन"*** (1:1), ऐसे भी हैं जो ये मानते हैं कि कुछ सबूत ऐसे हैं कि इसका लेखक एज्रा है और नहेम्याह के नोट्स को इस्तेमाल कर लिखा। बहुत से शोधकर्ता भी मानते हैं कि इसे नहेम्याह ही ने लिखा और पुस्तक उसी के नाम से है क्योंकि पुस्तक का अधिकांश भाग आस पास की परिस्थितियों का यरूशलेम लौटने का व्यक्तिगत लेखा जोखा है (1:1–7:73, 12:31–13:31)।

यद्यपि आरम्भ से एज्रा के साथ एक पुस्तक थी – पिछली आधी पुस्तक इसका नाम नहेम्याह से लेती है जो एज्रा का सहयोगी और फारस के राजा का पिलाने वाला था। नहेम्याह के नाम का अर्थ "यहोवा तसल्ली देता है"।

लेखन तिथि : एतिहासिक सैटिंग प्राचीन इब्रानी पुस्तक एज्रा–नहेम्याह का पिछला हिस्सा जिसका मतलब ये लगभग ई.पूर्व 445–425 में लिखी गई।

विषय और अभिप्राय : नहेम्याह की पुस्तक यहूदी जो बंधुवाई से लौटे उनका इतिहास जारी रखती है। नहेम्याह ने यरूशलेम का राज्यपाल बनने के लिये फारस के राजा अर्तशत्र का पिलाने वाले के पद पर त्याग कर दिया और लोगों को शहर–पनाह बनाने में अगुवाई की। (मरम्मत करने में) एज्रा और नहेम्याह एक ही समय में थे। (नहेम्याह 8:2,9) वे दोनों परमेश्वर के भक्त थे पर विभिन्न योग्यताओं (पद) पर रहकर यहोवा की सेवकाई की। जबकि एज्रा याजक था और लौटे हुए बचे लोगों के साथ अधिक धार्मिक कार्यों में संलग्न था, नहेम्याह साधारण व्यक्ति था और राजनैतिक हसियत से यरूशलेम की शहर–पनाह के पुनः निर्माण में राज्यपाल के रूप में सेवा की।

नहेम्याह इसलिये भी लिखी गई कि ये दिखाये कि बंधुवाई में जाने के बाद उनके वापस आने में स्पष्टता से परमेश्वर का हाथ था। नहेम्याह की अगुवाई के आधीन जो कार्य 94 वर्षों में प्रथम बार यरूशलेम लौटने पर नहीं हो सका था उसे 52 दिनों में पूरा किया गया। विश्वास की आज्ञाकारिता के द्वारा वे जो भयानक विरोध दिखता था उसे करने योग्य हो गये थे।

विशेष लोग : नहेम्याह, अर्तशत्र, सम्बलत, एज्रा

नहेम्याह में जिस प्रकार मसीह देखा गया : नहेम्याह मसीह की तस्वीर प्रस्तुत करता है मसीह का उच्च स्थान छोड़ने की इच्छा उसके पुनः स्थापन के कार्य के विषय। आगे अर्तशत्र की राजाज्ञा दानिय्येल की 70 वर्ष की भविष्यवाणी का चिन्ह प्रगट करती है और मसीह के आने की उल्टी गिनती आरम्भ हो जाती है (दानिय्येल 9:25–27)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. शहरपनाह का पुनः निर्माण (1:1–7:73)

क. पुनः निर्माण की तैयारी (1:1–2:20)

1:1–11 2:1–10 2:11–20

ख. पुनः निर्माण (3:1–7:73)

3:1–32 5:1–13 6:15–18

4:1—8	5:14—19	7:1—65
4:9—23	6:1—14	7:66—73

2. **लोगों का पुनः स्थापना (8:1—13:31)**

क. वाचा का नया होना (8:1—10:39)

8:1—8	8:13—18	10:1—27
8:9—12	9:1—38	10:28—39

ख. लोगों का वाचा के प्रति आज्ञाकारिता (11:1—13:31)

11:1—19	12:27—30	13:10—14
11:20—36	12:31—47	13:15—22
12:1—21	13:1—3	13:23—31
12:22—26	13:4—9	

एस्तेर

(परमेश्वर के लोगों का बचाव)

लेखक और पुस्तक का नाम : पुस्तक कोई भी संकेत नहीं देती कि इसे किसने लिखा। पर जो कोई भी था वह फारस की संस्कृति से भली भांति परिचित था। ये सभी लेखा—जोखा संकेत करते हैं कि वह व्यक्ति वहां था, क्योंकि वह घटना का वर्णन इस प्रकार से करता है जैसे आंखों देखा हाल। इसलिये हो सकता है वह एक यहूदी रहा हो। कुछ लोग मानते हैं कि एज्रा या नहेम्याह ने इसे लिखा पर इसका कोई ठोस सबूत नहीं मिलता।

इस पुस्तक का नाम उसके मुख्य पात्र के नाम पर है जिसका इब्रानी नाम "हद्देसाह" था जिसे फारसी नाम बदलकर एस्तेर दिया गया जिसका अर्थ "सितारा" होता है।

लेखन तिथि : एस्तेर की घटनाएं एज्रा के छटवें और सातवें अध्याय के बीच घटीं, प्रथम वापसी जो जरूबाबेल की आधीनता में हुई और दूसरी वापसी एज्रा की अगुवाई में हुई एस्तेर की पुस्तक ई.पू. 470 और 465 के बीच लिखी गई — क्षयर्ष के राज्य के बाद के वर्षों में (10:2—3) या उसके पुत्र के अर्तशत्र के राज्य में (464—424 ई.पूर्व)।

विषय और अभिप्राय : एस्तेर एक सुन्दर यहूदी लड़की की कहानी बताती है जिसे फारस के राजा क्षयर्ष ने अपनी रानी बनाने के लिये चुना। जब हामान ने सभी यहूदियों को घात करने की योजना बनाई, रानी एस्तेर का चचेरा भाई मोर्दकै ने एस्तेर को अपने लोगों को बचाने के लिये आग्रह किया। अपने जीवन को जोखिम में डालकर उसने राजा से विनती की ओर यहूदियों को बचाया। यद्यपि बाइबल में यही एक पुस्तक है जिसमें परमेश्वर का नाम शामिल नहीं है, पुस्तक का विषय और अभिप्राय परमेश्वर की अपने लोगों को दी गई देखभाल उनकी परीक्षा और सताव में बचाव को दिखाना है।

विशेष लोग : एस्तेर, हामान, मोर्दकै, क्षयर्ष (अर्तशत्र जो फारस के राजा का इब्रानी नाम है)

एस्तेर में इस प्रकार मसीह में देखा गया : एस्तेर मसीह की सही तस्वीर उपलब्ध करती है इसमें वह अपने आपको अपने लोगों के छुटकारे के लिये मृत्यु में डालने को तैयार थी, और उसने लोगों के वकील की तरह कार्य किया। इसके साथ ही हम ये भी देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर यहूदियों का बचाव करते हैं जिसके माध्यम/द्वारा वह मसीह को देगा।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **यहूदियों को खतरा (1:1—3:15)**

क. वश्ती के स्थान पर एस्तेर का रानी के रूप में चुनाव (1:1—2:23)

1:1—9	2:1—7	2:17—20
1:10—22	2:8—16	2:21—23

ख. हामान का यहूदियों के विरुद्ध षड़यंत्र (3:1—15)

2. **यहूदियों का छुटकारा (4:1—10:3)**

क. एस्तेर का यहूदियों के लिये निर्णय (4:1—5:14)

4:1—8	4:15—17	5:9—14
4:9—14	5:1—8	

ख. हामान की पराजय (6:1–7:10)

6:1–9 7:1–6

6:10–14 7:7–10

ग. राजा क्षयर्ष की राजाज्ञा और मोर्दकै (8:1–17)

8:1–8 8:9–17

घ. यहूदियों के शत्रुओं की हार (9:1–19)

9:1–10 9:11–19

ङ. पुरीम के भोज के दिन (9:20–32)

च. मोर्दकै की प्रतिष्ठा की घोषणा और दरबार की बढ़ौतरी (10:1–3)

भाग 3
कविताओं की पुस्तकें

परिचय : पहली सत्तरह पुस्तकों का प्रथम सर्वेक्षण (व्यवस्था एवं इतिहास) उत्पत्ति से नहेम्याह ने पूरे पुराने नियम के इतिहास को ढका है। बाकी की सब पुस्तकें, कविताओं और भविष्यवाणी की पुस्तकें उन सत्तरह पुस्तकों के इतिहास में सही बैठती हैं। आगामी भाग में कविता की छोटे छोटे हिस्से जिनमें पांच पुस्तकें हैं– अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत हैं। उनको जांचने के पहले, हमें कुछ विशेषताओं को नोट करना है जो इन पांचों पुस्तकों में पाई जाती हैं।

विद्यार्थियों को ये स्पष्ट समझना चाहिये कि ये शीर्षक "कविताओं" का केवल उनका ही संदर्भ देना है। वे साधारण रूप से मानव कल्पना का उत्पादन नहीं हैं। ये कवितामय पुस्तकें मानव के वास्तविक अनुभव की तस्वीर प्रगट करती हैं।

सम्बन्ध : जबकि हमने सत्तरह पुस्तकें जो इतिहास है पहले ही देख चुके हैं। ये पांच कवितामय पुस्तकें प्रयोगात्मक हैं। वे उन घटनाओं का वर्णन करती हैं जो व्यक्तिगत रूप से हुई हैं। जबकि ऐतिहासिक पुस्तकें देश से सम्बंधित थीं, कवितामय पुस्तकें लोगों के व्यवहार और भावनाओं से अधिक सम्बंधित हैं। ऐतिहासिक पुस्तकें इब्रानी जाति के विषय में बताती हैं – कवितामय पुस्तकें मानव हृदय के साथ सम्बन्ध रखती हैं।

पुराने नियम में केवल ये ही कवितामय पुस्तकें नहीं हैं। भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में बहुत बड़े कविता के हिस्से हैं जिन्हें हम बाद में देखेंगे।

पुराना नियम मुख्य चार बड़े हिस्सों में बांटा जाता है जो इस्राएल के देश से सम्बंधित है जो परमेश्वर के चुने हुए हैं उनकी बड़ी विशेषताओं या ध्यान केन्द्रित होने के दृष्टिकोण सेः

1. व्यवस्था – इस्राएल के नैतिक जीवन से संबन्धित है
2. ऐतिहासिक – इस्राएल के राष्ट्रीय जीवन और विकास से सम्बंधित है
3. कवितामय – इस्राएल के आत्मिक जीवन से सम्बंध रहता है
4. भविष्यवाणीमय – इस्राएल के भविष्य जीवन सेसम्बन्ध रखता जो मसीह में पूर्ण होता है

ये पांचों कवितामय पुस्तकों को एक दूसरे के साथ सम्बन्धों में देखा जा सकता है

1. अय्यूब की पुस्तक – यातनाओं के द्वारा आशीष
2. भजन संहिता – प्रार्थनाओं के द्वारा स्तुति प्रशंसा
3. नीतिवचन – ज्ञान बोध के द्वारा बुद्धि
4. सभोपदेशक – वास्तविकता के द्वारा सत्य
5. श्रेष्ठगीत – मिलने द्वारा आनन्द

इब्रानी कविताओं का समय : जबकि इब्रानी कविता पूरे नियम के इतिहास में हुआ है – विशेषकर तीन कवितामय साहित्य का प्रारम्भिक समय रहा हैः–

1. पैतृक समय – अय्यूब (लगभग ई.पूर्व 1750)
2. दाऊद का समय – भजन संहिता (लगभग ई.पूर्व 1050)
3. सुलैमान का समय (लगभग ई.पूर्व 950)
   - क. श्रेष्ठगीत – एक जवान का प्रेम
   - ख. नीतिवचन – अधेड़ उम्र के मनुष्य की बुद्धि
   - ग. सभोपदेशक – बूढ़े मनुष्य का दुःख (लगभग 950 ई.पू.)

कवितामय पुस्तकों में मसीह : जैसा पहले नोट किया गया मसीह पूरी बाइबल का हृदय है, इमाऊस के रास्ते पर दो चेलों के साथ जो पहले दिनों की घटनाओं से जैसे क्रूस पर चढ़ाये जाने से बहुत दुःखित व मृत्यु और पुनरुत्थान की रिपोर्ट से व्याकुल थे, पुनः जी उठने वाला उद्धारकर्ता उनके साथ चलने लगा और उन्हें अपने बारे में धर्मशास्त्र से बताने लगा (लूका 24:27)। तब बाद में जब वह ग्यारहों को दिखाई दिया, उसने कहा, ***"ये मेरी वे बातें हैं जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं सब पूरी हों"*** (लूका 24:44)।

ये दिमाग में रखते हुए, इन कवितामय पुस्तकों को पुनः देखने के पहले, ये अच्छा होगा कि उनके मसीहत के ज्ञान को प्राप्त कर लें – इसके लिए नोरमन गिसलर लिखते हैंः–

जबकि मसीह के लिये व्यवस्था में नींव रख दी गई थी और मसीह के लिये तैयारी इतिहास की पुस्तकों में कर दी गई थी, कवितामय पुस्तकें लोगों के हृदयों में मसीह की आवश्यकता को प्रगट करती है। वे मसीह से भरपूर जीवन के लिये प्रोत्साहित करते हैं दोनों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से। दोनों चेतन और अचेतन अवस्था में प्रोत्साहित करते हैं।

अय्यूब मसीह के द्वारा मध्यस्तता की आवश्यकता को दिखाता है। भजन संहिता मसीह के साथ की संगति की आवश्यकता को दिखाता है। सभोपदेशक अन्त में सन्तुष्टि की आवश्यकता को दिखाता है। श्रेष्ठगीत मसीह के साथ प्रेम से मिलने की आवश्यकता को दिखाता है।

इब्रानी कविता

इब्रानी कविता का स्वरूप : इब्रानी कविता अंग्रेजी कविता की असमान है जो तुक और माप पर जोर देती है। इब्रानी कविता उसके प्रभाव के लिये दूसरी विशेषताओं पर निर्भर रहती है समानता (जो विभिन्न पंक्तियों का विषय की तुलना है) बाइबल आधारित कविता की मुख्य विशेषताएं हैं। इब्रानी कविताओं में बहुत से "अलंकार" होते हैं।

तीन प्रकार की इब्रानी कविताएं : इब्रानी कविताएं तीन प्रकार की होती हैं : (1) गीतात्मक कविता जो मूलतः संगीत के साथ (भजन) में साथ होती थी। (2) शिक्षात्मक (शिक्षण) कविता, जो सत्य वर्णन को इस्तेमाल करती है, इस प्रकार बनाई गई थी कि जीवन के सिद्धान्तों को बताती है (नीतिवचन और सभोपदेशक) (3) नाट्यकला की कविताएं, जो अपने संदेश को बताने के किये वार्तालाप का इस्तेमाल करते हैं (अय्यूब और श्रेष्ठगीत)।

इब्रानी कविता के दो मुख्य तत्व : समानान्तरता और अलंकार

समान्तरता

इब्रानी कविता दुहराती और विचारों को दुबारा संजोती हैं। समान्तरता उन विचारों की तुलना का संदर्भ देते हैं। विचारों के बहुत से समानान्तर प्रबन्ध हैंः

क. पर्यायवाची – प्रथम पंक्ति के विचार मूलतः दूसरी पंक्ति में भिन्न शब्दों द्वारा दुहराये जाते हैं (भजन 2:4; 3:1; 7:17)

ख. विरोधात्मक – प्रथम पंक्ति के विचार विरोधाभास के विचारों में दूसरी पंक्ति में बताये जाते हैं (भजन 1:6; 34:10)। वे अक्सर "परन्तु" के साथ पहचाने जाते हैं।

ग. बनावटी – दूसरी पंक्ति वर्णन करती है या प्रथम पंक्ति के विचार को विकसित करते हैं (भजन 1:3,95:3)।

घ. चरम – दूसरी पंक्ति अन्तिम शब्दों को दुहराता है (भजन 29:1)।

ङ. पैदावार/उपज–एक पंक्ति मुख्य बात कहती है दूसरी पंक्ति कल्पना में दिखाती है (भजन 42:1, 23:1)।

अलंकार

अलंकार उस समय होता है जब एक चीज़ दूसरे का प्रतिनिधित्व करता है। इब्रानी कविता विचारों और भावनाओं को बताने के लिये अलंकार का इस्तेमाल करती है।

उदाहरण के लियेः ***"एक जो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न होता है"*** होगा ***"वृक्ष जो दृढ़ता से रोपा गया है"*** (भजन 1:2–3) ***"वह जो प्रसन्न होता है"*** ये वास्तव में "वृक्ष" नहीं है पर वृक्ष के साथ तुलना की गई है। आप शब्द "जैसे" या "ऐसे" इन प्रकार के वाक्यों में पातें हैं (भजन 5:12, 17:8, 131:2)।

दूसरा अलंकार एक चीज़ से दूसरी की तुलना करता है – शब्द "है" इस्तेमाल करके। भजन 23:1 में दाऊद कहता है, ***"यहोवा मेरा चरवाहा है"।*** दाऊद चार पांव व बालों वाला जानवर नहीं है पर परमेश्वर द्वारा उसकी देखभाल करता है एक चरवाहा होकर अपनी भेड़ों की देखभाल करेगा (भजन 84:11; 91:4)।

समय समय पर अतिश्योक्ति या किसी बात को बताने को बढ़ा चढ़ा कर बताते हैं। भजन 6:6 में दाऊद कहता है, ***"मैं कराहते कराहते थक गया, मैं अपनी खाट आंसुओं से भिगोता हूं, प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है"।*** ये वर्णन उसकी उदासी बयान करता है – दाऊद अधिक नहीं रोता कि बिस्तर तैर जाये (भजन 78:27; 107:26)।

कभी कभी पुष्टि करने के लिये प्रश्न इस्तेमाल किया जाता है या तथ्य को इंकार करना न कि पूछताछ करना। जब दाऊद ने पूछा, ***"कौन तेरे समान है"*** भजन 35:10 उसकी इच्छा परमेश्वर की महानता को बयान करना था, केवल उत्तर प्राप्त करना नहीं "कोई नहीं" (भजन 56:8, 106:2)।

अलंकार का अन्तिम उदाहरण जानवर के कुछ हिस्से के इस्तेमाल परमेश्वर के व्यक्ति को बताने के लिये की। ये परमेश्वर के सत्य को बताने के लिये बनाये गये हैं उदाहरण के लिये भजन 17:8 में हम पाते हैं कि दाऊद प्रभु से पूछता है, ***"उसे अपने पंखों के शरण में छिपा लें"।*** परमेश्वर चिड़िया नहीं है पर दाऊद परमेश्वर से बचाव मांग रहा है, एक मां चिड़िया जैसे अपने बच्चों को देती है (भजन 91:4)।

अय्यूब

(यातनाओं के द्वारा आशीष)

लेखक और पुस्तक का नाम : हम जानते हैं कि इस पुस्तक का स्पष्ट शीर्षक इसके मुख्य चरित्र के द्वारा दिया गया है – अय्यूब और कि वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था (यहेजकेल 14:14,20; याकूब 5:11) इसका लेखक अनजान है और कोई भी लेखन सबूत नहीं है कि लेखक की पहचान हो सके। टीकाकारों ने स्वयं अय्यूब का सुझाव दिया है, साथ ही ऐलीहू, मूसा, सुलैमान और दूसरों का नाम सुझाया है।

अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ का समय तय था, अय्यूब की पुस्तक का नाम इसके मुख्य चरित्र से आता है, एक आदमी जिसका नाम अय्यूब था जो अत्याधिक यातनाओं का अनुभव कर रहा है (धन सम्पत्ति की हानि, परिवार और स्वास्थ की हानि) उस प्रश्न से संघर्ष करता है वह है क्यों?

लेखन तिथि : जबकि हम लेखक की पहचान करने योग्य नहीं हैं, ये भी समय निर्धारित करना कि कब लिखा गया सम्भव नहीं हैं। फिर भी हम ये स्थापित करने योग्य हैं कि इस कहानी का समय मूसा की व्यवस्था के देने से पहले का है (ई.पूर्व. 1445–1405)। व्यवस्था देने के पूर्व और लेवियों के याजकपन की स्थापना से पहले परिवार का मुखिया याजक था। अय्यूब को परिवार के याजक की तरह बलिदान चढ़ाते देखा जा सकता है (अय्यूब 1:5)। ये व्यवस्था दिये जाने के पहले के समय का संकेत करता है। ये हो सकता है अब्राहम के समय में हुआ हो।

विषय और अभिप्राय : ये पुस्तक परमेश्वर की यातनाओं और बुराई के समय उनका सामना करने में उसकी भलाई, न्याय और सार्वभौम चरित्र का वर्णन करती है। इस प्रकार पुस्तक प्रश्नों से संघर्ष करती है : क्यों धर्मी लोग यातना सहते हैं, यदि परमेश्वर दया का परमेश्वर और प्रेम का परमेश्वर है? ये स्पष्ट रीति से सिखाता है कि परमेश्वर की सम्प्रभुता और इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है। अय्यूब के तीन मित्रों ने ठीक ऐसा ही उत्तर दिया। उन्होंने कहा ये सब यातनाएं पाप के कारण हैं। ऐलीहू ने घोषणा की कि यातनाएं अक्सर धर्मी को शुद्ध करने के लिये होती हैं। इसलिये परमेश्वर का अभिप्राय अय्यूब की स्वयं धार्मिकता को समाप्त कर देने का था और उसको उस स्थान पर लाने का था कि उस पर पूर्ण भरोसा रखे। ग्लेसन आर्चर इस विषय का सर्वोत्तम सारांश देता है:

> ये पुस्तक भक्तों के जीवन की आपदाओं और पीड़ा की विचारधारा की समस्याओं से सम्बन्ध रखता है। ये प्रश्नों का उत्तर देता है, कि धर्मी क्यों यातना सहता है? ये उत्तर तीन तरह से आता है: (1) परमेश्वर जो आशीषें उंडेलता है वह उससे अलग प्रेम के योग्य है; (2) परमेश्वर यातनाएं आने देता है कि आत्मा में शुद्धता और भलाई की सामर्थ आये; (3) परमेश्वर के विचार और तरीके देखने के द्वारा मनुष्य के छोटे सोच के लिये अत्याधिक बड़ा बनाता है भले ही मनुष्य परमेश्वर के दर्शन और स्वांस को जीवन के विषय में देखने योग्य नहीं है। फिर भी परमेश्वर जानता है कि उसकी महिमा के लिये क्या उत्तम है और हमारी भलाई के लिये क्या अच्छा है। ये उत्तर अय्यूब के तीन तसल्ली देने वालों के दृष्टिकोण के विरुद्ध (ऐलीपज, बिलदाद और जो पर) दिया गया है।

आगे अभिप्राय परमेश्वर और शैतान के बीच के संघर्ष युग को प्रगट करना है और इस संघर्ष के साथ यातना के सम्बन्ध को बताना है। अन्त में ये रोमियों 8:28 के सत्य को प्रगट करता है।

विशेष लोग : अय्यूब, निर्दोष और धर्मी मनुष्य; अय्यूब पर दोष लगाने वाले, ऐलीपज, बिलदाद, और सोफर, ऐलीहू जो जवान और अय्यूब का बुद्धिमान मित्र जो अय्यूब को सलाह देता और शैतान को उपदेश देता है।

अय्यूब में मसीह देखा गया : मसीह अय्यूब में कई तरह से देखा गया, अय्यूब एक छुड़ाने वाले को पहचानता है (19:25–27) और मध्यस्थता के लिये प्रार्थना करता है (9:33, 33:23)। वह जानता है कि उसे किसी ऐसे की आवश्यकता है जो "यातना" के रहस्य को समझा जिसका उत्तर केवल मसीह में मिलता है जो हमारी यातनाओं में रहता और अन्त में शैतान के दोषों का उत्तर देता है, जो अन्त में परमेश्वर के विरुद्ध हैं, और उसे परास्त करता है (इब्रानियों 2:14–18; 4:15; रोमियों 8:32–34)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. प्रारम्भिक कार्य : अय्यूब की विपदायें (क्लेश) (1:1–2:13)

क. उसकी परिस्थितियां और चरित्र (1:1–5)

ख. उसकी समस्याएं और उनके स्रोत – शैतान (1:6–2:10)

1:6–12 | 1:13–22 | 2:1–10

ग. उसके तसल्ली देने वाले (2:11–13)

2. तीन मित्रों की झूठी तसल्ली या चर्चा (3:1–31:40)

क. बहस का प्रथम चक्र (3:1–14:22)

1) अय्यूब का विलाप (3:1–26)

3:1–19 | 3:20–26

2) ऐलीपज का उत्तर (4:1–5:27)

4:1–11 | 5:1–7 | 5:17–27

4:12–21 | 5:8–16

3) और अय्यूब का उत्तर (6:1–7:21)

6:1–7 | 6:24–30 | 7:11–21

6:8–13 | 7:1–6

6:14–23 | 7:7–10

4) बिलदाद का उत्तर (8:1–22)

8:1–7 | 8:8–10 | 8:11–22

5) अय्यूब का उत्तर (9:1–10:22)

9:1–12 | 9:25–35 | 10:8–17

9:13–24 | 10:1–7 | 10:18–22

6) सोपर का उत्तर (11:1–20)

11:1–6 | 11:7–12 | 11:13–20

7) और अय्यूब का उत्तर (12:1–14:22)

12:1–6 | 13:13–19 | 14:13–17

12:7–12 | 13:20–28 | 14:18–22

12:13–25 | 14:1–6

13:1–12 | 14:7–12

ख. बहस का दूसरा चक्र (15:1–21:34)

1) ऐलीपज का उत्तर (15:1–35)

15:1–16 | 15:17–35

2) और अय्यूब का उत्तर (16:1–17:16)

16:1–5 | 16:18–22 | 17:6–16

16:6–17 | 17:1–5

3) बिल्दाद का उत्तर (18:1–21)

18:1–4 | 18:5–21

4) अय्यूब का उत्तर (19:1–29)

19:1–6 | 19:7–22 | 19:23–29

5) सोपर का उत्तर (20:1–29)

20:1–11 | 20:12–19 | 20:20–29

6) और अय्यूब का उत्तर (21:1–34)

21:1–16 | 21:17–26 | 21:27–34

ग. बहस का तीसरा चक्र (22:1–31:34)

1) ऐलीपज का उत्तर (22:1–30)

22:1–11 | 22:12–20 | 22:21–30

2) और अय्यूब का उत्तर (23:1–24:25)

23:1–11	24:1–7	24:13–17
23:8–17	24:1–12	24:18–25

3) बिल्दाद का उत्तर (25:1–6)

4) और अय्यूब का उत्तर (26:1–31:40)

26:1–4	29:1–20	31:9–12
25:5–14	29:21–25	31:13–15
27:1–6	30:1–8	31:16–23
27:7–12	30:9–15	31:24–28
27:13–23	30:16–23	31:29–37
28:1–11	30:24–31	31:38–40
28:12–22	31:1–4	
28:23–28	31:5–8	

3. ऐलीहू के वचन (32:1–37:24)

क. प्रथम वचन : क्लेशों के द्वारा परमेश्वर का मनुष्यों को निर्देश (32:1–33:33)

32:1–10	33:1–7	33:19–22
32:11–14	33:8–12	33:23–28
32:15–22	33:13–18	33:29–33

ख. दूसरा वचन : परमेश्वर का न्याय और समझदारी साबित की गई (34:1–37)

34:1–9	34:16–20	34:31–37
34:10–15	34:21–30	

ग. तीसरा वचन : लगातार पवित्रता शुद्धता का लाभ (35:1–16)

35:1–8	35:9–16

घ. चौथा वचन : परमेश्वर की महानता और अय्यूब का दोष परमेश्वर पर पक्षपाती होने का दोष (36:1–37:24)

36:1–16	36:24–33	37:14–20
36:17–23	37:1–33	37:21–24

4. परमेश्वर का बवन्डर में से प्रगट होना (38:1–42:6)

क. प्रथम प्रगट होना (38:1–40:5)

1) परमेश्वर का सृष्टि में सर्वशक्तिमान होने का दावा (38:1–39:30)

38:1–7	38:25–30	39:5–12
38:8–11	38:31–33	39:13–18
38:12–15	38:34–38	39:19–25
38:16–18	38:39–41	39:26–30
38:19–24	39:1–4	

2) अय्यूब का अपने आपको निन्दित करने का अंगीकार (40:1–5)

ख. द्वितीय प्रगटीकरण : परमेश्वर की शक्ति और मनुष्य की कमजोरी; अय्यूब का नम्र उत्तर (40:6–42:6)

40:6–9	40:19–24	42:1–6
40:10–14	41:1–11	
40:15–18	41:12–34	

5. अन्तिम वर्णन (42:7–17)

क. झूठे तसल्ली के लिये परमेश्वर की डांट (42:7–9)

ख. अय्यूब की पुनः स्थापना और इनाम (42:10–17)

भजन संहिता

(प्रार्थना के द्वारा प्रशंसा)

लेखक और पुस्तक का नाम : भजन संहिता बाइबल की सबसे लम्बी पुस्तक हैं और शायद सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली धर्मशास्त्र की पुस्तक है क्योंकि ये मानव हृदय से बातें करता है – हमारे जीवन की सभी अनुभवों में। बार बाद ठन्डी सांसें

प्रार्थना के और प्रशंसा के द्वारा गाने में बदल गईं। अधिकतर हिस्सों में यद्यपि भजन के पाठ्य के लेखक को नहीं बताया गया ये शीर्षक अक्सर उनके लेखक को संकेत नहीं करते। दिया गया चार्ट इन भजनों के लेखकों को बताता है जैसा उनके शीर्षक में पाया जाता है।

भजनों के लेखक		
दाऊद	78	भजन 1–41; 51–70, 86, 103, 108–110, 122, 124, 131, 133, 138–145
आसाप	12	भजन 50, 73–83
कोरह वंशी	12	भजन 42–49, 84–85, 87–88
सुलैमान	2	भजन 72, 127
मूसा	1	भजन 90
ईथन	1	भजन 89
अनजान	44	भजन 71, 91–102, 104–107, 111–121, 123, 125–126, 128–130 132, 134–137, 146–150

इब्रानी भाषा में भजन संहिता का शीर्षक "प्रशंसा" या "प्रशंसा की पुस्तकें" है। केवल एक भजन (145) शब्द "प्रशंसा" दिया गया, पर प्रशंसा भजन का हृदय है। प्रशंसा गीत या कविता है संगति के साथ गाये गये। शब्द "भजन संहिता" इब्रानी शब्द से आती है जिसका मतलब है, एक तार वाला बाजा जो गाने का सम्पूर्ण होना है।

लेखन तिथि : उनकी बहुत विशाल चक्र का दायरा, बहुत से विभिन्न विषयों, और बहुत सी भिन्न मंडली बहुत सी विभिन्न परिस्थितियों के आधीन रहते हैं, भजन संहिता बहुत से मनोदशा और अनुभवों को प्रगट करता है वो उन्हें अत्याधिक महत्वपूर्ण पाठक के लिये बनाता है भले ही कोई दिन हो जिसमें वह रहता है। विभिन्न भजनों की तिथि के सम्बन्ध में गलेसन आर्चर ये लिखता है:

> इनमें से, सबसे प्रारम्भिक स्वाभाविक रूप से भजन 90 होगा – अंदाजन ई.पूर्व 1405 में बनाया गया। दाऊद के भजन 1020 से 975 ई.पूर्व बनाये गये होंगे। आसाप के लगभग उसी समय से रहे होंगे, सुलैमान के राज्य के समय से भजन 127 सम्भव है ई.पूर्व 950 लिखा गया होगा, कोरह के सन्तान और दो इफरातुस जो वर्णन किये गये हैं शायद पहले ही से थे, वे भजन जिनका कोई शीर्षक नहीं था, कुछ बिना शक दाऊद के थे (उदाहरण के लिये 2 और 33) और दूसरी तिथियां बाद के समय की पूरे उनके बंधुवाई से लौटने के समय के हैं (जैसे 126 और 137 बाद में इतनी देर जब तक बंधुवाई से वापसी न हो गई) कोई भी सही सबूत नहीं हैं, फिर भी तिथि के लिये प्रस्तुत किये गये हैं जो लगभग ई.पूर्व 500 के आसपास के हैं।

विषय और अभिप्राय : भजन हमें आशा और तसल्ली का सन्देश सामान्य आराधना के माध्यम से देते हैं। वे हैं, विशेषता में, भय के विरुद्ध और शिकायत किये व्यक्ति से व्यक्तिगत उत्तर के द्वारा और परमेश्वर का कार्य। वे आराधना विश्वास और इस्राएल के आत्मिक जीवन का प्रदर्शन है। भजनों में परमेश्वर के लोगों के हृदय का आइना है जिसमें साधारण समस्त संसार के मानव के अनुभव परमेश्वर के व्यक्ति के प्रकाश में प्रतिज्ञा करता, योजना और उपस्थिति प्रस्तुत करता है।

150 भजनों के इक्ट्ठे किये जाने में बहुत प्रकार की महान भावनाएं, परिस्थितियां और विषय आते हैं। इसका मतलब है कि किसी भी विषय और अभिप्राय के विषय में समानता बनाना बहुत कठिन है, पर ये कहना सुरक्षित है कि सभी भजन में व्यक्तिगत रूचि परमेश्वर की भलाई और दया की ओर जाना विश्वासी का एक भाग है। अक्सर ये भजनकार की आंतरिक निराशा की भावनाओं, उत्तेजना को शामिल करती है या भले ही परमेश्वर के शत्रुओं का सामना करते तब भी धन्यवादित होते हैं। पर यदि भजनकार दुःखित है या आनन्दित विषय पर है वह हमेशा अपने आप को जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में प्रगट करता है। कुछ भजन हैं, ये सही है जिसमें अधिकतर परमेश्वर के विचार हैं और स्वयं परमेश्वर का प्रगटीकरण है, जैसे भजन 2 में हैं पर ये अत्याधिक विकल्प हैं।

बहुत से भजन परमेश्वर के वचन का सर्वेक्षण हैं, उसकी विशेषताएं और मसीह के आने की आशा है।

भजनों के विभाजन : वास्तव में भजन पांच पुस्तकों की एक किताब है। नीचे दिये गये हर एक भाग परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा से समाप्त होता है (स्तुति प्रशंसा का बयान) जबकि भजन 150 स्तुति प्रशंसा का स्थान लेता है और समूचे संग्रह का सही समापन का रूप बनाता है।

ऐपीफेनेसियस ने कहा, "इब्रानियों ने भजन संहिता को पांच पुस्तकों में विभाजित किया जिससे कि ये दूसरा पेन्टाटयूच होगा"। भजन 1:1 वर्णन करता है, "मूसा ने इस्राएलियों को व्यवस्था की पांच पुस्तकें दी और इसके सम्बन्ध में दाऊद ने पांच पुस्तकों में भजन संहिता दी"।

नीचे दी गई रूप रेखा में पांचों पुस्तकों का सम्बन्ध देखा जा सकता हैः

1. मनुष्य और सृष्टि के विषय भजन (1–41) उत्पत्ति से सम्बंधित है।
2. इस्राएल और छुटकारे भजन (42–72) निर्गमन से सम्बंधित है।
3. आराधना और मंदिर के विषय भजन (73–89) लैव्यव्यवस्था से सम्बंधित है।
4. पृथ्वी पर निवास के विषय भजन (90–106) गिनती से सम्बंधित है।
5. परमेश्वर का वचन और स्तुति प्रशंसा के भजन (107–150) व्यवस्थाविवरण से सम्बंधित।

पुस्तकों के विभाजन को दूसरी तरह से देखने का तरीकाः

पुस्तक	भजन	लेखक	सामान्य विषय
I	भजन 1–41	दाऊद	आराधना के भजन
II	भजन 42–72	दाऊद और कोरह	विनती के गीत/भजन
III	भजन 73–89	मुख्य रूप से आसाप	विनती के भजन
IV	भजन 90–106	मुख्य रूप से अनजान	प्रशंसा के गीत
V	भजन 107–150	दाऊद और अनजान	प्रशंसा के गीत

श्रेणी या प्रकार के भजन : उनके प्रकार की तरह, नीचे दिये गये उदाहरण साधारणतः इन वर्गों/श्रेणी में बांटने पर सहमत हैंः

1. **विलाप** (दुःख) या **विनती** या व्यक्तिगत (भजन 3) या सामूहिक (भजन 44)।
2. धन्यवादी या प्रशंसा, या व्यक्तिगत (भजन 30) या सामूहिक (भजन 65)
3. परमेश्वर पर **भरोसा** (भजन 4)।
4. यहोवा का **सिंहासन पर होने** के गीतः यरूशलेम सम्बंधी भजन (भजन 48) और राजकीय भजन (कुछ मसीह से संबंधित हैं : भजन 2,110)।
5. **शिक्षण (शिक्षा के) और बुद्धि** के भजन (भजन 1,37,119)
6. **विषय** भजन : भजनों को विषय अनुसार बांटा जा सकता है जैसे : सृष्टि के भजन (भजन 8,19) प्रकृति के भजन (भजन 19, 104) दाऊद की यादगार के भजन (भजन 111, 112, 119)। निर्गमन के भजन (भजन 78) पश्चाताप का भजन (भजन 6), तीर्थ यात्रा का भजन (भजन 120), मसीह के विषय भजन, और वे जिनमें मसीह की भविष्यवाणी शामिल है जैसेः भजन 2,8,16,22,40,45,72,110,118।

मुख्य लोग : यद्यपि भजन के शीर्षक कभी कभी विषय या भजन के लेखक की ओर संकेत करते हैं जैसे दाऊद और कोरह, भजन का लेख नहीं करता बल्कि लगता है कि परमेश्वर के लोगों पर उनकी आराधना और प्रभु के साथ चलने के विषय अधिक ध्यान दिया गया।

मसीह जो भजनों में देखा गया : बहुत से भजन मसीह के प्रति हैं और उसके कार्य और व्यक्तित्व के विषय बोलते हैं। वे नीचे दिये गये श्रेणी में आते हैंः

1. **विचित्र रूप में मसीह के प्रति** : ये भजन मसीह के प्रति कम स्पष्ट हैं। भजनकार कुछ तरीके से मसीह के प्रकार है (34:20, 69:4,9) पर हिस्से का दूसरा भाग लागू नहीं होता। शायद इस मामले में यीशु और उसके चेले उसी प्रकार के भजनों के अनुभवों को प्रगट कर रहे हैं (उदाहरण के लिये 109:8, प्रेरित 1:20 में)
2. **प्रतिकात्मक – भविष्यसूचक** : यद्यपि भजनकार अपने अनुभवों को वर्णन करता है, भाषा इस प्रकार की है जो अपने जीवन से ऊपर बताती है और केवल मसीह में ऐतिहासिक रूप से सत्य हो जाती है (22)।
3. **अप्रत्यक्ष – मसीह के विषय** : जब भजन लिखा गया ये दाऊद के घर का संदर्भ देता है या विशेष राजा के विषय, पर इसकी अन्तिम परिपूर्णता केवल मसीह में पाई जायेगी (2, 45,72)।
4. **पूर्ण – भविष्यसूचक** : ये वे भजन हैं जो बिना किसी दूसरे संदर्भ या व्यक्ति या दाऊद के पुत्र के सीधे मसीह के लिये हैं (110)।
5. **राज्याभिषेक** : ये भजन हैं जो प्रभु के आने का पूर्व अनुमान लगाते हैं और उसके राज्य की स्थापना और मसीह यीशु के आने की पूर्ति करना बताते हैं (96–99)।

विशेष भविष्यवाणी की पूर्ति जो मसीह में लागू की गईः

भविष्यवाणी	भजन	नये नियम के हिस्से
1. जन्म	104:4	इब्रानियों 1:7
2. अपमान	8:4	इब्रानियों 2:6
3. ईश्वरत्व	45:6	इब्रानियों 1:8
4. सेवकाई	69:9	यूहन्ना 2:17
5. तिरस्कार	118:22	मत्ती 21:42
6. पकड़वाया जाना	41:9	यूहन्ना 13:18
7. क्रूस पर चढ़ाये जाने की घटना	22	मत्ती 27:39,43, 46, लूका 23:35
8. पुनः जी उठना	2 और 16	प्रेरित 2:27
9. स्वर्गारोहण	68:18	इफिसियों 4:8
10. राज्य	102:26	इब्रानियों 1:11

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. पुस्तक 1: आराधना के गीत (भजन 1–41)

भजन 1 : धन्य पुरुष : दो प्रकार का जीवन – विरोधाभास : शब्द और संसार
भजन 2 : राजा मसीह : परमेश्वर और मसीह के विरुद्ध षड्यंत्र
भजन 3 : परेशानी में खामोशी : खतरे में बचाव
भजन 4 : परमेश्वर में भरोसे की सांयकालीन प्रार्थना
भजन 5 : परमेश्वर की उपस्थिति में भरोसे की प्रातःकालीन प्रार्थना
भजन 6 : गहरी इच्छा में आत्मा की प्रार्थना
भजन 7 : शरण की प्रार्थना
भजन 8 : सृष्टिकर्ता की महिमा और मानव प्रतिष्ठा
भजन 9 : परमेश्वर के न्याय की धन्यवाद की प्रार्थना
भजन 10 : दुष्ट को परास्त करने की प्रार्थना
भजन 11 : प्रभु शरण और सुरक्षा के रूप में
भजन 12 : झूठी जीभ के विरूद्ध प्रार्थना
भजन 13 : परेशानी में सहायता की प्रार्थना
भजन 14 : मनुष्य की धोखेबाजी और दुष्टता का वर्णन
भजन 15 : ईश्वर भक्त मनुष्य का वर्णन
भजन 16 : सन्तों का शरण परमेश्वर
भजन 17 : परमेश्वर के न्याय के द्वारा छुटकारे की प्रार्थना
भजन 18 : छुटकारे के लिये प्रशंसा की प्रार्थना
भजन 19 : परमेश्वर का सृष्टि में प्रगटीकरण, कार्य और लिखित वचन
भजन 20 : शत्रुओं के ऊपर विजय की प्रार्थना
भजन 21 : राजा के लिये प्रभु शक्तिमान
भजन 22 : क्रूस की तस्वीर : इच्छा और प्रशंसा की प्रार्थना
भजन 23 : एक ईश्वरीय चरवाहे की तस्वीर, परमेश्वर की भलाई का भजन
भजन 24 : राजा की महिमा का भजन
भजन 25 : आड़े–तिरछे काव्य : छुटकारे मार्गदर्शन और क्षमा की प्रार्थना
भजन 26 : छुटकारे और प्रतिष्ठा की विनती
भजन 27 : प्रभु पर निर्भय होने की प्रार्थना
भजन 28 : सहायता की प्रार्थना और उसके उत्तर की प्रशंसा – प्रभु मेरी चट्टान है
भजन 29 : परमेश्वर की शक्तिशाली आवाज

भजन 30 : आवश्यकता के समय परमेश्वर का विश्वासयोग्य होने के लिये धन्यवाद की प्रार्थना
भजन 31 : शिकायत, विनय और प्रशंसा की प्रार्थना
भजन 32 : परमेश्वर पर विश्वास और क्षमा की आशीष
भजन 33 : परमेश्वर की सृष्टिकर्ता और छुड़ाने वाले के लिये स्तुति प्रशंसा
भजन 34 : परमेश्वर की देने वाले और छुड़ाने वाला होने के लिये स्तुति प्रशंसा
भजन 35 : शत्रुओं से बचाव और शरण की प्रार्थना
भजन 36 : मनुष्य की दुष्टता परमेश्वर की जीवित दया के विरोधाभास में
भजन 37 : प्रभु में विश्राम करने की विनय
भजन 38 : मेल–मिलाप पाप के भारी बोझ को जानने के लिये प्रार्थना
भजन 39 : मनुष्य की कमजोरी को जानने के लिये प्रार्थना
भजन 40 : आनन्दमय अनुभव और उद्धार की आशा के लिये प्रशंसा
भजन 41 : विपरीत परिस्थिति में परमेश्वर की आशीषों के लिये प्रशंसा

2. पुस्तक 2 : विनती के गीत (भजन 42–72)

भजन 42–43 : परमेश्वर की बाट जोहना और प्रभु के उद्धार की आशा
भजन 44 : देश का विलाप और छुटकारे की प्रार्थना
भजन 45 : दाऊद के पुत्र के विवाह का गीत
भजन 46 : परमेश्वर हमारी शक्ति और शरण स्थान है
भजन 47 : प्रभु विजयी राजा है
भजन 48 : सुन्दर शहर, सीनै पर्वत के लिये प्रशंसा
भजन 49 : धन का खालीपन बिना बुद्धि का
भजन 50 : धन्यवाद का बलिदान
भजन 51 : पाप का अंगीकार और क्षमा
भजन 52 : डींगमार दुष्टता की तुच्छता
भजन 53 : परमेश्वर रहित लोगों की तस्वीर
भजन 54 : प्रभु हमारी सहायता
भजन 55 : प्रभु धर्मियों को सम्भालता है
भजन 56 : हमारे भय के बीच भरोसा करो
भजन 57 : एकान्त में प्रभु का बढ़ाव
भजन 58 : धर्मियों को अवश्य उपहार मिलेगा
भजन 59 : शत्रुओं से छुटकारे की प्रार्थना
भजन 60 : देश के छुटकारे के लिये प्रार्थना
भजन 61 : डूबते हुए हृदय की प्रार्थना
भजन 62 : प्रभु की बाट जोहना
भजन 63 : परमेश्वर के प्रेम के प्यासे
भजन 64 : बचाव की प्रार्थना
भजन 65 : परमेश्वर की उदारता पृथ्वी और मनुष्य के लिये
भजन 66 : याद करो – परमेश्वर ने जो किया है
भजन 67 : परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा के लिये सबकी बुलाहट
भजन 68 : परमेश्वर शोषितों का पिता है
भजन 69 : परमेश्वर के तरस के अनुसार छुटकारे के लिये प्रार्थना
भजन 70 : जरूरतमंदों और गरीबों के लिये प्रार्थना
भजन 71 : वृद्धों के लिये प्रार्थना
भजन 72 : मसीह का महिमामय राज्य

3. पुस्तक 3 : विनती के गीत (भजन 73–89)

भजन 73 : अनन्त के दृश्य के लिये प्रार्थना
भजन 74 : देश के विपरीत समय में सहायता के लिये प्रार्थना
भजन 75 : न्याय परमेश्वर का है

भजन 76 : याकूब के परमेश्वर की विजय की सामर्थ
भजन 77 : कठिनाई के दिनों में परमेश्वर की महानता को स्मरण करो
भजन 78 : इस्राएल के इतिहास से सबक
भजन 79 : परमेश्वर से अपने झुण्ड की भेड़ों को स्मरण करने की विनती
भजन 80 : परमेश्वर की दया के लिये इस्राएल की विनती
भजन 81 : इस्राएल के लिये विनती कि वे प्रभु की सुनें
भजन 82 : अधर्मी न्यायियों को डपटा गया
भजन 83 : इस्राएल के शत्रुओं पर न्याय
भजन 84 : परमेश्वर की उपस्थिति के लिये गहरी चाह
भजन 85 : आत्मिक जागृति के लिये प्रार्थना
भजन 86 : देश पर दया के लिये प्रार्थना
भजन 87 : सिय्योन में रहने के लिये आनन्द
भजन 88 : निराशा के अन्धकार में प्रार्थना
भजन 89 : क्लेशों में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करना

4. पुस्तक 4 : स्तुति प्रशंसा के गीत (भजन 90–106)
भजन 90 : हमें दिन गिनना सिखा
भजन 91 : सबसे उच्च की शरण में
भजन 92 : प्रभु की प्रशंसा
भजन 93 : यहोवा महिमा से राज्य करता है
भजन 94 : यहोवा पृथ्वी का न्यायी है। बदला उसी का है
भजन 95 : आओ, हम अपने बनाने वाले के आगे घुटने टेकें। आराधना की बुलाहट
भजन 96 : प्रभु की आराधना करो जो संसार का धार्मिकता से न्याय करेगा
भजन 97 : आनन्द करो। परमेश्वर राज्य करता है
भजन 98 : प्रभु के लिये नया गीत गाओ
भजन 99 : प्रभु जो राज्य करता है उसकी बढ़ती हो
भजन 100 : आनन्द से परमेश्वर की सेवा करो, वह प्रभु है, वह अच्छा है
भजन 101 : एक पवित्र जीवन के लिये वचन बद्धता
भजन 102 : एक सन्त जो नीचा नापा गया उसकी प्रार्थना
भजन 103 : प्रभु को धन्य कहो – उसका तरस कभी विफल नहीं होता
भजन 104 : प्रभु की समस्त सृष्टि पर देखभाल
भजन 105 : उद्धार के इतिहास में परमेश्वर के विश्वासयोग्य कार्य
भजन 106 : यहोवा के प्रेम का स्मरण और इस्राएल की अनाज्ञाकारिता

5. पुस्तक 5 : स्तुति प्रशंसा के गीत (भजन 107–150)
भजन 107 : कई परेशानियों से परमेश्वर के छुटकारे के लिये स्तुति प्रशंसा
भजन 108 : विजय के लिये प्रार्थना और स्तुति
भजन 109 : शत्रुओं के विरुद्ध न्याय के लिये प्रार्थना
भजन 110 : मसीह की तस्वीर – याजक, राजा योद्धा की तरह
भजन 111 : परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का जश्न मनाना
भजन 112 : विश्वास की विजय
भजन 113 : उच्च प्रभु जो नीचे आता उसकी स्तुति प्रशंसा
भजन 114 : निर्गमन के लिये प्रशंसा
भजन 115 : मूरतों का महत्व और प्रभु की महानता
भजन 116 : छुटकारे के लिये प्रभु की स्तुति प्रशंसा
भजन 117 : सब लोगों की स्तुति प्रशंसा
भजन 118 : परमेश्वर के बचाने की भलाई के लिये प्रशंसा
भजन 119 : धर्मशास्त्र में की स्तुति प्रशंसा
भजन 120 : निन्दकों से छुटकारे के लिये प्रशंसा

भजन 121 : प्रभु मेरा मार्गदर्शक है
भजन 122 : यरूशलेम की शान्ति के लिये प्रार्थना
भजन 123 : दया के लिये विनती
भजन 124 : स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता हमारा सहायक है
भजन 125 : इस्राएल पर शान्ति हो
भजन 126 : पुनः स्थापना के लिये स्तुति–प्रशंसा
भजन 127 : बच्चों के लिये प्रशंसा प्रभु की ओर से वरदान
भजन 128 : परमेश्वर के द्वारा परिवार को आशीषित किया
भजन 129 : सताये गये लोगों की प्रशंसा
भजन 130 : परमेश्वर के छुटकारे की बाट जोहना
भजन 131 : प्रभु पर बच्चों की तरह भरोसा
भजन 132 : सिय्योन पर प्रभु की आशीषों के लिये प्रार्थना
भजन 133 : भाईचारे की एकता का आशीषें
भजन 134 : रात में प्रभु की प्रशंसा
भजन 135 : परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के लिये प्रशंसा
भजन 136 : परमेश्वर की दया के लिये प्रशंसा जो सर्वदा बनी रहती है
भजन 137 : बंधुवाई पर आंसू बहाना
भजन 138 : प्रभु प्रार्थना का उत्तर देता है और नम्र को छुड़ाता है
भजन 139 : प्रभु मुझे जानता है
भजन 140 : छुटकारे के लिये प्रार्थना : तू मेरा परमेश्वर है
भजन 141 : काश मेरी प्रार्थना लोबान की तरह हो
भजन 142 : कोई चिन्ता नहीं करता, पर प्रभु करता है, केवल वही मेरा भाग है
भजन 143 : मार्ग दर्शन के लिये प्रार्थना, मुझे समतल भूमि पर अगुवाई कर
भजन 144 : प्रभु मेरा योद्धा और मेरी चट्टान है
भजन 145 : परमेश्वर की महानता और उसके अद्भुत कार्यों के लिये स्तुति प्रशंसा
भजन 146 : प्रभु की प्रशंसा, बहुतायत का मददगार
भजन 147 : प्रभु की प्रशंसा जो टूटे हृदय को चंगा करता है
भजन 148 : प्रभु की प्रशंसा जो बुद्धिमान सृष्टिकर्ता है
भजन 149 : प्रभु की प्रशंसा हो जो अपने लोगों में प्रसन्न होता है
भजन 150 : प्रभु की स्तुति प्रशंसा हो

नीतिवचन

(प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा बुद्धि)

लेखक और पुस्तक का नाम : 1 राजा 4:32 के अनुसार सुलैमान ने 3000 नीतिवचन और 1005 गीत बोले और जबकि उसने इसके अधिकतर नीतिवचन इस पुस्तक में लिखे, बाद के अध्याय संकेत देते हैं कि वह अकेला इस पुस्तक का लेखक नहीं है। नीतिवचन के तीन हिस्से सुलैमान द्वारा लिखे गयेः अध्याय 1:1–9:18; 10:1–22:16 और 25:1–29:27 फिर भी बाद के हिस्से में नीतिवचन (25:1–29:27)। सुलैमान के संग्रह में से राजा हिजकियाह की कमेटी द्वारा चुने गये थे (25:1) नीतिवचन 22:17 "बुद्धिमान के कहे हुए" का संदर्भ देता है और 24:23 अतिरिक्त "बुद्धिमान के कथन" का वर्णन करता है। नीतिवचन 22:17–22 परिचय की तरह है ये सुझाव देता है कि ये हिस्से बुद्धिमान मनुष्य के चक्र से स्तम्भ बना रहता है ना कि स्वयं सुलैमान से। अध्याय 30 विशेषकर आगूर का श्रेय देता है जो जाकेह का पुत्र और राजा समूएल 31:1–9 का है।

नीतिवचन अपना नाम इसके विषय से लेता है – छोटे कहावत या सिद्धान्तों से जो सत्य को प्रगट करता है। नीतिवचन के लिये इब्रानी शब्द का अर्थ "समानान्तर", "बराबर" या एक "तुलना" है। ये तुलना का संदर्भ देता है जिसके नीचे नैतिक सिद्धान्त है। केवल एक नीतिवचन केन्द्र नहीं हो सकता उसी प्रकार की तुलना की विचारधारा में पर विपरीत तुलना में जिसे विरोधालंकार कहा जाता है।

शीर्षक उस तथ्य से आता है कि ये लेखन नैतिक और आत्मिक निर्देश का सारांश है जो इस प्रकार बनाया गया है एक को बुद्धिमानी से जीने योग्य बनाता है।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 950–700। एक बुद्धि की किताब की तरह नीतिवचन ऐतिहासिक पुस्तक नहीं है पर इस्राएल में बुद्धि के स्कूल का उत्पादन है सुलैमान के नीतिवचन उसकी मृत्यु के पहले ई.पूर्व 931 में लिखे गये और दूसरे हिजकियाह के लोगों द्वारा ई.पू. 700 में इक्ट्ठे किये गये।

विषय और अभिप्राय : जैसा पुस्तक के नाम से सुझाया जाता है और शब्द "नीतिवचन" का मतलब विषय और अभिप्राय नीतिवचन की पुस्तक जीने के लिये बुद्धि है। इसलिये ये विशेष निर्देश हर विषय पर देता है। जैसे जीवन, पाप, भलाई, सम्पत्ति, गरीबी, भाषा, गर्व, नम्रता, न्याय, परिवार (माता–पिता, बच्चे, अनुशासन), बदला, झगड़ा, नशेबाजी, प्रेम, सुस्ती, मित्र, मृत्यु और जीवन। नीतिवचन से अधिक कोई भी पुस्तक प्रतिदिन बुद्धिमानी से जीने के लिये व्यवहारिक नहीं हैं।

मौलिक विषय है : ***"परमेश्वर का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है"*** (1:7क)। परमेश्वर के भय की अनुपस्थिति एक मूर्खतापूर्ण जीवन की ओर ले जाती है। परमेश्वर का भय उसके पवित्र चरित्र और सामर्थ में खड़े होना है। ठीक उसी समय नीतिवचन दिखाते हैं कि सच्ची बुद्धि परमेश्वर के भय की ओर ले जाती है (2:1–5)।

विशेष लोग : नीतिवचन हर एक के लिये लिखे गये हैं, इसलिये किसी का व्यक्तिगत नाम नहीं वर्णन किया गया है।

मसीह जो नीतिवचन में देखा गया : अध्याय 8 में बुद्धि एक व्यक्ति की तरह देखी गई है और इसकी सिद्धता में देखी गई है। ये दैवीय है (8:22–31)। ये शारीरिक जीवन और आत्मिक जीवन का स्रोत है (3:18, 8:35–36)। ये धार्मिक और नैतिक भी है (8:8–9) और ये सबके लिये उपलब्ध है उनके लिये जो इसे स्वीकार करेगा (8:1–6, 32–35)। ये बुद्धि शरीर में आई मसीह के व्यक्ति में ***"जिसमें सब बुद्धि और ज्ञान का भन्डार छिपा हुआ है"*** (कुलुस्सियों 2:3)। ***"परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म और पवित्रता और छुटकारा"*** (1 कुरिन्थियों 1:30–1 कुरिन्थियों 1:22–24)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय : नीतिवचन के अभिप्राय (1:1–7)**
2. **बुद्धि का बोध : जवानों के लिये नीतिवचन (1:8–9:18)**
   - क. माता–पिता की आज्ञा पालन करना (1:8–9)
   - ख. बुरी संगति से दूर रहो (1:10–19)
   - ग. बुद्धि की सलाह और बुलाहट मानो (1:20–33)
   - घ. वैश्यागमन से दूर रहो (2:1–22)
   - ङ. परमेश्वर पर विश्वास करो और सम्मान करो (3:1–12)
   - च. बुद्धि की आशीष (3:13–20)
   - छ. दूसरों के प्रति उदार और दयावान हो (3:21–35)
   - ज. बुद्धि प्राप्त करो (4:1–9)
   - झ. बुरी संगति से दूर रहो (4:10–19)
   - ञ. सबसे ऊपर अपने हृदय की रक्षा करो (4:20–27)
   - ट. व्यभिचार न करो (5:1–14)
   - ठ. अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य रहो (5:15–23)
   - ड. निश्चिंता से दूर रहो (6:1–5)
   - ढ. आलस्य से दूर हो (6:6–19)
   - ण. व्यभिचार से दूर रहो (6:20–35)
   - त. वैश्याओ से दूर रहो (7:1–27)
   - थ. बुद्धि और मूर्खता विरोधाभास है (8:1–9:18)
3. **सुलैमान के नीतिवचन (10:1–24:34)**
   - क. नीतिवचन ईश्वरीय और दुष्ट का विरोधाभास है (10:1–15:33)
   - ख. ईश्वरीय जीवन को नीतिवचन प्रोत्साहित करती है (16:1–22:6)
   - ग. नीतिवचन विभिन्न व्यवहारों के लिये (22:17–23:35)
   - घ. विभिन्न लोगों के विषय में नीतिवचन (24:1–34)

4. **सुलैमान के नीतिवचनों की हिजकियाह के लोगों ने नकल की (25:1–29:27)**
   क. दूसरों के साथ सम्बन्धों के विषय नीतिवचन (25:1–26:28)
   ख. कार्यों के प्रति नीतिवचन (27:1–29:27)
5. **आगूर के वचन (30:1–33)**
   क. व्यक्तिगत वचन (30:1–14)
   ख. गिनती वाले नीतिवचन (30:15–33)
6. **लमूएल के वचन (31:1–9)**
7. **सुयोग्य पत्नी (31:10–31)**

सभोपदेशक

(वास्तविकता द्वारा सत्य)

लेखक और पुस्तक का नाम : सबूत की दो पंक्तियां हैं (बाहरी और आंतरिक) जो सुलैमान की ओर संकेत करता है कि वह सभोपदेशक का लिखने वाला है। बाहरी सबूत के लिये, यहूदी परम्परा पुस्तक को सुलैमान की बताती है। आंतरिक रूप से बहुत सी सबूत की पंक्तियां दिखाती है कि अवश्य ही सुलैमान इसका लेखक था। प्रथम, लेखक ये स्वयं पहचान कराता है कि वह ***"यरूशलेम के राजा दाऊद का पुत्र है"*** (1:1) तब पुस्तक में संदर्भ लेखक की बुद्धि का देता है (1:16)। अत्याधिक धन (2:7) सुख सुविधाओं के अवसर (2:3) और इमारतों की बहुतायत से निर्माण कार्य (2:4–6) सभी सुलैमान को लेखक सुझाते हैं। साधारणतः कोई भी दाऊद की सन्तान इन वर्णनों के माप के लायक नहीं थे।

सभोपदेशक नाम सेप्टुआजिन्ट से दिया गया है। यूनानी शब्द का मतलब "मंडली" है इब्रानी के शीर्षक का मतलब है "एक जो मंडली में बोलता है" या एक "प्रचारक"।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 931, यहूदियों की परम्परा के अनुसार सुलैमान ने अपने प्रारम्भिक वर्षों में श्रेष्ठगीत लिखा – एक जवान के प्रेम के विषय में बयान किया है। नीतिवचन उसने अपने परिपक्व वर्षों में, एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति की बुद्धि का प्रदर्शन है। उसने अपने गिरते हुए वर्षों में नीतिवचन लिखे एक वृद्ध के दुःखों को प्रगट किया (12:1) शायद सभोपदेशक सुलैमान के अफसोस का रिकार्ड है उसके नैतिक असफलताओं का अत्याधिक पश्चाताप का रिकार्ड है जैसा 1 राजा 11 में दिया गया है। सभोपदेशक की पुस्तक तब सुलैमान की मृत्यु के कुछ पहले लिखी गई होगी और साथ ही ई.पूर्व. 931 में उसके राज्य का विभाजन हुआ।

विषय और अभिप्राय : मूल विषय जीवन का खालीपन, परमेश्वर से दूर है। इस विषय के विकास में चार मुख्य अभिप्राय निकलते हैं:–

पहला : इस बात की खोज करके बताना कि बिना परमेश्वर के जीवन का कोई मतलब नहीं हैं, सुलैमान ये खोज कर रहा है कि मानव आधारित उपलब्धियां और ज्ञान पर से भरोसा समाप्त किया जाये वह ये दिखाता है कि मनुष्य के सभी लक्ष्य या "मार्ग जो मनुष्य को सही मालूम होते हैं" मनुष्य की जो आवश्यकताएं हैं वे असंतुष्टि और खालीपन की ओर ले जाती है। सुलैमान अपने स्वयं के जीवन के खालीपन के अनुभवों को रिकार्ड करता है और अपने पाठक को परमेश्वर की चाह होने के लिये आतुर बनाता है। उसने ये दिखाने के लिये खोजा कि उनकी प्रसन्नता की खोज स्वयं मनुष्य के द्वारा पूरे जीवन में कभी पूरी नहीं हो सकती।

दूसरा : सुलैमान उन तथ्यों की पुष्टि करता है कि जीवन में अधिकांश बातें समझी नहीं जा सकतीं, इसका अर्थ ये है कि हमें विश्वास से जीना चाहिये, अपनी दृष्टि से नहीं। जीवन बहुत सी अबोल/अनजान घटनाओं से भरा पड़ा है। जीवन में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें मनुष्य ना समझ सकता ना नियंत्रण कर सकता है पर विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर की प्रभुसत्ता के ज्ञान और कार्य पर भरोसा कर सकते हैं। जैसा अय्यूब की पुस्तक में है, सभोपदेशक न केवल पुष्टि करता है कि मनुष्य सीमित है पर उसे सीखना चाहिये कि रहस्यों के साथ जीना है। पृथ्वी पर का जीवन, "सूर्य के नीचे का जीवन" स्वयं जीवन की कुंजी (मुख्य बात) उपलब्ध नहीं करा सकता। इसके दृश्य में मनुष्य को पृथ्वी के दृष्टिकोण की अपेक्षा अधिक होना चाहिये, उसे ऊपर परमेश्वर की ओर दृष्टि लगाना चाहिये था, उसके भय के साथ भरोसा/विश्वास करना चाहिये।

तीसरा : सभोपदेशक जीवन के वास्तविक जीवन को प्रस्तुत करता है जो नीतिवचन की पुस्तक से बिल्कुल विपरीत (उल्टा) है। ये दिखाता है कि जीवन नीतिवचन की धारणाओं से भिन्न है। नीतिवचन 10:16 पुष्टि करता है कि न्याय दोनों धर्मी और दुष्ट के लिये है, पर सभापदेशक 8:14 ये देखता है कि हमेशा ऐसा नहीं होता, कम से कम इस जीवन में नहीं। क्या इनमें विरोधाभास है? नहीं क्योंकि नीतिवचन परमेश्वर के सामान्य सिद्धान्तों को बिना उनकी असफलताओं के नोट करता है क्योंकि हम एक पतित, पापमय संसार में रहते हैं। सभोपदेशक संकेत देता है कि जैसे धर्मी का अस्तित्व है जैसा नीतिवचन में पुष्टि की जाती है, ये हमेशा मनुष्य के लिये प्रमाणित नहीं होता जैसा वह जीवन को "सूर्य के नीचे" अपने सीमित ज्ञान से देखता है।

चौथाः सुलैमान ने दिखाया कि मनुष्य, अपनी योजनाओं में छोड़ दिया गया, वह हमेशा जीवन को खाली, व्याकुल और रहस्यमय पायेगा। पुस्तक का फिर भी ये मतलब नहीं है कि जीवन का कोई उत्तर नहीं है कि जीवन पूर्णरूप से निकम्मा और बेमतलब है, मतलब और विशेषता ढूंढ़ी जा सकती है, वह वर्णन करता है – सब परमेश्वर के भय में है। परमेश्वर की संगति के द्वारा व्याकुलता – सन्तुष्टि में बदली जा सकती है।

विशेष लोग : मुख्य व्यक्ति राजा सुलैमान है।

सभोपदेशक में जैसा मसीह देखा गया : जबकि केवल मसीह मनुष्य का परमेश्वर तक जाने का साधन है जहां मनुष्य सम्पूर्णता, और सन्तुष्टि पाता है, या जीवन और बहुतायत का जीवन पाता है (यूहन्ना 10:10, 7:37–38)। जीवन में जो खालीपन का अनुभव किया गया वह केवल प्रभु यीशु के व्यक्तिगत सम्बन्ध से भरा जा सकता है। मनुष्य की विशेषता और सन्तुष्टि की पूर्ति केवल उद्धारकर्ता में पाई जा सकती है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय : समस्या वर्णन की गई (1:1–3)**
2. **समस्या प्रगट की गई (1:4–2:26)**
   - क. जीवन के चक्र की व्यर्थता (1:4–11)
   - ख. मानव बुद्धि की व्यर्थता (1:12–18)
   - ग. सुख–सम्पत्ति की व्यर्थता (2:1–11)
   - घ. भौतिकता की व्यर्थता (2:12–23)
   - ङ. समापन : आनन्द करें और परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध से सन्तुष्ट रहें (2:24–26)
3. **जीवन के लिये परमेश्वर की ना बदलने वाली योजना (3:1–22)**
   - क. वह जीवन की घटनाओं को पहले ही दृढ़ करता है (3:1–11)
   - ख. जीवन की दशा को पहले से ही दृढ़ करता है (3:12–13)
   - ग. वह सबका न्याय करता है (3:14–21)
   - घ. समापन (3:22)
4. **जीवन की परिस्थितियों की व्यर्थता (4:1–5:20)**
   - क. बुरा शोषण (4:1–3)
   - ख. कड़ी मेहनत का खालीपन (4:4–12)
   - ग. राजनैतिक सफलता का खालीपन (4:13–16)
   - घ. मानव धर्म का खालीपन (5:1–7)
   - ङ. मानव धन सम्पत्ति का खालीपन (5:8–17)
   - च. समापन (5:18–20)
5. **सम्पूर्ण जीवन की व्यर्थता (6:1–12)**
   - क. सम्पत्ति सन्तुष्ट नहीं कर सकती (6:1–2)
   - ख. सन्तान सन्तुष्ट नहीं कर सकती (6:3–6)
   - ग. श्रम सन्तुष्ट नहीं कर सकता (6:7–12)
6. **गर्व के साथ जीने की सलाह (7:1–12:8)**
   - क. मनुष्य की दुष्टता को देखने की सलाह (7:1–29)
   - ख. परमेश्वर की पूर्व प्रबन्ध को देखने की सलाह (8:1–9:18)
   - ग. जीवन की अनिश्चिंताओं को देखने की सलाह (10:1–20)
   - घ. वृद्धावस्था की बढ़ती उम्र को देखने की सलाह (11:1–12:8)
7. **समापन (12:9–14)**

श्रेष्ठगीत

(एक साथ मिलन का आनन्द)

लेखक और पुस्तक का नाम : इसका लेखक सुलैमान है। उसका वर्णन सात बार किया गया है (1:1,5; 3:7, 9, 11; 8:11–12)। इसकी पहचान दूल्हे की तरह दी गई है – पद 1 बताता है कि सुलैमान ने बहुत में से एक गीत यह लिखा है (हकीकत में सबसे उत्तम है) गीत जो उसने लिखे (1 राजा 4:32 हमें बताता है कि उसने 1,005 गीत बनाये) ये नोट करें कि लेख साधारण रूप से नहीं कहता, "सुलैमान का श्रेष्ठगीत" पर "गीतों का गीत" जो सुलैमान के हैं"।

पुस्तक के सम्बन्ध में डॉक्र चार्ल्स राइरी लिखते हैं:

> इस पुस्तक का शीर्षक कई तरह से दिया गया है : पद 1 से इब्रानी शीर्षक "गीतों का गीत" जिसका अर्थ है "सबसे उच्च" या गीतों में सर्वोत्तम; अंग्रेजी शीर्षक भी पद 1 से लिया गया – "सुलैमान का गीत जो लेखक को बताता है और भजन का अर्थ है साधारणतः "गाने" जो लैटिन भाषा से लिया गया।

लेखन तिथि : ई.पूर्व लगभग 965

विषय और अभिप्राय : सुलैमान के गीत–प्रेम के गीत हैं जो अलंकारों से भरपूर हैं जो परमेश्वर के प्रेम और विवाह की तस्वीर खींचते हैं : शारीरिक प्रेम की सुन्दरता पुरुष और स्त्री के बीच। ये पुस्तक एक नाटक की तरह प्रस्तुत की गई है जिसमें बहुत से दृश्य हैं जो नीचे दिये गये रूप–रेखा में देखे जा सकते हैं।

ये गीत शायद सुलैमान के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में लिखे गये – लगभग ई.पूर्व 965 में इस समय सुलैमान की 60 रानियां थीं और 80 रखैल थीं (6:8) पर इसके बाद के जीवन में उसकी 700 रानियां और 300 रखैल थीं (1 राजा 11:3)।

विशेष लोग : दुल्हन (शूलेमिन), राजा (सुलैमान) और एक कोरस (यरूशलेम की पुत्रियां)

मसीह जिस प्रकार इसमें देखा गया : इस पुस्तक में विश्वासियों के लिये मसीह का प्रेम दिखाया गया।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **शीर्षक (1:1)**
2. **प्रेम में गिरना (1:2–3:5)**
   - क. दुल्हन का प्रेम की चाह (1:1–8)
   - ख. आपसी प्रेम का वर्णन (1:9–2:7)
   - ग. राजा का दुल्हन के घर जाना (2:8–17)
   - घ. दुल्हन का अलग होने का प्रथम स्वप्न (3:1–5)
3. **प्रेम में मिलना (3:6–5:1)**
   - क. विवाह का जुलूस (3:6–11)
   - ख. दुल्हन की सुन्दरता का वर्णन (4:1–15)
   - ग. विवाह की समाप्ति (4:16–5:1)।
4. **प्रेम में संघर्ष करना (5:2–7:10)**
   - क. दुल्हन के अलग होने का दूसरा स्वप्न (5:2–7)
   - ख. दूल्हे की सुन्दरता की प्रशंसा (5:8–6:3)
   - ग. दुल्हन की सुन्दरता की प्रशंसा (6:4–7:10)
5. **प्रेम में परिपक्व होना (7:11–8:14)**
   - क. दुल्हन का अपने घर जाने की इच्छा (7:11–8:4)
   - ख. यात्रा और घर आना (8:5–14)।

भाग 4
बड़े भविष्यद्वक्ता

इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं को सम्पूर्ण देखा गया

परिचय : हमारे पुराने नियम के सर्वेक्षण में हमने "व्यवस्था की पुस्तक", "ऐतिहासिक पुस्तकों" और "कवितामय पुस्तकों" को देखा है – अब हम अन्तिम भाग को आरम्भ करते हैं जो "भविष्यद्वक्ताओं" के नाम से जाने जाते हैं।

"भविष्यद्वक्ताओं" को सम्भवतः "बड़े भविष्यद्वक्ताओं" और "छोटे भविष्यद्वक्ताओं" के नाम से अलग किया जाता है। "बड़े भविष्यद्वक्ताओं" की पांच पुस्तकों में ये शामिल हैंः–

यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल और दानिय्येल। बारह पुस्तकें "छोटे भविष्यद्वक्ताओं" की हैं जिनमें ये शामिल हैं : होशे, योशै, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह और मलाकी।

ये भविष्यद्वक्ता लिखने वाले भविष्यद्वक्ता के नाम से भी जाने जाते हैं क्योंकि उनके लेखकों ने लिखा या उनके वचनों को रिकार्ड किया गया। दूसरे भी मौखिक भविष्यद्वक्ता हुए हैं जैसेः नातान, अहीजाह, अद्दो, येहू, ऐलिय्याह, ऐलीशा, ओबेद, शिमायाह, अजर्याह, हनानी, यहजीएल और हुल्दा जिनकी भविष्यवाणियों का कोई लिखित रिकार्ड नहीं छोड़ा गया।

लेखक : भविष्यवाणी की पुस्तकों के लेखकों का वर्णन किया गया है या बहुत से शब्दों द्वारा उनकी सेवकाई और बुलाहट के द्वारा संदर्भ दिया गया है। वे भविष्यद्वक्ता, नबी, पहरूए, परमेश्वर का जन, संदेशवाहक और परमेश्वर के सेवक कहलाते थे।

भविष्यद्वक्ता शब्द की मुख्य बात ये है कि एक "अधिकृत प्रवक्ता" है। इसलिये सच्चा भविष्यद्वक्ता वह है जो मनुष्य से परमेश्वर के लिये बोलता है। ये भविष्यद्वक्ता के बयान से स्पष्ट है जो पुराने नियम के तीन हिस्सों में रिकार्ड किया गया है : (1) निर्गमन 6:28–7:2; जब मूसा ने फिरौन के लिये परमेश्वर का प्रवक्ता होने के लिये विरोध किया, परमेश्वर ने हारून को मूसा का "भविष्यद्वक्ता" ठहराया, उदाहरण के लिये, उसका अधिकृत प्रवक्ता के रूप में ठहराया। इसमें ये विषय इस्तेमाल होता है कि एक व्यक्ति दूसरे के लिये बोलता है। (2) गिनती 12:1–8 हारून और मरियम, शायद जलन/बैर के कारण मूसा का स्थान लेने का प्रयास किया – परमेश्वर के प्रगटीकरण का मध्यस्त होने का स्थान लेना चाहा, पर परमेश्वर ने उसमें हस्तक्षेप करके ये दिखाया कि वह केवल मूसा से सीधे बात करेगा और वह उनसे जो भविष्यद्वक्ता कहलाते हैं उनसे दर्शन और स्वप्नों के द्वारा बात करेगा। "भविष्यद्वक्ता" का मतलब साफ है। (3) व्यवस्थाविवरण 18:9–22; मूसा की मृत्यु से कुछ पहले, हमारे पास लगातार जारी रखने के आधार पर एक औपचारिक घोषणा थी। ये पद स्पष्ट करते हैं कि भविष्यद्वक्ता वो है जो वो सन्देश बोलता है जो परमेश्वर प्रगट करता है।

उनके निर्देश या सन्देश : परमेश्वर के लिये प्रवक्ता होकर भविष्यद्वक्ताओं का प्रारम्भिक कार्य ये था कि वे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का सन्देश बतायें। ऐतिहासिक संदर्भ में कि परमेश्वर के लोगों के बीच क्या हो रहा था। "भविष्यवाणी" का विशाल अर्थ में हाल के विषय का प्रचार करना शामिल था, जो भविष्य की बातें कहलाती हैं। इस भविष्य की बातों में छोटा/सकरा अर्थ ये है कि उन घटनाओं के बारे में होने से पहले बताना – इसमें परमेश्वर की आंतरिक इच्छा शामिल होती है। ये तत्काल होना था, मनुष्य को आज्ञा पालन करने की चुनौती थी। तुलना के द्वारा भविष्य की बात बताने में परमेश्वर की योजना में भविष्य की बातें हैं, ये पहले ही से कहीं गई हैं या धार्मिकों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के दृष्टिकोण में प्रोत्साहित करने के लिये या आने वाले न्याय की चितौनी के रूप में परमेश्वर के संदेश की घोषणा करने की प्रक्रिया में, भविष्यद्वक्ता कभी कभी ये प्रगट करेगा कि जो भविष्य से सम्बन्ध रखता है पर ये भविष्यद्वक्ता के सन्देश का केवल छोटा हिस्सा है। इस प्रकार भविष्यद्वक्ता दैवीय रूप से चुना हुआ प्रवक्ता है जो परमेश्वर के सन्देश को प्राप्त करते हुए उसे मौखिक, दिखने वाले या लिखित रूप में लोगों को प्रस्तुत करता है। इस कारण से एक सामान्य वाक्य भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा इस्तेमाल किया जाता था, "ये यहोवा की वाणी है" या "इस प्रकार परमेश्वर कहता है"।

परमेश्वर के प्रवक्ता होकर उनके सन्देशों को तीन प्रकार के कार्यों में देखा जा सकता है वे पुराने नियम में लोगों के मध्य में थेः–

पहला : उन्होंने प्रचारक के रूप में काम किया। जिन्होंने मूसा की व्यवस्था को लोगों को सिखाया और अनुवाद किया। ये उनका कर्तव्य था कि वे चितौनी दें, निन्दा करें और पाप का तिरस्कार करें, न्याय के भय से आगाह करायें। पश्चाताप या मन फिराने के लिये बुलायें, तसल्ली और क्षमा लायें। उनकी पाप को धिक्कारने की गतिविधि और पश्चाताप के लिये बुलाना उनके किसी और कार्य की अपेक्षा भविष्यद्वक्ता को अधिक समय बिताना था। झिड़कना घर ले जाई जाती थी परमेश्वर के उस दण्ड के विषय जो पहले से बताया गया कि जो भविष्यद्वक्ता की चितौनी नहीं मानता उन पर परमेश्वर का दण्ड पड़ेगा (योना 3:4)।

दूसरा : उन्होंने भविष्य की बातों को बताने का कार्य किया जिन्होंने आने वाले न्याय, छुटकारे, घटनाओं को जो मसीह से और राज्य से सम्बंधित हैं उसकी सूचना दी। भविष्य की बात बताने का कोई इरादा नहीं था कि मनुष्य की उत्तेजना को सन्तुष्ट करें। पर इस प्रकार बनाया गया कि दिखा सकें कि परमेश्वर जानता है और भविष्य का नियंत्रण करता है, और कि अभिप्रायपूर्ण प्रकाशन दें। भविष्य की बात एक सच्चे भविष्यद्वक्ता के द्वारा दी गई वह देखने में पूर्ण हो जायेगी। भविष्य की बात की असफलता का पूर्ण होना संकेत करेगा कि भविष्यद्वक्ता ने यहोवा के वचन नहीं बोला है (व्यवस्थाविवरण 18:20–22)। 1 शमूएल 3:19 में ये कहा गया है कि शमूएल के साथ परमेश्वर था और उसकी कोई भी भविष्यवाणी निष्फल नहीं हुई (वास्तविक रूप से "धरती पर नहीं गिरी")।

तीसरा : ये इस्राएल में काफी समय तक पहरूए के रूप में कार्य करते थे (यहेजकेल 3:17)। यहेजकेल सिय्योन की दीवार पर पहरूए की तरह खड़ा हुआ – धार्मिक धर्म के त्याग की चेतावनी देने के लिये तुरही फूंकने को तैयार रहता। उसने लोगों को राजनैतिक और विदेशी सेनाओं के विरुद्ध चेतावनी दी, मूर्तिपूजा में शामिल होने और कनान की संस्कृति में आराधना करने के विरूद्ध चेतावनी दी, साथ ही धार्मिक गतिविधियों और परम्पराओं में अत्याधिक शामिल होने के खतरे से भी चिताया।

अन्त में, जब उन दिनों में भविष्यद्वक्ताओं ने कार्य किये और परमेश्वर के सन्देश को बताया तो उन्होंने एक बड़ी भूमिका इस्राएल के धार्मिक पद्यति में निभाया। इस्राएल में भविष्यद्वक्ताओं ने राजकीय राजनेता की भूमिका भी निभाई या न्यायियों का कार्य किया, देश को ये संकेत देते हुए कि मूसा की दी वाचा का उल्लंघन न हो।

चार बड़े भविष्यद्वक्ताओं की तुलना

चार बड़े भविष्यद्वक्ताओं की तुलना				
	यशायाह	**यिर्मयाह**	**यहेजकेल**	**दानिय्येल**
के लिये भविष्यवाणी की	यहूदा में यहूदियों	यहूदा में यहूदी और बंधुवाई	यहूदी बाबुल की बंधुवाई में	बाबुल में यहूदी बंधुवाई में और अन्यजाति राजा
किसके विषयः	यहूदा और यरूशलेम (यशायाह 1:1–2:1)	यहूदा और देश (यिर्मयाह 1:5, 9–10, 2:1–2)	पूरा इस्राएल का घराना (यहेजकेल 2:3–6, 3:4–10,17	इस्राएल और अन्यजाति देश (दानिय्येल 2:36–43,9)
के राज्य के दौरान	उज्जियाह, योथाम, आहाज, हिज्जकिया, (यहूदा का राजा)	योशियाह, यहोआहाज़, यहोयाकीम यहोयाकीन, सिदकियाह (यहूदा के राजा)	सिदकियाह (यहूदा का राजा) नबूकदनेजर (बाबुल का राजा)	यहोयाकीम, सिदकियाह (यहूदा का राजा) यहोयाकीन, नबूकदनेजर (बाबुल का राजा)
तिथियां :	ई.पूर्व 740–680	627–585 ई.पूर्व.	592–570 ई.पूर्व.	605–536 ई.पूर्व
ऐतिहासिक बैठाव :	2 राजा 15–21 2 इतिहास 26–30	2 राजा 22–25	दानिय्येल 1–6	दानिय्येल 1–6

पुराने नियम को पुनः देखना, मसीह का पूर्वानुमान

अभी तक हमारे अध्ययन ने दिखाया कि व्यवस्था ने चुनाव (उत्पत्ति) के द्वारा मसीह के लिये नींव (बुनियाद) डाल दी, छुटकारा (निर्गमन), शुद्धिकरण (लैव्यव्यवस्था), दिशा निर्देश (गिनती) और आदेश (व्यवस्थाविवरण)। इस्राएल के देश की परमेश्वर के वचन के मार्ग–दर्शक के रूप में और मसीह की वंशावली (उत्पत्ति 12:1–3, रोमियों 9:4–5)।

मसीह के लिये आगे की तैयारी ऐतिहासिक पुस्तकों में दी गई थी, देश को इस्राएल की भूमि उनकी सम्पत्ति होने के लिये दी गई (यहोशू), तब देश का शोषण विदेशी देशों ने किया, और अविश्वासी था, फिर भी परमेश्वर ने न्यायियों को उठाया और देश को विश्वासयोग्य पाया (रूत) राजा शाऊल के आधीन देश को स्थिरता प्रदान की गई (1 शमूएल) और तब उसका विस्तार दाऊद राजा के आधीन किया गया (2 शमूएल) और देश की महिमा सुलैमान राजा के आधीन (1 राजा 1:10) इसके बाद देश का विभाजन हुआ (1 राजा 11:22) 10 उत्तरी गोत्र और दो यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र दक्षिण में। इन दोनों ने राज्य के बिगाड़ को सहा (2 इतिहास) उसका परिणाम आरामी और बाबुल की बंधुवाई (2 राजा) इससे मन्दिर को कभी और विनाश सहना पड़ा (2 इतिहास)। फिर भी परमेश्वर की विश्वासयोग्यता अपनी प्रतिज्ञा के प्रति बनी रही और इस प्रकार मन्दिर का पुनः निर्माण हुआ (एज्रा) और देश में लोगों की वापसी हुई (नहेम्याह) उसके बाद परमेश्वर के लोगों का बचाव हुआ (एस्तेर)।

कवितामय पुस्तकों में हमेशा मसीह के लिये आत्मिक आकांक्षा नैतिक नींव के साथ रही है जो व्यवस्था में और देश के कार्यरूप में इतिहास की पुस्तकों में विकसित हुई।

कवितामय पुस्तकें मसीह की महान उम्मीदों के साथ देखती हैं – गिसलर के अनुसार ये नीचे दिए गये के तरीके से किया गया है:

> पहले के भविष्यद्वक्ता (होशे, योएल, आमोस) मसीह के द्वारा राष्ट्रीय पुनः स्थापना की आशा करते हैं, यशायाह और मीका मसीह के आने के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय उद्धार की भविष्यवाणी करते हैं। पर ओबद्याह, योना, नहूम, हबक्कूक और सपन्याह, देशों पर परमेश्वर के दण्ड के प्रति चेतावनी देते हैं। विलापगीत परमेश्वर के दण्ड के ऊपर जो उसके लोगों पर है – विलाप करते हैं पर यिर्मयाह मसीह में पुनः वाचा की पुष्टि की ओर देखता है। यहेजकेल देशों के धार्मिक पुनः स्थापन की आशा करता है और दानिय्येल इसके राजनैतिक पुनः स्थापना के विषय भविष्य की बात कहता है। बाबुल की बंधुवाई के बाद हाग्गै और सपन्याह लोगों के धार्मिकता के लिये कहते हैं और मलाकी उनके समाज और नैतिक पुनः निर्माण की बात कहते हैं जैसा वे बाट जोहते हैं, ***"धर्म का सूर्य उदय होगा और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे"*** (मलाकी 4:2)।

यशायाह

(यहोवा का उद्धार)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा कि पुस्तक साफ घोषणा करती है कि इसका लेखक यशायाह है, आमोस का पुत्र एक यहूदी परिवार का प्रभावशाली, प्रतिष्ठित मुखिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि यशायाह राजकीय दरबार से परिचित था यहां तक कि आहाज़ के राज्य में भी। वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलों का शिक्षित विद्यार्थी था, जिसने अपना अधिकतर समय यरूशलेम में बिताया जहां वह राजकीय घराने से जुड़ा और विदेशी मामलों में सलाह दिया करता था। यद्यपि यशायाह परमेश्वर के द्वारा निर्देशित था वह अक्सर विचित्र था क्योंकि उसने किसी भी विदेशी शक्ति से गठजोड़ करने का विरोध किया (चाहे आरामी या मिस्र से) जैसा अध्याय 6 में प्रभु ने चेतावनी दी, उसके सब कारण असफल हो गये दोनों सरकार व लोगों के लिये उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखने की अपेक्षा राजनैतिक गठजोड़ पर भरोसा रखा।

एक पुरानी परम्परा संबंधित करती है कि वह मनश्शै के राज्य में शहीद हो गया। सम्भव है एक वृक्ष पोल तने के अन्दर उसे आरे से दो भाग कर दिया गया था (इब्रानियों 11:27) जबकि वह यशायाह 37:37–38 में राजा सेन्हेरीब की मृत्यु का रिकार्ड करता है, ये कल्पना करना सही है कि यशायाह सेन्हेरीब की मृत्यु के बाद तक जीवित रहा 681 ई.पूर्व में।

पुस्तक का शीर्षक यशायाह मानव–लेखक के नाम से लिया गया। जिसने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से इसे बनाया। इस भविष्यद्वक्ता का इब्रानी नाम का अर्थ है "यहोवा का उद्धार"। जो विषय और पुस्तक की विषय सूचि का सर्वोत्तम सारांश है।

लेखन तिथि : 740–680 ई.पूर्व। यशायाह की लम्बी सेवकाई थी जो ई.पूर्व 740–680 तक रही। उसकी सेवकाई का आरम्भ उज्जियाह के राज्य के अन्त में हुआ था (790–739 ई.पूर्व) और सेवकाई जारी रही– योथाम के राज्य (739–731 ई.पूर्व), आहाज (731–715 ई.पू.), और हिज्जकियाह के राज्य (715–686 ई.पू.) तक। उस समय के अन्य जाति शासकों के दृष्टिकोण से यशायाह ने सेवा तिगलाथ – पिलेसर (745–727 ई.पूर्व.) से लेकर सेन्हेरीब के समय तक की (705–681 ई.पूर्व)।

विषय और अभिप्राय : यशायाह का नाम पुस्तक का विषय उपलब्ध कराता है। "यहोवा का उद्धार" ये सबसे अधिक प्रमाणित है इस शब्द "उद्धार" जो करीब 26 बार यशायाह में आता है पर केवल 7 बार सभी भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किया गया। इसके कारण–यशायाह को "सुसमाचार का भविष्यद्वक्ता" कहा जाता है इसलिये कि वह बहुत अधिक मसीह के उद्धार और छुटकारे के कार्य के विषय बोलता है। वास्तव में किसी भी पुराने नियम की पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक में मसीह के व्यक्ति और कार्य के विषय में कहा गया है।

कुछ बातों में यशायाह एक छोटी बाइबल है। इसमें 66 अध्याय हैं जबकि बाइबल में 66 पुस्तकें हैं। यशायाह के पहले 39 अध्याय 39 पुस्तकों से सम्बंधित हैं जो अधिकतर मसीह के आने का पूर्वानुमान लगाते हैं। बाद के यशायाह के 27 अध्याय साफ तरीके से नये नियम की 27 पुस्तकों के समानान्तर हैं क्योंकि वे मसीह और उसके राज्य के विषय – प्रभु के सेवक के लिये बोलते हैं। अध्याय 1–39 मनुष्य के उद्धार की महान आवश्यकता के लिये बोलते हैं। अध्याय 40–66 परमेश्वर के उद्धार मसीह के द्वारा दिये जाने और राज्य को प्रगट करते हैं।

विशेष लोग : मुख्य लोग : यशायाह भविष्यद्वक्ता है, मुख्य व्यक्ति, पर यहोवा को इस्राएल का सर्वशक्तिमान पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है – इस्राएल के पवित्र होने के जैसे और सेनाओं का यहोवा परमेश्वर स्पष्ट रीति से यशायाह की पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है।

यशायाह में जैसे मसीह देखा गया : जिस प्रकार यशायाह की पुस्तक मसीह की पूर्ण तस्वीर दिखाती है – पुराने नियम की और कोई पुस्तक नहीं दिखाती है। यशायाह मसीह की उसकी प्रभुसत्ता से ऊपर की तस्वीर प्रगट करता है (6:1) जन्म और नम्रता (7:14, 9:6, 11:1)। आत्मा के द्वारा उसकी सेवकाई (11:21), उसका दैवीय स्वाभाव (7:14; 9:6), उसकी दाऊद की संतान (11:1), उसका हमारे स्थान पर छुटकारे का कार्य (53), उसकी सेवकाई एक सेवक की नाईं (49–52) और कहीं अधिक।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. दण्डाज्ञा और न्याय की भविष्यवाणी (1:1–39:8)

क. यहूदा के विरूद्ध भविष्यवाणी (1:1–12:6)

1) यहूदा की दण्डाज्ञा (1:1–5:30)

1:1–9	2:12–22	5:1–7
1:10–17	3:1–12	5:8–30
1:18–31	3:13–26	
2:1–11	4:1–6	

2) भविष्यद्वक्ता का कार्य (6:1–13)

6:7	6:8–13

3) मसीह का आगमन (7:1–12:6)

7:1–9	8:9–22	10:20–34
7:10–16	9:1–7	11:1–10
7:17–25	9:8–21	11:11–16
8:1–8	10:1–19	12:1–6

ख. अन्यजाति देशों के विरुद्ध भविष्यवाणी (13:1–23:18)

1) बाबुल के विरूद्ध (13:1–14:23)

13:1–5	13:17–22
13:6–16	14:1–23

2) आरामी के विरुद्ध (14:24–27)
3) पलिश्ती के विरुद्ध (14:28–32)
4) मोआब के विरूद्ध (15:1–16:14)
5) दमिश्क और उसके सहयोगी के विरुद्ध – इस्राएल (17:1–14)।
6) कूश के विरूद्ध (18:1–7)
7) मिस्र के विरूद्ध (19:1–20:6)

19:1–10	19:11–25	20:1–6

8) बाबुल के विरूद्ध (21:1–10)
9) ऐदोम के विरूद्ध (21:11–12)
10) अरब के विरूद्ध (21:13–17)
11) यरूशलेम के विरूद्ध (22:1–25)
12) सोर के विरूद्ध (23:1–18)

ग. प्रभु के दिन की भविष्यवाणियां (24:1–27:13)

1) सताव का न्याय (24:1–23)
2) राज्य की विजय और आशीष (25:1–27:13)

25:1–12	26:11–21
26:1–10	27:1–13

घ. इस्राएल और यहूदा के विरूद्ध भविष्यवाणियां (हाय और आशीषें) (28:1–35:10)

1) सामरिया पर हाय (28:1–29)

28:1–13	28:14–29

2) यहूदा पर हाय (29:1–31:9)

29:1–8	29:17–24	30:18–33
29:9–16	30:1–17	31:1–9

3) मसीह और उसके राज्य को देखो (32:1–20)
32:1–8 32:9–20
4) आराम पर हाय, यरूशलेम का बिगाड़ने वाला (33:1–24)
33:1–12 33:13–24
5) देशों पर हाय (34:1–17)
6) आने वाले राज्य को देखो (35:1–10)

ङ. सेन्हेरिब के विरूद्ध भविष्यवाणियां (36:1–39:8)
1) आराम से तीखे स्वर (36:1–22)
2) परमेश्वर से सत्य (37:1–7)
3) आराम से धमकी (37:8–35)
37:8–13 37:14–20 37:21–35
4) आराम पर विजय (37:36–38)
5) हिजकियाह की बीमारी (38:1–22)
6) हिजकियाह की मूर्खता (39:1–8)

2. सुख या तसल्ली की भविष्यवाणियां (40:1–66:24)

क. इस्राएल के छुटकारे और परमेश्वर की महानता की भविष्यवाणी (40:1–48:22)

40:1–20	43:8–13	45:8–25
40:21–31	43:14–21	46:1–13
41:1–20	43:22–28	47:1–15
41:21–29	44:1–8	48:1–16
42:1–13	44:9–20	48:17–22
42:14–25	44:21–28	
43:1–7	45:1–7	

ख. इस्राएल के छुड़ाने वाले की भविष्यवाणी, यातना सहने वाले सेवक का उद्धार (49:1–57:21)

49:1–13	52:1–15	56:1–12
49:14–26	53:1–12	57:1–21
50:1–11	54:1–17	
51:1–23	55:1–13	

ग. इस्राएल के महिमामय भविष्य के लिये भविष्यवाणी, परमेश्वर का शान्ति के लिये कार्यक्रम (58:1–66:24)

58:1–12	61:1–11	65:1–16
58:13–14	62:1–12	65:17–25
59:1–8	63:1–6	66:1–2
59:9–21	63:7–14	66:3–9
60:1–14	63:15–19	66:10–24
60:15–22	64:1–12	

यिर्मयाह

(पाप के विरुद्ध चितौनी और न्याय)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा यशायाह के साथ है, ये पुस्तक स्पष्ट रूप से अपने मानवीय लेखक की पहचान देती है जो यिर्मयाह है जो हिल्कियाह का पुत्र, याजकों के शहर अनातोत जो बिन्यामीन की भूमि पर है (1:1)। यिर्मयाह ने अपनी भविष्यवाणी बारूक को जो उसका सचिव था उससे लिखवाया। यिर्मयाह अक्सर "रोने वाला भविष्यद्वक्ता" कहलाता है (9:1, 13:17) या "एकान्त का भविष्यद्वक्ता" शायद इसलिये कि उसे आज्ञा दी गई थी कि शादी न करें (16:2) इसे "अनिच्छुक भविष्यद्वक्ता" के नाम से जाना जाता था (1:6) पर उसने विश्वासयोग्यता से यहूदा के दक्षिणी राज्य पर परमेश्वर के न्याय की घोषणा की भले ही उसे विरोध, मारपीट और बन्दीगृह में डाले जाने का सामना करना पड़ा (11:28–23, 12:6; 18:18, 20:1–3; 26:1–24; 37:11–38:28)।

पुस्तक अपना नाम इसके लेखक यिर्मयाह से लेती है। यिर्मयाह नाम का अर्थ "यहोवा स्थापित करता है"।

लेखन तिथि : 627–585 ई.पूर्व। यिर्मयाह उस समय हुआ जब सपन्याह, हबक्कूक, दानिय्येल और यहेजकेल हुए। उसकी भविष्यवाणी की सेवकाई ई.पूर्व 626 में आरम्भ हुई और करीब 586 में समाप्त हुई उसकी सेवकाई एकदम आरम्भ हुई जैसे सपन्याह के द्वारा हुई जबकि यहेजकेल ने अपनी सेवकाई बाबुल में 593 ई.पूर्व. में आरम्भ की ये भी यरूशलेम में इस महान भविष्यद्वक्ता के अनुकूल था। यिर्मयाह कहां और कैसे मरा ये जानकारी नहीं है यद्यपि यहूदी परम्परा का मानना है कि यिर्मयाह को जब वह मिस्र में रह रहा था मार डाला गया (इब्रानियों 11:37)।

विषय और अभिप्राय : दो विषय विशेष हैं (1) परमेश्वर की पाप के विरुद्ध न्याय की चेतावनी और (2) आशा और पुनः स्थापना का संदेश यदि देश वास्तविक रूप से पश्चाताप करें।

विशेष लोग : मुख्य व्यक्ति यिर्मयाह है–उसका प्रचार, विरोध और सताव।

यिर्मयाह में जैसे मसीह देखा गया : मसीह की बहुत सी तस्वीरें यिर्मयाह में देखी जाती हैं – इस जीवते जल के सोते की नाईं देखा जाता है (2:13, यूहन्ना 4:14)। गिलाद का मरहम (8:22), अच्छा चरवाहा (23:4), एक धार्मिक डाली (23:5), और हमारा धार्मिकता का प्रभु (23:6), वह इस प्रकार देखा गया है कि वह नई वाचा लायेगा (31:31–34)।

यिर्मयाह में की दूसरी भविष्यवाणी मसीह के तात्पर्य की विशेषता बताती है। यहोयाकीन पर श्राप (यकोन्याह कोनियाह) का अर्थ है कि कोई भी शारीरिक रूप से उसकी सन्तान का सिंहासन पर नहीं बैठेगा (22:28–30)। मत्ती 1:1–17 मसीह की वंशावली में सुलैमान और रेहोबोआम को उसका कानूनी (शारीरिक नहीं) पिता यूसुफ देता है। यूसुफ का कोई भी पुत्र दाऊद के सिंहासन पर बैठ नहीं सकता क्योंकि वह यहोयाकीन के श्राप के आधीन है। लूका 3:23–38 में मसीह की वंशावली देखता है – पीछे मरियम से (उसके शारीरिक माता–पिता) दाऊद के दूसरे पुत्र नातान के द्वारा (लूका 3:31)। इस प्रकार श्राप से दूर हैं। धार्मिक डाल वास्तव में दाऊद की गद्दी पर राज्य करेगी।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **यिर्मयाह की बुलाहट और कार्य (1:1–19)**
   - क. बुलाहट (1:1–10)
   - ख. बुलाहट की पुष्टि (1:11–19)

2. **यहूदा के लिये भविष्यवाणियां (2:1–45:5)**
   - क. यहूदा पर दण्ड की आज्ञा (2:1–25:38)
     - 1) यहूदा का जानबूझ का पाप (2:1–3:5)
     - 2) यहूदा की ताड़ना (3:6–6:30)

       3:6–10 4:19–31 6:1–21
       3:11–25 5:1–13 6:22–30
       4:1–18 5:14–31
     - 3) यहूदा का गलत धर्म (7:1–10:25)

       7:1–34 9:1–26
       8:1–22 10:1–25
     - 4) यहूदा का यहोवा की वाचा को तोड़ना (11:1–13:27)

       11:1–17 12:1–6 13:1–11
       11:18–23 12:7–17 13:12–27
     - 5) यहूदा में आकाल का आना (14:1–15:9)

       14:1–12 14:13–22 15:1–9
     - 6) यहूदा में भविष्यद्वक्ता का पुनः कार्य (15:10–16:13)

       15:10–21 16:1–13
     - 7) यहूदा का पाप (16:14–17:27)

       16:14–21 17:1–18 17:19–27
     - 8) यहूदा और सार्वभौम कुम्हार (18:1–23)
     - 9) यहूदा एक टूटे बर्तन की तरह (19:1–20:18)

       19:1–15 20:1–6 20:7–18
     - 10) यहूदा के राजा (21:1–23:8)

       21:1–14 22:13–30
       22:1–12 23:1–8

11) यहूदा के झूठे भविष्यद्वक्ता (23:9–40)
12) यहूदा की बंधुवाई (24:1–25:38)
24:1–10 25:12–31
25:1–11 25:32–38

ख. यिर्मयाह के संघर्ष (26:1–29:32)
1) यिर्मयाह की सेवकाई पर यहूदा की प्रतिक्रिया (26:1–24)
26:1–6 26:7–15 26:16–24
2) यिर्मयाह से यहूदा को सलाह : नबूकदनेजर को समर्पित हो जाओ (27:1–29:32)
27:1–22 28:1–17 29:1–32

ग. यहूदा की पुनः स्थापना की आशा (30:1–33:26)
30:1–17 31:27–40 33:1–13
30:18–24 32:1–15 33:14–26
31:1–26 32:16–44

घ. यरूशलेम के पतन से पहले की घटनाएं (34:1–38:28)
34:1–22 36:20–26 38:1–16
35:1–11 36:27–32 38:17–28
35:12–19 37:1–10
36:1–19 37:11–21

ङ. यरूशलेम का पतन (39:1–18)
39:1–10 39:11–18

च. यरूशलेम के पतन के बाद की घटनाएं (40:1–45:5)
40:1–16 42:1–22 44:20–30
41:1–10 43:1–13 45:1–5
41:11–18 44:1–19

3. अन्यजातियों के लिये भविष्यवाणियां (46:1–51:64)
क. मिस्र के विरुद्ध भविष्यवाणियां (46:1–28)
ख. पलिश्तियों के विरुद्ध भविष्यवाणियां (47:1–7)
ग. मोआब के विरुद्ध भविष्यवाणियां (48:1–47)
घ. अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणियां (49:1–6)
ङ. ऐदोम के विरुद्ध भविष्यवाणियां (49:7–22)
च. दमिश्क के विरुद्ध भविष्यवाणियां (49:23–27)
छ. अरब के विरुद्ध भविष्यवाणियां (49:28–33)
ज. ऐलाम के विरुद्ध भविष्यवाणियां (49:34–39)
झ. बाबुल के विरुद्ध भविष्यवाणियां (50:1–51:64)
50:1–20 50:41–46 51:27–44
50:21–32 51:1–10 51:45–58
50:33–40 51:11–26 51:59–64

4. अतिरिक्त ऐतिहासिक चीज़ें (52:1–34)
क. यरूशलेम का भाग्य (52:1–23)
ख. विशेष लोगों का भाग्य (52:24–34)

विलापगीत

(आंसुओं की नदी)

लेखक और पुस्तक का नाम : पुस्तक में लेखक का नाम नहीं दिया गया है पर दो पंक्तियां यिर्मयाह के लेखक होने के पक्ष में जाती हैं।

पुस्तक का शीर्षक है "कैसे" जो पहला शब्द 1:1,2:1, और 4:1 में पाया जाता है, उसके विषय के कारण, पुस्तक यहूदियों की परम्परा में "विलापगीत" कही जाती है।

लेखन तिथि : 586 या 585 ई.पूर्व – जबकि पुस्तक यरूशलेम के नष्ट होने के कुछ समय बाद ई.पू. 586 में लिखी गई है, इसलिये सबसे पहले की तारीख ई.पू. 586 हो सकती है। विलापगीत की आलेख की स्पष्टता संकेत देती है कि लेखक ई.पू. 586 या 585 में हुआ है।

विषय और अभिप्राय : पुस्तक का प्राथमिक विषय "विलाप करना" है या पीड़ा के ऊपर कराहना जो यहूदा के पापमय दक्षिण राज्य पर पड़ा। ये यरूशलेम और मन्दिर के नष्ट होने के विषय बताया है। परमेश्वर का प्रतिज्ञा किया हुआ न्याय यहूदा पर आ गया है। दूसरा विषय जो इसमें बहता है वह पाप के लिये न्याय है। इस प्रकार भविष्यद्वक्ता देश से आग्रह करता है कि वे पहचाने कि परमेश्वर उनके साथ व्यवहार करने में धर्मी और न्यायी है, और कि वे उसकी दया को खोजें।

यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता का विशेष अनुदान यिर्मयाह और विलापगीत में देखा गया है जो इन दो पुस्तकों की तुलना में भी देखा जा सकता है।

यिर्मयाह	**हार**	**विलापगीत**
(चितौनी)	**और**	(पीड़ित होना)
आगे	**यरूशलेम**	**पीछे**
देखना	**देखना**	**देखना**

विशेष लोग : यिर्मयाह

मसीह जो विलापगीत में देखा गया : विलापगीत दो बातें शामिल करता है जो उद्धारकर्ता की तस्वीर बताते हैं : (1) ये उसे दुःखी पुरुष की तरह दिखाते हैं जिसकी दुःख से जान पहचान थी, जिसे शत्रुओं द्वारा तिरस्कार किया गया, सताया गया और निन्दा की गई (1:12,2:15–16, 3:14, 19,30), (यिर्मयाह का यरूशलेम के नष्ट होने पर रोना शायद मसीह की भी तस्वीर है जो यरूशलेम को देखकर रोया (मत्ती 23:37–38)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **यरूशलेम का नाश होना (1:1–22)**
   - क. भविष्यद्वक्ता का विलाप (1:1–11)
   - ख. यरूशलेम शहर के लिये विलाप (1:12–22)
2. **परमेश्वर का कोप उसके लोगों के विरूद्ध (2:1–22)**
   - क. परमेश्वर का क्रोद्ध (2:1–10)
   - ख. लेखक का विलाप (2:11–22)
3. **परेशान भविष्यद्वक्ता (3:1–66)**
   - क. उसका विलाप (3:1–18)
   - ख. उसकी आशा (3:19–42)
   - ग. उसकी यातना (3:43–54)
   - घ. उसकी प्रार्थना (3:55–66)
4. **यरूशलेम के हारे हुए लोग (4:1–22)**
   - क. शहर का ले लिया जाना (4:1–12)
   - ख. शहर के लिये जाने का कारण (4:13–20)
   - ग. भविष्य के लिये आशा (4:21–22)
5. **पुनःस्थापना के लिये प्रार्थना (5:1–22)**
   - क अंगीकार (5:1–18)
   - ख. विनती (5:19–22)

यहेजकेल

(वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं)

लेखक और पुस्तक का नाम : लेखक याजक यहेजकेल है, बूज़ी का पुत्र, जिसने अपनी बुलाहट एक भविष्यद्वक्ता के रूप में जब बाबुल की बंधुवाई में था उस समय प्राप्त की (1:1–3)। उसकी सेवकाई एक भविष्यद्वक्ता की तरह एक याजकपन पर ध्यान केन्द्रित करती है जो मन्दिर याजकपन और बलिदानों पर सम्बन्ध रखती है साथ ही परमेश्वर की महिमा पर। यहेजकेल के बारे में जो जाना जाता है वो पूरी तरह यहेजकेल की पुस्तक से लिया गया है। वह विवाहित था (24:15–18), अपने स्वयं के मकान में (3:24; 8:1), और अपने साथी बन्दियों के साथ रहता था और वे स्वतंत्रता से रहते थे।

जैसा यशायाह और यिर्मयाह के साथ वैसे ही यहेजकेल की पुस्तक अपने लेखक के नाम को ले लेती है, "यहेजकेल" जिसका मतलब "परमेश्वर सामर्थी करता" या "सामर्थ परमेश्वर द्वारा दी जाती है"।

लेखन तिथि : ई.पूर्व. 593–571; यहेजकेल की पुस्तक में बहुत सी तारीखें दी गई हैं इसलिये उसकी भविष्यवाणियों को उसी के हिसाब से तारीखें दी जाती हैं। पुस्तक की 13 में से 12 में स्पष्ट समय दिया गया जब यहेजकेल ने परमेश्वर से संदेश पाया। दूसरी तारीख संदेशवाहक के आने की है जिसने यरूशलेम के नष्ट होने का समाचार दिया (33:21), उसने जुलाई 593 ई.पूर्व अपनी बुलाहट को प्राप्त किया। यहेजकेल 22 वर्ष तक क्रियाशील रहा। उसका अन्तिम लेख 571 ई.पूर्व. में प्राप्त किया गया।

विषय और अभिप्राय : यहेजकेल का ध्यान इस्राएल के पाप के दण्ड पर था (1–32) और तसल्ली पर (33–48) इन दृष्टिकोण में परमेश्वर भविष्य में क्या करेगा।

विशेष लोग : बूज़ी का पुत्र यहेजकेल, एक याजक जिसे बाबुल की बंधुवाई से पहले और बाद के लिये भविष्यद्वक्ता होने के लिये बुलाया गया।

यहेजकेल में मसीह ऐसे देखा गया : मसीह को ऐसी तस्वीर में दिखाया गया है कि एक ऐसी टेहनी जो ऊंचे पहाड़ पर रोपी जायेगी (17:23–24)। यशायाह की डाली की तरह (11:1) दिखाई गई है, यिर्मयाह (23:5, 33:15) और जर्कयाह (3:8; 6:12) यहेजकेल भी मसीह के राजा के बारे में बोलता है जिसके पास राज्य करने का अधिकार है (21:26–27) और जो सच्चे चरवाहे की तरह सेवा करेगा (34:11–31)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. यहेजकेल की बुलाहट और कार्य (1:1–3:27)

क. यहेजकेल परमेश्वर की महिमा देखता है (1:1–28)

1:1–21 1:22–28

ख. यहेजकेल को परमेश्वर के वचन का कार्य दिया गया (2:1–3:27)

2:1–10 3:1–15 3:16–27

2. यहूदा और यरूशलेम पर वर्तमान न्याय (4:1–24:27)

क. न्याय आने के 4 चिन्ह (4:1–5:17)

4:1–8 4:9–17 5:1–17

ख. आने वाले न्याय के दो सन्देश (6:1–7:27)

6:1–14 7:1–19 7:20–27

ग. दर्शन के द्वारा चार भविष्यवाणियां (8:1–11:25)

8:1–18 10:1–22 11:14–25

9:1–11 11:1–13

घ. न्याय का अवश्य होना उसके कारणों के साथ (12:1–24:27)

12:1–28 17:1–10 21:18–32

13:1–23 17:11–24 22:1–31

14:1–11 18:1–32 23:1–21

14:12–23 19:1–14 23:42–49

15:1–8 20:1–32 24:1–14

16:1–59 20:33–49 24:15–27

16:60–63 21:1–17

3. अन्यजाति देशों के विरुद्ध भविष्यवाणियां (25:1–32:32)

क. अम्मोन के विरुद्ध (25:1–7)
ख. मोआब के विरुद्ध (25:8–11)
ग. ऐदोम के विरुद्ध (25:12–14)
घ. पलिश्तियों के विरुद्ध (25:15–17)
ङ. सोर के विरुद्ध (26:1–28:29)
च. सीदोन के विरुद्ध (28:20–26)
छ. मिस्र के विरुद्ध (29:1–32:32)

29:1–21	31:1–9	32:17–32
30:1–19	31:10–18	
30:20–26	32:1–16	

4. इस्राएल की पुनः स्थापना के लिये भविष्यवाणियां (33:1–48:35)

क. इस्राएल का अपनी भूमि पर वापसी (33:1–39:29)

33:1–20	36:1–21	37:24–28
33:21–33	36:22–38	38:1–23
34:1–10	37:1–10	39:1–24
34:11–31	37:11–14	39:25–29
35:1–15	37:15–23	

ख. इस्राएल के राज्य का पुनः स्थापना (40:1–48:35)

40:1–4	44:1–14	47:13–23
40:5–49	44:15–31	48:1–9
41:1–26	45:1–6	48:10–20
42:1–20	45:7–25	48:21–22
43:1–12	46:1–18	48:23–29
43:13–17	46:19–24	48:30–35
13:18–27	47:1–12	

दानिय्येल

(इस्राएल का अन्तिम पड़ाव)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा दानिय्येल के अपने दावे का सबूत (12:4) और उसके ये शब्द इस्तेमाल करने के द्वारा "मैं" पद 7:2 से आगे। दानिय्येल इस भविष्यवाणी की पुस्तक का लेखक है। दानिय्येल को एक जवान के रूप में बाबुल की बंधुवाई में राजा नबूकदनेजर द्वारा ले जाया गया था। जहां वह नबूकदनेजर और दारा राजा के राज्य का बड़ा अधिकारी बन गया था। यद्यपि उसने भविष्यद्वक्ता का कार्य नहीं किया था, मसीह ने उसे एक भविष्यद्वक्ता की तरह पहचान दी (मत्ती 24:15, मरकुस 13:14)।

लेखक के नाम पर पुस्तक का नाम दिया गया है, जिसका अर्थ है या तो "परमेश्वर न्यायी" या "परमेश्वर मेरा न्यायी है"।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 537; दानिय्येल की पुस्तक बाबुल की बंधुवाई के दौरान लिखी गई जब दानिय्येल और दूसरे जवान 605 ई.पूर्व. में बाबुल की बंधुवाई में ले जाये गये थे जब नबूकदनेजर ने यरूशलेम पर कब्जा किया।

विषय और अभिप्राय : दानिय्येल का विषय है "परमेश्वर की प्रभुसत्ता की सामर्थ – एक सच्चे परमेश्वर की तरह, जो न्याय करता और विद्रोही शक्तियों को नष्ट करता और अपने लोगों को उनके उस पर विश्वास के अनुसार विश्वास योग्यता से छुटकारा देगा। दानिय्येल की पुस्तक बंधुवाई में गये यहूदियों को प्रोत्साहित करने के लिये लिखी गई कि इस्राएल के लिये परमेश्वर की योजना को अन्य जाति संसार की शक्ति के अधिकार के पहले और बाद के समय में प्रगट की जाये।

विशेष लोग : मुख्य जन दानिय्येल है जो बाबुल में जवानों को बंधुवाई में ले जाये गये थे और उन्होंने राज्य में (सरकार में) सेवा की और यहूदियों और अन्यजातियों के लोगों के लिये परमेश्वर के विशेष प्रवक्ता बन गये – साथ में तीन और जवान शद्रक, मेशक और अबेदनगो जो दानिय्येल के साथ विशेष प्रशिक्षण के लिये चुने गये थे (उनके पहले नाम हनन्याह, मिशायल और अर्जयाह था)। दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्ति बाबुल का राजा नबूकदनेजर था – ई.पूर्व. 605 में। दारा राजा जो बेलशस्सर के बाद राजा हुआ – क्षयर्ष जो फारस का राजा था और मीकाइल स्वर्गदूत जिसने दानिय्येल की सेवा की – अध्याय 10।

दानिय्येल में मसीह जैसा देखा गया : मसीह की तस्वीरों में से एक मुख्य तस्वीर दानिय्येल में मसीह के आगमन की है जो अलग किया जायेगा (क्रूस के लिये संदर्भ 9:25–26)। फिर भी मसीह भी एक महान पत्थर की तरह तस्वीर दिखाता है जो इस संसार के राज्य को चूर चूर करेगा (2:34,45)। मनुष्य का पुत्र (7:13) और प्राचीन दिन (7:22) दर्शन जो दानिय्येल 10:5–9 में रिकार्ड किया गया अत्याधिक लगता है मसीह को दिखाता है (प्रकाशितवाक्य 1:12–16)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **दानिय्येल का व्यक्तिगत इतिहास (1:1–21)**
   - क. उसका बाबुल में बंधुआई में जाना (1:1–7)
   - ख. बाबुल में उसकी विश्वासयोग्यता (1:8–16)
   - स. उसकी बाबुल में प्रतिष्ठा (1:17–21)

2. **अन्य जाति देशों के लिये भविष्यवाणी की योजना (2:1–7:28)**
   - क. नबूकदनेजर का महान मूरत का स्वप्न (2:1–49)
     - 2:1–18, 2:36–38, 2:44–45
     - 2:19–30, 2:39, 2:46–49
     - 2:31–35, 2:40–43
   - ख. आग का भट्टा – विश्वास में पाठ (3:1–30)
     - 3:1–7, 3:8–18, 3:19–30
   - ग. नबूकदनेजर के महान पेड़ का दर्शन (4:1–37)
     - 4:1–3, 4:19–27
     - 4:4–18, 4:28–37
   - घ. बेलशस्सर का भोज और दीवार का लेख (5:1–31)
     - 5:1–12, 5:13–29
   - ङ. दारा की मूर्खतापूर्ण आज्ञा या दानिय्येल सिहों की मांद में (6:1–28)
     - 6:1–15, 6:16–28
   - च. दानिय्येल का चार जन्तुओं का दर्शन (7:1–28)
     - 7:1–8, 7:13–14
     - 7:9–12, 7:15–28

3. **इस्राएल के लिये भविष्यवाणीमय योजना (8:1–12:13)**
   - क. दानिय्येल का दर्शन में एक मेढ़ा, बकरा और छोटा सींग (8:1–27)
     - 8:1–8, 8:15–19
     - 8:9–14, 8:20–27
   - ख. दानिय्येल की वर्ष के 70 सप्ताहों की भविष्यवाणी (9:1–27)
     - 9:1–19, 9:20–23, 9:24–27
   - ग. दानिय्येल का भविष्यवाणी का दर्शन – इस्राएल के भविष्य के लिये (10:1–12:13)
     - 10:1–9, 11:14–19, 11:40–45
     - 10:10–21, 11:20–28, 12:1–4
     - 11:1–4, 11:29–35, 12:5–13
     - 11:5–13, 11:36–39

भाग 5
छोटे भविष्यद्वक्ता

शब्द "छोटे भविष्यद्वक्ता" : बाइबल की इन बारह पुस्तकों के सामान्य शीर्षक "छोटे भविष्यद्वक्ता" दिये गये हैं। ये शीर्षक चौथी सदी ई. पश्चात् में पैदा हुए। ये भविष्यद्वक्ता छोटे हैं – ये सभी उन भविष्यद्वक्ताओं के मुकाबले जैसे यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल जो (बड़े भविष्यद्वक्ता कहलाते हैं) ये बहुत ही छोटे हैं। पुराने और नये नियम के समय में पुराना नियम "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" कहलाता था।

भविष्यवाणीमय सेवा / कार्य का उद्गम (आरम्भ) : भविष्यवाणीमय कार्य का आरम्भ परमेश्वर के इस्राएल के लिये अभिप्राय में पाया जाता है एक देश की प्रतिज्ञा कि यदि वे आज्ञाकारी रहेंगे तो वे ***मेरी "सम्पत्ति"*** बन जायेंगे। (उसका विशेष खज़ाना) "याजकों का समाज और पवित्र देश" बन जाने के अभिप्राय से सभी देशों के बीच (निर्गमन 19:5–6, व्यवस्थाविवरण 4:6–8)। ये अभिप्राय हो नहीं सका फिर भी यदि उन्होंने विश्वास का अनुकरण किया और दूसरे देशों की तरह चले। उनके प्रतिज्ञा किये हुए देश में प्रवेश करने की तैयारी – मूसा के मृत्यु से थोड़ा ही पहले, व्यवस्था के विपरीत और शैतानी तरीकों को देशों द्वारा इस्तेमाल किया गया – भविष्य पहचानने के लिये या दैविय इच्छा मालूम करने के लिये जो "शुकन–विचार" कहा जाता था इसे प्रभु परमेश्वर ने के मूसा द्वारा पूरी तरह दोषपूर्ण/दण्डित बताया है (व्यवस्थाविवरण 18:9–14)। तब किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा जानी जाये? सच्चा और नियमानुसार अर्थ जिसके द्वारा परमेश्वर की इच्छा उसके लोगों को दी जायेगी जो अगले पदों में व्यवस्थाविवरण 18:15–22 में दिया गया है जो इस प्रकार है:–

> ***"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना, यह तेरी उस विनती के अनुसार होगा जो तू ने होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से की थी कि मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना, न वह बड़ी आग फिर देखनी पड़े कि कहीं ऐसा न हो कि मर जाऊं, तब यहोवा ने मुझ से कहा कि वे जो कुछ कहते हैं सो ठीक कहते हैं। सो मैं उनके लिये उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनायेगा। और जो मनुष्य मेरे वे वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा तो मैं उसका हिसाब उससे लूंगा। परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहें जिसकी आज्ञा मैंने उसे न दी हो वा पराये देवताओं के नाम से कुछ कहे वह नबी मार डाला जाये। और यदि तू अपने मन में कहे कि जो वचन यहोवा ने नहीं कहा उसको हम किस रीति से पहचानें? तो पहचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाये तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने ये बात अभिमान करके कही है, तू उससे भय ना खाना"।***

यह प्रगटीकरण बाइबल आधारित उद्गम को बनाता और भविष्यवाणी के कारण बनाता है। इससे आगे जिससे देश परमेश्वर के अभिप्राय की पूर्ति कर सके जैसा अब्राहम की वाचा में वर्णन किया गया है (उत्पत्ति 12:1–3)। उसने उन्हें विशेष प्रतिज्ञा दी और चेतावनी भी दी। इसे व्यवस्थाविवरण 28–30 में बयान किया गया है – इन अध्यायों के आशीष और श्राप दिये गये हैं (कभी कभी ये फिलिस्तीन की वाचा का संदर्भ देती है) आज्ञाकारिता के लिये आशीष होगी, पर यदि वे आज्ञा का उल्लंघन करें तो श्राप होगा – तो भविष्यद्वक्ता किस प्रकार इस तस्वीर में सही बैठते हैं? वे साथ में आयेंगे और कहेंगे ***"इसलिये कि तुमने वाचा तोड़ी तो वाचा की श्रापें तुम पर पड़ी हैं"*** दूसरे शब्दों में ऐसा हुआ है (या होने वाला है) जैसा परमेश्वर ने तुम्हें चितौनी दी व्यवस्थाविवरण 28–30 में। भविष्यद्वक्ताओं के पाप और न्याय के सन्देश इसकी पृष्ठ भूमि में देखे जाने और समझे जाने चाहिये।

भविष्यद्वक्ताओं ने केवल चितौनियों की घोषणा नहीं की पर उद्धार के सन्देश और परमेश्वर की आने वाली महिमा की भी घोषणा की। अन्त में परमेश्वर के अभिप्राय उसके लोगों के जीवनों में परमेश्वर के कार्यों द्वारा पूर्ण किये जायेंगे। कभी कभी ये उद्धार के संदेश विशेष घटना का वर्णन करते हैं जिसमें उन्होंने दर्शन देखे हैं (दानिय्येल 9:24–27 और 70 सप्ताह) दूसरे समय में वे परमेश्वर के दिये गये वायदों की घोषणा करते और दावा करते जो उसने मनुष्य को दिये जैसे अब्राहम और दाऊद को दिये थे।

छोटे भविष्यद्वक्ताओं की साहित्यिक विशेषताएं : जब हम सभी भविष्यद्वक्ताओं का अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि उनके सबके एक से संघटक हैं : (1) न्याय की चितौनी देना – देश के पापमय कारण से (2) पाप का वर्णन (3) आने वाले न्याय का वर्णन (4) पश्चाताप करने की बुलाहट (5) और भविष्य के छुटकारे की आशा।

भविष्यवाणी की पुस्तक की मुख्य रूप रेखा ये है कि कहां विचारों की एक इकाई आरम्भ होती और कहां अन्त होता है भविष्यद्वक्ताओं ने परिचय का वर्णन इस्तेमाल इस प्रकार किया है – "यही है जो परमेश्वर कहता है . . ." और अन्त भी उन्हीं शब्दों या कहावत से करता है।

कालक्रम पर पुनः दृष्टि

अंग्रेजी बाइबल के अनुसार छोटे भविष्यद्वक्ताओं का क्रम

1. होशे	4. ओबद्याह	7. नहूम	10. हाग्गै
2. योएल	5. योना	8. हबक्कूक	11. जकर्याह
3. आमोस	6. मीका	9. सपन्याह	12. मलाकी

इस्राएल और यहूदा के राज्यों के बंधुवाई में जाने के झुण्डों के अनुसार

झुण्ड	पुस्तक	लगभग तिथि
बंधुवाई: इस्राएल के भविष्यद्वक्ता	योना आमोस होशे	793–753 760 755–715
यहूदा के भविष्यद्वक्ता	ओबद्याह योएल मीका नहूम सपन्याह हबक्कूक	840 835–796 700 633–612 630–625 600
बंधुवाई में जाने के बाद : लौटने के बारे में बताने वाले भविष्यद्वक्ता	हाग्गै जकर्याह मलाकी	520 520–518 450–400

होशे

(प्रेम को बचाकर रखना)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा पद 1 में घोषित किया गया है, लेखक "होशे" है, बेरी का पुत्र और गोमेर का पति (1:3)। वह उत्तरी इस्राएल का नागरिक था इसलिये कि उसका सम्बन्ध इस्राएल के उत्तरी राज्य से था और उसने सामरिया के राजा को "अपना राजा" कहा (7:5), वो सब जो हम होशे के विषय जानते हैं वो सब पुस्तक से देखा।

पुस्तक का नाम इसके लेखक के नाम पर रखा गया है – "होशे" जिसका नाम उत्तरी राज्य के राजा होशिया से मिलता जुलता है। भेद करने के अभिप्राय से बाइबल हमेशा छोटे भविष्यद्वक्ता का नाम होशे देती है। ये बड़ी दिलचस्प बात है कि नाम जैसे होशे, यहोशू और यीशु सभी उसी इब्रानी नाम "होशिया" से निकलते हैं जिसका मतलब "उद्धार" होता है फिर भी दोनों नाम यहोशू और यीशु इसमें अतिरिक्त सत्य शामिल कर देते हैं जैसे "यहोवा ही उद्धार" है। परमेश्वर के सन्देशवाहक होकर होशे देश को उद्धार प्रस्तुत करता है – यदि वे अपनी मूर्तिपूजा से मुड़कर परमेश्वर की ओर आयेंगे तो।

लेखन तिथि : 755–715 ई.पूर्व। 1:1 के अनुसार होशे ने उजियाह, (767–739 ई.पूर्व), योथाम (739–731 ई.पूर्व), आहाज (731–715 ई.पूर्व) और हिजकियाह (715–686 ई.पूर्व) इन राजाओं के राज्यकाल में सेवा की जो यहूदा के राजा थे। उसने इस्राएल के राजा यरोबोआम के राज्य में भी (782–752 ई.पूर्व) में सेवा की।

होशे की सेवकाई कई दशकों तक चली–इसका आरम्भ यहूदा के राजा उजियाह के राज्य के अन्तिम दिनों में हुआ (ई.पूर्व 790–739) इस्राएल का यहोबोआम द्वितीय (793–753 ई.पू.) और समाप्ति हिजकियाह के प्रारम्भिक दिनों में हुई। इसका राज्य 715 ई.पू. के लगभग आरम्भ हुआ। अपने पिता आहाज के साथ के (सह–राजा के समान शासन किया)। जबकि इस्राएल होशे की

प्रारम्भिक मंडली थी, ऐसा आश्चर्य लगता है कि यहूदा के चार राजा और केवल इस्राएल के एक राजा का वर्णन 1:1 में किया गया है। छः इस्राएली राजाओं का अलग रखने का कारण जिन्होंने यरोबोआम का अनुसरण किया वह अनिश्चित है। शायद ये दाऊद के राज्य की वैद्यता को बताती है (3:5)। इसके विपरीत उत्तर के राज्य का अस्थिरता और पतन को बताता है (7:3–7)।

शायद इस्राएल के छः राजाओं को अलग किया जाना, उनका यरोबोआम द्वितीय का अनुसरण करना और सम्बन्ध कारण हो सकता है। फिर भी ये यरोबोआम की तरह पाप लगातार करते रहे। असल में इस्राएल के उत्तरी राज्य में कोई भी अच्छा राजा नहीं था जिसने वो सुधार का कार्य किया हो जैसा यहूदा के दक्षिण राज्य में था।

विषय और अभिप्राय : होशे, इस्राएलियों की अविश्वसनियता या विश्वासघात के बावजूद परमेश्वर की दृढ़ और अटल प्रेम की प्रगट करने के लिये लिखा गया है। होशे के विवाहित अनुभव के द्वारा ये पुस्तक हमें प्रेमी हृदय और तरस खाने वाले परमेश्वर को दिखाना चाहती है जो अपने लोगों को अपने स्वयं के ज्ञान के साथ और परमेश्वर की समीपता जानते हुए जो मनुष्य के लिये है – आशीष देना चाहता है। इस अभिप्राय को रखकर होशे का विषय उत्तरी राज्य के विरुद्ध एक मजबूत गवाही है क्योंकि ये परमेश्वर की वाचा के सम्बन्धों में अविश्वास या विश्वासघात करते रहे थे, जैसा उनकी व्यक्तिगत और सार्वजनिक नैतिक जीवन की भ्रष्टता प्रगट की गई है, इस प्रकार भविष्यद्वक्ता अपने देशवासियों से चाहता है कि वे पश्चाताप कर अपने धीरजवन्त, प्रेमी परमेश्वर के पास लौट आयें। इस्राएल को अपनी प्रिय सन्तान और वाचा की पत्नी की तरह समझ कर परमेश्वर के प्रेम के दृष्टिकोण से इसे प्रस्तुत किया गया है।

विशेष लोग : होशे, गोमेर, और येहू, इस्राएल का राजा।

होशे में मसीह जैसा देखा गया : होशे में, मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है (11:1; मत्ती 2:15)। उसके लोगों के लिये वह केवल उद्धारकर्ता है (13:4; यूहन्ना 14:6)। उसकी तरह जो हमें मृतकों में से दाम देकर छुड़ायेगा (13:14; 1 कुरिन्थियों 15:55)। ऐसा जो हमसे प्रेम बड़े तरस के साथ करता है (11:4) और वो उनको चंगा करता है जो उसके पास लौट आते हैं (6:1)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय (1:1)**
2. **होशे का विवाह : परमेश्वर का इस्राएल के साथ व्यवहार की तस्वीर (1:2–3:5)**
   - अ. होशे के परिवार का भविष्यद्वक्ता का स्वाभाव (1:2–11)
     - 1) होशे का विवाह – इस्राएल का विश्वासघात (1:2–5)
     - 2) होशे के बच्चे – इस्राएल का न्याय (1:6–9)
     - 3) इस्राएल का भविष्य–पुनः स्थापना (1:10–11)
   - ख. दण्ड के द्वारा पुनः स्थापना (2:1–23)
     - 1) परमेश्वर का इस्राएलियों को दण्ड देना (2:1–13)
     - 2) परमेश्वर का इस्राएलियों की पुनः स्थापना करना (2:14–23)
   - स. होशे के विवाह का पुनः स्थापना (3:1–5)
     - 1) दैविय आज्ञा (3:1)
     - 2) होशे का आज्ञाकारी उत्तर (3:2–3)
     - 3) उदाहरण को वर्णन किया गया (3:4–5)
3. **होशे का सन्देश : इस्राएल का न्याय और पुनःस्थापना (4:1–14:9)**
   - क. परमेश्वर का इस्राएल के विरूद्ध मुकद्दमा (4:1–6:3)
     - 1) इस्राएल का दोष उजागर किया गया (4:1–19)
       - 4:1–3 4:7–10 4:15–19
       - 4:4–6 4:11–14
     - 2) इस्राएल के न्याय की घोषणा की गई (5:1–14)
       - 5:1–7 5:8–15
     - 3) इस्राएल की पुनः स्थापना की भविष्यवाणी की गई (6:1–3)
   - ख. परमेश्वर का इस्राएल के विरुद्ध मुकद्दमा बढ़ गया (6:4–11:11)
     - 1) इस्राएल का दोष और दण्ड (6:4–8:14)
       - 6:4–11 7:8–16 8:8–14
       - 7:1–7 8:1–7

2) इस्राएल का दोष और दण्ड पुनः बयान किये गये (9:1–11:7)

9:1–6	9:15–17	10:11–15
9:7–9	10:1–2	11:1–4
9:10–14	10:3–10	11:5–7

3) परमेश्वर का तरस नया हुआ (11:8–11)

ग. परमेश्वर का इस्राएल के विरुद्ध मुकद्दमा का समाप्त होना (11:12–14:9)

1) समाप्ति के दोष (11:12–13:16)

11:12–12:11	13:1–3	13:9–11
12:12–14	13:4–8	13:12–16

2) समापन का उपदेश (14:1–9)

14:1–3	14:4–7	14:8–9

योएल

(यहोवा के दिन का आना)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा 1:1 में संकेत दिया गया है उसका अर्थ है "यहोवा परमेश्वर है"। ये नाम योएल के सन्देश के दृष्टिकोण में सही है जो परमेश्वर पर एक सार्वभौम होने का भार रखता है जिसकी सामर्थ के आधीन समस्त सृष्टि और देश हैं और इतिहास के परमेश्वर के नियंत्रण में हैं। हम उसके पिता पतुएल के अलावा और अधिक कुछ नहीं जानते हैं (1:1)।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 835–796। जबकि पुस्तक के किसी भी सन्दर्भ में तारीख का वर्णन नहीं दिया गया है तो हमें अन्दर के दिये हुए सबूतों के आधार पर जो पुस्तक में पाये जाते और घटनाओं से जोड़ते हैं। तारीख निश्चित करते हैं। लोगों ने सुझाव दिया है कि ये ई.पू. 835–400 का समय है पर तारीख निश्चित करना कठिन है। यहां हम इसकी तारीख 835–796 ई.पू. निर्धारित करते हैं। इसके उन सन्दर्भों से जो सोर, सीदोन, पलिश्तीन, मिस्र और ऐदोम को शत्रुओं की तरह देखते हैं (3:14,19)। ये दक्षिण राज्य के प्रारम्भिक शत्रु थे – बाबुल में बंधुवाई में जाने के पहले। बंधुवाई में जाने के बाद इनके शत्रु बाबुल, फारस और असीरिया हुए।

विषय और अभिप्राय : योएल हाल के आकाल और टिड्डियों की विपत्ति का वर्णन करता जो यहूदा में बिना चितौनी के हुईं जो एक नसीहत के रूप में भविष्य के इस्राएल पर हमले की चितौनी थी जो यहोवा के दिन में आ सकता है। बहुत थोड़े समय में, घन्टों का मामला है, हर एक वनस्पति समाप्त हो जायेगी। यदि देश पश्चाताप कर परमेश्वर के पास लौट आयेगा तो परमेश्वर उसके साथ अपना सम्बन्ध पुनः स्थापित कर उसे आशीष देगा। ये उस ऐतिहासिक परिस्थिति जिसमें योएल लिख रहा था सत्य था और भविष्य में किसी भी समय सत्य होगा।

अन्तिम आशीषों और पुनः स्थापना के लिये जो होगी जिसे योएल के द्वारा वायदा किया गया, यहूदियों को सताव के न्याय और परमेश्वर की आत्मा के उंडेले जाने का अनुभव करना होगा। ये वो समिश्रण है जो उन्हें परमेश्वर के पास लौटने का कारण बनेगी।

विशेष लोग : योएल

योएल में जैसा मसीह देखा गया : योएल में मसीह को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया कि जो पवित्र आत्मा देगा (2:28; यूहन्ना 16:7–15; प्रेरित 1:8), जो देशों का न्याय करता है (3:12,12) और जो इस्राएल का मज़बूत गढ़ और शरण स्थान है (3:16)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. प्रभु का ऐतिहासिक दिन (1:1–20)

क. टिड्डियों का होने का इतिहास (1:1–12)

1:1–3	1:4–7	1:8–12

ख. आकाल का ऐतिहासिक रूप से होना (1:13–20)

2. प्रभु का भविष्यवाणीमय दिन (2:1–3:21)

क. प्रभु के दिन की निकटता (2:1–27)

1) यहूदा पर के हमले की भविष्यवाणी (2:1–11)

2) यहूदा के उद्धार की स्थिति की आवश्यकता (2:12–27)

2:12–17	2:18–20	2:21–27

ख. अन्त में प्रभु का दिन (2:28–3:21)

1) प्रभु के दिन के पहले अन्तिम घटनाएं (2:28–32)

2) प्रभु के दिन की घटनाएं (3:1–21)

3:1–8	3:9–17	3:18–21

आमोस

(निन्दित सौभाग्य के लिये न्याय)

लेखक और पुस्तक का नाम : यशायाह की तरह (जो दरबार का अधिकारी था) और यिर्मयाह (जो याजक था) ये पुस्तक आमोस के द्वारा लिखी गई, जो चरवाहा और गूलर के पेड़ों का छांटने वाला था (1:1, 7:14)। ये तिकोवा का रहने वाला जो बैतलेहेम से 10 मील यरूशलेम के दक्षिण में था। यद्यपि वह एक किसान था फिर भी वह परमेश्वर के वचन से भली भांति परिचित था।

आमोस इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ "बोझ" या "बोझ ढोने वाला" है। ये जो बोझ उसे दिया गया उस पर सही बैठता है। भले ही आमोस यहूदा के दक्षिणी राज्य से आया ना कि उत्तरी राज्य से, उसे चितौनी के सन्देश ले जाने का बोझ दिया गया जो लालच, अन्याय, संसारिकता और उत्तरी राज्य के स्वयं धार्मिकता के विरुद्ध देने का दिया गया था। आमोस को यशायाह के पिता आमोस से उलझन में नहीं हो जाना चाहिये (यशायाह 1:1)।

लेखन तिथि : लगभग 760 ई.पूर्व। पहले पद के अनुसार आमोस हमें बताता है कि वह उजियाह का और यरोबाम का सहयोगी था और भविष्यवाणी की ***"यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में*** (790–739 ई.पू.) और ***यारोबाम, इस्राएल के राजा योआश के पुत्र के दिनों में*** (793–753 ई.पू.) ***भूंडोल के दो वर्ष पहले*** (1:1) आमोस ने लगभग 767–753 तक भविष्यवाणी की। हमें ये भी बताया गया है कि उसने भविष्यवाणी की ***"भूंड़ोल से दो वर्ष पहले"*** पर इस घटना की सही तारीख मालूम नहीं है।

विषय और अभिप्राय : ईश्वरीय सन्देश आमोस को दिया गया जो प्रारम्भिक न्याय का था, यद्यपि इसका अन्त आशा के शब्दों से हुआ। आमोस ने चितौनी दी कि यहोवा परमेश्वर जो समस्त संसार का प्रभु है वह एक योद्धा के रूप में देशों का न्याय करने को आयेगा। जिसने उसके अधिकार के विरुद्ध किया है। विशेष रूप से इस्राएल को परमेश्वर की वाचा को तोड़ने के विरूद्ध दण्डित करेगा। आमोस ने यारोबाम के आधीन उत्तरी गोत्रों को जो सम्पन्न और भौतिकता में थे उन्हें एकदम न्याय से बचाने के लिये पश्चाताप करने को लाने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में पुस्तक ये परमेश्वर की बुराई के प्रति घृणा को प्रगट करती है क्योंकि उसकी पवित्रता और उसके न्याय को इस्राएल के पाप के विरूद्ध, बिना सजा दिये नहीं जाने देगा – यह पुस्तक दिखाती है।

फिर भी, देश जो नष्ट किये जायेंगे – परमेश्वर इस्राएल, एक छोटे पश्चातापी झुण्ड को बचाये रखेगा (अक्सर ये बचाये हुए कहलाते हैं)। एक दिन से झुण्ड अपनी वाचा की आशीषों में और राजनैतिक बढ़ोतरी में पुनः स्थापित किया जायेगा और उस समय परमेश्वर सब देशों को अपनी ओर खींचेगा।

विशेष लोग : आमोस, उज्जियाह, यहूदा का राजा, यारोबाम, इस्राएल का राजा।

मसीह जो आमोस में देखा गया : आमोस मसीह को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वही दाऊद की गद्दी को पुनः निर्माण करेगा (9:11) और वह जो अपने लोगों को पुनः स्थापित करेगा (9:11–15)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय : लेखक और विषय (1:1–2)**
2. **आमोस के आठ न्याय (1:3–2:16)**
   - क. दमिश्क के सम्बन्ध में (1:3–5)
   - ख. पिलिश्तियों के सम्बन्ध में (1:6–8)
   - ग. सोर के सम्बन्ध में (1:9–10)
   - घ. ऐदोम के सम्बन्ध में (1:11–12)
   - ङ. अम्मोन के सम्बन्ध में (1:13–15)
   - च. मोआब के सम्बन्ध में (2:1–3)
   - छ. यहूदा के सम्बन्ध में (2:4–5)
   - ज. इस्राएल के सम्बन्ध में (2:6–16)
3. **आमोस के उपदेश (3:1–6:14)**
   - क. इस्राएल का पतन (3:1–15)
     - 3:1–8 | 3:9–10 | 3:11–15
   - ख. इस्राएल की भ्रष्टता (4:1–13)
     - 4:1–3 | 4:4–5 | 4:6–13

ग. इस्राएल के मृत्यु समय का गीत (5:1–6:14)

1) आने वाले न्याय में इस्राएल का विनाश (5:1–17)

5:1–3	5:8–9	5:14–15
5:4–7	5:10–13	5:16–17

2) धार्मिक लोगों को दपटना (5:18–27)

5:18–20	5:21–24	5:25–27

3) पूरे देश की फटकार (6:1–14)

6:1–3	6:8–11
6:4–7	6:12–14

4. आमोस के पांच दर्शन (7:1–9:10)

क. टिड्डियों के विनाश का दर्शन (7:1–9:3)
ख. आग का दर्शन (7:4–6)
ग. नापने की रेखा का दर्शन (7:7–9)
घ. ऐतिहासिक विराम : बेतेल के याजक का विरोध (7:10–17)
ङ. ग्रीष्म काल के फलों की टोकरी का दर्शन (8:1–14)
च. परमेश्वर के न्याय करने का दर्शन (9:1–10)

5. इस्राएल के पुनः स्थापना के पांच वायदे (9:11–15)

ओबद्याह

(कवितामय न्याय)

लेखक और पुस्तक का नाम : लेखक यहूदा का अनजान भविष्यद्वक्ता है जिसका नाम ओबद्याह है (1:1)। उसके नाम का अर्थ है "सेवक या यहोवा की अराधना करने वाला"।

पुराने नियम के बहुत से पुरुषों के नाम ओबद्याह थे। जिसमें दाऊद की सेना का एक अफसर था (1 इतिहास 12:9), आहाब का सेवक जिसने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं का छिपाया (1 राजा 18:3), योशिय्याह के दिनों में एक लेवी (2 इतिहास 34:12)। एक अगुवा जो बंधुवाई से एज्रा के साथ वापस आया (एज्रा 8:9) ओबद्याह के नगर के बारे में कोई जानकारी नहीं है या परिवार के बारे में और तथ्य ये है कि उसके पिता का नाम नहीं सुझाया गया कि वो राजकीय या याजक वंश के बाहर नहीं था।

लेखन तिथि : 840 ई.पूर्व। बाइबल की सबसे छोटी पुस्तक जिसमें केवल 21 पद हैं। छोटे भविष्यद्वक्ताओं में तारीख तय करने में बहुत कठिनाई है। हम ओबद्याह की तारीख लगभग ई.पू. 840 देते हैं। ऐदोम के विरूद्ध भविष्यवाणी जो फिलिस्तीन और अरब के द्वारा जो लगता है जो यहोराम के राज्य के बीच 848–841 ई.पू. को हुई (2 इतिहास 21:16–17)।

विषय और अभिप्राय : ओबद्याह का विषय सत्य को दुहराना कि नाश होने से पहले घमण्ड होता है। ओबद्याह ये घोषणा करता है कि ऐदोम का न्याय किया गया है उसके घमण्ड के कारण उस बुराई के प्रति जो यरूशलेम में हुई उस पर आनन्द कर रहा था।

विशेष लोग : ओबद्याह

मसीह जैसे ओबद्याह में देखा गया : ओबद्याह में मसीह एक राष्ट्र के न्यायी के रूप में देखा गया (15–16), इस्राएल के उद्धारकर्ता के रूप में (17–20), राज्य के स्वामी के रूप में (21)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. ऐदोम के न्याय की भविष्यवाणियां (1:1–9)

क. न्याय का होना निश्चित है (1:1–4)
ख. न्याय का पूरा होना (1:5–9)

2. ऐदोम पर न्याय का आधार (1:10–14)

क. भाई चारे के प्रेम की अनुपस्थिति (1:10)
ख. अहंकार के लिये (1:11–12)
ग. आक्रमणशील/लड़ाका (1:13–14)

3. **न्याय का समय (1:15)**
4. **न्याय का परिणाम (1:16–18)**
5. **इस्राएल का छुटकारा (1:19–21)**

योना

(परमेश्वर की इच्छा से भागना)

लेखक और पुस्तक का नाम : इस पुस्तक का लेखक अमितै का पुत्र योना है जो इस्राएल के उत्तरी राज्य के गलील में भविष्यद्वक्ता है। यह पुस्तक के द्वारा साबित है (1:1), पुस्तक का ऐतिहासिक चरित्र जो वास्तविक व्यक्ति और स्थान का नाम लेता है और दूसरे स्रोतों से (2 राजा 14:25), जिसमें नये नियम की यीशु की गवाही शामिल है (मत्ती 12:40)। उसके नाम का अर्थ "कबूतर" है।

लेखन तिथि : 793–753 ई.पूर्व। 2 राजा 14:27 में योना इस्राएल के राजा यरोबाम द्वितीय के राज्य से जुड़ा हुआ है (793–753 ई.पू) योना ने ऐलीशा के बाद और आमोस और होशे के पहले सेवकाई की।

विषय और अभिप्राय : योना प्रगट करता है कि विभिन्न जातियों के प्रति बिना प्रेम का रवैया हमें परमेश्वर की इच्छा पर चलने में रूकावट पैदा कर सकती है और कि इब्रानियों का परमेश्वर (1) पूरे संसार के लिये चिन्तित हैं क्योंकि उद्धार सभी को प्रस्तुत किया गया है वे सब जो पश्चाताप करते और उसकी ओर मुड़ते हैं और (2) वह पूरी सृष्टि और मानव मामलों पर प्रभुता करता है।

विशेष लोग : योना

योना में मसीह देखा गया : योना के द्वारा – मसीह का पुनः जी उठना प्रगट करता है (मत्ती 12:40), देश के लिये भविष्यद्वक्ता होकर (यद्यपि वह योना की तरह विरूद्ध नहीं था) और देशों के उद्धारकर्ता के रूप में। योना के जीवन में मसीह एक उद्धारकर्ता और प्रभु की नाईं देखा गया है (2:9)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **योना का भागना (1:1–17)**
   - क. उसके यात्रा का कारण (1:1–2)
   - ख. उसकी यात्रा का रास्ता (1:3)
   - ग. उसकी यात्रा का परिणाम (1:4–17)
2. **योना का प्रार्थना करना (2:1–10)**
   - क. उसकी प्रार्थना की विशेषता (2:1–9)
   - ख. उसकी प्रार्थना का उत्तर (2:10)
3. **योना का प्रचार करना (3:1–10)**
   - क. परमेश्वर की प्रचार करने की आज्ञा (3:1–3)
   - ख. योना के प्रचार की विषय सूचि (3:4)
   - ग. योना के प्रचार का नतीजा (3:5–10)
4. **योना की सीख (4:1–11)**
   - क. योना की परमेश्वर से शिकायत (4:1–3)
   - ख. योना के लिये परमेश्वर का पाठ्यक्रम (4:4–11)।

मीका

(कौन परमेश्वर की तरह है?)

लेखक और पुस्तक का नाम : पुस्तक अपना नाम लेखक से लेती है, भविष्यद्वक्ता मीका। इस पुस्तक के लेखक के विषय बहुत कम जाना गया है यिर्मयाह 26:18 से और पुस्तक से जाना जा सकता है। मीका नाम मीकायाह का छोटा रूप है जिसका अर्थ है "कौन परमेश्वर की तरह है"? मीका इस सत्य को 7:18 में बताता है जब उसने कहा, ***"तेरी तरह परमेश्वर कौन है?"*** यिर्मयाह के दिनों में प्राचीनों ने मीका का संदर्भ दिया मीका 3:12 – यिर्मयाह के सन्देश के न्याय के विषय जो देश के प्रति है उसके बचाव में बोलता है (यिर्मयाह 26:18)।

मीका मोरशेत से था (मीका 1:1, 1:14)। यहूदिया का एक नगर जो यरूशलेम के दक्षिण–पश्चिम में 25 मील पिलिस्तीन के बाद शहर के नज़दीक है। मोरशेत यहूदा के उपजाऊ पहाड़ पर बसा हुआ है जो लाकीश के पास है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र है।

लेखन तिथि : 700 ई.पूर्व। मीका हमें 1 पद में बताता है कि उसने योथाम के समय में और (750–732 ई.पू.), आहाज (736–716 ई.पू.), हिज्जकियाह (716–687 ई.पू.) मीका प्रारम्भिक रूप से यहूदा से बोलता है पर जब वह इस्राएल के उत्तरी राज्य से भी बोलता और सामरिया के पतन की भविष्यवाणी करता है (1:6)। उसकी सेवकाई का अच्छा भाग ई.पू. 722 की अश्शूर की बंधुवाई के पहले हुआ शायद लगभग 700 ई.पू. में।

विषय और अभिप्राय : मीका ने दिखाया कि कैसे लोग परमेश्वर की वाचा की शर्तों को जिसे उसने इस्राएलियों को दीं उन्हें पालन करने में वे असफल रहे थे। जिसके पालन करने में आशीषें थीं (व्यवस्थाविवरण 28:1–14)। आज्ञा उल्लंघन में श्राप और फिर प्रतिज्ञा किये गये देश से निकाल दिये जाते (व्यवस्था–विवरण 28:15–68) इस प्रक्रिया में मीका ने यहूदा के अन्याय को उजागर किया और यहोवा की धार्मिकता और न्याय की घोषणा की ये दिखाते हुए कि वह उन्हें अनुशासित करने में धर्मी था। वह इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध शोषण न्यायियों के घूस के पाप और भविष्यद्वक्ता और याजकों और व्यभिचार, धोखा देना, घमण्ड और दंगे फसाद के पापों को प्रगट करता है। यह सही है कि ये देश पर अनुशासन परमेश्वर के प्रेम को उनके लिये प्रगट करता है और वह उनको पुनः स्थापन करेगा।

मीका के तीनों संदेशों में न्याय का विषय मुख्य है, पर उसने पुनः स्थापना के सत्य को बताया। उससे आगे मीका ने अपने हर एक सन्देश में बचे हुओं के सिद्धान्त का संदर्भ दिया (मीका 2:12, 4:7, 5:7–8, 7:18)। उसने घोषणा की कि भविष्य में यहोवा इस्राएल के लोगों की पुनः स्थापना मसीह के आगमन पर संसार के उच्च स्थान पर करेगा।

मीका का समाप्ति का भाग एक न्याय के कमरे का दृश्य वर्णन करता है। परमेश्वर का उसके लोगों के विरुद्ध वाद–विवाद है और वह पहाड़ों और पहाड़ियों के साथ बुलाता है, न्यायिक जूरी बनाये जब वह अपना मुकद्दमा उनके सामने रखता है। लोगों ने हृदय छूने वाली आराधना को खाली रीति रिवाज़ों में बदल दिया है, ये सोचकर कि परमेश्वर इन सबकी मांग करता है। उन्होंने परमेश्वर के न्याय के स्तर को अपने प्रतिदिन के कार्यों में छोड़ दिया है कि अपनी झूठी परम्पराओं को कर सकें। ये पहचानने में असफल रहे हैं कि प्रभु मनुष्यों से क्या चाहता है। उसमें केवल एक ही निर्णय हो सकता हैः जिसे "दोषी" ठहरना चाहिये"।

पुस्तक आशा के इस नोट के साथ बन्द होती है। वही परेश्वर जो न्याय करता है, दया भी फैलाने में प्रसन्न होता है। ***"तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को क्षमा कर और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दें? वह अपने क्रोध को सदा बनाये नहीं रहता, क्योंकि वह करूणा से प्रीति रखता है"*** (7:18)। ***"परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा, मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा"*** (7:7)।

विशेष लोग : मीका, योथाम, आहाज, हिज्जकियाह

मीका में मसीह देखा गया : मीका मसीह को याकूब के परमेश्वर की तरह प्रस्तुत करता है (4:2) देशों का न्यायी (4:3) और शासक जो बैतलेहेम के शहर में पैदा होगा (5:2; मत्ती 2:1–6)। याजकों और पंडितों ने मीका 5:2 का संदर्भ दिया हेरोदेस के प्रश्न के उत्तर में जो उसने मसीह के जन्म स्थान के बारे में पूछा।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय (1:1)**
2. **प्रथम संदेश : यहूदा और सामरिया के प्रति न्याय (1:1–2:13)**
   - क. आने वाले न्याय की भविष्यवाणी (1:2–7)
   - ख. लोगों के ऊपर विलाप (1:8–16)
     - 1) मीका का विलाप (1:8–9)
     - 2) मीका का दूसरों को विलाप करने की बुलाहट (1:10–16)
   - ग. यहूदा के पाप (2:1–11)
     - 1) लोगों के पाप (2:1–5)
     - 2) झूठे भविष्यद्वक्ताओं के पाप (2:6–11)
   - घ. भविष्य में पुनः इक्ट्ठा होने के विषय बताना (2:12–13)
3. **दूसरा संदेश : दुर्भाग्य के बाद छुटकारा (3:1–5:15)**
   - क. देश के अगुवों पर न्याय (3:1–12)
     - 1) शासकों पर न्याय (3:1–4)

2) झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर न्याय (3:5–8)
3) सभी रहने वाले अगुवों पर न्याय (3:9–12)

ख. देश के लिये राज्य की आशीषें (4:1–5:15)
1) राज्य की विशेषताएं (4:1–8)
2) राज्य के पहले की घटनाएं (4:9–5:1)
3) राज्य के शासक (5:2–15)

4. तीसरा संदेश : पाप के लिये दण्ड और आशीषों की प्रतिज्ञाएं (6:1–7:20)

क. प्रभु के द्वारा दोषारोपण (6:1–5)
ख. देश के लिये मीका का उत्तर (6:6–8)
ग. पाप के कारण प्रभु का न्याय (6:9–16)
1) पाप (6:9–12)
2) सजा (6:13–16)

ङ. मीका का प्रभु से विनती करना (7:1–20)
1) देश के पाप के लिये मीका का दुःख (7:1–6)
2) मीका का प्रभु पर भरोसा (7:7–13)
3) मीका की प्रार्थना कि प्रभु फिर से अपनी भेड़ों की चरवाही करेगा (7:14)
4) परमेश्वर के वायदों को, उसके लोगों को आश्चर्यजनक चीज़ें दिखायें (7:15–17)

च. मीका की पुष्टि कि परमेश्वर अद्भुत है (7:18–20)।

नहूम

(नीनवे का दुर्भाग्य)

लेखक और पुस्तक का नाम : दूसरे की अपेक्षा जो नहूम 1:1 में हमें बताता है कि ये पुस्तक नहूम का दर्शन है और ये नीनवे के विषय एक लेख है, हम इस भविष्यद्वक्ता के बारे में कुछ नहीं जानते। नहूम का मतलब "तसल्ली है" पर उसका सन्देश दुष्ट अश्शूरियों के लिये तसल्ली का नहीं। जिन्होंने नीनवे पर कब्जा कर लिया था। फिर भी ये यहूदा को तसल्ली देगा। 1:15 के दृष्टिकोण से वह यहूदा का भविष्यद्वक्ता था यद्यपि एलकोश का सही स्थान पता नहीं बहुत से शोधकर्ता विश्वास करते हैं कि ये शहर दक्षिण यहूदा में बसा हुआ है।

सभी छोटे भविष्यद्वक्ताओं की तरह पुस्तक अपना नाम भविष्यद्वक्ता के नाम में जिसने भविष्यवाणी में कहीं लेती है।

लेखन तिथि : 663–612 ई.पूर्व। नहूम थेबीस के पतन के विषय बोलता है (जो मिस्र में स्थापित है) जैसा पहले ही गुजर चुका है 3:8–10 में थेबीस का पतन 663 ई.पू. में हुआ। पूरे तीनों अध्यायों में नहूम नीनवे के पतन की भविष्यवाणी करता है और ये ई. पू. 612 में हुआ। नहूम ने ये लेख शायद इस समय के अन्त में दिया क्योंकि वह नीनवे के पतन की हाल ही में करता है (2:1–3:14,19)। ये उसकी सेवकाई को योशिय्याह के राज्य के मध्य में रखता है और सपन्याह और यिर्मयाह का सहयोगी बताता है।

विषय और अभिप्राय : नहूम का विषय नीनवे का पतन है जो परमेश्वर का दुष्ट अश्शूरियों के विरूद्ध जो नीनवे के हैं, बदला है। योना जो देखना चाहता था, खास तौर से परमेश्वर का अश्शूरियों के प्रति न्याय, ये नहूम के द्वारा भविष्यवाणी लगभग 150 साल पहले किया गया था।

नीनवे के लोगों की चर्चा – योना के प्रचार के उत्तर में थोड़े ही समय तक रह सका क्योंकि शीघ्र ही वे निर्दयी बन गये, वे अपने पूर्व के दुष्ट मार्ग पर लौट गये। अश्शूर के सारगों II ने सामरिया को नष्ट कर दिया और इस्राएल के उत्तरी राज्य को ले लिया और बंधुवाई में ले लिया, और ई.पू. 722 में दस गोत्रों को तितर बितर कर दिया। बाद में अश्शूर के सेन्हरीब ने लगभग 701 ई. पू. में हिज्जकियाह के राज्य के दौरान यरूशलेम को कब्जे में ले लिया था। उसकी सामर्थ और शोहरत जो भी हो, नीनवे का न्याय पवित्र परमेश्वर ने किया जो नहूम भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुआ। अश्शूरियों की क्रूरता, सामर्थ और गर्व परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा समाप्त हो जायेगी। यद्यपि पुस्तक अश्शूर के पतन और न्याय पर ध्यान केन्द्रित करता है। ये यहूदा को तसल्ली लाने के लिये लिखी गई है।

विशेष लोग : नहूम

नहूम में मसीह को देखा गया : जबकि नहूम में कोई भी सीधी भविष्यवाणी मसीह के विषय नहीं दी गई है। सभी भविष्यवाणियों की आत्मा के आधार को बनाये रखते हुए, मसीह को जलन रखने वाला परमेश्वर और उसकी विपरीत परिस्थितियों में बदला लेने वाले की तस्वीर में रखा गया है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय (1:1)**
2. **भविष्यवाणी और नीनवे पर परमेश्वर के न्याय की पुष्टि (1:2–15)**
   - क. नीनवे के विरुद्ध परमेश्वर का पवित्र कोप (1:2–8)
   - ख. परमेश्वर (यहोवा) के विरूद्ध नीनवे की चाल का अन्त (1:9–11)
   - ग. नीनवे के न्याय के कारण यहूदा की यातना/पीड़ा का अन्त हो जायेगा (1:12–15)
3. **नीनवे पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन (2:1–13)**
   - क. आक्रमण का वर्णन (2:1–6)
   - ख. हार की घोषणा (2:7–13)
4. **नीनवे पर परमेश्वर के न्याय का कारण (3:1–19)**
   - क. उसकी हिंसा, धोखा और जो शर्म का कारण बनी (3:1–7)
   - ख. उसका थेबीस (गैर अम्मोनी) के साथ व्यवहार उनकी हार का कारण बना (3:8–11)
   - ग. उसका बचाव करना व्यर्थ हुआ (3:12–19)।

हबक्कूक

(उलझन का समाधान)

लेखक और पुस्तक का नाम : 1:1 और 3:1 के अनुसार इसका लेखक हबक्कूक है। वह स्पष्टता से अपने आपको भविष्यद्वक्ता की पहचान कराता है और तथ्य ये है कि उसकी प्रार्थना और स्तुति प्रशंसा इन शब्दों से समापन करती है, ***"मेरे तार वाले बाजों के संगीत मंडली के लिये निर्देशक"।*** ये सुझाव देते हैं कि उसकी पृष्ठभूमि एक याजक की थी।

इस पुस्तक का नाम इसके लेखक हबक्कूक के नाम पर है, ये नाम इब्रानी के एक शब्द से आता जिसका अर्थ "आलिंगन करना" है। भविष्यद्वक्ता यहोवा से अपने उद्धार और सामर्थ के रूप में लिपट रहता है।

लेखन तिथि : 600 ई.पूर्व। इसलिये कि पुस्तक बाबुल के आक्रमण के आने की आशा करती और बाबुल की प्रतिष्ठा को दिखाती है। हबक्कूक ने शायद यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के दौरान सेवा की, ऐसा प्रतीत होता है कि बाबुल ने यहूदा पर आक्रमण नहीं किया था। यद्यपि ये संकट का समय था (1:6,2:1)। जो ये बताता है कि हबक्कूक ने 605 ई.पू. में बाबुल के आक्रमण के पहले भविष्यवाणी की।

विषय और अभिप्राय : इस भविष्यवाणी का विषय हबक्कूक के उलझन में जो दुष्ट बाबुलवासियों के आक्रमण के विषय था उसी में से बहता है। ये उसके विश्वास से सम्बन्ध रखता है जिसमें वह दो परेशानियों का सामना कर रहा है : (1) परमेश्वर ने क्यों यहूदा में बुराई को बिना सजा दिये बढ़ने दिया (1:2–4)? और कैसे एक पवित्र परमेश्वर (1:13) बाबुल जैसे पापमय देश को अपने न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल कर सकता है (1:12–2:1)? हबक्कूक को इन परेशानियों को समझने में दिक्कत है जो परमेश्वर के प्रकाश के प्रगटीकरण में समाधान हो गया है और भविष्यद्वक्ता आनन्द के विश्वास के भजन के साथ समाप्त करता है। ये पुस्तक बुराई की समस्याओं के दृष्टिकोण में परमेश्वर की भलाई और सामर्थ का बचाव है।

विशेष लोग : हबक्कूक

हबक्कूक में मसीह को देखा गया : फिर भविष्यवाणी के स्वाभाव के प्रकाश में, मसीह की तस्वीर एक उद्धारकर्ता की बताई गई है। शब्द "उद्धार" जो तीन बार आता है 3:13 और 18 में, मुख्य शब्द की जड़ है जिससे नाम "यीशु" निकल कर आया है (मत्ती 1:21)। वह एक पवित्रजन की नाईं भी देखा गया है (1:12, 1 यूहन्ना 1:9)। एक जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है (2:4)। एक जो एक दिन पृथ्वी को भर देगा, ***"क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जायेगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है"*** (2:14)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **हबक्कूक की उलझन : विश्वास सिखाया गया और परखा गया (1:1–2:20)**
   - क. पहली समस्या : परमेश्वर ने क्यों यहूदा में दुष्टता होने दिया? (1:2–4)
   - ख. परमेश्वर का पहला उत्तर (1:5–11)
   - ग. दूसरी समस्या : क्यों परमेश्वर यहूदा को सजा देने के लिये दुष्ट लोगों को इस्तेमाल करेगा? (1:12–2:1)
   - घ. परमेश्वर का दूसरा उत्तर (2:2–20)

2. **हबक्कूक की स्तुति प्रशंसा : विश्वास विजयी है (3:1–19)**
   क. परमेश्वर के व्यक्ति के लिये स्तुति प्रशंसा (3:1–3)
   ख. परमेश्वर की सामर्थ के लिये स्तुति प्रशंसा (3:4–7)
   ग. परमेश्वर के अभिप्राय के लिये स्तुति प्रशंसा (3:8–16)
   घ. परमेश्वर में विश्वास के लिये स्तुति प्रशंसा (3:17–19)

सपन्याह

(न्याय के द्वारा आशीष)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा 1:1 में देखा गया है, पुस्तक सपन्याह के द्वारा लिखी गई, जो कूशी का पुत्र, गदल्याह का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, हिजकियाह का पुत्र/भविष्यद्वक्ता के प्राचीनों का पता लगाने में चार पीढ़ियों द्वारा, ये शीर्षक अद्भुत है। साधारणतः भविष्यद्वक्ता के पिता की पहचान की जाती है (यशायाह 1:1; यिर्मयाह 1:1; यहेजकेल 1:3; होशे 1:1; योएल 1:1)। जब लेखक वंशावली की जानकारी देता है, ऐसी लम्बी वंशावली – भविष्यद्वक्ता के महान उत्तम जन्म के विषय बताते हैं, उसके दादा–परदादा अच्छा राजा हिजकियाह हुआ था।

पुस्तक का नाम उसके लेखक सपन्याह के नाम पर है – जिसका अर्थ "यहोवा का छिपाया हुआ" (2:3)।

लेखन तिथि : 630–625 ई.पूर्व। परिचय के अनुसार (1:10) सपन्याह ने योशिय्याह के राज्य में भविष्यवाणी की (640–609 ई. पूर्व) में जो हुए। ये सबूत है जब सपन्याह की पुस्तक लिखी गई वह यहूदा के मूर्तिपूजा को नोट करती है (1:4–6) जिसे लगभग योशिय्याह के सुधार ने समाप्त कर दिया। ये सब 630–625 ई.पू. की तारीख का सुझाव देते हैं।

विषय और अभिप्राय : भविष्यद्वक्ता यहूदा के लोगों से बातें करता है – जिनका नैतिक और आत्मिक जीवन का स्तर गिर गया ये सब मनश्शै और आमोन के राज्य के बुरे प्रभाव के कारण हुआ (3:1–7)। व्यवस्थाविवरण 28 की अनाज्ञाकारिता पर की चेतावनी और श्राप को ध्यान में रखते हुए – केन्द्रिय विषय है कि न्याय या पुत्र के आने वाले दिन का है। यहोवा की पवित्रता की दृष्टि में उसे पाप के विरूद्ध अपनी पवित्रता को प्रगट करना है – पृथ्वी के समस्त देशों को उनका हिसाब देने के लिये बुलाने के द्वारा। पर परमेश्वर देश और आशीष का भी परमेश्वर है इसलिये एक मज़बूत जोर दिया जाता है और पश्चाताप के लिये बुलाहट इस वायदे के साथ दी जाती है कि आशीष पायेंगे। इस प्रकार सपन्याह स्पष्ट रूप से तीन हिस्सों में विभाजित करता है : पाप के लिये न्याय, पश्चाताप की बुलाहट और भविष्य के छुटकारे या आशीषें।

विशेष लोग : सपन्याह, योशिय्याह

सपन्याह में जैसे मसीह देखा गया : यद्यपि इस पुस्तक में विशेष रूप से वर्णन नहीं किया गया है, मसीह को इस्राएल के देश में एक धार्मिक/धर्मी के रूप में प्रस्तुत किया गया है (3:5) जो उनका राजा भी है (3:15)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय (1:1)**
2. **यहोवा के दिन का न्याय (1:2–3:8)**
   क. समस्त पृथ्वी पर न्याय (1:2–3)
   ख. यहूदा पर न्याय (1:4–2:3)
      1) न्याय के कारण (1:4–13)
      2) न्याय का वर्णन (1:14–18)
      3) देश को तलबनामा (बुलावा) : पश्चाताप और परमेश्वर को खोजो (2:1–3)
   ग. आस पास के देशों पर न्याय (2:4–15)
      1) पिलिश्तीन पर (2:4–7)
      2) मोआब और अम्मोन पर (2:8–11)
      3) कूश पर (2:12)
      4) अश्शूर पर (2:13–15)
   घ. यरूशलेम पर न्याय (3:1–7)
      1) भविष्यद्वक्ता का अभियोग पत्र (3:1–5)
      2) प्रभु का न्याय (3:6–7)
   ङ. सम्पूर्ण पृथ्वी पर न्याय (3:8)

3. **यहोवा के दिन का पुनः स्थापन (3:9–10)**
   क. देशों का पुनः स्थापन (3:9–10)
   ख. इस्राएल का पुनः स्थापन (3:11–20)

हाग्गै

(प्रोत्साहन)

परिचय : हाग्गै के साथ, हम तीन में से एक भविष्यद्वक्ता के पास आते हैं जिसने बाबुल की बंधुवाई के बाद लिखा। हाग्गै, जकर्याह और मलाकी, सभी ने यहूदियों से बोला जो इस्राएल वापस आ गये। उनका उद्देश्य उन बचे हुए छोटे झुण्ड के लोगों के आत्मिक और नैतिक जीवनों को प्रोत्साहित करना था। अब वे अपनी भूमि पर वापस जैसे उन्होंने देश और मन्दिर का पुनः निर्माण किया।

हाग्गै और जकर्याह ने अधिकतर आत्मिक आवश्यकताओं को देखा जो उन्होंने मन्दिर के पुनः निर्माण के सम्बन्ध में देखा। मलाकी ने उनके नैतिक और सामाजिक आवश्यकताओं को देश के पुनः निर्माण में देखा।

लेखक और पुस्तक का नाम : हाग्गै के नाम का अर्थ "आनन्दमय" या "आमोद–प्रमोद", ये कुछ को सुझाव देते हैं कि वह बड़े भोज के दिनों में पैदा हुआ – इसके सहारे में ऐसा कुछ नहीं मिलता। हाग्गै केवल इस पुस्तक के द्वारा जाना जाता है (9 बार वर्णन आया) और उसका वर्णन एज्रा 5:1–2 और 6:14 में है। उसके विषय बहुत थोड़ी जानकारी है। वह अपना स्वयं का संदर्भ एक भविष्यद्वक्ता के रूप में देता है (1:1) पर उसके माता–पिता और वंशावली के बारे में जानकारी नहीं है। वह जकर्याह भविष्यद्वक्ता और राज्यपाल जरूब्बाबेल का सहयोगी था।

जैसा भविष्यद्वक्ताओं के लिखने में आम बात है, कि पुस्तक का नाम उसके लेखक के नाम पर है।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 520। फारस के महान राजा क्षयर्ष की नीतियों के आधीन लगभग 50,000 यहूदियों को यरूशलेम वापस लौटने की अनुमति मिली। इनके मध्य जरूब्बाबेल (एज्रा 1:2–4; यशायाह 44:28); यहोशू महायाजक और हाग्गै और जकर्याह भविष्यद्वक्ता थे। इस अधिकृत आज्ञा ने उनकी धरती पर वापस जाने और मन्दिर के पुनः निर्माण की अनुमति ई.पू. 538 में दी।

लैव्यव्यवस्था के बलिदान फिर से दुबारा बनाई गई वेदियों पर चढ़ाये जाने लगे – होमबलि (एज्रा 3:1–6) और लौटने के दूसरे वर्ष में मन्दिर की नींव डाली गई (एज्रा 3:8–13; 5:16) फिर भी सामरिया का सताव और फारस के दबाव के कारण मन्दिर के निर्माण कार्य को रोक देना पड़ा। तब आत्मिक उदासीनता बढ़ गई और लगभग 16 वर्षों तक और फारस में दारा राजा का राज्य (521–486 ई.पू.) परमेश्वर ने हाग्गै भविष्यद्वक्ता को उठाया कि वह यहूदियों को मन्दिर के पुनः निर्माण के लिये प्रोत्साहित करें (एज्रा 5:1–2; हाग्गै 1:1)।

जैसा हाग्गै 1:1 में वर्णन किया गया है उसका पहला उपदेश ईलुल (अगस्त–सितम्बर) के पहले दिन – राजा दारा के दूसरे वर्ष में दिया गया। यह ई.पू. 520 में था।

विषय और अभिप्राय : हाग्गै की पुस्तक पुराने नियम की दूसरी सबसे छोटी पुस्तक है केवल ओबद्याह ही सबसे छोटी है। हाग्गै की वास्तविक शैली साधारण और सीधी है। पुस्तक का विषय–चार सन्देशों की रिपोर्ट है और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई भी सीमित थी।

यद्यपि हाग्गै पुराने नियम की दूसरी सबसे छोटी पुस्तक है; हमें हाग्गै के चार उपदेशों की सामर्थ को लोगों को मन्दिर के पुनः निर्माण के लिये प्रोत्साहन करने के लिये कम नहीं आंकना चाहिये। थोड़े से भविष्यद्वक्ताओं ने थोड़ी सी लेखनी द्वारा बहुत सा आत्मिक ज्ञान देकर सफल हुए है। हाग्गै के संदेशों की एक बड़ी विशेषता ये है कि उसकी मजबूत जानकारी कि उसके संदेशों का उद्‌गम परमेश्वर से है। उसने करीब 25 बार ये पुष्टि की कि उसके संदेशों में दैविय अधिकार है। उसने लगातार अपने संदेशों को इसके साथ परिचय कराया ***"यही सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है"*** और इसी के द्वारा समाप्त करता है ("सर्वशक्तिमान परमेश्वर घोषणा करता है")।

हाग्गै ने प्रोत्साहन करने के लिये लिखा और बचे हुए यहूदियों को यरूशलेम में मन्दिर के पुनः निर्माण के लिये बढ़ावा दिया। इस प्रक्रिया में उसने सिखाया (1) परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देता है यदि वे उसे पहला स्थान दें; (2) हमें परमेश्वर की सेवा में ढीले नहीं होना चाहिये; (3) परमेश्वर की कल के लिये प्रतिज्ञा हमारी आज के लिये नींव बन जाती है।

विशेष लोग : हाग्गै, दारा, जरूब्बाबेल, महायाजक यहोशू

मसीह हाग्गै में देखा गया : यहां मसीह मन्दिर की महिमा के बनाने वाले के रूप में दिखाई देता है (2:7–9), एक जो संसार के राज्यों को समाप्त कर देता है (2:22)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पहला सन्देश : मन्दिर के पुनः निर्माण की बुलाहट (1:1–15)**
   - क. परिचय (1:1)
   - ख. प्रथम डांट (1:2–6)
   - ग. समाधान (1:7–8)
   - घ. दूसरी डांट (1:9–11)
   - ङ. भविष्यद्वक्ता के सन्देश का प्रतिउत्तर (1:12–15)
2. **दूसरा सन्देश : परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में साहस पाने की बुलाहट (2:1–9)**
   - क. परिचय (2:1–2)
   - ख. भविष्य की महिमा और पूर्ण करने के वायदे (2:3–9)
3. **तीसरा सन्देश : जीवन की शुद्धता की बुलाहट (2:10–19)**
   - क. परिचय (2:10)
   - ख. समस्या : बचे हुए लोगों की आनाज्ञाकारिता (2:11–14)
   - ग. समाधान : बचे हुए लोगों की आज्ञाकारिता (2:15–19)
4. **चौथा सन्देश : भविष्य पर भरोसा रखने की बुलाहट (2:20–23)**
   - क. परिचय (2:20–21क)
   - ख. अन्यजाति राज्यों के भविष्य की पराजय के वायदे (2:21ख–22)
   - ग. दाऊद के राज्य की पुनः स्थापना की प्रतिज्ञा (2:23)

जकर्याह

(यहोवा की जलन)

लेखक और पुस्तक का नाम : जकर्याह, एक भविष्यद्वक्ता, बेरिक्याह का पुत्र था जो इद्दो का पोता था (जकर्याह 1:1)। वह हाग्गै का सहयोगी था (एज्रा 6:14)।

जकर्याह नाम का अर्थ "यहोवा स्मरण करता है" या "यहोवा ने स्मरण किया है" ये वो विषय है जो पूरी पुस्तक में चलता है।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 520–518। पहला पद जकर्याह को बेरिक्याह का पुत्र बताता है और इद्दो का पोता, जो वही याजक था जिसका वर्णन नहेम्याह 12:4 में किया गया है जो जरूब्बाबेल का सहयोगी है। जकर्याह 2:4 में भविष्यद्वक्ता को एक जवान की तरह बताया गया है। हो सकता है ई.पू. 520 में वो हाग्गै के साथ मन्दिर के पुनः निर्माण में जवानी में रहा हो। उसकी अन्तिम भविष्यवाणी की तिथि (7:1–14) दो वर्षों के बाद 518 ई.पू. में दी गई। अध्याय 9–14 दिखाते हैं कि हर दशक को बनाते हुए प्रगट होते हैं – सम्भवतः 480 ई.पू. में यूनान के संदर्भ के दृष्टिकोण में (9:13)।

हमारे पास जकर्याह के विशेष व्यक्तिगत चरित्र के विषय में जानकारी नहीं हैं – केवल मत्ती 23:35 के अनुसार, जो ये संकेत देता है कि वह मन्दिर के झुण्ड के द्वारा मार डाले जाने पर शहीद हो गया था। भिन्न जकर्याह यहोयादा याजक का पुत्र भी उसी समय मार डाला गया था (2 इतिहास 24:20–21)।

विषय और अभिप्राय : जकर्याह बंधुवाई से बचे हुए लौटे यहूदियों को उनका मन्दिर के पुनः निर्माण कार्य को पूरा करने में प्रोत्साहित करने के लिये लिखी गई। भविष्यद्वक्ता ने भी दिखाया कि परमेश्वर संसार में कार्य कर रहा था कि इस्राएलियों की आत्मिक पुनः स्थापना करें जो आने वाले मसीह की तैयारी में है। धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार जकर्याह मन्दिर की विशेषता को दिखाता है – परमेश्वर के इस्राएल की आत्मिक पुनः स्थापना में, परमेश्वर की उपलब्धि दिखाता है अपने लोगों को उनकी भूमि पर वापस लाने में और मसीह में देश की आत्मिक पुनः स्थापना की उच्चता के प्रगटीकरण को दिखाता है।

विशेष लोग : जकर्याह, महायाजक यहोशू

जकर्याह में जैसे मसीह देखा गया : पुराने नियम की कोई और पुस्तक इतनी मसीही नहीं है जितना जकर्याह की पुस्तक। यह पुस्तक मसीह या मसीह को उसके दोनों आगमन और दोनों सेवक और राजा, मनुष्य और परमेश्वर प्रभु के दूत के रूप में (3:1) धार्मिक डाली (3:8) पत्थर – सात आंखों के साथ (3:9) क्रूसित उद्धारकर्ता या छेदा हुआ (12:10), नम्र राजा का आना (9:9–10), चरवाहा जिसे तिरस्कार किया गया (13:7) और आने वाला न्यायी और धार्मिक राजा (14) के रूप में प्रस्तुत करती है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पश्चाताप के लिये बुलाहट (1:1–6)**
2. **जकर्याह के 8 दर्शन (1:7–6:8)**
   - क. घोड़े और उनके सवार (1:7–17)
   - ख. चार सींग और चार कारीगर (1:18–21)
   - ग. सर्वेक्षण करने वाला (2:1–13)
   - घ. सुनहरे दीपकदान (4:1–14)
   - ङ. उड़ता हुआ पत्र (5:1–4)
   - च. ऐपा में स्त्री (5:5–11)
   - छ. चार रथ (6:1–8)
3. **यहोशू को मुकुट पहनाया जाना (6:9–15)**
4. **उपवास के प्रति प्रश्न (7:1–8:23)**

7:1–7	8:9–13	8:20–23
7:8–14	8:14–17	
8:1–8	8:18–19	

5. **भविष्य के प्रति लेख (9:1–14:21)**
   - क. मसीह का तिरस्कार (9:1–11:17)

9:1–10	10:1–12	
9:11–17	11:1–17	

   - ब. मसीह का राज्य (12:1–14:21)

12:1–5	13:1–6	14:1–8
12:6–14	13:7–9	14:9–21

मलाकी

(पश्चाताप करो और वापस आओ)

लेखक और पुस्तक का नाम : केवल मलाकी 1:1 में लेखक मलाकी का नाम इस भविष्यवाणी में दिया गया है। उसके नाम का अर्थ "मेरा संदेशवाहक" है। ये पुस्तक पर सही बैठता है क्योंकि पुस्तक आने वाले "वाचा के संदेश वाहक" की बाट जोहती है (3:1), यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की एक भविष्यवाणी (मत्ती 11:10)।

लेखन तिथि : ई.पूर्व 450–400। मलाकी की तिथि के सम्बन्ध में ग्लोसन आचर्र लिखते हैं:–

> आंतरिक सबूतों को जांच करते हुए, ये स्पष्ट जान पड़ता है कि उसकी भविष्यवाणियां पांचवी सदी के दूसरे भाग में दी गईं थी शायद लगभग ई.पू. 435 में। हम इस नतीजे पर नीचे दिये गये संकेतों द्वारा पहुंचते हैं (1) मन्दिर का पुनः निर्माण हो चुका था और मूसा के बलिदान दुबारा चालू कर दिये गये थे, (2) फारस का राज्यपाल उस समय अधिकार में था, इसलिये ये नहेम्याह के राज्यकाल में नहीं रहा होगा (445–433 ई.पू.), (3) पाप जिनका मलाकी ने तिरस्कार किया ठीक वैसे थे जो नहेम्याह ने सुधारे अपने दूसरे शासनकाल में – विशेषकर (क) याजकों की ढिलाई (1:6; नहेम्याह 13:4–9)। (ख) दशमांश की अनदेखी लेवियों की निर्बलता (3:7–12; नहेम्याह 13:10–13)। (ग) विदेशी स्त्रियों के साथ अंतर्जातीय विवाह (2:10–16; नहेम्याह 13:23–28)। ये सोचना सही है कि मलाकी ने पहले ही इसका विरोध किया – उन वर्षों में जब नहेम्याह की वापसी के कुछ पहल; तो सही अन्दाज़ 435 ई.पू. होगा।

विषय और अभिप्राय : नहेम्याह की अगुवाई में – आत्मिक जाग्रति का समय आया (नहेम्याह 10:28–39) पर याजक और लोग परमेश्वर के साथ चलने में बहुत ठन्डे हो चुके थे और व्यवस्था के पालन करने में बाहरी और मशीनी बन गये थे। यद्यपि वे पाप के दोषी थे जिन्हें मलाकी ने निन्दा या भर्तस्ना की (याजकों का आलसी होना, दशवांश की अनदेखी, और अर्न्तजातीय विवाह विदेशी स्त्रियों के साथ) लोगों के अन्दर ये उलझन थी कि क्यों परमेश्वर उनसे असन्तुष्ट है। मलाकी ने लोगों और याजकों के उत्तर देने में लिखा, उन्हें उनके पापों के लिये डांटा – डपटा, उनका वापस हो जाना और खराब व्यवहार प्रगट करने के लिये लिखा। उसने प्रोत्साहन के शब्दों के साथ अन्त किया, प्रभु के सन्देश वाहक के आने के विषय जो मसीह के मार्ग को साफ करेगा।

इस प्रकार मलाकी ने लोगों को उनकी प्रभु की सच्ची आराधना की अनदेखी की निन्दा की और उन्हें मन फिराव के लिये बुलाहट दी (1:6; 3:7)। ग्लेसन आचर्र विषय का सारांश इस प्रकार करते हैं :–

> मलाकी का विषय है – परमेश्वर के प्रति ईमानदारी/विश्वासयोग्यता और पवित्रता का जीवन परमेश्वर की दृष्टि में आवश्यक है। यदि उसके पक्ष को फसल पर और देश की आर्थिक कल्याण पर उंडेली जानी है, तो इस्राएल को अपनी उच्च बुलाहट में एक पवित्र देश की तरह जीना होगा और मसीह के आने की बाट जोहना होगा, जो चंगाई की सेवकाई के द्वारा और न्याय के द्वारा देश के सब चाहने वाली आशा के अहसास में अगुवाई करेगा।

विशेष लोग : मलाकी

मलाकी में जैसे मसीह देखा गया : मलाकी के मसीह पर ध्यान केन्द्रित करने सम्बन्ध में, विलकिन्सन और बोआ के पास अति उत्तम सारांश हैः–

> मलाकी की पुस्तक चार सौ वर्षों के भविष्यवाणी की खामोशी की प्रस्तावना है, जो अन्त में अगले भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा खामोशी तोड़ी गई – ***"देखो परमेश्वर का मेमना जो जगत के पापों को उठा लिये जाता है!"*** (यूहन्ना 1:29)। मलाकी आने वाले संदेशवाहक के विषय में भविष्यवाणी करता है कि जो प्रभु का मार्ग सुधारेगा (3:1; यशायाह 40:30)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला बाद में इस भविष्यवाणी को पूरी करता है पर अगली कुछ आयतों में (3:2–5) वह आगे कूद जाता है मसीह के दूसरे आगमन पर।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. इस्राएल का सौभाग्यशाली स्थान (1:1–5)

क. परमेश्वर के प्रेम की घोषणा की गई (1:1–2क)
ख. परमेश्वर के प्रेम पर शंका की गई (1:2ख)
ग. परमेश्वर का प्रेम प्रगट किया गया (1:3–5)

2. इस्राएल का प्रदूषण (1:6–3:15)

क. धोखेबाज़ी (1:6–14)
ख. विश्वासघात (2:1–9)
ग. आत्मिक मिश्रित विवाह (2:10–12)
घ. तलाक (2:13–16)
ङ. लज्जाजनक पाप (2:17)
च. संदेशवाहक का आना (3:1–6)
छ. डकैती (3:7–12)
ज. हठीलापन (3:13–15)

3. लोगों से वायदे (3:16–4:6)

क. स्मरण की जाने वाली पुस्तक का वायदा (3:16–18)
ख. आने वाले मसीह का वायदा (4:1–3)
ग. ऐलिय्याह के आने का वायदा (4:4–6)

अध्याय 3

नये नियम का सर्वेक्षण

परिचय

नया नियम एतिहासिक घटनाओं का रिकार्ड है, "सुसमाचार" प्रभु यीशु की जीवनों के उद्धार की घटनाएं – उसका जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और उसके कार्य को संसार में जारी रखना जिसका वर्णन किया गया है और प्रेरितों द्वारा लागू किया गया है जिन्हें वह चुनता है और संसार में भेजा है। ये उन घटनाओं की भी पूर्ति है जिसे बहुत पहले पुराने नियम में आशा की गई थी। इसके आगे ये पवित्र इतिहास है, जो संसारिक इतिहास की तरह है, और पवित्र आत्मा की दैविय अगुवाई में लिखी गईं थी। इसका अर्थ ये हैं, पुराने नियम की तरह इसे मानव गलतियों से बचाया गया है और आज की कलीसिया के लिये ईश्वरीय अधिकार रखती है और समस्त मानव इतिहास में उस समय तक रखती – जब तक प्रभु स्वयं वापस न आये।

"नये नियम" शब्द का अर्थ और इसका उद्गम : हमारी बाइबल दो भागों में विभाजित है जिसे हम पुराना नियम और नया नियम कहते हैं, पर वास्तव में इसका मतलब क्या है? शब्द "नियम" के लिये यूनानी शब्द का अर्थ, "इच्छा, वर्णन और वाचा" होता है। पुराना नियम या वाचा प्रारम्भिक रूप से जो सीनै पर्वत पर दी गई थी। दूसरी तरफ नया नियम या वाचा (यिर्मयाह 31:31 में आशा की गई और प्रभु यीशु के द्वारा 1 कुरिन्थियों 11:25 में स्थापित की गई)। ये परमेश्वर के मनुष्यों के साथ नये प्रबन्ध का वर्णन करती हैं – हर एक जाति और भाषा और लोग और देश जो मसीह पर विश्वास के आधार पर उद्धार पायेंगे।

पुरानी वाचा परमेश्वर की पवित्रता को व्यवस्था की धार्मिकता के स्तर पर और छुटकारा देने वाले के आने को प्रगट करती है। नई वाचा परमेश्वर की पवित्रता उसके धार्मिक पुत्र में दिखाती है।

नये नियम का सन्देश इस पर केन्द्रित होता है (1) व्यक्ति जिसने अपने आपको पापों की क्षमा के लिये दे दिया है (मत्ती 26:28) और (2) लोग (कलीसिया) जिसने उसके उद्धार को प्राप्त किया है। इस प्रकार नये नियम का केन्द्रिय विषय उद्धार है।

नाम – पुराना और नई वाचाएं इस प्रकार पहले दो रिश्तों में लागू की गईं जिसमें परमेश्वर मनुष्य के साथ प्रवेश हुआ और तब पुस्तकों में जो इन दो सम्बंधों का रिकार्ड रखती हैं। "नया नियम दैविय संधि है जिसमें शर्त है जिसमें परमेश्वर ने हमें अपने साथ शान्ति में स्वीकार किया है।

नए नियम की दैवीय तैयारी : नए नियम के समय में, रोम का संसार में सर्वस्व अधिकार था और पुराने संसार में अधिकतर उनका साम्राज्य था। फिर भी पलिश्ती, यहूदा के बैतलहम में उसका जन्म हुआ जिसने सब कुछ बदल दिया। इस व्यक्ति के बारे में प्रेरित पौलुस ने लिखा है, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ" (उदाहरण पुरानी वाचा)। बहुत से आश्चर्यजनक व विशेष मार्गों के द्वारा, मसीहा के आगमन के लिए परमेश्वर ने संसार को तैयार किया। इन तैयारी के लिए बहुत से कारक हैं।

यहूदी राष्ट्र द्वारा तैयारी : मसीह के आने की तैयारी पुराने नियम की कहानी है। यहूदी सभी देशों से परमेश्वर द्वारा चुने गये थे कि वे याजकों के राज्य के बहुमूल्य ख़जाना और पवित्र देश बने (निर्गमन 1:5–6)। इसलिये प्रतिज्ञाओं के साथ आरम्भ करते जिसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को दी (उत्पत्ति 12:1–3; रोमियों 9:4)। वे परमेश्वर के वचन के रखने वाले थे (पुराना नियम रोमियों 3:2) और छुटकारा देने वाले की वंशावली उसमें है (उत्पत्ति 12:3; गलातियों 3:8, रोमियों 9:5)। इसलिये पुराना नियम मसीह के बारे में सूचनाओं से भरा था और उसके यातना सहने वाले, और महिमामय उद्धारकर्ता के रूप में आने की आशा थी। इसके आगे न केवल बहुत सी भविष्यवाणियां थीं पर बहुत सी विशिष्ट विस्तृत जानकारी उसकी वंशावली, जन्म का स्थान, उसके जन्म के समय की दशा, जीवन मृत्यु और उसका पुनरुत्थान के विषय थी।

यद्यपि इस्राएल अनाज्ञाकारी था और जैसा उनके कठोर हृदयों के कारण परमेश्वर के न्याय से वे बंधुवाई में चले गये, जिस पर भी परमेश्वर 70 साल के बाद बचे हुओं को उनकी भूमि पर वापस ले आया जैसा उसने मसीह के आने की तैयारी में प्रतिज्ञा की थी। उनकी भूमि पर वापस ले आया जैसा उसने मसीह के आने की तैयारी में प्रतिज्ञा की थी। पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक लिखने के बाद 400 साल बीत चुके। धार्मिक आबोहवा फरीसियों की रीति–रिवाज़ की ओर दिखावे की थी, पर वहां हवा में मसीही आत्मा के आने की पूर्वानुमान था, और बचे हुए लोग मसीह के आने की बाट जोह रहे थे।

यूनानी भाषा के द्वारा तैयारी : ये बहुत महत्वपूर्ण है कि जब मसीह ने अपने चेलों को दुनिया के छोर तक सुसमाचार प्रचार करने को भेजा (मत्ती 28:19–20)। तो "संसार का संदेश" था। ये सिकन्दर महान की विजय और अभिलाषा थी – जो मकीदोन के राजा फिलिप्प का पुत्र था – जिसने मसीह के जन्म से 300 वर्ष पहले प्राचीन संसार को एक देश के बाद दूसरे को जीतता गया। सिकन्दर की इच्छा एक संसार और एक भाषा रखने की थी। उसकी विजयों के बाद, उसने यूनानी भाषा को सामान्य (आम) भाषा के रूप में स्थापित किया और यूनानी संस्कृति जीवन और विचारों के नमूने की तरह हों। सिकन्दर का राज्य थोड़े दिनों का था पर यूनानी भाषा का फैलाव बना रहा।

बात ये है कि परमेश्वर कार्य पर था – एक सामान्य भाषा के साथ संसार को तैयार कर रहा था जो मनुष्यों के लिये बिल्कुल स्पष्ट और अच्छी भाषा मनुष्य की जानकारी में थी। ये भाषा उद्धारकर्ता के संदेशों को प्रमाणित करने के लिये इस्तेमाल की जाती थी।

परिणामस्वरूप नये नियम की पुस्तकें उन दिनों की सामान्य भाषा में लिखी गई – कोईन–यूनानी। ये इब्रानी और आरामी में नहीं लिखी गई, भले ही लूका को छोड़कर सभी लेखक यहूदी थे, एक अन्यजाति भाषा "कोईन–यूनानी" दूसरी भाषा बन गई लगभग हर एक के लिये जो उस समय के संसार में जानी जाती थी।

रोमियों के द्वारा तैयारी : संसार के आने वाले उद्धारकर्ता के आने की तैयारी में अभी परमेश्वर का कार्य समाप्त नहीं हुआ था। जब मसीह पिलिश्तीन में पैदा हुआ, रोम का संसार पर साम्राज्य था। पिलिस्तीन रोमी राज्य के आधीन था – सबसे ऊपर रोम अपनी कानून व्यवस्था के लिये जाना जाता था। इतिहास की सबसे लम्बी खूनी गृह युद्ध अगस्तुस कैसर के समय समाप्त हुआ। उसके परिणाम में करीब 100 वर्ष के गृह युद्ध से आराम मिला और रोम ने अपनी सीमाओं का विस्तार किया। रोमियों ने सड़कों का भी उचित प्रबन्ध किया जिसके द्वारा उसकी सेना द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई जो अक्सर सड़कों पर पहरा देते थे बहुत आराम और सुरक्षा प्रदान की गई जिससे यात्री पूरे रोम में आराम से आ जा सकते थे। अगस्तुस ही पहला रोमी था जिसने राजकीय बैंजनी वस्त्र और मुकुट पहना – एक सम्पूर्ण राज्य का राजा होने के सम्मान में। वह बुद्धिमान और लोगों का ध्यान रखने वाला था और उसने शान्ति और सम्पन्नता लाया, उसने रोम को रहने और यात्रा के लिये सुरक्षित स्थान बनाया। इससे एक समय आया जो "पैक्स–रोमाना" कहलाया यानी "रोम की शान्ति" (ई.पू. 27– ई. पश्चात् 180) अब इन सबको उसने पूरा किया (उपलब्धि प्राप्त की) बहुतों ने कहा कि जब वह पैदा हुआ था तब एक देवता पैदा हुआ। ये उन हालातों में था कि एक पैदा हुआ था जो सत्य में था और जो व्यक्तिगत शान्ति का स्रोत है और संसार में स्थिर शान्ति पैदा करेगा। ये शान्ति क्षणिक और झूठी नहीं थी जो मनुष्य दे सकता है – इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने ही बुद्धिमान या अच्छे रहे होंगे। यीशु भी सत्य में परमेश्वर था; परमेश्वर–मानव, इसके बदले एक मनुष्य परमेश्वर कहलाया गया। रोमी राज्य की उपस्थिति और व्यवस्था ने संसार की तैयारी में सहायता की कि उसका जीवन और सेवकाई के लिये जिससे सुसमाचार प्रचार किया जा सके।

नये नियम के समय धार्मिक संसार : नये नियम का सर्वेक्षण करने के पहले, ये सहायता करेगा कि एक सामान्य विचार उस समय के धार्मिक संसार के विषय जाने जब उद्धारकर्ता आया और बाद में कलीसिया को संसार में भेजा। जब आप नीचे दिये संदर्भ को जो मेरिल सी टैनी ने दिये पढ़ते हो तो हमारी आज के संसार से समानता को नोट करें:

> मसीही कलीसिया संसार में धर्मों की प्रतिस्पर्धा से भरे हुए के साथ पैदा हुई, जो आपस में बहुत भिन्नता रखते होंगे, पर वे सबमें एक सामान्य विशेषता थी – परमेश्वर तक पहुंचने में संघर्ष या तो वे देवतागण जो आवश्यक रूप से अगम्य हैं (जिनके पास पहुंच नहीं हो सकती) यहूदावाद से अलग, जिसने सिखाया कि परमेश्वर ने स्वतः ही अपने आपको प्रगट किया है मूसा की पांच पुस्तकों में और भविष्यद्वक्ताओं को, कोई भी ऐसा विश्वास (धर्म) नहीं था जो दृढ़ता से ईश्वरीय प्रगटीकरण के विषय बोलता हो ना ही पाप के लिये और उद्धार के लिये सच्ची विचारधाराएं हों। हाल के नीति शास्त्र के स्तरों में कोई भी समाधान पाप के लिये नहीं था ना ही उद्धार देने का कोई तरीका था।
>
> यहां तक कि यहूदावाद में जो सत्य प्रगट किया गया था वो या तो परम्पराओं के द्वारा या अनदेखी से लोप हो गया था। मूर्तिपूजा और सभी धर्म, परमेश्वर के वचन पर विश्वास और ज्ञान से अलग हमेशा परमेश्वर के मनुष्य को मूल प्रगटीकरण में हानि उत्पन्न करता है। ये सच्चाई की बहुत सी चीज़ों को अपने अन्दर रखता है पर इन्हें झूठे व्यवहार में घुमा देता है। दैविय प्रभुसत्ता भाग्यवादी बन जाता है; अनुग्रह दण्ड मोचन बन जाता है, धार्मिकता निरंकुश नियमों के समान बन जाती है, आराधना केवल खाली रीति रिवाज बन जाती है, प्रार्थना स्वार्थ का आरम्भ बन जाती है, अलौकिक अंधविश्वास में बदल जाता है। परमेश्वर की ज्योति को दन्तकथाओं और झूठ के बादलों से ढंक दिया जाता है। परिणाम स्वरूप विश्वास की उलझन और मूल्य ने मनुष्य को अनिश्चता में भटकने के लिये छोड़ दिया है। कुछ के लिये, स्वार्थ (वह करना जो एक चाहता है) वह जीवन की शासित करने वाली विचारधारा बन गई, यदि कोई अन्तिम निश्चितता नहीं बन सकती तो कोई भी स्थायी सिद्धान्त नहीं हो सकता जिसके द्वारा चरित्र का मार्ग दर्शन किया जा सके; और यदि कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं है तो एक को ऐसा जीना चाहिये जो उस क्षण का लाभ उठा सके। इसलिये कि पुराने देवताओं ने अपनी शक्ति खो दी है और कोई नया देवता दिखाई नहीं दिया था। बहुत से पूजा पद्यतियों ने हर कोने से पूर्ण राज्य का हमला किया और सनक के धनी बन गये या निराशामय गरीब की शरण बन गये। मनुष्य ने आनन्द का अत्याधिक भाग और उस मंजिल को खो दिया जिसने मानव जीवन को योग्य बना दिया।

नये नियम की बनावट और प्रबन्ध : नये नियम को सत्ताइस पुस्तकों द्वारा बनाया गया जिन्हें नौ विभिन्न लेखकों ने लिखा। उनकी साहित्यक विशेषताओं के आधार पर, उन्हें तीन बड़े झुण्डों मं बांटा जाता है:–

1. **पांच ऐतिहासिक** : सुसमाचार और प्रेरितों के काम
2. **इक्कीस पत्रियां** : रोमियों से यहूदा
3. **एक भविष्यवाणी वाली** : प्रकाशितवाक्य

नीचे दिये गये दो चार्ट विभाजन को दिखाते और नये नियम के तीन हिस्सों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

नये नियम की पुस्तकें						
इतिहास	**पत्रियां**					**भविष्यवाणी**
	पौलुस की				**सामान्य**	
मत्ती मरकुस	**प्रारम्भिक** (मिशनरी यात्रा के दौरान)	**बाद में** (यरूशलेम में कैद के बाद)			याकूब इब्रानियों	प्रकाशितवाक्य
लूका यूहन्ना प्रेरितों के काम	गलातियों 1 थिस्सलुनीकियों 2 थिस्सलुनीकियों 1 कुरिन्थियों 2 कुरिन्थियों रोमियों	*प्रथम कैद* कुलुस्सियों इफिसियों फिलेमोन फिलिप्पियों	*छूटना* 1 तीमुथियस तीतुस	*दूसरी कैद* 2 तीमुथियुस	यहूदा 1 पतरस 2 पतरस 1 यूहन्ना 2 यूहन्ना 3 यूहन्ना	

नये नियम की पुस्तकों पर केन्द्रित ध्यान पर पुनः दृष्टि		
ऐतिहासिक पुस्तकें	**सुसमाचार :** मत्ती, मरकुस लूका, यूहन्ना	**प्रगटीकरण :** उद्धारकर्ता का आगमन और उसका व्यक्तित्व और कार्य
	प्रेरितों के काम : प्रेरितों के द्वारा पवित्रात्मा का काम	**प्रसारण :** उद्धारकर्ता जो आ गया है उसके सन्देशों की घोषणा
पत्रियां	**पत्रियां :** कलीसियाओं को और व्यक्तिगत पत्र रोमियों से यहूदा तक	**वर्णन :** मसीह के व्यक्ति का और उसके कार्य की पूरी विशेषता को विकसित करना और किस प्रकार से ये संसार में मसीही चाल पर कैसे प्रभाव पड़ेगा
भविष्यवाणी	**प्रकाशितवाक्य :** प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशन	**पूर्ति :** अन्त के समय की घटनाओं का पूर्वानुमान और प्रभु का वापस लौटना, उसका अन्त समय का राज्य और अनन्त का राज्य

नये नियम की पुस्तकों का क्रम : नये नियम की पुस्तकों का क्रम कालचक्र की अपेक्षा विचारों के आधार पर है। जैसा रायरे बयान करते हैं,

> प्रथम सुसमाचार आते हैं, जो मसीह के जीवन का रिकार्ड करते हैं; तब प्रेरितों के काम आता है जो मसीहत के फैलने का इतिहास बताता है; तब पत्र आते हैं, जो कलीसिया की धार्मिक सिद्धान्तों को उनकी समस्याओं के साथ उनके विकास को दिखाते हैं, और अन्त में प्रकाशितवाक्य में मसीह के पुनः आगमन के दर्शन को बताते हैं।

यद्यपि बाइबल के शोधकर्ता सही तारीख पर भिन्न मत रखते हैं, कि जब नये नियम की पुस्तकें लिखी गई – नीचे दिये गये पर अधिकतर सहमति दी गई है:–

पुस्तक	तिथि ई. पश्चात्	पुस्तक	तिथि ई. पश्चात्
याकूब	45–46	प्रेरितों के काम	61
गलातियों	49	1 पतरस	63–64
मरकुस	50 या 60	1 तीमुथियुस	63
मत्ती	50 या 60	तीतुस	65
1 और 2 थिस्सलुनीकियों	51–52	इब्रानियों	64–68
1 कुरिन्थियों	55	2 पतरस	67–68
2 कुरिन्थियों	56	2 तीमुथियुस	66
रोमियों	57–58	यहूदा	70–80
लूका	60	यूहन्ना	85–90
कुलुस्सियों, इफिसियों	60–61	1,2,3 यूहन्ना	85–90
फिलिप्पियों, फिलेमोन	60–61	प्रकाशितवाक्य	96

नये नियम की पुस्तकों का इक्ट्ठा किया जाना : प्रारम्भ में, नये नियम की पुस्तकें अलग अलग दी गईं और धीरे धीरे इक्ट्ठी की गईं जो आज हम नये नियम के रूप में देखते हैं जो धर्मशास्त्र का एक भाग है। परमेश्वर की सुरक्षा के कारण हमारी नये नियम की 27 पुस्तकें और दूसरी लेखनी से अलग रखी गईं – प्रारम्भिक कलीसिया के दौरान, वे नये नियम के रूप में बचा कर रखी गईं उनकी प्रेरणा के कारण और प्रेरिताई के अधिकार के कारण। रायरे के पास इस प्रक्रिया के लिये सर्वोत्तम सारांश है :–

> इन्हें लिखे जाने के बाद व्यक्तिगत किताबें एकदम साथ इक्ट्ठी बाइबल में नहीं की गई थीं या 27 का संग्रह जो नया नियम बनाता है। पुस्तकों का झुण्ड जैसे पौलुस की पत्रियां और सुसमाचार पहले कलीसियाओं के द्वारा बचा कर रखें गये या लोगों द्वारा जिन्हें भेजा गया था, और धीरे से ये 27 पुस्तकें इक्ट्ठी की गईं और कलीसिया के द्वारा स्वीकार की गई।
>
> इस प्रक्रिया में 350 वर्ष लगे। दूसरी सदी में पुस्तकों के वितरण ने झूठी धार्मिक शिक्षाओं को बढ़ावा दिया और दूसरे मसीही साहित्य से सही धर्मशास्त्र की पहचान की आवश्यकता पर जोर दिया गया इसलिये कुछ विशेष जांच विकसित किये गये कि किस प्रकार को शामिल किया जाना है।
>
> 1. क्या पुस्तक प्रेरित द्वारा लिखी या स्वीकृत की गई है?
> 2. क्या इनका स्वाभाव आत्मिक है?
> 3. क्या इसने ये सबूत दिया कि ये परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा है?
> 4. क्या ये कलीसियाओं द्वारा विस्तृत रूप से स्वीकृत की गई है?

सभी 27 पुस्तकें नहीं जो धार्मिक ग्रंथ द्वारा स्वीकृत की गई या कलीसियाओं द्वारा प्रारम्भिक सदी में स्वीकार की गई थीं, पर इसका मतलब ये नहीं कि जो एकदम स्वीकार नहीं की गई वे एकदम और संसार के द्वारा स्वीकृत नहीं वे झूठी हैं। पत्रियां जो व्यक्तिगत लोगों को लिखी गईं (फिलेमोन, 2 और 3 यूहन्ना) इनका वितरण उनकी तरह अधिक नहीं हुआ होगा। अधिक झगड़े वाली पुस्तकें ये थीः याकूब, यहूदा, 2 पतरस, 2 और 3 यूहन्ना और फिलेमोन पर अन्त में इनको शामिल किया गया और मसीही ग्रन्थ को प्रमाणित किया गया ई. पश्चात् 397 में कांउसिल ऑफ कारथेज़ द्वारा।

यद्यपि किसी भी लेखनी जिसके द्वारा नया नियम बनाया गया – प्रारम्भिक असली प्रतिलिपियाँ उपलब्ध नहीं हैं। करीब 4500 यूनानी लेख पूरे या हिस्से हैं, साथ ही 8000 लेटिन लेख और कम से कम 1000 दूसरे अनुवाद जो मूल पुस्तक में अनुवाद किये गये। अध्ययन में सावधानी और इन कापियों की तुलना ने हमें सही और विश्वस्त नया नियम दिया है।

भाग 1
ऐतिहासिक पुस्तकें

परिचय : जैसा पहले वर्णन किया गया है, नया नियम तीन श्रेणी में उनके साहित्यिक आधार पर, बनाये जाने के ऐतिहासिक, पत्रियों और भविष्यवाणी पर किये गये हैं। चारों सुसमाचार लगभग नये नियम का 46 प्रतिशत बनाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक इस योग को 60 प्रतिशत बढ़ाती है जिसका अर्थ है नये नियम का 60 प्रतिशत जो मसीहत के ऐतिहासिक विकास का पता करते हैं। मसीहत ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है जो सुसमाचार के स्वाभाव में शामिल है। सुसमाचार – शुभ संदेश है जो दूसरों की गवाहियों से लिया गया है। ये इतिहास है, ऐतिहासिक तथ्यों की गवाही है।

जबकि चारों सुसमाचार यीशु के जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के इतिहास के विषय बोलते हैं। प्रेरितों के काम प्रेरितों की सेवकाई जो प्रारम्भिक कलीसिया के जीवन में की, उसके ऐतिहासिक रूप रेखा को उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार प्रेरितों के काम हमारी समझ के लिये कि पत्रियों में क्या है अधिक गम्भीर है। ये पत्रियां वास्तव में वे पत्र हैं जो उन जीवित लोगों को लिखे गये जो जानकार स्थानों में थे। तब नया नियम जीवित परमेश्वर के सुसमाचार का मानव इतिहास में कार्य करने की ऐतिहासिक पुस्तक है, केवल बीते समय में नहीं पर वर्तमान और भविष्य में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रकाश में कार्यों का होना है।

संक्षिप्त सुसमाचार : आरम्भ करने से पहले हर सुसमाचार के सर्वेक्षण में इस शब्द "संक्षिप्त सुसमाचार" की हम जांच कर लें यद्यपि हर एक सुसमाचार का विशेष वर्णन और अभिप्राय है, मत्ती, मरकुस और लूका को संक्षिप्त सुसमाचार के रूप में संदर्भ दिया गया है क्योंकि वे "एक साथ देखते" हैं – वो ये है कि उनका मसीह के जीवन के प्रति एक सा दृष्टिकोण है, विषय और नियम के मामले में सहमति है। वे मसीह के जीवन को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं, जो तस्वीर यूहन्ना के सुसमाचार में दी गई पूर्ण हो जाती है। नीचे दिखाया गया है कि बहुत से क्षेत्र हैं जो इन तीनों सुसमाचार में सामान्य हैं:

- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा मसीह की घोषणा (मत्ती 3, मरकुस 1, लूका 3)
- यीशु का बपतिस्मा (मत्ती 3, मरकुस 1, लूका 3)
- यीशु की परीक्षा (मत्ती 4, मरकुस 1 और लूका 4)
- यीशु की शिक्षा और आश्चर्यकर्म (सुसमाचार के हर बड़े हिस्से में)
- यीशु का रूपान्तरण (मत्ती 17, मरकुस 9, और लूका 9)
- मुकद्दमा, मृत्यु, और यीशु का गाड़ा जाना (मत्ती 26–27, मरकुस 14–15, लूका 22–23)
- यीशु का पुनरुत्थान (मत्ती 28, मरकुस 16, लूका 24)

चारों सुसमाचार के स्पष्ट केन्द्र और अभिप्राय : चारों सुसमाचार का अभिप्राय मसीह यीशु के व्यक्ति को प्रगट करना है। मत्ती 16:13–16 कहता है:–

> ***"यीशु केसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। उसने उनसे कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है"।***

मत्ती 16:14 यीशु के समय के बहुत से लोग चार दृष्टिकोण देते हैं। पहले कुछ ही लोगों ने यीशु को पहचाना कि वह कौन था– परमेश्वर का पुत्र। इस प्रकार आत्मा की प्रेरणा के आधीन, सुसमाचार के लेखक ये प्रगट करना चाहते थे कि वास्तव में यीशु कौन था, उसके काम और उसके व्यक्ति के विषय। चार तरह से हर एक अपनी स्पष्ट केन्द्र बनाता है पर लेखे जोखे में वह पूरा है, चारों सुसमाचार उस प्रश्न का जो प्रभु यीशु ने अपने चेलों से पूछा–उसका उत्तर देते हैं। वे घोषणा करते हैं कि यीशु वास्तव में कौन है। वे दिखाते हैं कि वह पुराने नियम की मसीह की आशा, परमेश्वर का सेवक, मनुष्य का पुत्र और परमेश्वर का पुत्र है और जो संसार का उद्धारकर्ता है। सुसमाचार हमें परमेश्वर के व्यक्ति की तस्वीर और मसीह का कार्य चार स्पष्ट तस्वीरों के साथ देते हैं। मत्ती अपने सुसमाचार के प्राथमिक रूप से यहूदियों को सम्बोधित करना है यो आश्वासन देने के लिये कि नासरत का यीशु उनका मसीह, यहूदियों का राजा यीशु है।

मत्ती भी यीशु की पृथ्वी की वंशावली के साथ दस संदर्भों की पूर्ति इस्तेमाल करता है जिसके द्वारा वह दिखाना चाहता है कि यह यीशु यद्यपि तिरस्कार किया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया, पुराने नियम का लम्बे समय से जिसकी बाट जोही जा रही थी – वही मसीह है (मत्ती 1:23, 2:15, 2:18, 2:23, 4:15, 8:15, 12:18–21, 13:35, 21:5, 27:9–10)। यद्यपि यीशु का तिरस्कार देश में सबने किया और क्रूस पर चढ़ा दिया गया, राजा ने कब्र खाली छोड़ी।

मरकुस रोमियों को सम्बोधित करता है, कार्य करने वाले और थोड़े शब्द बोलते हैं, और यीशु को परमेश्वर का सेवक करके प्रस्तुत करते हैं जो ***"बहुतों के छुटकारे के लिये प्राण देने आया"*** इसे रखकर मरकुस जो सबसे छोटा सुसमाचार है, स्पष्ट, क्रियाशील और जीवित है और बहुत ही स्पष्ट आंखों देखा हाल प्रस्तुत करता है, विशेष करके यीशु के जीवन के पृथ्वी पर के अन्तिम सप्ताह का वर्णन करता है – इस सुसमाचार का एक तिहाई उसके अन्तिम सप्ताह की घटनाओं को समर्पित है।

लूका, एक डॉक्टर और इतिहासकार, वह यीशु को एक सिद्ध मनुष्य के पुत्र की तरह प्रस्तुत करता है, जो ***"खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया है"*** (लूका 19:10)। लूका यीशु की पूर्ण मानवता का वर्णन करता है जबकि उसकी और ईश्वरत्व की घोषणा करता है – कुछ ऐसा मानते हैं कि लूका के दिमाग में विशेषकर करके यूनानी थे – उनके मानव विचारों में अधिक रूचि होने के कारण।

यूहन्ना, पाठकों का ध्यान मसीह के ईश्वरीय पर केन्द्रित करता है – यीशु को परमेश्वर का अनन्त पुत्र के रूप में प्रगट करके जो बहुतायत का जीवन और अनन्त जीवन देता है उन सबको जो उसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं (यूहन्ना 1:1–2, 12, 3:16–18, 36; 10:10)। यद्यपि ये सभी मानव जाति के लिये लिखा गया है, यूहन्ना का सुसमाचार विशेष रूप से कलीसिया को लिखा गया है, पांच अध्याय उसके विदाई के सन्देश को रिकार्ड करते हैं जो यीशु ने अपने चेलों को तसल्ली देने के लिये अपनी मृत्यु के कुछ घन्टे पहले दिया था। इसके साथ ही सात आश्चर्यकर्म के चिन्ह यीशु को ये बताने के लिये थे कि वह उद्धारकर्ता है और लोगों को प्रोत्साहित करने के लिये हर कहीं कि उस पर विश्वास करें जिससे उन्हें जीवन प्राप्त हो (यूहन्ना 20:30–31)।

मत्ती

(यहूदियों का राजा)

लेखक और पुस्तक का नाम : हर एक सुसमाचार अपने मानव लेखक के नाम से है जिन्होंने इन्हें लिखा। यद्यपि ये पहला सुसमाचार है जैसा और दूसरे सुसमाचारों के साथ है कभी लेखक का नाम नहीं लेते, प्रारम्भिक कलीसिया की सम्पूर्ण संसार के लिये उसकी गवाही है कि प्रेरित मत्ती ने इसे लिखा, और हमारे प्रारम्भिक लेखों की गवाहियां इसका शीर्षक देकर इसकी विशेषता को प्रगट करते हैं "मत्ती के अनुसार"; मत्ती जो यीशु का प्रारम्भिक चेला था, वह यहूदी था और यहूदियों को लिख रहा था – उसके विषय कि उनका मसीह कौन था। उसका असली नाम "लेवी" था – अलफियुस का पुत्र। मत्ती ने चुंगी लेने वाले का कार्य रोमियों के लिये उस समय तक किया जब उसे यीशु ने अपने पीछे होने के लिये बुलाया (मत्ती 9:9, 10, मरकुस 2:14–15)। उसका शीघ्र उत्तर ये सुझाव देता है कि उसका हृदय पहले ही ये यीशु की सेवकाई से मथ दिया गया था।

लेखन तिथि : ई.पश्चात् 50–60। कुछ सुझाव मत्ती के लेखक के लिये बताते हैं 40–140 ई. पश्चात् पर तथ्य ये है कि ई. पश्चात् 70 में यरूशलेम के विनाश सबूत की तरह दिखाया गया है – जिसमें भविष्य (24:2) पहले की तिथि की मांग करती है। कुछ महसूस करते हैं कि ये ही प्रथम सुसमाचार जो (लगभग 50 ई. पश्चात्) लिखा गया है। जबकि दूसरे सोचते हैं कि ये पहला नहीं था और ये 60 ई. पश्चात् लिखा गया है।

विषय और अभिप्राय : जैसा प्रश्न में साफ है जो यीशु ने अपने चेलों से पूछा (16:13–15)। मत्ती ने यहूदियों को उत्तर देने के लिये ये प्रश्न लिखा नासरत के यीशु के विषय। यीशु ने आसानी से घोषणा की थी कि वह उनका मसीह था। क्या वह पुराने नियम का मसीह था जिसकी भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी? यदि ऐसा है तो क्यों धार्मिक अगुवों ने उसे स्वीकार नहीं किया और उसने प्रतिज्ञा किये हुए राज्य को स्थापित नहीं किया? क्या ये कभी स्थापित होगा? यदि हां तो कब? इस प्रकार मत्ती यहूदियों की मंडली को ये दिखाने के लिये सम्बोधित करता है कि यह यीशु लम्बी बाट जोहे हुए मसीह है। इसे यीशु की वंशावली में देखा गया है (1:1–17), ज्योतिषियों का आकार भेंट करना (2:1–12)। उसका यरूशलेम में प्रवेश (2:15), देशों का न्याय (25:31–46) अक्सर "स्वर्ग के राज्य" का बयान करना – ये दूसरे सुसमाचारों के साथ भी ऐसा ही है और पुराने नियम में भविष्यवाणी का पूरा होना है।

मत्ती में जैसे मसीह को देखा गया : जैसा पहले बयान किया गया है, मत्ती का लक्ष्य ये दिखाना है कि यीशु ही मसीह है जो पुराने नियम की प्रतीक्षा का है। वह अब्राहम और दाऊद का पुत्र है। इस प्रकार वह राजा है जो राज्य को पेश करता है। ये कहावत "स्वर्ग का राजा" इस सुसमाचार में कोई 32 बार आता है। ये दिखाने के लिये कि यही यीशु पुराने नियम की प्रतीक्षा को पूरा करता है, मत्ती विशेष करके 10 बार बयान करता है कि यीशु के जीवन में क्या हुआ वह पुराने नियम की पूर्ति करता है। मत्ती भी पुराने नियम के उद्धरण चिन्ह (कुटेशन) और संदर्भों को इस्तेमाल करता है – नये नियम की और किसी पुस्तक में नहीं जैसा वह इसे 130 बार इस्तेमाल करता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. व्यक्ति और राजा का प्रस्तुतिकरण (1:1–4:25)

क. उसका जन्म (1:1–25)
1:1–17 1:18–25

ख. उसकी पहचान (2:1–12)

ग. उसका भागना (2:13–23)
2:13–15 2:16–23

घ. उसके आगे दौड़ने वाला (3:1–17)
3:1–12 3:13–17

ङ. उसकी परीक्षाएं (4:1–11)

च. उसके पहले चेले (4:12–25)
4:12–17 4:18–22 4:23–25

2. घोषणा या राजा का प्रचार (5:1–7:29)

क. व्यक्तिगत आगे बढ़ने सम्बंधी (5:1–12)

ख. विश्वासियों की जिम्मेवारी सम्बंधी (5:13–20)

ग. सम्बंधों के सम्बन्ध में (5:21–48)

घ. देने के सम्बन्ध में प्रार्थना और उपवास (6:1–18)
6:1–6 6:7–15 6:16–18

ङ. सच्चे खजाने के सम्बंध में (6:19–34)
6:19–24 6:25–34

च. व्यवस्था के पूरा होने के सम्बंध में (7:1–29)
7:1–6 7:13–14 7:24–29
7:7–12 7:15–23

3. राजा की सामर्थ (8:1–11:1)

क. चंगाई (8:1–17)
8:1–13 8:14–17

ख. दूसरों को बुलाना (8:18–22)

ग. आंधी को शान्त करना (8:23–27)

घ. दुष्टात्माओं को निकालना (8:28–34)

ङ. और चंगाई (9:1–38)
9:1–8 9:14–17
9:9–13 9:18–38

च. उसके चेलों को निर्देश (10:1–11:1)
10:1–15 10:24–39
10:16–23 10:40–11:1

4. कार्यक्रम और राजा का बढ़ता हुआ तिरस्कार (11:2–16:12)

क. यीशु की यूहन्ना की प्रशंसा करना (11:2–19)

ख. मन फिराव की बुलाहट (11:20–30)
11:20–24 11:25–30

ग. फरीसियों का हमला (12:1–50)
12:1–7 12:30–32 12:46–50
12:8–21 12:33–37
12:22–29 12:38–45

घ. दृष्टान्त (13:1–58)
13:1–9 13:31–32 13:45–46
13:10–17 13:33–35 13:47–52
13:18–23 13:36–43 13:53–58
13:24–30 13:44

ङ. यूहन्ना का सिर काटा जाना (14:1–12)
च. और अधिक आश्चर्यकर्म (14:13–36)
14:13–21 14:22–36
छ. परम्परायें और दिखावा (15:1–20)
15:1–14 15:15–20
ज. और अधिक चंगाई (15:21–39)
15:21–28 15:29–31 15:32–39
झ. और अधिक हमले (16:1–12)

5. राजा के चेलों की तैयारी (16:13–20:28)

क. पतरस का अंगीकार (16:13–28)
16:13–20 16:21–23 16:24–28
ख. रूपान्तरण (17:1–13)
ग. दुष्टात्माओं के विषय (17:14–23)
घ. विश्वास और कर (17:24–27)
ङ. विश्वास और प्रेम (18:1–19:12)
18:1–6 18:12–14 18:21–35
18:7–11 18:15–20 19:1–12
च. विश्वास और बच्चे (19:13–15)
छ. विश्वास और शिष्यता (19:16–30)
19:16–26 19:27–30
ज. सहमति का सम्मान (20:1–16)
झ. अधिकार या सेवा (20:17–28)
20:17–19 20:20–28

6. राजा की प्रस्तुति (20:29–23:39)

क. अन्धे की चंगाई (20:29–34)
ख. यरूशलेम में प्रवेश (21:1–27)
21:1–11 21:18–22
21:12–17 21:23–27
ग. दृष्टान्तों को सिखाना (21:28–22:14)
21:28–32 21:33–46 22:1–14
घ. फिर हमला किया (22:15–46)
22:15–22 22:23–46
ङ. फरीसीवाद का उजागर होना (23:1–39)
23:1–12 23:13–36 23:37–39

8. भविष्य की बातें या राजा की भविष्यवाणियां (24:1–25:46)

क. उसकी वापसी की तैयारी (24:1–51)
24:1–14 24:29–31 24:42–51
24:15–28 24:32–41
ख. तैयारी के दृष्टांत (25:1–30)
25:1–13 25:14–30
ग. न्याय (25:31–46)

8. दुःख या राजा का तिरस्कार (26:1–27:66)

क. पकड़वाया जाना और कैद किया जाना (26:1–56)
26:1–5 26:20–25 26:47–56
26:6–13 26:26–35
26:14–19 26:36–46
ख. मुकद्दमा और इंकार (26:57–75)
26:57–68 26:69–75

ग. पश्चाताप (27:1–10)
घ. क्रूस पर चढ़ाया जाना (27:11–56)
27:11–26 27:27–32 27:33–56
ङ. गाड़ा जाना (27:57–66)

9. राजा के सबूत (28:1–20)
क. वह जी उठा है (28:1–10)
ख. ढांप दिया (28:11–15)
ग. महान आज्ञा (28:16–20)

मरकुस

(प्रभु का सेवक)

लेखक और पुस्तक का नाम : मरकुस का सुसमाचार वास्तव में लेखक का नाम नहीं देता इसलिये अनजान है। शीर्षक "मरकुस के अनुसार" एक शास्त्री के द्वारा बाद में जोड़ा गया लगभग ई. पश्चात् 125 में, पर इसके मज़बूत सबूत हैं (बाहरी और भीतरी) कि मरकुस इसका लेखक था। प्रारम्भिक कलीसिया के पिताओं की गुमनाम गवाहियां हैं कि ये मरकुस है जो पतरस का सहयोगी था, वही लेखक था। ई.पश्चात् 112 में पेपियास ने पाया कि मरकुस पतरस का "अनुवादक" था। वाल्टर. एम. डनेट ये संकेत करता है कि "पतरस के संदेश की तुलना प्रेरित 10:36–43 में मरकुस के सुसमाचार के साथ दिखाता है कि पूर्व को यीशु के जीवन की रूप रेखा होना चाहिये जिसे मरकुस ने बहुत विस्तार से दिया है।

यद्यपि मरकुस यीशु का प्ररम्भिक चेला नहीं था – वह एक स्त्री जिसका नाम मरियम था उसका पुत्र था, वह यरूशलेम का प्रतिष्ठित और धनी व्यक्ति था (प्रेरित 12:12), पतरस का साथी (1 पतरस 5:13) और बरनबास का भतीजा (कुलुस्सियों 4:10)। ये सम्बन्ध विशेषकर पतरस के साथ जो मरकुस का सूचना का स्रोत था, मरकुस के सुसमाचार को प्रेरिताई का अधिकार दिया। जैसा पतरस ने उसके लिये बोला, "मरकुस मेरा पुत्र" (1 पतरस 5:13) हो सकता है पतरस मरकुस को मसीह के पास लाया।

इसके अतिरिक्त मरकुस पौलुस का भी निकट सहयोगी था। चार्ल्स राइरे लिखता है:

> उसके पास पौलुस और बरनबास के साथ रहने की कम सौभाग्य रहा, उसकी पहली मिशनरी यात्रा में पर उसके साथ रहने में असफल रहा। इसके कारण पौलुस ने दूसरी यात्रा पर ले जाने से मना कर दिया, इसलिये वह बरनबास के साथ कुप्रुस को चला गया (प्रेरित 15:38–40), करीब एक दर्जन वर्षों के बाद वह फिर पौलुस के साथ था (कुलुस्सियों 4:10, फिलेमोन 24) और पौलुस की मृत्यु के थोड़े पहले वह उसे चेलों के द्वारा बुला लिया गया था (2 तीमुथियुस 4:11) उसकी जीवनी ये साबित करती है कि जीवन की एक असफलता का मतलब ये नहीं कि ये उपयोगिता का अन्त है।

लेखन तिथि : ई.पश्चात् 50 या 60। मरकुस की लेखन तिथि कुछ मुश्किल है, यद्यपि बहुत से शोधकर्ता ये विश्वास करते हैं कि ये चारों सुसमाचारों में सबसे पहली पुस्तक है, सही है कि मरकुस के पदों को बाकी सुसमाचारों में भी बताया गया है। मरकुस की पुस्तक 70 ई. पश्चात् के और यरूशलेम के मन्दिर के नष्ट होने से पहले लिखी गई है (13:2)।

विषय और अभिप्राय : मरकुस का विषय "सेवक–मसीह" है। सेवा और बलिदान पर स्पष्ट वर्णन किया गया है (10:45)। ***"क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाये, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहेल करें, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दें।***

मरकुस को सावधानी से पढ़ा जाना ये दिखाता है कि इस पद में किस प्रकार दो विषय है–सेवा और बलिदान इसे मरकुस द्वारा खोला गया है।

मरकुस प्रारम्भिक रूप से रोमियों या अन्य जाति के अगुवे के लिये लिखा है। परिणामस्वरूप यीशु की वंशावली और पहाड़ी उपदेश छोड़ा हुआ है। धार्मिक अगुवों द्वारा दोषारोपण पर भी कम ध्यान दिया गया है, जबकि वो यहूदी मंडली के लिये अधिक संस्कृति सम्बंधी हो सकते थे। इसलिये कि मरकुस यीशु को एक कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है, प्रभु का सेवक। पुस्तक मसीह की गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करती है कि वह विश्वासयोग्य सेवक है – प्रभावशाली रूप से कार्य कर रहा है।

मरकुस में जैसा मसीह को देखा गया : ये सही है, मरकुस का योगदान विशेषरूप से उद्धारकर्ता को बलिदान का सेवक के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपने जीवन को आज्ञाकारिता में बहुतों के छुटकारे के लिये दे देता है। ध्यान केन्द्रित उसकी सेवकाई पर दूसरों की शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से पहले रखता है। उद्धारकर्ता सेवक की गतिविधि नीचे दिये पर दिखाई देती है:

मसीह के 70 दृष्टांतों में से मरकुस में केवल 18 पाये जाते हैं – उनमें से कुछ केवल एक वाक्य में पाये जाते हैं – पर वह मसीह के आधे यानी 35 आश्चर्यकर्मों की सूचि दिखाता है। सुसमाचारों में सबसे अधिक।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. सेवक की सेवा के लिये तैयारी (1:1–13)

क. उसके आगे दौड़ने वाला (1:1–8)
ख. उसका बपतिस्मा (1:9–11)
ग. उसकी परीक्षाएं (1:12–13)

2. सेवक का गलील में प्रचार (1:14–9:32)

क. उसका मिशन (कार्य) (1:14–2:12)

1:14–28	1:29–45	2:1–12

ख. प्रारम्भिक विरोध (2:13–3:35)

2:13–22	3:1–12
2:23–28	3:13–35

ग. दृष्टांत (4:1–34)

4:1–12	4:26–29
4:13–25	4:30–34

घ. आश्चर्यकर्म (4:35–5:43)

4:35–41	5:1–20	5:21–43

ङ. विरोध का बढ़ना (6:1–8:26)

6:1–6	6:33–52	7:14–23
6:7–13	6:53–56	7:24–37
6:14–32	7:1–13	8:1–26

च. पतरस का मसीह को अंगीकार करना (8:27–33)
छ. शिष्यता की कीमत (8:34–9:1)
ज. रूपान्तरण (9:2–13)
झ. दुष्टात्मा से ग्रसित पुत्र छुड़ाया गया (9:14–29)
ञ. यीशु अपनी मृत्यु के विषय में बताता है (9:30–32)

3. सेवक का कफरनहूम में प्रचार (9:33–10:52)

क. यीशु चेला बनाने की शिक्षा देता है (9:33–10:45)

9:33–37	10:1–12	10:17–31
9:38–50	10:13–16	10:32–45

ख. अन्धा बरतिमाई चंगाई पाता है (10:46–52)

4. यरूशलेम में सेवक का दुःख (11:1–15:47)

क. उसकी अनौपचारिक प्रस्तुति (11:1–19)

11:1–14	11:15–19

ख. प्रार्थना पर उसके निर्देश (11:20–26)
ग. अगुवों द्वारा उसका विरोध (11:27–12:44)

11:27–33	12:13–27	12:41–44
12:1–12	12:28–40	

घ. भविष्य के लिये उसके निर्देश (13:1–37)

13:1–2	13:14–23	13:33–37
13:3–8	13:24–27	
13:9–13	13:28–32	

ङ. उसके दुःख (14:1–15:47)

14:1–11	14:43–52	15:16–21
14:12–21	14:53–65	15:22–41

14:22—31	14:66—72	15:42—47
14:32—42	15:1—15	

5. **पुनरूत्थान में सेवक की सम्पन्नता (16:1—20)**
   क. उसका पुनरुत्थान (16:1—8)
   ख. उसका प्रगट होना (16:9—18) *प्रश्न सूचक लेख*
   ग. उसका स्वर्गारोहण (16:19—20) *प्रश्न सूचक लेख*

लूका

(मनुष्य का पुत्र)

लेखक और पुस्तक का नाम : दोनों लूका और प्रेरितों के काम, जो दो अंकों में थियोफिलुस को सम्बोधित किया है। ये लूका को श्रेय देते हैं। वैसे कहीं भी लूका का नाम नहीं दिया गया कि लेखक वह है। बहुत से सबूत लूका की ओर संकेत करते हैं कि वह लेखक है। "अतिप्रिय वैद्य लूका" (कुलुस्सियों 4:14) दोनों पुस्तक के लेखक की तरह।

विशेष रूप से ये दोनों पुस्तकें मिलकर यूनानी नये नियम का एक चौथाई हिस्सा बनाती है। केवल वे स्थान जहां हम उसका नये नियम में पाते वो है कुलुस्सियों 4:14, 2 तीमुथियुस 4:11 और फिलेमोन 24। ऐसा भी माना जाता है कि लूका ने अपने आप का संदर्भ प्रेरितों के हिस्से में "हम" कह कर दिया (16:10—17, 20:5—21; 18, 27:1—28:16)। ये प्रेरितों का "हम" भाग दिखाता है कि लेखक पौलुस का करीबी साथी था। जबकि पौलुस के दो सहयोगी के नाम तीसरे व्यक्ति के विषय में दिखाया गया है, सूचि को छोटा किया जा सकता तीतुस और लूका। हटाने की प्रक्रिया में पौलुस का "प्रिय मित्र लूका, वैद्य" (कुलुस्सियों 4:14) और "साथी कार्यकर्ता" (फिलेमोन 24) सबसे करीबी व्यक्ति बन जाता है।

कुलुस्सियों 4:10—14 के सबूत से लगता है कि लूका अन्य जाति था क्योंकि पौलुस उसमें और यहूदियों में फर्क बताता है। यहां प्रेरित ये वर्णन करता है कि उसके सह—कर्मचारी अरिस्तखुस और यूहन्ना ही थे जो यहूदी थे। ये सुझाव देता है कि इफरातुस, लूका और देमास का नाम इन पदों में वर्णन किया गया, वे यहूदी नहीं पर अन्य जाति थे। लूका का यूनानी भाषा के साथ और उसके कथन में "उनकी अपनी भाषा" प्रेरित 1:19 में ये प्रगट करता कि वह यहूदी नहीं था।

हम उसके आरम्भ के जीवन के बारे में कुछ नहीं जानते या उस चर्चा की केवल ये कि वह यीशु मसीह के जीवन का चश्मदीद नहीं था (लूका 1:2)। यद्यपि व्यवसाय के रूप में एक डॉक्टर, पर वह प्रारम्भ से ही एक सुसमाचार प्रचारक था, इस सुसमाचार को लिख रहा था और प्रेरितों के काम को भी लिख रहा था और पौलुस के साथ मिशनरी यात्रा में कार्य कर रहा था। लूका उस समय पौलुस के साथ चेलों के शहीद होने के समय साथ था (2 तीमुथियुस 4:11), पर उसके बाद के जीवन के विषय में कुछ पता नहीं।

लेखन तिथि : ई. पश्चात् 60। दो सामान्य सुझाव लूका के सुसमाचार की तिथि में ये हैं:— (1) ई. पश्चात् 59—63 और (2) ई. पश्चात् 70 या 80 पर प्रेरितों के काम का समापन हमें दिखाता है कि पौलुस रोम में था और इसलिये कि लूका पहले का कार्य है जो प्रेरितों के काम से पहले लिखा गया (प्रेरित 1:1), लूका का सुसमाचार ई. पश्चात् 60 के प्रारम्भिक समय में लिखा गया होगा।

विषय और अभिप्राय : लूका का अभिप्राय स्पष्टता से सुसमाचार के पहले चार पदों में वर्णन किया गया है:

> ***"इसलिये कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। इसलिये हे श्रीमान थियुफिलुस, मुझे भी ये उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूं, कि तू ये जान ले कि ये बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है कैसी अटल है"*** (लूका 1:1—4)।

सुसमाचार के प्रस्तुत करने में बहुत सी बातों को नोट किए जाने की आवश्यकता है।

लूका वर्णन करता है कि उसका अपना काम दूसरों के काम से उत्तेजित किया गया था (1:1) कि उसने चश्मदीद गवाहों को सम्पर्क किया (1:2) कि उसने ठीक ठीक जांच करके जानकारी को सही तरह से प्रबन्ध किया (1:3), पवित्र आत्मा की अगुवाई में थियोफिलुस को निर्देश देने के लिये विश्वास की ऐतिहासिक निर्भरता के लिये (1:4) इस लेखन को सावधानी से शोध करके संचित किया गया है।

अन्य जाति होकर, लूका ने मसीह के जीवन का लेखा जोखा लिखने की जिम्मेवारी का अहसास किया होगा जिससे कि ये अन्य जातियों को पढ़ने के लिये उपलब्ध हो सके। तथ्यों से ये साबित लगता है कि लूका "आरामी भाषा को यूनानी शब्दों के साथ

अनुवाद करता और यहूदी रीति रिवाज़ और भूगौलिक स्थिति को वर्णन करके अपने सुसमाचार को और अधिक समझदारी से अपने प्रारभिक पाठकों को पढ़ने योग्य बनाता है।

लूका "प्रिय वैद्य" द्वारा लिखा गया जो बड़े विस्तार से बनाया गया और ये सुसमाचारों में सबसे लम्बा है। ये उद्धारकर्ता को "मनुष्य के पुत्र" के रूप में प्रस्तुत करता है, एक सिद्ध मानव जो खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया (19:10)। मत्ती में हम यीशु को "दाऊद के पुत्र" इस्राएल के राजा की नाईं देखते हैं, मरकुस में हम उसे "प्रभु के सेवक" के रूप में देखते हैं जो दूसरों की सेवा करता है, लूका में हम उसे "मनुष्य के पुत्र" की तरह देखते हैं, लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता, मनुष्यों के बीच में एक सिद्ध मनुष्य, मनुष्यों में से चुना गया, मनुष्यों के बीच परखा गया और उद्धारकर्ता और महायाजक होने के लिये सर्वोच्चतम योग्यता में ठहरा। मत्ती में हम विशेष घटनाओं के झुण्डों को देखते हैं, मरकुस में विशेष घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन देखते हैं पर लूका में हम इन घटनाओं को वैद्य और इतिहासकार के द्वारा विस्तार से देखते हैं।

मनुष्य का पुत्र होकर उसका सिद्ध मानव स्वाभाव, फिर भी परमेश्वर का पुत्र, इस तथ्य को बाहर लाता है कि उसका शारीरिक जन्म उसकी वंशावली के साथ पता लगाया गया जो पीछे आदम तक है (3:38 नोट करें कि मत्ती केवल पीछे अब्राहम तक जाता है) उसकी मानसिक स्थिति का रिकार्ड 2:40–52 में दिया गया है और उसका नैतिक और आत्मिक सिद्धता उसके बपतिस्में में प्रगट होती है – पिता की उस आवाज़ के द्वारा स्वर्ग से और पवित्र आत्मा के अभिषेक के द्वारा (3:21–22)। तो यीशु में हमारे पास वो है जो शारीरिक रूप से सिद्ध, मानसिक और आत्मिक पुरुषत्व की सिद्धता में है।

लूका में मसीह को जैसा देखा गया : यीशु की मानवता और तरस लूका के सुसमाचार में बार बार वर्णन किया गया है। लूका मसीह की सबसे अधिक पुराने प्राचीनों का पूरा ब्यौरा देता है, जन्म और विकास, वह सही मनुष्य का पुत्र है जो जिसे हमारे दुःखों को उठाने के लिये उसकी पहचान पापमय दुःखी पुरुष के साथ की गई है और हमें अमूल्य उद्धार का वरदान प्रस्तुत करता है। यीशु अकेले ही यूनानी मानव सिद्धता के विचार को पूरा करता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय : लिखने का अभिप्राय और तरीका (1:1–4)**
2. **मनुष्य के पुत्र का मनुष्य के साथ पहचान (1:5–4:13)**
   - क. मसीह के जन्म के पहले की घटनाएं (1:5–56)
     - 1:5–25, 1:39–45
     - 1:26–38, 1:46–56
   - ख. घटनायें जो मसीह के जन्म के साथ आती हैं (1:57–2:38)
     - 1:57–66, 2:1–10
     - 1:67–80, 2:21–38
   - ग. मसीह के बचपन की घटनाएं (2:39–52)
     - 2:39–40, 2:41–52
   - घ. मसीह की प्रस्तुति के पहले की घटनाएं (3:1–4:13)
     - 3:1–20, 3:23–38
     - 3:21–22, 4:1–13
3. **मनुष्य के पुत्र की मनुष्यों के लिए सेवकाई (4:14–9:50)**
   - क. मसीह की प्रस्तुति (4:14–30)
   - ख. मसीह की सामर्थ का प्रगटीकरण (4:31–5:28)
     - 4:31–37, 5:1–11, 5:27–28
     - 4:38–44, 5:12–26
   - ग. मसीह के कार्यक्रमों का वर्णन (5:29–6:49)
     - 5:29–39, 6:12–19, 6:46–49
     - 6:1–11, 6:20–45
   - घ. मसीह के कार्यक्रम का विस्तार (7:1–9:50)
     - 7:1–17, 8:16–21, 9:12–27
     - 7:18–39, 8:22–25, 9:28–45
     - 7:40–50, 8:26–39, 9:46–50
     - 8:1–3, 8:40–56
     - 8:4–15, 9:1–11

4. मनुष्य द्वारा मनुष्य के पुत्र का तिरस्कार (9:51—19:27)

क. मसीह के प्रति बढ़ते हुए विरोध (9:51—11:54)

9:51—56	10:30—37	11:29—36
9:57—62	10:38—42	11:37—54
10:1—16	11:1—13	
10:17—29	11:14—28	

ख. मसीह के तिरस्कार की दृष्टिकोण में निर्देश (12:1—19:27)

12:1—12	14:7—15	17:1—10
12:13—34	14:16—24	17:11—21
12:35—48	14:25—35	17:22—37
12:49—59	15:1—7	18:1—8
13:1—9	15:8—10	18:9—17
13:10—17	15:11—32	18:18—34
13:18—21	16:1—13	18:35—43
13:22—35	16:14—18	19:1—10
14:1—6	16:19—31	19:11—27

5. मनुष्यों के लिये मनुष्य के पुत्र की यातनाओं को सहना (19:28—23:56)

19:28—44	21:25—28	22:54—65
19:45—48	21:29—33	22:66—71
20:1—8	21:34—36	23:1—7
20:9—18	21:37—38	23:8—12
20:19—26	22:1—13	23:13—25
20:27—47	22:14—23	23:26—32
21:1—9	22:24—38	23:33—49
21:10—19	22:39—46	23:50—56
21:20—24	22:47—53	

6. मनुष्य के पुत्र का मनुष्यों के सामने प्रमाणीकरण (24:1—53)

24:1—12	24:36—49
24:13—35	24:50—53

यूहन्ना

(अनन्त परमेश्वर का पुत्र)

लेखक और पुस्तक का नाम : दूसरी सदी के आरम्भ से कलीसिया के रीति रिवाजों ने चौथे सुसमाचार का श्रेय प्रेरित यूहन्ना को दिया हैं जो जब्दी का पुत्र और याकूब का भाई था। यीशु ने यूहन्ना और याकूब को "गर्जन के पुत्र" का नाम दिया (मरकुस 3:17)। उसकी मां सलोमी ने गलील में यीशु की सेवा की और उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने के समय वहां उपस्थित थी (मरकुस 15:40—41)। बारहों में से केवल वही यीशु के समीप नहीं था, पर उसे "सबसे प्रिय शिष्य" की तरह बताया गया था (13:23; 18:15—16, 19:26—27)। यूहन्ना अन्दर के घेरे का चेला था और उन तीन में से एक था जिन्हें यीशु ने अपने साथ लिया और रूपान्तरण के पर्वत पर ले गया (मत्ती 17:1), वह पतरस के साथ भी करीबी से सम्बंधित था। मसीह के स्वर्गारोहण के बाद, यूहन्ना वह बना जिसे पौलुस ने "कलीसिया का खम्बा" करके पहचाना (गलातियों 2:9)।

सही अर्थ में यदि कहा जाये तो चौथा सुसमाचार गुमनाम है। लेख में इसके लेखक का नाम नहीं दिया गया है। आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि एक सुसमाचार वास्तव में पत्रियों से भिन्न है। पौलुस की पत्रियां पौलुस के नाम से आरम्भ होती हैं जो प्राचीन समय में पत्र के लेखक का सामान्य दस्तूर था। चारों सुसमाचार के किसी भी लेखक ने अपने आप से नाम की पहचान नहीं दी है, पर लेखकों ने अप्रत्यक्ष रूप से अपने आपको लेखों में प्रगट किया है और परम्पराओं के अनुसार जाने माने थे।

लेखन तिथि : ई.पश्चात 85—90। कलीसिया में ये सुसमाचार "चौथे" सुसमाचार के रूप में जाना जाता है और प्रारम्भिक कलीसिया ये मानती है कि ये उस समय लिखा गया जब यूहन्ना बूढ़ा हो गया। इसलिये ये तिथि 85—90 के बीच की सम्भावित तिथि है। यूहन्ना 21:18,23 कुछ समय बिताने की मांग करती है, पतरस के साथ बूढ़े हो रहे यूहन्ना और अधिक जिया।

विषय और अभिप्राय : शायद बाइबल की दूसरी पुस्तकों की अपेक्षा यूहन्ना स्पष्ट रूप से इस सुसमाचार के विषय और अभिप्राय को बयान करता है, विशेषरूप से ये अभिप्राय का वर्णन थोमा की पुनः जी उठे उद्धारकर्ता से मुठभेड़ का अनुसरण करता है। थोमा ने पुनः जी उठने की वास्तविकता पर शक किया (यूहन्ना 20:24–25) और इस शंका के शीघ्र ही बाद में यीशु चेलों के बीच प्रगट हुए और थोमा से इन शब्दों से बातचीत कीः–

> ***". . . अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो, यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर। यीशु ने उससे कहा, तूने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे मेरा विश्वास किया" (20:26–29)।***

नीचे दिया गया एक बदलाव और यीशु पर विश्वास करने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया है – जो यूहना इस पुस्तक का विषय और अभिप्राय वर्णन करता हैः

> ***"यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाये जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गये। परन्तु वे इसलिये लिखे गये हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (20:30–31)।***

इस अभिप्राय के बयान को रखते हुए, यूहन्ना ने सात चिन्ह आश्चर्यकर्म चुने जो मसीह के व्यक्ति और कार्य के बारे में प्रगट करेंगे जिससे लोग यीशु पर उद्धारकर्ता करके उस पर विश्वास करें। इन चिन्हों ने यीशु की महिमा को प्रगट किया (यूहन्ना 1:14; यशायाह 35:1–2; योएल 3:18; आमोस 9:13)। सात चिन्हों में ये शामिल हैः–

1. पानी से मय बनाना (2:1–11)
2. राजा के कर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (4:46–54)
3. अड़तीस वर्ष के अपंग की चंगाई (5:1–18)
4. भीड़ को खिलाना (6:6–13)
5. पानी पर चलना (6:16–21)
6. अंधे को दृष्टि देना (9:1–7)
7. लाजर को जिलाना (11:1–45)

यूहन्ना के विशेष विषय और अभिप्राय उसके सुसमाचार से आसानी से पहचाने जा सकते हैं – जब मत्ती, मरकुस और लूका से तुलना की जाती हैं।

जब एक यूहन्ना के सुसमाचार की तुलना बाकी तीन सुसमाचारों से करता हैं, तो वह यूहन्ना की प्रस्तुति की सुस्पष्टता से स्तब्ध रह जाता है। यूहन्ना यीशु की वंशावली शामिल नहीं करता – जन्म, बपतिस्मा, परीक्षाएं, दुष्टात्माओं को निकालना, दृष्टान्त, रूपान्तरण, प्रभु भोज की विधि का आरम्भ करना, गेतसेमनी बाग में उसकी पीड़ा या उसका स्वर्ग पर जाना। यूहन्ना की प्रस्तुति यीशु का यरूशलेम में अपनी सेवकाई का वर्णन करना, यहूदियों के देश का भोज, यीशु का व्यक्तिगत लोगों के साथ सम्पर्क और एकान्त में चर्चाएं (3:1–4:38, 18:28–19:16) और उसके चेलों की सेवकाई (13:1–17:26)। सुसमाचार की पुस्तक का बड़ा अंग जिसमें "चिन्हों की पुस्तक" जिसमें सात आश्चर्यकर्म या "चिन्ह" हैं जो यीशु को मसीह परमेश्वर के पुत्र की घोषणा करते हैं। उदाहरण के लिये, 5000 लोगों को खिलाना (6:1–15), यीशु ने अपने आपको जीवन की रोटी के रूप में प्रगट किया, जो स्वर्गीय पिता संसार के जीवन के लिये देता है (6:25–35)। दूसरा नोट करने वाला और चौथे सुसमाचार की अतिरिक्त विशेषता "मैं हूं" की श्रृंखला के वर्णन जो यीशु के द्वारा बनाये गये थे (6:35; 8:12, 10:7,9,11,14; 11:25; 14:6; 15:1,5)।

इस सुसमाचार की श्रेष्ठता को महत्व में रखना चाहिये। सुसमाचारों का अभिप्राय जीवनियां नहीं थीं। हर एक सुसमाचार के लेखक को अत्याधिक सूचनाओं और वह सामग्री जो उसके अभिप्राय की सेवा करेगी के आधार पर चुना गया है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि यदि सभी शब्द जो यीशु के होंठों से मत्ती, मरकुस और लूका में दिये गये थे यदि जोर की आवाज़ से पढ़े जाते तो यदि जो समय लिया जाता वह केवल तीन घन्टे का होता।

मसीह जो यूहन्ना में देखा गया : जबकि बाइबल के बहुत से स्थानों में मसीह का ईश्वरत्व विशिष्ट विषय है, कोई और दूसरी पुस्तक नहीं है जिसने यीशु के ईश्वरत्व को इतनी शक्तिशाली रूप से प्रस्तुत किया हो कि वह परमेश्वर के पुत्र का अवतार है। तथ्य ये है कि वह जिसकी पहचान "व्यक्ति जो यीशु कहलाता है" के नाम से की गई है (9:11) वह "परमेश्वर" भी कहलाया गया – एक केवल एक (1:18) "मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र" (6:69) या "परमेश्वर का पवित्र जन" (6:69)।

यीशु मसीह का ये ईश्वरत्व की घोषणा आगे चलकर सात "मैं हूं" में विकसित हुई जो यीशु ने कहा और जिसका यूहन्ना के सुसमाचार ने रिकार्ड किया। ये सात वर्णन इस प्रकार हैंः

1. जीवन की रोटी "मैं हूं" (6:35)
2. संसार की ज्योति" मैं हूं" (8:12)
3. द्वार "मैं हूं" (10:7,9)
4. अच्छा चरवाहा "मैं हूं" (10:11,14)
5. पुनरुत्थान और जीवन "मैं हूं" (11:25)
6. मार्ग, सच्चाई और जीवन "मैं हूं" (14:6)
7. सच्ची दाखलता "मैं हूं" (15:1,5)

यूहन्ना के सुसमाचार की दूसरी सुस्पष्ट विशेषता, फिर यीशु के व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिसके पांच गवाह हैं जो ये कहते कि वह परमेश्वर का पुत्र है। यूहन्ना 5:31–47 में यीशु अपने विरोधियों की बहस का उत्तर देता है। उन्होंने दोष लगाया कि उसके गवाही के दावों में पुष्टि की काफी कमी है, तो यीशु उन्हें दिखाता है कि उनके दोष सत्य नहीं है – और दूसरे दूसरे गवाह पेश करके कि उसके दावे सही हैं। दूसरे दावों में ये शामिल हैं उसका पिता (5:32,37), यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (5:33), उसके आश्चर्यकर्म (5:36) धर्मशास्त्र (5:39) और मूसा (5:46) बाद में 8:14 में वह घोषणा करता है कि उसकी गवाही सच्ची है। कई अवसरों पर यीशु अपने को पुराने नियम से संदर्भ देता है (मिलान करता है) "मैं हूं" या यहोवा (4:25–26, 8:24,28,58; 13:19, 18:5–6,8) उसकी कुछ ईश्वरत्व की पुष्टि इनमें पाई जाती है – 1:1; 8:58; 10:30; 14:9; 20:28।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. परिचय : परमेश्वर के पुत्र का देहधारण (1:1–18)

क. मसीह की ईश्वरत्व (1:1–2)
ख. मसीह का देहधारण से पहले का कार्य (1:3–5)
ग. मसीह का मार्ग सुधारने वाला (1:6–8)
घ. मसीह का तिरस्कार (1:9–11)
ङ. मसीह की स्वीकृति (1:12–13)
च. मसीह का देहधारण करना (1:14–18)

2. परमेश्वर के पुत्र की प्रस्तुति (1:19–4:54)

क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा (1:19–34)
ख. यूहन्ना के चेले (1:35–51)
ग. काना के विवाह में (2:1–11)
घ. यरूशलेम के मन्दिर में (2:12–35)
ङ. निकोदीमुस को (3:1–21)
च. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा (3:22–36)
छ. सामरी स्त्री को (4:1–42)
ज. कफरनहूम का अधिकारी (4:43–54)

3. परमेश्वर के पुत्र का विरोध (5:1–12:50)

क. यरूशलेम के भोज में (5:1–47)

5:1–17	5:33–35	5:39–47
5:18–24	5:36	
5:25–32	5:37–38	

ख. गलील में फसह के समय के दौरान (6:1–71)

6:1–14	6:26–40	6:59–65
6:15–25	6:41–58	6:66–71

ग. यरूशलेम के मन्डपों का पर्व (7:1–10:21)

7:1–24	8:12–30	9:13–34
7:25–39	8:31–47	9:35–41
7:40–53	8:48–59	10:1–21
8:1–11	9:1–12	

घ. यरूशलेम में समर्पण का पर्व (10:22–42)

10:22–30	10:31–42

ङ. बैतनिय्याह में (11:1–12:11)

11:1–16	11:38–46	12:1–11
11:17–29	11:47–53	
11:30–37	11:54–57	

च. यरूशलेम में (12:12–50)

12:12–19	12:27–36	12:44–50
12:20–26	12:37–43	

4. परमेश्वर के पुत्र द्वारा निर्देश (13:1–16:33)

क. क्षमा के सम्बन्ध में (13:1–20)

13:1–4	13:5–20

ख. उसके पकड़वाये जाने के विषय (13:21–30)

ग. उसके चले जाने के विषय (13:31–38)

घ. स्वर्ग के विषय (14:1–15)

14:1–6	14:7–15

ङ. पवित्र आत्मा के विषय (14:16–26)

च. शान्ति के विषय (14:27–31)

छ. फलदायकता के विषय (15:1–17)

15:1–11	15:12–17

ज. संसार के विषय (15:18–16:4)

15:18–27	16:1–4

झ. पवित्र आत्मा के विषय (16:5–15)

ञ. उसके लौटने के विषय (16:16–33)

16:16–22	16:23–33

5. परमेश्वर के पुत्र की मध्यस्तता (17:1–26)

17:1–12	17:13–21	17:22–26

6. परमेश्वर के पुत्र का क्रूस पर चढ़ाया जाना (18:1–19:42)

18:1–11	19:1–15	19:31–37
18:12–24	19:16–22	19:38–42
18:25–27	19:23–27	
18:28–40	19:28–30	

7. परमेश्वर के पुत्र का पुनः जी उठना (20:1–31)

क. खाली कब्र (20:1–10)

ख. जी उठे प्रभु का दिखाई देना (20:11–31)

20:11–18	20:24–29
20:19–23	20:30–31

8. समापन : झील के किनारे प्रगट होना (21:1–25)

क. सात चेलों को दिखाई देना (21:1–14)

21:1–11	21:12–14

ख. पतरस को वचन (21:15–23)

21:15–17	21:18–23

ग. सुसमाचार का समापन (21:24–25)

प्रेरितों के काम

(सुसमाचार का फैलाया जाना)

लेखक और पुस्तक का नाम : हालांकि प्रेरितों के काम में लेखक का नाम नहीं दिया गया है, सबूत उस निष्कर्ष पर ले जाता है कि लेखक 'लूका' था। प्रेरितों के काम लूका के द्वारा लिखे गये शृंखला का दूसरा हिस्सा है, एक डॉक्टर का थियोफिलुस को, "सब कुछ जो यीशु ने करना और सिखाना" आरम्भ किया – उसके विषय है।

शीर्षक के सम्बन्ध में सभी उपलब्ध यूनानी लेख इसे "कार्य" बताते हैं या "प्रेरितों के काम" शायद सही शीर्षक नहीं है क्योंकि इसमें सभी प्रेरितों के कार्य नहीं हैं। केवल पतरस और पौलुस का ही वर्णन किया गया है, जबकि पवित्र आत्मा के आने की प्रतिज्ञा सभी प्रेरितों के लिये थी (1:2–8)। जिन्हें तब पूरे संसार में पवित्र आत्मा की सामर्थ से सुसमाचार प्रचार करने जाता था। बहुतों ने महसूस किया कि इस पुस्तक का शीर्षक "पवित्र आत्मा के कार्य" होना सही होता, क्योंकि ये मसीहत के फैलाव के विषय जब से प्रेरित 2 के अनुसार पवित्र आत्मा के आने के समय से वर्णन किया गया है। इस प्रेरितों के कार्य में ये शामिल हैंः पतरस, यूहन्ना, इस्तेफनुस, फिलिप्पुस, याकूब बरनबास, सिलास और पौलुस।

लेखन तिथि : ईस्वी. 61। पुस्तक की तिथि के विषय स्टेनली टुसाएन्ट ने इस प्रकार सारांश दिया हैः

प्रेरितों के काम को यरूशलेम के 70 ईस्वी में नष्ट होने के पहले लिखा गया है। अवश्य है कि इस प्रकार की घटना के आकार या महत्वता की अनदेखी नहीं की जा सकती। विशेष रूप से ये पुस्तक के विषय के प्रकाश में सत्य हैः परमेश्वर का यहूदियों से फिर कर अन्य जातियों की ओर मुड़ना – क्योंकि यहूदियों ने यीशु मसीह का तिरस्कार किया।

लूका मुश्किल में पौलुस की मृत्यु का वर्णन छोड़ता, परम्परा के अनुसार ये तिथि ईस्वी 66-68 बताई जाती है, यदि ये उसके प्रेरितों के काम को लिखने के पहले होता।

लूका ने नेरोनियन के सताव (नीरो बादशाह का) का भी वर्णन नहीं किया जो रोम की ईस्वी 64 की आग के बाद हुआ।

इससे अधिक नीरो के पहले मसीहत का बचाव प्रेरितों के कार्य की पुस्तक को इस्तेमाल कर जो निचले अधिकारियों ने पौलुस के प्रति शासित किया तो ये नीरो के सताव के समय का वर्णन होता। उस समय नीरो का जबरदस्त इरादा कलीसिया को नष्ट करने का था, तो प्रेरितों के कार्य का बचाव का थोड़ा असर उस पर होता (विचार बदलने का)।

साधारणः शोधकर्ताओं द्वारा लेखन तिथि ईस्वी 60–62 मानी जाती है। लेखन का स्थान रोम होगा या दोनों केसरिया या रोम। लिखने के समय पौलुस की रिहाई (करीब) होने पर थी या हो गई होगी।

विषय और अभिप्राय : प्रेरितों के काम की पुस्तक नये नियम की पुस्तकों में अद्भुत है, क्योंकि ये ही अकेली पुस्तक है जो नये नियम की दूसरी पुस्तकों के जोड़ उपलब्ध कराती है। लूका की दूसरी पुस्तक होकर प्रेरितों के काम ने जारी रखा जो यीशु ने **"करना और शिक्षा देना आरम्भ किया"** (1:1) जैसा सुसमाचारों में रिकार्ड किया गया है। ये यीशु के स्वर्ग पर जाने से आरम्भ करता है और नये नियम की पत्रियों तक जारी रखता है। इसमें यीशु मसीह की सेवकाई को पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों में कार्य जारी रखा है, जो प्रचार करने गये और कलीसिया की स्थापना की–जो मसीह की देह है। प्रेरितों के काम सुसमाचारों और पत्रियों के बीच एक एतिहासिक सम्बन्ध है।

ये सम्बन्ध केवल हमारे ही लिये नहीं बनाती पर ये पौलुस के जीवन का वर्णन करती है और उसके पत्रों के लिये ऐतिहासिक अवसर प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में, प्रेरितों के काम कलीसिया के जीवन के प्रथम 30 वर्षों का हिसाब किताब बताता है।

प्रेरितों के काम के अभिप्राय के विभिन्न दृष्टिकोण के सारांश बनाने के बाद स्टेनली टुसैन्ट लिखते हैंः–

> पुस्तक का अभिप्राय इस प्रकार वर्णन किया गया है : लूका के सुसमाचार के साथ नियमानुसार और प्रभु सत्ता द्वारा सीधे राज्य के सन्देश को यहूदियों से अन्य जातियों की ओर दिया गया, और यरूशलेम से रोम तक पहुंचा। लूका के सुसमाचार में प्रश्न का उत्तर दिया गया है, "यदि मसीहत की जड़ें पुराने नियम और यहूदाबाद में हैं, तो ये पूरे संसार का धर्म कैसे बन गया?" प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका के सुसमाचार की समस्या का उत्तर देने में जारी है।

प्रेरित 1:8 प्रेरितों के काम का प्रसंग या विषय बताता है – अन्दर रहने वाला पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को समर्थ बना रहा है कि उद्धारकर्ता के गवाह यरूशलेम, यहूदा और सामरिया और पृथ्वी के छोर तक बने (संसार में)।

प्रेरितों के काम में मसीह को देखा गया : पुनः जी उठने वाला उद्धारकर्ता प्रेरितों के काम के सन्देशों में केन्द्रिय विषय है। पुराने नियम के धर्मशास्त्र, ऐतिहासिक पुनरुत्थान, प्रेरितों की गवाही, और पवित्र आत्मा की कायल करने वाली सामर्थ – सभी

गवाही देते हैं कि यीशु प्रभु और मसीह है (2:22–36; 10:34–43)। ***"उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"*** (10:43) ***"और किसी के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें"*** (4:12)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. यरूशलेम में गवाह (1:1–6:7)

क. चुने हुओं से आशा (1:1–2:47) तरक्की की रिपोर्ट 1

1:1–8	1:12–26	2:14–36
1:9–11	2:1–13	2:37–47

ख. यरूशलेम की कलीसिया का विस्तार (3:1–6:7) तरक्की रिपोर्ट 2

3:1–10	4:13–31	5:17–32
3:11–26	4:32–37	5:33–42
4:1–12	5:1–16	6:1–7

2. पूरे यहूदा और सामरिया में गवाह (6:8–9:31)

क. स्तिफनुस का शहीद होना (6:8–8:1क)

1) स्तिफनुस का कैद किया जाना (6:8–7:1)

2) स्तिफनुस का सन्देश (7:2–53)

7:2–8	7:17–29	7:44–53
7:9–10	7:30–34	
7:11–16	7:35–43	

3) स्तिफनुस पर हमला (7:54–8:1क)

ख. फिलिप्पुस की सेवकाई (8:1ख–40)

8:1ख–3	8:4–24	8:25–40

ग. शाऊल का सन्देश (9:1–19क)

घ. शाऊल का झगड़ा (9:19ख–31) तरक्की रिपोर्ट 3

3. पृथ्वी के छोर तक गवाह (9:32–28:31)

क. अन्ताःकिया की कलीसिया का विस्तार (9:32–12:24) तरक्की रिपोर्ट 4

9:32–43	10:34–48	12:1–19
10:1–23	11:1–18	12:20–24
10:24–33	11:19–30	

ख. आसिया की कलीसिया का विस्तार (12:25–16:5) प्रगति रिपोर्ट 5

13:1–25	14:8–18	15:30–35
13:26–43	14:19–28	15:36–41
13:44–52	15:1–11	16:1–5
14:1–7	15:12–29	

ग. विभिन्न क्षेत्रों में कलीसिया का विस्तार (16:6–19:20) प्रगति रिपोर्ट 6

16:6–13	17:1–9	18:1–21
16:14–21	17:10–15	18:22–28
16:22–34	17:16–21	19:1–10
16:35–40	17:22–34	19:11–20

घ. रोम तक की कलीसिया का विस्तार (19:21–28:31) प्रगति रिपोर्ट 7

19:21–41	22:1–30	26:1–32
20:1–12	23:1–11	27:1–13
20:13–16	23:12–22	27:14–44
20:17–38	23:23–35	28:1–10
21:1–14	24:1–27	28:11–29
21:15–26	25:1–22	28:30–31
21:27–40	25:23–27	

भाग 2
पौलुस की पत्रियां

परिचय : ऐतिहासिक पुस्तकों का सर्वेक्षण समाप्त करके (सुसमाचार और प्रेरितों के काम), अब हम नये नियम की 21 पत्रियों पर आते हैं, यदि एक प्रकाशितवाक्य जुड़ जाये तो 22 हो जायेंगे, (जो वास्तव में है (देखें प्रकाशित 1:4) इसके अद्‌भुत भविष्य सूचक स्वाभाव के कारण, हम इस सर्वेक्षण में इसे नये नियम की भविष्यवाणी के पुस्तक के रूप में रखते हैं। पत्रियों को पौलुस की पत्रियों और सामान्य पत्रियों में विभाजित किया गया है। पौलुस की पत्रियां दो वर्ग में बांटी जाती है – 9 पत्रियां कलीसियाओं को लिखी गई और 4 पास्टरों से सम्बंधित पत्रियां हैं। तब इसके बाद 8 इब्रानी मसीहियों की पत्रियां आती हैं। स्वाभाविक है कि बहुत से प्रश्न उठेंगे – सुसमाचारों के मतलब और उनके मसीहियों के लिये लागू करने के प्रश्न उठेंगे। इस प्रकार पत्रियां इन प्रश्नों का उत्तर देती हैं, व्यक्ति और मसीह के कार्य का अनुवाद बताती हैं और सुसमाचार की सच्चाई को विश्वासियों को लागू भी करती हैं।

पौलुस की पृष्ठभूमि (पहले की जानकारी) : पौलुस बहुत वर्षों तक तरसुस का शाऊल के नाम से जाना जाता था। वह यहूदी माता–पिता से जन्मा था – फिलिकिया के तरसुस में। वह न केवल यहूदी था, उसकी अपनी गवाही के अनुसार वह एक फरीसी था, एक फरीसी का पुत्र (प्रेरित 23:6) इब्रानियों का इब्रानी (इब्रानी और आरामी भाषा बोलता था) बिन्यामीन के गोत्र का था। (फिलिप्पियों 3:4–5) और जवानी में तम्बू बनाने के व्यापार को सिखाया गया था (प्रेरित 18:3)। जवानी में वह यरूशलेम गया होगा और उसकी गवाही के अनुसार प्रसिद्ध गमलिएल के आधीन शिक्षा प्राप्त की जो हिलेल की पाठशाला का मशहूर शिक्षा था (प्रेरित 22:3)। उसके अध्ययनों में उसने अपने कई साथियों की अपेक्षा यहूदियों के धर्म की उच्च शिक्षा ली जो अपने प्राचीनों की परम्पराओं को पालन करने में बड़ा जोशीला था (गलातियों 1:14)।

उसका यहूदियों के धर्म का जोश इतना बढ़ा कि उसने कलीसिया को भी सताया। एक जवान फरीसी होकर वह स्तिफनुस की हत्या में शामिल था और स्वीकृति दी थी (प्रेरित 7:58–83)। मसीहियों के विरूद्ध उसने अपने अभियान में दोनों स्त्री, पुरुषों को सताया और महायाजक से पत्र लेकर कैद करने यात्रा में भी दूसरे दूसरे शहरों में मसीह की कलीसियाओं को नष्ट करने के लिये गया (प्रेरित 26:10–11; गलातियों 1:13)। ये उसके मिशनों में से एक था जब वह दमिश्क के रास्ते पर बदल गया (प्रेरित 9)।

पौलुस यूनानी संस्कृति से भी परिचित था क्योंकि उसने यूनानी शिक्षा भी प्राप्त की थी (प्रेरित 17:28, तीतुस 1:12)। इसने उसे यूनानी विचारों से परिचित करा दिया था। ऐसा विद्यार्थी होकर वह बहुत से लेखकों के कथनों से परिचित था जो उससे पहले हुए थे और जो उस समय जीवित था। साथ ही पौलुस एक रोमी नागरिक था – इसलिये कि रोम में पैदा हुआ था (प्रेरित 22:28) इसके कारण वह जब फिलिप्पी के बन्दीगृह में था कैसर की दोहाई दे सका (प्रेरित 16:37–39)।

फलस्वरूप पौलुस इस प्रकार योग्य चुना हुआ था जो सुसमाचार के संदेश को अन्यजातियों तक ले जायेगा। पौलुस आसानी से कह सका, ***"मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं"*** (1 कुरिन्थियों 9:22)।

पौलुस का परिवर्तन : मसीह की कलीसिया को बड़ी क्रियाशीलता और लगातार सताते हुए जब वह दमिश्क के मार्ग पर जा रहा था – महिमामय पुनः जी उठे यीशु से उसकी मुठभेड़ हो गई जिसका उसके जीवन में अत्याधिक प्रभाव पड़ा (प्रेरित 9:3–30)।

उसने मसीहीं के इस दावे का कि यीशु ही मसीह – परमेश्वर का पुत्र है इसका इंकार किया, उसने उसके जी उठने पर विश्वास नहीं किया जिसे स्तिफनुस ने दावा किया जब वह चिल्ला उठा, ***"देखो! मैं स्वर्ग को खुला हुआ देखता और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने खड़ा देखता हूं"*** (प्रेरित 7:56)। "झूठे" वे चिल्लाये और उसे पत्थरवाह किया। शाऊल वहां खड़ा हुआ उसके घात किये जाने पर सहमत था। पर जब प्रभु यीशु ने शाऊल से बातें की उस दिन जो दमिश्क के बाहर बड़ा अनुभव था, उसने जाना कि स्तिफनुस सही था और वह गलत था। यीशु जीवित था वह परमेश्वर का पुत्र है। इस प्रकार दमिश्क के मन्दिर में शाऊल (अब पौलुस) ने मसीह को उद्धारकर्ता कर घोषणा की। जबकि अनुभव अचानक और नाटकीय था, असर लम्बा रहा। इस प्रभाव ने मनोवैज्ञानिक रूप से और अध्यात्मिक रूप से पुनः सही करने का कारण बना। ये उसके अरब में समय बिताने और दमिश्क में, यरूशलेम पहली बार आने के पहले अधिक प्रभावशाली रहा होगा (गलातियों 1:16–19)। तब वह अपने घर की सीमा पर वापस गया और लगभग 8–10 वर्षों तक उसकी गतिविधियों को बहुत कम जाना गया है।

पौलुस की पत्रियों का विशिष्ट वर्णन : पौलुस की हर एक पत्रियों पर पुनः दृष्टि करने से पहले आइये पौलुस की हर पत्री की कुछ विशेषताओं को नोट करें।

बन्दीगृह की पत्रियां

इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन कुछ हैं जो "बन्दीगृह की पत्रियां" कहलाती हैं। क्योंकि ये उस समय लिखी गई थीं जब पौलुस कैद में था या जंजीरों से बंधा हुआ था। हर पत्री इस परिस्थिति का सन्दर्भ देती है (इफिसियों 3:1, 4:1, 6:20; फिलिप्पियों 1:7,13; कुलुस्सियों 4:10, 18; फिलेमोन 1, 9, 10)।

ये तथ्य कि ये महान पत्रियां लिखी गईं जब पौलुस रोम में कैद में था या वह अपने ही किराये के मकान में रोमी सिपाही के साथ जंजीर से बांधा हुआ था (प्रेरित 28:30)। ये अद्‌भुत उदाहरण है कि परमेश्वर कैसे हमारी यातनाओं को ले लेता और उसे अपनी महिमा के लिये इस्तेमाल करता है और सेवकाई के लिये हमारे सुअवसर बढ़ते हैं (फिलिप्पियों 1:12–13)। ये दिखाता है कि हम किस प्रकार जंजीरों से बांधे जायेंगे और रोके जायेंगे, पर ये कि परमेश्वर का वचन कैद नहीं हैं (2 तीमुथियुस 2:9)।

पुरोहित (धर्म गुरू) की पत्रियां

पौलुस की दूसरी बड़ी झुण्ड की पत्रियां साधारण तौर से "पुरोहित पत्रियां" कहलाती हैं – ये शब्द बताते हैं कि ये तीन शब्द तीमुथियुस और तीतुस को सम्बोधित करती है (1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस)। प्रारम्भ में ये व्यक्तिगत पत्र माने जाते थे और फिलेमोन के साथ अलग किये गये थे, पर उनके मज़बूती से कलीसिया के जीवन में रहने के कारण वे "पुरोहित पत्रियां" कहलाना आरम्भ हो गईं – जो व्यक्तिगत को सम्बोधित किया गया था – इन पुस्तकों में व्यक्तिगत और प्राइवेट संचार था, पर सूचना जो चरित्र/स्वाभाव में औपचारिक अधिक है। पौलुस ने उन्हें तीमुथियुस और तीतुस को लिखा कि उन्हें कलीसिया की पास्टर की देखभाल के लिये अगुवाई कर सके, जो परमेश्वर का घर है (1 तीमुथियुस 3:14–15; 4:6–15; 2 तीमुथियुस 2:2)।

ये पत्रियां कलीसिया के शासन–प्रबन्ध, नीति और व्यवहार के विषय में बताती हैं वे सभी कलीसिया के पास्टर की देखभाल से अधिक सम्बंधित थे। सारांश में ये पुस्तकें परमेश्वर के द्वारा बनाई गई हैं कि वे हमारी कलीसिया की सेवकाई की जिम्मेवारियों में और विकास और स्थानीय कलीसियाओं की अगुवाई में सहायता प्रदान करें।

इसलिये महत्वपूर्ण दृष्टि डालने की आवश्यकता है – पौलुस की 13 पत्रियों पर, ये वे पुस्तकें हैं जो उसने अन्त में लिखीं। उसके विषय में क्या विशेष बात हैं? जबकि ये पुस्तकें कलीसिया के नियम सेवकाई और संस्था से सम्बन्ध रखती हैं तो ये पहले क्यों नहीं हैं? यदि आप और मैं इसे कर रहे हैं (विशेषकर आज) तो सबसे पहले हम प्रबन्ध सम्बन्धी संस्था को सही करने का प्रयास करेंगे, उसकी बनावट और तब धार्मिक शिक्षा की चिन्ता करते।

इसलिये यहां कुछ सुझाव हैं जो प्रबन्ध सम्बंधी सही करने के बारे में हैं:–

सुझाव 1 : ये सही है कि संस्था और व्यवस्था महत्वपूर्ण हैं। कलीसिया एक आत्मिक देह है और हर एक विश्वासी उसका सदस्य है जिसे विशेष जिम्मेवारी और कार्य करना है। प्राथमिक आवश्यकताएं जो जरूरी हैं – सही काम करने के लिये वचन की शिक्षा और समझ होना चाहिये – साथ ही मसीह की तरह जीने के लिये अपने जीवन में लागू करना चाहिये। ये कलीसिया को नैतिक और आत्मिक नींव / आधार उपलब्ध कराते हैं जिस पर हम अपने तरीके, योजना और प्रबन्ध को आधार मानकर रखते हैं। तो जबकि हमारे तरीके विभिन्न होंगे पर उन्हें परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों और नैतिकता के विपरीत नहीं होना चाहिये।

उदाहरण के लिये, सहारा देने के लिये कलीसिया दोनों सामाजिक और व्यक्तिगत जिम्मेवारी हैं, पर पैसा देना और एकत्रित करना इस प्रकार से करना चाहिये कि बाइबल के सिद्धान्तों का उल्लंघन न हो। विश्वासियों को स्वतः ही देना चाहिये और रीति/तरीकों से मोड़ तोड़ नहीं करना चाहिये जो सिद्धान्तों को तोड़ देते हैं (2 कुरिन्थियों 9:6–10)।

सुझाव 2: संस्था को सही शिक्षा के आधार पर होना चाहिये ये वचन को सही तरह से लेने पर जड़ पकड़ी जाती है (2 तीमुथियुस 2:15)। परमेश्वर का उद्देश्य सत्य, आत्मिक रूप से योग्य लोग उसे लागू करते हैं (1 तीमुथियुस 3:1–10)। ये कलीसिया के स्वास्थ के लिये जरूरी है। जब विश्वासी कलीसिया को परम्पराओं के आधार पर चलाने का प्रयास करते हैं तो ऐसी संस्था के साथ समाप्त हो जाते जो बाइबल आधारित नहीं है और जिसमें आत्मिक धुन या मनोभाव की कमी और जैसा परमेश्वर करना चाहता उसकी योग्यता की कमी होती है।

ये पुस्तकें जैसा पहले नहीं बताया गया, ये पुस्तकें कलीसिया के प्रशासन के मामलों को देखती हैं। इससे पहले कि परमेश्वर कलीसिया के लिये दिशा निर्देश देता – उसने हमें रोमियों, 1 और 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों को दिया है। क्या ये इसलिये कि संस्था या संघटन महत्वपूर्ण नहीं है? नहीं! ये इसलिये है कि संस्था और प्रबन्धन प्राथमिक नहीं हैं, पर कलीसिया के विकास के लिये बाद को हैं। ये इसलिये भी है क्योंकि ठोस शिक्षा और आत्मिकता है जो अन्त में ऐसी सेवकाई उत्पन्न करती है जो परमेश्वर के स्तर के योग्य हैं और सेवकाई में मसीह की आत्मा और चरित्र को प्रगट करती है।

पौलुस की हर एक पत्री एक सी है, फिर भी अलग तरह से प्रभु यीशु मसीह का वर्णन करती हैं, सुसमाचार के संदेश और उसके साथ विश्वासियों की संगति/एकता।

नीचे दिया गया चार्ट भिन्नता दिखाता है :–

प्रभु यीशु पर बल जोर/महत्व	
रोमियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की सामर्थ
1 कुरिन्थियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का ज्ञान
2 कुरिन्थियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की तसल्ली
गलातियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की धार्मिकता
इफिसियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का धन
फिलिप्पियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की परिपूर्णता
कुलुस्सियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की भरपूरी
1 थिस्सलुनीकियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञा
2 थिस्सलुनीकियों	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का पुरुस्कार
1 तीमुथियुस	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का मध्यस्त
2 तीमुथियुस	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का न्यायी
तीतुस	मसीह हमारे लिये परमेश्वर की कृपा
फिलेमोन	मसीह हमारे लिये परमेश्वर का भरोसा

सुसमाचार के संदेशों का महत्व	
रोमियों	सुसमाचार और उसके संदेश
1 कुरिन्थियों	सुसमाचार और उसकी सेवकाई
2 कुरिन्थियों	सुसमाचार और उसके सेवक
गलातियों	सुसमाचार और उसको विकृत करने वाला
इफिसियों	सुसमाचार और उसका स्वर्ग
फिलिप्पियों	सुसमाचार और उसकी संसारिकता
कुलुस्सियों	सुसमाचार और उसकी विचारधाराएं
1 थिस्सलुनीकियों	सुसमाचार और उसकी कलीसिया का भविष्य
2 थिस्सलुनीकियों	सुसमाचार और मसीह विरोधी
1 तीमुथियुस	सुसमाचार और उसके पास्टर
2 तीमुथियुस	सुसमाचार और उसके विरोध
तीतुस	सुसमाचार और उसका प्रयोग
फिलेमोन	सुसमाचार और उसका महत्व

विश्वासियों के मिलने (संघ) पर सुसमाचार का महत्व	
रोमियों	मसीह में न्याय है
1 कुरिन्थियों	मसीह में पवित्रता/शुद्धता है
2 कुरिन्थियों	मसीह में तसल्ली है
गलातियों	मसीह में स्वतंत्रता है
इफिसियों	मसीह में बढ़ा हुआ है
फिलिप्पियों	मसीह में जय जयकार है
कुलुस्सियों	मसीह में पूर्ण है
1 थिस्सलुनीकियों	मसीह में अनुवाद है
2 थिस्सलुनीकियों	मसीह में क्षतिपूर्ति है
1 तीमुथियुस	मसीह में अभिलाषाएं हैं
2 तीमुथियुस	मसीह में दृढ़ता है
तीतुस	मसीह में क्रियाशीलता है
फिलेमोन	मसीह में प्रेरणा है

रोमियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की सामर्थ)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा पत्र बताता है – इसका लेखक पौलुस है (1:1), बिना किसी विकल्प के प्रारम्भिक कलीसिया से ये पत्री पौलुस के नाम की हुई है। पत्री में बहुत से ऐतिहासिक संदर्भ हैं जो पौलुस के जीवन के जाने–माने तथ्यों से सहमत हैं। पुस्तक के धार्मिक शिक्षा के सिद्धान्त के विषय भी पौलुस के दूसरे लेखन के साथ स्थिर या लगातार बने हुए हैं। उसकी दूसरी पुस्तकों के साथ तुलना के द्वारा तथ्य एकदम प्रगट हो जाता है।

रोमियों की पत्री – जो पौलुस का "महानतम कार्य" कहलाती है। इसका शीर्षक इस तथ्य से पाती है कि ये रोम की कलीसिया को लिखा गया (1:7,15)। पौलुस ने रोम में कलीसिया स्थापित नहीं की पर जैसा वह अन्य जातियों के लिये प्रेरित था पर उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह रोम के विश्वासियों से भेंट करें (15:22–23) जिससे कि वह उन्हें आगे विश्वास में दृढ़ कर सके और वहां भी सुसमाचार प्रचार करें (1:13–15)।

रोम में सेवा करने की इच्छा से उसने रोमियों को उसके आने की तैयारी करने को लिखा (15:14–17)। ये कुरिन्थियों से लिखा गया, जबकि फिलिस्तीन से गरीबों के लिये दान इक्ट्ठा करने के बाद वहां से वह यरूशलेम को गया कि पैसे दे सके। और चाहता था कि वहां से वह रोम होते हुए स्पेन को जाये (15:24)। पौलुस रोम को तो गया पर एक कैदी के रूप में ऐसा दिखता है कि एक स्त्री फीबा जो कुरिन्थियों के पास क्रिखिया की कलीसिया की सेविका थी (16:1) ने पत्र को रोम तक पहुंचाया।

लेखन तिथि : ई.पश्चात 57–58। इसे 57–58 ईस्वी प. में लिखा गया लगभग उसकी तीसरी मिशन यात्रा के अन्त में (प्रेरित 18:23–21:14; रोमियों 15:19)। पौलुस के 15:26 के वर्णन के दृष्टिकोण में ऐसी प्रतीत होता है कि पौलुस ने पहले ही मकीदूनिया और अरवया की कलीसियाओं से उनका अनुदान प्राप्त कर लिया है (जहां कुरिन्थ बसा था) इसका मतलब है कि वह कुरिन्थ में आ चुका था और अभी फिर कुरिन्थ नहीं आ पाया था – जब उसने इस कलीसिया को लिखा (1 कुरिन्थियों 16:1–4; 2 कुरिन्थियों 8–9) रोमियों के लेखन को तुरन्त 1 और 2 कुरिन्थियों की पत्री जिनकी तिथि ई.पश्चात 55 है उसे बाद लिखी गई है।

विषय और अभिप्राय : रोमियों की पत्री विशेष समस्याओं को बताने के लिये नहीं लिखी गई। जैसा कि उसकी दूसरी पत्रियां लिखी गईं। रोमियों को लिखने के तीन स्पष्ट अभिप्राय हैं। **पहला** यरूशलेम से लौटने पर रोम को आने की घोषणा और उसके आने के लिये कलीसिया की तैयारी (15:24,28–29, प्रेरित 19:21)। पौलुस उन्हें अपनी योजना के बारे में सूचित करना चाहता था और आशा करता और चाहता था कि उसकी पूर्ति के लिये प्रार्थना करें (15:30–32)। **दूसरा** अभिप्राय ये था कि सुसमाचार के सन्देश को पूरे विस्तार के साथ प्रस्तुत करें जिसके करने के लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया था। प्रेरित न केवल तैयार था कि **"आपको जो रोम में हो सुसमाचार प्रचार करें"** (1:15), पर वह चाहता था कि वे इसके अर्थ की पूरी समझ रखें और जीवनों में बढ़ाये जिसमें ये शामिल हैः पूर्व की (न्याय जिसका अर्थ है कि एक को धर्मी घोषित किया जाये) वर्तमान (शुद्धिकरण जिसका अर्थ है कि अलग करना) और भविष्य (महिमामय जिसका अर्थ है मसीह की महिमा को बांटना) **तीसराः** अभिप्राय उन प्रश्नों से सम्बंधित है जो यहूदियों और रोम के अन्यजाति मसीहियों के बीच उठे जैसेः सुसमाचार व्यवस्था के साथ क्या करता है और पुराने नियम के रीति रिवाज़ जैस खतना के साथ? यहूदियों के विषय क्या है? क्या परमेश्वर ने यूहदियों को अलग कर दिया है? क्या वह यहूदियों को दी गई प्रतिज्ञा भूल गया है? पौलुस इन प्रश्नों का उत्तर देता है और परमेश्वर के उद्धार की योजना यहूदियों और अन्यजातियों के लिये समझाता है।

रोमियों में पौलुस के विषय को स्पष्टता से वर्णन किया जाता है 1:16–17। इसमें प्रेरित दिखाता है कि किस प्रकार परमेश्वर पापी को बचाता है। इन पदों में पत्री का महान विषय एक साथ जुड़ता है : सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ, उद्धार हर कोई जो विश्वास करता है परमेश्वर की ओर से धार्मिकता, यहूदी और अन्यजातियों के लिये। चार्ल्स रायरे के पास इस विषय की सर्वोत्तम सारांश हैः

> पौलुस की दूसरी पत्रियों की अपेक्षा रोमियों विश्वास के द्वारा धार्मिकता के सिद्धान्त को क्रमबद्ध तरीके से रखता है। पत्री का विषय "परमेश्वर की धार्मिकता" है (1:16–17), मसीहत की आधारभूत बहुत से धार्मिक सिद्धान्तों की चर्चा की गई हैः स्वाभाविक प्रगटीकरण (रोमियों 1:19–20), पाप की व्यापकता (रोमियों 3:9–20), न्याय (रोमियों 3:24), पश्चाताप (रोमियों 3:25), विश्वास (रोमियों 4:1), मूल पाप (रोमियों 5:12), मसीह के साथ मिलान (रोमियों 6:1), इस्राएल का चुनाव और तिरस्कार (रोमियों 9–11), आत्मिक वरदान (रोमियों 12:3–8) और सरकार का सम्मान (रोमियों 13:1–7)।

परिचय के अलावा (1:1–17) और पौलुस के समापन के शब्द (15:14–16:27) रोमियों को आसानी से तीन हिस्सों में विभाजित किया गया हैः–

1. प्रथम आठ अध्याय **धार्मिक सिद्धान्त** के हैं, धार्मिकता के सुसमाचार के सिद्धान्तों की रूप–रेखा (न्याय और शुद्धिकरण) विश्वास से परमेश्वर के द्वारा।
2. अगले 3 अध्याय (9–11) **राष्ट्रीय** हैं, और परमेश्वर का यहूदियों और अन्यजातियों के साथ के व्यवहार का वर्णन और हर एक का सुसमाचार के साथ सम्बन्ध।
3. बाकी के बचे हुए अध्याय (12–16) विश्वासियों के प्रतिदिन के जीवन में सुसमचार का **व्यवहारिक उपयोग**।

मसीह जैसा निर्गमन में देखा गया : पौलुस मसीह को दूसरे आदम की नाईं प्रस्तुत करता है जिसकी धार्मिकता और बदले में की मृत्यु ने उन सबको जो उस पर विश्वास रखते हैं उन्हें न्याय उपलब्ध कराया है। वह पापी मनुष्य को धार्मिकता का अनुग्रहमय वरदान प्रस्तुत करता है, परमेश्वर के दण्ड को उठाने और पापमय के लिये उसके क्रोध को सहकर वह धार्मिकता देता है। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान विश्वासी के छुटकारे, धर्मी ठहरने, मेल–मिलाप, उद्धार और महिमा का आधार है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. परिचय (1:1–17)

1:1–7 1:8–15 1:16–17

2. दण्ड : सब में पाप के कारण धार्मिकता की आवश्यकता (1:18–3:20)

क. अनैतिक मनुष्य का दण्ड (अन्य जाति) (1:18–32)

1:18–23 1:24–27 1:28–32

ख. नैतिक मानव का दण्ड (2:1–16)

2:1–1 2:12–16

ग. धार्मिक मनुष्य का दण्ड (यहूदी) (2:17–3:8)

2:17–24 2:25–29 3:1–8

घ. सब मनुष्यों पर दण्ड (3:9–20)

3:9–18 3:19–20

3. न्याय : मसीह के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता (3:21–5:21)

क. धार्मिकता का वर्णन (3:21–31)

3:21–26 3:27–31

ख. धार्मिकता का उदाहरण (4:1–25)

4:1–8 4:13–15

4:9–12 4:16–25

ग. धार्मिकता की आशीषें (5:1–11)

घ. दण्ड और धार्मिकता का विरोधाभास (5:12–21)

5:12–14 5:15–17 5:18–21

4. शुद्धिकरण : धार्मिकता दी गई और प्रगट की गई (6:1–8:39)

क. पाप और शुद्धिकरण (6:1–23)

6:1–7 6:12–14 6:21–23

6:8–11 6:15–19

ख. शुद्धिकरण और व्यवस्था (7:1–25)

7:1–3 7:7–13 7:12–25

7:4–6 7:14–20

ग. शुद्धिकरण और पवित्र आत्मा (8:1–39)

8:1–8 8:18–25 8:28–30

8:9–17 8:26–27 8:31–39

5. दोष निवारण : यहूदी और अन्यजाति, परमेश्वर की धार्मिकता का विस्तार (9:1–11:36)

क. इस्राएल का पूर्वः परमेश्वर के द्वारा चुनाव (9:1–29)

9:1–5 9:14–18 9:27–29

9:6–13 9:19–26

ख. इस्राएल का वर्तमान : परमेश्वर का तिरस्कार (9:30–10:21)

9:30–33 10:5–13 10:16–17

10:1–4 10:14–15 10:18–21

ग. इस्राएल का भविष्यः परमेश्वर के द्वारा पुनः स्थापना (11:1–36)

11:1–6	11:11–16	11:25–32
11:7–10	11:17–24	11:33–36

6. उपयोग : सेवा में धार्मिकता का अभ्यास (12:1–15:13)

क. परमेश्वर के सम्बन्ध में (12:1–2)

ख. स्वयं के सम्बन्ध में (12:3)

ग. कलीसिया के सम्बन्ध में (12:4–8)

घ. समाज के सम्बन्ध में (12:9–21)

12:9–13	12:14–21

ङ. सरकार के सम्बन्ध में (13:1–14)

13:1–7	13:8–10	13:11–14

च. दूसरे मसीहियों के सम्बन्ध में (14:1–15:13)

14:1–4	14:10–12	15:1–6
14:5–9	14:13–23	15:7–13

7. व्यक्तिगत संदेश और आशीर्वाद (15:14–16:27)

क. पौलुस की योजनाएं (15:14–33)

15:14–21	15:22–29	15:30–33

ख. पौलुस की व्यक्तिगत शुभकामनाएं (16:1–16)

16:1–2	16:3–16

ग. पौलुस का समापन और आशीर्वाद (16:17–27)

16:17–20	16:21–24	16:25–27

1 कुरिन्थियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का ज्ञान)

लेखक और पुस्तक का नाम : इसका लेखक पौलुस है। इसको अन्दर बाहर दोनों सबूतों ने सहारा दिया है। प्रथम सदी से आगे (ई0पश्चात 96) बहुत से लगातार सबूत हैं कि पौलुस इसका लेखक है। रोम का क्लोमेंट (दूसरी सदी का पास्टर) ने लिखा कि 1 कुरिन्थियों "आशीषित प्रेरित पौलुस की पत्री" अपनी स्वयं की पत्री में जो कुरिन्थियों को लिखी गई – उनके लगातार कार्यों के विषय में आंतरिक सबूत स्पष्ट हैं। लेखक कई स्थानों पर अपने आपको पौलुस कहता है (1:1, 16:21, 1:12–17, 3:4, 6, 22)।

प्रेरित के काम की पुस्तक का और बहुत सी पत्रियों का सावधानी से किया गया अध्ययन नीचे दिया गया सारांश पौलुस का कुरिन्थ की कलीसिया के साथ में होने को बताता हैः (1) उसकी प्रथम यात्रा कुरिन्थियों के लिये (2) कुरिन्थ के लिये पहली पत्री (अभी खो गई है) इसके बाद (3) कुरिन्थियों की दूसरी पत्री (1 कुरिन्थियों) और तब (4) उसका कुरिन्थियों में दूसरी बार आना (दुःखदाई भेंट) 2 कुरिन्थियों 2:1 और वहां ये था (5) तीसरा पत्र कुरिन्थियों को (जो अभी खो गया है) इसके बाद 2 कुरिन्थियों, (6) चौथा पत्र कुरिन्थियों को अन्त में (7) तीसरी बार कुरिन्थियों में आना (प्रेरित 20:2–3)। ये संकेत दिया जाना चाहिये कि दो पत्र जो खो गये थे क्योंकि परमेश्वर का इरादा उन्हें बाइबल में शामिल करने का नहीं था।

लेखन तिथि : ई.पश्चात 55। जब पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर था तब उसने पहले सुसमाचार प्रचार किया लगभग ई.पश्चात 50 में, जबकि वह वहां रहा और प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला के साथ कार्य किया क्योंकि वे भी उसी उद्यम यानी तम्बू बनाने के व्यापार में थे (प्रेरित 18:3) जैसा उसका दस्तूर था – पौलुस ने पहले मन्दिर में प्रचार किया पर यहूदियों के विरोध के कारण बाहर कर दिया गया। वह वहां से आराम से पड़ोस के तीतुस–यूस्तुस के घर पर गया और अपनी सेवकाई जारी रखी (प्रेरितों के काम 18:7)। यद्यपि रोमी हाकिम गलीलियों के सामने उस पर यहूदियों द्वारा आरोप लगाया गया (दोष जो समाप्त कर दिया गया था) पौलुस कुरिन्थयों में 18 महीनों तक रहा (प्रेरित 18:1–17), 1 कुरिन्थियों 2:3)। ये पत्र लगभग ई.पश्चात 55 में लिखा गया – पौलुस के तीन वर्ष इफीसुस में निवास के दौरान (16:5–9; प्रेरित 20:31) उसके इस संदर्भ से कि वह इफिसुस में पेन्तिकोस्त तक वहां रहा (16:8) ऐसा लगता है कि उसका इरादा जब उसने ये पत्र लिखा तो एक साल से कम रहने का इरादा था।

विषय और अभिप्राय : विषय और अभिप्राय को समझने के लिये थोड़ी सी पृष्ठ भूमि जरूरी है। कुरिन्थ एक बड़ा शहर था (जिसकी जन संख्या 7 लाख की थी, जिसमें करीब दो तिहाई गुलाम थे) एक सकरे स्थान पर बसा हुआ था। ये दो समुद्रों के बीच पोलो पोनियुस से उत्तरी यूनान से जुड़ा हुआ था और यद्यपि सम्पन्न था – मनुष्य के दृष्टिकोण से, पौलुस और उसके साथियों को आश्चर्य हुआ होगा कि परमेश्वर की धार्मिकता का सुसमाचार किस प्रकार इस शहर में सफल होगा। एक शहर होकर यहां

उसकी प्रतिष्ठा उसके भौतिक वस्तुओं द्वारा थी और अत्याधिक पापमय था। शहर मन्दिरों और पूजा स्थलों से भरा पड़ा था और प्रसिद्ध मन्दिर अफरोदीतुस का जो 1800 फीट की ऊंचाई पर बसा था (550 मीटर) उसकी चोटी "एक्रो–कुरिन्थ" कहलाती थी प्रारम्भिक यूनानी साहित्य में इसे धन–सम्पत्ति और अनैतिकता से जुड़ा हुआ था। ये बताना कि "कुरिन्थियों की लड़की" इसका अर्थ वैश्या था। ये कहावत कि "कुरिन्थियों की तरह कार्य करना" का मतलब "व्यभिचार करना था"। कुरिन्थ की अधिकांश धन सम्पत्ति मन्दिर के आसपास होती थी और उसके हज़ारों वैश्याओं की थी। इसी कारण से एक नीतिवचन कहा जाता था "कुरिन्थ की यात्रा हर एक पुरुष के लिये नहीं है"।

प्रेरितों के काम के लेखा जोखा के अनुसार ऐसा प्रगट होता है कि यदि पौलुस के पास थोड़े से परिवर्तित यहूदियों के बीच में और लगभग सभी परिवर्तित लोग अन्य जाति के थे। अधिकतर लोग नीचे स्तर से आये थे फिर भी कुछ सदस्य अच्छे बड़े परिवारों से थे (1:26–31)। उनके बीच में आर्थिक और सामाजिक भिन्नताएं थीं (7:20–24, 11:21–34)। उनमें से कुछ गहरी अनैतिकता में थे (6:9–11)। फिर भी यूनानी होकर वे अपने बुद्धिजीवी होने पर गर्व करते थे, यद्यपि उनके मामले में काफी गिरावट आ गई थी (1:17, 2:1–5)।

एक आसानी से देख सकता है, कि तब कैसे कुरिन्थ की अनैतिकता और धार्मिक दशाओं ने कलीसिया के आत्मिक व नैतिक जीवन पर कितना नकारात्मक असर डाला होगा। पत्र का आधारभूत विषय ये है कि किस प्रकार मसीहियों का नया जीवन जो मसीह में शुद्ध किया गया और सन्त कहलाये जाते, कि जीवन की हर एक परिस्थिति में लागू करना है। ये मसीह में नया जीव जो जीने के नये तरीके की ओर पवित्र आत्मा के द्वारा लाया जाता है (3:16, 17; 6:11, 19–20)। मसीह में हमारे लिये परमेश्वर के ज्ञान को प्रगट किया गया – विश्वासी को व्यक्तिगत वा सामाजिक स्तर पर दोनों में बदलना है।

इस प्रकार 1 कुरिन्थियों उस समाचार पर जो बहुतों की कलीसिया में समस्याओं और अव्यवस्था को पास्टर द्वारा सुधारने के लिये लिखी गई है। समस्या में कलीसिया में विभाजन होना शामिल है (1:11) मानव ज्ञान पर विश्वास करना या परमेश्वर की अपेक्षा संसार की बातें मानना (1:21–30), अनैतिकता (5:1–13, 6:9–20) और बहुत से प्रश्न, विवाह, तलाक, भोजन, आराधना, आत्मिक वरदान, और पुनरुत्थान के विषय में थे। बिना शक ये उनके धार्मिक और अनैतिक पृष्ठभूमि और झूठे विश्वास जो ये कलीसिया में परम्परायें पाई जाती थीं।

1 कुरिन्थियों में जैसे मसीह देखा गया : मसीह का महत्व उसकी आवश्यकता, साधन और मसीही जीवन का स्रोत जैसा 1:30 में वर्णन किया गया है, ***"परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म और पवित्रता और छुटकारा"।***

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचयः (1:1–9)**
   - क. अभिवादन (1:1–3)
   - ख. धन्यवाद की प्रार्थना (1:4–9)
2. **कलीसिया में विभाजन (1:10–4:21)**
   - क. विभाजनों की रिपोर्ट (1:10–17)
   - ख. विभाजनों के कारण (1:18–2:16)
     - 1:18–25 2:1–5
     - 1:26–31 2:6–16
   - ग. विभाजन के परिणाम (3:1–4:5)
     - 3:1–4 3:10–15 3:18–23
     - 3:5–9 3:16–17 4:1–5
   - घ. पौलुस का उदाहरण और नमूना (4:6–21)
     - 4:6–7 4:8–13 4:14–21
3. **कलीसिया में नैतिक अव्यवस्था (5:1–6:20)**
   - क. व्यभिचार का मामला (5:1–13)
     - 5:1–5 5:6–8 5:9–13
   - ख. मूर्तिपूजकों में मुकद्दमें की समस्या (6:1–8)
   - ग. नैतिक पतन के विरुद्ध चितौनी (6:9–20)
     - 6:9–11 6:12–20

4. विवाह के प्रति निर्देश (7:1–40)

क. विवाह और जश्न (7:1–9)

ख. विवाह और तलाक (7:10–24)

7:10–11 7:17–20

7:12–16 7:21–24

ग. विवाह और मसीही सेवा (7:25–38)

7:25–31 7:32–35 7:36–39

घ. विवाह और पुनः विवाह (7:39–40)

5. मूर्ति के सामने चढ़ाये भोजन के सम्बन्ध में निर्देश (8:1–11:1)

क. प्रश्न : क्या मसीही को मूर्ति के आगे चढ़ाये भोजन खाना चाहिये? (8:1–13)

8:1–3 8:4–6 8:7–13

ख. पौलुस का उदाहरण (9:1–27)

9:1–2 9:8–14 9:19–23

9:3–7 9:15–18 9:24–27

ग. उपदेश (10:1–11:1)

10:1–5 10:14–22 10:31–33

10:6–13 10:23–30 11:1

6. सामूहिक आराधना के प्रति निर्देश (11:2–14:40)

क. महिलाओं को ढांपना (11:2–16)

ख. प्रभु – भोज (11:17–34)

11:17–22 11:27–32

11:23–26 11:33–34

ग. आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल (12:1–14:40)

12:1–3 13:1–3 14:13–19

12:4–11 13:4–7 14:20–25

12:12–13 13:8–13 14:26–33

12:14–26 14:1–5 14:34–36

12:27–31 14:6–12 14:37–40

7. पुनरुत्थान की धार्मिक शिक्षा (15:1–58)

क. पुनरुत्थान का महत्व (15:1–11)

15:1–2 15:3–11

ख. पुनरुत्थान के इंकार का परिणाम (15:12–19)

ग. मसीही आशा (15:20–34)

15:20–28 15:29–34

घ. पुनरुत्थित देह (15:35–50)

15:35–41 15:42–49

ङ. मसीह के द्वारा मसीही की विजय (15:51–58)

15:51–57 15:58

8. यरूशलेम के लिये जमा किया दान (16:1–4)

9. समापन (16:5–24)

16:5–9 16:13–14 16:21–24

16:10–12 16:15–20

2 कुरिन्थियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की तसल्ली)

लेखक और पुस्तक का नाम : फिर से जैसा आरम्भ के अभिनन्दन में संकेत दिया गया है इस पत्र का लेखक पौलुस है। दोनों बाहरी और आंतरिक सबूत बहुत ही मज़बूत हैं। लेखन/लेखक के पक्ष में हैं – वास्तव में "उसकी शैली से ये छाप लग गई है और इसमें जीवनियों की बहुत सामग्री और दूसरे लेखों की अपेक्षा अधिक है"।

लेखन तिथि : ईस्वी. 56। सुनारों के दंगे के कारण (प्रेरित 19:23–41)। पौलुस इफिसुस से मकीदूनिया के लिये चला गया (प्रेरित 20:1) ईस्वी. 56 में। इस प्रक्रिया में उसने गोआस में तीतुस को मिलने की आशा में यात्रा रोकी (2 कुरिन्थियों 2:13) और कुरिन्थ के हाल का समाचार पाया। तीतुस को वहां न पाकर वह मकीदूनिया की ओर बढ़ गया – तीतुस की सुरक्षा के कारण (7:5–6) वहां वह तीतुस से मिला जो कुरिन्थ कलीसिया के ठीक होने के शुभः समाचार को लाया पर एक बुरा समाचार भी लाया कि एक झुण्ड पौलुस के विरोध में खड़ा हो गया है। मकीदूनिया से पौलुस ने चौथा पत्र लिखा 2 कुरिन्थियों तब पौलुस जाड़ों के दिनों में तीसरी बार कुरिन्थयों को गया – ईस्वी. 56–57 (प्रेरितों 20:2,3)।

विषय और अभिप्राय : पौलुस के सभी पत्रों में 2 कुरिन्थियों सबसे अधिक व्यक्तिगत और करीबी रहा है। इसमें उसने अपने हृदय को खोल दिया और कुरिन्थियोंवासियों के लिये अपना प्रगाढ़ प्रेम प्रदर्शित किया यद्यपि कुछ बहुत ही आलोचनात्मक थे और उसके प्रति प्रेम में बदलने वाले थे। बड़ा विषय जेम्स के. लोवरी के बाइबल टीका में बताया है : –

> पौलुस विशेष रूप से झूठे शिक्षकों की उपस्थिति के प्रति चिन्तित था, जो अपने को प्रेरित बताते थे और जो कलीसिया में प्रवेश हो गये थे। उन्होंने अपने ही विचारों को बढ़ाया और पौलुस की व्यक्तिगत रूप से और उसके सन्देशों को श्रेय न देकर हानि पहुंचाई। 2 कुरिन्थयों इसलिये लिखा गया कि उसके लेखक होने और संदेशों का बचाव किया जा सके। यह अपने स्वयं के बचाव की आत्मा में नहीं किया गया क्योंकि पौलुस जानता था कि उसकी सेवकाई और संदेशों की स्वीकृति कुरिन्थियों की कलीसिया के अपने आत्मिक कल्याण में करीबी से बंधी हुई है।

पौलुस की बचाव की प्रक्रिया में तीन मुख्य अभिप्राय उभरते हैं: (1) पौलुस ने अपने आनन्द को प्रगट किया – कलीसिया ने जो रूचि उसकी सेवकाई में दिखाई (1:1–7:16), (2) उसने विश्वासियों को स्मरण दिलाया कि वे यहूदा के मसीहियों के लिये अपनी वचनबद्वता को अपने चंदे के लिये याद रखें (8:1–9:15) और (3) उसने अपने प्रेरिताई के अधिकार को बचाये रखा (10:1–13:14)।

2 कुरिन्थियों में मसीह जैसा देखा गया : इस पत्री में हम उसे अपनी तसल्ली के रूप में देखते हैं (1:5), विजय (2:14), प्रभु (2:4) नये जीवन की स्वतंत्रता (3:17), ज्योति (4:6), न्यायी (5:10), मेल मिलाप (5:19), वरदान (9:15), स्वामी (10:7) और सामर्थ (12:9)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. पौलुस के चरित्र और प्रेरिताई की सेवा का खुलासा (1:1–7:16)

क. अभिनन्दन (1:1–2)

ख. क्लेशों में दैविय तसल्ली के प्रति धन्यवाद (1:3–11)
- 1:3–7
- 1:8–11

ग. पौलुस के उद्देश्य और चरित्र की प्रतिष्ठा (1:12–2:4)
- 1:12–14
- 1:23–24
- 1:15–22
- 2:14

घ. कुरिन्थियों में अपराधी को क्षमा (2:5–11)

ङ. सेवकाई में परमेश्वर की अगुवाई (2:12–17)
- 2:12–13
- 2:14–17

च. कुरिन्थियों के विश्वासी–मसीह से पत्र (3:1–11)
- 3:1–3
- 3:4–11

छ. उघाड़े चेहरों से परमेश्वर की महिमा देखना (3:12–4:6)
- 3:12–18
- 4:1–6

ज. मिट्टी के बर्तनों में खज़ाना (4:7–15)
- 4:7–12
- 4:13–15

झ. मृत्यु की सम्भावना और विश्वासी के लिये इसका क्या अर्थ है (4:16–5:10)

4:16–18 5:1–5 5:6–10

ञ. मेल–मिलाप की सेवा (5:11–6:10)

5:11–15 5:20–21

5:16–19 6:1–10

ट. आत्मिक पिता का उसकी सन्तान से आग्रह (6:11–7:4)

6:11–13 7:1

6:14–18 7:2–4

ठ. तीतुस से भेंट (7:5–16)

7:5–12 7:13–16

2. यरूशलेम के मसीहियों के लिये चंदे की आग्रह (8:1–9:15)

क. उदारता प्रोत्साहित की गई (8:1–15)

8:1–6 8:7–15

ख. तीतुस और उसके साथियों को कुरिन्थियों भेजा गया (8:16–9:5)

8:16–24 9:15

ग. उदारता से देने का परिणाम (9:6–15)

3. पौलुस की उसकी प्रेरिताई के अधिकार का बचाव (10:1–13:14)

क. पौलुस की प्रेरिताई के अधिकार का बचाव और उसके मिशन का क्षेत्र (10:1–18)

10:1–6 10:7–11 10:12–18

ख. पौलुस को मूर्खता की ढींगमार में धकेला गया (11:1–12:21)

11:1–6 11:21–29 12:11–13

11:7–11 11:30–33 12:14–18

11:12–15 12:1–6 12:19–21

11:16–20 12:7–10

ग. अन्तिम चितौनी (13:1–10)

13:1–4 13:5–10

घ. समापन (13:11–14)।

गलातियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की धार्मिकता)

लेखक और पुस्तक का नाम : पौलुस स्वयं अपने को इस पत्री का लेखक बताता है इन शब्दों के साथ, "प्रेरित पौलुस"।

लेखन तिथि : ईस्वी. 1050। ये पत्र दक्षिण गलातिया के मसीहियों को लिखा गया था। इन कलीसियाओं की स्थापना पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा के समय की गई थी (शायद अंताःकिया से लगभग ईस्वी. 49 में, पौलुस की सबसे पहली पत्री बनाते हैं) यरूशलेम काउंसिल से थोड़ा ही पहले (प्रेरित 15)।

विषय और अभिप्राय : इस गलातियों की पत्री को बहुत से धार्मिक शिक्षक ये कहते हैं, "मसीही स्वतंत्रता का घोषणा पत्र"। गलातियों के लोग यहूदावादी और उनकी शिक्षा के प्रति शक्तिशाली चुनौती के रूप में खड़े होते हैं (अनुग्रह के बदले व्यवस्था के आधीन जीते है) उन्होंने सीखा कि बहुत सी पुराने नियम की परम्पराएं कलीसिया में बाधंती थीं – इस प्रकार प्रेरित ने उनके झूठे सुसमाचार को छोड़ने और इंकार करने के लिये लिखा और विश्वास के द्वारा धार्मिकता की उच्चता को प्रगट करता है और पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्धिकरण को प्रगट करता है।

साथ ही इन यहूदावादी झूठे/गलत सुसमाचार को घोषित करते और साथ ही पौलुस की प्रेरिताई को बदनाम करते हैं। पहले दो अध्यायों में पौलुस अपनी प्रेरिताई का बचाव करता है और उन सन्देशों को जो जीवित यीशु से प्रगटीकरण के द्वारा आये थे बचाव करता है। तब 3 और 4 अध्यायों में वह अनुग्रह के सच्चे धार्मिक शिक्षा पर बहस करता है, केवल विश्वास के द्वारा धार्मिक की धार्मिक शिक्षा। कुछ तो एकदम ऐसी धार्मिक शिक्षा का दावा करते हैं वह उन्हें (पाप) करने का लाइसेंस की ओर ले जाता है, तो प्रेरित ये प्रगट करता है कि मसीही स्वतंत्रता पाप करने का लाइसेंस नहीं देती। इस प्रकार अध्याय 5 और 6 ये दिखाते हैं कि मसीहियों को आत्मा की सामर्थ में जीना सीखना चाहिये और आत्मा के नियंत्रण में चाल शरीर के काम नहीं दिखायेगी पर आत्मा के फल प्रगट करेगी।

गलातियों में मसीह देखा गया : उसकी मृत्यु के द्वारा विश्वासी व्यवस्था के लिये मर गया और जीवन के द्वारा मसीह के समान हो जाता है (2:10)। विश्वासी बन्धनों से स्वतंत्र कर दिया गया है (5:1) और स्वतंत्रता के स्थान पर लाया गया है। क्रूस की सामर्थ व्यवस्था के श्राप से छुटकारा देता है, पाप की शक्ति से और स्वयं से छुड़ाता है (1:4;2:20, 3:13; 4:5; 5:16, 24; 6:14)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **व्यक्तिगत : अनुग्रह का सुसमाचार प्रगटीकरण द्वारा आया (1:1–2:21)**
   - क. परिचय (1:1–9)
     - 1:1–2 1:3–5 1:6–10
   - ख. अनुग्रह का सुसमाचार प्रगटीकरण द्वारा आया (1:11–24)
     - 1:11–12 1:13–17 1:18–24
   - ग. अनुग्रह के सुसमाचार को यरूशलेम में अनुमति दी गई (2:1–10)
   - घ. अनुग्रह का सुसमाचार पतरस की डांट में प्रमाणित किया गया (2:11–21)
     - 2:11–14 2:15–21
2. **सिद्धान्त सम्बंधी : अनुग्रह का सुसमाचार विश्वास के द्वारा धार्मिकता समझाया गया (3:1–4:31)**
   - क. गलातियों का अनुभव : विश्वास के द्वारा आत्मा दिया गया (3:1–5)
   - ख. अब्राहम का उदाहरण : वह कर्मों के अनुसार नहीं विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरा (3:6–9)
   - ग. धार्मिकता विश्वास के द्वारा है – व्यवस्था के द्वारा नहीं (3:10–4:11)
     - 3:10–14 3:19–22 4:1–7
     - 3:15–18 3:23–29 4:8–11
   - घ. गलातियों ने अपनी आशीषें विश्वास के द्वारा प्राप्त की, व्यवस्था के द्वारा नहीं (4:12–20)
   - ङ. व्यवस्था और अनुग्रह आपस में अलग हैं (4:21–31)
2. **व्यवहारिक : अनुग्रह का सुसमाचार विश्वास के द्वारा धार्मिकता उपयोग की गई (5:1–6:18)**
   - क. स्वतंत्रता का स्थान : दृढ़ खड़े रहना (5:1–12)
     - 5:1 5:2–6 5:7–12
   - ख. स्वतंत्रता का अभ्यास : एक दूसरे से प्रेम करो और सेवा करो (5:13–15)
   - ग. स्वतंत्रता की शक्ति : आत्मा के अनुसार चलाना (5:16–26)
     - 5:16–24 5:25–26
   - घ. स्वतंत्रता का कार्य : सबसे साथ भलाई करो (6:1–10)
     - 6:1–5 6:6–10
   - ङ. समापन (6:11–18)

इफिसियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का धन)

लेखक और पुस्तक का नाम : कैद में से लिखे गये हर पत्री के प्रारम्भिक पद बड़े स्पष्ट रूप से वर्णन किये गये हैं कि पौलुस ही की घोषणा इसके लेखक के रूप में की गई है। परम्परा के अनुसार इसका शीर्षक "इफिसियों को" दिया गया है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 60–61। पौलुस ने जब यह पत्री लिखी तो वह कैद में था (इफिसियों 13:1,4:1,6:20)। कुछ शोधकर्ता का मत भिन्न है कि ये पत्री इफिसुस से लिखी गई या केसरिया की कैद में लिखा गया (प्रेरित 24:27) ईस्वी. 57–59 में या रोम में ईस्वी. 60–62 (28:30)। इसके सबूत रोम की कैद के पक्ष में जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसी समय में इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमाने लिखे गये थे (फिलिप्पियों 1:7, कुलुस्सियों 4:10, फिलेमोन 9)। इसलिये कि इफिसियों पौलुस के रिहाई का कोई वर्णन नहीं करती, जैसे फिलिप्पियों में हैं (1:19–26) और फिलेमोन (1:22) बहुत से ये मानते हैं कि इफिसियों की पत्री पौलुस के रोम में कैद होने के प्रारम्भिक दिनों में लिखी गई हैं लगभग ईस्वी. 60 में। जबकि उसे उसके ही किराये के मकान में कैद किया गया था (प्रेरित 28:30)। पौलुस को छोड़ देने के बाद उसने 1 तीमुथियुस और तीतुस लिखा, फिर कैद कर लिया गया और तब रोम में शहीद हो गया।

विषय और अभिप्राय : इफिसियों में पौलुस महिमामय रहस्य रखता है "कलीसिया जो मसीह की देह है" मसीह कलीसिया का सिर होकर (1:22,23)। स्पष्टता से पौलुस का अभिप्राय विश्वासी के क्षितिज को बढ़ाना है – मसीह में उसके आशीष के असीमित धन के विषय में जो कलीसिया का सिर है, मसीह की देह है। इससे बाहर पत्री में दो अभिप्राय उभर कर आते हैं। पहला ये वर्णन

करना है आशीषों के कुछ धन जो विश्वासी के पास मसीह में है और कैसे उनके द्वारा परमेश्वर का अनन्त अभिप्राय मसीह में सारांश बन जाता हैं, चीज़ें जो पृथ्वी पर और स्वर्ग में हैं (1:3–12)। दूसरा विषय पहले में से ही निकलता है, विशेषकर विश्वासी की जिम्मेवारी है कि जानें, पकड़ें (थामें रहें) और उस प्रकार चलें जो स्वर्गीय स्थान और मसीह की बुलाहट में सही बैठती है (1:18–23, 3:14–21, 4:1)।

जबकि किसी विशेष गलती को सुधारने के लिये नहीं लिखा गया है, पौलुस ने इस पत्री को इस प्रकार से बनाया है कि ये उन समस्याओं का बचाव है जो अंक्सर होती है, परिपक्वता की कमी से या समझने में असफल होने और उसका उपयोग करने में जो विश्वासियों के पास मसीह में है। करीबी से ये छोटे हिस्से में जुड़ी हुई है विश्वासी के शैतान के साथ के युद्ध में (6:10–18)। इस प्रकार पौलुस विश्वासी के धन, चाल और युद्ध के विषय लिखता है।

इफिसियों में मसीह देखा गया : इफिसियों के शब्दों में जैसे "मसीह में" या "मसीह के साथ" करीब 35 बार आये हैं – ये पौलुस के सामान्य प्रगटीकरण हैं – पर वे इस पत्री में और पत्रियों की अपेक्षा अधिक आये हैं। इसके द्वारा हम वो देखते हैं कि विश्वासी के पास उद्धारकर्ता में बहुत कुछ है। वे मसीह में हैं (1:1) मसीह में हर आशीष से परिपूर्ण (1:3), उसमें चुने गये (1:4), मसीह के द्वारा लेपालकपन प्राप्त किया (1:5), अतिप्रिय में (1:6), उसमें छुटकारा पाया है (1:7), उसमें मीरास मिली है (1:11), आशा है जो उसकी मसीह में महिमा की प्रशंसा है (1:12), आत्मा के द्वारा छाप दी गई है (1:13–14), जीवित किये गये, उठाये गये, और उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हैं (2:5–6), भले काम के लिये मसीह में बनाये गये (2:10)। मसीह में प्रतिज्ञा के वारिस (3:6) मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर तक पहुंचना (3:12)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिनन्दन या शुभकामनाएं (1:1–2)**
2. **पत्री के धार्मिक सिद्धान्त का हिस्सा : कलीसिया की बुलाहट (1:3–3:21)**
   - क. छुटकारे की प्रशंसा (1:3–14)
   - ख. ज्ञान के लिये प्रार्थना – एक प्रगटीकरण (1:15–23)
   - ग. पुनः स्थापना का स्थान (2:1–22)
     - 2:1–10 | 2:11–22
   - घ. माता–पिता का वर्णन (3:1–13)
   - ङ. अहसास की प्रार्थना (3:14–21)
     - 3:14–19 | 3:20–21
3. **पत्री का व्यवहारिक हिस्सा : कलीसिया की चाल (4:1–6:24)**
   - क. विश्वासी की एकता में चाल (4:1–16)
     - 4:1–6 | 4:7–16
   - ख. विश्वासी की धार्मिकता में चाल (4:17–5:21)
     - 4:17–24 | 5:1–2 | 5:6–14
     - 4:25–32 | 5:3–5 | 5:15–21
   - ग. विश्वासी की संसार में चाल (5:22–6:9)
     - 5:22–24 | 6:1–8
     - 5:25–33 | 6:9
   - घ. विश्वासी की युद्ध में चाल (6:10–20)
     - 6:10–17 | 6:18–20
   - ङ. समापन (6:21–24)

फिलिप्पियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की परिपूर्णता)

लेखक और पुस्तक का नाम : पौलुस इसका लेखक है। ये पत्री फिलिप्पी की कलीसिया को लिखी गई पहली कलीसिया जो पौलुस ने मकीदूनिया में स्थापित की, और उसका शीर्षक "फिलिप्पियों को"।

लेखन तिथि : ईस्वी. 60–61। जैसा इफिसियों के साथ है ये पत्री भी उस समय लिखी गई जब पौलुस कैद में था। उसका संदर्भ जो वह सिपाही के साथ था (फिलिप्पियों 1:13) और मृत्यु की सम्भावना (1:20–26)। ये सुझाव देता है कि वह रोम से लिख

रहा था। यद्यपि मृत्यु सम्भव थी पर पौलुस अपनी रिहाई के विषय में आश्वस्त था। ये बताता है कि ये इफिसियों के बाद लिखी गई ईस्वी. 60 या 61 में।

विषय और अभिप्राय : जबकि इफिसियों की पत्री महिमामय रहस्य को बताती है, "कलीसिया जो मसीह की देह है" मसीह जो कलीसिया का सिर है (1:22–23) और विश्वासी जो एक दूसरे के साथ सह–सदस्य के रूप में थे जो मसीह में बराबर से आशीषित थे (1:3; 2:11–12)। फिलिप्पियों ने इफिसियों की पत्री को लागू किया। फिलिप्पियों पहरूआ ने मसीह के द्वारा दी गई व्यवहार की असफलता में एकता प्रदान की और विश्वासी के अपनी आशीषों के आनन्द मनाने की असफलता के विरुद्ध और मसीह में "एकता" हो सकता है।

पौलुस का इस पत्र के लिखने में बहुत से अभिप्राय हो सकते हैं: (1) उसने अपना प्रेम दिखाना चाहा और उस दान के प्रति जो उन लोगों ने भेजा आभार प्रगट करना चाहता है (1:5,4:10–19)। (2) अपनी परिस्थितियों के विषय में रिपोर्ट दें (1:12–26, 4:10–19)। (3) फिलिप्पियों को सताव में खड़े रहने के लिये प्रोत्साहित करना और परिस्थिति जो भी हो आनन्द करना (1:27–30; 4:4)। (4) उन्हें नम्रता और एकता में जीने को बढ़ावा दें (2:1–11; 4:2–5); (5) इफरादीतुस और तीमुथियुस को फिलिप्पी की कलीसिया में भेजना (2:19–30) और (6) और फिलिप्पियों को यहूदावाद के विरूद्ध चेतावनी ओर अनैतिक लोगों से स्वतंत्रता पाने – जो उनके मध्य में घुस आये हैं (अध्याय 3)।

फिलिप्पियों में मसीह देखा गया : धर्मशास्त्र का कोई भी हिस्सा स्पष्ट नहीं है ना ही घोषणा करता है, स्वाभाव के प्रति, तथ्य और मसीह के देहधारण के विषय उसकी अपेक्षा जो इस पुस्तक में पाया जाता है। (2:5–8) उस दृष्टिकोण में जिसमें मसीह है और किया है तथा पूरा करेगा, पौलुस मसीह को प्रगट करता कि वह विश्वासी का (1) जीवन (1:21) (2) नम्रता का सिद्ध नमूना है और बलिदान के प्रेम का (2:4–5); (3) जो हमारी नम्र देह को अपनी महिमामय देह में बदल देगा अपने पुनरुत्थान के द्वारा (3:21) और (4) जीवन की हर परिस्थिति में सामर्थ देने के लिये (4:12)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **फिलिप्पियों को धन्यवाद देने और अभिनन्दन के लिये (1:1–11)**
   1:1–2 1:3–11
2. **रोम में पौलुस की व्यक्तिगत परिस्थितियां : मसीह का प्रचार करना (1:12–30)**
   1:12–18 1:21–26
   1:19–20 1:27–30
3. **मसीही जीवन का नमूना : मसीह का मन होना (2:1–30)**
   2:1–4 2:12–13 2:19–30
   2:5–11 2:14–18
4. **मसीही जीवन का इनाम : मसीह का ज्ञान होना (3:1–21)**
   3:1 3:7–11 3:17–21
   3:2–6 3:12–16
5. **मसीही जीवन की शान्ति : मसीह की उपस्थिति को जानना (4:1–23)**
   4:1–3 4:8–9 4:15–20
   4:4–7 4:10–14 4:21–23

कुलुस्सियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की भरपूरी)

लेखक और पुस्तक का नाम : पौलुस की 1:2 की शुभकामनाओं के कारण कुलुस्सियों "कुलुस्सियों को" के रूप में जानी गई।

लेखन तिथि : ई.पश्चात 60–61। पौलुस ने अपनी चारों पत्रियों को अपनी पहली रोम की कैद से लिखा (इफिसियों और फिलिप्पियों की तारीख की चर्चा को देखें)।

विषय और अभिप्राय : विषय है "सुसमाचार के संदेशों की फलदायक शक्ति" जो उत्तमता, अध्यक्षता और मसीह की पूरी सम्पूर्णता उसकी देह कलीसिया के लिये। इस छोटी पत्री में हम पौलुस की "मसीह की पूरी तस्वीर" देखते हैं। कुलुस्सियों ये प्रगट करती है – इसलिये कि सब कुछ मसीह यीशु में है और उसके कार्यों में पूरा हुआ – वह विश्वासी के विश्वास की वस्तु, सभी की हमें आवश्यकता है और उसमें हम पूर्ण हैं (2:10) क्षेत्र में कुलुस्सियों पूरी उच्चता, परिपूर्णता, असलियत और व्यक्ति की भरपूरी और

मसीह के कम एक ईश्वरीय – मनुष्य उद्धारकर्ता की तरह, सृष्टिकर्ता और संसार को बनाये रखने वाला और मनुष्य की आवश्यकता के पूरे समय और अनन्त के लिये। ये मसीह की सृष्टिकर्ता/सम्भालने वाला और छुटकारा देने वाला, मनुष्यों का और समस्त संसार का मेल–मिलाप करने वाले की तरह प्रस्तुत करता है।

कुलुस्सियों में जैसे मसीह देखा गया : विलकिन्सन और बोआ बताते हैं:

> ये अकेली पुस्तक मसीह पर केन्द्रित है, "जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणी है" (2:10)। सृष्टि का प्रभु (1:16–17), मेल मिलाप का लेखक (1:20–22, 2:13–15)। वह विश्वासी की आशा का आधार है (1:5, 23,27)। विश्वासी के नये जीवन के लिये स्रोत है (1:11,29) विश्वासी का छुड़ाने वाला और मेल मिलाप कराने वाला (1:14, 20–22, 2:11–15) ईश्वरत्व का अवतार (1:15, 19; 2:9), सब चीज़ों का सृष्टिकर्ता (1:16–17), कलीसिया का सिर (1:18) पुनरुत्थित मानव ईश्वर (1:18; 3:1) और सम्पूर्ण भरपूर उद्धारकर्ता (1:28, 2:3,20; 3:1–4)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **सिद्धान्तवादी : मसीह का कार्य और व्यक्ति (1:1–2:5)**

1:1–2	1:13–14	1:24–29
1:3–8	1:15–20	2:1–5
1:9–12	1:21–23	

2. **विवादात्मक (विश्लेषण) : मसीह के साथ के प्रकाश में विधर्मी समस्याएं (2:6–3:4)**

2:6–7	2:16–19	3:1–4
2:8–15	2:20–23	

3. **व्यवहारिक : मसीह में विश्वासी का अभ्यास (3:5–4:6)**

3:5–11	3:22–25	4:5–6
3:12–17	4:1	
3:18–21	4:2–4	

4. **व्यक्तिगत : प्रेरित के सम्बन्ध/कार्य और उसके व्यक्तिगत योजना (4:7–18)**

4:7–9	4:10–17	4:18

1 थिस्सलुनीकियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञा)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा 1:1 और 2:18 में घोषित किया गया है, पौलुस 1 थिस्सलुनीकियों का लेखक है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 51–52। दो पत्रियां थिस्सलुनीकियों को प्रेरित के 18 महीने के प्रवास तीमुथियुस थिस्सलुनीकियों से वापस हो गया – कलीसिया की प्रगति का समाचार लेकर आया था। दूसरी पत्री कुछ सप्ताह बाद लिखी गई (या कुछ महीने बाद) कोई भी तिथि जो दी गई वह "लगभग" होगी – शायद ईस्वी. 51–52।

विषय और अभिप्राय : पौलुस थिस्सलुनीकियों में केवल तीन सप्ताहों के लिये था (प्रेरित 17:2)। तो वह नई कलीसिया को सही निर्देश नहीं दे सका। इसलिये इस पत्री का अभिप्राय थिस्सलुनीकियों इस प्रकार सारांश किया जा सकता है : उसके धन्यवाद को बताने के लिये कि परमेश्वर जो थिस्सलुनीकियों के लोगों के जीवितों में कर रहा था (1:2–3)। अपने आपको सेवकाई की बदनामी को बचाने के लिये (2:1–12)। उन्हें सताव में दृढ़ खड़े रहने के लिये प्रोत्साहित करना और अपनी मूर्तिपूजा के जीवन में वापस लौटने का दबाव (3:2–3, 4:1–12), सैद्धान्तिक प्रश्नों का उत्तर देने विशेष रूप से उन मसीहियों के भाग्य के लिये जो मर गये हैं (4:1–13)। "प्रभु के दिन" के प्रति प्रश्न का उत्तर देने (5:1–11) और शुद्ध करना (अलग करना) और विशेष समस्याओं से निपटना जो उनके जीवनों में एक कलीसिया की तरह विकसित हुई हैं (5:12–13; 19–20)।

1 थिस्सलुनीकियों में जैसे मसीह देखा गया : हर एक अध्याय में जैसे मसीह के आने का वर्णन किया गया है, मसीह को विश्वासी की उद्धार की आशा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, दोनों अभी और उसके आने के समय। जब वह आता है तो हमें क्रोध से छुड़ा लेगा (बिना शक एक संदर्भ सताव का दिया गया) (1:10; 5:4–11) उपहार देने (2:19), हमें सिद्ध करने (3:13), हमें पुनः जिलाने (4:13–18) और उन सबको जिन्होंने उस पर विश्वास किया (5:23) शुद्ध करने के लिये (अलग करने)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पूर्व (बीता समय) : विश्वास का कार्य (1:1–3:13)**

1:1–5	2:9–12	3:1–5
1:6–10	2:13–16	3:6–10
2:1–8	2:17–20	3:11–13

2. **वर्तमान : प्रेम का परिश्रम (4:1–12)**

4:1–8	4:9–12

3. **भविष्य प्रभावी : आशा की सहनशीलता (4:13–5:28)**

4:13–18	5:12–13	5:23–24
5:1–11	5:14–22	5:25–28

2 थिस्सलुनीकियों

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का पुरुस्कार)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा 1 थिस्सलुनीकियों में है – यह पत्री भी पौलुस के द्वारा लिखी गई (2 थिस्सलुनीकियों 1:1; 3:17)।

लेखन तिथि : ई. पश्चात 51–52। इसलिये कि ऐतिहासिक परिस्थितियां बिल्कुल 1 थिस्सलुनीकियों की तरह हैं – बहुत से ये विश्वास करते हैं कि ये पत्री भी पहली के कुछ समय बाद लिखी गई – लगभग छः माह में। जबकि कलीसिया में दशा एक सी थीं सताव कुछ बढ़ गया होगा (1:4–5) और ये दूसरे कारणें से इसने पौलुस को लिखने के लिये अगुवाई किया, कुरिन्थ से लगभग 51–52 ई.पश्चात में सिलास और तीमुथियुस के लौटने के बाद जो नये विकास की खबर के साथ लौटे थे।

विषय और अभिप्राय : दूसरा थिस्सलुनीकियों विशेष रूप से तीन विकास से आगे बढ़ाया गया है जिसे पौलुस ने सुना (1) बढ़ते हुए सताव के विषय में जिसका सामना वे कर रहे थे (1:4–5), (2) झूठे पौलीन पत्र की रिपोर्ट और उसकी शिक्षा "प्रभु के दिन" के विषय की तोड़ मरोड़ और (3) जिस तरह से कुछ उस विश्वास की ओर ध्यान दे रहे थे जो प्रभु के लौटने पर है। इस विश्वास को उस आधार पर इस्तेमाल किया जा रहा था कि प्रतिदिन का कार्य नहीं किया जा रहा था तो प्रेरित ने उन्हें सावधान करने या चितौनी देने के लिये लिखा – उनके आलस्य और अव्यवस्थित होने के लिये (जीवन में कोई व्यवस्था नहीं) जो बढ़ गई थी (3:5–15)।

आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये जिसने इस पत्री को सुअवसर दिया, पौलुस ने इस पत्री को तसल्ली देने और सुधार करने के लिये लिखा। ऐसा करने में उसने तीन बड़े अभिप्रायों को कियाः उसने लिखा (1) थिस्सलुनीकियों को प्रेरित करने की धीरज से जो पुरुस्कार वर्णन किया गया है और सजा जो भविष्य में परमेश्वर के न्याय में आयेगी (1:3–10); (2) मुख्य घटनाओं को साफ साफ बताना जो "प्रभु के दिन" की हैं – उन 'झूठ' को साबित करने के लिये जो वे पहले ही से प्रभु के दिन के लिये आ चुके हैं। (2:1–2); (3) विस्तार पूर्वक निर्देश देने के लिये उन कदमों को जिसे कलीसिया को उन्हें सुधारने के लिये जो काम करने से मना करते थे (3:6–15)।

2 थिस्सलुनीकियों में मसीह देखा गया : इस पुस्तक का बड़ा विषय विशेषकर अध्याय 1–2 है "न्याय के लिये मसीह का वापस आना जब वह सब विद्रोहियों को नीचा करेगा और सज़ा लायेगा"। 2 थिस्सलुनीकियों मसीह के न्यायी के रूप में आने की आशा करता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिनन्दन या परिचय (1:1–2)**
2. **सताव के सम्बन्ध में निर्देश और तसल्ली देता है (1:3–12)**
3. **प्रभु के दिन के विषय चितौनी और सुधार करता है (2:1–17)**

2:1–12	2:13–15	2:16–17

4. **आलस्य के विषय निर्देश और कायल करता है (3:1–15)**

3:1–5	3:6–13	3:14–15

5. **उसकी समाप्ति की शुभकामनाएं और आशीर्वाद (3:16–18)**

1 तीमुथियुस

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का मध्यस्त)

लेखक और पुस्तक का नाम : तीमुथियुस इफिसुस का जवान सेवक था जो कलीसिया में लड़ाई झगड़े और चुनौतियों का सामना कर रहा था। पौलुस तीमुथियुस का परामर्शदाता होकर, उसने उसे दो व्यक्तिगत पत्र लिखे जो सलाह और समझाने की थी। उसी कारण से, पौलुस ने क्रेते में तीतुस को लिखा। ये तीनों पत्रियां पास्टर की देखभाल की पत्रियां कहलाती हैं।

लेखन तिथि : ईस्वी. 63। प्रेरितों के काम और पत्रियों की तुलना करने पर ऐसा स्पष्ट लगता है कि 1 तीमुथियुस और तीतुस उस समय के हैं जब पौलुस की प्रथम रिहाई हुई और उस पर से रोम में दोष हटा दिये गये। इसके कारण, 1 तीमुथियुस की तिथि उसके प्रथम रिहाई के बाद लगभग ईस्वी. 63 में हुआ। तीतुस लगभग ईस्वी. 65 में लिखा गया और 2 तीमुथियुस ईस्वी. 66 में लिखाग गया। पौलुस की मृत्यु ईस्वी. 67 में हुई। आरम्भिक कलीसिया के पिता यूसीबयुस के अनुसार, रोमी नागरिक होकर वह पतरस की नाईं क्रूस पर चढ़ाये जाने की अपेक्षा तलवार से उसका सर काट डाला गया।

पौलुस की मिशनरी यात्राएं लगभग ईस्वी. 48–56 के दौरान हुई हैं। ईस्वी. 56–60 में पौलुस धीरे से अपना रास्ता रोमी अदालतों द्वारा बना रहा था – रोम में अन्त में आ रहा था। दो वर्षों के लिये ईस्वी. 61–62 पौलुस को घर में ही कैद कर लिया गया था और उस समय के अन्त में उसे छोड़ दिया गया। ईस्वी. 62–67 तक पौलुस लगभग स्वतंत्रता से यात्रा कर रहा था, तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़कर और तीतुस को क्रेते में और तब दोनों को अलग अलग पत्र लिखे। इस प्रकार 1 तीमुथियुस की तिथि और तीतुस के लिये शायद ईस्वी. 63–65 है। दुबारा कैद कर लिये जाने पर पौलुस पत्रों के समय को बताते हैं।

विषय और अभिप्राय : कम से कम 1 तीमुथियुस में 5 अभिप्राय दिखाई पड़ते हैं जो पौलुस ने लिखाः (1) प्रोत्साहन करने और आत्मा को ऊपर उठाने और तीमुथियुस के साहस को स्मरण दिलाकर कि उसके कर्तव्य क्या हैं (1:3) उसके आत्मिक वरदान (4:14) उसका अच्छा अंगीकार (6:12) और उन सिद्धान्तों का संग्रह जो उसे दिया गया (6:20); (2) तीमुथियुस को बाइबल की आंतरिक बातें दी जायें जिससे वह झूठे शिक्षकों की गलतियों को ठीक कर सके और स्वयं तीमुथियुस को प्रोत्साहित कर सके कि वह सही धार्मिक सिद्धान्तों पर चल सके (1:3–11, 18–20; 4:1–16, 6:3–10)। (3) कलीसिया की आराधना के व्यवहार के बारे में दिशा निर्देश देना (2:1–15); (4) कई विषयों पर अगुवाई करना जो उठेंगे और दिखायेंगे कि वे कैसे निपटे जायें जिनमें ये है कि प्राचीन और डीकनों की क्या योग्यताएं हैं (3:1–16) और कई झुण्डों के प्रति सही व्यवहार (5:1–10) और (5) भौतिकता के विरूद्ध चितौनी (6:11–19)।

1 तीमुथियुस का विषय, तीतुस और 2 तीमुथियुस के साथ – व्यक्तिगत और कलीसिया को शामिल करता है। व्यक्तिगत के लिये विषय है ***"अच्छी लड़ाई लड़"*** (1:18)। कलीसिया के लिये विषय ये हैं कि कलीसिया में कैसे कार्य करना है, परमेश्वर का घर (3:15)।

1 तीमुथियुस में मसीह देखा गया : बहुत से हिस्से हमें संकेत करते हैं – उद्धारकर्ता के व्यक्ति और उसकी सेवकाई। वह हमारी बुलाहट, शक्ति, विश्वास और प्रेम का स्रोत है जो सेवकाई के लिये आवश्यक है (1:12–14)। वो जो पापियों का उद्धार करने आया (1:15) ***"वह जो मनुष्य और परमेश्वर के बीच मध्यस्त है"*** (2:5)। ***वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया। अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत ने उस पर विश्वास किया और महिमा में ऊपर उठाया गया (3:16)। "जो सब मनुष्यों का और निज करके जितनों ने विश्वास किया उनका उद्धारकर्ता है*** (4:10)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिनन्दन (1:1–2)**
2. **धार्मिक सिद्धान्तों के विषय निर्देश (1:3–20)**
   1:3–7 1:12–17
   1:8–11 1:18–20
3. **आराधना के प्रति आदेश (2:1–2:15)**
   2:1–7 2:8 2:9–15
4. **अगुवों के प्रति निर्देश (3:1–16)**
   3:1–7 3:8–13 3:14–16
5. **खतरों के प्रति निर्देश (4:1–16)**
   4:1–5 4:6–10 4:11–16

6. **विभिन्न जिम्मेवारियों के प्रति निर्देश (5:1—6:10)**

5:1—2	5:17—22	6:1—2
5:3—8	5:23	6:3—10
5:9—16	5:24—25	

7. **अन्तिम निर्देश तीमुथियुस को (6:11—21)**

6:11—16	6:17—19	6:20—21

2 तीमुथियुस

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का न्यायी)

लेखक और पुस्तक का नाम : देखें 1 तीमुथियुस

लेखन तिथि : 1 तीमुथियुस देखें।

विषय और अभिप्राय : जब हम 2 तीमुथियुस पर आते हैं तो एक बिल्कुल भिन्न वातावरण पाते हैं। 1 तीमुथियुस में और तीतुस में, पौलुस स्वतंत्र था और यात्रा करने योग्य था, पर यहां वह एक कैदी है और मृत्यु का सामना कर रहा है। इस पत्र में पौलुस के दो बड़े अभिप्राय हैं (1) तीमुथियुस को यरूशलेम आने का आग्रह कि शीघ्र उसकी मृत्यु से पहले पहुंचे (4:9,21, 4:6—8) और (2) और तीमुथियुस को सही सिद्धान्त पर बने रहने की सलाह, कि गलतियों के विरुद्ध सामना कर सके, कड़ी मेहनत एक अच्छे सैनिक की तरह और जाने की हम ऐसे समय में रहते हैं जहां धर्म का त्याग बढ़ रहा है।

जैसा 1 तीमुथियुस में है व्यक्तिगत और सामूहिक विषय पुस्तक में हैं: व्यक्तिगत लोगों के लिये विषय है **"जो वरदान तेरे अन्दर है उसे चमका दें"** (2 तीमुथियुस 1:6)। यद्यपि और भी बहुत से पद हैं जो विषय या प्रसंग बना सकते हैं दोनों व्यक्तिगत और सामूहिक (1:14, 2:1—2; 2:15; 4:5) कलीसिया के लिये प्रसंग ये हो सकता है कि विश्वास योग्य पुरुषों में सही शिक्षा दें जो दूसरों को सिखा सकें और मसीह के अच्छे योद्धा की तरह यातना सह सकें और सेवा कर सकें (2:2—4) या विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ सकें और उसे समाप्त कर सकें (4:6—7)।

2 तीमुथियुस में मसीह देखा गया : सेवकाई के पूरे हृदय में और हमारी सेवकाई में बने रहने की योग्यता व्यक्ति और मसीह के कार्य के धार्मिक सिद्धान्त हैं। ये आश्चर्य की बात नहीं है इसलिये यहां तक कि पुस्तक में धीरज का वर्णन सेवकाई के लिये दिया है। मसीह की धार्मिक शिक्षा ही नेव है — यहां उसका वर्णन इस प्रकार आया है कि जिसने ***"मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया"*** (1:10) वो जो मृतकों में से जी उठा (2:8) वो जिसने उद्धार और अनन्त महिमा दी (2:10)। वो जिसके साथ सब विश्वासी मर गये हैं जिसके साथ वे जियेंगे और जिससे वे विश्वासयोग्य सेवा के लिये पुरुस्कार पायेंगे (जैसा धार्मिकता के मुकुट में है) और उसके साथ राज्य करने के सौभाग्य में (2:11—13; 4:8)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिनन्दन (1:1—2)**
2. **तीमुथियुस के लिये धन्यवाद प्रगट करना (1:3—7)**
3. **तीमुथियुस की जिम्मेवारी याद करने की बुलाहट (1:8—18)**

1:8—14	1:15—18

4. **एक विश्वासयोग्य सेवक का चरित्र (2:1—26)**

2:1—7	2:14—19
2:8—13	2:20—26

5. **विश्वासयोग्य सेवक के लिये चितौनी (3:1—17)**

3:1—9	3:10—17

6. **वचन प्रचार का भार (4:1—5)**
7. **विश्वासयोग्य सेवक का आराम (4:6—18)**

4:6—8	4:9—15	4:16—18

8. **समापन की शुभकामनायें (4:19—22)**

तीतुस

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर की कृपा)

लेखक और पुस्तक का नाम : जबकि पास्टरों से सम्बंधित पत्रियों को लेखक के मामले में देखा गया है – देखें 1 तीमुथियुस। प्रेरितों के काम में तीतुस का वर्णन नहीं किया गया है, पर उसके लिये पौलुस की पत्रियों में बहुत से संदर्भ दिये गये हैं (13 बार) ये हिस्से स्पष्ट करते हैं कि वह पौलुस का सबसे करीबी और अत्याधिक भरोसेमन्द सहकर्मी सुसमाचार में है। जब पौलुस ने यरूशलेम के लिये अन्ताःकिया छोड़ दिया कि दया के सुसमाचार के विषय चर्चा (प्रेरित 15)। अगुवों के साथ करने उसने तीतुस को अपने साथ लिया (एक अन्यजाति को) (गलातियों 2:1–3)। एक उदाहरण की तरह जो बिना खतना के अनुग्रह के द्वारा स्वीकार किया गया है ये पौलुस के इस विषय पर उसके मत को प्रमाणित करता है (गलतियों 2:3–5)। ये भी दिखता है कि तीतुस ने पौलुस के साथ तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान काम किया। वहां से प्रेरित ने उसे कुरिन्थि भेज दिया जहां उसने उस कलीसिया को उसके कार्यों में सहायता की (2 कुरिन्थियों 2:12–13; 7:5–6; 8:6)।

लेखन तिथि : ईस्वी. 65। घटनाओं का सारांश इस पत्री के लिये महत्वपूर्ण है और तीतुस की तिथि देने में कुछ सहायता कर सकती है, यद्यपि सही समय की जानकारी नहीं है। पौलुस को उसके घर रोम की कैद से स्वतंत्र कर दिया गया था (जहां हम उसे प्रेरितों के काम के अन्त में पाते हैं) शायद इसलिये कि पौलुस रोमी नागरिक था और उसके दोष लगाने वाले उसके दोषों को साबित नहीं कर सकें, उन्होंने चुना कि उसके दोषों को कैसर के सामने पेश ना किया जाये (प्रेरित 24–25; 28:30)। उनका मामला खत्म हो गया था और पौलुस को आजाद कर दिया गया था। तब प्रेरित इफिसुस गया जहां उसने तीमुथियुस को कलीसिया को देखने के लिये छोड़ दिया और मकीदूनिया की ओर चला गया। मकीदूनिया से (उत्तरी यूनान) उसने 1 तीमुथियुस लिखा (1 तीमुथियुस 1:3)। उसके बाद वह ब्रेते गया और वहां तीतुस को छोड़ दिया कि वह ब्रेते की कलीसिया में बाकी मामलों की देखभाल कर सके। इसके बाद पौलुस अखिया के निकोपोलिस (दक्षिण यूनान, तीतुस 3:12) गया। तब या तो मकीदूनिया या निकोपोलिस से पौलुस ने तीतुस को पत्र लिखा – उसे प्रोत्साहित करने और निर्देश देने के लिये। उसके बाद वह त्रोआस को गया (2 तीमुथियुस 4:13)। जहां तब उसे कैद कर लिया गया और रोम को ले जाया गया और कैद कर दिया गया तथा अन्त में सिर काट दिया गया। जैसा पहले वर्णन किया जा चुका है, ये रोम से था कि इस दूसरी कैद के दौरान उसने कैद ही में 2 तीमुथियुस को लिखा। ये घटनाएं ईस्वी. 62–67 में हुईं।

विषय और अभिप्राय : इस पुस्तक में बहुत से विषय और अभिप्राय देखे जाते हैं। पौलुस ने लिखाः (1) तीतुस को निर्देश देने के लिये कि उसे उन मामलों को ठीक करना है जिनकी कमी क्रेते में सही तरीके से कलीसियाओं की स्थापना में करना है। (2) तीतुस को अधिकार देना – जिसकी दृष्टिकोण में वह विरोध का सामना कर रहा है (2:15, 3:1–15); (3) निर्देश देना कि किस प्रकार विरोध का सामना करता है और विशेष निर्देश विश्वास और चरित्र के विषय देना है (4) झूठे शिक्षकों के विषय चितौनी देना है (1:5,10–11, 2:1–8, 15; 3:1–11) और (5) और उसका तीतुस को निकापोलिस में जाड़े में मिलने की योजना को बताना (3:12)। क्या ये भेंट हो पाई या नहीं – हमें मालूम नहीं। ऐसी परम्परा ये बताती है कि तीतुस क्रेते को वापस आ गया और बाकी के जीवन भर वहां सेवा करता रहा।

इसका विषय ये दिखाने के लिये कि किस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह जो हमें मसीह के जीवन को बचाने और उसकी मृत्यु में दिखाई देता है – हमें निर्देश देता है कि अधर्म का इंकार करें और धार्मिकता में जियें और जैसा लोग सब अच्छे काम परमेश्वर की धार्मिक शिक्षा को पालन करने में करते हैं (2:10–3:9)

बहुत से महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा पत्र में की गई है जिसमें प्राचानों की योग्यता (1:5–9)। विभिन्न आयु के लोगों के लिये निर्देश (2:1–8)। प्रशासन के साथ सम्बंध (3:1–2) मानव कार्यों का नये जन्म के साथ और आत्मा के साथ सम्बंध (3:5) और परमेश्वर के लोगों में भले कामों को बढ़ाने में अनुग्रह की भूमिका (2:11–3:8)।

तीतुस में मसीह देखा गया : पौलुस की शिक्षा के साथ लगातार बने रहना, हम देखते हैं कि मसीही का चरित्र/व्यवहार कैसे मसीह के साथ पूर्व काल, वर्तमान और भविष्य में जोड़ा गया है इस पुस्त्क में हम उसके ईश्वरत्व को देखते हैं (2:13) और उद्धारकर्ता के छुड़ाये जाने के काम (2:12)। यहां यीशु मसीह को इस प्रकार वर्णन किया जाता है, ***"अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह – जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो"*** (2:13–14)

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिनन्दन और प्रारम्भिक शुभकामनाएं (1:1–4)**
2. **कलीसिया के प्राचीनों की योग्यताएं (1:5–9)**
3. **चर्च के विरोधी (1:10–16)**

4. **कलीसिया के अन्दर कार्य (2:1–3:11)**

2:1–2	2:9–10	3:1–11
2:3–5	2:11–14	
2:6–8	2:15	

5. **अन्तिम निर्देश और शुभकामनाएं (3:12–15)**

फिलेमोन

(मसीह : हमारे लिये परमेश्वर का भरोसा)

लेखक और पुस्तक का नाम : जैसा दूसरी बन्दीगृह की पुस्तकों के साथ है (इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों) फिलेमोन पौलुस के द्वारा उसकी पहली कैद रोम में लिखी गई थी। पत्र फिलेमोन को लिखा गया है जो उनीसमुस का स्वामी था, लाखों दास जो रोम के राज्य में थे उनमें से एक था, जिसने अपने स्वामी के यहां चोरी की और भाग गया। वह रोम गया और वहां पौलुस के सम्पर्क में आया, जिसने उसे मसीह पर विश्वास करने में अगुवाई की (1:10), तो अब दोनों उनीसमुस और फिलेमोन अपनी मसीही जिम्मेवारी एक दूसरे के प्रति निभाने का सामना कर रहे थे। उनीसमुस को अपने स्वामी फिलेमोन के पास वापस लौटना था और उसे उनीसफस को क्षमा करके एक मसीही भाई की तरह स्वीकार करना था। भागे हुए दास की सज़ा मृत्यु होती थी पर पौलुस उनीसमुस के बदले में विनम्र निवेदन करता है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 60–61। इसलिये कि ये पौलुस के रोम में प्रथम कैद के दौरान लिखी गई थी ये लगभग ईस्वी. 60–61 में लिखी गई थी।

विषय और अभिप्राय : प्राथमिक अभिप्राय का सभी पत्रियों से अधिक व्यक्तिगत था फिलेमोन से उनीसमुस को क्षमा करने को कहना था और उसे प्रिय भाई की तरह वापस स्वीकार करना था और साथ ही उसे सुसमाचार के सहकर्मी की तरह लेना था (1:10–17)। पौलुस ने फिलेमोन से जो भी कर्ज उनीसमुस की तरफ बनता है बनाये। इस प्रकार ये पत्री मसीह के उदाहरण में सही बैठती है जिसने हमारी जगह हमारे बदले में ले ली (1:18)।

दूसरा अभिप्राय ये है कि मसीही प्रेम को व्यवहारिक रूप से सिखाना है और जब हम मसीह के जीवन की हमारे जीवनों में बदलने के असर को बताना है। ये दूसरों के साथ हमारे सम्बंधों को बदल देता है, चाहे घर में हों या स्वामी/दास का या स्वामी/कार्यकर्ता के सम्बन्ध। दूसरी कैद की दूसरी पत्रियों में – पौलुस ने नये सम्बन्ध के विषय में बोला (इफिसियों 6:5–9; कुलुस्सियों 3:22; 4:1)। इस पत्री में हमारे पास एक अद्भुत उदाहरण है। अन्तिम अभिप्राय पौलुस का फिलेमोन को धन्यवाद देने का था और एक तैयारी की, कि जब वह अपनी कैद से आजाद होगा तईस्वी.ईस्वी.ईस्वी.ईस्वी.ईस्वी.ईस्वी.ब भेंट करने की (1:4–7,22) तब विषय ये है कि सुसमाचार की जीवन बदलने वाली सामर्थ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जाये और हमारे सम्बन्धों को बन्धनों से भाई चारे में बदल जाये।

कुलुस्सी कलीसिया में केवल फिलेमोन ही अकेला नहीं था जिसके पास दास था या वह दासों का स्वामी था (4:1) तो ये पत्री दूसरे मसीही स्वामियों के लिये मार्गदर्शन है उनके दास–भाई चारे के सम्बन्ध में। पौलुस ने फिलेमान के अधिकारों का इंकार नहीं किया जो उसके दासों पर है। पर उसने फिलेमोन से कहा कि वह भाईचारे के मसीही सिद्धान्त को उनीसमुस की परिस्थिति से जोड़े (1:16), उसी समय पौलुस ने जो भी उनीसमुस पर कर्जा था उसे अदा करने को राजी हुआ। ये पत्री दास्तवता के विरुद्ध हमला नहीं है पर एक सुझाव है कि कैसे एक मसीही स्वामी और दास उस पद्यति में विश्वास में जी सकते हैं। ये सम्भव है कि फिलेमोन ने उनीसमुस को रिहा करके पौलुस के पास वापस भेज दिया हो (1:14) ये भी सुझाव दिया गया है कि उनीसमुस एक सेवक बन गया और बाद में इफिसुस कलीसिया का बिशप बन गया।

फिलेमोन में मसीह देखा गया : क्षमा जो विश्वासी मसीह में पाता है बड़ी सुन्दरता से फिलेमोन में दिखाई पड़ता है। उनीसमुस एक बड़े अपराध का दोषी है (1:11,18) पर पौलुस के प्रेम से उसके बदले बिनती की (1:10–17)। पौलुस अपने अधिकार को एक तरफ रखता है (1:8) और उनीसमुस का विकल्प बन जाता है उसके कर्ज की कल्पना करके (1:19) फिलेमोन के दया के कार्य द्वारा, उनीसमुस पुनः स्थान पाता है और एक नये सम्बंध में रखा जाता है (1:15–16) इसकी अनुरुपता में हम उनीसमुस के समान हैं। पौलुस की फिलेमोन के सामने वकालत मसीह के कार्यों के समान है जो वह पिता के सन्मुख करता है। उनीसमुस व्यवस्था के अनुसार दण्ड का भागी (मृत्यु का) पर अनुग्रह के द्वारा बचाया गया।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **फिलेमोन के लिये धन्यवाद की प्रार्थना (1:1–7)**

1:1–3	1:4–7

2. **पौलुस की उनीसमुस के लिये बिनती (1:8–18)**

1:8–9	1:10–16	1:17–18

3. **पौलुस का फिलेमोन को वायदा (1:19–21)**
4. **व्यक्तिगत मामले (1:22–25)**

भाग 3
सामान्य पत्रियां

परिचय : अब हम अन्त में नये नियम की आठ पत्रिकाओं पर आते हैं। सात पत्रियां सामान्य या विश्वव्यापी कहलाती हैं, यद्यपि इब्रानियों को इस वर्णन से बाहर रखा गया है। शायद कैथोलिक सामान्य के रूप में इस्तेमाल किया गया था या विश्वव्यापी जिसे पौलुस की पत्रियों से अलग रखा गया था जो व्यक्तियों या कलीसिया को लिखा गया था। उनके वर्णनों में (2 और 3 यूहन्ना को छोड़कर) उनको सम्बोधित है ***"बारह गोत्रों को जो बाहर फैल गये हैं"*** जो विश्वासी की हर जगह पद या स्थान है। (उस समय सभी यहूदी मसीहियों के लिये था) तब 1 पतरस उनके लिये लिखा गया जो नागरिक नहीं थे, पूरे "पुन्तुस, गलतियां, कप्पादोकिया, आसिया, बिथीतिया" में फैले हुए थे – इन विभिन्न क्षेत्रों में विश्वासियों का पद। 2 और 3 यहून्ना को भी इस झुण्ड में शामिल किया हुआ है – भले ही वो विशेष व्यक्तियों को सम्बोधित किया गया था। इन भिन्नताओं के कारण, इस अध्ययन में आठ पुस्तकें साधारण रूप से "सामान्य पत्रियां" कहलाती हैं इसे नोट किया जाना चाहिये कि पौलीन (पौलुस की) पत्रियां उनके वर्णन के अनुसार उनका शीर्षक नहीं दिया गया है पर इब्रानियों को छोड़कर सभी पत्रियों के शीर्षक (नाम) उनके लेखकों के नाम पर दिया गया है।

सामान्य रूप से हम कह सकते हैं कि याकूब और पतरस विचारशील है (दैविय सिद्धान्तों के अनुसार सही या गलत है)। विश्वासियों को उद्धारकर्ता के साथ पवित्र चाल में चलने के लिये बुलाया है। दूसरा पतरस और यहूदा भविष्यवाणी वाले हैं, विश्वासियों को झूठे शिक्षों की उपस्थिति के विरुद्ध चितौनी देते हैं और उन्हें विश्वास में सन्तुष्ट होने के लिये बुलाते हैं। इब्रानियों और यूहन्ना की पत्रियां प्रारम्भिक रूप से मसीह से सम्बंधित और नीति शास्त्र पर हैं। मसीहियों को मसीह में बने रहने के लिये बुलाती है जो परमेश्वर का अन्तिम प्रकटीकरण और पुराने नियम की वाचा की पूर्ति है, उसके जीवन का अनुभव करने और सुसमाचार के सत्य के ऊपर न जाने के लिये बुलाया गया है।

ये आठ पत्रियां अपनी लम्बाई की अपेक्षा (जो नये नियम की 10 प्रतिशत से भी कम हैं) वे मसीही सत्य के धन के विभिन्न अभिप्राय और प्रभाव को पौलुस की 13 पत्रियों के साथ पेश करती हैं। हर पांचों लेखक (याकूब, पतरस, यूहन्ना, यहूदा और इब्रानियों का लेखक) ने अपने दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैसे पौलुस की पत्रियां महान हैं नये नियम का प्रकटीकरण प्रेरितों के काम के बाद यदि इन पांचों की लेखनी नहीं होती तो एक प्रेरिताई के महत्व सीमित हो जाते।

इब्रानियों

(मसीह : जो सबसे ऊपर है)

लेखक और पुस्तक का नाम : लगभग 1,200 वर्षों तक (ईस्वी. 400–1600) इस पुस्तक का सामान्य नाम "इब्रानियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री" कहा जाता रहा। पर इसके लेखक के प्रति प्रारम्भिक सदियों में कोई सहमति नहीं बन सकी। सबसे पुराना और अत्याधिक विश्वस्त शीर्षक है – "इब्रानियों को"।

बहुत से सुझाव दिये गये हैं और शोधकर्ताओं द्वारा विस्तृत बहस प्रस्तुत की गई है, पर तथ्य ये है कि पुस्तक में लेखक का नाम कहीं नहीं दिया गया है, जैसे उसके लिखने का स्थान, तिथि यहां तक कि इसके पाठकीय अनजान है।

ये पुस्तक पाठकों के लिये अनजान नहीं थी, वे लेखक को जानते थे (13:18–24) कुछ कारणों से प्रारम्भिक कलीसिया लेखक की पहचान में विभाजित हो गई थी। कलीसिया का एक हिस्सा पौलुस को लेखक मानता था – दूसरे बरनबास को लूका या क्लेमेन्ट को मानते थे कुछ के लिये अनजान थे। इसकी अज्ञानता के बावजूद आत्मिक गहराई और इब्रानी की विशेषता इसकी प्रेरणा की गवाही देती है।

जबकि पौलुस की पत्रियों में लाभंतियों का वर्णन नहीं दिया गया है उनके लिए एक शब्द कह सकते हैं। इस पुस्तक के स्वाभाव और पुराने नियम के बहुत से संदर्भ और बलिदानों की पद्यतियां जोरदारी से सुझाव देती है कि वे इब्रानी थे। जेन.सी. होजेज़ कहते हैं:

> इब्रानियों के प्रथम पाठकों की इब्रानियों के प्रति पहचान जैसे लेखक, अनजान है, पर वे विशेष समुदाय के भाग थे। ये कई चीज़ों से प्रगट होता है। पाठकों के पास निश्चय एक कहानी थी और लेखक ने उनके "प्रारम्भिक दिनों" का संदर्भ दिया (इब्रानियों 10:32–34)। वह उनकी पूर्व और वर्तमान की उदारता को जानता था जो दूसरे मसीहियों के लिये थे (6:10) और वह उनकी हाल की आत्मिक दशा के बारे में स्पष्ट था (5:11–14)। इससे अधिक, लेखक का उनके साथ अवश्य सम्बन्ध था और उनसे भेंट करने का इरादा प्रगट किया, शायद तीमुथियुस के साथ (13:19,23) उसने उनकी प्रार्थना के लिये भी विनती की (13:18)।

सारी सम्भावनाओं में पाठक मुख्य रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के थे। यद्यपि कुछ समय तक इस पर प्रश्न रहा, इस पत्री की विषय–सूचि इसके लिये बहस करती है। यह सही है कि प्राचीन शीर्षक "इब्रानियों को" एक ही संयोग है, पर ये स्वाभाविक है। जब सब कुछ अन्य जाति मंडली के लिये कहा गया तो ये कहा जा सकता है, तथ्य ये रहता है कि लेखक अत्याधिक जोर यहूदी आदि रूप और उसकी बहस लैव्यव्यवस्था की पद्यति पर सबसे उत्तम वर्णन है यदि उसकी मंडली यहूदी है और अपने पुराने विश्वास में बह जाने को तैयार है। पुराने नियम के धर्मशास्त्र के अधिकार की भारी और विस्तृत विनय भी पाठकों के लिये जो लाई गई थी सही बैठती है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 1050। बहुत से तथ्य ये सुझाव देते हैं कि तिथि लगभग ईस्वी. 64–68 रही होगी। प्रथम पुस्तक के विषय में रोम के क्लेमेन्ट ने (प्रारम्भिक कलीसिया का पास्टर था) ईस्वी. 95 में बताया तो ये उससे पहले लिखी गई होगी। दूसरा, ऐसा लगता है कि पुस्तक यरूशलेम के विनाश ईस्वी. 70 के पहले लिखी गई इन कारणों सेः (1) लेखक ने मन्दिर के नष्ट होने का वर्णन किया होता और यहूदियों के बलिदान की पद्यति के अन्त के विषय में यदि ऐसी महत्वपूर्ण घटना घटी विशेषकर इस पुस्तक की बहस के दृष्टीकोण से । (2) लेखक मन्दिर और उसकी गतिविधियों के विषय इस प्रकार बताता है जो ये संकेत करते हैं कि ये अभी भी चल रहे हैं (5:1–3, 7:23,27; 8:3–5, 9:6–9, 13; 25; 10:1, 3–4,8, 11; 13:10–11) (3) लेखक तीमुथियुस के हाल की रिहाई का संदर्भ देता है 13:23 में, यदि ये पौलुस के साथ रोम में सेवकाई में शामिल है तो 60 के दशक के अन्त की तिथि होगी।

विषय और अभिप्राय : स्पष्ट रूप से इब्रानियों का विषय मसीह की महानता या उच्चता के विषय है और इस प्रकार उस मसीहत के विषय जो पूरे पुराने नियम पद्यति की है। बहुत से शब्द–बेहतर सिद्ध और स्वर्गीय इसे प्रगट करने के लिये दृढ़ता से इस्तेमाल किये गये हैं। उसके प्राथमिक अभिप्राय की तरह लेखक पांच विशेष तरीकों से दिखाना चाहता कि मसीह उच्च है या बेहतर है। वह बड़ा हैः (1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से (1:1–3)। (2) स्वर्गदूतों से (1:4–2:18) (3) मूसा से (3:1–6) (4) यहोशू से (3:7–4:16) (5) हारून के याजकपन से (5:1–10:18) इस विषय का लक्ष्य ये है कि अपने पाठकों को उन खतरों के विरुद्ध चितौनी देना कि जो कुछ मसीह में उनके पास है थोड़े समय के लिये पुराने नियम की पद्यतियों की छाया पर (10:1) इस प्रकार पाठकों को प्रोत्साहित किया गया है कि परिपक्वता में और विश्वासयोग्य विश्वासी के रूप में और अपनी स्वर्गीय बुलाहट पूरी करने में लगे रहें इसे करने के लिये पांच चेतावनी के हिस्से हैं जिन्हें उनको उनके मसीही विश्वास में प्रगति करने के लिये चुनौतियों को डाल दिया गया है (2:1–4; 3:1–4:13, 5:11–6:20, 10:26–39; 12:14–29)।

इब्रानियों में मसीह देखा गया : मसीह की महानता को दिखाने के अभिप्राय को पूरा करने के लिये, इब्रानियों की पुस्तक नये नियम की मसीह के विषय बताने की अकेली पुस्तक बन गई है। यहां वह पुत्र की नाईं घोषित किया गया है। जो परमेश्वर का चमकता हुआ प्रस्तुतिकरण है (1:13,13), वो जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है (1:3) जिसे पिता परमेश्वर ने परमेश्वर ठहराया (1:8–9)। अनन्त सृष्टिकर्ता (1:10–12) मलीकीसिदक के अनुसार अनन्त याजक (अध्याय 7) यहां मसीह को दैविय मानव भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह हमारे छुड़ाने वाले के रूप में देखा गया है, जो अपने भाइयों की नाईं बनाया गया है, जिसने एक बार और सदा के लिये हमारे पापों से निपट लिया है और वो कार्य किया है जो थोड़े समय के बलिदान कभी नहीं कर सकते थे। इस प्रकार वह हमारे महायाजक की तरह स्वर्गों पर चढ़ गया है – वो जो हमारी निर्बलताओं पर तरस खाता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **पुरानी वाचा के अगुवों पर मसीह की श्रेष्ठता (1:1–7:28)**
   - क. मसीह पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से उच्च है (1:1–3)
   - ख. मसीह स्वर्गदूतों से भी उच्च है (1:4–2:18)
     - 1:4–14 2:5–8 2:14–18
     - 2:1–4 2:9–13
   - ग. मसीह मूसा से उच्च है (3:1–16)
   - घ. मसीह यहोशू से उच्च है (3:7–4:13)
     - 3:7–11 4:1–5
     - 3:12–19 4:6–13
   - ङ. मसीह हारून के याजकपन से उच्च है (4:14–7:28)
     - 1) दृढ़ता से थामे रहने का उपदेश (4:14–16)
     - 2) एक याजक की योग्यता (5:1–10)
       - 5:1–4 5:5–10

3) आत्मिक आलस्य को दूर करने का उपदेश (5:11–6:12)
5:11–14 6:1–8 6:9–12
4) परमेश्वर की प्रतिज्ञा की निश्चिंतता (6:13–20)
5) परमेश्वर की उच्च याजकीय प्रबन्ध (7:1–28)
7:1–3 7:11–22
7:4–10 7:23–28

2. हमारे महायाजक का उच्च बलिदान कार्य (8:1–10:39)

क. एक बेहतर वाचा) 8:1–13)
8:1–6 8:7–13

ख. एक बेहतर मन्दिर (9:1–10)
9:1–5 9:6–10

ग. एक बेहतर बलिदान (9:11–10:18)
9:11–14 9:23–28 10:11–18
9:15–22 10:1–10

घ. उपदेश (10:19–39)
10:19–25 10:26–31 10:32–39

3. विश्वास बचाये रखने की अन्तिम विनय (11:1–12:29)

क. विश्वास के पूर्व के हीरो के उदाहरण (11:1–40)
11:1–2 11:13–16 11:30–31
11:3–7 11:17–22 11:32–38
11:8–12 11:23–29 11:39–40

ख. विश्वास सम्भाले रहने के लिये प्रोत्साहन (12:1–11)
12:1–2 12:3–11

ग. विश्वास सम्भाले रहने का उपदेश (12:12–17)
12:12–13 12:14–17

घ. विश्वास सम्भाले रहने की प्रेरणा (12:18–29)
12:18–24 12:25–29

4. समापन (13:1–25)

क. मसीही जीवन के लिये व्यवहारिक सिद्धान्त (13:1–17)
13:1–6 13:7–14 13:15–16

ख. प्रार्थना का निवेदन (13:18–19)

ग. आशीर्वाद (13:20–21)

घ. व्यक्तिगत टिप्पणी (13:22–23)

ङ. शुभकामनाएं और अन्तिम आशीर्वाद (13:24–25)

याकूब

(मसीह : उदाहरण/आदर्श)

लेखक और पुस्तक का नाम : ये पुस्तक इस प्रकार आरम्भ होती है, ***"परमेश्वर के और प्रभु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारह गोत्रों को जो तितर–बितर होकर रहते हैं"*** (1:1) नये नियम में याकूब नाम के चार व्यक्ति हैं: (1) जब्दी का पुत्र, याकूब यूहन्ना का भाई (मरकुस 1:19) (2) हलफई का पुत्र याकूब (मरकुस 3:18) (3) यहूदा का पिता (स्कारयोती का नहीं – लूका 6:16) और (4) प्रभु का भाई (गलतियों 1:19)। इसके सम्बन्ध में रायरे लिखते हैं:–

> नये नियम के चार याकूब नाम व्यक्तियों में से दो का नाम लेखक के रूप में सुझाया जाता है – जब्दी का पुत्र याकूब (यूहन्ना का भाई) और याकूब जो प्रभु का भाई था। जब्दी का पुत्र याकूब लेखक नहीं हो सकता क्योंकि उसे ईस्वी. 44 में मार डाला गया था (प्रेरित 12:17, 15:13, 21:18) इस समापन को सहारा देता है वह समानता जो यूनानी और इस पत्री के बीच और वह भाषण जो याकूब ने यरूशलेम की काउंसिल में दिया था (याकूब 1:1 और प्रेरित 15:23; याकूब 1:27 और प्रेरित 15:14, याकूब 2:5, प्रेरित 15:13)।

जिस प्रकार याकूब सुनने वालों की आवश्यकता को सम्बोधित करता है उसे समझाने की जरूरत है। याकूब ने कहा, ***"उन बाहर गोत्रों को जो तितर–बितर होकर रहते हैं"*** (1:1) जैसा "मेरे भाइयों" द्वारा सुझाव दिया गया है 1:19 और 2:1,7 में ये संदर्भ है उस तितर–बितर होने का जो ईस्वी. 66–70 के बीच हुआ पर यहूदी मसीहियों के लिये जो यरूशलेम में संसार के हर भाग से पेन्तिकोस्त के लिये आये हुए थे (प्रेरित 1:5), इन में से बहुतों ने सुना और पेन्तिकोस्त के आश्चर्यकर्म को देखा और यीशु मसीह पर विश्वास किया। और बहुत से अपने अपने घरों को लौट गये जो वे संसार के विभिन्न स्थानों से आये थे। ये वे हैं जिनके लिये याकूब लिख रहा था।

लेखन तिथि : ईस्वी. 46। शायद याकूब की पत्री पहली है जो लिखी गई और बहुत से शोधकर्ता इसकी तिथि ईस्वी. 45 देते हैं। कारण इस प्रकार है: (1) पुस्तक में एक बिल्कुल स्पष्ट यहूदी चरित्र है जो सुझाव देता है कि ये उस समय लिखा गया जब अभी भी कलीसिया यहूदियों द्वारा शासित थी। (2) यहां अन्य जातियों के साथ खतना के ऊपर कोई विरोधाभास का संदर्भ नहीं दिया गया। (3) मन्दिर शब्द का इस्तेमाल प्रार्थनाओं के लिये होता था "कलीसिया" शब्द नहीं (2:2)। (4) यरूशलेम काउंसिल के लिये संदर्भों की कमी जैसे अन्यजाति–मसीहियों और यहूदी मसीहियों के सम्बन्ध (प्रेरित 15:1; ईस्वी. 49) और भी पहले की तिथि बताते हैं। (5) मसीह की शिक्षाओं का सुसमाचार के साथ बहुत थोड़ा मौखिक सहमति जो उन लोगों ने की हो।"

विषय और अभिप्राय : स्पष्ट है याकूब एक क्रियाशील विश्वास के होने की चिन्ता व्यक्त करता जो बड़ी, शक्तिशाली और कार्यरूप में है। याकूब विश्वासियों को चितौनी देने के लिये लिख रहा था कि मृतक, क्रिया शून्य विश्वास का परिणाम के विषय – दोनों व्यक्तिगत और सामूहिक और उन्हें सच्ची आत्मिक परिपक्वता और बढ़ौतरी के लिये उन्हें सचेत करना था।

याकूब में मसीह देखा गया : 1:1 और 2:1 में, याकूब विशेष रूप से "प्रभु यीशु" का हवाला देता है और उसके आने की आशा करता है (5:7–8), इस पत्री के 108 पदों में पुराने नियम के 22 पुस्तकों के हवाले (संदर्भ) दिये गये हैं और मसीह की शिक्षा की पहाड़ी उपदेश से कम से कम 15 संकेत दिये गये हैं।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **भरोसे के साथ खड़े रहना (1:1–27)**
   - क. अभिनन्दन और शुभकामनाएं (1:1)
   - ख. विपरीत परीक्षा में आनन्द करना (1:2–12)
     - 1:2–4 1:5–8 1:9–12
   - ग. मृतक परीक्षाओं का सामना करना (1:13–18)
   - घ. दैविय सत्य में विश्राम करना (1:19–27)
     - 1:19–25 1:26–27
2. **तरस के साथ सेवा करें (2:1–26)**
   - क. दूसरों को स्वीकार करें (2:1–13)
     - 2:1–7 2:8–13
   - ख. दूसरों की सहायता करें (2:14–26)
     - 2:14–17 2:18–26
3. **देखभाल के साथ बोलें (3:1–18)**
   - क. बात को नियंत्रित करें (3:1–12)
     - 3:1–5 3:6–12
   - ख. विचारों को उत्पन्न करें (3:13–18)
4. **पश्चाताप के साथ समर्पण (4:1–17)**
   - क. घृणा को नम्रता में बदलो (4:1–6)
   - ख. न्याय को धर्म में बदलो (4:7–12)
     - 4:7–10 4:11–12
   - ग. शेखी को विश्वास में बदल दो (4:13–17)
5. **चिन्ता के साथ बांटो (5:1–20)**
   - क. धन में बांटो (5:1–6)
   - ख. धीरज में बांटो (5:7–12)
   - ग. प्रार्थना में बांटो (5:13–20)
     - 5:13–18 5:19–20

1 पतरस

(मसीह : यातनाओं का उदाहरण)

लेखक और पुस्तक का नाम : प्रारम्भिक पद स्पष्टता से बताते हैं कि इसका लेखक पतरस हैं (1:1) पहला पतरस प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा प्रेरित पतरस के कार्य को समस्त संसार द्वारा पहचाना गया है।

ये पत्री उनका सम्बोधन करती है जो (नागरिक नहीं) के रूप में (पोन्तुस, गलतियों, कप्पायोकिया आसिया और बिथिनिया) जो चुने हुए हैं (विश्वासी) (1:1) ये दोनों यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों का हवाला देता है जो धरती पर अस्थाई रूप से रहते हैं और यहूदी जो इस निकाले जाने से प्रभावित हैं। "तितर–बितर" होना सामान्य रूप से उन यहूदियों के लिये बताता है जो फिलिस्तीन में नहीं रहते पर पूरे भूमध्य संसार में फैल गये हैं। यहां ये शायद अन्य जाति मसीहियों के लिये जो परमेश्वर के लोग होकर समस्त परमेश्वर रहित संसार में फैल गये हैं इस्तेमाल होता है। पतरस के दिमाग में दोनों यहूदी और अन्यजाति विश्वासी थे।

पहला पतरस उन लोगों को सम्बोधित करता है जो मसीही रोम के पांचों प्रान्तों में बिखर गये हैं। आज वह हिस्सा उत्तरी टर्की है। उन प्रान्तों में चर्च दोनों यहूदी और अन्य जाति द्वारा बनाये गये थे। ये पत्री पुराने नियम के हवालों से भरा हुआ यानी बड़ी धनी है। यहूदी मसीहियों ने विशेष महत्व पाया होगा जो "डियास्पोरा" जिसका अनुवाद "तितर–बितर" किया गया है जिसे अभिनन्दन में इस्तेमाल किया गया है (1:1) यहूदी जो यरूशलेम से बाहर रहते थे उन्हें बताया जाता था कि वे "डियास्पोरा" में रहते हैं।

अन्य जाति पाठकों ने नोट किया होगा कि पतरस का उपदेश उनके परमेश्वर के वचन की अज्ञानता की पृष्ठभूमि के प्रकाश में पवित्र जीने के लिये (1:14) बताता है अन्य जाति मसीही भी अधिक प्रोत्साहित हुए होंगे – उस तथ्य से हालांकि वे अज्ञानता में थे अब वे परमेश्वर के लोग समझे जाते थे (2:10)। स्पष्टता और सावधानी से पतरस ने दोनों यहूदी और अन्यजाति मसीहियों को अपने पत्र में प्रोत्साहित करने के लिये शामिल किया – जो आसिया की कलीसियाओं के लिये था।

लेखन तिथि : ईस्वी. 63–64। कलीसिया की परम्परायें पतरस के बाद के वर्षों में उसे रोम के शहर में जोड़ते हैं। यदि 5:13 का संदर्भ बाबुल में – रोम के साथ वर्णन किया गया है तो ये पत्र उस समय लिखा गया जब पतरस रोम में था अपने जीवन के अन्तिम दशक में लगभग ईस्वी. 63 में नीरो के ईस्वी. 64 में सताव होने के कुछ पहले। पतरस अभी भी रोम को मसीहियों का शत्रु नहीं मानता (1 पतरस 2:13–17)। ये वर्णन करना और भी कठिन होता यदि नीरो का भयंकर सताव हो जाता।

विषय और अभिप्राय : जबकि 1 पतरस विभिन्न धार्मिक शिक्षाओं का वर्णन करता और बहुत कुछ मसीही जीवन के विषय कहना है और मसीही जिम्मेवारियों के विषय–विषय और 1 पतरस का अभिप्राय यातना सहने को केन्द्रित बनाता है। विशेष कर विश्वास के लिये यातनाओं का सहना। इस पुस्तक के एक पुस्तिका या लेख कहा गया जो मसीहियों को दिखाती है कि उन्हें किस प्रकार मसीह के राजदूत की तरह शत्रुपूर्ण संसार में जीना है (1:1,13–21, 2:11–12, 3:14, 17, 4:1, 13,15,16,19)।

इस पुस्तक में बहुत से अभिप्राय हैं। ये इस प्रकार बनाया गया है कि विश्वासियों को सताव के समय दिशा उपलब्ध करा सकेः (1) मसीह के आने वाले प्रगटीकरण पर ध्यान केन्द्रित करने और उसके छुटकारो के द्वारा (1:3–12); (2) यातनाओं में मसीह के उदाहरण का अनुसरण करके (2:21–24) और (3) अपनी बुलाहट के अनुसार संसार में जीना – परेश्वर के विशेष लोगों के रूप में अन्य जाति संसार के साथ अच्छी रिपोर्ट बनाये हुए (2:4–12; 4:1–19)। दूसरे अभिप्राय में धार्मिक शिक्षा और व्यवहार में लाने के बीच आवश्यक सम्बन्ध को जोड़कर प्रगट करना (5:12) और ईश्वरीय अगुवाई को प्रोत्साहन देना और परमेश्वर के झुण्ड की चरवाही करना (5:1–4) जो इस शत्रुपूर्ण संसार में प्रभावशाली कार्य करने के लिये आवश्यक चीज़ हैं।

1 पतरस में मसीह देखा गया : पुस्तक पूरी तरह मसीह के कार्य और व्यक्ति से भरपूर है। मसीह के पुनः जी उठने के द्वारा, मसीहियों को एक "जीवित आशा" है और नाश ना होने वाली (नाश के लिये खुली नहीं है) निवास" (1:3–4) बहुत से स्थानों में पतरस मसीह के आने और महिमा के बारे में बोलता है (1:7,13, 4:13,5:1)। वह मसीह के कार्य के विषय भी बोलता परमेश्वर का मेमना जिसने हमारे पापों को क्रूस पर सह कर हमें छुड़ाया (1:18–19, 2:24)। हमारा सताव में सिद्ध उदाहरण के द्वारा (2:21–24) और (3) मसीह जो हमारा मुख्य चरवाहा है और विश्वासियों का संरक्षक है (2:25; 5:4)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **विश्वासियों का उद्धार (1:1–12)**
   - क. अभिवादन (1:1–2)
   - ख. भविष्य (जीवित) आशा और वर्तमान की परीक्षा (1:3–9)
   - ग. वर्तमान का उद्धार और बीते समय का प्रगटीकरण (1:10–12)

2. **विश्वासी का शुद्धिकरण (1:13–2:12)**
   क. पवित्रता की बुलाहट (1:13–21)
      1:13–16 1:17–21
   ख. एक दूसरे से दृढ़ प्रेम की बुलाहट (1:22–25)
   ग. वचन के शुद्ध दूध की अभिलाषा की बुलाहट (2:1–3)
   घ. आत्मिक बलिदान देने के लिये बुलाहट (2:4–10)
      2:4–8 2:9–10
   ङ. शारीरिक अभिलाषा से बचने के लिये बुलाहट (2:11–12)
3. **विश्वासियों का समर्पण (2:13–3:12)**
   क. सरकार को समर्पण (2:13–17)
   ख. व्यापार में समर्पण (2:18–20)
   ग. मसीह का उदाहरण (2:21–25)
   घ. विवाह में समर्पण (3:1–8)
   ङ. जीवन के सभी क्षेत्रों में समर्पण (3:9–12)
4. **विश्वासियों का यातना सहना (3:13–5:14)**
   क. यातना में व्यवहार की आवश्यकता (3:13–17)
   ख. यातना के लिये मसीह का उदाहरण (3:18–4:6)
      3:18–22 4:1–6
   ग. यातना के लिये आज्ञा (4:7–19)
      4:7–11 4:12–19
   घ. यातना में चरवाहा (5:1–11)
      5:1–5 5:6–11
   ङ. समापन या आशीर्वाद (5:12–14)

2 पतरस

(मसीह : वचन की परिपूर्णता)

लेखक और पुस्तक का नाम : लेखक स्पष्ट रूप से अपनी पहचान शिमौन पतरस के रूप में देता है (1:1) बहुत से आंतरिक सबूत प्रेरित पतरस की ओर लेखक होने का संकेत देते हैं। एक विशेष भाग में लगभग एक मरते हुए पिता का बयान, वह पहला व्यक्ति अपने आपको रखता है (1:14) अपने आप को मसीह के रूपान्तरण का चश्मदीद करके घोषणा करता है। (1:16–18, मत्ती 17:1–5) वह यह बताता है कि ये उसके पाठकों के लिये दूसरा पत्र है (3:1) और पौलुस प्रेरित के साथ रहने का व्यक्तिगत सम्बन्ध दिखाता है – जिसे वह "हमारा प्रिय भाई" के नाम से बुलाता है (3:15) इस पत्र का शीर्षक "दूसरा पतरस" है जो पहले पत्र से अलग बताना है कि पतरस के द्वारा लिखा गया है।

पतरस ने इस पत्र को उसी विश्वासियों के झुण्ड के लिये लिखा है (3:1) जैसा उसका पहला पत्र है। ये अन्तिम वर्णन है, एक चितौनी और "अन्त के दिन" का पत्र (1:14,2:1–22, 3:3) वह मसीहियों को कीमती विश्वास के लिये लिख रहा था – बिना शक यहूदियों और अन्यजाति के कलीसियाओं को जो पोन्तुस, गलतियों, कप्पादोकिया, आसिया और बितूनिया में हैं" (1 पतरस 1:1)।

लेखन तिथि : ईस्वी. 67–68। एक विदाई के पत्र की तरह, पतरस ने इसे अपने जीवन के अन्तिम समय में लिखा (1:12–14) प्रारम्भिक कलीसिया के इतिहासकार असबुस पतरस को नीरो के सताव के दौरान मार डाला गया था (लगभग ईस्वी. 67–68)। ये पत्र इन्हीं वर्षों में लिखा गया होगा।

विषय और अभिप्राय : जैसा पौलुस प्रेरित ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में धर्म त्याग की चितौनी दी थी (2 तीमुथियुस) उसी प्रकार पतरस ने भी झूठे शिक्षकों के उठने के खतरे के विषय चितौनी दी जैसा भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की गई थी, स्वयं प्रभु के द्वारा और उसके प्रेरितों द्वारा दी गई थी (2:1, 3:1–3)। इस छोटे पत्र का अभिप्राय उन खतरों के विरुद्ध जिनका कलीसिया सामना कर रही विशेषकर झूठे शिक्षकों का उठता।

ये देखते हुए कि परमेश्वर ने वो सब चीज़ें उपलब्ध करा दीं जो जीवन और भक्ति के लिये आवश्यक हैं (1:3) दूसरा पतरस उसकी मंडली के लिये तरस भरा आग्रह है कि मसीह में बढ़ें और परिपक्व हो जायें, ना सुस्त हों ना बिना फल के (1:8) और इसके साथ

एक नींव की तरह, झूठे शिक्षकों की लहर से बचाने। ये इस कारण हुआ क्योंकि पतरस को पृथ्वी पर अपना थोड़ा समय का अन्दाज़ आ गया था (1:13–15) ये कि मसीह की देह एकदम खतरे का सामना कर रही है (2:1–3)। इस प्रकार पतरस अपनी याददाश्त को ताज़ा करना चाहता और विचारों की मथना चाहता था (1:13; 3:1–2)। जिससे कि वे उसकी शिक्षा को दृढ़ता से दिमाग में ले लें (1:15), ऐसा करने के लिये उसने सावधानी से परिपक्व विश्वासियों को वर्णन किया, और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह और उद्धारकर्ता की पहचान में बढ़ने की प्रोत्साहित किया (1:2–11; 3:18)।

आगे झूठे शिक्षकों से निपटने के लिये, पतरस ने परमेश्वर के वचन के स्वाभाव का वर्णन किया है एक दृढ़ नींव की तरह (1:12–21) और ऐसे खतरों के विरुद्ध चितौनी दी है जो झूठे शिक्षकों के द्वारा आने की सम्भावना है जिनके लिये न्याय की अवश्य है (2:1–22)। अन्त में वह अपने पाठकों को प्रोत्साहित करता है कि मसीह का आना निश्चित है (3:1–16)। मसीह के आने के इस अन्तिम वर्णन में पतरस ने एक अन्तिम चुनौती दी है:

> ***इसलिये हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो, पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ, उसी की महिमा अब भी हो और युगानयुग होती रहे "आमीन"।***

2 पतरस में मसीह देखा गया : पतरस मसीह को हमारे जीवन और धार्मिकता का स्रोत बताता है और ध्यान केन्द्रित करने पर वह मसीह को चार बार "प्रभु और उद्धारकर्ता" बताता है और "प्रभु" करके 14 बार बताता है इसके साथ ही वह प्रभु के महिमामय रूपान्तरण पवित्र पर्वत पर होने का वर्णन करता है और उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन की बाट जोहता है। इस समय समस्त संसार वह देखेगा जो पतरस और दूसरे चेलों ने पवित्र पर्वत देखने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **अभिवादन (1:1–2)**
2. **मसीही चरित्र का विकास या पैदा करना (1:3–21)**
   - क. विश्वास की बढ़ौतरी (1:3–11)
     - 1:3–4 1:5–8 1:9–11
   - ख. विश्वास का आधार (1:12–21)
     - 1:12–15 1:16–18 1:19–21
3. **झूठे शिक्षकों पर दोषारोपण या उनका तिरस्कार (2:1–22)**
   - क. उनका चरित्र और खतरा (2:1–3)
   - ख. उनका विनाश या दोष (2:4–10)
   - ग. उनका वर्णन और विशेषताएं (2:11–22)
4. **भविष्य के लिये नमूना और भरोसा (3:1–18)**
   - क. झूठे शिक्षकों का उपहास (3:1–7)
     - 3:1–2 3:3–7
   - ख. प्रभु के दिन की देर (3:8–9)
   - ग. प्रभु के दिन के बाद समाप्ति (3:10–13)
   - घ. खतरों के दृष्टिकोण में बुद्धिमानी की आवश्यकता (3:14–18)।

1 यूहन्ना

(मसीह : परमेश्वर का प्रेम)

लेखक और पुस्तक का नाम : जबकि पुस्तक में लेखक का नाम नहीं दिया गया है। ये परम्परा के अनुसार प्रेरित यूहन्ना को इसके लिखने का श्रेय दिया गया है। लेखक उद्धारकर्ता का मूल गवाह था जिसने उसे बहुत करीबी से जाना (1:1–5)।

पूरी पत्री में बहुत से पद थे जो ये संकेत दे रहे थे कि यूहन्ना विश्वासियों को लिख रहा था (2:1, 12–14, 19, 3:1, 5:13) पर यूहन्ना कहीं भी संकेत दे रहे थे कि वे कौन थे और कहां रहते थे। ये तथ्य ये सुझाव देता है कि ये वो पत्र था जिसे कई कलीसियाओं में घुमाया जाना था। शायद इफिसुस शहर के चारों तरफ कलीसियाएं थीं जबकि प्रारम्भिक मसीही लेखकों ने यूहन्ना को उसके बाद के वर्षों में इफिसुस में रखा था।

1 यूहन्ना की सबसे पहले इस्तेमाल की पुष्टि आसिया के प्रान्त में हुई (अभी तुर्की है) जहां इफिसुस बसा था। अलेक्जेन्डिया का क्लेमेन्ट (प्रथम सदी का पास्टर)। ये संकेत देता है कि यूहन्ना ने इस प्रान्त के कई बिखरे हुई कलीसिया में सेवकाई की। ये सोचा जा सकता है कि 1 यूहन्ना की पत्री को आसिया प्रान्त की कलीसियाओं को भेजा गया।

लेखन तिथि : ईस्वी. 85–90। इसकी तारीख देना कठिन है और इसकी दूसरी पक्तियों के भी, पर जब बहुत से विषय और शब्द यूहन्ना सुसमाचार से मिलते जुलते हैं, तो ये सोचना सही है कि ये सुसमाचार के बाद लिखी गई, पर डेमिशियन के 95 के सताव के पहले, इसलिये तिथि ईस्वी. 85–90 के बीच हो सकती है।

विषय और अभिप्राय : पुस्तक का विषय प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति है (1:3–7)। विश्वासियों के विधर्म का सामना करते हुए, शायद प्रारम्भिक गूढ़ानवाद का रूप (विश्वास करना कि बात बुराई की है और वो स्वतंत्रता केवल ज्ञान के द्वारा पाई है) यूहन्ना ने परमेश्वर के साथ की संगति का स्वाभाव बताया है जिसे वह ज्योति कहता है, प्रेम और जीवन। परमेश्वर ज्योति है (1:5) परमेश्वर प्रेम है (4:8, 16) और परमेश्वर जीवन है (1:1–2, 5:11–13)। परमेश्वर के साथ संगति में चलना, तब इसका अर्थ ज्योति में चलना है जो उसके जीवन का अनुभव लेने में अगुवाई करती है, दूसरों के लिये उसका प्रेम और उसकी धार्मिकता। पुस्तक बहुत सी जांच और संगति के सबूत देती है, जबकि कुछ इसे उद्धार की जांच के रूप में देखते हैं। पर विषय को रखते हुए, झूठे शिक्षकों की शिक्षा और उनकी मंडली का स्वाभाव एक विश्वासी होकर, इन्हें संगति के सबूत और जांच की दृष्टिकोण से देखना अति उत्तम है, जांच और रहना और उद्धारकर्ता को करीबी संगति में जानना ये विश्वासियों में बदलते हुए जीवन का अनुभव देते हैं।

सही तरह के विधर्म जिसका ये विश्वासी सामना कर रहे हैं उसे सुदृढ़ करना कठिन है पर 1 यूहन्ना के विषयों से इसमें देहधारण करने की वास्तविकता से इंकार करना और एक दावा कि पापमय व्यवहार ने परमेश्वर के साथ की संगति में रूकावट नहीं डाली, इस प्रकार यूहन्ना ने अपने "छोटे बच्चों" को लिखा (2:1,18,28, 3:7, 18, 5:21)। कम से कम पांच कारण हैं: (1) सच्ची संगति को आगे बढ़ाना (1:3)। (2) पूर्ण आनन्द का अनुभव (1:4)। (3) सच्ची संगति के द्वारा पवित्रता को बढ़ाना (1:6–2:2)। (4) विधर्म के विरुद्ध बचाना और रक्षा करना (2:18–27)। (5) आश्वासन देना (5:11–13)।

1 यूहन्ना में मसीह देखा गया : ये पुस्तक उस पर ध्यान केन्द्रित करती है, विश्वासियों के जीवन में उद्धारकर्ता की वर्तमान की सेवकाई और उसके पुनः आने की बाट जोहती है। उसका रक्त विश्वासियों को लगातार पाप से शुद्ध करता है (1:7)। और व्यक्तिगत पाप से और सब अधर्म से पाप के अंगीकार करने से (1:9) वास्तव में ये घोषणा करता है कि मसीह हमारे पिता के सामने धर्मी वकील है (2:1) और केवल विश्वासियों के लिये बलिदान नहीं है पर पूरे संसार के लिये है (2:2) कि यीशु ही मसीह है जो देह धारण करके आया (2:22,4:2–3) वह पानी और रक्त द्वारा आया, उसके बपतिस्में का संदर्भ और क्रूस का (5:6) और कि वह फिर आने वाला है – जब हम उसे देखेंगे और उसके समान होंगे (2:28–3:3)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **परिचय और पत्र का अभिप्राय (1:1–4)**
2. **संगति के लिये विशाल/स्पष्ट परिस्थिति (1:5–2:2)**
   - क. ज्योति में चलना (1:5–7)
   - ख. पापों का अंगीकार (1:8–2:2)
     - 1:8–10 2:1–2
3. **संगति के साथ लगातार व्यवहार (2:3–27)**
   - क. संगति का चरित्र – मसीह की नाईं होना (2:3–11)
     - 2:3–6 2:7–11
   - ख. संगति की आज्ञा–संसार से प्रेम न करना (2:12–17)
     - 2:12–14 2:15–17
   - ग. संगति के लिये चेतावनी – मसीह विरोधी के विरुद्ध रक्षा (2:18–27)
     - 2:18–25 2:26–27
4. **संगति की विशेषताएं (2:28–5:3)**
   - क. हमारे विचारों की शुद्धता (2:28–3:3)
     - 2:28–29 3:1–3

ख. मसीह की मृत्यु के दृष्टिकोण में धार्मिकता का अभ्यास (3:4–24)

3:4–10 3:13–22

3:11–12 3:23–24

ग. साबित करना (जांच करना) आत्माओं को (4:1–6)

4:1–3 4:4–6

घ. संगति का नमूना, प्रेम करें जैसा मसीह ने किया (4:7–5:4)

4:7–14 5:15–21 5:1–4

5. संगति के परिणाम (5:5–21)

क. संसार पर विजय (5:5)

ख. मसीह की योग्यता की जांच (5:6–12)

ग. उत्तर के उद्धार का आश्वासन (जांच) 5:13

घ. उत्तर दी गई प्रार्थनाओं की जांच (5:14–17)

ङ. आगे चलते रहने वाले पापों पर विजय (5:18–21)

2 यूहन्ना

(मसीह : देहधारी परमेश्वर)

लेखक और पुस्तक का नाम : यद्यपि बयान नहीं किया गया, इसका लेखक यूहन्ना प्रेरित है। वह साधारण तरीके से अपना संदर्भ देता है – एक "प्राचीन" की तरह। ये सुझाव देता है कि वह पत्र को पाने वालों में जाना–माना नाम था। ये प्राचीन के ऑफिस के लिये औपचारिक नाम था पर शायद वह अपने व्यक्तिगत पद के रूप में इस्तेमाल कर रहा था जिसके द्वारा वह पाठकों के बीच अधिक जानकार था।

जबकि पुस्तक का शीर्षक परम्परा के अनुसार प्रेरित यूहन्ना के नाम से बंधा हुआ है तो इसका शीर्षक "यूहन्ना का दूसरा पत्र" दिया गया है।

ये पत्र **"चुनी हुई महिला और उसके बच्चों को"** सम्बोधित की गई है (1:1,4–5)। इन लाभांतियों की पहचान नहीं की जा सकती है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 85–90। पत्र की तारीख देना कठिन है, पर परिस्थितियां और विषय ये बताते हैं कि इसे भी 1 यूहन्ना के समय में लिखा गया होगा (ईस्वी. 85–90) ऊपर की समानता भी इसका संकेत देते हैं (1 यूहन्ना की चर्चा में तारीख देखें)।

विषय और अभिप्राय : 2 यूहन्ना का अभिप्राय ये है कि प्रेरित की रूचि उसके पाठकों के लिये ये है कि वे प्रेरितों के सच्चे धार्मिक सिद्धान्तों पर चलते रहें और आज्ञाओं के अनुसार (1:4–6)। क्योंकि **"बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आये हैं जो ये नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया"** (1:7)। यूहन्ना उन्हें बुरे धोखे से बचाने के लिये लिख रहा था – जो मसीह की शिक्षा में रहना नहीं चाहते और जो सत्य से दूर हो रहे थे (1:9) और (2) और इन झूठे शिक्षकों को अपने घर और कलीसिया में घुसने न दें न ही मसीही अभिवादन करें। यूहन्ना नहीं चाहता था कि उन्हें (झूठे शिक्षकों को) वे न कलीसिया में आने दें और उनकी पहचान सत्य के शिक्षकों के रूप में न करें। यूहन्ना उन्हें भिड़ने को नहीं कह रहा था ना ही उनको गवाही देने से मना कर रहा था।

2 यूहन्ना में मसीह देखा गया : जैसा 1 यूहन्ना में था – वही दूसरे में है कि "देहधारण के बाइबल आधारित शिक्षा को बचाये रखना। उसने ये साबित करने को लिखा कि वे झूठे हैं जो यीशु मसीह के देह में आने का इंकार करते हैं।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **प्रस्तावना और शुभकामनाएं (1:1–3)**
2. **सत्य पर चलने की आज्ञा (1:4)**
3. **एक दूसरे से प्रेम जारी रखने के लिये आज्ञा (1:5–6)**
4. **झूठे शिक्षकों के विरुद्ध निर्देश और चितौनी (1:7–11)**
5. **अन्त का वर्णन और अन्तिम शुभकामनाएं (1:12–13)**

3 यूहन्ना

(मसीह : नाम)

लेखक और पुस्तक का नाम : इस पत्र का भी प्रेरित यूहन्ना लेखक है। 2 और 3 यूहन्ना में लेखक अपने को "प्राचीन" बताता है। दोनों पत्रों में एक सा वाक्य आता है "सत्य में प्रेम करो" (1:1 दोनों पत्र) और "सत्य पर चलना" (1:4 दोनों पत्रों में)।

ये स्पष्ट है कि ये यूहन्ना का बहुत ही व्यक्तिगत पत्र है ये "प्रिय गयुस" को सम्बोधित किया गया है (1:1) कलीसिया की समस्याओं से गयुस ने मुठभेड़ की। इसके पाने वाले आराम से पहचान किये गये – जैसा ऊपर वर्णन दिया गया है, जो ये सुझाव देता है कि वह उन कलीसियाओं में जो आसिया में थीं अधिक जाना माना था जहां यूहन्ना ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में सेवा की। नये नियम में 'गयुस' नाम परिचित नाम है। ये नाम प्रेरित 16:23 में आता है (कुरिन्थ का गयुस) प्रेरित 19:29 (मकीदूनिया का गयुस) और प्रेरित 20:4 (दिरबे का गयुस) इन पुरुषों और यूहन्ना को कोई सम्बंध साबित नहीं होता।

लेखन तिथि : ईस्वी. 85–90। फिर से 2 और 1 यूहन्ना की समानता वही ईस्वी. 85–90 की तारीख का सुझाव देती हैं।

विषय और अभिप्राय : यूहन्ना गयुस को पहुनाई और यात्रा करने वाले मसीहियों (मिशनरियों) की सहायता के बारे में लिखता है। विशेषकर जब वे अनजान थे। विषय उस विरोधाभास के बीच में रहता है जो गयुस की सेवकाई और उसके उदारता से मसीही प्रेम को प्रदर्शित करने के बीच होता है जैसा एक सत्य पर चलता है, दियुत्रिफेस के स्वार्थी व्यवहार से जो सत्य पर चलने की अपेक्षा उसने यूहन्ना के कहे हुए का तिरस्कार किया और व्यक्तिगत उत्तमता खोज रहा था (1:9)।

बहुत से अच्छे अभिप्राय इस पत्र में उभरते हैं: (1) गयुस को आज्ञा (1:1–6) (2) जिन मसीही कार्यकर्ताओं को यूहन्ना ने भेजा था उनकी लगातार सहायता करने के निर्देश और प्रोत्साहन देना। (3) दियुत्रिफेस के स्वयं केन्द्रित व्यवहार की निन्दा (1:9–11) (4) दिमेत्रियुस के लिये निर्देश (1:12) और (5) गयुस को सूचना – यूहन्ना के भेंट करने की अभिलाषा और इरादे के विषय और कठिनाइयों से निपटने के लिये (1:10, 13–14)।

3 यूहन्ना में मसीह देखा गया : यद्यपि यीशु मसीह का नाम सीधे तौर से वर्णन नहीं किया गया है वह इस वर्णन में दिया गया है ***"वे नाम के बदले आगे गये हुए हैं"।*** ये बिना शक वह हवाला है सेवकाई के विषय जो यीशु मसीह के बदले में हैं (प्रेरित 5:40–41 जहां हमारे पास यूनानी बनावट 5:41 में है) पौलुस भी इसी वाक्य को रोमियों 1:6 में इस्तेमाल करता है। यूहन्ना 2:12 में यूहन्ना ने लिखा, ***"उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए"।*** यूहन्ना का सुसमाचार भी संदर्भ देता कि विश्वास करें ***"यीशु के नाम में"*** (यूहन्ना 1:12,3:18)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **शुभकामनाएं या परिचय (1:1)**
2. **गयुस की सराहना (1:2–8)**
   - क. उसकी धार्मिकता (1:2–4)
   - ख. उसकी उदारता (1:5–8)
3. **दियोत्रिफेस की निन्दा (1:9–11)**
   - क. उसकी स्वार्थ की अभिलाषा (1:9)
   - ख. उसकी स्वार्थी गतिविधियां (1:10–11)
4. **दिमेत्रियुस की प्रशंसा (1:12)**
5. **समापन के विचार (1:13–14)**

यहूदा

(मसीह : मानव जाति के लिये सुरक्षा)

लेखक और पुस्तक का नाम : लेखक अपनी पहचान (1:1) में देता है। यूनानी में वास्तव में यहूदा कहा जाता, परम्परागत अंग्रेजी अनुवाद में यहूदा को उस यहूदा से जिसने प्रभु को पकड़वा दिया था अलग रखा है। लेखक ने स्वयं अपने को याकूब के भाई के रूप में और यीशु मसीह के बन्धन में सेवक बताता है। मत्ती 13:55 और मरकुस 6:3 में यहूदा को यीशु का आधा–भाई बताया जाता है।

इसे नोट करना सहायक हैः

> यद्यपि यहूदा यीशु का भाई था वह नम्रता से अपने आपको याकूब के साथ मिलाता है जो उसका पूर्ण भाई था। पहले वह अपने को यीशु मसीह का दास कह कर बुलाता है। ये स्पष्ट है कि वह चाहता है कि कोई उसके शारीरिक सम्बन्धों को न जोड़ें। ठीक उसी समय उसे अपने आपको आगे पहचान देनी है। जबकि 'यहूदा' नाम पहली सदी में बहुत आम था (यीशु के दो चेलों के ऐसे नाम थे, उसके पकड़वाने वाले का भी) अधिक जानकारी आवश्यकता थी – ये कहना कि याकूब का भाई।

यहूदा सभी मसीहियों को सम्बोधित किया गया है केवल विशेष झुण्ड के लोग नहीं, बल्कि ये पत्र उनको सम्बोधित किया गया, ***"वे जिन्हें बुलाया गया और पिता परमेश्वर के प्रेम में लिपटे हुए हैं और मसीह के लिये रखे गये हैं"*** (1:1) वह बाद में उनको "अतिप्रिय कहकर या "प्रिय–मित्र" कहकर सम्बोधित करता है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 70–80। यद्यपि विषय 2 पतरस के समान है। यहूदा और 2 पतरस के बीच एक बड़ी भिन्नता ये है कि वजब पतरस ने चितौनी दी "कि झूठे शिक्षक होंगे" (2 पतरस 2:1)। यहूदा ये वर्णन करता है, "ऐसे भी लोग हैं जो धीरे से उनमें घुस गये हैं (1:4) जबकि 2 पतरस समस्या का पूर्वानुमान लगाता है और यहूदा जो वर्तमान के लिये बोलता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि यहूदा 2 पतरस के बाद लिखा गया था। यदि 2 पतरस की तिथि ईस्वी. 67–68 है तो यहूदा की तिथि 70–80 के बीच की होगी।

विषय और अभिप्राय : यहूदा का इरादा हमारे उद्धार के विषय लिखना था पर बहुत से अधर्म के बढ़ जाने से तो कलीसिया को खतरा हो गया था, उसे विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिये मजबूर किया गया था कि वे झूठे शिक्षकों के विरुद्ध अपना बचाव कर सकें जो चुपचाप कलीसिया में गूढ़ज्ञानवादी द्वारा प्रवेश कर गये थे। गूढ़ज्ञानवादी सब भौतिक वस्तुओं को बुरा देखते थे और हर आत्मिक चीज़ को अच्छा मानते थे। इसलिये उन्होंने अपने "आत्मिक" जीवन को पैदा किया और अपने शरीर को करना चाहता करने देते थे – जिसका परिणाम होता कि वे सब प्रकार के कार्यों में अराजकता के दोषी ठहरते थे।

इससे यहूदा में दो अभिप्राय देखे जा सकते हैंः (1) अनैतिक लोगों के व्यवहार को दण्डित करना जो कलीसिया में उपद्रव मचाते थे और विश्वासियों को भ्रष्ट करते थे (2) विश्वासियों को दृढ़ रहने के लिये समझाते, विश्वास में लगातार बढ़ते रहना, जबकि प्रेरिताई के सत्य के लिये संघर्ष करते थे जो कलीसिया को सौंपा गया था।

यहूदा में मसीह देखा गया : यहूदा हमारे ध्यान को विश्वासियों की मसीह में सुरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करता है (1:24) अनन्त जीवन पर वह देता है (1:21) और उसके निश्चित आने के लिये (1:21) ये हमारा यीशु मसीह है जो हमें परमेश्वर की उपस्थिति में आने का अवसर देता है (1:25)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **शुभकामनाएं और अभिप्राय (1:1–4)**
2. **झूठे शिक्षकों का वर्णन और खुलासा (1:5–16)**
   - क. पिछला न्याय (1:5–7)
   - ख. उनकी वर्तमान की विशेषताएं (1:8–13)
   - ग. उनके भविष्य का न्याय (1:14–16)
3. **विश्वासियों का बचाव और उपदेश (1:17–23)**
4. **आशीर्वाद (1:24–25)**

भाग 4
भविष्यवाणी की पुस्तक

प्रकाशितवाक्य

(मसीह : जो वापस आने वाला है)

परिचय : प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ, हमारे पास बाइबल की पूर्ति का समापन है–जो मनुष्यों के लिये परमेश्वर का प्रगटीकरण है। जैसे उत्पत्ति आरम्भ की पुस्तक है वैसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पूर्ण होने की है। ये अन्त के दिनों की घटनाओं का वर्णन है। प्रभु का वापस आना, उसके अन्तिम समय का राज्य और अनन्त का स्थान। जैसे एक बाइबल से गुज़रता है। बहुत से विषयों का परिचय दिया गया है और उन्हें विकसित किया गया है जैसेः स्वर्ग और पृथ्वी, पाप, उसका श्राप और दुःख, मनुष्य और उसका उद्धार, शैतान, उसका पतन और उसका दुर्भाग्य, इस्राएल और उसका चुनाव, आशीष और अनुशासन, देश, बाबुल और बाबुलवाद, राज्य और राज्यों, अन्त में ये सब अपनी पूर्ति पाते हैं और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के समाधान। सुसमाचार और पत्रियां इनको साथ लाते हैं पर ये उस समय तक नहीं जब तक हम प्रकाशित तक नहीं आते, वे सब कर देते हैं।

इसे हमें चार्ट पर इस प्रकार रखते है : –

प्रकाशितवाक्य : बाइबल की पूर्ति

पुराना और नया नियम	
स्वर्ग और नरक →	प्रकाशितवाक्य की पुस्तक
मानव–सृष्टि, पतन, उद्धार →	
पाप–कारण, श्राप, दुःख →	
शैतान – चरित्र, पतन, दण्ड →	
देश – अनाज्ञाकारिता, धर्म →	
इस्राएल – चुनाव, आशीष, अनुशासन →	
प्रतिज्ञा किया गया – उद्धारकर्ता, कार्य, नियम →	
राज्य – प्रतिज्ञाएं, कार्यक्रम →	

लेखक और पुस्तक का नाम : स्वयं पुस्तक के अनुसार लेखक का नाम यूहन्ना था (1:4,9; 22:8)। वह एक भविष्यद्वक्ता था (22:9) और एक अगुवा जो आसिया के कलीसियाओं में जाना जाता था जिनको वह ये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी थी (1:4)।

परम्पराओं के अनुसार इस यूहन्ना की पहचान प्रेरित यूहन्ना के नाम से थी जो प्रभु का एक चेला था। इसके लिखने की शैली यूहन्ना सुसमाचार से बिल्कुल भिन्न है, जो इस भविष्यवाणी की पुस्तक की डाली है।

लेखन तिथि : ईस्वी. 96। ये डोमीशियन के राज्य में लिखी गई – जबकि इसकी पुष्टि दूसरे प्रारम्भिक कलीसिया के लेखकों द्वारा कर दी गई – जैसे सिकन्दरिया के क्लेमेन्ट और असबुस के द्वारा, अधिकतर शोधकर्ता विश्वास करते हैं कि ये पुस्तक ईस्वी. 81–86 के बीच लिखी गईं – ये इसे नये नियम की अन्तिम पुस्तक बनाती है – यूहन्ना के सुसमाचार और पत्रियों के थोड़े ही बाद में (1,2,3 यूहन्ना)।

विषय और अभिप्राय : प्रकाशितवाक्य में, पुस्तक का मुख्य विषय बुराई के बीच संघर्ष जो मानव व्यक्तित्व के रूप में शैतान द्वारा पूरे संसार की पद्यति के द्वारा और प्रभु की विजय इन शत्रुओं पर कि उसका 1000 वर्ष का राज्य स्थापित हो (प्रकाशितवाक्य 20) और अनन्त में। ये सुनने वालों और पढ़ने वालों के द्वारा पूरा होता है (1:3) दृश्य के पीछे जो दर्शन यूहन्ना को दिये गये थे वे शैतानी स्वाभाव और संसार में बुराई के साधन प्रगट करता है। प्रकाशितवाक्य ये भी दिखाता है कि परास्त करने की सामर्थ यहूदा गोत्र के सिंह में है, जो दाऊद की जड़ है। सिंह एक मेमना भी है, यदि मारा जाये फिर भी जीवित है, क्रोधित है और परमेश्वर की अद्भुत पवित्रता के विरुद्ध पापमय और विद्रोही संसार पर उसका न्याय लाता है। बहुत से महत्वपूर्ण लोग हैं या इस पुस्तक में व्यक्ति

उनकी भूमिका जो निभाते उसके कारण। ये सबसे पहले प्रभु यीशु है, लेखक यूहन्ना, और दो गवाह, पशु समुद्र से बाहर और झूठा – भविष्यद्वक्ता; और अन्त में दुल्हन जो प्रभु के साथ लौटती है।

प्रकाशितवाक्य में मसीह देखा गया : ये प्रकाशितवाक्य वास्तव में "यीशु मसीह का प्रकाशन" है वह उसकी महिमा, बुद्धि और सामर्थ को प्रगट करता है (1:1–20)। साथ ही उसका कलीसिया पर अधिकार (2:1–3:22) और उसकी सामर्थ और संसार का न्याय करने का अधिकार (5:1–19:21) मसीह का प्रकाशन होकर इसे बयानों के शीर्षकों से भर दिया गया है। विशेषकर के ये यीशु मसीह को विश्वास योग्य गवाह बयान करता है, मृतकों में से पहलौठा, पृथ्वी के राजाओं के ऊपर राजा (1:5), प्रथम और अन्तिम (1:17), वह जो जीवित है (1:18), परमेश्वर का पुत्र (2:18), पवित्र और सत्य (3:7) आमीन, सच्चा और विश्वासयोग्य गवाह, परमेश्वर की सृष्टि का आरम्भ (3:14), यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद की जड़ (5:5), एक मेमना (5:6), विश्वास योग्य और सत्य (19:11)। परमेश्वर का वचन (19:13), राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (19:16), अल्फा और ओमेगा (22:13), सुबह का चमकीला तारा (22:16) और प्रभु यीशु मसीह (22:21)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : रूप रेखा

1. **प्रस्तावना (1:1–8)**
   1:1–3 1:4–8
2. **चीज़ें जो हो चुकीं (1:9–20)**
   1:9–11 1:12–16 1:17–20
3. **चीज़ें जो वर्तमान हैं (2–3)**
   - क. इफिसुस के लिये सन्देश (2:1–7)
   - ख. स्मरना के लिये सन्देश (2:8–11)
   - ग. परगमुन के लिये सन्देश (2:12–17)
   - घ. थूआतीरा के लिये सन्देश (2:18–29)
   - ङ. सरदीस के लिये सन्देश (3:1–6)
   - च. फिलेडेल्फीया के लिये सन्देश (3:7–13)
   - छ. लौदीकिया के लिये सन्देश (3:14–22)
4. **आने वाली चीज़ें (4:1–22:5)**
   - क. क्लेश का समय (4:1–19:21)
     - 1) स्वर्ग में सिंहासन (4:1–11)
       4:1–4 4:5–11
     - 2) सात बन्द पुस्तकें और सिंह जो मेमना भी है (5:1–14)
       5:1–5 5:6–10 5:11–14
     - 3) न्याय की छाप (6:1–17)
       6:1–2 6:5–6 6:9–11
       6:3–4 6:7–8 6:12–17
     - 4) बीच का कार्यक्रम : क्लेशों से छुड़ाया गया (7:1–17)
       7:1–3 7:9–12
       7:4–8 7:13–17
     - 5) न्याय की चार तुरहियां (8:1–13)
       8:1–2 8:8–9 8:13
       8:3–5 8:10–11
       8:6–7 8:12
     - 6) पांचवी और छठवीं तुरही और प्रथम दो दुश्मन (9:1–21)
       9:1–6 9:12 9:20–21
       9:7–11 9:13–19
     - 7) स्वर्गदूत और छोटी पुस्तक (10:1–11)
       10:1–7 10:8–11

8) मन्दिर और दो गवाह और सातवीं तुरही (11:1–19)

11:1–6	11:11–13	11:15–18
11:7–10	11:14	11:19

9) स्वर्गदूतों को संघर्ष (12:1–17)

12:1–2	12:5–6	12:10–12
12:3–4	12:7–9	12:13–17

10) पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता (13:1–18)

13:1–6	13:7–10	13:11–18

11) विशेष घोषणा (14:1–20)

14:1–5	14:9–12	14:17–20
14:6–7	14:13	
14:8	14:14–16	

12) अन्तिम सात विपत्तियों का होना (15:1–8)

15:1	15:2–4	15:5–8

13) न्याय का कटोरा (16:1–21)

16:1	16:4–7	16:12
16:2	16:8–9	16:13–16
16:3	16:10–11	16:17–21

14) धार्मिक बाबुल का न्याय (17:1–18)

17:1–7	17:8–14	17:15–18

15) व्यापारिक बाबुल का न्याय (18:1–24)

18:1–3	18:9–10	18:21–24
18:4–8	11:11–20	

16) मसीह का द्वितीय आगमन (19:1–21)

19:1–4	19:9–10	19:19–21
19:5–6	19:11–16	
19:7–8	19:17–18	

ख. मसीह का राज्य (मिलेनियम) और महान श्वेत सिंहासन (20:1–15)

1) शैतान बांधा गया (20:1–3)
2) सन्तों का पुनरुत्थान (20:4–6)
3) पापी विद्रोह में (20:7–9)
4) शैतान को दोषी ठहराया (20:10)
5) पापियों का न्याय (20:11–15)

ग. अनन्त का स्थान (21:1–22:5)

1) नये यरूशलेम का उतरना (21:1–8)

21:1–4	21:5–8

2) नये यरूशलेम का वर्णन (21:9–27)

21:9–14	21:15–21	21:22–27

3) नये यरुशलेम का आनन्द (22:1–5)

घ. उपसंहार (22:6–21)

22:6	22:12–13	22:18–19
22:7	22:14–15	22:20
22:8–9	22:16	22:21
22:10–11	22:17	

अध्याय 4

व्याख्या के आधारभूत सिद्धान्त

परिचय

अध्याय 4 विद्यार्थियों को चार आधारभूत नियम और 15 व्याख्या के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचय कराने के लिये लिखा गया है। इस अध्याय में नियम का अर्थ स्थिर मार्गदर्शन जिसे देखने की आवश्यकता और परमेश्वर के वचन के अध्ययन में पूरे समय देखना है। एक सिद्धान्त नियम की वह वस्तु है जो इसके इस्तेमाल के लिये महत्वपूर्ण हैं, पर सब समय लागू करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे हम इस हिस्से के अध्ययन में आगे बढ़ते हैं–विद्यार्थी समझेंगे कि कैसे और कब इस अध्याय में परिचय कराये गये सिद्धान्तों को इस्तेमाल करना है।

परमेश्वर के वचन की सही व्याख्या करना जीवन भर की खोज है। कोई ऐसा नुस्खा नहीं है कि एक बाइबल को खोले और कुछ ही मिनटों में ये समझ लें कि हर एक हिस्से का क्या मतलब है। विद्यार्थियों को बेचैन/परेशान नहीं होना चाहिये कि वह सत्य की खोज छोड़ दें! परमेश्वर ने कुछ अभिप्राय से कठिन चीज़ें अपने वचन में रखी हैं – जिससे कि हम पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें (1 कुरिन्थियों 3:10–16)। जबकि कुछ हिस्से समझने में आसान हो सकते हैं, और दूसरे अनन्त के इस ओर समझ में नहीं आ सकते (1 कुरिन्थियों 13:12)।

यदि परमेश्वर के वचन की व्याख्या किसी नुस्खे के द्वारा की जा सकती, तब तो अविश्वासी परमेश्वर के पूरे वचनों की व्याख्या कर सकता है। परमेश्वर की अभिलाषा ये है कि उसके अनुयायी उसकी खोज करें और उसके वचन का अध्ययन करें जो हमारे आत्मिक बढ़ौतरी की एक प्रक्रिया होगी (2 तीमुथियुस 2:15)। कृपाकर इन नियमों और सिद्धान्तों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शक के रूप में इस्तेमाल करें, पर पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें–वही है जो आपको सत्य में अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:13)।

नीचे दी गई सूचि नियम और सिद्धान्तों का सारांश है जिनका हम अध्ययन करने वाले हैं:–

नियम एक : परमेश्वर और यीशु मसीह के विषय तथ्यों की खोज करो और पूरे धर्मशास्त्र में ढूंढ़ों।

क. सिद्धान्त एकः परमेश्वर के सत्य का अध्ययन करो।
ख. सिद्धान्त दो : जो मार्ग मसीह ने प्रगट किया उसकी खोज करो।

नियम दोः स्पष्ट हिस्से को अपने मार्गदर्शक की तरह इस्तेमाल करके तथ्यों को समझने की खोज करोः–

क. सिद्धान्त तीन : ये महसूस करो कि प्रगटीकरण तरक्की वाला है।
ख. सिद्धान्त चार : सही अनुवाद / व्याख्या करो।
ग. सिद्धान्त पांच : विशेषता पर ध्यान दें।
घ. सिद्धान्त छः प्राथमिक हिस्से का अध्ययन करो।
ङ. सिद्धान्त सातः मानव की इच्छा शक्ति को पहचानो।
च. सिद्धान्त आठ : वाचाओं को स्मरण रखो।

नियम तीन : धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की तुलना कर बुद्धिमान बनो।

क. सिद्धान्त नौ : भिन्नताओं को जानो
ख. सिद्धान्त दस : संदर्भ को समझो।
ग. सिद्धान्त ग्यारह : तुलनात्मक व्याख्या करो।
घ. सिद्धान्त बारह : मेल–मिलाप ढूंढ़ो।
ङ. सिद्धान्त तेरह : रिहाई या छुटकारे को देखो।
च. सिद्धान्त चौदह : भविष्यवाणी पर सावधान रहो।

नियम चार : परमेश्वर के वचन का सही तरह से उपयोग करके मसीही जीवन जीने की खोज करो।

क. सिद्धान्त पन्द्रह : सही उपयोग सही व्याख्या पर बनता है।
ख. सही उपयोग के पांच चरण
ग. सही व्याख्या की छः रूकावटें
घ. उपयोग को असफल करने के आठ तरीके।

भाग 1
नियम एक

परमेश्वर और यीशु मसीह के विषय में तथ्यों की खोज करो और पूरे धर्मशास्त्र में ढूंढ़ो।

ये नियम परमेश्वर के आधारभूत विशेषताओं की पहचान करता है, ये उसके व्यवहार के रूप में जाना जाता और व्याख्या सही करने के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। उसका तत्व कभी भी समझौता नहीं करता न अपने आप में परमेश्वर विरोधी होता है। ये नियम उस तथ्य पर आधारित है कि जितना अधिक हम जानते है और पूरी तरह से परमेश्वर के अद्‌भुत स्वाभाव की प्रशंसा करते हैं (फिलिप्पियों 3:10)। तो हम और अधिक समझने में सक्षम बन जायेंगे कि उसे क्या कहना है।

तथ्य ये है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा वे सभी इस तत्व को रखते हैं जो बाइबल के आधार पर त्रिएकता में सबूत है। शब्द "त्रिएकता" उस संदर्भ को बताता है कि पिता–पुत्र और पवित्र आत्मा एक परमेश्वर का तीन प्रगटीकरण है। उनकी बुनियादी तौर पर तीन भूमिकाएं हैं। पिता योजना बनाने वाला है (प्रेरित 2:23) पुत्र कर्ता है (यूहन्ना 5:36) पवित्र आत्मा प्रगट करने वाला है (यूहन्ना 16:13)। जब हम उनकी विभिन्न भूमिकाओं का अध्ययन करेंगे – तो हमें "त्रिएकता" को अलग नहीं करना है। केवल एक ही परमेश्वर है (व्यवस्था विवरण 6:4)। जबकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी उन विशेषताओं को रखते हैं जो केवल एक परमेश्वर में है – वे सभी परमेश्वर हैं और एक हैं।

हम त्रिएकता को बाद के हिस्से में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

क. सिद्धान्त एक : परमेश्वर के तत्व का अध्ययन

करीब दस विशेषताएं दी जाती जो परमेश्वर की हैं। उन्हें स्मरण करके पुनः देखा जाना चाहिये।

1. संप्रभुता

परमेश्वर सार्वभौम है – जिसका मतलब है वह राजा है और उसी के अनुसार कार्य करता है। सम्प्रभुता वह अभ्यास है जो सीमित परिधि में सर्वोच्च अधिकार है। परमेश्वर बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्र है, पूरी सृष्टि पर सर्वोच्च अधिकार रखता है। वह सृष्टि कर्ता है बनाया हुआ नहीं (रोमियों 1:20,25), इसलिये उसके पास ये अधिकार है कि वह अपनी योजना आप बना सकता है, अपनी व्यवस्था और अपना ही न्याय। थोड़े में उसके पास वो अधिकार है कि जैसा चाहें कर सकता है, हालांकि उसको लेने वालों को समझना कठिन है।

2. धार्मिकता

परमेश्वर एकदम धार्मिकता है – मतलब ये कि वह हर तरह से सिद्ध है। वह हर प्रकार से उसकी धार्मिकता का स्तर है, वह नैतिक रूप से पूर्ण है और जो स्तर बना दिया उसे हमें बनाकर रखना है (इफिसियों 5:1)।

3. न्याय

परमेश्वर न्यायी है – मतलब ये कि वह पूर्णरूप से सही है, पक्षपाती नहीं है परमेश्वर का न्याय धार्मिकता की मांग का प्रतिउत्तर है। परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता (रोमियों 2:11) वह पक्षपात नहीं दिखाता। जहां पाप (जो उसकी व्यवस्था का उल्लंघन है) होता है (रोमियों 5:13) उसके न्याय को सन्तुष्ट करना होना है।

4. प्रेम

परमेश्वर प्रेम है – मतलब कि उसमें सिद्ध और बिना शर्त के प्रेम पाया जाता है प्रेम का मतलब है जो दूसरों के लिये उत्तम और सही है वही करना भले ही उसे करते समय अप्रसन्न भावनायें क्यों न हों। मसीहियों को परमेश्वर के प्रेम में भाग लेना है और दूसरों में फैलाना है जिससे सब उसे जानें (यूहन्ना 13:34–35)।

5. अनन्त जीवन

परमेश्वर अनन्त जीवन है वह सर्वदा से है और सर्वदा रहेगा। अनन्त जीवन का कोई आरम्भ और अन्त नहीं है। हम मसीही होकर हमारे पास सर्वदा का जीवन है जिसका आरम्भ का बिन्दु है पर अन्त नहीं है। परमेश्वर का अनन्त जीवन सिखाता है कि अब उसकी मृत्यु कभी नहीं होगी।

6. **सर्वशक्तिमान**

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है – मतलब है ये कि उसके पास सब कुछ करने की सामर्थ है। उनकी सर्वशक्ति का उदाहरण स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि में पाया जाता है (उत्पत्ति 1:1)। हमें बताया गया है कि "उसके मुंह के वचन" ने स्वर्ग की सृष्टि की और उसकी "स्वांस" ने सभी को बनाया (भजन 33:6)।

7. **सर्वव्यापी – हर जगह उपस्थित होना**

परमेश्वर सर्वव्यापी है – मतलब ये कि वह एक समय में अपनी उपस्थिति सब जगह रखता है–इसका अर्थ ये नहीं कि परमेश्वर सब कुछ है, पर वह सब स्थानों पर है। ये विचारधारा हमें दिखाती है – परमेश्वर का व्यक्तिगत स्वाभाव।

8. **सर्वज्ञानी – सब कुछ जानता है**

परमेश्वर सर्वज्ञानी है – वह भूत, वर्तमान और भविष्य की सब बातें जानता है। परमेश्वर सब चीज़ों का परिणाम जानता है, केवल वास्तविकता ही नहीं पर सभी सम्भावनाओं को जानता है। सभी असर को जानता है, पूरे समय में जो हर निर्णय को लायेगा। उसकी अनन्त योजना ने सभी कारणों को ध्यान में किया (रोमियों 8:28–30)।

9. **अपरिवर्तनीय – न बदलने वाला**

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है – मतलब कि उसका तत्व कभी नहीं बदलता।

10. **सत्य है**

परमेश्वर बिल्कुल सत्य है। ये विशेषता हमें बताती है कि हर चीज़ जो परमेश्वर कहता है सब विश्वास करने योग्य है (गिनती 23:19)। ये असम्भव है कि परमेश्वर झूठ बोले (तीतुस 1:2)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4 – भाग 1क

1. **परमेश्वर की दस विशेषताओं को जो दी गई हैं – स्मरण करो।**
2. **भजन 11 पढ़ें और जितना सम्भव हो सके विशेषताएं पहचानें।**

ख. सिद्धान्त दो : मसीह के द्वारा प्रगट किए मार्ग की खोज करना

दूसरा सिद्धान्त ये पहचानता है कि पूरे इतिहास का केन्द्र यीशु मसीह है ये पहचानता है कि यीशु मसीह सब चीज़ों का सृष्टिकर्ता है (यूहन्ना 1:1,13,14, कुलुस्सियों 1:16–17) अल्फा और ओमेगा, "आरम्भ और अन्त" (प्रकाशितवाक्य 1:8)। केवल एक ही परमेश्वर जो मनुष्य बन गया (फिलिप्पियों 2:6–8)।

जैसा हम परमेश्वर के वचनों को समझने की खोज करते हैं, हमें निश्चय करना चाहिये कि कैसे दिये गये हिस्से की व्याख्या प्रभु यीशु मसीह की सच्चाई की पुष्टि करती है। इसे करने का एक तरीका है ये निश्चित करना कि हर व्यक्ति, जगह, चीज़ और धर्मशास्त्र की घटनाएं प्रभु के विषय में क्या सिखाती हैं। हमें अध्ययन करने के लिये प्रोत्साहित किया गया और "अच्छी चीज़ें" देखने के लिये (वास्तविक सत्य, हमारा प्रभु यीशु मसीह) केवल पुरानी व्यवस्था को देखना नहीं है जो केवल इन चीज़ों की "छाया" थी (इब्रानियों 10:1, यूहन्ना 14:6)। पुराने नियम के सभी व्यक्ति, स्थान और घटनाएं परमेश्वर के द्वारा एक उदाहरण के लिये रखी गई थीं कि उसको जानने में/समझने में सहायक हो (1 कुरिन्थियों 10:1–6)।

एक **व्यक्ति** का उदाहरण जो हमें प्रभु के बारे में सिखाता है वह योना भविष्यद्वक्ता में पाया जाता है। जैसे आप याद करते योना जैसा उसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी अश्शूरियों के पास जाना नहीं चाहता था – इसके बदले वह जहाज में चढ़ गया और दूसरी दिशा की ओर चल दिया। एक तूफान आया और योना को जहाज पर से समुद्र में फेंक दिया गया। उसे एक मगरमच्छ ने निगल लिया और तीन दिन के बाद अश्शूरियों के समुद्र तट पर उगल दिया जहां तब उसने परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का निर्णय लिया। ये तीन दिन और रात भविष्यद्वक्ता "योना के चिन्ह" कहे जाते हैं (मत्ती 12:39–40)। जो ये प्रगट करता है कि यीशु कब्र में रहेगा।

एक **स्थान** भी हमें प्रभु के बारे में सिखा सकता है। यीशु का जन्म बैतलहम में होना था (मीका 5:2)। जिसका अर्थ है "रोटी का घर", यीशु वास्तव में रोटी था जो स्वर्ग से उतरकर आया और व्यक्ति जो आत्मिक जीवन बनाये रखेगा (यूहन्ना 6:35)।

बहुत सी **चीज़ें** बनाई गई हैं जो हमें सीधे तरीके से प्रभु के बारे में सिखा सकती हैं तम्बू और मन्दिर इस वर्ग में आते हैं। यदि हम ये देखें कि वह पवित्र स्थान जहां रोटी की मेज सुनेहरा दीपदान और जहां सोने की वेदी जिस पर लोबान रखा गया था। हम आसानी से निश्चय कर सकते हैं कि वे फिर यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह रोटी है (यूहन्ना 6:35)। वह संसार की ज्योति भी है (यूहन्ना 8:12) और वो जो हमारी प्रार्थना सुनता है (लोबान सन्तों की प्रार्थनाओं को बताता है (प्रकाशितवाक्य 8:3–4) और प्रार्थना बलिदान है (इब्रानियों 13:15–16)।

घटनाएं जैसे लैव्यव्यवस्था में याजक भेंट चढ़ाते थे ये भी हमें प्रभु के विषय में सिखाता है सारे बलिदान (लैव्यव्यवस्था 1–7 में वर्णन किये गये) इस प्रकार बनाये गये जो हमें मसीह की ओर संकेत करते हैं जो एक ही बलिदान सब समय के लिये हो गया (इब्रानियों 10:10–12), वह वास्तव में ***"परमेश्वर का मेमना था जो संसार के पापों को उठा लिये जाता है"*** (यूहन्ना 1:29)।

विद्यार्थी बाइबल की हर पुस्तक में विषय देख सकता है कि यीशु मसीह ही मुख्य विषय है।

उत्पत्ति :	सृष्टिकर्ता और स्त्री का बीज (1:1; 3:15)
निर्गमन :	परमेश्वर का मेमना जो पापियों के लिये मारा गया (12:1–13)
लैव्यव्यवस्था :	महायाजक (पूरी पुस्तक में)
गिनती :	याकूब का सितारा (24:17)
व्यवस्थाविवरण :	मूसा की तरह भविष्यद्वक्ता (18:15)
यहोशू :	प्रभु की सेना का कप्तान (5:13–15)
न्यायियों :	न्यायी (11:27)
रूत :	छुड़ाने वाला सम्बंधी (3)
शमूएल :	राजाओं का प्रभु (2 शमूएल 7:18–20)
राजाओं/इतिहास :	स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु (पूरी पुस्तकें)
एज्रा :	पुनः स्थापना करने वाला (1:1)
नहेम्याह :	विश्वासयोग्य (9:32)
ऐस्तर :	योग्य (10:1–10)
अय्यूब :	छुड़ाने वाला जी उठा और लौट रहा है (19:25)
भजन संहिता :	धन्य पुरुष (1:1)
	परमेश्वर का पुत्र (2)
	क्रूस पर चढ़ाया हुआ (22)
	जी उठा (23)
	एक आने वाला (24)
	राज्य करने वाला (72)
	प्रशंसा का अगुवा (150)
नीतिवचन :	बुद्धि (4)
सभोपदेशक :	बुद्धिमान मनुष्यों को भूल गया (9:14–15)
श्रेष्ठगीत :	मेरा अतिप्रिय (2:16)
यशायाह :	बदले में यातना सहना (53)
यिर्मयाह :	प्रभु हमारी धार्मिकता (23:6)
विलापगीत :	दुःखी पुरुष (1:12–18)
यहेजकेल :	सिंहासन पर बैठने वाला (1:26)
दानिय्येल :	मारने वाला पत्थर (2:34)

होशे :	दाऊद का महान राजा (3:5)
योएल :	उदारता का प्रभु (2:18–19)
आमोस :	इस्राएल का बचाने वाला (3:12)
ओबद्याह :	सिय्योन पर्वत पर छुड़ाने वाला (पद 17)
योना :	उद्धारकर्ता जो गाड़ा गया और फिर जी उठा (पूरी पुस्तक)
मीका :	अनन्त परमेश्वर (5:2)
नहूम :	क्रोध के दिन में गढ़ (1:7)
हबक्कूक :	विश्वास का लंगर (2:4)
सपन्याह :	न्याय के मध्य और शुद्ध किया जाना (3:5,15)
हाग्गै :	कोड़े लगाने वाला चरवाहा (2:17)
जकर्याह :	डालें क्रोध के दिन में गढ़ (3:8)
मलाकी :	धार्मिकता का सूर्य (4:2)
मत्ती :	यहूदियों का राजा (1:7)
मरकुस :	यहोवा का सेवक (पूरी पुस्तक)
लूका :	मनुष्य का सिद्ध पुत्र (3:38, 4:1–13)
यूहन्ना :	परमेश्वर का पुत्र (1:1)
प्रेरितों के काम :	स्वर्गारोहण प्रभु (1:8–9)
रोमियों :	धार्मिकता (3:2)
1 कुरिन्थियों :	मृतकों में पहला फल (15:21)
2 कुरिन्थियों :	हमारे लिये पाप बन गया (5:21)
गलातियों :	व्यवस्था का अन्त (3:10,13)
इफिसियों :	हमारे हथियार (6:11–18)
फिलिप्पियों :	हर आवश्यकता की पूर्ति (4:19)
कुलुस्सियों :	पहले से श्रेष्ठ (1:18)
1 थिस्सलुनीकियों :	प्रभु की वापसी (4:15–18)
2 थिस्सलुनीकियों :	न्यायी का संसार में वापस आना (1:7–9)
1 तीमुथियुस :	मध्यस्त (2:5)
2 तीमुथियुस :	मुकुट देने वाला (4:8)
तीतुस :	महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता (2:13)
फिलेमोन :	कैदियों का सहयोगी (1:9)
इब्रानियों :	बाकी का विश्वास और प्रकार का पूरा करने वाला (9:11)
याकूब :	सब्त का प्रभु (5:4)
1 पतरस :	पुराने नियम की भविष्यवाणी का विषय (1:10–11)
2 पतरस :	लम्बी यातना सहने वाला उद्धारकर्ता (3:9)
1 यूहन्ना :	जीवन का वचन (1:1)
2 यूहन्ना :	मसीह विरोधी का लक्ष्य (1:7)
3 यूहन्ना :	सत्य का आदर्श (1:3–4)
यहूदा :	विश्वासी की सुरक्षा (1:24–25)
प्रकाशितवाक्य :	राजाओं का राजा – प्रभुओं का प्रभु (19:11–16)

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 1ख

1. पढ़ें – यूहन्ना 1:1,3 और 14; कुलुस्सियों 1:16–17, फिलिप्पियों 2:6–8, यीशु मसीह कौन है?
2. पढ़ें – इब्रानियों 10:1–18 और यूहन्ना 14:6 क्या पाप को दूर नहीं कर सकता? कौन पाप को दूर कर सकता है? छाया और वास्तविकता को पहचानो।
3. पढ़ें – मत्ती 12:39–40 और योना 1। योना और यीशु मसीह की समानता लिखें।
4. पढ़ें – मीका 5:2 और यूहन्ना 6:32–51 ये हिस्से यीशु मसीह के विषय में क्या प्रगट करते हैं?
5. पढ़ें – निर्गमन 25:30–40, यूहन्ना 6:35 और 8:12 तम्बू में चीज़ों को लगाना यीशु मसीह के विषय में क्या बताता है?
6. पढ़ें – लैव्यव्यवस्था 3 इब्रानियों 10:10–12 और यूहन्ना 1:29 मेल बलि और यीशु मसीह में क्या समानता है?
7. यीशु मसीह के विषय में जो पद वर्णन किये गये हैं उन्हें देखें और अपने लिये मसीह की तस्वीर देखें।

भाग 2
नियम दो

स्पष्ट हिस्से को अपने मार्ग दर्शक की तरह इस्तेमाल करके तथ्यों को समझने की खोज करो

ये नियम हमें सिखाता है कि धर्मशास्त्र की ओर देखें जो समझने में आसान हैं और उन हिस्सों को हमारे धर्मशास्त्र के समझने में मार्गदर्शन करने दें जो बिल्कुल स्पष्ट नहीं हैं।

हम छः सिद्धान्तों के बारे में अध्ययन करेंगे जो इस नियम से संबंधित है। ये सिद्धान्त विद्यार्थियों को ढूंढ़ने और स्पष्ट हिस्सों का मूल्यांकन करने में सहायता करेंगे जो विभिन्न विषय जो धर्मशास्त्र में पाये जाते हैं उनकी पहचान और स्थिर कर सकेंगे।

इस भाग में हम प्रगति के प्रगटीकरण को भी ध्यान से देखेंगे या कैसे परमेश्वर पूरे इतिहास में उसकी योजना के उजागर करने को फैलाता है। ये देखना कि किस रीति से उसकी योजना खोली जाती है हमें उसकी व्याख्या सत्य में और विशेषताओं को देखते हुए या विस्तार से और दिये गये विषय पर प्रारम्भिक हिस्से का अध्ययन करें। हम ये पहचानेंगे कि मानव हिंसायें होती हैं और उसे कैसे अपनी व्याख्या में कारण बनायें और साथ ही उसकी भूमिका को देखते जो वाचाएं व्याख्या में भाग लेती है।

क. सिद्धान्त 3 : पहचानना कि प्रगटीकरण प्रगतिशील है

ये सिद्धान्त हमें सिखाता है कि परमेश्वर समय से सूचनाओं को प्रगट करता है। उदाहरण के लिये – मसीह की पहली भविष्यवाणी उत्पत्ति 3:15 में पाई जाती है जो स्त्री का प्रतिज्ञा किया हुआ बीज है। पुराना नियम लगातार अपने पूरे लेखों में इस "बीज" के विषय में अधिक जानकारी देता है। हमें बताया गया है कि मसीह अब्राहम के वंश का होगा (उत्पत्ति 12:3), इसहाक के वंश (उत्त्पत्ति 21:12), याकूब के वंश (उत्पत्ति 35:10–12), यहूदा के गोत्र से (उत्पत्ति 48:8–11), जैसी की वंशावली (यशायाह 11:1) और दाऊद के घर का (2 शमूएल 7:12–16), वह बैतलेहम में पैदा होगा (मीका 5:2), वह मानव और ईश्वर दोनो होगा (भजन 110:1) वह इमानुएल कहलायेगा (यशायाह 7:14)। वह एक भविष्ढक्ता होगा (व्यवस्थाविवरण 18:18) एक याजक (भजन 110:4), एक न्यायी (यशायाह 33:22) और एक राजा (यिर्मयाह 23:5)। उसका पवित्र आत्मा द्वारा विशेष अभिषेक होगा (यशायाह 11:2) और परमेश्वर के घर की इच्छा (भजन 69:9)।

रहस्योद्घाटन जो समय पर काफी फैल गया है (जैसा ऊपर है) जिससे वह "प्रगतिशील रहस्योद्घाटन" कहलाता है। सामान्य भविष्यवाणी भी की गई है – तब उस भविष्यवाणी के सम्बन्ध में विशेष विस्तृत जानकारी दी गई है।

इसलिये विषय पर पहले दिये गये वर्णन की ओर देखना समझ में आता है, इसे हमारा मार्ग–दर्शक होने दीजिये – उदाहरण के लिये व्यापार और शैतान की चालाकी उत्पत्ति 3:1 में देखी जा सकती है। जैसे जैसे हम इस "सर्प" के विषय अधिक सीखते हैं हमें तथ्यों से मार्ग दर्शन दिया गया है कि वह एक धोखा देने वाला है और सीधे परमेश्वर का विरोधी है। शैतान बेहतरी के लिये समस्त इतिहास में नहीं बदलता (प्रकाशितवाक्य 12:9,20:2–3,10)। उसने कुछ समय में अपने तरीके बदल दिये हैं पर अपना रवैया कभी नहीं बदला (यशायाह 14:12–14; प्रकाशितवाक्य 12:9, 20:7–8) या उसकी पहुंच बहस निरन्तर से बन जाती है जो ईश्वर बन जाते आसान पहुंच में है। इसे फिर से स्पष्ट किया गया है कि जब "विधर्मी मनुष्य" मन्दिर में अपना स्थान लेता है – सताव के दौरान और अपने को ईश्वर घोषित करता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:4)।

बहुत समय हम पाते हैं कि दिया गया विषय समस्त संसार में सिखाया गया उसके पहले वर्णन के साथ। बहुत से विषय बाइबल में पाये जाते हैं उनको उत्पत्ति की पुस्तक में परिचय कराया गया है। इसलिये उत्पत्ति की पुस्तक का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है – उसके लिये जो परमेश्वर की व्याख्या करना चाहता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 2क

1. **पढ़ें 1:1–25, 2:1, 3:16, यूहन्ना 1:1,14, 2:17, 5:22, 7:40, इब्रानियों 5:9–10, प्रकाशितवाक्य 19:16 उन पदों का मिलान करो जो यीशु में इन भविष्यवाणी को पूरा हुआ देखते हैं।**
   - क. स्त्री के बीज से (उत्पत्ति 3:15)
   - ख. अब्राहम के वंश से (उत्पत्ति 12:3)
   - ग. इसहाक के वंश से (उत्पत्ति 21:12)

घ. याकूब के वंश से (उत्पत्ति 35:10–12)
ङ. यहूदा के गोत्र से (उत्पत्ति 49:8–11)
च. यिशे के वंश से (यशायाह 11:1)
छ. दाऊद के घर से (2 शमूएल 1:12–16)
ज. बैतलेहम में पैदा हुआ (मीका 5:2)
झ. परमेश्वर और मनुष्य (भजन 110:1)
ञ. इम्मानुएल कहलाया (यशायाह 7:14)
ट. एक भविष्यद्वक्ता (व्यवस्थाविवरण 18:18)
ठ. एक याजक (भजन 110:4)
ड. एक न्यायी (यशायाह 33:22)
ढ. एक राजा (यिर्मयाह 23:5)
ण. पवित्र आत्मा का विशेष अभिषेक (यशायाह 11:2)
त. परमेश्वर के भवन की अभिलाषा (भजन 69:9)

2. ये पद क्या साबित करते हैं?

ख. सिद्धान्त 4 : सही अनुवाद करना

ये सिद्धान्त हमें सिखाता है कि परमेश्वर कहता है उसका क्या अर्थ है और वह क्या कहता है। ये अत्याधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है क्योंकि ये परमेश्वर के वचन की समझ में हमारा मार्ग दर्शन करता है। जब हम अपने बच्चों को निर्देश देते हैं, हम जितना स्पष्ट हो सके बताने का प्रयत्न करते हैं–उन चीजों को हम चाहते हैं कि याद रखें। अक्सर हम बहुत सी चीज़ों को विभिन्न तरीके से चर्चा करेंगे जिससे उनका छोटा दिमाग इसे ले लेगा और पकड़ नहीं छोड़ेगा (इब्रानियों 1:1), इस प्रकार की सूचनाओं को हम कई बार दुहरायेंगे। क्या हम परमेश्वर की सन्तान नहीं है (1 यूहन्ना 3:1)? क्या वह हमारा "पिता" नहीं है (अब्बा – रोमियों 8:15)? वास्तविक व्याख्या का मतलब है कि हम (परमेश्वर की सन्तान होकर) उस सत्य को जिसे परमेश्वर ने कहा वास्तविक रूप से स्वीकार करते हैं।

पहले वचन में साधारण, स्पष्ट, सीधे और संसार के वर्णन को देखने में कुछ बुद्धि का काम लगता है। स्पष्ट है कि स्पष्ट पद जो स्पष्ट नहीं उस पर ज्योति चमकायेगी।

एक उदाहरण जो साधारण, स्पष्ट, सीधा और संसार के वर्णन यूहन्ना 3:16 में पाया जाता है, ***"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करें नाश न हो, पर अनन्त जीवन पाये"।*** परमेश्वर के प्रेम के लिये कोई भी अनिश्चिता का कोई शब्द नहीं है जैसे "हो सकता है" या "यदि"। ये स्पष्ट रूप से संसार के लिये उसके प्रेम को प्रस्तुत करता है – वह ये कहता है, कि "जो कोई विश्वास करें" अनन्त जीवन उसका है। जिसे परमेश्वर आगामी सूचना पर योग्य नहीं ठहरता, ना तो हमको योग्य ठहरना है।

इसी प्रकार का वर्णन हम रोमियों 3:23 में पाते हैं जो ये कहता है, ***"क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"।*** बाइबल के अनुसार पाप की दशा–सम्पूर्ण संसार की है केवल यीशु मसीह को छोड़कर (1 पतरस 2:22)। केवल बाइबल ऐसा नियम स्थापित करती है – इस प्रकार केवल बाइबल नियम में अपवाद दे सकती है। हम विद्यार्थी होकर इस स्वतंत्रता में नहीं हैं कि अपवाद संसार के वर्णन पर बना सकें जो परमेश्वर अपने वचन में बनाता है। इसलिये केवल यीशु मसीह को छोड़कर हम सब पापी हैं।

स्वतः की कल्पना "छिपी हुई" या "गलती" है धर्मशास्त्र का अर्थ गैर जिम्मेदाराना है। जैसा हमने पहले ही चर्चा की है, धर्मशास्त्र की दृष्टान्त की पहुंच परमेश्वर के वचन में शामिल करने का प्रयास करती है। एक "पौराणिक कथाओं" की पहुंच परमेश्वर के वचन से अलग करने का प्रयास करती है। परमेश्वर हमें इन दोनों के विरुद्ध चेतावनी देने में सावधान है (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)। जब से दो परमेश्वर के वचन का वास्तविक अर्थ के महत्व को नकारते हैं।

बाइबल वास्तविक इतिहास के धरातल पर है और इस प्रकार पूर्ण इतिहास के लिये महत्वपूर्ण है (1 कुरिन्थियों 15), इसे वास्तविक समझने में विफलता ने बहुत से धार्मिक शिक्षा को पूरे इस्राएल के और कलीसिया के इतिहास में तोड़ फोड़ की है।

विश्व व्यापक वर्णनों के कुछ दूसरे उदाहरण जिन्हें हमें व्याख्या करना है वे ये हैं: रोमियों 8:35–39, यूहन्ना 3:16, 18,36; इफिसियों 2:8–10; 1 यूहन्ना 2:1–2 और तीतुस 3:5।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4, भाग 2ख

1. **नीचे दिये गये हिस्सों को अपनी भाषा में लिखियेः**
   क. रोमियों 8:35–39
   ख. यूहन्ना 3:16
   ग. यूहन्ना 3:18
   घ. यूहन्ना 3:36
   ङ. इफिसियों 2:8–10
   च. 1 यूहन्ना 2:1–2
   छ. तीतुस 3:5

2. **देखें कि ये पद आपके व आपके प्रियों के लिये क्या अर्थ रखते हैं – क्या आप उन पर विश्वास करते हैं?**

ग. सिद्धान्त 5 : विशेष बातों पर ध्यान देना

ये सिद्धान्त पहचानता है कि कुछ विशेष प्रश्न हैं जिनका उत्तर देना है – जब बाइबल की व्याख्या हम करते हैं। उदाहरण के लिये हमें पूछना चाहिये "यह किसने कहा"? "किसके लिये कहा गया"? किस परिस्थिति में कहा गया था"? और ये "किससे सम्बंधित है"?

सिद्धान्त ये भी पहचानता है कि इतिहास में परमेश्वर ने तीन वर्ग के लोगों के साथ व्यवहार किया था – यहूदी अन्य जाति और कलीसिया (1 कुरिन्थियों 10:32) इसलिये हमें दृढ़ता से देखना है कि वो कौन लोग थे जिन्हें धर्मशास्त्र का हिस्सा दिया गया था जिससे हमें जान सकें कि चाहे प्रतिज्ञा, वाचा या चेतावनी हम पर लागू होती है।

आगे आने वाले अध्ययन में हम वाचाओं को देखेंगे कि ये किसके ऊपर लागू या सही बैठती है वह बहुत महत्वूपर्ण है। एक अन्यजाति देश (गैर यहूदी जाति) उदाहरण के लिये या तो हटा दिया गया या प्रभु की अनाज्ञाकारिता के कारण तितर–बितर कर दिया गया। सामरियों, बाबुल, अश्शूरियों और फारस के राज्य (लोग) जिनके साथ ये हुआ।

परमेश्वर ने न केवल प्रतिज्ञा की कि वह इस्राएल को तितर बितर करेगा पर उसे फिर से एक साथ मिलायेगा। किसी और देशों के पास ये प्रतिज्ञा नहीं थी। यदि ये प्रतिज्ञाएं दूसरे देशों पर लागू करना था जो विशेष रूप से इस्राएल को दी गई थी तो हम भूल में होंगे।

दूसरा उदाहरण वह देश के लिये प्रतिज्ञा, भूमि, और नागरिकता इस्राएल के लिये कनान में होगी (उत्पत्ति 12:1–3, 13:15) पर कलीसिया के लिये नागरिकता स्वर्ग में होगी (फिलिप्पियों 3:20), राष्ट्रीय स्थान (पद) और भूमि कलीसिया को प्रतिज्ञा नहीं दी गई।

अन्तिम उदाहरण इस्राएल के लिये आशीषों पर विरोधाभास उनके परमेश्वर के साथ सम्बन्धों के आधार पर होगा (व्यवस्था विवरण 8:7:10) और आशीषें अन्य जातियों के लिये इस्राएलियों की आशीष के लिये (उत्पत्ति 12:3)। उनके लिये कोई आशीष की प्रतिज्ञा नहीं दी गई जो कलीसिया को और अन्यजातियों को आशीष देते हैं।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4 भाग 2ग

1. **पढ़ें – उत्पत्ति 12:1–3 परमेश्वर किसकी आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है?**
2. **उत्पत्ति 12:1 में अब्राहम को आशीष देने की क्या शर्तें थीं?**
3. **पढ़ें उत्पत्ति 26:5– परमेश्वर ने इसहाक को क्यों आशीष दी?**
4. **पढ़ें – इब्रानियों 11:8 – अब्राहम ने क्यों परमेश्वर की आज्ञा मानी?**
5. **क्या जो शर्तें अब्राहम को दी गईं थीं, क्या कलीसिया को भी प्रतिज्ञा की गईं?**
6. **क्या जो आशीषें अब्राहम को प्रतिज्ञा की गईं – कलीसिया को भी प्रतिज्ञा की गईं?**
7. **पढ़ें – गलतियों 28–29। क्या हम अब्राहम की आशीषों में बांट सकते हैं?**

घ. सिद्धान्त 6 : प्राथमिक हिस्सों का अध्ययन

ये सिद्धान्त पहचानता है कि विशेष हिस्सों को परमेश्वर की प्राथमिक घोषणा के रूप में पढ़ी जाना चाहिये उसका विषय पर का व्यवहार जो हमारी आत्मिक जीवन के लिये आवश्यक है। बाइबल में बहुत बार परमेश्वर बहुत से तितर–बितर वस्तुओं को एक साथ जोड़ देता है जिसे किसी विशेष सत्य के साथ करना होता और उन्हें इनमें से किसी एक प्राथमिक हिस्से में रख देता है। उनके उदाहरणों में शामिल हैः–

- प्रभु यीशु का पुनरुत्थान – 1 कुरिन्थियों 15
- मानव जीभ – याकूब 3
- इस्राएल की पुनः स्थापना – रोमियों 11
- विश्वास की विजय – इब्रानियों 11
- परमेश्वर की सन्तान के लिये उसका अनुशासन (इब्रानियों 12:1–11)
- कलीसिया – इफिसियों 1–3
- विश्वास के द्वारा धार्मिकता – रोमियों 3:10–21
- व्यवस्था – निर्गमन 20
- परमेश्वर के सब हथियार – इफिसियों 6:10–17
- प्रेम – 1 कुरिन्थियों 13

ये सिद्धान्त चाहता है कि हम धर्मशास्त्र के इन प्राथमिक हिस्सों का अध्ययन करें कि बड़े बिन्दुओं को दृढ़ता से देख सकें और तब अतिरिक्त जानकारी के लिये सम्बंधित हिस्सों पर जायें।

उदाहरण के लिये बाइबल में सबसे उत्तम प्रेम के विषय 1 कुरिन्थियों 13:4–8 में बताया गया है, जहां 16 विशेषताएं – अर्थ से भरपूर बताई गई हैं जिससे हम कक्षा के कमरे में एक सप्ताह बिता सकते हैं – इन पदों के निर्देशों को लेते हुए। इसे देखेंः

> ***"प्रेम धीरजवन्त है और कृपालु है, प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता परन्तु सत्य से आनन्दित होता है, वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है सब बातों की आशा रखता है सब बातों में धीरज धरता है प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यवाणियां हों तो समाप्त हो जायेंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो तो मिट जायेगा"।***

जब हम मरकुस 12:29–31 पढ़ते हैं हम पाते हैं कि यीशु ने एक प्रश्न का उत्तर दिया – जो सबसे बड़ी आज्ञा है।

> ***"हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है और तू अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना, और दूसरी ये है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना – इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं"।***

जबकि दो महानतम आज्ञाओं में प्रेम शामिल है ये ढूंढ़ना कि प्रेम में क्या शामिल है – तो हम परमेश्वर के सामने अपने आपको सही मूल्यांकन कर सकते हैं और दूसरा अच्छा सामान्य ज्ञान है। प्रेम का महत्व मरकुस 12 में पाया जाता है – इसका प्रदर्शन 1 कुरिन्थियों 13 में देखा जाता है।

यदि आप अपनी "प्रेम" की उपयोगिता को 1 कुरिन्थियों 13 से देखना चाहते हो तो अपने आप से ये प्रश्न पूछें "क्या मैं धीरजवन्त हूं?" "क्या मैं कृपालु हूं"? "क्या मैं द्वेष रखता हूं?"

इस सिद्धान्त का दूसरा उदाहरण (इफिसियों 6:10–17) में "परमेश्वर के पूरे हथियारों" के वर्णन में पाया जाता है। यही एक स्थान है जहां विश्वासी के सभी हथियारों का साथ में बयान किया गया है। "कमरबन्ध" जिससे एक अपनी कमर सत्य से बांधकर चलाता उसका संदर्भ यशायाह 11:5 में दिया जाता है। "झिलम" और "टोप" 1 थिस्सलुनीकियों 5:8 में संदर्भ दिया जाता है। "तलवार" जो "हथियारों" का एक हिस्सा है जो इब्रानियों 4:12 में बयान है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 2घ

1. **1 कुरिन्थियों 15 पढ़ें – अनुच्छेद (पैराग्राफ) का शीर्षक दो जो पुनःरुत्थान से सम्बन्धित है नीचे दिये गये हर अनुच्छेद में:**
   क. 15:1–11
   ख. 15:12–19
   ग. 15:20–28
   घ. 15:29–34
   ङ. 15:35–49
   च. 15:50–58
2. **1 कुरिन्थियों 15:3–5 में उद्धार के सुसमाचार के कौन से आवश्यक तत्व हैं?**

ङ. सिद्धान्त 7 : मानव की इच्छा शक्ति को पहचानना

वे सिद्धान्त उस स्वतंत्रता का ध्यान रखता है जो परमेश्वर ने मानव को दिया कि वे निर्णय ले सकते और जिम्मेवारी ले सकते जो इस स्वतंत्रता के साथ आती है (यूहन्ना 3:18, गलतियों 6:7)। मानव चुनाव का सिद्धान्त स्पष्टता से आदम और हव्वा की जांच में स्थापित होता है उत्पत्ति 2–3। उसके सर्वज्ञानी होने के कारण परमेश्वर जानता था कि वे ***"अच्छे–बुरे के पेड़"*** का फल खायेंगे पर परमेश्वर उसे मना किये गये रात्रि भोज का दोषी नहीं है। आदम और हव्वा ने वर्जित किये फल को खाया क्योंकि उन्होंने खाना चुना। तब वे जिम्मेवार ठहराये गये अपने कार्यों के लिये और इस प्रकार वाटिका से बाहर निकाल दिये गये।

बहुत से शब्द और कहावतें मानव के चुनने की योग्यता पर कहे जाते हैं – अधिक नोट करने वाले शब्द "विश्वास" जिसकी वही जड़ यूनानी भाषा में है। परमेश्वर के सर्वज्ञानी होने के कारण वह जानता है कि कौन उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करेगा और इस प्रकार बचाया जायेगा (रोमियों 8:29; 1 पतरस 1:1–2)। उसका पहले से जानने के ज्ञान ने फिर भी विश्वास करने की आवश्यकता को नहीं हटाया।

बाइबल मानव जाति के दोनों प्रकार के अच्छे और बुरे निर्णयों का रिकार्ड रखती है। ये इसके आन्तरिक सच्चाई की गवाही देती है। हम इस सिद्धान्त में पहचानते हैं कि परमेश्वर का वचन मनुष्य के बहुत से बुरे निर्णयों को रिकार्ड करता है। ये मानव द्वारा इच्छानुसार किये गये कार्य थे जिसे परमेश्वर ने अपने अभिप्राय के लिये अनुमति दी पर कभी भी उसके द्वारा आज्ञा नहीं दी गई। इसलिये कि बाइबल रिकार्ड करती है कि व्यक्ति ने विशेष कार्य किया इसका अर्थ ये नहीं कि परमेश्वर ने उन कार्यों की अनदेखी की। यीशु मसीह जानते थे कि यहूदा उन्हें पकड़वा देगा और वास्तव में यहूदा को चितौनी इस कार्य के विरुद्ध दी (मत्ती 26:24), पर यहूदा ने यीशु को पकड़वाया और उसका परिणाम भुगता।

परमेश्वर ने मनुष्य को चुनने की स्वतंत्रता दी पर ये हर समय सिद्धता से चुनने की योग्यता नहीं दी। इसलिये हमें मानव जाति के बुरे और पापमय चुनावों को अपनी व्याख्या में रखना चाहिये।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4 भाग 2ङ

1. **पढ़ें – यूहन्ना 3:16–18। मानव को न्याय से बचने के लिये क्या करने की आवश्यकता है?**
2. **पढ़ें – रोमियों 3:21–26। परमेश्वर की धार्मिकता पाने के लिये मनुष्य को क्या करना है?**
3. **पढ़ें – रोमियों 2:3। क्या पुरुष–स्त्री ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया?**
4. **उनकी अनाज्ञाकारिता क्या साबित करती है?**
5. **पढ़ें याकूब की पुस्तक – आप पायेंगे कि उसमें 60 आज्ञाएं हैं – हर आज्ञा की जरूरत है कि उसके लिये जो आज्ञा प्राप्त करता है उसके लिये निर्णय लिया जाये। इसलिये हर आज्ञा क्या सूचित करती है?**

च. सिद्धान्त 8 : वाचाओं का स्मरण

यह सिद्धान्त परमेश्वर और मनुष्य के बीच सहमति जो की गई उसे पहचानता है। ये शर्त के साथ वाचाएं हैं वह मानव के करने पर निर्भर करता है और बिना शर्त के भी वाचाएं हैं जो पूरी तरह परमेश्वर के वचन की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करते हैं।

वाचाएं महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें उस सम्बन्ध में कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ सम्बन्ध बनाता है उसकी आधारभूत पुनः दृष्टि कोण दिखाता है। यदि हम परमेश्वर की वाचाओं को समझते हैं और उन प्रतिज्ञाओं को हमें मार्ग दर्शन करने देते हैं तो हम धर्मशास्त्र के हिस्सों की गलत व्याख्या से दूर रहेंगे – जो संघर्ष पैदा करते हैं। उदाहरण के लिये – इस्राएलियों को मानव इतिहास के दौरान आपदाओं और कठिनाइयों के साथ अनुशासित किये गये (लैव्यव्यवस्था 26) पर हटाये नहीं जायेंगे – जैसा परमेश्वर ने उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है।

करीब नौ प्रकार की वाचाएं हैं जिनका व्यक्तिगत अध्ययन जरूरी है। हम उनके शीर्षक को नोट करेंगे और हर वाचा का संक्षिप्त वर्णन उसके बाइबल में स्थान के साथ करेंगे।

1. अदन की वाचा

अदन की वाचा आदम और परमेश्वर के बीच बांधी गई थी (उत्त्पत्ति 1–2), इसमें शर्त थी जो मानव की आज्ञा पालन पर निर्भर करती थी – और उसमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि मानव को सिद्ध वातावरण में आशीष दे (2) सिद्ध भोजन – देखने की उत्तेजना (2:9) सिद्ध / सही मौसम (1:6–7, 3:8)। सिद्ध सैक्स (2:21–25) और प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति (1:26–27, 3:8) आरम्भ में मनुष्य द्वारा इस वाचा को स्वीकार किया गया पर तोड़ दी गई – जब उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया कि निषेध पेड़ के फल को नहीं खाना है।

अदन की वाचा अब इस्तेमाल में नहीं है, पर बहुत सी आशीषें मानव को पुनः दी जायेंगी – भविष्य में नये आकाश और नई पृथ्वी के समय (प्रकाशित 21–22)। इसलिये हमें इस वाचा की व्याख्या नहीं करनी उस संदर्भ में कि विशेष रूप से अदन की बारी के साथ व्यवहार न करें। मानव सभी आशीषों को स्थापित नहीं करेगा जो प्रतिज्ञा की गईं प्रभु यीशु मसीह से अलग।

2. आदम की वाचा

आदम और परमेश्वर के बीच आदम के पतन के बाद वाटिका में निकाले जाने के पहले की गई थी (उत्पत्ति 3:14–19) इसमें कोई शर्त नहीं थी।

यह वाचा प्रारम्भिक पाप के परिणामस्वरूप आई जिसे "पतन" के नाम से जाना जाता है परमेश्वर ने उस धोखे के हथियार को श्राप दिया (3:14) और आदम की सन्तान और सर्प के बीच इतिहास में संघर्ष ले आया (3:14–15), स्त्री को प्रसव के समय पीड़ा दी और पुरुष की आधीनता दी (3:16)। पृथ्वी को श्राप दिया गया (3:17–19) भोजन वस्तु के उत्पादन में मुश्किलें। पुरुष और स्त्री को शारीरिक रूप से मरना निश्चय किया गया (3:19, 2:17) और दोनों को अदन की वाटिका से निकाल दिया गया (3:17–19)।

आदम की वाचा का विस्तार पूरे छुटकारे में फैल गया और समस्त मानवता को प्रभावित करेगा जब तक परमेश्वर शैतान को आग की झील में न डाल दे – 1000 वर्ष के राज्य के बाद (प्रकाशित 20:7–10)। हमें ये जानना चाहिये कि आदम के पतन का असर सब मानव जाति पर दे दिया गया है (रोमियों 5:12–14)।

3. नूह की वाचा

नूह की वाचा उत्पत्ति 8:20–9:17 में पाई जाती है ये महान जल–प्रलय के बाद नूह और परमेश्वर के बीच की वाचा है। ये बिना अनुबन्ध के बांधी गई थीं जिसमें जल प्रलय के विनाश के पहले की सभ्यता का वर्णन किया गया है। इसमें प्रतिज्ञा भी शामिल है कि अब आगे भविष्य में ऐसा विनाश कभी नहीं होगा। इसमें परमेश्वर की वह आज्ञा भी शामिल है कि वह पृथ्वी को पुनः भरपूर करेगा (9:1), भोजन के लिये पशुओं का मांस दिया जाना (9:2–4) और घात करने की सजा अधिक होगी (9:5,6), इस वाचा के सम्बन्ध में परमेश्वर की विश्वास योग्यता के चिन्ह स्वरूप "धनुष" दिया गया था।

नूह की वाचा प्रलय के साथ आरम्भ हुई और सर्वदा स्थिर है। जबकि स्थानीय बाढ़ आयेगी जो सम्पत्ति का नुकसान करती है साथ ही जीवन की हानि भी करती हैं और अब उस प्रकार का विनाश जो जल प्रलय के द्वारा आया अब कभी नहीं होगा। पशुओं का मांस खाने की भी स्वतंत्रता दी गई इस प्रकार हमें उन हिस्सों की व्याख्या नहीं करनी जो भोजन के प्रति साग–पात के लिये संदर्भ देते हैं (दानिय्येल 1) कि सभी मानव के लिये माप दण्ड हो। अन्तिम भाग इस वाचा का हत्या में परमेश्वर की सज़ा स्थापित करती है जो आज भी उसकी यही इच्छा है।

4. अब्राहम की वाचा

अब्राहम की वाचा की मूल बातें उत्पत्ति 12:3 में पाई जाती है उसके साथ ये भी जोड़ा गया और उसका वर्णन बाद में दिया गया है। ये अब्राहम की मांग को पूरा करता रहता है तब इस वाचा का विस्तार बिना शर्त उसकी सन्तानों के साथ किया गया।

अब्राहम की वाचा के साथ व्यक्तिगत आशीषें भी शामिल हैं, अनगिनित सन्तान, वास्तविक राज्य, एक शहर, राष्ट्रीय स्थिति, साथ मिलने पर आशीषें, बचाव और मसीह की वंशावली (उत्पत्ति 17:1–8)।

अब्राहम की वाचा उसकी प्रतिज्ञा के साथ आरम्भ हुई। मसीह की वंशक्रम की पूर्ति यीशु मसीह के प्रथम आगमन से हुई (गलातियों 3:16), वाचा के साथ भौतिक वस्तुओं की आशीष की प्रतिज्ञा भी जुड़ी हुई है और इतिहास में विभिन्न स्थिति में दी गई है पर उसकी विशेषता हजार वर्षीय राज्य में पहुंचेगा।

परमेश्वर के वचन की एक उलझन वाले हिस्से का मतलब अधिक अच्छी तरह समझा गया है – पर उस समय जब अब्राहम की वाचा के सिद्धान्तों को अपनाते हैं। वह हिस्सा मत्ती 11:20–24 में पाया जाता है और कहता है :–

> ***"तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा जिनमें उसने बहुतेरे सामर्थ के काम किये थे, क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था। हाय, खुराजीन, हाय बैतसैदा जो सामर्थ के काम तुम में किये गये यदि वे सूर और सैदा में किये जाते तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिरा लेते। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी। और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जायेगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जायेगा जो सामर्थ के काम तुझ में किये गये हैं, यदि सदोम में किये जाते तो वह आज तक बना रहता। पर मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी"।***

अनुग्रह के द्वारा इस्राएल को पश्चाताप करने के लिये अतिरिक्त समय दिया गया है ये अब्राहम की वाचा के कारण है– यदि इस्राएल मन नहीं फिराता तो अनुशासन कठोर होगा पर देश नष्ट नहीं किये जायेंगे न इतिहास से अलग किये जायेंगे।

5. मूसा की वाचा

मूसा की व्यवस्था की वाचा सीनै पर्वत पर मूसा और परमेश्वर के बीच बांधी गई थी। ये निर्गमन 20 में पाई जाती है और बहुत से हिस्से लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण में भी पाये जाते हैं। ये वाचा शर्त के साथ है – आज्ञाकारिता पर आधारित है। जिन्होंने आज्ञा पालन की वे आशीषित हुए और जिन्होंने नहीं की वे श्रापित हुए (लैव्यवस्था 26)।

मूसा की वाचा का प्राथमिक अभिप्राय उद्धारकर्ता के लिये आवश्यकता दिखाना था (गलतियों 3:24–25)। इसने स्पष्ट रूप से परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था को प्रस्तुत किया। वाचा इस्राएलियों को भी दी थी कि वे लेवियों के याजकपन और तम्बू के लिये मार्ग दर्शन स्थापित करें।

यीशु मसीह इस वाचा को पूर्ण करने के लिये आये – इस व्यवस्था को सिद्धता से पालन करें (मत्ती 5:17)। ये वाचा केवल इस्राएल के युग के लिये है, जिसमें आरम्भ से जब से मूसा की व्यवस्था दी गई शामिल है (निर्गमन 20)। जब तक कि पेन्तिकोस्त का दिन कलीसिया में आरम्भ हुआ। इसमें वह समय भी शामिल होगा जो "सताव" का समय है जो मानव इतिहास में 7 साल का होगा वह कलीसिया के उठाये जाने के बाद होगा।

हमें यह जानना है कि पुराने नियम में बहुत से पढ़ पाये जाते हैं जिसमें उस समय का वर्णन है जो मूसा की व्यवस्था के आधीन बिताया गया। उदाहरण के लिये बहुत से जानवरों को "अशुद्ध" घोषित किया गया है और उन्हें नहीं खाना है (लैव्यवस्था 11)। ये आज हम पर लागू नहीं होता जैसा मसीह यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि सब भोजन "शुद्ध" है (मरकुस 7:14–18)।

6. दाऊद की वाचा

ये वाचा दाऊद के साथ बांधी गई जो 2 शमूएल 7:8–19 में पाई जाती है और भजन 89 में। ये बिना शर्त की वाचा है जिसने दाऊद के घर राष्ट्रीय राज्य को स्थापित किया और एक "महान पुत्र" की प्रतिज्ञा दी गई जो देशों पर सर्वदा के लिये राज्य करेगा।

दाऊद की वाचा उस समय प्रभावशील हुई जब दाऊद राज्य कर रहा था। वाचा का कुछ हिस्सा "महान पुत्र" प्रभु यीशु मसीह के आने से पूर्ण हो गया उसके प्रथम आगमन के द्वारा (लूका 1:32) उसका परिणाम सर्वदा रहेगा।

एक समय दाऊद के राजवंश – एक आठ वर्ष के राजा जिसका नाम योशियाह था उसके हाथों में थी (2 राजा 22:1)। एक यहूदी जो उस समय रह रहा था – अभी भी आशा की नींव होगी जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर बनाई गई है। यीशु ने स्वयं स्वर्ग पर ही और पृथ्वी पर का अधिकार प्राप्त किया उसके पुनः जी उठने के बाद (मत्ती 28:18)। इस वाचा की पूर्ति के लिये। एक विश्वासी ये जानकर कि यीशु स्वर्गीय सिंहासन पर है तसल्ली में है (इब्रानियों 8:1) और एक दिन अपना सिंहासन धरती पर स्थापित करने को वापस आयेगा (मत्ती 25:31)।

7. पिलिस्तीयों की वाचा

पिलिस्तीनी वाचा अब्राहम की वाचा को जारी रहने के लिये है। ये शर्तमय वाचा यहूदियों के अनाज्ञाकारिता होने के कारण उनको तितर – बितर करना था पर तब उनके पश्चाताप करने पर वापस उनकी भूमि पर इक्ट्ठा करना था (व्यवस्थाविवरण 30:1–10)।

ये वाचा इस्राएलियों के युग के लिये हैं और उस समय पूरी होगी जब यहूदी मसीह के दूसरे आगमन पर पुनः इक्ट्ठा होंगे (मत्ती 24:31, मरकुस 13:27) और जो भूमि अब्राहम को प्रतिज्ञा की गई – मिस्र की नदी से लेकर इफरातुस तक जो स्थापित की गई है (उत्पत्ति 15:18)। वाचा के दिये जाने के बाद से व्याख्या करने वाले को समझना चाहिये कि इस्राएलियों का बंधुवाई में जाना अस्थाई है।

8. इस्राएल की नई वाचा

इस्राएल के साथ नई वाचा यिर्मयाह 31:31–34 के अनुसार बांधी गई है और इब्रानियों 8:8–12 में दुहराई गई है। ये वाचा का आधार यीशु का लहू है (इब्रानियों 9:11–14) और यहूदियों को पुनः जन्म देने के लिये बिना शर्त के है। (वे विश्वासी जिन्होंने नया जन्म पाया है)।

यह वाचा जिसमें पवित्र आत्मा का बास विश्वव्यापी रूप से प्रतिज्ञा किया गया है और महान भौतिक सम्पत्ति (यिर्मयाह 32:1, यशायाह 61:8)। ये हजार वर्ष के राज्य में पूर्ण होगी। यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है जब धर्मशास्त्र का अध्ययन करते कि इस वाचा में परमेश्वर के द्वारा जो प्रतिज्ञा दी गई है वे केवल विश्वास करने वाले यहूदियों के लिये है। यहूदी इस वाचा के आधीन इसलिये कि वे इस जाति के हैं आशीष नहीं पायेंगे।

9. कलीसिया के लिये नई वाचा

नई वाचा भी नये नियम की कलीसिया के लिये बांधी गई थी (मत्ती 26:26–28)। ये मसीह में विश्वासियों के लिये बिना शर्त के है जो क्रूस पर आधारित है (इब्रानियों 9:11–14) और प्रभु की मेज की यादगारी में हैं (1 कुरिन्थियों 11:25)। ये विश्वव्यापी और विश्वासियों का राज्यकीय याजकपन की स्थापना करती है (इब्रानियों 9:11) और प्रतिज्ञाओं की पूर्ति समय में और अनन्त में होना है। यीशु मसीह इस वाचा के मध्यस्त बन गये (इब्रानियों 9:15)।

इस वाचा की शुरुआत पेन्तिकोस्त के दिन कलीसिया के स्थापना पर की गई (प्रेरित 2) और सर्वदा रहेगी। विद्यार्थी को यह याद रखना चाहिये कि जो आशीषें इस वाचा के आधीन प्राप्त की गई है वे सर्वदा बनी रहेंगी और कभी छीनी नहीं जायेंगी। इस प्रकार कलीसिया युग के विश्वासी के पास पूर्ण सुरक्षा है तब भले ही एक परेशानियों का अपने जीवन में अनुभव करें । उसे प्रभु ने नहीं छोड़ा है और उन्हें कभी नहीं भूलेगा (मत्ती 28:18–20)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4 भाग 2च

1. **कौन सी वाचाएं शर्त के साथ थीं?**

   क.

   ख.

   ग.

2. **कौन सी वाचाएं बिना शर्त के थीं?**

   क.

   ख.

   ग.

   घ.

   ङ.

   च.

3. **हर वाचा से सम्बंधित हिस्से को पढ़ें और देखें कि आप जो सारांश में दिया गया उसमें कुछ बयान जोड़ सकते हैं।**

भाग 3

नियम 3

धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की तुलना कर बुद्धिमान बनें

तीसरा नियम बुद्धि की खोज करना है जो परमेश्वर के वचन को सही समझ और उसके प्रयोग से आती है। हमें विश्वास के द्वारा पहचानना और स्वीकार करना चाहिये कि परमेश्वर के साथ कोई गड़बड़ी या उलझन नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:33)। तो कोई भी समझ में कमी है वह हम से ही आती है। परमेश्वर ने बाइबल में अलंकार और पहेलियां रखी हैं – हमें बुद्धि सिखाने के लिये (नीतिवचन 1:2–6)।

अधिकतर असहमतियां व्याख्या में धर्मशास्त्र के स्वयं तुलना का सही न होने से आती है। हो सकता है व्याख्या करने वाला उस हिस्से की अनेदखी करें या समझने में विफल है कि किस प्रकार एक हिस्सा दूसरे से संबंधित है। ये उनके लिये बुद्धिमानी है जो परमेश्वर के वचन को जानने का प्रयास करते और अपने स्वयं की नम्रता में ध्यान देते हैं। वे जो बिसर जाते या ध्यान एक पद पर नहीं देते या एक शब्द पर, ये पायेंगे कि एक की धर्मशास्त्र को समझने में भिन्नता बना दी गई है।

करीब छः सिद्धान्त हैं जो इस नियम को इस्तेमाल करने में सम्बंधित हैं। हमें उन भिन्नताओं को देखना है जो परमेश्वर अपने वचन में स्थापित करता है। हम इसे संदर्भ को देखकर करते हैं। तुलनात्मक व्याख्या धर्मशास्त्र की दैविय स्थापित सुसंगति की खोज करती है – उस वितरण पर ध्यान देते है जिसे पद संदर्भ देता औार जिसकी देखभाल एक को भविष्यवाणी के हिस्से के साथ करना चाहिये।

क. सिद्धान्त 9 : भिन्नताओं को देखें

ये सिद्धान्त हमें निर्देश देता है कि उन भिन्नताओं को जिन्हें परमेश्वर स्थापित करता है उस पर ध्यान दें। दूसरे शब्दों में, हमें बाइबल आधारित भिन्नताओं को ऐसी विचारधारा के बीच जैसे विश्वास और कर्म में, उद्धार और पाप में, व्यवस्था और अनुग्रह में और बहुत से दूसरे दूसरे। बाइबल कई वर्ग बनाती है। हमारी चुनौती है कि इन भिन्नताओं को अपने व्याख्या में पहचानें।

एक उदाहरण भिन्नताओं के पहचान का विश्वास और कार्य के अध्ययन में दिया गया है। हमें इफिसियों 2:8–10 में बताया गया है:–

> ***"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और ये तुम्हारी ओर से नहीं बरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें। क्योंकि हम उसके बनाये हुए हैं और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सिरजे गये है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया"।***

ये स्पष्ट है कि उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से है कर्मों से नहीं। फिर भी कार्यों का महत्व नकारा नहीं जा सकता। कार्य उद्धार के लिये नहीं हैं पर मसीह जीवन के लिये महत्वपूर्ण हैं।

विश्वास की अपने आप में कोई खूबी नहीं है क्योंकि सारी खूबी विश्वास के उद्देश्य में पाई जाती है। एक के लिये विश्वास में विश्वास करना मतलब अपने पर भरोसा करना है। हम जानते हैं कि हम सबने पाप किया है इस प्रकार अपने आप पर भरोसा करना वास्तव में उद्देश्यों का चुनाव नहीं है (रोमियों 3:23)।

यदि एक भारी भरकम व्यस्क इसे छोर से उस छोर तक तैरना हो एक बड़े छेद से होकर और कोई उसे छोटे कपड़े का टुकड़ा दे दे जो एक छोटी डाली के साथ जुड़ा हुआ है, तो विश्वास करना कठिन हो जायेगा क्योंकि उस उद्देश्य की काफी खूबी नहीं होगी। फिर भी यदि एक मज़बूत रस्सी बड़ी डाली के साथ जोड़ दी जाये तो विश्वास करना आसान हो जायेगा क्योंकि उसके उद्देश्य में काफी खूबियां हैं।

यीशु मसीह जिसने हमारे पापों को अपनी देह में क्रूस पर उठा लिया और मृतकों में से जी उठा, उसमें काफी से अधिक खूबियां हैं – हमारे विश्वास के उद्देश्य के लिये।

कार्यों में क्रिया होती जो अपने स्वाभाव में अच्छी होती, जैसे गरीबों की सहायता करना (गलातियों 2:10)। फिर भी अच्छी क्रियाएं हमें नहीं बचा सकती (तीतुस 3:5), कार्यों को परमेश्वर ने इस प्रकार बनाया कि वे प्रभु में हमारे विश्वास का प्रगटीकरण हो। वास्तव में हमने जो भी कार्य यीशु मसीह के नाम से किये हैं उनका हिसाब देंगे और उसी के अनुसार हमें प्रतिफल मिलेगा (2 कुरिन्थियों 5:10), कार्य उस धन्यवादिता पर किया जाना है जो प्रभु ने हमारे लिये किया है। व्यक्तिगत लाभ पाने के लिये नहीं करना चाहिये।

दूसरी भिन्नता हम देखेंगे जो विश्वासी के उद्धार और उसके जीवन में पाप की असलियत के बीच है।

हमें बताया गया है कि प्रभु ने हमारे लिये महानतम कार्य किया जब हम पापी ही थे तब ही वह हमारे उद्धार के लिये क्रूस पर मर गया, जब हम उसके शत्रु थे तो हम उससे क्या कम की उम्मीद करें कि हम उसके परिवार के सदस्य हैं (रोमियों 5:6—10)।

बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि विश्वासी उद्धार पाने के बाद भी पाप कर सकता है।

> ***"यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं तो अपने आप को धोखा देते हैं और हममें सत्य नहीं, यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है, यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं है" (1 यूहन्ना 1:8—10)।***

ये स्पष्ट होना चाहिये कि हिस्सा विश्वासी का हवाला देता है। हमें नये नियम में बहुत दूर तक नहीं पढ़ता है कि विश्वासियों की चितौनी पाप के विरुद्ध क्या है। प्रश्न ये उठता है क्या हम विश्वासी होकर जब पाप में ग्रसित हो जाते तो क्या उद्धार को खो देते हैं? या नहीं?

रोमियों की पत्री में और बाइबल की दूसरी पुस्तकों में, उद्धार को एक अनन्त तथ्य की पुष्टि करता है। पौलुस ने कहा, ***"सो अब जो मसीह यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया"*** (रोमियों 8:1—2)। कुरिन्थियों की कलीसिया बहुत से पापों के बोझ में फंस गई। पौलुस ने उन्हें "शारीरिक" कहा (1 कुरिन्थियों 3:1—2), पर उन्हें बिना उद्धार के कभी नहीं बताया। वह उन्हें एक "कलीसिया कहकर सम्बोधित करता है जो "सन्तों" द्वारा बनाई गई है (1 कुरिन्थियों 1:2)।

ये स्पष्ट है कि मसीही पापमय जीवन शैली में गिर सकते हैं। ये भी बराबर स्पष्ट है कि हमारा उद्धार खो नहीं सकता। "यदि हम विश्वासयोग्य हैं तो वह विश्वासयोग्य रहता है" (2 तीमुथियुस 2:13)।

मसीही का पापमय जीवन अवश्य ही बिना परिणाम के नहीं हैं — ये बहुत से उपहारों की हानि की ओर ले जाता है: "यदि हम उसका इंकार करें तो वह हमारा इंकार करेगा" (2 तीमुथियुस 2:12)। एकदम संदर्भ ये पुष्टि करता है कि हम उसके साथ राज्य नहीं करेंगे — यदि हम उसका इंकार करेंगे।

इन दो उदाहरणों से हम भिन्नता देखने लगेंगे कि जिसे परमेश्वर ने अपने वचन में स्थिर किया है। हम जीवन भर खोजते रहेंगे और बहुत सी विचारधारायें जो उनके साथ सम्मिलित हैं उनके बीच के सम्बन्धों को समझने की कोशिश करते रहेंगे।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 3क

1. **पढ़ें — इफिसियों 2:8—10 — उद्धार में परमेश्वर का क्या वरदान है?**
2. **उद्धार में मनुष्य का क्या भाग है?**
3. **एक बार जब उद्धार हो गया, तो विश्वासी किसके लिये सृजा गया है?**
4. **पढ़े तीतुस 3:5 — क्या भले काम हमारा उद्धार कर सकते हैं?**
5. **पढ़ें — 1 यूहन्ना 1:8 — क्या विश्वासी अभी भी पाप करेगा?**
6. **पढ़ें — 1 यूहन्ना 1:9 — जब विश्वासी पाप करता तो उसे क्या करना है?**
7. **पढ़ें — 1 यूहन्ना 1:10 — यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया तो किसको झूठा ठहराते हैं?**
8. **पढ़ें — इब्रानियों 13:15—16 — इन पदों में कौन से भले कार्य वर्णन किये गये हैं?**

9. **पढ़ें – कुलुस्सियों 3:12–17 – कौन से भले कामों की सूचि दी गई है?**
10. **पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:10 – भले काम के लिये विश्वासी को क्या मिलेगा?**

ख. सिद्धान्त 10 : संदर्भ पर ध्यान दें

हर शब्द, वाक्य या बाइबल का पद के पास इसे आगे बढ़ाने और उसका अनुसरण करने की जानकारी है (एकदम प्रथम और अन्तिम शब्द, वाक्य या पद के अलावा) ये सिद्धान्त हर शब्द के और पद के स्थान पर बड़ी सावधानी से ध्यान देता है और दूसरें शब्द व पद के साथ के पदों के साथ के सम्बन्ध। परमेश्वर इस विषय पर रोशनी डालता है या तो हिस्से के द्वारा जो पास में हैं जो विषय को हिस्से के लिये स्थापित करता है या हिस्से के द्वारा जो विषय में बाइबल के दूसरे भागों में समान हैं।

हमें किसी पद को उसके संदर्भ के बाहर नहीं लेना चाहिये और इसका अलग मतलब नहीं देना चाहिये, संदर्भ से बाहर के पदों को इस्तेमाल करने में उसके अपने विचारों को साबित करने और व्यक्तिगत कार्यक्रम को बढ़ावा देने में धोखे का तरीका हो सकता है ये गलत व्यवहार एक प्रकार की अन्योक्ति है जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं।

संदर्भ सहित व्याख्या का मूल रूप से मतलब ये है कि पाठक निश्चय करता है कि कौन बोल रहा है, कौन श्रोता हैं, इस हिस्से का मुख्य विषय क्या है और किस समय सीमा में और स्थान पर ये शिक्षा सही हैं।

तीन प्रकार के संदर्भ हैं – जो धर्मशास्त्र के हर हिस्से में देखे जा सकते हैं:–

1. पास का संदर्भ

पास का संदर्भ उसी अनुच्छेद या पद में होता है। उदाहरण के लिये गलातियों 5:1 हमें बताता है, ***"मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है सो इसी में स्थिर रहो और दासत्व के जुए में फिर से न जुतो"।*** ये हमारी प्रकृति रही है कि शब्द "दासत्व" को विशेष संस्कृति में विशेष समय, स्थान में उपयोग करें जबकि "दासत्वता" शीघ्र ही संदर्भ देता कि शारीरिक रूप से किसी की आधीनता में या व्यक्ति के नियंत्रण में या राजनीति की जानकारी में हो। संदर्भ में फिर भी हम देखते हैं कि ये पद उस प्रकार की दासत्वता का संदर्भ देता जो आत्मिक है। ये हिस्सा उनका संदर्भ देता है जो व्यवस्था की रीति रिवाज़ के दासत्वता में हैं (विशेषकर खतना) और एक दूसरे की सेवा में स्वतंत्र नहीं हैं (गलातियों 5:13)।

2. मध्यवर्ती संदर्भ

मध्यवर्ती संदर्भ में वो पद शामिल हैं जो उसी पुस्तक में पाये जाते हैं। इसका उदाहरण मत्ती 24:20 में पाया जाता है जो ये कहता है, ***"उस समय दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा"।*** संदर्भ का सम्बन्ध "अन्तिम दिनों" से है। प्रश्न ये शामिल करता है कि कौन ले लिया जायेगा और कौन पीछे छोड़ दिया जायेगा? क्या धर्मी को ले लिया जायेगा और दुष्ट छोड़ दिये जायेंगे। कलीसिया के उठाये जाने के समय होगा – क्या दुष्ट उठा लिये जायेंगे और धर्मी छोड़ दिये जायेंगे–जैसा मसीह के दूसरे आगमन पर जब वह अपना हजार वर्ष का राज्य स्थापित करेगा? पास का संदर्भ इस प्रश्न का उत्तर नहीं देता।

मत्ती 13:49 इसका उत्तर देता है। ये हिस्सा "अन्तिम दिनों" को भी बताता है कि ***"दुष्ट लोग धर्मियों के बीच से अलग किये जायेंगे"।*** इस प्रकार मध्यवर्ती संदर्भ ने प्रश्न का उत्तर दिया है कि कौन छोड़ा जायेगा और कौन ले लिया जायेगा – ये संदर्भ दूसरे आगमन को बताता है।

ये मध्यवर्ती संदर्भ हमें सूचित करता है – उस अध्ययन का महत्व जो पद व पद का पुस्तक में से इस संदर्भ को बनाये रखने के लिये अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। यदि विद्यार्थी मत्ती 24 पर पहुंच गया तो इस प्रश्न का उत्तर पाने में मुश्किल होगा। पर यदि विद्यार्थी मत्ती की पूरी पुस्तक पढ़कर अध्याय 24 तक पहुंचा है तो उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।

3. दूरवर्ती संदर्भ

दूरवर्ती संदर्भ पहचानता है – परमेश्वर के वचन के आंतरिक बने रहने को जानता है। इसमें हिस्से जो पूर्ण बाइबल में जिसमें इस हिस्से के विषय में कुछ है।

दूरवर्ती संदर्भ का अध्ययन देखता है कि इस हिस्से का स्पष्टीकरण बाइबल का दूसरा हिस्सा करता है। चुने हुए शब्दों का अध्ययन जैसे "अनुग्रह" "विश्वास" या "प्रेम" संदर्भ तालिका द्वारा दूसरे दूरवर्ती संदर्भ की ओर ले जाता है जिसमें

वही शब्द हो। संदर्भ तालिका वह पुस्तक है जो प्रत्येक व्यक्तिगत शब्द की सूची रखती है कि पद में दिये गए शब्द मिल सके। एक विशाल संदर्भ तालिका हर पद जो शब्द हैं बतायेगी इसके विषय अधिक जानकारी बाद में दी जायेंगी।

अक्सर समयों पर दूरवर्ती संदर्भ को बढ़े हुए सिद्धान्तों को जानने के लिये सम्पर्क करना चाहिये – जैसे भविष्यवाणियों की व्याख्या या "प्रकार की" और "चिन्ह" समझने के लिये। उदाहरण के लिये मन्दिर में परदा (निर्गमन 26:31–35)। जो पवित्र स्थान को सर्वोत्तम पवित्र स्थान से अलग करता है जिसकी व्याख्या हमें इब्रानियों 10:20 में दी गई है जो प्रभु यीशु मसीह के मांस को प्रगट करता है।

संदर्भ के साथ व्याख्या हमारी खोज में बहुत महत्वपूर्ण है, ***"जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाता है"*** (2 तीमुथियुस 2:15)। जब हम धार्मिक शिक्षा का वर्णन करते हैं तो हमें उसे धर्मशास्त्र से साबित करना चाहिये ये प्रगट करने के लिये कि बाइबल उनके पास के, मध्यवर्ती और दूरवर्ती संदर्भों में मेल–मिलाप के साथ है। यदि हमारा विश्वास शान्ति/प्रेम में नहीं है – सारे धर्मशास्त्र के साथ तो "धार्मिक शिक्षा" के परिणाम हमारे अध्ययन पर प्रश्न लगाते हैं।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 3ख

1. **पढ़ें – गलातियों 5:1, और रोमियों 8:2। हमें अपनी मसीह में स्वतंत्रता से क्या करना है?**
2. **पढ़े – गलातियों 5:13। हमें अपनी स्वतंत्रता कैसे इस्तेमाल करना है?**
3. **पढ़ें – 1 कुरिन्थियों 10:28–31 – हमारी स्वतंत्रता पर दूसरे व्यक्ति के हमले पर हमें कैसे उत्तर देना चाहिये?**
4. **पढ़ें – 2 कुरिन्थियों 3:17 – पवित्र आत्मा अपने साथ क्या लाता है?**
5. **पढ़ें – याकूब 1:25 – हमें अपनी आशीष को पाने के लिये कौन सी सिद्ध व्यवस्था को पकड़े रहना है?**
6. **पढ़ें – याकूब 2:12 – हमें कैसे बोलना और करना है?**
7. **पढ़ें – 1 पतरस 2:16 – हमें अपनी स्वतंत्रता कैसे इस्तेमाल करना है?**
8. **पढ़ें – 2 पतरस 2:1, 17–19 – झूठे शिक्षक क्या वायदा करते हैं?**
9. **गलातियों 5:1 से आरम्भ करें (पास का संदर्भ) और 5:13 (मध्यवर्ती संदर्भ) दूसरे पदों को इस्तेमाल करें जो ऊपर दिये गये हैं (दूरवर्ती संदर्भ) स्वतंत्रता के दूसरी विशेषताओं को पहचानने के लिये।**

ग. सिद्धान्त 11 : तुलनात्मक अनुवाद करें

ये तुलनात्मक व्याख्या परमेश्वर के वचन की आंतरिक बने रहने पर ध्यान केन्द्रित करती है, हमारी ओर संकेत करती कि धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की तुलना के महत्व को उसके विषय की समानता का विश्लेषण करें, जिससे हम सही मतलब पर पहुंचें।

जो विषय एक दूसरे के समान हैं उनकी तुलना करना महत्वपूर्ण है जैसे अनुग्रह और दया और फर्क; विषय भी जैसे परमेश्वर और शैतान। जब हम समानताओं की तुलना करते हैं और विषय की भिन्नता को दूरवर्ती संदर्भ में तो हम एक ऐसी तस्वीर रखते हैं जिसको टुकड़ों में कर दिया गया है – कभी कभी बहुत टुकड़ों में। इन टुकड़ों को एक साथ जोड़ने में धार्मिक विचार धारा बन जाती है।

न केवल नये शिष्य (1 तीमुथियुस 3:6), अनुभवी अनुवादक भी इस धार्मिक शिक्षा के विकास में सावधान हों (नीतिवचन 3:5–6)। ये अहसास करते हुए कि महत्वपूर्ण विस्तार 31,000 धर्मशास्त्र के पदों में से अनदेखी तो नहीं की गई है। खाली सामग्री का संग्रह हम समझने का यत्न कर रहे हैं हमें गलती के विषय सचेत करें और इस प्रकार हमें नम्र करें।

जब हम धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की तुलना करते हम ये पता लगाते हैं कि दिया गया धार्मिक शिक्षा का विषय – बाइबल के बहुत से भाग में देखा गया है – एक विषय उदाहरण के लिये "विश्वास के द्वारा धार्मिकता" (उत्पत्ति 15:6, रोमियों 3–4)। जब हम विरोधाभास के हिस्से को पाते हैं जो "कार्यों के द्वारा धार्मिकता" के विषय बोलता है जैसा याकूब 2:24–26 में पाया जाता है हमें दोनों हिस्सों को देखना चाहिये जब हम दोनों हिस्सों को एक साथ रखते तो समझते हैं कि "कार्य" परमेश्वर की योजना में आवश्यक है, जो विश्वास की बढ़ौतरी है जो उद्धार की ओर अगुवाई करता है, पर उद्धार के साधन के रूप

में नहीं। यह सिद्धान्त इफिसियों 2:8–10 में भी सिखाया गया है ***"हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हुआ है "और भले कामों के लिये सृजे गये हैं"।***

यही सिद्धान्त हमें सिखाता है कि धार्मिक विचार धारा के निर्माण में सावधान या हिस्सों के प्रति धार्मिक शिक्षा और प्रश्न सूचक गद्य को पढ़ना। उदाहरण के लिये – यूनानी लेख मरकुस 16:9 से पुस्तक के अन्त तक बहुत अनिश्चिंत है। कुछ लोगों ने इन पदों पर धार्मिक शिक्षा बना ली है जिसका परिणाम गलत धार्मिक विचारधारा है। धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की तुलना करने का महत्वपूर्ण दूसरा उदाहरण रहस्यों की पहचान में दिखाया गया है (जो चीज़ अनजान है), जिसका संदर्भ नये नियम में बहुत स्थानों में दिया गया है। सामान्यतः यदि हम इफिसियों 3 का अध्ययन कर रहे होते और शब्द "रहस्य" पर दौड़ रहे होते तो हम प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करते, "रहस्य क्या है?" हमारा उत्तर : जो कुलुस्सियों 1:25–27 में पाया जाता है जो ये कहता है:–

> ***"जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूं। अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा परन्तु अब उसके पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह ये है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है"।***

"रहस्य" को धर्मशास्त्र के द्वारा पहचाना गया है मसीह के साथ करीबी सम्बन्ध में, ये सम्बन्ध नये युग के लिये जो कलीसिया का युग कहलाता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 3ग

1. **पढ़ें – रोमियों 3:21–28 – मनुष्य कैसे *परमेश्वर के सामने* धार्मिक ठहराया गया है?**
2. **पढ़ें – इफिसियों 2:8–9 – मनुष्य किस प्रकार बचाया गया है?**
3. **पढ़ें – याकूब 2:14–26 और इफिसियों 2:10 विश्वासी को क्या उत्पादन करना है?**
4. **याकूब के 2 हिस्सों में लेखक विश्वास बिना कर्म के बारे में क्या कहता है?**
5. **क्या इसका अर्थ ये हैं कि यदि विश्वासी भले काम नहीं करता तो विश्वासी का उद्धार नहीं हुआ है? इसहाक को समर्पित किया?**
7. **याकूब 2 में वह कौन व्यक्ति है जो पूछ सकता है, "आपके पास विश्वास है और मेरे पास कर्म" अपना विश्वास बिना कर्म के दिखाओ, और मैं अपना विश्वास कर्म से दिखाता हूं?"**
8. **पढ़ें इब्रानियों 11:1 – क्या विश्वास देखा जा सकता है?**
9. **इन सब पदों के द्वारा सोचो और तब शब्द "बचाये गये" का बयान करो – याकूब 2:14 और "धार्मिक" 2:22 और 2:24 में।**

घ. सिद्धान्त 12 : मेल मिलाप खोजें

ये सिद्धान्त परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और सच्चाई पहचानता है, कि वह उलझनों का लेखक नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:33)। दूसरे शब्दों में – बाइबल में कोई विरोधाभास नहीं है, बाइबल एकता में सम्पूर्ण है जिसे बनाया गया और जीवित धर्मशास्त्र के अनुवाद के प्रति असहमति वह मानव का क्षेत्र है, दैविय नहीं। बहुत से लोग अपनी भावनात्मक सुरक्षा परमेश्वर के वचन को अपनी समझ के आधार पर रखते हैं, पर धर्मशास्त्र इसके विरुद्ध ऐसा करने पर चितौनी देती है (यूहन्ना 5:37, नीतिवचन 3:5–6, 2 कुरिन्थियों 5:7)। हम बाइबल में कुछ कभी स्पष्टता से नहीं समझ पायेंगे या पूरी तौर से जब तक कि हम प्रभु से आमने सामने न मिल लें (1 कुरिन्थियों 13:12)। तो हमारे लिये विषय है कि हम विश्वास से हमेशा चलें (इब्रानियों 11:6; कुलुस्सियों 2:6)। हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिये कि वह हमारे स्वर्गीय घर की ओर अगुवाई करेगा।

जब हम ये समझ लेते हैं कि ये दो विरोधाभास के पद वास्तव में एक दूसरे के पूरक हैं, तो हम बुद्धि पाते हैं। हमें नीतिवचन की पुस्तक के आरम्भ में बताया गया है कि जब हम कठिन वर्णनों और पहेलियों को समझने लगते हैं तो बुद्धिमान बन जाते

हैं (नीतिवचन 1:2–6)। इसमें बुद्धिमानी के अध्ययन की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये जो हमने पहले ही चर्चा की है हमें याकूब 2 और रोमियों 3–4 साथ में सही तरह से समझना है – "विश्वास और कर्म के बीच का सम्बन्ध"।

जब धर्मशास्त्र के हिस्सों के बीच का सम्बन्ध देखते हैं, हमें उन संकेतों की जानकारी होना चाहिये – जो समय और स्थान की है; ये जानते हुए कि हर एक छोटी विस्तृत बातें नहीं लिखी गई होगी या अनुवाद में समस्या रही होगी। हमें दिमाग में ये रखना है कि कोई भी सच्चा विरोधाभास परमेश्वर के वचन में नहीं पाया गया है। हमें ये भी जानना चाहिये कि परमेश्वर का वचन बार बार उसी सिद्धान्त को विभिन्न तरह से बताता है जिससे कि वो महत्वूपर्ण है और अधिक तरह से समझा जा सके। उदाहरण के लिये, रोमियों 3:23 कहता है, " सबने पाप किया है" उसकी प्रकार से, लैव्यव्यवस्था की पुस्तक सब को पाप बलि लाने की आज्ञा देती है। दोनों हिस्से आवश्यक रूप से एक ही बात कहते हैं।

बाइबल से और भी जो स्पष्ट हो जाता वो है कि परमेश्वर ने अपने वचन का वास्तविक बनावट और उसकी संस्था बनाई है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4, भाग 3घ

1. **क्या जो अध्ययन 3ग में लिया गया वह इस सिद्धान्त को प्रगट करता है?**
2. **पढ़ें – रोमियों 3:21–28, 5:1–2, 8–10,8:35–38 और यूहन्ना 10:27–29। उद्धार के लिये क्या विशेष बिन्दू बनाया है?**
3. **पढ़ें – 1 कुरिन्थियों 6:9–10 ये पद क्या सिखाते हैं?**
4. **क्या यहां कोई झगड़ा दिखता है?**
5. **पढ़े – 1 कुरिन्थियों 3:10–15 एक कैसे दिखने वाले संघर्ष से समझौता कर सकता है?**
6. **पढ़ें – याकूब 1:12 – जीवन के मुकुट को पाने के लिये क्या करना होगा?**
7. **पढ़ें – 1 पतरस 5:1–4 – महिमा के मुकुट को पाने के लिये क्या करना होगा?**
8. **पढ़ें – 2 तीमुथियुस 4:7–8 – धार्मिकता के मुकुट को पाने के लिये एक को क्या करना चाहिये?**

ङ. सिद्धान्त 13 : वितरण पर ध्यान दें

रिहाई का समय ऐतिहासिक है जिसमें परमेश्वर अपने लोगों के लिये विभिन्न जिम्मेवारियां स्थापित करता है। वे इतिहास का विभाग है जो इन जिम्मेवारियों को तीन वर्गों में रखा जाता है। हमें इब्रानियों 7:12 में बताया गया है, ***"क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है तो व्यवस्था का भी बदलना अवश्य है"।*** ये पद हमें सिखाता है कि परमेश्वर विभिन्न जिम्मेवारियों को इतिहास के विभिन्न समयों में स्थापित करता है।

आदम के पतन के बाद से चार स्पष्ट छुटकारे :–

1. **अन्यजातियों का युग–आदम के पतन से मिस्र से निकलना**

   इसका वर्णन उत्पत्ति और अय्यूब में है, ये समय लगभग 3900 ई.पूर्व – 1445 ई.पू. है।

2. **इस्राएल का युग – मिस्र से निकलने से पेन्तिकोस्त का दिन**

   इस्राएल का युग पूरे पुराने नियम में पाया जाता है केवल उत्पत्ति और अय्यूब में नहीं। और ये बढ़कर/फैलकर चारों सुसमाचारों और प्रेरित 1 तक आते हैं। पुराने नियम में कुछ हिस्से हैं जो हजार वर्ष के राज्य का संदर्भ देते हैं। दो उदाहरण हैं – यशायाह 61–66 और यहेजकेल 40–48।

   इन युगों की लगभग तिथि ई.पू. 1445 से ई. पश्चात् 33 तक है इस युग में शामिल ये भी हैः कलीसिया का उठाया जाना और यीशु मसीह का दूसरा आगमन इन समयों को "क्लेश" या "दानिय्येल के 70 सप्ताह" के नाम से जाना जाता है (दानिय्येल 9:24–27)।

3. **कलीसिया का युग पेन्तिकोस्त के दिन से जब तक कलीसिया का उठाया जाना**

   (क्लेश का समय जो इस्राएल के सात वर्ष का अन्तिम युग है वह कलीसिया के उठाये जाने से यीशु मसीह के द्वितीय आगमन तक)।

कलीसिया के युग को प्रेरित 2–28, इफिसियों और प्रकाशितवाक्य 2–3 में पूरा दिया गया है। क्लेश/सताव का युग जो इस्राएल के युग को पूर्ण करता है वह प्रकाशितवाक्य 4–19 में पाया जाता है।

ये युग ईस्वी. 33 में आरम्भ हुआ और जब तक कलीसिया उठाई न जाये अभी पूरा नहीं हुआ है।

4. हजार वर्ष का युग–यीशु मसीह के दूसरे आगमन से महान श्वेत सिंहासन के न्याय तक

इस युग को प्रकाशितवाक्य 20 में बताया गया है और कुछ हिस्से नये और पुराने नियमों में भी पाये जाते हैं।

ये छुटकारा अधिक स्पष्टता से समझ लिये गये हैं जब हम विभिन्न याजकपन को देखते जो परमेश्वर ने मनुष्यों को सौंपे हैं। उदाहरण के लिये – इससे पहले कि इस्राएल मिस्र से निकलने के बाद एक देश बना तो मनुष्य "अन्यजातियों के युग" में था। इस छुटकारे का याजकपन प्राचीनों द्वारा आयोजित किया गया जो एक ही अपने परिवार में से था और वह "पारिवारिक याजकपन" कहलाया गया। ये प्रथा नूह के समय भी थी (उत्पत्ति 8:20)। अब्राहम (उत्पत्ति 22:2) और अय्यूब (अय्यूब 1:5) व्यवस्था जिसका अनुसरण वे करते थे वो परमेश्वर द्वारा ***"उनके हृदयों पर लिखी गई थी"*** (रोमियों 2:15)।

यहूदियों के मिस्र से निकलने के थोड़े समय बाद इस्राएल का युग आरम्भ हो गया और परमेश्वर द्वारा लेवी के गोत्र को बुलाया गया – नये और विभिन्न याजकपन के लिये जो "लेवियों का याजपन" ये याजकपन का आधार उस वंशावली और हारून की सन्तान से लेवी गोत्र तक। लेवियों का याजकपन अपना कार्य तम्बू की सेवा में और बाद में मन्दिर में की। उस युग के लेवियों को जानवरों की बलि चढ़ाना पड़ती थी? आराधना में अगुवाई और परमेश्वर के वचन को बताना पर विशेष तरीके से जो परमेश्वर ने मूसा को दिया। जो व्यवस्था जिसका उन्हें अनुसरण करना था उसे निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में रिकार्ड किया गया है। एक अतिरिक्त नोट ये रूचिकर है और उदासी भी कि ये तरीके यीशु के जन्म होने तक इतने बिगड़ गये कि रीति–रिवाज़ परम्परायें बहुत अधिक महत्वूपर्ण हो गई ना कि वे वास्तविकताएं जिन्हें प्रगट किया गया था (इब्रानियों 10:8)।

यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने और पुनः जी उठने के दिन परमेश्वर ने एक नया युग आरम्भ किया या छुटकारा। ये "कलीसिया का युग" कहलाया या "कलीसिया का छुटकारा"। इस नये छुटकारे में जो कोई यीशु पर विश्वास – याजक को जानवरों का बलिदान नहीं चढ़ाना है पर उन्हें "अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर का भावता हुआ बलिदान चढ़ाना है" (रोमियों 12:1)। इस छुटकारो के दौरान याजकपन के व्यक्त करने का तरीका बदल गया। फिर भी याजकपन के विभिन्न आत्मिक कार्य नहीं बदले हैं। सबने बलिदान चढ़ाया – स्तुति में आये और परमेश्वर के वचन बताये। रिहाई या छुटकारे विभन्न तरीके या तरह से प्रस्तुत किये गये – तरीके जो परमेश्वर ने अपने सिद्धान्तों को ले जाने के लिये वर्णन किये। कलीसिया के छुटकारे को "स्वतंत्रता की व्यवस्था" का अनुसरण करना है (याकूब 1:25, 2:12) "प्रेम के क्षेत्र में" (रोमियों 13:8–10; गलतियों 5,14; याकूब 2:8)।

हजार वर्ष का युग या छुटकारे में नया याजकपन होगा जो लेवी के गोत्र के सादोक की सन्तान द्वारा अगुवाई की जायेगी (यहेजकेल 40:46, 43:19, 44:15, 48:11)। ये व्यवस्था "इस्राएल की नई वाचा" पर आधारित होगी (यिर्मयाह 31:31–33, इब्रानियों 8:8–10) और स्वयं यीशु मसीह ने स्थापित किया जैसा वह ***"लोहे का दण्ड लिये हुए शासन करेगा"*** (प्रकाशितवाक्य 12:5)।

छुटकारे की व्याख्या इसलिये रूप और तरीकों के बदलाव को पहचानती है पर उसका आधार सिद्धान्तों पर है जो शारीरिक रूप से अधिक आत्मिक स्वाभाव में हैं। उदाहरण के लिये हमारे अभी के छुटकारे में हमें परमेश्वर का जानवरों की बलि नहीं चढ़ानी – प्रभु यीशु मसीह के अन्तिम बलिदान को स्मरण करके (इब्रानियों 10:10)। जानवरों के बलिदान के बदले कलीसिया प्रभु की मेज पर उसके साथ उसके बलिदान की प्रशंसा की याद में हिस्सा लेते हैं (1 कुरिन्थियों 11:23–24)। हजार वर्षीय युग के दौरान जानवरों के बलिदान पुनः लागू किये जायेंगे – दूसरे प्रकार के स्मरण में जो यीशु मसीह के क्रूस पर के कार्यों की समाप्ति की याद में (यहेजकेल 43:18–27)।

इतिहास के विभाजन धर्मशास्त्र की व्याख्या के अध्ययन से आते हैं छुटकारे से छुटकारे के बदलाव के सही समय के लिये बहुत से दृष्टिकोण हैं। ये छुटकारे के सिद्धान्त का इंकार नहीं करते कि परमेश्वर के पास इतिहास के भिन्न बिन्दुओं पर लोगों के लिये जिम्मेवारियां हैं।

आधुनिक काल का तरीका है "उच्च छुटकाराबाद" जो बहुत से छोटे छुटकारों को बड़े खाके में रखते हैं। हमें नोट करना चाहिये कि इस पद्यति में गम्भीर धर्मशास्त्र की सहारे की कमी है। ये आसानी से व्यक्तिगत पक्षीय और टूटे फूटे व्याख्याओं को बढ़ावा देने में इस्तेमाल की जा सकती है। इस सिद्धान्त में अत्याधिक कठोरपन कानूनी बातों और मसीही

जीवन में सुअवसरों की पहचान में असफल होंगे। उदाहरण के लिये पहाड़ी उपदेश में कलीसिया का कोई मूल्य नहीं पाया जायेगा क्योंकि यीशु ने उन सिद्धान्तों को इस्राएल के युग में कहा – जो पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:3 में कहा, वह पूरी तरह से गायब है वह "ठोस धार्मिक शिक्षा" और "ठोस वचन" जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के हैं।

हमें क्या वास्तव में खोजकर उसी में चिपके रहना है – ये वे सिद्धान्त हैं जो छुटकारे के अध्ययन को बढ़ाते हैं। तरह और याजकपन के तरीके बाइबल के समय में बदल गये हैं। पर सिद्धान्त जिन पर कार्य करते वैसे ही बने रहते। किसी भी छुटकारे के सब याजकों को आज्ञा दी गई है कि प्रभु के लिये बलिदान लाओ और परमेश्वर का वचन सिखाओ।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4, भाग 3 ङ

1. **पढ़ें – इब्रानियों 7:12 – कब याजकपन बदलता है, और क्या बदलना चाहिये?**
2. **पढ़ें – उत्पत्ति 8:20 और अय्यूब 1:5 – ये "अन्यजातियों के युग" के उदाहरण हैं ये "पारिवारिक याजकपन" कहलाते हैं – बलिदान चढ़ाने के लिये कौन जिम्मेवार हैं?**
3. **पढ़ें – रोमियों 2:15 – "अन्यजाति युग" के दौरान किस व्यवस्था का पालन करना था?**
4. **पढ़ें – निर्गमन 28:1। ये "इस्राएली – युग" के दौरान याजकपन का उदाहरण है – कौन बलिदान चढ़ाने के लिये जिम्मेवार है?**
5. **पढ़ें – व्यवस्थाविवरण 4:44–46। इस्राएल को कौन सी व्यवस्था पालन करना था?**
6. **पढ़ें – 1 पतरस 1:1–2, और 2:5,9 "कलीसिया – युग" के याजक कौन हैं?**
7. **पढ़ें – रोमियों 13:8–10 और याकूब 2:8 कलीसिया के याजकों को कौन सी व्यवस्था का अनुसरण करना है?**
8. **पढ़ें – यहेजकेल 40:46; 43:19; 44:15, और 48:11 – "हजार वर्षीय युग" में कौन याजक होंगे?**
9. **पढ़ें – इब्रानियों 8:8–10 – इस युग को कौन सी व्यवस्था शासन करेगी?**
10. **लेवी के याजकों ने जानवरों का बलिदान चढ़ाया, राजकीय याजकों को अपने स्वयं को चढ़ाना है क्या फर्क हैं?**

च. सिद्धान्त 14 : : भविष्यवाणी से सावधान रहें

ये सिद्धान्त ये जानता है कि बाइबल भविष्य की घटनाओं के बारे में बताती है। बाइबल ये भी स्पष्टता से बताती हैं कि सच्ची भविष्यवाणी उन पुरुषों से आती है जो परमेश्वर की आत्मा के चलाये चलते हैं, और धर्मशास्त्र की "कोई भी भविष्यवाणी अपने स्वयं की व्याख्या" नहीं है (2 पतरस 1:19–21) भविष्यवाणी के अनुवाद में बहुत से मूल प्रयास किये गये हैं और दुःख की बात है कि बहुत सी धोखेबाजी है। ये अच्छी तरह से जाना जाता है कि झूठे प्रचारक अक्सर भविष्यवाणी के मूल अनुवाद को इस्तेमाल करते हैं कि नये मसीही जीते जा सकें। यह याद रखें कि यीशु मसीह के विश्वासी होकर हम सब याजक हैं। कोई भी जो मूल – नया अनुवाद लाता है उससे सावधान रहें – उनसे भी सावधान रहें जो आपको चाहते कि उनके नये अनुवाद पर विश्वास करें जिससे कि आप उनके झुण्ड में स्वीकार किये जाओ।

भविष्यवाणी का अनुवादक वास्तव में एक बड़ी तस्वीर को साथ रखता है जो कई हज़ार टुकड़ों में कटे हुए हैं (लगभग भविष्यवाणी के लिये 10,000 पद होंगे)। जब तस्वीर पूरी हो जाती है, हमें मसीह के चेहरे को देखना है जो इतिहास का केन्द्र है – पूर्व, वर्तमान और भविष्य। तस्वीर जो उभरती है – सभी जानकार तथ्यों का हिसाब रखना चाहिये और सबूत के सभी टुकड़ों को ध्यान में लेना चाहिये। ये हमारा सौभाग्य नहीं कि तथ्यों को कम करें जो तस्वीर में सही नहीं बैठते जो हम सोचते – जिन्हें हम देखने जा रहे हैं।

भविष्यवाणी के अनुवाद का अध्ययन स्वयं में एक पाठ्यक्रम हो सकता है – जैसे हमारे पूरे धर्मशास्त्र के एक चौथाई भाग भविष्यवाणी की पुस्तकें हैं। इस पाठ में हमारे अभिप्राय के लिये तीन मार्गदर्शन का अनुसरण करना हैः–

1. **निश्चय करो – यदि भविष्यद्वक्ता अनुवाद करता है**

   पहला – भविष्यद्वक्ता यदि अपना स्वयं का अनुवाद देता है जैसा मसीह ने यूहन्ना 2:19–21 में दिया – मंदिर के प्रति–हिस्सा कहता हैः

"यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि इस मंदिर को ढा दो और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। यहूदियों ने कहा, इस मंदिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं तो क्या तू इसे तीन दिन में खड़ा कर देगा? परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था"।

कुछ भविष्यवाणियां इसकी तरह अनुवाद करना आसान है। ये भी जानें कि परमेश्वर सदियों पीछे कूद सकता है बिना कुछ कहे। वह उसी पद में सदियां आगे भी जा सकता है जैसा तुलना के रूप में लूका 4:8–21 में यशायाह 61:1–2 के साथ देखा गया, जिसे यीशु ने संदर्भ में कहा और हमारे लिये अनुवाद करता है।

2. **निश्चय करो – यदि भविष्यवाणी ऐतिहासिक रूप से पूरी हो गई है**

पहले हमें निश्चय करना है कि धर्मशास्त्र के दूसरे हिस्से दी गई भविष्यवाणी के पूर्ण होने को प्रगट करें। ये हमें जानने देता है कि कौन सी भविष्यवाणियां पूरी हो गई और इस प्रकार भविष्य में होगा।

इसका सिद्धान्त का एक उदाहरण नूह का जल प्रलय जिसकी भविष्यवाणी 120 वर्ष पहले कर दी गई थी (उत्पत्ति 6:3)। धर्मशास्त्र बताता है कि ये पूरा हुआ (उत्पत्ति 7:8)। धर्मशास्त्र ये भी भविष्यवाणी करता है कि परमेश्वर यहोवा इस्राएल के वंश को पुनः इक्ट्ठा करेगा (जकर्याह 9:14, मत्ती 24:31)। ये भविष्यवाणी स्पष्ट है अभी पूरी नहीं हुई है। इसे हम ने केवल धर्मशास्त्र से पर इतिहास से भी निश्चय करते हैं।

हमें बाहरी स्रोतों को भी देखना है जैसे संसारी इतिहास की पुस्तकें, ये खोज करने कि कब कुछ भविष्यवाणी पूरी हुई हैं। याद रखें संसारिक इतिहास परमेश्वर द्वारा प्रेरित नहीं किया गया है और वह हो सकता है समय समय पर परमेश्वर के वचन से सहमत न हो, पर बाइबल विद्यार्थियों को हमेशा परमेश्वर के वचन को सही स्वीकार करना चाहिये।

याद रखें वह अनुमान मात्र अनुवाद नहीं है। अनुमान उस समय होता है जब एक भविष्यवाणी की भाषा के अर्थ की परिकल्पना करता है। यह मनुष्य के लिये बहुत आसान है कि व्यक्तिगत अनुमान को "धार्मिक शिक्षा" में बदल कर दें। फिर भी हमको यह अहसास करना चाहिये कि कुछ भविष्यवाणी की भाषा को समझा नहीं जायेगा जब तक कि सही समय न आ जाये (दानिय्येल 12:4, 8–10)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 3च

1. **पढ़ें – 2 पतरस 1:19। जब से यीशु मसीह पैदा हुआ, मर गया और भविष्यवाणी की पूर्ति के लिये पुनः जी उठा। हम भविष्यवाणी के वचन के विषय में क्या कह सकते हैं?**
2. **पढ़ें – 2 पतरस 1:20 – सच्ची भविष्यवाणी के विषय में क्या महत्वपूर्ण है?**
3. **पढ़ें – 2 पतरस 1:21 – किसको और कैसे सच्ची भविष्यवाणी दी गई थी?**
4. **पढ़ें – लूका 4:18–21 और यशायाह 61:1–2। यीशु ने क्या कहा जो उस समय हो रहा था?**
5. **पढ़ें – उत्पत्ति 6–8। भविष्यवाणी 6:3 में दी गई है क्या ये पूरी हुई थी?**
6. **पढ़ें – यशायाह 7:14 और मत्ती 1:18–25 क्या ये भविष्यवाणी पूरी हई थी?**
8. **पढ़ें – 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17। क्या ये भविष्यवाणी पूरी हुई है?**
9. **पढ़ें – जकर्याह 14:1–8। क्या ये भविष्यवाणी पूरी हुई है?**
10. **जो घटनाओं की तस्वीर 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17 में और जकर्याह 14:1–8 में दिखाई गई है इन घटनाओं की भिन्नता बतायें।**
11. **पढ़ें – प्रकाशितवाक्य 5:4–6 और विभिन्न गिनती के शब्दों की सूचि बना लें जो यीशु को बताने के लिये वर्णन की गई हैं।**

भाग 4

नियम 4

परमेश्वर के वचन का सही तरह से उपयोग करके मसीही जीवन जीने की खोज करो

ये नियम यीशु मसीह के सीधे वर्णन से आता है जो यूहन्ना 7:17 में पाया जाता है। यदि हम सच्चाई से परमेश्वर के वचन को "जानना" चाहते हैं तब हमें उसके वचन को "करने" की इच्छा रखनी चाहिये। ये सिद्धान्त बौद्धिक ईमानदारी की आवश्यकता परमेश्वर के वचन के अध्ययन के लिये सम्मिलित करती है। हमें अपने पक्षपाती और पूर्व नियोजित विचारों को एक तरफ रख देना चाहिये, और ईमानदारी से परमेश्वर की आत्मा से दर्शन के खोजी होना चाहिये (1 कुरिन्थियों 2:14)। इस सिद्धान्त को प्रयोग में लाकर ये व्यक्तिगत आत्मा की खोज करता है। उदाहरण के लिये, हमारे उद्देश्यों की शुद्धता का मूल्यांकन करें (2 कुरिन्थियों 13:5)।

ये हमारे लिये आसान है कि अपने व्यक्तिगत द्वेष को पकड़े रहें या अनचाहे मत बनाते रहें और तब बाइबल में उसके "सबूतों" को ढूंढ़ें। फिर भी उस पहुंच को इस्तेमाल करके हम किसी भी चीज़ को "साबित" कर सकते हैं क्योंकि ये हमें उन हिस्सों में अन्धा बना देता है जो दूसरी दिशा में ले जा सकते हैं या वे हिस्से जो हमें संतुलित बनाते हैं।

उदाहरण के लिये, एक राजा दाऊद के कार्यों को बेतशीबा के सम्बन्ध में देख सकता है, उसके सबसे विश्वासपात्र योद्धा की पत्नी थी (2 शमूएल 11)। कुछ लोग उस हिस्से को ये साबित करने के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं कि एक व्यक्ति के लिये जब वह सामर्थ या पदवी पर है तो हत्या और व्यभिचार स्वीकार्य है। एक को साधारण तरह से अगले अध्याय को पढ़ने की आवश्यकता है और इसे "दस आज्ञाओं" से तुलना करें (निर्गमन 20:1–17)। इस हत्या और व्यभिचार को निश्चित करने के लिये कि ये परमेश्वर को स्वीकार नहीं है। दाऊद को परमेश्वर की दया से उसके पश्चाताप करने से उसे फिर भी राजा बना रहने दिया (भजन 51)।

क. सिद्धान्त 15 : सही उपयोग

परमेश्वर के वचन का सही उपयोग सही अनुवाद या व्याख्या से आना है। बहुत से आवेदन हो सकते हैं पर एक ही सही अनुवाद है (किसी भी पद का) उदाहरण के लिये 1 तीमुथियुस 3:1–7 कलीसिया में के एक "निरीक्षक" की योग्यता बताता है। अनुवाद एक वास्तविक व्यक्ति के लिये है जिसे ये पद सम्भालना है। आवेदन में देखा जाता है कि "निरीक्षक" "नया विश्वासी" न हो और सूचिबद्ध योग्यता परिपक्ता की क्षमता जो सब पुरुषों के लिये कलीसिया में यही उद्देश्य होना चाहिये विशेषकर इसके अगुवों की।

परमेश्वर के वचन का सही उपयोग का अर्थ है कि एक ने सिद्धान्तों और नियमों का पालन किया है जिसे अभी हाल में सच्चे और सतर्कता से देखा गया है। एक ने परमेश्वर के ज्ञान की खोज की उस अभिप्राय से कि उसके साथ सम्बन्ध के लिये जो विश्वास और दया पर आधारित है। एक और ने यीशु मसीह की खोजा – पवित्र आत्मा की सामर्थ और सेवकाई से।

स्पष्ट सही हिस्सा एक के जीवन का मार्ग–दर्शक बन गया और चेलों ने परमेश्वर के वचन की सुसंगति को खोजा (जहां तक धर्मशास्त्र का ज्ञान उसे ले जा सकता है) एक जीवन जीने के लिये जो धार्मिक है पर कानूनियत नहीं और हर चीज़ में मसीह के व्यवहार को बताना।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये अध्याय 4, भाग 4क

1. **पढ़ें – 1 तीमुथियुस 3:1–7 और निरीक्षक की योग्यता की सूची बनाओ।**
2. **वे जो पास्टर होना चाहते हैं, उन्हें अपने आपको जांचने दें इन हर आवश्यकताओं के सम्बन्ध में।**

ख. सही उपयोग के लिये पांच चरण:

चरण 1: समझ, दुहराने और आत्मिक सिद्धान्तों के सही प्रयोग के लिये प्रार्थना करें (याकूब 1:5)।

चरण 2: जिस धर्मशास्त्र के हिस्से को किया गया है उसको सही और पूरी तौर से समझें। इसमें सम्बन्ध का अध्ययन शामिल है – उस शब्द से वाक्य, वाक्य से अनुच्छेद, अनुच्छेद से अध्याय, और अध्याय पुस्तकों में ही (2 तीमुथियुस 2:15)।

चरण 3: आत्मिक सिद्धान्त को निश्चित करो जो विशेष हिस्से के अनुवाद से आता है। एक आत्मिक सिद्धान्त सब समय के खाकों और संस्कृतियों को पार कर देता है। उदाहरण के लिये, यौन अनैतिकता (विवाह से बाहर शारीरिक सम्बन्ध)। ये सब समय के ढांचे और संस्कृति में पाप है। आत्मिक सिद्धान्त ये है कि सैक्स की अनैतिकता को दूर करें (रोमियों 13:8–10)।

चरण 4: ईमानदारी से अपने आपको जांचो कि धर्मशास्त्र के किसी सिद्धान्त का उल्लंघन तो नहीं कर रहे और अपनी गलती और सुधार के लिये अपने आपको परमेश्वर को समर्पण करो। इसमें ईमानदारी से गलती मान लेना और प्रभु को देना है (1 यूहन्ना 1:9)। और एक के विश्वास में चलने का नया होना है (कुलुस्सियों 2:6)। विद्यार्थी भजन 51 पढ़कर अच्छा करेगा और दाऊद के पश्चाताप के अंश को नोट करेगा विशेषकर उसका बेतशीबा के साथ का पाप (2 कुरिन्थियों 13:5)।

चरण 5: अनुग्रह और विश्वास में चलना। पौलुस प्रेरित हमें बताता है कि ***"जैसे तुमने मसीह यीशु को ग्रहण कर लिया है तो उसी में चलते रहो"*** (कुलुस्सियों 2:6)। हमने उसे विश्वास से अनुग्रह द्वारा ग्रहण किया है (इफिसियों 2:8–9)। इस प्रकार हमें वो क्रिया उत्पन्न करनी है जो उस अनुग्रह के अनुसार है जिससे हमने प्राप्त किया है (इफिसियों 2:10)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4, भाग 4ख

1. **पढ़ें याकूब 1:5 – ये हमें किस चीज़ के लिये प्रार्थना करने को बताता है?**
2. **पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:15 – धर्मशास्त्र को समझने और उपयोग करने के लिये क्या जरूरी है?**
3. **1 तीमुथियुस 3:1–7 के सम्बन्ध में, आप मुख्य आत्मिक सिद्धान्त को कैसे देखते हो?**
4. **जबकि एक निरीक्षक के लिये ये इन विशेषताओं की आवश्यकताएं है तो क्या किसी भी विश्वासी के लिये इच्छा नहीं है?**
5. **इन सिद्धान्तों में अपने स्वयं के जीवन का मूल्यांकन करो।**
6. **क्या ऐसे क्षेत्र हैं जहां आप प्रभु से पाप के लिये अंगीकार करना चाहते हो? यदि हां! तो करें।**
7. **क्या ऐसे क्षेत्र हैं जो आप अपने विश्वास की चाल को नया करना चाहते हैं? यदि हां! क्या इच्छुक हैं?**

ग. सही अनुवाद/व्याख्या की छः रूकावटें

परमेश्वर के वचन के सही अनुवाद में बहुत सी रूकावटें हो सकती हैं। हम उनमें से छः की जांच करेंगे जो अनुवाद में गलतियां कराती है। याद रखें कि कोई भी गलती से अछूता नहीं है। ये बुद्धिमानी है – साथ में इस चेतावनी को याद रखें जो पौलुस 1 कुरिन्थियों 10:12 में देता है, ***"इसलिये कि जो समझता है कि मैं स्थिर हूं वह चौकस रहे कि कहीं गिर ना पड़ें"।***

1. कामुकता

अनुवाद की सबसे पहली रूकावट कामुकता है। कामुकता में चलने वाली पापमय जीवन शैली है जिसे अक्सर "शारीरिक" कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 3:3)। इसका मतलब है कि विश्वासी ने पाप करना चुन लिया है "शरीर के कामों" के अनुसार ना कि पवित्र आत्मा की अगुवाई में – जिसका परिणाम गलातियों 5:19–21 में पाया जाता है। ये जीवन पाप के बिना अंगीकार किये है (1 यूहन्ना 1:9) और पश्चाताप की कमी से (2 कुरिन्थियों 12:21)।

एक जो परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है और इनमें शामिल है, "शरीर के काम, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इस प्रकार (गलातियों 5:19–21)। तब उसका अनुवाद/व्याख्या अवश्य ही गिरी हुई होगी। उदाहरण के लिये एक शिक्षक जो सैक्स की अनैतिकता में लिप्त है, वह स्पष्ट है कि उसकी प्रवृत्ति ये होगी कि उन हिस्सों को तोड़–मरोड़ दो (हटा दो) जो इस विषय पर बताते हैं।

जबकि सत्य पवित्र आत्मा के द्वारा प्रगट किया गया है (यूहन्ना 16:13) और "शारीरिक" मनुष्य ने पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई वाले जीवन की अपेक्षा शरीर में जीना चुन लिया। (भले ही थोड़े समय के लिये)। शारीरिक मनुष्य के सत्य के प्रति टूटे फूटे विचार और समझ होगी – क्योंकि वह आत्मिक नहीं है।

"शारीरिक व्यक्ति" "स्वाभाविक – मनुष्य" की तरह है (1 कुरिन्थियों 2:14) पर थोड़ा फर्क है। "स्वाभाविक व्यक्ति" अविश्वासी के लिये कहा जाता है जो ***"शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है"*** (1 कुरिन्थियों 2:14)। स्वाभाविक मुनष्य" के पास आत्मा तक पहुंच नहीं हैं जबकि "शारीरिक/कामुक" व्यक्ति एक विश्वासी जो आत्मा की संगति में नहीं है। न ही वह परमेश्वर के वचन को ठीक तरह से समझ सकता है।

2. मिथ्याभिमान / गर्व

मिथ्याभिमान शोहरत और पहचान की खोज है, ये उसमें पाई जाती है जो मनुष्यों की प्रशंसा या वाही, वाही की इच्छा रखता है। गर्व भी सीधे गलत अनुवाद की ओर ले जा सकता है। हमें नीतिवचन 16:18 में चितौनी दी गई है, ***"विनाश से पहले गर्व और ठोकर खाने से पहले घमण्ड होता है"।*** ये अनुवादक के लिये अच्छी सलाह है।

जबकि ये सत्य है कि हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन सावधानी और बुद्धिमानी से करना चाहिये, ये भी सत्य है कि हमें उसे ***"सही तरह से सम्भालना चाहिये"*** (2 तीमुथियुस 2:15)। हमारे अध्ययन का मार्गदर्शन प्रभु के लिये वा दूसरों के प्रति प्रेम से होना चाहिये (मरकुस 12:29–31), अपनी आंतरिक पहचान के लिये नहीं। कुछ "नया" सीखना जो हमारी व्यक्तिगत समझ को बढ़ाता है आत्मिक बढ़ौतरी के लिये जरूरी है। पर यदि हम परमेश्वर के वचन की खोज नई जानकारी के लिये करें कि दूसरों को प्रभावित कर सकें, तो हम व्यर्थ खोज रहे हैं क्योंकि हमारे उद्देश्य शुद्ध नहीं हैं।

हमें अपने अध्ययन के तरीके पर घमण्ड नहीं करना चाहिये जो हम सोचते सही अनुवाद की गारन्टी है, कहीं हम भूल न जायें कि परमेश्वर के वचन को समझने के लिये पवित्र आत्मा की प्रारम्भिक भूमिका है।

3. पक्षपात

तीसरी रूकावट अनुवाद के लिये पक्षपात है। पक्षपात एक प्रकार का द्वेष है जो व्यक्तिगत पसन्द पर आधारित है और ये मूलतः नकारात्मक रवैये से गद्य को तोड़–फोड़ देता हैः "मैं ऐसा कुछ नहीं चाहता"। यदि ऐसा रवैया मज़बूत है तो ये परमेश्वर के वचन को तोड़–फोड़ देगा।

दुःख की बात है, कुछ ने अपने व्यक्तिगत द्वेष को परमेश्वर के वचन से सही ठहराने का प्रयत्न किया – ऐसा भयानक रवैया जैसे जातिवाद–भले ही बाइबल स्पष्ट रूप से इसके विरुद्ध है।

> **"और तुम में से जितनों में मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है अब ना कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी क्योंकि तुम सब मसीह में एक हो और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो" (गलातियों 3:27–29)।**

यदि परमेश्वर द्वेष से भरा होता जो कोई भी अन्य जाति (गैर यहूदी) बचाया नहीं जाता।

4. सामंजस्य की कमी

जब हम परमेश्वर के वचन का अनुवाद करने का प्रयास करते हैं पर बहुत सी "आत्मिक" बातों में सुसंगति में नहीं हैं, तो हम गलत अनुवाद में डूब सकते हैं।

क. सामंजस्य के स्वयं मूल्यांकन और अंगीकार का अभ्यास

हमें 2 कुरिन्थियों 13:5 में बताया गया है, *"अपने आपको जांच कर देखो कि विश्वास में हो कि नहीं स्वयं को जांचों"।* हमें न केवल अपनी प्रतिक्रिया रखनी है पर अपने उद्देश्यों को परमेश्वर के सामने उसके स्तर पर तुलना करने के लिये। जब हम पाते हैं कि हम असफल हो गये हैं तो असफलता को परमेश्वर के संमुख रखना चाहिये और शुद्ध होना चाहिये। 1 यूहन्ना 1:9 कहता है, *"यदि हम अपने पापों को मान लें वह (परमेश्वर) हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है"।* उसकी प्रथा को करने में असफलता कामुकता की ओर ले जाती है। जो तोड़–फोड़ उत्पन्न करता है और परमेश्वर के वचन के अनुवाद में त्रुटियां पैदा करता है।

ख. सामंजस्य की प्रार्थना की प्रथाः

हमें मत्ती 7:7–8 में बताया गया है, *"मांगों तो तुम्हें दिया जायेगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा। क्योंकि हरएक जो मांगता है वह पायेगा जो ढूढ़ता है पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायेगा"।* हमें लगातार परमेश्वर के वचन को समझने और अपने में रखने के लिये प्रार्थना करना चाहिये। इस प्रथा को करने में असफल होने पर वह पिता परमेश्वर से सम्बन्ध, और संगति को तोड़ने की ओर ले जाता है – जिसके वचन को आप अनुवाद करने जा रहे हो।

ग. लगातार अध्ययन का अभ्यास

हमें 2 तीमुथियुस 2:15 में बताया गया है कि परमेश्वर के वचन को सही तरह से सम्भालना एक महत्वपूर्ण भाग

होगा। *"अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का यत्न कर जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो"।* बाइबल अध्ययन में लगातार कभी असफलता की ओर ले जायेगी कि संदर्भ के पता लगाने में कठिनाई होगी – जहां विशेष पद स्थापित है।

5. त्रुटिपूर्ण तरीके

हमारे अनुवाद करने के तरीके सही व्याख्या में रूकावट डाल सकते हैं। लेखन/गद्य के विषय में हमारा आधारभूत विश्वास अवश्य ही असर डालेगा कि जिस तरह से हम इसे समझते हैं। उदाहरण के लिये यदि हम ये विश्वास न करें कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर की प्रेरणा से नहीं है (2 तीमुथियुस 3:16–17), तो हम आश्चर्य की घटनाओं को वैज्ञानिक कारणों से ढूंढ़ने का प्रयास करेंगे। यदि हम ऐसा करते हैं तो विश्वास कीजिये कि वास्तव में समस्त बाइबल सत्य है। तब आश्चर्य कर्मों का अनुवाद इतिहास में दैविय हस्तक्षेप कहा जायेगा।

कुछ हैं जो विश्वास करते हैं कि कुछ मसीहियों को परमेश्वर के वचन के अनुवाद करने/व्याख्या करने का वरदान दिया गया है। फिर भी बाइबल कहती है कि सभी विश्वासी याजक हैं (1 पतरस 2:5,9)। याजक होकर हमारे पास परमेश्वर के सिंहासन के कमरे में जाने का अधिकार है (इब्रानियों 4:16)। जहां हमें सीधे परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा सिखाया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 2:15)।

दूसरे बाइबल के हिस्सों के अनुवाद को या तो लक्षणों से या पौराणिक बातों से तोड़–मरोड़ देते हैं जिसे वैसा ही वास्तविकता में लेना चाहिये था। लक्षणिक का मतलब है पाठ या हिस्से में बाहरी/विदेशी अर्थ को घुसेड़ देना। यदि हम नूह के जल प्रलय का दावा करें तो ये पूरे संसार की वास्तविक बढ़ौतरी नहीं थी, पर इसके बदले एक पीड़ामय तस्वीर जिसे मानव जाति को मानना है, तब हम लक्षणिक अनुवाद के दोषी हैं।

पौराणिक कथाओं में वे बातें जो कहीं जातीं उनमें सच थोड़ा सा और बढ़ी चढ़ी बातें अधिक होती है। यदि आप नूह के जल प्रलय को देखें एक स्थानीय छोटी बाढ़ जो बाद में बढ़ा चढ़ाकर स्थानीय लोगों द्वारा संसार की विपत्ति बता दी तो हम पौराणिक कथा के रूप में अनुवाद करेंगे। एक कह सकता है कि पौराणिक कथाओं में थोड़ा सच होता है जो बहुत से झूठ से घिरा रहता है।

कुछ तो और आगे बढ़ जाते कि वे यीशु मसीह की व्याख्या/अनुवाद में लक्षणमय और पौराणिक दोनों को मिला देते हैं, क्रूस और पुनरुत्थान। यदि ऐसे अनुवाद सही हैं तो यीशु वास्तव में हमारे पापों के लिये नहीं मरा, ना ही उसे गाड़ा गया ना ही वह हमारे छुटकारे के लिये पुनः जी उठा। पौलुस प्रेरित के अनुसार–यदि घटनाएं नहीं हुई हैं तो हम गम्भीर परेशानी में हैं (1 कुरिन्थियों 15)।

एक शुद्ध वास्तविक तरीका जिसमें कोई अलंकार नहीं है यह भी अनुवाद में बाधा डाल सकता है। उदाहरण के लिये – सुलैमान की पुस्तक श्रेष्ठगीत असाधारण साहित्यक कार्य है जिसका अनुवाद वास्तविकता में कोई मतलब नहीं रखता। उसके अनुसार, सही तरीका वास्तविक अनुवाद को शामिल करता जो अलंकार को पहचानता और लिखी हुई भाषा को जानता है। हम इस विषय को बाद में विस्तार से देखेंगे।

6. त्रुटिपूर्ण कारण

मानव के कारण कभी भी परमेश्वर से मेल नहीं खा सकते। यदि हम परमेश्वर को मानव ज्ञान के आधार पर समझ सकते हैं तो हम अवश्य ही कठोर हो जायेंगे हमें नीतिवचन 3:5–7 में बताया गया है, ***"तू अपनी समझ का सहारा न लेना बरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा, अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना, यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना"।*** परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास के द्वारा चलें, पर अपनी समझ के द्वारा नहीं।

हमें वायदा दिया गया है कि एक दिन हम पूरी तरह से अपने प्रभु को समझ लेंगे। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 13:12 में लिखा है, ***"अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है परन्तु उस समय आमने–सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा जैसा मैं पहचाना गया हूं"।*** धर्मशास्त्र के विषय सभी बिना उत्तर के प्रश्न जो अभी हमारे पास है एक दिन उनका उत्तर दिया जायेगा जब हम अपने प्रभु के आमने–सामने होंगे (2 कुरिन्थियों 3:18)।

प्रथम सदी के यहूदी के पास कुछ समस्याएं थीं–जब वे पूर्ण रूप से अपनी योग्यता पर निर्भर रहते थे, जिसने उनसे दुःखित भूल कराई कि उन्होंने यीशु मसीह को मसीह करके नहीं पहचानना। यीशु और फरीसियों के बीच की वार्ता को देखें जो मत्ती 22:41–46 में चर्चा की गई हैः–

"जब फरीसी इक्ट्ठा थे तो यीशु ने उनसे पूछा कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस की सन्तान है? उन्होंने उससे कहा, दाऊद की। उसने उनसे पूछा तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांव के नीचे न कर दूं, भला जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका परन्तु उस दिन से किसी को फिर उससे कुछ पूछने का हियाव न हुआ"।

यीशु ने भजन 110:1 का हवाला दिया, फरीसियों से पूछकर कि मसीह कैसे दाऊद का "पुत्र" हो सकता है और उसी समय दाऊद का प्रभु हो सकता है। उत्तर ये है कि मसीह दोनों मानव और ईश्वर है – ऐसे कारण विरोधाभास मानव कारण विरोधाभास मानव कारणों के आगे लगते हैं, क्यों सही नहीं?

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 4, भाग 4ग

1. **पढ़ें 1 कुरिन्थियों 3:3 – पौलुस कौन सी दो चीज़ों की ओर संकेत देता है जो "शारीरिक" या "वासनामय" हैं?**
2. **पढ़ें गलातियों 5:19–21। जलन और झगड़े क्या हो सकते हैं?**
3. **एक कैसे द्वेष या जलन में शामिल हो सकता है या झगड़ा – एक अनुवाद को बदलने का प्रयास कर सकता है?**
4. **पढ़ें नीतिवचन 3:5–6 और 1 कुरिन्थियों 8:1 हमें किस पर और क्यों भरोसा नहीं करना चाहिये?**
5. **क्या हम अपने अध्ययन की आदतों में अक्खड़/घमण्डी हो सकते हैं या अध्ययन के तरीकों में और इस प्रकार हम संसारिक बन जाते हैं और अपने अनुवाद में सही नहीं बैठते?**
6. **क्या हम बाइबल का अनुवाद अपनी इच्छा से करें? क्यों?**
7. **हमारे परमेश्वर के वचन के अध्ययन में क्या सबसे महत्वपूर्ण है?**
8. **पढ़ें 2 कुरिन्थियों 13:5 और 1 यूहन्ना 1:9। वे कौन सी दो चीज़ें हमारे अध्ययन में महत्वपूर्ण हैं?**
9. **पढ़ें मत्ती 7:7–8 और याकूब 1:5, हमें अपने अध्ययन में क्या खोजना चाहिये?**
10. **हमें अपने अध्ययन में क्यों लगातार होना चाहिये?**
11. **पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16–17। हमें इससे पहले कि सही अनुवाद आरम्भ करें – बाइबल के विषय में हमें क्या विश्वास करना चाहिये?**
12. **पढ़ें यशायाह 55:8–9। जब हम परमेश्वर के वचनों में मानव कारणों का प्रयोग करते तो हमें क्या याद रखना चाहिये?**
13. **पढ़ें याकूब 3:14 – वे कौन सी तीन चीज़ें हैं जो लागू करने में विफलता लाती हैं?**

घ. लागू करने में विफलता के आठ तरीके

इन आठ तरीकों का वर्णन बहुत साधारण किया गया है – पर परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी को समझने की आवश्यकता है क्योंकि हर एक में बहुत सी असफलताएं हैं ये उत्तम है कि फिर से पद के संदर्भ को अपने मार्गदर्शन के लिये देखें। आओ देखें नीतिवचन 3:5–6 जो कहता है, ***"अपनी समझ का सहारा न लेना बरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा"।***

1. **किसी भी चीज़ को लागू करने में परमेश्वर की सामर्थ और उस पर भरोसा करने में असफल होना।**
2. **बदलने वाले व्यवहार को रोकना या वे कार्य जो परमेश्वर के सत्य से संघर्ष करते हैं।**
3. **जो सिद्धान्त सही मालूम देते हैं उनकी अवज्ञा करना।**
4. **संसारिक स्तर पर उसके दबाव में डूब जाना।**
5. **परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने की कम रूचि**
6. **पाप को इस दृष्टि कोण से देखना कि ये या तो कानूनी या जिसका अस्तित्व ही नहीं है।**
7. **बुद्धिमानी के चुनाव के लिये भावनात्मक भावों को बदलना।**
8. **द्वेष, पक्षपात या आलस्य के कारण विचारों की टूट–फूट।**

अध्याय 5

परमेश्वर के व्यक्तित्व की धार्मिक शिक्षाएं

भाग 1

त्रिएकता

क. त्रिएकत्व का वर्णन

अब हम इस तथ्य को स्थापित कर चुके हैं कि सिर्फ एक ही सच्चा परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 4:35, 6:4, 1 कुरिन्थियों 8:4–6, इफिसियों 4:3–6, याकूब 2:19)। जो अपने आपको पिता, (यूहन्ना 6:27), पुत्र (यूहन्ना 1:1) और पवित्रात्मा (प्रेरितों के काम 5:3–4) के रूप में प्रकट कर चुका है, और परमेश्वर वहां से कार्य प्रारंभ करता है, जहां हमारी अपनी समझ कम होती है।

त्रिएकत्व की एक सिद्ध एवं पूर्ण परिभाषा देना अत्यंत कठिन है, क्योंकि परमेश्वर हमारी कुल समझ से अत्यंत ऊंचे पर और परे है क्योंकि वह परमेश्वर है (रोमियों 11:33)। हमारी मसीही चाल विश्वास की चाल होनी चाहिये, ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें (इब्रानियों 11:6) पर अभी हमें यह मान लेना है कि हम उसे पूरी रीति से नहीं समझते हैं। त्रिएकत्व को समझने के लिये हम अंडे का उदाहरण ले सकते हैं। एक छिलका, एक पीला भाग और एक सफेदी, तीन अलग–अलग भाग किंतु फिर भी एक अंडा।

हम इस सत्य को स्थापित करने में समर्थ हैं कि त्रिएकत्व के सदस्य तीन अलग–अलग भूमिकायें निभाते हैं। पिता योजना बनाने वाला (प्रेरितों के काम 2:23), पुत्र योजना को क्रियान्वित करने वाला (यूहन्ना 5:36) और पवित्रात्मा उस योजना को प्रकट करने वाला (16:13)। जब हम उनकी विभिन्न भूमिकाओं का अध्ययन कर रहे हैं तो हम इस त्रिएकत्व को बांटने का प्रयास न करें। पिता, पुत्र पवित्रात्मा तीनों की विशेषताएं एक दूसरे की विशेषताएं हैं और ऐसा सिर्फ परमेश्वर ही कर सकता है।

इसमें हमें कोई संदेह या समस्या नहीं होनी चाहिये। एक ऑटोमोबाइल की आंतरिक संरचना को हम नहीं समझते फिर भी इंजन स्टार्ट करके अपने गतंव्य तक पहुंचने पर हम उसकी कार्य क्षमता को समझते हैं और परमेश्वर की प्राकृति अर्थात् परमेश्वरत्व को हम उसके कामों के द्वारा देख सकते हैं (रोमियों 1:20)।

ख. प्रमाण

त्रिएकत्व के प्रमाण के रूप में हम देखते हैं कि पिता पुत्र एवं पवित्रात्मा परमेश्वर कहलाते हैं और जैसा हमने पहले देखा कि पिता, पुत्र, पवित्रात्मा वे विशेषताएं रखते हैं, जो सिर्फ परमेश्वर रख सकता है, और वे काम करते हैं, जो सिर्फ परमेश्वर कर सकता है तो यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि ये तीन वास्तव में एक है जो परमेश्वर है।

चौथे अध्याय प्रथम खण्ड में परमेश्वर के परमेश्वरत्व के विषय में कहा गया है अब हम परमेश्वर के गुणों को त्रिएकत्व के तीनों सदस्यों के गुणों के साथ देखेंगे।

यह अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग है। वचन का अध्ययन करने वाले को दो महत्वपूर्ण तथ्यों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये, प्रथम एक और सिर्फ एक ही परमेश्वर हैं और द्वितीय मैं वह नहीं हूं।

ग. परमेश्वर के दस गुण

प्रथम कोष्ठ ( ) उस संदर्भ को दिखायेगा जो पिता परमेश्वर से संबधित है, द्वितीय < > पुत्र से संबंधित और तृतीय { } पवित्रात्मा से संबंधित संदर्भों को दिखायेगा।

1. संप्रभुता

परमेश्वर संप्रभु है अर्थात् वह राजा है और उसके अनुसार कार्य करता है (दानिय्येल 4:17, 1 तीमुथियुस 1:17, भजन संहिता 47:2, 7) < प्रकाशितवाक्य 19:16, यूहन्ना 5:21> {जकर्याह 4:6, 1 पतरस 4:14, 1 कुरिन्थियों 12:11}।

संप्रभुता का अर्थ होता है एक निश्चित क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकार रखना परमेश्वर किसी भी बाह्य सीमा से नियंत्रित नहीं किया जा सकता। वह संपूर्ण सृष्टि पर सर्वोच्च अधिकारी है वह सृष्टिकर्ता है, सृष्टि नहीं (रोमियों 1:20–25)।

परमेश्वर के पास वह अधिकार है कि वह अपने कार्यक्रम या योजनाओं का स्थापित करें, अपने नियमों अपने निर्णयों को स्थापित करें। संक्षेप में वह मनचाहा कार्य कर सकता हैं, यद्यपि यह संभव है कि हम उसे आसानी से न समझ सके।

2. धार्मिकता

परमेश्वर पूर्णतः धर्मी है, अर्थात् वह हर प्रकार से सिद्ध है (यूहन्ना 17:25, 1 यूहन्ना 1:5) < यूहन्ना 2:1, लूका 1:35, इब्रानियों 7:26> {यशायाह 32:15–18, भजन संहिता 143:10, नहेम्याह 9:20} परमेश्वर प्रत्येक क्षेत्र में धार्मिकता का मापदंड है, वह नैतिक रूप से पूर्ण है। हमें मापदंड तय करने के लिये उसका अनुकरण करने की आवश्यकता है। (इफिसियों 5:1)।

3. न्यायी

परमेश्वर न्यायी है, वह न्यायी और पूर्ण धर्मी है (यशायाह 45:21, अय्यूब 37:23) < यूहन्ना 5:22,30, प्रकाशितवाक्य 19:11> {यशायाह 4:4, 28,6} परमेश्वर की धार्मिकता न्याय की मांग करती है। परमेश्वर किसी का भी पक्षपाती नहीं है (रोमियों 2:11)। वह जहां पाप है, वहां पक्षपात नहीं करता (क्योंकि पाप उसके नियम को तोड़ना है) उसके न्याय को संतुष्ट किया जाना चाहिये।

मनुष्य परमेश्वर की धार्मिकता को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसलिये उसे एक अभिषिक्त मसीहा की आवश्यकता है, जो मनुष्य के बदले प्रायश्चित बने। यीशु मसीह ने क्रूस पर मनुष्य के पापों के बदले प्रायश्चित के कार्य को पूर्ण किया और अपनी मृत्यु के द्वारा संपूर्ण जगत के पापों का मूल्य चुकाया (1 यूहन्ना 2:1–2)।

4. प्रेम

परमेश्वर प्रेम है, अर्थात् संपूर्ण एवं शर्त रहित प्रेम परमेश्वर में ही पाया जाता है (1 यूहन्ना 4:8–10, तीतुस 3:4 यूहन्ना 17:24–26) < यूहन्ना 15:9> [गलातियों 5:22]।

परमेश्वर की यह विशेषता ही यीशु मसीह को मानव जाति के उद्धार के लिये संसार में भेजे जाने का आधार बनी (यूहन्ना 3:16)। प्रेम ने ही परमेश्वर को हमारे पापों के मूल्य चुकाने के लिये क्रूस पर रखा < लूका 23:34 > और यह आत्मा के फल में पहला तत्व है, अर्थात् प्रेम {गलातियों 5:22}।

प्रेम का अर्थ है, जो उचित और सर्वोत्तम है वह लोगों के लिये करना, चाहे इसके लिये दर्द क्यों न सहना पड़े। मसीही लोगों को परमेश्वर के प्रेम का सहभागी होकर इसे दूसरों तक फैलाना है ताकि लोग परमेश्वर को जान सकें (यूहन्ना 13:34–35)।

5. अनंत जीवन

परमेश्वर अनन्त जीवन है। वह हमेशा से रहा है और हमेशा तक रहेगा (यशायाह 57:15) < यूहन्ना 8:54, 1 यूहन्ना 5:11–12, मीका 5:2, प्रकाशितवाक्य 1:8,17> {इब्रानियों 9:14}।

अनन्त जीवन की कोई शुरुआत और अन्त नहीं है, मसीही होकर हमारे पास अनन्त जीवन है जिसकी शुरुआत की जगह है पर अन्त नहीं, परमेश्वर का अनन्त जीवन सिखाता है कि वह कभी मरने वाला नहीं है।

6. सर्वशक्तिमान

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, अर्थात्, वह कुछ भी कर पाने में सामर्थी है (मरकुस 14:36; 1 पतरस 1:5) < मत्ती 28:18, प्रकाशितवाक्य 19:6 > { 2 तीमुथियुस 1:7, रोमियों 15:13}।

उसकी सर्वशक्तिमान स्थिति का उदाहरण उसके द्वारा आकाश और पृथ्वी के बनाये जाने के द्वारा प्रकट होता है (उत्पत्ति 1:1)। हमें बताया गया है कि उसके मुंह के वचन से आकाश और उसकी सांस से आकाश के सारे गण बने (भजनसंहिता 33:6)।

7. सर्वव्यापी सभी स्थानों पर

परमेश्वर र्स्वव्यापी है अर्थात् वह सभी स्थानों पर एक ही प्रभाव से एक साथ उपस्थित होता है (नीतिवचन 15:3, 2 इतिहास 2:6) < मत्ती 18:20, 28:20 > {भजन संहिता 139:7, 16} इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर सब कुछ है, किन्तु इसका अर्थ यह है कि वह हर कहीं है यह परमेश्वर के व्यक्तिगत स्वभाव को स्पष्ट करता है।

इस विशेषता से हम ये भी देखते हैं कि परमेश्वर अलग थलग स्थानों में नहीं हैं (भजन 139:7–17), उसका ध्यान सबके लिये एक सा है – ये सत्य है कि वह हर जगह उपस्थित है इसका अर्थ है वह एक ही समय में कई स्थानों में हो सकता है।

8. सर्वज्ञानी – सब कुछ जानने वाला

परमेश्वर सर्वज्ञानी है, वह प्रत्येक बात जानता है, भूतकाल, वर्तमान, और भविष्य (भजन संहिता 139:1–6, इब्रानियों 4:13) < यूहन्ना 2:24, 25, 18,4> { मत्ती 9:4; 1 कुरिन्थियों 2:10; यशायाह 11:2}।

परमेश्वर सभी बातों की वास्तविकताओं और संभावनाओं को जानता है। वह प्रत्येक निर्णयों के प्रभाव को जानता है। उसकी अनंत योजनाओं में ये सारे तत्व शामिल है (रोमियों 8:28–30)।

9. अपरिवर्तनीय – कभी न बदलने वाला

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है अर्थात् उससे संबंधित तथ्यों में कुछ भी परिवर्तन नहीं हो सकता। (याकूब 1:17, इब्रानियों 6:17, मलाकी 3:6) < इब्रानियों 13:9 > {1 कुरिन्थियों 12:4, इफिसियों 1:13}।

परमेश्वर की यह विशेषता मानवता के लिये अत्यंत लाभप्रद है, क्योंकि परमेश्वर जो प्रतिज्ञा करता है, उसे सदैव पूरा करता है वह अपना मस्तिष्क, अपनी मनसा नहीं बदलता, जैसा उसने कहा, ***जितने मसीह यीशु में है, उन पर दंड की आज्ञा नहीं*** (रोमियों 8:1)। हम पूरी तरह आश्वस्त हैं कि वह अपनी मनसा नहीं बदलेगा। उसने उन लोगों को अनंत जीवन देने की प्रतिज्ञा की है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं जो हम जानते हैं कि वह इस सुसमाचार में कोई संशोधन या परिवर्तन नहीं करेगा (यूहन्ना 3:16)। यदि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं में कोई संशोधन करता है तो वह झूठा होगा और इस प्रकार अधर्मी होगा (इब्रानियों 6:17–18)।

इस ब्रह्मांड में सब कुछ बदल रहा है, परन्तु सिर्फ परमेश्वर ही स्थिर है। इसी कारण उस पर हमारी आशा हमारे प्राणों के लिये एक "लंगर" है (इब्रानियों 6:19)।

10. सत्य से परिपूर्ण

परमेश्वर पूर्ण सत्य है (व्यवस्थाविवरण 32:4, यूहन्ना 7:28, 17,3) < यूहन्ना 14:6, 1 यूहन्ना 5:20 > {यूहन्ना 5:7, 8, 4:6, यूहन्ना 14:17, 15–26, 16:13}।

परमेश्वर की यह विशेषता बताती है कि जो कुछ वह कहता है सब कुछ विश्वास करने के योग्य है (गिनती 23:19)। वास्तव में परमेश्वर के लिये झूठ बोलना असंभव है (तीतुस 1:2)।

सच यह है कि परमेश्वर ने अपने आपको प्रभु यीशु मसीह में प्रकट किया < यूहन्ना 14:6 > अब तक के इतिहास में सत्य किसी अवधारणा में, कथनों में या सिद्धांतों में खोजा जाता रहा है, और जो कुछ भी मनुष्य खोजता है उसकी तुलना प्रभु यीशु के वचनों से करके सत्य स्थापित किया जा सकता है < 1 तीमुथियुस 6:3 > ।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 1

1. **पहले व्यवस्थाविवरण 6:4–5 पढ़ें तब यूहन्ना 6:27, यूहन्ना 1:1 और प्रेरित 5:3–4 पढ़ें। कितने सच्चे ईश्वर हैं?**
2. **उपरोक्त वर्णन के द्वारा कौन परमेश्वर है?**
3. **पढ़ें प्रेरित 2:23 पिता की प्रारम्भिक भूमिका क्या है?**
4. **पढ़ें यूहन्ना 5:36 पुत्र की प्राथमिक भूमिका क्या है?**
5. **पढ़े यूहन्ना 16:13–14 पवित्र आत्मा की प्राथमिक भूमिका क्या है?**
6. **हम कैसे साबित करें कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सब परमेश्वर हैं?**
7. **परमेश्वर की प्रभुसत्ता के लिये नीचे दिये हिस्से पढ़ें:**

   क. पिता – दानिय्येल 4:17, 1 तीमुथियुस 1:17, और भजन 47:2,7

   ख. पुत्र – प्रकाशितवाक्य 19:16, और यूहन्ना 5:21

   ग. पवित्र आत्मा – जकर्याह 4:6, 1 पतरस 4:14 और 1 कुरिन्थियों 12:11

   क्या त्रिएकता सर्वश्रेष्ठ है?

8. परमेश्वर की धार्मिकता के लिये नीचे दिये पद पढ़ें:

क. पिता – यूहन्ना 17:25 और 1 यूहन्ना 1:5

ख. पुत्र – 1 यूहन्ना 2:1, लूका 1:35 और इब्रानियों 7:26

ग. पवित्र आत्मा – यशायाह 32:15–18; भजन 143:10 और नहेम्याह 9:20

क्या त्रिएकता एकदम धार्मिकता है?

9. परमेश्वर के न्याय के लिये नीचे दिये पदों को पढ़ें:

क. पिता – यशायाह 45:21, अय्यूब 37:23

ख. पुत्र – यूहन्ना 5:22, 30 और प्रकाशितवाक्य 19:11

ग. पवित्र आत्मा – यशायाह 4:4 और 28:6

क्या त्रिएकता धार्मिक है?

10. परमेश्वर के प्रेम के लिये नीचे दिये पदों को पढ़ें:

क. पिता – 1 यूहन्ना 4:8–10; तीतुस 3:4 और यूहन्ना 17:24–26

ख. पुत्र – यूहन्ना 15:9

ग. पवित्र आत्मा – गलातियों 5:22

क्या त्रिएकता सिद्ध प्रेम रखती है?

11. परमेश्वर के अनन्त जीवन पर नीचे दिये पद पढ़ें:

क. पिता – यशायाह 57:15

ख. पुत्र – यूहन्ना 8:54, 1 यूहन्ना 5:11–12, मीका 5:2 और प्रकाशितवाक्य 1:8, 17

ग. पवित्र आत्मा – इब्रानियों 9:14

क्या त्रिएकता के पास अनन्त जीवन है?

12. परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने के नीचे दिये पदों को पढ़ें:

क. पिता – मरकुस 14:36 और 1 पतरस 1:5

ख. पुत्र – मत्ती 28:18 और प्रकाशितवाक्य 19:6

ग. पवित्र आत्मा – 2 तीमुथियुस 1:7 और रोमियों 15:13

क्या त्रिएकता सर्वशक्तिमान है?

13. परमेश्वर के हर स्थान पर उपस्थित रहने के लिये नीचे दिये पद पढ़ें:

क. पिता – नीतिवचन 15:3 और 2 इतिहास 2:6

ख. पुत्र – मत्ती 18:20 और 28:20

ग. पवित्र आत्मा – भजन 139:7–16

क्या त्रिएकता सर्वव्यापी है?

14. परमेश्वर के सर्वज्ञता के लिये नीचे दिये गये पदों को पढ़ें:

क. पिता – भजन 139:1–6 और इब्रानियों 4:13

ख. पुत्र – यूहन्ना 2:24–25; 18:4 और मत्ती 9:4

ग. पवित्र आत्मा – 1 कुरिन्थियों 2:10–11 और यशायाह 11:2

क्या त्रिएकता सर्वज्ञाता है?

15. परमेश्वर के अपरिर्वतनीय होने के लिये नीचे दिये पद पढ़ें:

क. पिता – याकूब 1:17; इब्रानियों 6:17 और मलाकी 3:6

ख. पुत्र – इब्रानियों 13:8

ग. पवित्र आत्मा – 1 कुरिन्थियों 12:4 और इफिसियों 1:13

क्या त्रिएकता अपरिवर्तनीय है?

16. परमेश्वर की सत्यता के विषय में नीचे दिये पद पढ़ें:

क. पिता – व्यवस्थाविवरण 32:4, यूहन्ना 7:28 और 17:3

ख. पुत्र – यूहन्ना 14:6 और 1 यूहन्ना 5:20

ग. पवित्र आत्मा – 1 यूहन्ना 5:7–8; 4:6 यूहन्ना 14:17, 15:26 और 16:13

क्या त्रिएकता सच्ची है?

भाग 2

परमेश्वर के नाम

यह भाग परमेश्वर के विभिन्न नामों पर प्रकाश डालेगा जो परमेश्वर के विभिन्न वचनों में पाया जाता है। यूनानी और इब्रानी भाषा में उसके विभिन्न नाम उसके विभिन्न गुणों और विशेषताओं को बताते हैं।

कुछ अनुवादों में इब्रानी और यूनानी शब्द नई भाषा में बदल दिये गये हैं – उनके उपचार के आधार पर समझने में बिना सहायता के – ये अध्ययन विद्यार्थियों की इब्रानी, यूनानी और अनुवाद किया गया मूल शीर्षक बताता है।

क. इब्रानी नाम

1. परमेश्वर

इब्रानी शब्द एलोहीम सर्व प्रथम उत्पत्ति 1:1 में और पुराने नियम में 2,500 से अधिक स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है। एलोहीम शब्द परमेश्वर के संपूर्ण परमेश्वरत्व को दर्शाता है कई बार पिता, पुत्र और पवित्रात्मा को दर्शाने के लिये भी इस शब्द का इस्तेमाल होता है, क्योंकि यह शब्द परमेश्वर के त्रिएकत्व को प्रकट करता है।

एलोहीम बहुवचन है (अर्थात् एक से अधिक) बाइबल के वर्णन से उसे महामहिमन का बहुवचन मानते हैं यह उसकी असीमित महानता को प्रकट करता है यद्यपि इसे बहुवचन के रूप में सुझाया जाता है किन्तु इसका प्रयोग एक वचन में ही किया जाता है क्योंकि यह स्वयं सिद्ध है कि सिर्फ एक ही सिर्फ एक ही परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 6:5)।

क. सर्वशक्तिमान परमेश्वर

गॉड आलमाइटी शब्द एल शदाई का अनुवाद है एल शब्द एलोहीम का संक्षिप्त रूप है। यह हमेशा परमेश्वर के अपने लोगों पर आशीष उंडेलने वाले स्वरूप को दर्शाता है। यह निम्नांकित पदों में पाया जाता है : उत्पत्ति 17:1, 28:3, 35:11, 43:14, 48:3, 49:25, निर्गमन 6:3, गिनती 24:4, 16; रूत 1:20, 21; अय्यूब 5:17, 6:4, 14, 8:3,5; 11:7, 13:3, 15:25, 21:15, 20, 22:3,17 23,25, 26; 23:16, 24:1, 27:2, 10, 11, 13; 29:5, 31:2, 35, 32:8, 33:4, 34:10,12 35:13, 37:23; 40:2; भजन 68:14, 91:1; यशायाह 13:6, यहेजकेल 1:24, 10:5 योएल 1:15

ख. परम प्रधान परमेश्वर

परम प्रधान परमेश्वर शब्द एल इलयोन शब्द से रूपांतरित हुआ है, जो सार तत्वों पर उसकी प्रधानता को प्रकट करता है। यह पाया जाता है:– उत्पत्ति 14:18, 19, 20,22,40:17; गिनती 24:16, व्यवस्थाविवरण 26:19, 28:1, 32:8; यहोशू 16:5, 2 शमूएल 22:14; 1 राजा 9:8; 2 राजा 15:35, 18:17, 1 इतिहास 7:24, 2 इतिहास 7:21, 8:5, 23:20, 27:3, 32:30; नहेम्याह 3:25, भजन संहिता 7:17, 9:2, 18:13, 21:7, 46:4, 47:2, 50:14, 57:2, 73:11, 77:10, 78:17, 35; 56; 82:6; 83:18, 87:5, 89:27, 91:1, 9; 92:1, 97:9; 107:11; यशायाह 7:3, 14:14, 36:2, यिर्मयाह 20:2; 36:10, विलापगीत 3:35; 38; यहेजकेल 9:2; 41:7;42:5।

ग. अनंतकालीन परमेश्वर

अनंतकालीन परमेश्वर के लिये एल ओलाम शब्द इब्रानी में प्रयुक्त हुआ है। ओलाम शब्द का अर्थ होता है न जिसका प्रारम्भ है और न ही अंत। जो अनंत है यह शब्द बाइबल में उत्पत्ति 21:33; यशायाह 40:28 में पाया जाता है और अनंतकाल के लिये शब्द प्रयुक्त हुआ है।

2. प्रभु

यहोवा शब्द प्रभु के रूप में अनुवादित हुआ है और बड़े अक्षरों से लिखा गया अन्य शब्दों से अलग दिखाई पड़ता है। जो यहोवा भी लिखा जाता है परमेश्वर का नाम इब्रानी भाषा में यहोवा लिखा जाता है।

यहोवा परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम है (निर्गमन 3:14) याहवेह नाम 5,300 बार पुराने नियम में आया है यह शब्द उसके आत्म सचेतन स्वरूप को दर्शाता है। प्रभु शब्द का पहली बार प्रयोग उत्पत्ति 2:4 में हुआ है, जहां एलोहीम शब्द के साथ यह प्रयुक्त हुआ है।

परमेश्वर का यह व्यक्तिगत नाम इस्राएल में इतना पवित्र माना गया है कि वे इस नाम का उच्चारण नहीं करते थे, बल्कि इसके स्थान पर उन्होंने एडोनाई शब्द का प्रयोग किया, यह बाबुल वासियों के काल (586–516) का विवरण है। छठवीं और सातवीं सदी में एडोनाई शब्द याह शब्द के साथ लिखा जाता था, ताकि याह अडोनाई पढ़ा जाये।

क. यहोवा प्रबंध करेगा

यहोवा प्रबंध करेगा का अनुवाद था यहोवा यिरै, उत्पत्ति 22:14 में इस शब्द का प्रयोग हुआ जब परमेश्वर के एक मेढ़े का प्रबंध अब्राहम के लिये किया ताकि वह उसे अपने पुत्र इसहाक के बदले बलि चढ़ा सके।

ख. यहोवा मेरा जय का झंडा है

यहोवा मेरा जय का झंडा है शब्द यहोवा निस्सी शब्द का अनुवाद है, जो निर्गमन 17:15 में पाया जाता है, जो नाम मूसा ने अमालेकियों पर जयवंत होने पर परमेश्वर का रखा था और इस हेतु एक वेदी भी बनाई थी।

ग. यहोवा शान्ति है

यहोवा शान्ति है यहोवा शालोम का अनुवाद है जो न्यायियों 6:24 में पाया जाता है।

घ. सेनाओं का यहोवा

सेनाओं का यहोवा शब्द याहवेह सब्बतोत एक सैनय शब्द है जिसका अर्थ है परमेश्वर सारी सेनाओं के ऊपर आदेशाधिकारी है अर्थात् स्वर्गदूतों और संपूर्ण इस्राएल के सेनाओं के ऊपर वह अधिकारी है। यह शब्द सर्वप्रथम 1 शमूएल 1:3 में प्रयुक्त हुआ है और इसके बाद सौ से अधिक बार।

3. प्रभु, स्वामी, मालिक

एडोनाई भी एलोहीम जैसा बहुवचन शब्द है, जो परमेश्वर की महिमा को प्रकट करता है एडोनाई की महिमा को प्रकट करता है। एडोनाई शब्द का एकवचन एडोन है जिसका अर्थ प्रभु अर्थात् स्वामी, मालिक। यह अधिकार को प्रकट करने के लिये इस्तेमाल होता है। उत्पत्ति 18:3 में सर्वप्रथम यह शब्द अब्राहम द्वारा परमेश्वर को पुकारने में प्रयुक्त किया गया। यूनानी में यह शब्द कुरिओस शब्द का समानार्थी है।

ख. यूनानी नाम

1. परमेश्वर

परमेश्वर के लिये यूनानी में शब्द है थियोस जैसे इब्रानी में एलोहीम जो परमेश्वर के संपूर्ण परमेश्वरत्व को प्रकट करता है, वैसे ही थियोस शब्द यूनानी में प्रयुक्त होता है परमेश्वरत्व को व्यक्त करने के लिये।

यूहन्ना 1:1; उत्पत्ति 1:1 में समानता रखता है हम देखते हैं कि थियोस शब्द एलोहीम के लिये प्रयुक्त हुआ है जो दोनों के मध्य घनिष्ठता का सूचक है।

2. प्रभु

यूनानी भाषा में प्रभु के लिये कुरिओस शब्द आया है। यह 700 से अधिक बार नये नियम में प्रयुक्त हुआ है, जो अधिकार और सर्वोच्चता को दर्शाता है, यह शब्द आदर देने के लिये भी प्रयुक्त हो सकता है। पिछले बिंदु में हमने देखा कि थियोस और एलोहीम दोनों समानार्थी है, अब हम देखेंगे कि कुरिओस और याहवेह दोनों एक सा अर्थ रखते हैं। मरकुस 11:9 में लेखाक भजन 118:26 का जिक्र करता है, जहां लिखा है, ***धन्य है वो जो प्रभु के नाम से आता है।*** इब्रानी में भजन संहिता 118 में याहवेद शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो यूनानी अनुवाद में कुरिओस लिखा गया।

3. स्वामी

स्वामी शब्द डेसपोटस का अनुवाद है। और कभी–कभी यह प्रभु के लिये भी प्रयुक्त होता है (लूका 2:29, प्रेरितों के काम 4:24 में स्वामी शब्द मालिकाना हक को दर्शाता है जबकि कुरिओस शब्द अधिकार और सर्वोच्चता को दर्शाता है जो 1 तीमुथियुस 6:1, 2:2, 2 तीमुथियुस 2:21, तीतुस 2:9, 1 पतरस 2:18, 2 पतरस 2:1, यहूदा 1:4, प्रकाशितवाक्य 6:10।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 2

1. परमेश्वर के लिये दिये गये इब्रानी नाम सही इब्रानी नाम में लगाओः

क.	परमेश्वर	1)	यहावे सब्बोत
ख.	सर्वशक्तिमान परमेश्वर	2)	यहोवा निस्सी
ग.	सर्वोच्च परमेश्वर	3)	एलोहीम

घ.	अनन्त परमेश्वर	4)	एदोनोई
ङ.	प्रभु	5)	एल शेदाई
च.	प्रभु प्रबन्ध करेगा	6)	यहोवा शालोम
छ.	प्रभु मेरा झन्डा है	7)	एल ओलाम
ज.	प्रभु शान्ति है	8)	एल एलीओन
झ.	सेनाओं का यहोवा	9)	यहोवा
ञ.	प्रभु, स्वामी, मालिक	10)	यहोवा यिरह

2. यूनानी में परमेश्वर के नाम को सही यूनानी शब्द में मिलाओः

क.	परमेश्वर	1)	कुरिओस
ख.	प्रभु	2)	डेस्पोटीस
ग.	स्वामी	3)	थियोज़

भाग 3
परमेश्वर पिता (पैटरियोलॉजी)

क. उसका व्यक्तित्व

पिता का अध्ययन हम सर्वोत्तम रूप में कर सकते हैं यदि हम उसके ही वाक्यों का अध्ययन करें, जो उसने अपने विषय कहे। त्रिएकता वाले अध्याय में हमने देखा था कि पिता, पुत्र और पवित्रात्मा तीनों एक से गुण रखते हैं। अब हम देखेंगे कि बाइबल हमारे स्वर्गीय पिता के विषय क्या सिखाती है।

कृपया इस बात का ध्यान रखें कि जहां पिता, पुत्र एवं पवित्रात्मा के मध्य अंतर है, वहीं सिर्फ एक ही परमेश्वर है। कई बार पवित्र शास्त्र में यह समझना काफी कठिन हो जाता है कि अमुक संदर्भ त्रिएकता के किस व्यक्तित्व की बात करता है हमें यह कठिनाई स्वीकार है, क्योंकि परमेश्वर बांटा नहीं जा सकता। परमेश्वर पिता के व्यक्तित्व को समझने के लिये हमें बाइबल के कुछ शब्दों एवं भागों को चुनना होगा, जो हमारी परमेश्वर से संबंधित को बढ़ायेंगे।

कई बार मेरा शब्द आया है जो यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का अपना एक स्पष्ट व्यक्तित्व है। कई बार पिता के साथ तेरा या उसका शब्द प्रभुत्व हुआ जो परमेश्वर का मनुष्य से व्यक्तित्व संबंध का सूचक है। जहां, हमारा तुम्हारा, उनका शब्द आया है, वहां उसके समूह के साथ के रिश्ते को दर्शाया गया है।

ख. परमेश्वर पिता व्यक्तित्व को निम्नांकित रूपों में वर्णित किया जा सकता है –

- **सर्वशक्तिमान** जो उसकी सामर्थ और आशीषित करने के अधिकार को दर्शाता है। उत्पत्ति 49:25, गिनती 24:4, 16 रूत 1:20,21, अय्यूब 5:17, 6:4, 14, 8:3,5, 11:7, 13:3, 15:25, 21:15, 20, 22:3, 17, 23, 25, 26, 26:23, 16, 24:1, 27:2, 10, 11, 13, 29:5, 31:2, 35; 32:8, 33:4, 34:10, 12, 35:13, 37:23, 40:2; भजन संहिता 68:14, 91:1, यशायाह 13:6, यहेजकेल 1:24; योएल 1:15, प्रकाशितवाक्य 1:8।
- **अतिप्राचीन** यह शब्द उसके शाश्वत या अनंतकालीन स्वभाव को दर्शाता है, दानिय्येल 7:9, 13:22।
- **सनातन परमेश्वर** शब्द भी उसके अनंतकालीन स्वभाव को दर्शाता है (उत्पत्ति 21:33; यशायाह 40:28)।
- **विश्वस्त परमेश्वर** शब्द उसके अपरिवर्तनीय प्रेमपूर्ण स्वभाव को दर्शाता है (व्यवस्थाविवरण 7:9)।
- **महिमा का पिता** शब्द यह दर्शाता है कि सारी महिमा का स्रोत सिर्फ परमेश्वर ही है (इफिसियों 1:17)।
- **दया का पिता** शब्द उसके निःस्तुल्य अनुग्रह को दर्शाता है (2 कुरिन्थियों 1:3)।
- **परम प्रधान परमेश्वर** शब्द उसके संपूर्ण ब्रह्मांड पर सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है (उत्पत्ति 14:18, 19,20,22; भजन संहिता 57:2, 78:35, इब्रानियों 7:1।
- **सच्चा और कुटिलता रहित ईश्वर** शब्द यह प्रकट करता है कि वह कभी भी कोई गलती नहीं करता (व्यवस्थाविवरण 32:4)।
- **महिमा का परमेश्वर** उसके महिमामयी स्वभाव को दर्शाता है (भजन संहिता 29:3; प्रेरितों के काम 7:2)।
- **ईश्वरों का परमेश्वर** शब्द उसके सभी ईश्वर कहलाने वालों के ऊपर प्रधानता को दर्शाता है (व्यवस्थाविवरण 10:17, भजन संहिता 136:2; दानिय्येल 2:47; दानिय्येल 11:36)।
- **शान्ति का परमेश्वर** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर संघर्ष या विवाद पसंद नहीं करता। रोमियों 15:33, 16:20; फिलिप्पियों 4:9, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, इब्रानियों 13:20)।
- **जीवितों का परमेश्वर** शब्द उसके शाश्वत स्वभाव को दर्शाता है (मत्ती 22:32; मरकुस 12:27; लूका 20:38)।
- **ऊपर रहने वाला परमेश्वर** शब्द उसके सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है, जो आदर के योग्य है (मीका 6:6)।
- **सत्यवादी ईश्वर** शब्द यह दर्शाता है कि वही सत्य को परिभाषित कर सकता है (भजन संहिता 31:5; यशायाह 65:16)।
- **महान और भययोग्य परमेश्वर** शब्द परमेश्वर की महिमा और महानता को दर्शाता है (व्यवस्थाविवरण 7:21; नहेम्याह 1:5; दानिय्येल 9:4)।
- **महान और पराक्रमी परमेश्वर** यह उसके महिमामयी स्वरूप और सामर्थ को दर्शाता है (यिर्मयाह 32:18; नहेम्याह 9:32)।

- **देवताओं के ऊपर महान राजा** शब्द मनुष्यों के सारे ईश्वरों के ऊपर परमेश्वर की सर्वोच्चता को दर्शाता है (भजन संहिता 95:3)।
- वह **जिसका भय माना जाये** शब्द उसके सम्मानजनक स्थिति को दर्शाता है (भजन संहिता 76:11)।
- **पवित्र** शब्द परमेश्वर के सिद्ध धर्मी होने को दर्शाता है जो अतुलनीय है (2 राजा 19:22; अय्यूब 6:10; भजन संहिता 22:3 भजन संहिता 71:22; 78:41; 89:18; नीतिवचन 9:10; 30:3; यशायाह 1:41; 5:19, 24; 10:17, 20; 12:6; 17:7; 29:19, 23; 30:11—12, 15; 31:1; 37:23; 40:25; 41:14, 16, 20; 43:3, 14—15; 45:11; 47:4; 48:17; 49:7; 54:5; 55:5; 60:9, 14; यिर्मयाह 50:29; 51:5; यहेजकेल 39:7; होशे 11:9; 11:12; हबक्कूक 1:12; 3:3; 1 यूहन्ना 2:20।
- **जलनशील** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को दूसरे ईश्वरों को देना नहीं चाहता (निर्गमन 34:14)।
- **जल उठने वाला एवं बदला लेने वाला** शब्द यह दर्शाता है कि वह उन लोगों से बदला लेगा, जो उसके लोगों को चुरा लेते हैं या अपनी ओर खींचा लेते हैं (नहूम 1:2)।
- **महिमा का राजा प्रतापी राजा** शब्द उसके सर्वोच्च सर्वाधिकार संपन्न पद को दर्शाता है (भजन संहिता 24:7,8,9,10)।
- **जीविता और सच्चा परमेश्वर** शब्द उसके अनंतकालीन और वास्तविक स्वभाव को दर्शाता है। (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।
- **प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान** शब्द उसकी सत्ता (प्रभु) प्रकृति (परमेश्वर) और शक्ति एवं सामर्थ (सर्वशक्तिमान) को दर्शाता है। प्रकाशित वाक्य 4:8, 11:17, 15:3, 16:7 19:6, 21:22)।
- **शांति शालोम** शब्द परमेश्वर की सिद्ध आंतरिक स्थिति को दर्शाता है (न्यायियों 6:24)।
- **परम प्रधान यहोवा** शब्द यह दर्शाता है कि जितनी भी चीज़ें अस्तित्व में हैं, उन सब पर वह सर्वोच्च अधिकार रखता है (भजन संहिता 7:17, 47:2)।
- **प्रभु हमारा परमेश्वर** शब्द उसके मनुष्य से व्यक्तिगत संबंधों की प्रकृति को दर्शाते हैं उसके अधिका के व्यक्तिगत स्वरूप को दर्शाते हैं (भजन संहिता 90:17, दानियेल 9:9, 15, मरहुस 12:29, प्रेरितों के काम 2:39)।
- **प्रेम** शब्द उसके स्वभाव में निहित समर्पण को दर्शाता है (1 यूहन्ना 4:8, 16)।
- **करूणा** शब्द उसके स्वभाव में निहित निष्ठापूर्ण प्रेम को दर्शाता है (निर्गमन 34:6,7; व्यवस्था विवरण 5:10, 7:9, 12; 1 राजा 8:23, 1 इतिहास 16:34, 2 इतिहास 6:14, एज्रा 3:11, नहेम्याह 1:5, 9:17, अय्यूब 37:13, भजन संहिता 6:4, 13:5, 26:3, 31:16, 32:10, 36:5,7, 63,3,89:2, 14, 103:8, 11, 136:1,2, 28, 138:8; विलापगीत 3:22,32, योएल 2:13)।
- **प्रतापमय महिमा** शब्द उसके अद्भुत स्वभाव को प्रकट करता है (2 पतरस 1:17)।
- **स्वर्ग में महामहिमन** उसके सर्वाधिकारी सर्वोच्च अधिकारी होने को दर्शाता है (इब्रानियों 1:3, 8:1)।
- **महाप्रतापी यहोवा** उसके सामर्थ की अद्भुत प्रकृति को दिखाता है (यशायाह 33:21)।
- **परम प्रधान** शब्द उसकी समस्त वस्तुओं पर प्रधानता को सरल रूप में व्यक्त करता है (गिनती 24:16, व्यवस्था विवरण 32:8, 2 शमूएल 22:14, भजन संहिता 7:17, 9:2, 18:13, 21:7, 46:4, 47:2, 50:14, 57:2, 73:11, 77:10, 78:17, 35, 56, 82:6, 83:18, 87:5, 91:19, 92:1, 97:9, 107:11, यशायाह 14:14, विलापगीत 3:35, 38 दानियेल 3:26, 4:2, 17, 24, 25, 32, 34, 5:18—21, 7:8, 22, 25, 27, होशे 7:16, 11:7, मरकुस 5:7, लूका 1:32, 35, 76:6, 35, 8:28, प्रेरितों के काम 7:48, 16:17 इब्रानियों 7:1)।
- **मेरा गीत** शब्द परमेश्वर की व्यक्तियों से घनिष्टता को दर्शाता है (निर्गमन 15:2, भजन संहिता 18:14, 119:54, यशायाह 12:2)।
- **एक ही परमेश्वर अद्वैत परमेश्वर** शब्द परमेश्वर के अद्भूत अद्वैतता को दर्शाता है (यूहन्ना 5:44, 1 तीमुथियुस 1:17, यहूदा 1:25)।
- **अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर** शब्द उसकी बुद्धि की अतुलनीयता को दर्शाता है (रोमियों 16:27)।
- **सिद्ध अर्थात् परमेश्वर** में कोई पाप या दोष नहीं है (मत्ती 5:48)।
- **सच्चा परमेश्वर** सत्य परमेश्वर अर्थात् परमेश्वर ने ही मनुष्यों को बनाया है मनुष्यों ने परमेश्वर को नहीं (2 इतिहास 15:3, यिर्मयाह 10:10, 1 यूहन्ना 5:20)।

ग. पिता की भूमिका

आकाश और पृथ्वी बनाने के पूर्व परमेश्वर पिता ने जो योजनाएं त्रिएकत्व में होकर बनाई थी, वे ही उसके पितृत्व को सिद्ध करती है (इफिसियों 1:11, 3:11)।

घ. **पिता की भूमिका निम्नांकित रूपों में व्यक्त की गई है**

- **रचने और बनाने वाला शिल्पकार** शब्द परमेश्वर की उस योग्यता को दर्शाता है जिसके अनुसार वह एक ऐसा ढांचा निर्मित कर सकता है, जो आंतरिक और बाह्य दबावों को झेल सकता है, और इस ढांचे के प्रत्येक भाग को सही ढंग से जोड़कर रखना जानता है (इब्रानियों 11:10)।
- **बनाने वाला** शब्द उसकी किसी योजना को वास्तविकता में बदलने की योग्यता को प्रकट करता है (इब्रानियों 3:4; 11:10)।
- **अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर** शब्द उसकी मानव जाति के प्रति सहनशीलता को दर्शाता है (निर्गमन 34:6)।
- **दीनों के लिये गढ़** और **दरिद्रों के लिये शरण** शब्द यह दर्शाता है कि वह शक्तिशालियों द्वारा शक्तिहीनों को सताया, जाना या दबाया जाना पसंद नहीं करता है (यशायाह 25:4)।
- **सदा का राजा** शब्द उसकी अनंतकालीन संप्रभुता को दर्शाता है (यिर्मयाह 10:10)।
- **ज्योतियों का पिता** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर ही उस दान का देने वाला है, जिससे जगत में उजियाला किया जाता है (याकूब 1:17)।
- **दया का पिता** शब्द उसकी सृष्टि के प्रति दयालुता को दर्शाता है (2 कुरिन्थियों 1:3)।
- **आत्माओं का पिता** शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं उन्हें वह आत्मिक जीवन का दान देता है (इब्रानियों 12:9)।
- **अनाथों का पिता** शब्द उसकी अनाथों के प्रति सहानुभूति को दर्शाता है (भजन संहिता 68:5)।
- **क्षमा का परमेश्वर** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर मानव – जाति को उसके पापों से बचाने की इच्छा रखता है (नहेम्याह 9:17, भजन संहिता 99:8)।
- **जीवन के पानी का स्रोत** अर्थात् परमेश्वर ही है जो अनंत जीवन देता है और उसके लिये हमें संभालता है (यिर्मयाह 2:13, 17:13)।
- **किसान** शब्द यह प्रकट करता है कि परमेश्वर ही आत्मिक फलों का उत्पन्न करने वाला है (यूहन्ना 15:1)।
- **इस्राएल की महिमा** शब्द परमेश्वर की इस्राएल के प्रति विश्वास योग्यता एवं स्थायी संबंध को दर्शाता है (1 शमूएल 15:29, मीका 1:15)।
- **हमारे प्रभु यीशु मसीह** का परमेश्वर पिता शब्द यीशु मसीह के देह के दैवीय सृजन को प्रकट करता है (रोमियों 15:6, 2 कुरिन्थियों 1:3, इफिसियों 1:3।
- **परमेश्वर मेरी चट्टान** शब्द उस स्थायित्व को दर्शाता है जो वह अपने विश्वासियों को प्रदान करता है (भजन संहिता 42:9)।
- **अब्राहम, इसहाक एवं याकूब का परमेश्वर** शब्द अब्राहम की वाचा में परमेश्वर के भाग को दर्शाता है (निर्गमन 3:16; प्रेरितों के काम 3:13, 7:32)।
- **सब प्रकार की शांति का परमेश्वर** शब्द उस सहायता को दर्शाता है जो वह संकट के समय प्रदान करता है (2 कुरिन्थियों 1:3)।
- **सब प्राणियों का परमेश्वर** शब्द उसके सभी मानव प्राणियों के सृष्टिकर्ता होने को दर्शाता है (यिर्मयाह 32:37)।
- **आशा का परमेश्वर** शब्द हमारे उस विश्वास को प्रकट करता है जो हम उसकी उन योजनाओं पर जो हमारे भविष्य के लिये बनाता है, रखते हैं (रोमियों 15:13)।
- **प्रेम और शांति का परमेश्वर** शब्द प्रकट करता है कि परमेश्वर संघर्ष एवं विवाद को समाप्त कर सुलह करने की इच्छा रखता है (2 कुरिन्थियों 13:11)।
- **मेरे उद्धार का परमेश्वर मेरा मुक्तिदाता परमेश्वर** शब्द उद्धार के व्यक्तिगत स्वरूप को दर्शाता है, जो परमेश्वर मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से प्रदान करता है। जो परमेश्वर मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से प्रदान करता है (भजन संहिता 18:46, 25:5, 27:9, 51:14, 88:1, मीका 7:7, हबक्कूक 3:19, लूका 1:47)।
- **परमेश्वर मेरा बल** शब्द परमेश्वर की उस सहायता को दर्शाता है,जो परमेश्वर मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से प्रदान करता है, भजन संहिता 43:2)।
- **बदला लेने वाला परमेश्वर** शब्द इस सत्यता को प्रकट करता है कि परमेश्वर अधर्मियों को उनके कार्य का बदला देगा (यिर्मयाह 51:56)।

- **सारे प्राणियों की आत्मा का परमेश्वर** शब्द परमेश्वर के जीवन को संभालने की सामर्थ को प्रकट करता है (गिनती 26:16)।
- **हमारा पिता परमेश्वर** शब्द परमेश्वर के साथ विश्वासियों के व्यक्तिगत संबंध को दर्शाता है। रोमियों 1:7, 1 कुरि. 1:3, 2 कुरिन्थियों 1:2, गलातियों 1:3, इफिसियों, 1:2, फिलिप्पियों 1:2, कुलुस्सियों 1:2, 2 थिस्सलुनीकियों 1:1, 2:16, फिलेमोने 1:3, याकूब 1:27)।
- **परमेश्वर हमारा बल** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर व्यक्तिगत बल का स्रोत तो है लेकिन सामूहिक बल का भी स्रोत है (भजन संहिता 8:1:1)।
- **पृथ्वी के समस्त राज्यों का परमेश्वर** शब्द स्पष्ट करता है कि परमेश्वर मनुष्य एवं स्वर्गदूतों द्वारा स्थापित सभी सत्ताओं के ऊपर, श्रेष्ठता रखता है (2 राजा 19:15, यशायाह 37:16)।
- **पिता परमेश्वर** शब्द स्पष्ट करता है, कि वह समस्त पूर्तियों का स्रोत है। यूहन्ना 6:27, 1 कुरिन्थियों 8:6, 15:24, गलातियों 1:1, इफिसियों 5:20, 6:23, फिलिप्पियों 2:11, कुलुस्सियों 3:17, 1 थिस्सलुनीकियों 1:1, 2 थिस्सलुनीकियों 1:2, 1 तीमुथियुस 1:2, तीतुस 1:4, 1 पतरस 1:2, 2 पतरस 1:17, 2 यूहन्ना 1:3, यहूदा 1:1।
- **मेरा पलटा लेने वाला परमेश्वर** शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि जब किसी के साथ अन्याय होता है तो परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से दुखिते होता है (2 शमूएल 22:48; भजन संहिता 18:47)।
- **धीरज और शांति का दाता परमेश्वर** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर कष्टों के समय विश्वासी को संभालता है (रोमियों 15:5)।
- **दुःख देने से प्रसन्न नहीं होने वाला परमेश्वर** शब्द प्रकट करता है कि परमेश्वर एक ही सत्ता है जो किसी को दंड देने के निर्णय को बदल सकता है (योना 4:2)।
- **परमेश्वर जो देखने हारा है** शब्द मनुष्य जाति के प्रति उसके ध्यान रखने की प्रवृत्ति को दर्शाता है (उत्पत्ति 16:13)।
- **अनाथ का सहायक** शब्द उसकी सहायता को प्रकट करता है, जो वह अनाथों का प्रदान करता है (भजन संहिता 10:14)।
- **जो तुम्हें शांति देता है** शब्द उसके दुःख हरने की क्षमता को दर्शाता है (यशायाह 51:12)।
- **मनुष्य को उसके मन का विचार बताने वाला** शब्द उसके मस्तिष्क का मानवजाति के मस्तिष्क से कैसा संबंध है यह दर्शाता है (आमोस 4:13)।
- **उन सभों के हृदयों को गढ़ने वाला** शब्द उसकी मनुष्य की आंतरिक संरचना में सृजनात्मकता को प्रकट करता है (भजन संहिता 33:15)।
- **हमारी विनती और समय से कहीं अधिक कार्य करने वाला** शब्द उसकी असीमित अत्याधिक सामर्थ को प्रकट करता है (इफिसियों 3:20)।
- **जिसने मसीह को मुरदों में से जिलाया** शब्द यीशु मसीह के पुनरुत्थान की भूमिका को दर्शाता है (रोमियों 8:11)।
- **पवित्र पिता** शब्द उसके सिद्ध धर्मीपन को दर्शाता है (यूहन्ना 17:11)।
- **तुम्हारे मध्य में रहने वाला पवित्र** उसकी पवित्र उपस्थिति को दर्शाता है (होशे 11:9)।
- **तेरा पिता** शब्द परमेश्वर का अपनी सृष्टि के प्रति प्रेमपूर्ण ध्यान को प्रकट करता है (यशायाह 54:5)।
- **विधवाओं का न्यायी** शब्द यह दर्शाता है कि लोग असुरक्षित छोड़ दिये जाते हैं उनके लिये परमेश्वर चिंता करता है (भजन संहिता 68:5)।
- **समस्त पृथ्वी का न्यायी** शब्द दर्शाता है कि उसके अधिकार का क्षेत्र समस्त और विस्तृत है (उत्पत्ति 18:25)।
- **स्वर्ग का राजा** शब्द उसके सिंहासन का स्थान बताता है (दानिय्येल 4:37)।
- **जीवित पिता** शब्द उसके हमेशा वर्तमान रहने वाले स्नेह को दर्शाता है (यूहन्ना 6:57)।
- **प्रभु अर्थात् वही प्रभु है,** वही स्वामी है (लूका 2:29)।
- **प्रभु मेरा झंडा** शब्द यह दर्शाता है कि जैसे हम अपने देश के झंड़े पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वैसे ही परमेश्वर ही है जिस पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिये (निर्गमन 18:4)।
- **प्रभु मेरी चट्टान** शब्द उस स्थायित्व को दर्शाता है जो परमेश्वर अपने विश्वासियों को प्रदान करता है (भजन संहिता 19:14, 28:1, 144:1)।

- **समस्त पृथ्वी का स्वामी** शब्द स्पष्ट करता है कि पृथ्वी के समस्त भाग उसके अधिकार क्षेत्र के भीतर आते हैं (यहोशू 3:11, 13 भजन संहिता 97:5, मीका 4:13 जकर्याह 4:14)।
- **स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु** शब्द प्रकट करता है कि स्वर्ग और पृथ्वी की समस्त वस्तुएं उसके अधिकार क्षेत्र में आती है (मत्ती 11:25; लूका 10:22; प्रेरितों के काम 17:24)।
- **राजाओं का प्रभु** अर्थात् परमेश्वर पृथ्वी के समस्त राजाओं पर अधिकार रखता है (दानिय्येल 2:47)।
- **प्रभु हमारा कर्ता** स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ही मानव जाति को बनाने वाला है (भजन संहिता 95:6)।
- **प्रभु हमारी ढाल** शब्द यह दर्शाता है कि वही अपने लोगों को सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता रखता है (भजन संहिता 59:11)।
- **यहोवा जो तुम्हें चंगा करता** है शब्द रोग पर उसके अधिकार को दर्शाता है (निर्गमन 15:26)।
- **यहोवा जो तुम्हारा पवित्र करने वाला** है शब्द उसकी उस योग्यता को दर्शाता है जिसके द्वारा हमें संसार के अन्य लोगों से अलग करने की क्षमता रखता है (निर्गमन 31:13, लैव्यव्यवस्था 20:8, 22:32)।
- **दंड देने वाला परमेश्वर** शब्द उसकी उस योग्यता को दर्शाता है जिसके आधार पर वह समय–समय पर अपने लोगों को दंड भेजकर अनुशासित करता रहता है (यहेजकेल 7:9)।
- **यहोवा प्रबंध करने वाला** शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को संभालता है (उत्पत्ति 22:14)।
- **तेरा कर्ता** शब्द परमेश्वर के हाथ को दर्शाता है जो मानव जाति के सृजन में लगे हैं (यशायाह 54:5)।
- **सभी वस्तुओं को बनाने वाला** शब्द संपूर्ण वस्तुओं के निर्माण में लगे हुए उसके हाथों को प्रकट करता है (सभोपदेशक 11:5; यिर्मयाह 10:16, 51:19)।
- **स्वर्ग का स्वामी** शब्द उन लोगों के लिये आदर्श स्थापित करता है, जिनके पास अधिकार या सत्ता है (कुलुस्सियों 4:1)।
- **मेरा वकील** अर्थात् वह मेरे पक्ष में मेरी सुरक्षा के लिये खड़ा रहता है (अय्यूब 16:19)।
- **मेरा भरोसा** हमारे व्यक्तिगत विश्वास को प्रकट करता है जो हम परमेश्वर पर रखते हैं (भजन संहिता 71:5)।
- **मेरा सहायक** शब्द में व्यक्तिगत छुटकारे की आस देखते हैं (निर्गमन 18:4; भजन संहिता 27:9, 40:17, 54:4, 63:7, 70:5, 118:7, 121:1, इब्रानियों 13:6)।
- **मेरे छिपने का स्थान** शब्द से यह ज्ञात होता है कि वह अपने लोगों को व्यक्तिगत रूप से सुरक्षा प्रदान करता है (भजन संहिता 32:7)।
- **मेरी आशा** शब्द उस विश्वास को व्यक्त करती है जो हम अपने भविष्य के लिये उसकी योजनाओं पर करते हैं (भजन संहिता 25:5, 21, 39:7, 62:5, 119:74, 81, 114, 147; प्रेरितों के काम 23:6, 26:6)।
- **मेरी ज्योति** शब्द परमेश्वर के मनुष्य के साथ व्यक्तिगत निर्देशन के संबंध को दर्शाता है (भजन संहिता 27:1, मीका 7:8)।
- **संकट के समय** मेरा शरण स्थान शब्द उसके संकट के समय सहायता देने के स्वाभाव को दर्शाता है (यिर्मयाह 17:17; भजन संहिता 59:16)।
- मेरा आश्रय शब्द उसके व्यक्तिगत रीति से सहायता करने के स्वभाव को दर्शाता है (2 शमूएल 22:19, भजन संहिता 18:18)।
- **तेरे अपराधों को मिटा देने वाला** शब्द उसके व्यक्तिगत रूप से क्षमा करने के स्वाभाव को दर्शाता है (यशायाह 43:25)।
- **हमारे रहने का स्थान** शब्द दर्शाता है कि वह ही हमारा वास्तविक घर है (भजन संहिता 90:1)।
- **हमारा न्यायी** अर्थात् वह समस्त मानव जाति के ऊपर न्यायी है (1 शमूएल 24:5, यशायाह 33:22)।
- **हमारी व्यवस्था देने वाला** अर्थात् वही समस्त मानवजाति को समस्त मापदंड देने वाला परमेश्वर है (यशायाह 33:22)।
- **हमारा उद्धारकर्ता** अर्थात् उसने मानवजाति के लिये उद्धार को मोल लिया है (यशायाह 47:4, 63:16)।
- **हमारा शरण स्थान** और बल अर्थात् वह अपने लोगों को सुरक्षा और बल प्रदान करता है (भजन संहिता 46:1)।
- **स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी** शब्द बताता है कि परमेश्वर ही सभी वस्तुओं का स्वामी है, अधिकारी (उत्पत्ति 14:19,22)।

- **कुम्हार** अर्थात् वह उन्हें आकृति प्रदान करता है जो उसके हाथ में होते हैं (यशायाह 29:16, 45:9, 64:8, यिर्मयाह 18:4,6, जकर्याह 11:13, रोमियों 9:21।
- **तेरा उद्धारकर्ता** शब्द यह प्रकट करता है कि जो उद्धार का प्रबंध उसने किया है वह दूसरों के लिये है, उसके लिये नहीं (यशायाह 54:5)।
- **अपने लोगों के लिये शरणस्थान** शब्द उस सुरक्षा को दर्शाता है जो वह अपने लोगों को प्रदान करता है (योएल 3:16)।
- **आंधी से बचने के लिये शरण स्थान** शब्द उस समय की सुरक्षा को प्रकट करता है जब भयानक लोग दीनों को सताते हैं, तब परमेश्वर उन्हे प्रदान करता है (यशायाह 25:4)
- **धर्मी पिता** शब्द उसे सद्गुणी पेश करता है (यूहन्ना 17:25)।
- **धर्मी न्यायी** शब्द उसके निर्णयों की निष्पक्षता को स्पष्ट करता है (भजन संहिता 7:11, यिर्मयाह 11:20, 2 तीमुथियुस 4:8)।
- **मेरी शरण की चट्टान** शब्द उसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा के स्थायित्व को प्रकट करती है (भजन संहिता 94:22)।
- **मेरी दृढ़ चट्टान** शब्द से ज्ञात होता है कि परमेश्वर की सामर्थ पाकर व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति बलवंत होता है (भजन संहिता 62:7)।
- **मेरे उद्धार की चट्टान** हमारे उद्धार के प्रारंभ या मूल स्थान की दृढ़ता को दर्शाता है (भजन संहिता 95:1)।
- **पवित्र स्थान और शरणस्थान** शब्द दर्शाता है कि परमेश्वर ही छिपने का स्थान है (यशायाह 8:14, यहेजकेल 1:16)।
- **उद्धार का दृढ़ गढ़** शब्द बताता है कि वह हमारा शरण स्थान है (भजन संहिता 28:8)।
- **तपन से बचने के लिये छाया** स्थान यह प्रकट करता है कि जीवन में विभिन्न दबावों के समय परमेश्वर ही सहायता करता है (यशायाह 25:4)।
- **शक्ति या बल** अर्थात् परमेश्वर ही हमारा बल है और बल का स्रोत है (यशायाह 28:6)।
- **मेरे हृदय का बल** शब्द यह प्रकट करता है कि परमेश्वर ही विश्वासियों के हृदय को बल प्रदान करता है (भजन संहिता 73:26)।
- **मेरे उद्धार का बल** शब्द उस शक्ति को प्रकट करता है जो हमारे उद्धार में निहित है (भजन संहिता 104:7)।
- **पिसे हुओं के लिये ऊंचा** गढ़ शब्द बताता है कि मनुष्यों के द्वारा सताये हुए लोगों के लिये दृढ़ और ऊंचा शरण स्थान परमेश्वर ही है (भजन संहिता 9:9)।
- **संकट के समय ऊंचा गढ़** अर्थात् दबावों के समय साथ व सहारा देने वाला परमेश्वर ही है (भजन संहिता 9:9)।
- **प्राण को संभालने वाला** अर्थात् परमेश्वर ही हमें व्यक्तिगत रीति से आत्मिक सहायता प्रदान कर सकता है (भजन संहिता 54:4)।
- **शिक्षक शब्द** उसकी निर्देशन क्षमता को प्रकट करता है, जो मानव जाति को जीवन के हर क्षेत्र में देता है (अय्यूब 36:22, यशयाह 30:20)।
- **हे प्रार्थना के सुनने वाले** जो प्रार्थना का सुनने हारा है। शब्द स्पष्ट करता है कि वह सभी मनुष्यों के मन की सभी इच्छाओं को जानने वाला है (भजन संहिता 65:2)।
- **जो अपनी वाचा पूरी करता** एवं और करुणा करता है, शब्द स्पष्ट करता है कि परमेश्वर अपने प्रेम के कारण ही अपनी वाचा को पूरी करता है (1 राजा 8:23, 2 इतिहास 6:14)।
- **संकट के समय अति सहज में मिलने वाला परमेश्वर** शब्द दर्शाता है, कि जब हमें आवश्यकता होती है तब वह हमारे साथ साथ रहता है (भजन संहिता 46:1)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 3

1. **जब एक शब्द सुनाई देता (शब्द जो व्यक्ति के बारे में बताता पर उस व्यक्ति का नाम लेकर नहीं बुलाता) जैसे "मेरा", "तेरा", "उसका" ये परमेश्वर के नाम के साथ इस्तेमाल किया जाता है या शीर्षक, ये किस प्रकार के सम्बन्ध का संकेत देता है?**

2. **जब बहुवचन इस्तेमाल होता है जैसे "हमारा" या "उनका" परमेश्वर के नाम के साथ इस्तेमाल होता है या शीर्षक – ये किस प्रकार के सम्बन्ध का संकेत करता है?**

3. **भाग 2 के लिखे गये पिता के व्यक्तित्व के विषय में विभिन्न वर्णनों को लें और उसकी दैविय गुणों से नीचे सम्बन्ध जोड़ें। कुछ वर्णन एक से अधिक विशेषता को शामिल करेंगे पर इस अभ्यास में एक में ही जोड़ना जरूरी है। आप शायद उसके तत्व के गुणों को क, ख, ग, घ के चिन्ह देना चाहेंगे आदि।**

   क. संप्रभुता

   ख. धार्मिकता

   ग. न्याय

   घ. प्रेम

   ङ. अनन्त जीवन

   च. सर्वशक्तिमान

   छ. सर्वव्यापी

   ज. सर्वज्ञता

   ञ. अपरिवर्तित

   ट. सत्यवादी

4. **भाग घ के पिता की विभिन्न भूमिका को लेकर नीचे दी गई गतिविधियों के साथ जोड़ें। ये वर्णन फिर से एक से अधिक वर्ग में सम्बंधित करेंगे आप इस पुस्तक में गतिविधियों के वर्णन को क, ख, ग, घ, के रूप में चिन्ह डालना चाहें इत्यादि।**

   क. अधिकार

   ख. सृष्टिकर्ता

   ग. सामना करने वाला, बचाने वाला

   घ. उदाहरण

   ङ. देने वाला

   च. न्यायी

   छ. अगुवा

   ज. प्रेमी

   ञ. बनाने वाला और उपलब्ध कराने वाला

   ट. स्थायित्व देने वाला और सम्भाले रहने वाला

भाग 4
परमेश्वर पुत्र (क्रिस्टोलॉजी)

क. यीशु मसीह का व्यक्तित्व

यीशु मसीह जो पुत्र है, देह में परमेश्वर है, वह एक भला मनुष्य नहीं था जो परमेश्वर बना, किन्तु परमेश्वर ही मनुष्य बना (यूहन्ना 1:1, 14)। वह परमेश्वर के स्वाभाव को वास्तविक रूप में हूबहू दर्शाता है (यूहन्ना 14:8,9, इब्रानियों 1:3)।

1. यीशु का पूर्व – अस्तित्व

यीशु अपने भौतिक जन्म के पूर्व भी अस्तित्व में था हमें बताया गया है, ***कि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानतायें, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई है*** (कुलुस्सियों 1:16)। स्वयं यीशु मसीह ने यहूदियों से कहा था कि ***उसके पहले कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं*** (यूहन्ना 8:58)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार भी उसके पूर्व अस्तित्व को स्थापित करता है और प्रारंभ ही इस प्रकार करता है, ***"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई"*** (यूहन्ना 1:1–3)। उसी अध्याय में आगे यूहन्ना कहता है, और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:14)।

2. परमेश्वर – मनुष्य का सम्मिश्रण

यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही है, वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है। इस सत्य को समझना कठिन है, पर यह वास्तव में सत्य है।

अपनी क्रूस पर मृत्यु के कुछ समय पूर्व (मत्ती 22:41–46)। यीशु ने फरीसियों से एक प्रश्न पूछा, कि कैसे मसीहा दाऊद का प्रभु और उसका संतान भी हो सकता है? यह तभी संभव है जब वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य हो।

3. उसकी सिद्धता

यीशु प्रत्येक रीति से सिद्ध था। परमेश्वर के रूप में वह पूर्ण सिद्ध था किन्तु मनुष्य में उसकी सिद्धान्त पर लोग प्रश्न उठाते हैं।

रोमियों की पत्री से हम सीखते हैं कि, ***जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सबने पाप किया*** (रोमियों 5:12)। इस प्रकार एक मनुष्य आदम के पाप में गिरने के कारण पाप और मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई (रोमियों 5:13–19)। यीशु का कोई सांसरिक या जैविक पिता नहीं था बल्कि वह तो पवित्रात्मा की सामर्थ से इस संसार में उत्पन्न हुआ था, और इसलिये परमेश्वर का पुत्र कहलाया। यह इसलिये सिर्फ नहीं हुआ कि वह परमेश्वर का पुत्र कहलाये, परन्तु इसलिये भी हुआ कि पाप और मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई (रोमियों 5:13–19)। यीशु में अन्य मनुष्यों जैसी पापमयी प्रवृत्ति नहीं थी। आदम सिद्ध तो रचा गया था, किंतु बाद में वह पाप में गिर गया, जबकि यीशु सिद्ध ही उत्पन्न हुआ और कभी पाप में नहीं गिरा।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि यीशु पूर्ण सिद्ध जीवन जिया और सदैव सिद्ध रहेगा। न तो उसने पाप किया और न उसके मुंह से कोई गलत बात निकली (1 पतरस 2:22)। उसके पापरहित ईश्वरीय जीवन के कारण उसे सदा काल के लिये सिद्ध ठहराया गया (इब्रानियों 5:9, 7:28) अर्थात् वह कभी भी पाप नहीं कर सकता।

ख. यीशु मसीह की भूमिका

यीशु मसीह ने ठीक वही कार्य किया जो उसके लिये ठहराया गया था (यूहन्ना 8:28–29)। उसे पापों के लिये जो मूल्य चुकाना था, वह उसने चुकाया ताकि मानव जाति को नरक की आग से बचाया जा सके (2 कुरिन्थियों 5:21)।

1. यीशु का एक बालक के रूप में आगमन

यीशु के जन्म के विषय में पुराने नियम में यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था (यशायाह 7:14, 9:6, 11:1, 53:2) यीशु प्रतिज्ञा का स्त्री का वंश था (उत्पत्ति 3:15)।

यह भविष्यवाणी की गई थी कि बैतलेहम में उत्पन्न होगा (मीका 5:2) और वह अब्राहम का वंश होगा (उत्पत्ति 22:18, मत्ती 1:1, गलातियों 3:16) जो इसहाक (उत्पत्ति 21:12), याकूब (उत्पत्ति 35:10–12), यहूदा (उत्पत्ति 49:8–11), यिशै (यशायाह 11:1) और दाऊद (2 शमूएल 7:12–16, यिर्मयाह 23–5, भजन संहिता 132:11) के द्वारा होगा।

2. कुँवारी से उत्पन्न होना

यह परमेश्वर की योजना थी कि यीशु मसीह एक कुंवारी के द्वारा जन्म लें (यशायाह 7:14)। यद्यपि यह एक धर्म सिद्धान्त है किन्तु फिर भी यह ध्यान रखा जाये कि यीशु का जन्म अद्‌भुत रीति से हुआ।

यीशु के जन्म के पूर्व की भविष्यवाणी मरियम के द्वारा पूरी हुई (मत्ती 1:20,25)।

3. यीशु की मृत्यु

यीशु की मृत्यु ने बहुत सी बातों को पूरा किया, वह एक ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मृत्यु के योग्य था। सब जिसने पाप किया है वह सभी मृत्यु के योग्य हैं (रोमियों 3:23 एवं रोमियों 6:23)। क्योंकि हम सबने पाप किया है, इसलिये सभी मृत्यु के योग्य है यीशु मृत्यु के योग्य नहीं था क्योंकि उसने कभी कोई पाप नहीं किया, और वह धर्मी परमेश्वर के सामने हमारे पापों के दाम चुकाने के लिये खड़ा हुआ, और उसके पास यह अधिकार था कि वह अपना प्राण अपनी भेड़ों के लिये दे और उसे फिर वापस ले लें (यूहन्ना 10:15–17)।

क. यीशु का हमारे स्थान को लेना (विकल्प)

विकल्प का अर्थ है क्रूस पर जहां हमें होना था, यीशु गया उसने हमारा स्थान लिया। ***वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम अपने पापों के लिये मर के धार्मिकता के लिये जीवन बितायें, उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए*** (1 पतरस 2:24)। यीशु क्रूस पर हमारे लिये सिर्फ चढ़ा ही नहीं, बल्कि हमारे स्थान पर क्रूस पर गया, उसने हमारे श्रापों को उठा लिया। वह हमारे लिये स्रापित हुआ, और हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया (गलातियों 3:13)।

ख. छुटकारा

छुटकारों का अर्थ है कि एक व्यक्ति स्वतंत्र हो गया, क्योंकि उसके लिये किसी ने मूल्य चुका दिया। वह दासता जो पूर्व से विद्यमान एवम् अनैच्छिक थी जिससे मुक्त कराने के लिये मूल्य पहले ही चुका दिया गया हो। छुटकारा – पापों की क्षमा है, जो हमें शैतान के अधिकार से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कराता है (कुलुस्सियों 1:13–14)।

यीशु मसीह ने समस्त मानव जाति के पापों का मूल्य चुका दिया है (2 पतरस 2:1)। ताकि सभी लोग पाप और मृत्यु से छूट जायें या स्वतंत्र हो जायें (रोमियों 8:2)। यह मूल्य उसका अपना लहू था, जो उसने अपनी क्रूस की मृत्यु के समय बहाया था (प्रकाशितवाक्य 5:9–10)। क्योंकि हमारे छुटकारे का दाम दे दिया गया है, अतः हम परमेश्वर की सेवा करना, चुनने के लिये स्वतंत्र है (1 कुरिन्थियों 6:19–20)। प्रभु की सेवा हम इसलिये नहीं करते कि प्रभु पर हम अहसान करते हैं परंतु उसकी दया एवं अनुग्रह के कारण हम धन्यवादित होकर प्रभु की सेवा करते हैं। हमें चाहिये कि हम स्वेच्छा से अपने महान स्वामी के आधीन होकर उसकी सेवा करना चुन लें और इस विषय में किसी मनुष्य के मत का इंतजार न करें (1 कुरिन्थियों 7:19–23)।

यीशु मसीह में जो स्वतंत्रता हमने पाई है उसे बनाये रखने के लिये आत्मिक संघर्ष जारी है (गलातियों 5:1)। हमारी मानवीय प्रवृत्ति यह है कि हम पाप और परीक्षाओं के आधीन होकर उनके दास बन जाते हैं और अविश्वासियों जैसा व्यवहार करने लगते हैं (इफिसियों 5:1–14)। यीशु मसीह में हमें जो स्वतंत्रता मिली है, (जिसके लिये यीशु मसीह ने मूल्य चुका दिया है, जो उसका लहू है) वह शारीरिक कामों के लिये अवसर न बने, परंतु प्रेम से हम एक दूसरे के आधीन रहें और एक दूसरे की सेवा करें (गलातियों 5:13)।

ग. मेल–मिलाप

मेल मिलाप का अर्थ है, वह प्रक्रिया जिससे दो समूहों के बीच की कटुता समाप्त हो जाती है, जिसका परिणाम शांति होता है।

अविश्वासी परमेश्वर के शत्रु कहे जाते हैं (रोमियों 5:10) और इसलिये वे उसके क्रोध का सामना करेंगे (रोमियों 5:9) अर्थात् प्रत्येक वह व्यक्ति जो यीशु मसीह के साथ संबंध स्थापित नहीं करता, उद्धार के पूर्व, विश्वास करने के पूर्व परमेश्वर के साथ शत्रुता की स्थिति में रहता है। यीशु मसीह यहूदी, और अन्य जातियों के मध्य मेल – मिलाप करवाने आया, ताकि शांति की स्थापना हो सके (इफिसियों 2:16) और इसी हेतु यीशु मसीह ने अपनी देह का बलिदान दिया (कुलुस्सियों 1:22)।

पापों के लिये मूल्य चुकाया जाना आवश्यक है ताकि परमेश्वर के साथ मेल – मिलाप हो सके (2 कुरिन्थियों 5:19)। यीशु मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लिया और हमें भी मनुष्य और परमेश्वर के बीच मेल – मिलाप की सेवा सौंप दी है (2 कुरिन्थियों 5:18–21)। जब एक व्यक्ति उद्धार प्राप्त कर लेता है, तभी से उसका शांति स्थापना का कार्य प्रारंभ हो जाता है और वह दो शत्रुता रखने वालों के मध्य मेल – मिलाप का कार्य करने लगता है (मत्ती 5:9)।

यीशु मसीह के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल – मिलाप परमेश्वर की भलाई को प्रकट करता है (रोमियों 5:8, लूका 6:31–35)। मेल मिलाप सारी मानव जाति का यीशु मसीह के लहू (बलिदान) के द्वारा हो चुका है (कुलुस्सियों 1–20)।

घ. प्रायश्चित

प्रायश्चित का अर्थ है पवित्र परमेश्वर की धार्मिकता एवं न्याय को एक बलिदान के द्वारा संतुष्ट करना।

परमेश्वर पाप के प्रति क्रोधी है, उसके क्रोध के विषय हम पुराने और नये नियम दोनों में स्पष्टता के साथ देख सकते हैं (व्यवस्थाविवरण 6:14; यहोशू 23:16, भजन संहिता 78:21, यूहन्ना 3:36, रोमियों 1:18, इफिसियों 2:3, 1 थिस्सलुनीकियों 2:3, 1 थिस्सलुनीकियों 2:16, और अन्य कई स्थानों पर) परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी भी है। चार्ल्स रायरीने जैसा कहाः

> पुराने नियम में परमेश्वर के क्रोध की धारणा उसे अविवेकी ईश्वर नहीं ठहराती परंतु परमेश्वर के उस धर्मी स्वरूप को दर्शाती है, जिसके अनुसार वह पाप को अनदेखा नहीं कर सकता और क्रोध करता है, परंतु उसका प्रेम उन संभावनाओं और स्थानों को ढूंढ़ लेता है जहां फिर से मनुष्य से सहभागिता स्थापित की जा सके।

परमेश्वर के क्रोध को शांत करने के लिये यीशु ने मानव जाति के पापों के बदले मृत्यु को सह लिया। उसने परमेश्वर के क्रोध को संपूर्ण मानव जाति के लिये शांत किया (1 यूहन्ना 2:2) और परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित किया (1 यूहन्ना 4:10) और यह सब परमेश्वर की उस योजना, महत्वपूर्ण योजना का एक भाग था, जिसके तहत यीशु मसीह एक मनुष्य बना (इब्रानियों 2:17–18)।

4. यीशु मसीह का पुनरुत्थान

पुनरुत्थान शब्द का प्रयोग उस वर्णन के लिये किया जाता है, जिसमें एक व्यक्ति मृतकों में से अविनाशी देह ले कर वापस आता है, जो कभी नहीं मरेगा (1 कुरिन्थियों 15:42,54)। यह शब्द जी उठने से अलग अर्थ रखता है, जिसमें व्यक्ति उसी शरीर को लेकर मृतकों में से आता है जो फिर कभी मृत्यु को प्राप्त हो सकता है (1 राजा 17:21–22, 2 राजा 4:34–35, यूहन्ना 11:43)।

यीशु मृतकों में से जी उठा, पवित्रशास्त्र स्पष्टता से यह बताता है कि यीशु वास्तव में मरा, सिर्फ सोया या मूर्छित हुआ ऐसा नहीं था (मत्ती 27:62 से 66, मरकुस 15:39,44 लूका 23:48, 49, यूहन्ना 19:33)। एक कब्र दी गई ताकि यशायाह 53:9, मत्ती 27:57–58, मरकुस 15:42 लूका 23:50–52, यूहन्ना 19:38 की भविष्यवाणियों पूरी हो सकें, यीशु कफन के कपड़ों में लपेटा गया (मत्ती 27:59–60, मरकुस 15:46, लूका 23:53–54, यूहन्ना 19:40–42) और एक कब्र में रखा गया (मत्ती 27:62–66)। यहां तक कि यहूदियों को भी पता था कि वह कहां रखा और कब्र पर मोहर लगा दी (मत्ती 27:62–66) बाद में उन यहूदियों ने यह अफवाह फैला दी कि यीशु के चेले उसकी लोथ (शव) को चुरा ले गये (मत्ती 28:11–15, मरकुस 14:15)।

तीसरे दिन वह चट्टान का पत्थर लुढ़क गया (मत्ती 27:60 में ग्रीक शब्द आया है कुलियों अर्थात् लुढ़का कर मरकुस 16:3–4 में अनाकुलियों शब्द आया है अर्थात् लुढ़कायेगा और लूका 24:2 में शब्द आया है, अर्थात् लुढ़का हुआ और यूहन्ना 20:1 में शब्द आया है अर्थात् उठा देना वह पत्थर लुढ़का कर हटा दिया गया था और कब्र खाली थी (मत्ती 28:5–6, मरकुस 16:2–8, लूक 24:1–8, यूहन्ना 20:1)।

जो कुछ भी कब्र के अन्दर छोड़ा गया था केवल वह चादर थी, जिससे उसे लपेटा गया था, वह इस प्रकार तह करके रखा गया था कि लगता है लाश को नहीं ले जाया गया था – केवल दैविय शक्ति के द्वारा ही (यूहन्ना 20:2–10)। यीशु को कपड़ों में लपेटा गया था केवल सिर का ही टुकड़ा हटाया गया था कि ये दिखायें कि देह चली गई है। ऐसा लगता नहीं कि किसी ने देह से कपड़ों को निकाल का बड़ी अच्छी तरह तह करके रख दिया – यदि चादर को निकाल दिया था और फिर उसे लपेट कर रख दी तो देह ने तो खींच लिया होगा।

उसके जी उठने के बाद यीशु मरियम मगदलीनी को दिखाई दिये (यूहन्ना 20:14) और दूसरी औरतों को भी (मत्ती 28:9–10), पतरस को (लूका 24:34, 1 कुरिन्थियों 15:5)। दो चेलों को इमाउस के रास्ते में (लूका 24:13–33), चेलो को थोमा की गैर हाज़री में (लूका 24:36–43, यूहन्ना 20:19–24), और उसकी उपस्थिति में (यूहन्ना 20:26–29), गलील की झील के किनारे सात चेलों को (यूहन्ना 21:1–23) 500 लोगों को गलील के पहाड़ पर (1 कुरिन्थियों 15:6), याकूब को (1 कुरिन्थियों 15:7)। फिर ग्यारह चेलों को स्वर्गारोहण के समय दिखाई दिया (मत्ती 28:16–20, लूका 24:33–52, प्रेरितों के काम 1:3–12) और फिर पौलुस को स्वर्गारोहण के बाद दिखाई दिया (प्रेरितों के काम 9:3–6, 1 कुरिन्थियों 15:8)।

यीशु का पुनरुत्थान सुसमाचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है (1 कुरिन्थियों 15:1–3)। जो उसे विश्व के अन्य धर्म गुरुओं से अलग करता है, जो कभी भी पुनरुत्थित नहीं हुए।

यीशु ने स्वयं दावा किया था कि वह मृतकों में से जी उठेगा (मत्ती 16:21, 17:9, 22,23,20:18–19, 26:23 मरकुस 9:10, लूका 9:22–27) और यदि यह घटना अक्षरक्षः पूर्ण नहीं हुई होती तो हम भी अभी तक अपने पापों के बंधन में पड़े होते (1 कुरिन्थियों 15:16–17)।

परमेश्वर पिता यीशु मसीह के पुनरुत्थान का कारण या अभिकर्ता था (कुलुस्सियों 2:12, 1 थिस्सलुनीकियों 1:10, 1 पतरस 1:21, इब्रानियों 13:20) और पवित्रात्मा भी (प्रेरितों के काम 2:24, रोमियों 8:11, 1 पतरस 3:18)।

यीशु मसीह के पुनरुत्थान से यह सिद्ध होता है कि उसने जो कुछ कहा और किया वह सब सच और अच्छा था यीशु का जी उठना हमारे मसीही विश्वास और चाल चलन का आधार है (रोमियों 6:4)।

5. यीशु का स्वर्गारोहण

यीशु का स्वर्गारोहण उसका मृतकों में से जी उठकर वापस धरती से स्वर्ग को जाना है। स्वर्ग जाकर वह पिता के दाहिनी ओर अपने निर्धारित स्थान पर बैठ गया जो संपूर्ण सृष्टि से सर्वोच्च स्थान है (भजन संहिता 110:1 इफिसियों 1:20, कुलुस्सियों 3:1, इब्रानियों 1:3, 13, 8:1, 10:12, 1 पतरस 3:22)।

पेंटीकॉस्ट के दिन के दस दिन पूर्व स्वर्गारोहण की घटना थी। फिर यीशु मसीह ने माना पवित्रात्मा भेजा (प्रेरितों के काम 2:23) जैसा उसने प्रतिज्ञा की थी (यूहन्ना 14:16–17) और अपनी कलीसिया को स्थापित किया। (प्रेरितों के काम 1:9–11 और 2 अध्याय) यीशु के पुनरुत्थान ने यह सिद्ध किया कि उसने सभी स्वर्गदूतों के ऊपर श्रेष्ठ स्थान हासिल कर विजय प्राप्त किया था (इब्रानियों 1:3–13)।

जब यीशु पुनरुत्थित हुआ तो उसने उन संतों की आत्माओं को जो पूर्व में मर गये थे और इब्राहीम के गोद में विश्राम कर रहे थे, अपने साथ ले गया (लूका 16:22, इफिसियों 4:7–10) और मनुष्यों को भेंट दिया, (इफिसियों 4:8)। जो पवित्रात्मा द्वारा कलीसिया को भी दान दिया (1 कुरिन्थियों 12:11)।

ग. यीशु मसीह का काल (युग)

यीशु मसीह जब तक परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ बैठा है और वापस नहीं आता तब तक के मध्य के समय को काल कहा जाता। परमेश्वर की योजना के अंतर्गत यह जरूरी है कि यीशु मसीह पिता के दाहिनी ओर तब तक बैठे तब तक कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को उसके पैरों की चौकी न कर दे (भजन संहिता 110:1)।

उसके बाद ही वह अंतिम विजय के लिये वापस आयेगा। यह मध्यकाल यीशु की महिमामय स्थिति को दर्शाता है, जिसमें वह स्वर्ग को गया और उस परमेश्वर मानव को पिता ने महिमा दी, यह उस स्थिति का चित्र जिसमें पिता ने उसे सारा अधिकार दिया ताकि सारे घुटने उसके नाम पर टेके जायें (फिलिप्पियों 2:9)। यह दानिय्येल 7:13–14 की भविष्वाणी की पूर्णता है।

अपनी सत्र के दौरान मसीह यीशु मानव जाति की सेवा निम्न प्रकार करता हैः

1. निवेदक के रूप में

निवेदक के रूप में यीशु मसीह पिता से संतों के लिये विनती करता है (इब्रानियों 7:25), यह कार्य पवित्रात्मा के साथ मिलकर करता है (रोमियों 8:26, 27, 34)। वह पिता से विनती करता है कि उन संतों के लिये (जो उससे प्रेम रखते हैं) सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करें (रोमियों 8:28)। जो पिता की इच्छा के अनुसार हो।

2. वकील के रूप में

वकील के रूप में यीशु हमारे लिये खड़ा होता है ताकि शैतान के द्वारा हम पर लगाये गये आरोपों का जवाब दे सके (1 यूहन्ना 2:1), परमेश्वर के बच्चों पर (प्रकाशिवाक्य 12:10)।

3. मध्यस्थ के रूप में

मध्यस्थ यह व्यक्ति होता है जो दो असहमत पक्षों के मध्य खड़ा होता है या दो ऐसे पक्ष जो किसी समझौते में बंधना चाहते हैं उनके मध्य खड़ा होता है।

यीशु मसीह परमेश्वर और हमारे मध्य के संबंध जोड़ने वाले के रूप में खड़ा होता है (1 तीमुथियुस 2:5) मध्यस्थ के रूप में यीशु उस नई वाचा को लेकर खड़ा होता है जो व्यवस्था पर नहीं परंतु अनुग्रह पर आधारित है (इब्रानियों 8:6–13)। नई वाचा इसलिये बीच में आई ताकि मूसा की व्यवस्था के उल्लंघन में जो पाप किये गये उनके लिये यीशु मसीह अपने बलिदान के द्वारा मूल्य चुका देवें (इब्रानियों 9:13–15), नई वाचा अनंतकाल के लिये स्थिर है (इब्रानियों 12:22:24)।

यीशु ने स्वयं घोषणा की, कि वह परमेश्वर और मनुष्यों के मध्य मध्यस्थ है, जब उसने कहा कि ***कोई भी व्यक्ति बिना मेरे द्वारा पिता के पास नहीं पहुंच सकता*** (यूहन्ना 14:6)।

4. महायाजक के रूप में

यीशु मसीह पिता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नियुक्त हमारा महायाजक है। वह लेवी के वंश से उत्पन्न नहीं हुआ था, इसलिये वह याजक के पद का दावा नहीं कर सकता था (इब्रानियों 5:4–10, 7:5–28)। यीशु की महायाजकीय सेवा इब्रानियों की पत्री का मुख्य केन्द्र है।

यीशु मलीकिसदेक के जैसा महायाजक है जो लेवीय रीति पर महायाजकों की नियुक्ति की व्यवस्था के 400 वर्षों पूर्व अब्राहम के समय में हुआ था (इब्रानियों 7:1–3)। मानव जाति जो परीक्षा में पड़ जाती है, उसके लिये एक ऐसा महायाजक चाहिये था जो दयालु और विश्वासयोग्य हो, और पिता को संतुष्ट कर सके (इब्रानियों 2:17, 4:14–15) और उस (यीशु) की महायाजकीय सेवा सदा के लिये बनी रहे (इब्रानियों 6:20, 7:3, 24)।

एक याजक का कार्य है बलिदान चढ़ाना (इब्रानियों 8:1–3)। यीशु ने स्वयं को बलिदान कर दिया (इब्रानियों 9:6–14) अपने एक ही बलिदान को सदा के लिये देकर (इब्रानियों 10:10–12), उसकी राजकीय एवं मध्यस्थ के रूप की सेवा उसके महायाजक होने के सेवा का ही भाग है विस्तार है। क्योंकि कलीसिया में सभी याजक हैं (1 पतरस 2:5, 9; प्रकाशितवाक्य 1:6)। इसलिये हमें यीशु का अनुकरण करना है (1 कुरिन्थियों 11:1)। हमें भी अपने आपको परमेश्वर की इच्छानुसार जीवित बलिदान चढ़ाना है (रोमियों 12:1)।

5. कलीसिया या चर्च का सिर या प्रधान

यीशु मसीह कलीसिया चर्च का अगुवा है, सिर है, (इफिसियों 1:22–23, कुलुस्सियों 1:18), जितने यीशु पर विश्वास करते हैं वे सब मिलकर यीशु की दुल्हन या देह बनाते हैं, जो कलीसिया या चर्च कहलाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)।

यीशु मसीह प्रतिज्ञा किया हुआ स्वामी या पति है (इफिसियों 5:23), जो कलीसिया का सिर है जो अपनी दुल्हन अर्थात्, कलीसिया से शाश्वत प्रेम करता है (इफिसियों 5:25–27), यीशु के साथ कलीसिया का विवाह वास्तव में स्वर्ग में यीशु के द्वितीय आगमन (पृथ्वी पर) के पूर्व होगा (प्रकाशितवाक्य 19:7–10, 11–16) परंतु उसका प्रेम और विश्वासयोग्यता आज भी मनुष्य के लिये उपलब्ध है। कलीसिया दुल्हन के रूप में अपने आपको आज भी तैयार कर रही है (इफिसियों 4:15, 5:26,27)।

6. चरवाहा

पास्टर शब्द का वास्तविक अर्थ होता है "चरवाहा"। यीशु मसीह ने एक अच्छे चरवाहे के रूप में अपना प्राण अपनी भेड़ों के लिये दे दिया (यूहन्ना 10:11) और इसी कारण उसे भेड़ों का महान रखवाला कहा गया (इब्रानियों 13:20)।

वर्तमान में वह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ प्रधान रखवाले के रूप में बैठा है जो अपनी भेड़ों की अगुवाई करता और उनकी रक्षा भी करता है (1 पतरस 5:4)।

घ. यीशु मसीह का वर्णन इन रूपों में किया गया है

- एक **वकील** के रूप में – वह पिता से हमारे पक्ष में बातें करता है (1 यूहन्ना 2:1)।
- **अल्फा और ओमेगा** के रूप में – यूनानी भाषा के प्रथम और अंतिम अक्षर के रूप में वह संवाद की नींव है (प्रकाशितवाक्य 1:8, 21:6, 22:13)।
- **आमीन** अर्थात् यीशु किसी भी दिये गये विषय का अंतिम शब्द है (2 कुरिन्थियों 1:20, प्रकाशितवाक्य 3:14)।
- **अभिषिक्त** शब्द यीशु के दैवीय चुनाव को दर्शाता है जो अनंतकाल के लिये किया गया है, जो मसीह के रूप में है। (1 शमूएल 2:35, 2 इतिहास 6:42, भजन संहिता 2:2, 28:8, 84:9, 89:38, 51, 132:10, 17, दानिय्येल 9:25–26, प्रेरितों के काम 4:26)।
- **प्रेरित** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु (वह) एक ऐसा व्यक्ति है जो अधिकार के साथ भेजा गया है (इब्रानियों 3:1)।
- **विश्वासकर्ता** और सिद्ध करने वाला अर्थात् परमेश्वर के रूप में यीशु ने योजना लिखी और मनुष्य के रूप में उसे पूरा भी किया (इब्रानियों 12:2)।
- **उद्धारकर्ता** यह शब्द उसकी उद्धार के मूल उत्पत्तिकर्ता होने की सच्चाई को प्रकट करता है (इब्रानियों 2:10)।
- **आदि और अंत** यह शब्द इस सच्चाई को दर्शाता है कि यीशु ही जीवन का मुख्य विषय है या केन्द्र बिन्दु है (प्रकाशितवाक्य 21:6, 22:13)।
- **परमेश्वर की सृष्टि** का मूल कारण यह शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि यीशु ही परमेश्वर की सृष्टि पर राज्य करता है (प्रकाशितवाक्य 3:14)।
- **परमधन्य** और अद्वैत अधिपति शब्द यीशु सर्वोच्च अधिकारी के रूप में उसकी स्थिति को दर्शाता है (1 तीमुथियुस 6:15)।
- **प्रभु की शाखा** यह शब्द यह दर्शाता है कि परमेश्वर से निकलकर यीशु मनुष्य के रूप में आया और परमेश्वर से पोषित होता रहा (यशायाह 4:2)।
- **परमेश्वर की रोटी** शब्द यह दर्शाताा है कि वह लोगों को परमेश्वर का जीवन देता है (यूहन्ना 6:33,51)।
- **जीवन की रोटी** शब्द का दर्शाता है कि यीशु ही एकमात्र माध्यम है जो जीवन की तमाम आवश्यकताओं को पूरा करता है (यूहन्ना 6:35,48)।
- **दूल्हा** शब्द यीशु उस रूप को दर्शाता है, जिसमें वह अपनी दुल्हन अर्थात् कलीसिया अर्थात् विश्वासियों से घनिष्ठ रूप से संबंध रखता है और उनकी रक्षा भी करता है (यशायाह 62:5, मत्ती 9:15, 25:1,5,6,10, मरकुस 2:19,20, लूका 5:34,35, यूहना 2:9, 3:29, प्रकाशितवाक्य 18:23।
- **भोर का चमकता हुआ तारा** शब्द दर्शाता है कि यीशु आत्मिक अंधेरे के बीच में सर्वाधिक चमकदार तारा है (प्रकाशितवाक्य 22:16)।
- **प्रधान रखवाला** अर्थात् यीशु ही भेड़ों के लिये जिम्मेदार व्यक्ति है (1 पतरस 5:4)।
- **कोने का पत्थर,** चुना हुआ बहुमूल्य कोने का पत्थर अर्थात् यीशु के द्वारा ही कलीसिया की स्थापना होगी क्योंकि कोने का पत्थर ही भवन के स्तर को निर्धारित करता है (इफिसियों 2:20, 1 पतरस 2:4,6)।
- **मसीह यीशु मेरा प्रभु** अर्थात् यीशु ही अभिषिक्त मसीह है जो मेरे संपूर्ण जीवन पर अधिकार रखता है (फिलिप्पियों 3:8)।
- **मसीह यीशु हमारी आशा** अर्थात् यीशु ही हमारी भविष्य की भी आशा है (1 तीमुथियुस 1:1)।
- **परमेश्वर का मसीह** यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है (लूका 9:20, 23:35)।
- **सेना का प्रधान** शब्द यीशु की उस स्थिति को दर्शाता है उसे सेनाओं के ऊपर प्राप्त है (दानिय्येल 8:11)।
- **इस्राएल की शांति** शब्द यीशु के उस रूप को दर्शाता है जो हमें साहस व शांत प्रदान करता है (लूका 2:25)।
- **लोगों के लिये वाचा** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु विश्वासियों के साथ परमेश्वर की नई वाचा की नींव है (यशायाह 42:6)
- **द्वार** शब्द इस सत्य को दर्शाता है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिये एकमात्र द्वार यीशु ही है (यूहन्ना 10:7,9)।
- **अनंतकाल का पिता** यह दर्शाता है कि वह हमेशा से परमेश्वर रहा है (यशायाह 9:6)।

- **अनंत जीवन** यह दर्शाता है कि अनंत जीवन यीशु नाम के व्यक्ति में ही मिलता है, किसी धारणा या विश्वास में नहीं (1 यूहन्ना 1:2)।
- **अनंतकालीन चट्टान,** शाश्वत चट्टान उस स्थिरता को दर्शाता है जो हमें यीशु में ही सदैव प्राप्त होती है (यशायाह 26:4)।
- **परमेश्वर के तत्व की छाप** शब्द यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर होते हुए भी देह धारण कर आया (इब्रानियों 1:3)।
- **विश्वस्त और सच्चा** शब्द यीशु की विश्वास योग्यता एवं सत्यता को प्रमाणित करता है (प्रकाशितवाक्य 19:11)।
- **विश्वासयोग्य साक्षी** शब्द यीशु के जी उठने की गवाही को प्रकट करता है (प्रकाशितवाक्य 1:5)।
- **विश्वासयोग्य एवं सच्चा साक्षी** शब्द उसकी भविष्यवाणियों से संबंधित सत्यता को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 3:14)।
- **आदि और अंत** यह दर्शाता है कि यीशु ही सृष्टि का स्रोत है (प्रकाशितवाक्य 1:17, 2:8, 22:13)।
- **मृतकों में से जी उठने वालों में** पहिलौठा यह दर्शाता है कि यीशु ही वह प्रथम व्यक्ति है जिसमें मौत को पराजित किया और एक पुनरुत्थित देह को प्राप्त किया (कुलुस्सियों 1:18, प्रकाशितवाक्य 1:5)।
- **सारी सृष्टि** में पहिलौठा यह दर्शाता है कि समस्त सृष्टि का प्रारंभ यीशु मसीह ही है (कुलुस्सियों 1:15)।
- जो सो गये हैं उनमें **पहिला फल** यह दर्शाता है कि यीशु मसीह पुनरुत्थान की पहली आशीष है (1 कुरिन्थियों 15:20)।
- **सुखदायक सुगंध** शब्द उसके बलिदान की आशीष को दर्शाता है (इफिसियों 5:2)।
- **कर लेने (चुंगी लेने) वालों और पापियों का मित्र** शब्द उसके उनके प्रति प्रेम और चिंता को दर्शाता है जिनकी समाज उपेक्षा करता और जो कानून तोड़ते हैं (मत्ती 11:19, लूका 7:34)।
- **तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा** शब्द यह दर्शाता है कि वही एकमात्र स्तुति के योग्य है (लूका 2:32)।
- **संपूर्ण पृथ्वी का परमेश्वर** शब्द उसके संपूर्ण मानवता के साथ संबंध की सुगंध को दर्शाता है (यशायाह 54:5)।
- **जो सबके ऊपर परमेश्वर** रोमियों 9:5 के अनुसार विशिष्ट रूप से यीशु इस्राएलियों को परमेश्वर है।
- **अच्छा चरवाहा** शब्द यीशु के अगुवाई और रक्षा करने के स्वाभाव को दर्शाता है (यूहन्ना 10:11)।
- **महान महायाजक** शब्द उसके महायाजकीय कार्य में दक्षता को प्रमाणित करता है (इब्रानियों 4:14)।
- **बड़ी ज्योति** शब्द उसके अंधकार में प्रकट होने की तीव्रता को दर्शाता है (यशायाह 9:2, मत्ती 4:16)।
- **महान चरवाहा** शब्द यीशु के एक सर्वश्रेष्ठ आपूर्तिकर्ता एवं रक्षक के रूप को दर्शाते हैं जो वह भेड़ों के प्रति रखता है (इब्रानियों 13:20)।
- **उत्तम वाचा का जामिन** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु ने परमेश्वर से एक उत्तम वाचा बांधी है (इब्रानियों 7:22)।
- **आपकी आत्मा का संरक्षक** जो विश्वासी की आत्मा की सुरक्षा का संदर्भ देता है (1 पतरस 2:25)।
- **"सिर"** – ये उसकी अगुवाई की बुद्धिमानी का संदर्भ देता है (1 कुरिन्थियों 11:3, इफिसियों 4:15, कुलुस्सियों 2:19)।
- **अन्य जातियों का हाकिम** होने के लिये एक उठेगा यह सिद्ध करता है कि यीशु गैर यहूदियों के ऊपर प्रभुता करने उठेगा (रोमियों 15:22)।
- **पवित्र करने वाला** अर्थात् जो सेवकाई के लिये लोगों को अलग करने की क्षमता रखता है (इब्रानियों 2:11)।
- **मनों और हृदयों को जांचने वाला** शब्द यीशु की उस योग्यता की ओर इशारा करता है जिसमें वह मनुष्यों के उद्देश्यों को जान लेता है (प्रकाशितवाक्य 2:23)।
- **देह का सिर** शब्द कलीसिया की अगुवाई में उसकी बुद्धिमानी का प्रतीक है (कुलुस्सियों 1:18)।
- **कलीसिया का सिर** शब्द कलीसिया के विश्वासियों के लिये उसके बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व को दर्शाता है (इफिसियों 5:23)।
- **सारी प्रधानता एवं अधिकार** का शिरोमणि शब्द उसकी निरपेक्ष सत्ता को प्रकट करता है (कुलुस्सियों 2:10)।
- **सारी वस्तुओं का वारिस** अर्थात् पिता का पुत्र होने के नाते वह सभी वस्तुओं को प्राप्त करता है (इब्रानियों 1:2)।
- **महायाजक** उसकी स्थिति को दर्शाता है (इब्रानियों 2:7, 3:1, 4:14, 15:5, 5:10, 6:20, 7:26, 8:1, 9:11, 13:11–12)।
- **जो हमसे प्रेम रखता है** और हमें अपने पापों से छुड़ाया है यह उसके प्रेम और क्षमा को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 1:5)।
- **उसका एकलौता पुत्र** यह दर्शाता है कि यीशु संपूर्ण सृष्टि में एक अनोखी, अद्भुत हस्ति है जिसके जैसा और कोई नहीं है (यूहन्ना 3:16, इब्रानियों 11:17, 1 यूहन्ना 4:9)।

- **पवित्र और धर्मी** शब्द उसके सिद्ध चरित्र को दर्शाता है (प्रेरितों के काम 3:14)।
- **परमेश्वर का पवित्र जन** शब्द इस बात को दर्शाता है कि उसने सिद्धता के साथ अपना मानव जीवन व्यतीत किया (मरकुस 1:24 लूका 4:34, यूहन्ना 6:69)।
- **पवित्र सेवक** यूनानी शब्द पेयस प्रयुक्त हुआ है मूल रूप में जिसका अर्थ होता है बालक अर्थात् यीशु बालक के जैसे आज्ञाकारी रहा और यही उसकी पवित्रता को भी दर्शाता है (प्रेरित के काम 4:27–30)।
- **इस्राएल को आशा** शब्द इस्राएल को अपनी आशा के सच्चे आधार की ओर फिरने का संदेश देता है (यिर्मयाह 14:8, 17:13, प्रेरितों के काम 28:20)।
- **उद्धार का सींग** उस शक्ति को दर्शाता है जो उद्धार के लिये आवश्यक होता है (लूका 1:69)।
- **अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप** यह दर्शाता है कि यीशु मसीह देह में परमेश्वर था (1 कुलुस्सियों 1:15)।
- **इम्मेनुएल** अर्थात् हिब्रू भाषा में परमेश्वर हमारे साथ, (यशायाह 7:14, 8:8, मत्ती 1:23)।
- **वह दान** जो वर्णन से बाहर है अर्थात् हमारे पास यीशु की महानता का संपूर्ण वर्णन करने के लिये कोई शब्द भंडार नहीं है (2 कुरिन्थियों 9:15)।
- **यीशु नासरी** यह उस नगर को दर्शाता है जहां वह पला–बढ़ा था (मत्ती 26:71, मरकुस 1:24, 10:47, लूका 4:34, 18:37, 24:19, यूहन्ना 1:45, 18:5,7, प्रेरितों के काम 2:22, 6:14, 10:38, 22:8, 26:9)।
- **जीविते और मरे हुओं का न्यायी** यह शब्द उसके उस अधिकार को दर्शाता है जिसके कारण वह उन्हें दंड की आज्ञा देगा (प्रेरितों के काम 10:42, 2 तीमुथियुस 4:1)।
- **राजाओं का राजा** शब्द उसकी समस्त प्रधानताओं के ऊपर होने की स्थिति को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 19:16)।
- **हे युग युग के राजा** शब्द उसके समस्त राजनैतिक प्रधानताओं के ऊपर की स्थिति को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 15:3)।
- **परमेश्वर का मेमना** शब्द उसके बलिदान को दर्शाता है जो वह परमेश्वर की धार्मिकता को संतुष्ट करने के लिये देने वाला था (यूहन्ना 1:29, 36)।
- **अंतिम आदम** शब्द यह दर्शाता है कि सच्चा जीवन सिर्फ यीशु मसीह में ही मिल सकता है, किसी भौतिक दशा में नहीं (यूहन्ना 1:4, 11:25, 14:6)।
- **जीवन दायक आत्मा** शब्द यीशु के पवित्रात्मा के साथ गहरे घनिष्ट संबंध को बताता है, गठजोड़ को दिखाता है (1 कुरिन्थियों 15:45)।
- **अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति** शब्द दर्शाता है कि यीशु मसीह समस्त मानव जाति के लिये प्रकट होने वाला था (लूका 2:32)।
- **जीवन की ज्योति** का अर्थ यीशु हमारे जीवन की राह के लिये ज्योति के रूप में उपलब्ध है, जब हमें आसानी से समझ नहीं आता कि जीवन में क्या करें (अय्यूब 33:30, भजन संहिता 49:19, 56:13, यूहन्ना 8:12)।
- **मनुष्यों की ज्योति** अर्थात् वह सभी मनुष्यों के लिये मार्गदर्शन हेतु तैयार है (यूहन्ना 1:4)।
- **जगत की ज्योति** अर्थात् वह जगत के आत्मिक अंधकार में ज्योति के रूप में सभी के मार्गदर्शन के लिये उपलब्ध है (यूहन्ना 8:12, 9:5)।
- **जीविता** शब्द यीशु के पुनरुत्थान की अनंतकालीन प्रकृति को दिखाता है (प्रकाशितवाक्य 1:17–18)।
- **जीविता पत्थर** शब्द उस स्थिर जीवन को दर्शाता है जो यीशु में हमें प्राप्त होता है (1 पतरस 2:4)।
- **प्रभु** शब्द यीशु के अधिकार को दर्शाता है (प्रेरितों 4:24, प्रकाशितवाक्य 6:10)।
- **प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह** शब्द यीशु के उस अधिकार को दर्शाता है जिनके द्वारा मनुष्यों को वह उनके पापों से छुड़ाता है (2 पतरस 1:11, 20, 3:18)।
- **महिमा का प्रभु** शब्द यीशु के अधिकार के अद्भुत रूप को दर्शाता है (1 कुरिन्थियों 2:8)।
- **प्रभुओं का प्रभु** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु अन्य सभी अधिकारों पर अधिकार रखता है (प्रकाशितवाक्य 19:16)।
- **शान्ति का प्रभु** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु की इच्छा है कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच शांति स्थापित हो (2 थिस्सलुनीकियों 3:16)।
- **खेत का स्वामी** शब्द उसके उस अधिकार को दर्शाता है जो उसे सुसमाचार के संपूर्ण क्षेत्र में प्राप्त है (मत्ती 9:38, लूका 10:2)।

- **सब्त का प्रभु** शब्द दस आज्ञाओं में से चौथी आज्ञा पर उसके प्रभु होने को दर्शाता है (मत्ती 12:8, लूका 6:5)।
- **प्रभु हमारी धार्मिकता** शब्द यीशु के हमारी धार्मिकता के मापदंड और धार्मिकता को प्रदान करने वाला होने की सत्यता को प्रकट करता है (यिर्मयाह 23:6, 33:16)।
- **एक मनुष्य जो परमेश्वर की ओर से था** यह दर्शाता है कि यीशु परमेश्वर की ओर से स्वीकृत व्यक्ति था (प्रेरितों के काम 2:22)।
- **स्वर्गीय मनुष्य** शब्द उसके दैवीय स्वरूप को प्रकट करता है (1 कुरिन्थियों 15:47)।
- **दुःखी मनुष्य दुःखी पुरुष** शब्द यीशु के उन मनुष्यों के प्रति तरस को प्रकट करता है, जो उसे तुच्छ जानते थे (यशायाह 53:3)।
- **स्वामी** शब्द उसकी श्रेष्ठता को दर्शाता है जो सारे अधिकार और दक्षता पर उसे हासिल है (लूका 5:5, 8:24, 45, 9:33, 17:13, इफिसियों 6:9, कुलुस्सियों 4:1,2, तीमुथियुस 2:21)।
- **नई वाचा का मध्यस्थ** शब्द यह प्रकट करता है कि यीशु ही ने परमेश्वर से उत्तम वाचा प्राप्त किया है (इब्रानियों 9:15, 12:24)।
- **दयालु एवं विश्वासयोग्य महायाजक** शब्द उसके तरसपूर्ण स्वभाव एवं उसके कार्य की विश्वासयोग्यता को दर्शाता है (इब्रानियों 2:17)।
- **वाचा का वह दूत** जो परमेश्वर से नई वाचा को संदेश लेकर आयेगा (मलाकी 3:1)।
- **मसीह अर्थात् यीशु परमेश्वर** की ओर से चुना हुआ था जो लोगों को उनके पाप से छुड़ाने के लिये आया था (यूहन्ना 1:41, 4:25)।
- **शक्तिशाली परमेश्वर** पराक्रमी परमेश्वर शब्द यीशु के दैवीय सामर्थ को प्रकट करता है (यशायाह 9:6)।
- **भोर का तारा** शब्द उसके सर्वाधिक चमकदार प्रकाश को दर्शाता है जो अंधकार के बीच में प्रकट होता है (2 पतरस 1:19, प्रकाशितवाक्य 22:16)।
- **एक नासरत का रहने वाला** – जो विचित्र सा लगता है (मत्ती 2:23)।
- **दाऊद का मूल** यह उसके मनुष्य के रूप में दाऊद वंश से आने का प्रमाण देता है (प्रकाशितवाक्य 22:16)।
- **पिता के साथ** एक शब्द उसकी पिता के साथ की एकता को प्रदर्शित करता है (यूहन्ना 10:30)।
- **पिता का एकलौता** शब्द यीशु की अद्वैतता को दर्शाता है (यूहन्ना 1:14,18)।
- **केवल हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर** जो उसके कार्य की अद्भुत बाद का संदर्भ देता है (यहूदा 1:25)।
- **हमारा महिमामय प्रभु** ये विश्वासियों के बीच में उसकी महानता का हवाला है (याकूब 2:1)।
- अद्वैत को दर्शाते हैं (यहूदा 1:25)।
- **हमारा महिमायुक्त प्रभु** शब्द विश्वासियों के मध्य उसके अधिकार की महानता को दर्शाता है (यहूदा 1:25)।
- **हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता** शब्द यीशु के उस स्वरूप एवं कार्य को दर्शाता है जो कलीसिया के साथ संबंध रखकर संपन्न करता है (2 पतरस 1:1)।
- **हमारा जीवन** शब्द कलीसिया के उस अस्तित्व को प्रकट करता है जो यीशु मसीह के द्वारा प्रदान किया जाता है (कुलुस्सियों 3:4)।
- **हमारा प्रभु** शब्द यह दर्शाता है कि कलीसिया (चर्च) उसकी ही सत्ता को स्वीकार करता है (रोमियों 1:4, 5:21, 7:25, 1 कुरिन्थियों 1:9 यहूदा 1:25)।
- **हमारा अद्वैत स्वामी** और प्रभु शब्द कलीसिया द्वारा यीशु मसीह की सर्वश्रेष्ठता एवं अधिकार को स्वीकारने एवं पहचाने जाने को दर्शाता है (यहूदा 1:4)।
- **हमारा फसह** शब्द यीशु का कलीसिया के बदले बलिदान होने का प्रमाण देता है (1 कुरिन्थियों 5:7)।
- **हमारी शांति** शब्द यीशु द्वारा परमेश्वर एवं कलीसिया के मध्य स्थापित शांति को दर्शाता है (इफिसियों 2:14)।
- **हमारा उद्धारकर्ता** शब्द यीशु द्वारा कलीसिया को दिये गये पापों से छुटकारो को दर्शाता है (तीतुस 3:16)।
- **वैद्य** शब्द उसकी रोगों से चंगा करने की योग्यता को दर्शाता है (लूका 4:23)।
- **प्रभु और उद्धारक** अर्थात् वह जो जीवन और उद्धार के मार्ग में आगे चलता है (प्रेरितों के काम 5:31)।
- **जीवन का राजकुमार** यह सिद्ध करता है कि यीशु ही जीवन में अगुवाई कर सकता है (प्रेरितों के काम 3:5)।

- **शांति का राजकुमार** अर्थात् यीशु ही परमेश्वर के साथ एकय स्थापित करने में अगुवाई करता है (यशायाह 9:6)।
- **हाकिमों का हाकिम** अर्थात् यीशु से बड़ा कोई भी अगुवा या नेता नहीं है (दानिय्येल 8:25)।
- **भविष्यद्वक्ता** शब्द उसकी भविष्यवाणी के पूरे होने की सामर्थ को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 18:18, प्रेरितों के काम 3:22)।
- **हमारे पापों का प्रायश्चित** अर्थात् यीशु ने ही हमारे पिता परमेश्वर की धार्मिकता एवं न्याय को संतुष्ट किया है (1 यूहन्ना 2:2)।
- **शुद्ध करने वाला** अर्थात् यीशु ही सक्रिय हुआ कि मनुष्य को उसे पापों से दूर करें (मलाकी 3:5)।
- **परमेश्वर की महिमा का प्रकाश** अर्थात् यीशु ही पिता का ज्योति का वास्तविक प्रकटकर्ता है (इब्रानियों 1:3)।
- **सबने छुटकारे का दाम** अर्थात् यीशु ने हम सबको पापों से स्वतंत्र करने के लिये दाम चुका दिया है (1 तीमुथियुस 2:6)।
- **पुनरुत्थान एवं जीवन** शब्द यह सिद्ध करता है कि पुनरुत्थान (अनन्त जीवन के लिये) सिर्फ यीशु में ही निहित है (यूहन्ना 11:25)।
- **धर्मी न्यायी** अर्थात् यीशु अपने सिद्ध मापदंड़ों के आधार पर ही अनुशासन स्थापित करता है और तदानुसार प्रतिफल देता है (भजन संहिता 7:11, 2 तीमुथियुस 4:8)।
- **धर्मी** शब्द यीशु के अपने सिद्ध मापदण्डों के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है (यशायाह 24:16, प्रेरितों के काम 3:14, 7:52, 22:14, 1 यूहन्ना 2:1)।
- **दाऊद का मूल** शब्द उसके उस कार्य की अनंतकालीन प्रवृत्ति को दर्शाता है जो दाऊद के निर्माण में लगी थी (प्रकाशितवाक्य 22:16)।
- **पृथ्वी के राजाओं का हाकिम** शब्द उसके पृथ्वी के सभी अधिकारियों के ऊपर प्रधान होने को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 1:5)।
- **जगत का उद्धारकर्ता** अर्थात् सिर्फ यीशु ही है जो हमें पापों से छुटकारा दे सकता है (यूहन्ना 4:42, 1 यूहन्ना 4:14)।
- **चरवाहा** शब्द उसके प्रेम भरी देखभाल को प्रकट करता है (उत्पत्ति 49:24, भजन संहिता 80:11, सभोपदेशक 12:11)।
- **तुम्हारी आत्माओं का चरवाहा** यह शब्द मनुष्य के अविनाशी भाग अर्थात् आत्मा के विषय में उसकी चिंता को दर्शाता है (1 पतरस 2:25)।
- **देश देश के लोगों के लिये झंड़ा** अर्थात् यही वह व्यक्ति है जिसे देश देश के लोगों को ढूंढ़ना है (यशायाह 11:10)।
- **परमेश्वर का पुत्र** शब्द उसके त्रिएकत्व से संबंध को दर्शाता है (यूहन्ना 10:16, 11:4)।
- **जीवित परमेश्वर का पुत्र** शब्द उसके उस वास्तविक परमेश्वर से संबंध को दर्शाता है जो मूर्ति नहीं है (मत्ती 16:16)।
- **परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र** शब्द दूतों के उसे संबंध में दृष्टिकोण को प्रकट करता है (मरकुस 5:7, लूका 8:28)।
- **अनंतकाल के उद्धार का कारण** शब्द उसके उद्धार के मूल होने को प्रमाणित करता है (इब्रानियों 5:9)।
- **तेरे दिनों का आधार** अर्थात् यीशु जीवन के संकटों में जूझने का साहस देने वाला है (यशायाह 33:6)।
- **पत्थर** शब्द उस स्थिरता को दर्शाता है जो मानव जाति के जीवन को यीशु मसीह प्रदान करता है (यशायाह 28:16)।
- **राजमिस्त्रियों द्वारा तिरस्कृत पत्थर** अर्थात् इस्राएली अगुवों ने उस पत्थर पर आक्रमण तो किया परन्तु वह स्थिर ही रहा (भजन संहिता 118:22, मत्ती 21:42, मरकुस 12:10, लूका 20:17, 1 पतरस 2:7)।
- **गुरु, रब्बूनी** शब्द उसकी निर्देशन योग्यता को दर्शाता है (यूहन्ना 20:16)।
- **एक परखा हुआ पत्थर** यीशु के जीवन में विभिन्न अनुभवों से गुजरने को दर्शाता है (यशायाह 28:16)।
- **अपने समय की ठीक गवाही** शब्द यह दर्शाता है कि यीशु परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय में जगत में प्रकट हुआ (1 तीमुथियुस 2:6)।
- **सच्ची रोटी** अर्थात् यीशु परमेश्वर की आरे से आया वास्तविक आध्यात्मिक पोषण था (यूहन्ना 6:32)।
- **सच्ची ज्योति,** जो उसके सत्य का सही प्रकाशन का संदर्भ है (यूहन्ना 1:9, 1 यूहन्ना 2:8)।
- **सच्ची दाखलता** शब्द दर्शाता है कि यीशु ही आत्मिक फलों अर्थात् अच्छे कामों को करने की शक्ति प्रदान करता है (यूहन्ना 15:1)।
- **सत्य** शब्द यीशु के जीवन के प्रत्येक भाग की सिद्धता को प्रकट करता है (यूहन्ना 5:33, 8:31–32, 14:6)।

- **मार्ग** अर्थात् यीशु ही उद्धार एवं दैविय मार्गदर्शन का स्रोत है (मत्ती 7:14, यूहन्ना 14:5–6)।
- **उद्धार का धन** यीशु के उस मूल्य को दर्शाता है, जो उसने मानव जाति के छुटकारे के लिये दिया (यशायाह 33:6)।
- **बुद्धि,** जो उसके समझने की योग्यता का संदर्भ देती है और जो परमेश्वर के वचन में है उसका सही इस्तेमाल (यशायाह 33:6)।
- वह जो हमारे लिये **परमेश्वर की ओर से धार्मिकता,** पवित्रता और छुटकारा ठहरा यह शब्द उसकी उस योग्यता को दर्शाता है, जिसके आधार पर वास्तव में यीशु ही आत्मिक परिपक्वता एवं उद्धार का स्रोत है, कोई मत या धारणा नहीं (1 कुरिन्थियों 1:30)।
- **राज्य के लोगों के लिये साक्षी** यह यीशु की उस गवाही को दर्शाता है जो उसने समस्त मानवता के लिये दी (यशायाह 55:4)।
- **अद्भुत युक्ति करने वाला** शब्द उसकी उस योग्यता को दर्शाता है जिसके आधार पर वह संकट के पूर्ण एवं सिद्ध सहायता कर सकता है (यशायाह 9:6)।
- **वचन** अर्थात यीशु ही सारे संसार–संवाद का आधार है (भजन संहिता 119:81, यूहन्ना 1:1–14, 1 यूहन्ना 1:1, प्रकाशितवाक्य 19:3)।
- **परमेश्वर का वचन** शब्द दर्शाता है कि यीशु ही परमेश्वर से संपर्क स्थापित करने की नींव है (2 पतरस 3:5, यूहन्ना 1:1–5, प्रकाशितवाक्य 19:13)।
- **जीवन का वचन** अर्थात यीशु ही समस्त जीवनों का मुख्य निर्माणकर्ता है (फिलिप्पियों 2:176, 1 यूहन्ना 1:1)।
- **तेरा पति** यह मनुष्यों से उस यीशु के अंतरंग संबंधों को दर्शाता है (यशायाह 54:5)।
- **तेरा कर्ता** शब्द उसके मनुष्यों के सृष्टिकर्ता होने को प्रकट करता है (यशायाह 54:5)।
- **तेरा छुड़ाने वाला** शब्द यह बताता है कि यीशु ने ही मनुष्यों को पापों को मूल्य चुकाया है (यशायाह 54:5)।
- **तेरा उद्धार** शब्द बताता है कि यीशु ही लोगों को उनके पापों से छुड़ाता है (लूका 2:29–30)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 4

1. पढ़ें – कुलुस्सियों 1:16 और यूहन्ना 8:58 ये हमें यीशु मसीह के व्यक्ति के बारे में क्या बताता है?

2. पढ़ें – मत्ती 22:41–46 मसीह कैसे राजा दाऊद का प्रभु और उसका पुत्र दोनों हो सकता है?

3. पढ़ें – 1 पतरस 2:22 ये हमें यीशु के जीवन में पाप के विषय में क्या बताता है?

4. पढ़ें – यशायाह 7:14, 9:6, 11:1–2 और 53:2 वे मसीह के आने के विषय में क्या प्रगट करते हैं, सारांश में लिखो।

5. नीचे दिये गये पदों को पढ़ें और बतायें कि यीशु की मृत्यु ने हमारे लिये क्या किया?

क. गलातियों 3:1

ख. कुलुस्सियों 1:13–14

ग. इफिसियों 2:14–16

घ. 1 यूहन्ना 2:1–2

6. नीचे दिये गये पदों को पढ़ें और बतायें कि यीशु के पुनरुत्थान के तथ्य बतायें?

क. मत्ती 27:62–66

ख. यूहन्ना 20:2–10

ग. यूहन्ना 20:14, मत्ती 28:9–10, यूहन्ना 20:26–29, 21:1–23, 1 कुरिन्थियों 15:6

घ. 1 कुरिन्थियों 15:1–3

7. पढ़ें – प्रेरित 1:9, और कुलुस्सियों 3:1, यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद क्या किया?

8. नीचे दिये हिस्से को पढ़ें और वर्णन करें कि अभी वर्तमान में प्रभु यीशु पिता के दाहिने बैठकर क्या कर रहा है (सत्र में)।

क. इब्रानियों 7:25

ख. 1 यूहन्ना 2:1

ग. 1 तीमुथियुस 2:5

घ. इब्रानियों 4:14

9. पढ़ें – इफिसियों 1:22–23 मसीह कलीसिया के लिये क्या है?

10. पढ़ें – यूहन्ना 10:11, इब्रानियों 13:20 और 1 पतरस 5:4; हमारा "प्रभु" किस प्रकार का "चरवाहा" है?

11. जो बयान घ में पुत्र की भूमिका के विषय सूची में दिया गया है और उसके व्यक्ति के विषय में उसकी भिन्नता वर्णन करें और उन्हें नीचे दी गई पुत्र की गतिविधियों के साथ जोड़ें। फिर से ये वर्णन एक से अधिक वर्ग में सम्बन्ध जोड़ेंगे। आप शायद चाहेंगे कि पुत्र की गतिविधियों को 1,2,3 आदि करके चिन्हित करें।

क. उसका पूर्व अस्तित्व

ख. परमेश्वर मानव की एकता

ग. उसकी सिद्धता

घ. उसका जन्म एवं जीवन

ङ. उसकी मृत्यु

च. उसका पुनरुत्थान

छ. उसका स्वर्गारोहण और सत्र

ज. उसकी सेवकाई

भाग 5
परमेश्वर पवित्र आत्मा (न्यूमाटोलोजी)

क. उसका व्यक्तित्व

यह सिद्ध किया जा चुका है कि पवित्रात्मा परमेश्वर है। पवित्रात्मा एक व्यक्ति है, सिर्फ एक शीर्षक या पदवी नहीं है जो परमेश्वर की शक्ति या दैवीय उद्देश्य के लिये प्रयुक्त की गई हो। वास्तविकता यह प्रमाणित करती है कि उसमें वह तीनों विशेषताएं पाई जाती हैं जो एक व्यक्ति में पायी जाती हैः बुद्धि, भावना, इच्छा।

पवित्रात्मा के व्यक्तित्व एवं कार्य के विषय में कलीसियाई इतिहास में अनेक बार असहमति के स्वर सुनाई पड़े हैं। इसलिये हम उस सिद्धांत पर सावधानीपूर्वक ध्यान दें जो इफिसियों 4:3 में कहा गया कि ***मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।*** पवित्रात्मा को भली भांति समझने और उस पर निर्भर रहने से वह हमें उस प्रेम की ओर ले जाता है (गलातियों 5:22)। जो न सिर्फ परमेश्वर के प्रति होता है, परंतु हमें एक दूसरे से भी प्रेम रखना सिखाता है (1 यूहन्ना 4:20)।

पवित्रात्मा का मंदिर परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह की देह है। प्रेरित पौलुस पूछता है कि ***क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी*** (बहुवचन अर्थात तुम सब) ***देह*** (एक वचन) ***पवित्रात्मा का मंदिर है जो तुममें बसा है, और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो*** (1 कुरिन्थियों 3:16 में इसी तरह का प्रश्न पूछता है कि **क्या तुम नहीं जानते** (तुम सभी) ***कि तुम*** (बहुवचन) ***परमेश्वर का मंदिर*** (एक वचन) ***हो और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है*** (तुम सभी में)। पवित्रात्मा एक एक व्यक्ति को मसीह की देह के भीतर जोड़ता है। हम चिताए जाते हैं, सचेत किये जाते हैं कि हम उस मंदिर को अपवित्र बातों से हानि पहुंचायें (1 कुरिन्थियों 3:7)। यीशु मसीह की एक ही दुल्हन (कलीसिया अर्थात् उसकी देह) है यह सत्य हमारे इस अध्ययन का मार्गदर्शक हो।

1. पवित्रात्मा एक व्यक्ति है जिसमें बुद्धि है

पवित्रात्मा के पास यह योग्यता है कि वह परमेश्वर की सब बातों को जाने और जांचे (1 कुरिन्थियों 2:10:11)। यह बात हमें सीखाती है कि उसके पास मनसा .....रोमियों 8:27 है और लोगों को सिखाने की क्षमता भी है (1 कुरिन्थियों 2:13)।

2. पवित्रात्मा के पास अनुभव करने की क्षमा और भावना है

परमेश्वर का वचन स्पष्टता से कहता है कि पवित्रात्मा को खेदित किया जा सकता है (यशायाह 63:10, इफिसियों 4:30) ये दोनो पद बताते हैं कि उसकी भावनाएं हैं। यदि यह मात्र एक प्रभाव होता तो उसकी इस तरह की भावनाएं नहीं होती। मरकुस 3:29 यह भी बताता है कि उसकी निंदा भी की जा सकती है। खेदित होना या निंदित होना एक का परिचय देता है।

3. पवित्रात्मा की इच्छा भी होती है

यह भी स्पष्ट है कि पवित्रात्मा के पास चयन करने की क्षमता भी है पवित्रात्मा बड़े अधिकार के साथ आत्मा के वरदानों को कलीसिया में (जिसको चाहे उसको) बांट देता है। 1 कुरिन्थियों 12:11 यह भी स्पष्ट है कि वह मसीहियों को निर्देशित करता और अगुवाई भी करता है (प्रेरितों के काम 16:6–11)।

4. पवित्रात्मा का रूप भी दिखाया गया (सिर्फ एक बार)

पवित्रात्मा सिर्फ एक बार यीशु मसीह के बपतिस्में के समय पवित्र कबूतर के रूप में उन पर उतरा जो शांति का प्रतीत माना जाता है (मत्ती 3:16, मरकुस 1:10 लूका 3:22, यूहन्ना 1:32)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 5क

1. व्यक्ति की तीन विशेषताएं क्या हैं?

क. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 2:10–11। ये हमें पवित्र आत्मा के विषय में क्या सिखाता है?

ख. पढ़ें इफिसियों 4:30। ये हमें पवित्र आत्मा के विषय में क्या सिखाता है?

ग. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:11। ये हमें पवित्र आत्मा के विषय में क्या सिखाता है?

ख. उसकी भूमिका

1. सृष्टि

यह स्पष्ट है कि आकाश और पृथ्वी की सृष्टि और उसे रूप देने में पवित्रात्मा की भूमिका रही है। उत्पत्ति 1:2 के अनुसार ***पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था*** जैसे उकाव अपने बच्चों के ऊपर मंडराता है (व्यवस्थाविवरण 32:11)। पवित्र शास्त्र बाइबल बताती है कि आकाश मंडल यहोवा के वचन से और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वांस से बने (भजन संहिता 33:6)। पवित्रात्मा परमेश्वर की सारी सृष्टि पर नियंत्रण करता है (अय्यूब 26:13)।

पवित्र आत्मा की भूमिका सृष्टि में और मानव के निर्माण में भी है (अय्यूब 33:4)। जानवरों की सृष्टि में भी (भजन संहिता 104:24–25, 104:30)।

उसकी भूमिका सृष्टि में परमेश्वर को सृष्टि के बनाने के द्वारा प्रगट करना है (यशायाह 40:12–13, रोमियों 1:20, यूहन्ना 16:13–14)।

2. प्रकाशन

पवित्रात्मा का कार्य मानव जाति को सत्य पूर्ण का मार्ग बताना भी है (यूहन्ना 16:13) वह मानवीय तत्वों को साधन बनाकर अपने आपको प्रकट करता है (2 शमूएल 23:2) और कभी – कभी यह सत्य बुरे समाचार का भी होता है (मीका 3:8)।

धर्मशास्त्र स्वयं पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण है (मत्ती 22:42–43, प्रेरितों के काम 1:16, 4:24–25, 28:25–26, इब्रानियों 10:15–16)।

3. समझ

पवित्रात्मा ने मानव जाति को आत्मिक बातों का प्रकाशन देने का कार्य किया है, किन्तु उनमें से कुछ बातों को समझ पाना कठिन होता है (1 कुरिन्थियों 13:12)। इसलिये पवित्रात्मा हमें परमेश्वर के वचन को समझने के लिये सहायता प्रदान करता है (1 कुरिन्थियों 2:12–16) और यह भी समझाता है कि परमेश्वर के वचन किस भाग को किस परिस्थिति में इस्तेमाल करें (लूका 12:11–12, इब्रानियों 3:7–8) अन्तिम समझ को जीवन में इस्तेमाल करना बुद्धिमता कहलाती है।

4. प्रेरणा

पवित्रात्मा ने कुछ लोगों की आत्मा को उभारा कि वे पवित्र वचन लिखें (2 पतरस 1:21)। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि पवित्रात्मा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है, अर्थात् परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है (2 तीमुथियुस 3:16–17)। यूनानी में इस स्थान पर एक शब्द जो इस स्थान के अलावा और कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुआ है। पौलुस जब यह भाग लिख रहा था उस समय प्रयुक्त यह शब्द दो अर्थात् थियोनियोसटोस जो थियोस से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है, "परमेश्वर एवं आत्मा" सम्पूर्ण बाइबल परमेश्वर पवित्रात्मा की प्रेरणा से लिखी गई है।

5. आश्चर्यकर्म

यीशु ने पवित्रात्मा की सामर्थ में होकर ही आश्चर्य किये (लूका 4:8)।

पवित्रात्मा कई बार प्रत्यक्ष रूप में कार्य करता है। जब फिलिप्पुस ने कूश देश की रानी के मंत्री और खजांची जो एक खोजा था, प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनकर जैसे ही जल के ऊपर आये तो पवित्रात्मा फिलिप्पयुस को उठा ले गया (प्रेरितों के काम 8:39)।

6. कुंवारी कन्या द्वारा जन्म देना

मरियम जो कि कुंवारी कन्या थी जिब्राएल स्वर्गदूत ने आकर उससे कहा कि पवित्रात्मा तुझ पर उतरेगा और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, और इसलिये वह पवित्र जो होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा (लूका 1:27–35)। यह भाग हमें यह बताता है कि पवित्रात्मा त्रिएकत्व का एक सदस्य और परमेश्वर भी है। जब मरियम पवित्र की सामर्थ के छापे जाने के कारण गर्भवती हुई तो उसके मंगेतर यूसुफ के पास एक स्वर्गदूत आया और कहा कि जो मरियम के गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है (मत्ती 1:18–20)।

7. पाप के प्रति कायल किया जाना

पवित्रात्मा का एक कार्य और है, वह है लोगों को उनके अपने पापों के प्रति कायल करना, व्यक्तिगत रूप से। वह लोगों को यह बताता है कि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं किया है और वे पापी हैं और उन्हें एक मोक्षदाता की आवश्यकता है (यूहन्ना 16:8)। वह हमारे विवेक के द्वारा भी हमें पापों के प्रति कायल करता है (रोमियों 9:1)।

8. नये सिरे से उत्पन्न करना

नये सिरे से उत्पन्न अर्थात् नया जन्म पाना पवित्र आत्मा ही मनुष्य की आत्मा को नये सिरे से जन्म देता है। उद्धार पाने के बाद नहीं उद्धार पाने के वक्त ही हमारा नया जन्म होता है। पवित्र आत्मा ही वह व्यक्ति है जो नया जन्म देता है – ये परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसके वचन के द्वारा होता है (1 पतरस 1:23, तीतुस 3:15)।

9. बपतिस्मा

मसीहत में पवित्र आत्मा के बपतिस्में के विषय में अनेक भ्रांतियां पाई जाती है। आइये हम स्पष्टता से अध्ययन करें कि बाइबल इस विषय पर क्या कहती है।

ग्रीक शब्द बैप्टाइज का अर्थ होता है डुबोना। जो ग्रीक लोग उस समय प्रयुक्त करते थे जब किसी कपड़े को रंगने के लिये डुबोना होता था, या जब पानी से भरे बर्तन को डुबाकर उसमें से पानी निकालना होता था, बौद्धिक अर्थ में प्रश्नों से घिर जाने को कहा जाता था, बैप्टाइज। जब बपतिस्मा एक संस्कार के रूप में देखा जाता था। तब एक व्यक्ति पानी में "डूबता" था। एक सैनिक रण भूमि में जाने से पहले अपनी तलवार को रक्त में डुबो देता था। यह उस बात को दर्शाने वाली स्थिति है जो यह प्रकट करती है कि वह व्यक्ति अपने कार्य के प्रति समर्पित हो चुका है। यह उस बात का प्रतीक था कि व्यक्ति चाहे मौखिक या भौतिक या भावनात्मक रूप से दूसरे पक्ष के साथ जुड़ चुका है उदाहरण के लिये यीशु ने कहा मुझे एक बपतिस्मा लेना है, यह उसके क्रूस को दर्शाती है (मरकुस 10:38)। जबकि उसका पानी का बपतिस्मा पहले ही हो चुका था (मरकुस 1:9)। यीशु का पानी का बपतिस्मा उसके द्वारा की योजना को स्वीकार कर लिये जाने को दर्शाता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहता है कि ***मसीह तुम्हें पवित्रात्मा*** और ***आग से बपतिस्मा देगा*** (मत्ती 3:11, मरकुस 1:8, लूका 3:16, यूहन्ना 1:33, प्रेरितों के काम 1:5)। पवित्रात्मा का बपतिस्मा उस दिन तक लोगों को नहीं मिला था, जब तक कि पेंटीकुस्त के दिन पवित्रात्मा उन एक सौ बीस लोगों पर न उतरा था (यूहन्ना 14:16–17, प्रेरितों के काम 2:1–4)। पतरस कहता है कि पवित्र आत्मा उन पर उस रीति से उतरा जिस रीति से आरंभ में हम पर उतरा था, अर्थात् उसके पूर्व किसी विश्वासी पर न उतरा था। कलीसिया के लिये पेंतीकुस्त के दिन का एक नया अनुभव था (प्रेरितों के काम 11:16)।

बिना यह अहसास किये कि इसका अभिप्राय पेन्तिकोस के दिन से ये था कि विश्वासी को मसीह की देह में रखना है पवित्र आत्मा के बपतिस्में को समझना असम्भव है (1 कुरिन्थियों 12:12–13) या कलीसिया (इफिसियों 5:22–30) कृपाकर नोट करें कि पाप और संसारिकता किसी को भी "देह" से अलग नहीं करते या फिर तो कुरिन्थियों को निकाल दिया जाता (पढ़ें 1 कुरिन्थियों 1:11 उन सैकड़ों पाप जो वे कर रहे थे)।

धर्मशास्त्र में कहीं भी पवित्र आत्मा के बपतिस्में की आज्ञा नहीं दी गई है इसलिये ये कुछ है तो होता है जो एक मसीह में विश्वास करता है, उसकी मृत्यु को, गाड़े जाने और पुनरुत्थान को स्वीकार करके (1 कुरिन्थियों 15:1–4)। ये "गीला" बपतिस्मा नहीं है परन्तु "सूखा" वाला है।

विश्वासियों के लिये बपतिस्में का सत्य प्रेरित पौलुस द्वारा स्पष्टता से बनाया गया जब वह कहता है:–

> ***क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया, तो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गये हैं तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जायेंगे"*** (रोमियों 6:3–5)।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा जिसमें विश्वासी पवित्र आत्मा द्वारा उसमें बस जाता है (यूहन्ना 14:17, रोमियों 5:5)। इसलिये ये उस समय होता है जब व्यक्ति यीशु मसीह को उद्धारकर्ता करके ग्रहण करता है और इस प्रकार उनके बदले में उसके कार्य में पहचाना जाता है।

10. छाप लगा देना – मोहर लगा देना

मोहर एक आकृति को दर्शाती है जैसे एक अंगूठी को अगर मोम में दबाया जाये तो उसमें निर्मित आकृति मोम में उभर आयेगी। यहूदियों ने यीशु की कब्र को ऐसी छाप लगवा दिया था, ताकि यदि पत्थर हटा तो पता लग जाये जब एक व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है तो पवित्रात्मा एक अदृश्य सील या मुहर उस पर लगा देता है (इफिसियों 1:13)।

यह परमेश्वरीय प्रबंध है कि जो व्यक्ति यह मुहर धारण करता है वह स्वीकार किया गया है, विश्वासी मसीह यीशु के साथ स्थायी रूप से एकाकार हो जाता है और इस एकाकार हो जाने को पवित्रात्मा हस्ताक्षरित करता है। यह अदृश्य चिन्ह हमारी आत्मा पर अंकित कर देता है (2 कुरिन्थियों 1:22)।

पवित्रात्मा जब हम पर मुहर लगा देता है तो हमें अपने पापमय कार्यों से उसे शोकित नहीं करना है (इफिसियों 4:30)।

हम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है, ताकि हम यीशु के पुनरुत्थान के दिन संपूर्ण छुटकारा पा सकें (इफिसियों 4:30, इफिसियों 1:14)। ये उस भविष्य के दिन को दर्शाता है जब हमारा उठा लिया जाना पुनरुत्थान में परिवर्तित होयेगा (रोमियों 8:23)।

11. भीतर निवास करना

उद्धार के समय पवित्रात्मा हमारे भीतर निवास करना प्रारंभ कर देता है, इसके द्वारा यीशु मसीह अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी करता है, जिसमें वह कहता है, ***"और मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहेगा। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि न वह उसे देखता है, और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा"*** (यूहन्ना 14:16–17)।

पेन्तिकोस्ट के दिन के पूर्व पवित्रात्मा विश्वासियों पर होता था। परंतु पेन्तिकोस्त के दिन कहा गया कि वह तुम में अर्थात् तुम्हारे भीतर होगा। पवित्रात्मा का कलीसिया के भीतर रहना यह अत्यंत अनोखी बात थी कलीसिया के लिये (रोमियों 8:9, 1 कुरिन्थियों 3:16, 6:19, 2 तीमुथियुस 1:14)।

पवित्रात्मा की प्रारंभिक सेवकाइयां अर्थात् पाप के प्रति कायल करना और सत्य का प्रकाशन करना यथावत् ही था फिर उसका स्थान बदल गया था।

उद्धार के समय पवित्रात्मा व्यक्ति के भीतर प्रवेश करता है (प्रेरितों के काम 19:2)। पवित्र आत्मा का भीतर रहना परमेश्वर का एक दान है (रोमियों 5:5), पवित्रात्मा का बपतिस्मा भी एक दान है (प्रेरितों 11:16–17)। जो कभी नहीं हटेंगे (रोमियों 1:2, 3:16, 6:19)। फिर भी यह बताता है कि विश्वासी उद्धार प्राप्त लोग है जबकि अध्याय 5 और 6 में पौलुस उनके पापों का भी जिक्र करता है।

दो स्थानों पर यह बताया गया है कि पवित्रात्मा का बपतिस्मा उद्धार पाने के बाद तुरन्त दिया गया (प्रेरितों के काम 10:44, 19:1–6)। आशा है कि विद्यार्थी प्रश्न पूछने के महत्व को याद रखते हैं, जैसे "कौन?" "क्या"? और "कब"? दोनों मामलों में जो लोग शामिल थे उन्होंने विश्वास किया कि मसीह आयेगा पर अभी तक नहीं जाना कि वह वास्तव में आ गया है। निर्देश के बाद कि मसीह आ गया था और रिपोर्ट पर विश्वास करके तब उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। ये बुद्धिमानी नहीं है कि विशेष घटनाओं को लें और तब विश्वास करें कि वे सामान्य हैं।

12. भरने का कार्य

अपने इस अध्ययन में हम परमेश्वर के वचनों के माध्यम से ही देखेंगे कि कैसे पवित्रात्मा हमें भर देता है।

क. पवित्रात्मा से भरे जाने पर

1) विशिष्ट सेवकाई जैसे कारीगरी का काम एवं नेतृत्व का काम सौंपा जाता है

इस्राएलियों के मध्य परमेश्वर ने व्यक्तिगत तौर पर लोगों को अपनी आत्मा देकर विशिष्ट कार्यों का संपन्न करने की योग्यता प्रवीणता प्रदान की। पवित्रात्मा प्राप्त करने के लिये परमेश्वर से निवेदन किया जा सकता है (लूका 11:13)। पवित्र शास्त्र बताता है कि बसलेल को परमेश्वर ने अपनी आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और सब प्रकार के कार्यों की समझ देने वाली आत्मा है, परिपूर्ण किया ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के मिलाप वाले तम्बू के लिये प्रवीणता से कार्य किया जाये (निर्गमन 31:3, 35:31)। पवित्रशास्त्र यह भी बताता है कि ***यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था।*** ताकि वह मूसा की मृत्यु के बाद इस्राएलियों का नेतृत्व करें (व्यवस्थाविवरण 34:9)।

2) उत्साह और भविष्यवाणी की विशिष्ट सेवा की जाती है

लूका रचित सुसमाचार 1:41 में हम देखते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के माता–पिता इलीशीबा एवं जकर्याह दोनों पवित्रात्मा से परिपूर्ण थे और जकर्याह भविष्यवाणी करता था (लूका 1:67)। वे भी पवित्र आत्मा से भर गये थे – वे हवाले एक आधारभूत सिद्धान्त स्थापित करते हैं कि पवित्र आत्मा की भरपूरी उसका हवाला है कि विशेष कार्य के लिये दैविय सामर्थ दी गई है।

3) विशिष्ट श्रोता समूह को विशेष संदेश दिया जाता है

यीशु मसीह ने अपने पुनरुत्थान के बाद और स्वर्गारोहण के ठीक पहले अपने चेलों से कहा पवित्रात्मा लो (यूहन्ना 20:22) और यह भी कहा कि पिता की पवित्रात्मा को भेजने की प्रतिज्ञा की बाह जोहते रहो, जो पूरी होने वाली थी (प्रेरितों के काम 1:8)। जो उनको यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाने वालों को क्षमा करने का अनुग्रह प्रदान करती (यूहन्ना 20:23)।

पेन्तिकुस्त के दिन जब चेले पवित्रात्मा से भर गये तब परमेश्वर की आत्मा ने उन्हें वे भिन्न मानवीय भाषाएं बोलने की सामर्थ प्रदान की, जो वे पहिले कभी नहीं बोले थे (प्रेरितों के काम 2:1–11, विशेष रूप से पद 4,8,11) पतरस ने सामर्थ हासिल की और मुंह लेकर उपदेश देने लगा (2:14–40) और लोगों को आमंत्रित किया गया प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करो तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे (2:38–40)। पुराने नियम में भी परमेश्वर का आत्मा विशिष्ट सेवा के लिये लोगों को सामर्थ देता था।

4) आत्मिक सुरक्षा और साहस दिया जाता है

पवित्रात्मा से भरे जाने पर पतरस यहूदियों से सुरक्षा पा सका, क्योंकि सुन्दर नाम फाटक के पास बैठने वाले जन्म के लंगड़े को जब प्रभु यीशु की सामर्थ से उन्होंने चंगा कर दिया तब यहूदी क्रोध से भर उठे थे, तब पवित्रात्मा की सामर्थ से भरकर पतरस ने उन्हें यीशु को मसीह प्रमाणित कर उनके मुंह बंद किये (प्रेरितों के काम 4:31)। ध्यान दें कि ये दो सामर्थ करना इसमें अन्य भाषा बोलना शामिल नहीं था। इसलिये ये विश्वास करना कि पवित्र आत्मा का भरा जाना अन्य भाषा का बोलना शामिल होता है – ये गलत है।

इन प्रारम्भिक उदाहरणों से जैसे पवित्र आत्मा का भरा जाना, हम निश्चय कर सकते हैं, कि जब एक बार विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का बास होता है और वह स्थाई है, पवित्र आत्मा का भरा जाना एक से अधिक बार होता है इस प्रकार ये स्थाई नहीं है। दूसरा इसका सबूत कि विश्वासियों को कोई आज्ञा नहीं दी गई कि वे पवित्रात्मा का बास करायें या लें, पर उन्हें उसके भरे जाने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 5:18)। पवित्र आत्मा का बास करने में एक स्थान है (पवित्र आत्मा हमारे अन्दर और हम मसीह में हैं) और पवित्र आत्मा की भरपूरी अपनी सामर्थ को विश्वासी के माध्यम से प्रगट करता है।

5) दूसरों की सेवकाई को दृढ़ करने का साहस दिया जाता है

कलीसिया के लिये पवित्रात्मा एक ऐसा वरदान है जो विश्वासियों को दूसरों को दृढ़ करने का सामर्थ देता है। प्रारम्भिक कलीसिया में जब विधवाओं की देखभाल की समस्या उठ खड़ी हुई (प्रेरितों के काम 6:1)। तो बारह शिष्यों ने सभा से कहा कि आत्मा से परिपूर्ण सात सुनाम पुरुषों को चुन लो जो इस कार्य को करें और कलीसिया ने ऐसा ही किया और कलीसिया के भीतर से ही लोगों का सेवकाई में दृढ़ करने के लिये लोग चुने गये।

6) शैतान के धोखे को पहचानना संभव हो जाता है

पौलुस अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान जब रोमी सरकारी अधिकारी सिरगियुस पौलुस से वचन सुनना चाहता था, तब इलीमास नमा के टोन्हे ने उसे विश्वास करने से रोकना चाहा। तब पौलुस ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण होकर उसकी ओर टकटकी लगाकर उसे डांटा और चिताया था और इलीमास टोन्हा कुछ समय के लिये अंधा हो गया था (प्रेरितों के काम 13:8,10)।

7) तिरस्कार को सह लेना संभव हो जाता है

पौलुस और बरनबास जब पिसिदिया के अंताःकिया में यहूदियों को परमेश्वर का वचन सुना रहे थे तो एक सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग वचन सुनने इक्ट्ठे हो गये थे, परंतु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गये थे, निंदा करते हुए पौलुस की विरोध में बोलने लगे (प्रेरितों के काम 13:42–51)। परन्तु 13:52 पद बताता है कि चेले आनन्द से और पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते रहे अर्थात् पवित्रात्मा लगातार उनके साथ और उनके भीतर परिपूर्णता से रहा।

ख. बढ़ते हुए मसीही के भीतर पवित्रात्मा आ जाता है

इफिसियों 5:18 में विश्वासी को आदेश दिया जाता है कि पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते जाओ। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विश्वासी हर समय पवित्रात्मा से पूर्ण नहीं रहते।

पाप विश्वासी की परमेश्वर के साथ सहभागिता में बाधा पहुंचाता है, इसलिये हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पवित्रात्मा की भरपूरी के लिये भी यह बाधक बनता है (1 यूहन्ना 1:6) लगातार पवित्रात्मा की भरपूरी हमारी मसीही चाल को दर्शाता है, जो ज्योति में चलना कहलाता है (यूहन्ना 8:12, 12:35–36, इफिसियों 5:7–10, 1 यूहन्ना 1:7)। कभी कभी विश्वासी को अपने पाप का अंगीकार करना है और विश्वास के साथ उस सत्य को स्वीकार करना है कि यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है (1 यूहन्ना 1:9)।

कृपया नोट करें कि पवित्र आत्मा का भरा जाना एक पूर्ण कार्य है, और अपने आप होता है और प्रक्रिया नहीं है वह साथ में पूरी होती है। कोई भी संदर्भ नहीं दिया गया कि कोई पवित्र आत्मा के द्वारा आधा–भरा है। पवित्र आत्मा से भरा जाना किसी की मसीहत की परिपक्वता का विषय नहीं है – इसलिये पवित्र आत्मा का भरा जानाः (1) सब विश्वासियों के लिये उपलब्ध है – भले ही उसका परिपक्वता कैसी भी हो और (2) पूर्ण है। ये भी स्पष्ट होना चाहिये कि जबकि पवित्र आत्मा की रूकावट की जा सकती है (प्रेरित 7:51)। तो व्यक्ति को उसकी भरपूरी के लिये अपने आपको दे देना चाहिये।

इस तथ्य से हमने ये पाया है कि हम समापन कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा का भरा जाना पूर्ण कार्य है जो विश्वासी को मसीही जीवन जीने की सामर्थ देता है। फिर भी ये मसीही जीवन का उद्देश्य नहीं है पर ये आरम्भ है और मसीही जीवन को बनाये रखता है।

पवित्र आत्मा के विशेष भरे जाने के चार बढ़ने के चिन्ह हैं – परमेश्वर की स्तुति करने की सामर्थ (बाहरी प्रदर्शन) परमेश्वर की आराधना (अन्दर का प्रदर्शन), परमेश्वर को धन्यवाद देना और एक दूसरे को समर्पित होना (इफिसियों 5:19–21)।

13. प्रार्थना

पवित्रात्मा से सदा भरे रहने पर हम लगातार आत्मा में प्रार्थना का स्वभाव रखते हैं (इफिसियों 6:18, यहूदा 1:20–21) प्रार्थना में सदैव परमेश्वर से सहभागिता रखने के साथ साथ यह जरूरी है कि हम लगातार अपने पापों को मानते भी रहें (1 यूहन्ना 1:9)।

कई बार ऐसे मौके होंगे जब हम नहीं जानते होंगे कि हमें क्या और कैसे प्रार्थना करना है या किन शब्दों का प्रयोग करना है, तब हमारे लिये शांतिदायक बात यह है कि आत्मा आप ही ऐसी आहें भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती है (रोमियों 8:26–27)।

14. आश्वस्त करना

पवित्रात्मा का यह भी एक कार्य है कि वह विश्वासियों को उनके उद्धार अनंत आशीषों के विषय में आश्वस्त करें। हम यह भी जानते हैं कि आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देता है कि ***हम परमेश्वर की संतान हैं, और मसीह के संगी वारिस भी हैं*** (रोमियों 8:16–17)।

प्रतिज्ञा किये हुए पवित्र आत्मा के द्वारा हम पर छाप लगी है और हम अनंत मीरास के भागीदार ठहराये गये हैं (इफिसियों 1:13–14)।

15. मध्यस्थता

पवित्रात्मा परमेश्वर पिता की मनसा जानकर हमारे लिये प्रार्थना करता है (रोमियों 8:26)।

16. वरदान बांटना

प्रभु यीशु मसीह जब पिता के पास वापस ऊपर गया तो मनुष्यों को दान दिया। इफिसियों 4:11 में अन्तिम वरदान मनुष्यों को जो यीशु पर विश्वास करते थे, पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये (1 कुरिन्थियों 12:11, 18; इब्रानियों 2:4)।

आत्मिक वरदान परमेश्वर द्वारा दी गई वह योग्यता है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में और परमेश्वर के पुत्र की देह के विस्तार के लिये कार्य करती है (1 कुरिन्थियों 12)। प्रत्येक विश्वासी के पास एक दान है जो वह एक दूसरे विश्वासियों की सेवा करने में लगाये (1 पतरस 4:10)।

आत्मिक वरदान कोई प्राकृतिक या अर्जित की गई योग्यता नहीं है पवित्रात्मा आप प्राकृतिक वरदान को आत्मिक वरदान के द्वारा चमकाता है। उदाहरण के लिये संगीत का वरदान बढ़ाने के वरदान के द्वारा प्रगट किया जायेगा (रोमियों 12:8)।

आपके पास कुछ अर्जित योग्यताएं होनी चाहिये जो आपके आत्मिक वरदानों को पूर्ण रूप से कार्य करने में सहायता प्रदान करें। उदाहरण के लिये यदि आपको सिखाने का वरदान मिला है (रोमियों 12:7, 1 कुरिन्थियों 12:28, इफिसियों 4:11) तो आपको परमेश्वर का वचन पढ़ना होगा और सीखना होगा कि कैसे सिखायें उन वचनों को (2 तीमुथियुस 2:15)। आने वाले सत्र में हम आत्मिक वरदानों के अध्ययन को आगे बढ़ायेंगे।

17. सिखाना

पवित्र आत्मा का एक महत्वूपर्ण कार्य है, हमें परमेश्वर की बातों को सिखाना (यूहन्ना 14:26)। वह हमें जैसी आवश्यकता होती है, वैसा ही शीघ्रता से सिखाता है (लूका 12:11–12) या हमें सीखने की प्रक्रिया से गुजारता है (यूहन्ना 16:13–15)।

पवित्रात्मा के सिखाने के द्वारा ही हम आत्मिक बातों को समझ सकते हैं, सीख सकते हैं (1 कुरिन्थियों 2:10–16)।

18. निर्देशन देना

पवित्रात्मा हमारा निर्देशक है हमारे संपूर्ण मसीही जीवन में हमारे निर्देशक के रूप में उसका मुख्य काम या उद्देश्य है, हमें मसीह यीशु के बारे में सिखाना (यूहन्ना 16:13) ताकि हम उस यीशु मसीह के जैसे बन सकें (1 कुरिन्थियों 11:1, इफिसियों 5:1)।

परमेश्वर की मनसा उसके वचन के द्वारा स्पष्ट रूप से हम पर प्रकट की गई है (1 तीमुथियुस 1:8–11, रोमियों 8:12–14)। विशेष रूप से नैतिक विषयों पर संपूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है (2 तीमुथियुस 3:16–17, 2 पतरस 1:21)। इस प्रकार हम लिखे हुए के माध्यम से उसकी इच्छा जान सकते हैं। जो हमारा निर्देशक बन जाता है।

जहां परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होती, जैसे किसी दो अच्छी चीज़ों में से हम किसे चुनें जब हम यह तय नहीं कर पाते तब हमें अपने आपको रोमियों 12:1 के अनुसार जीवित और पवित्र बलिदान करके चढ़ाना है ताकि हम उस विषय पर परमेश्वर की भली भांति और सिद्ध इच्छा को अनुभव से मालूम कर सकें (रोमियों 12:2)।

पवित्र आत्मा की अगुवाई के लिये निम्नांकित संदर्भ देखें – प्रेरितों के काम 8:29, 10:19–20,13:2–4, 16:6–7, 20:20–23)।

19. आत्मा का फल

हमारे भीतर निवास करने वाले पवित्रात्मा की इच्छा है कि हम में आत्मा को फल लगे यह फल है, प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम (गलातियों 5:22–23)। इसलिये हमें पवित्रात्मा को यह अवसर देना चाहिये कि हमें मसीही चाल में सामर्थ प्रदान करें। ताकि शरीर और उसके पापमय कार्य आत्मा के द्वारा जीते जा सके (गलातियों 5:17–21)।

20. आनन्द और परमानंद

पवित्र आत्मा हमें भीतर से आनंदित रहने की प्रेरणा व सामर्थ देता है। यह आनंद भारी सताव के समय भी प्रकट होता रहता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। यह आनंद हमेशा दूसरों पर परमेश्वर की आशीष को देखकर होता रहता है, सिर्फ व्यक्तिगत आशीषों को देखकर नहीं, जो परमेश्वर से विश्वासी प्राप्त करता है (लूका 10:21)।

21. प्रेम का डाला जाना

जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है तब पवित्रात्मा के द्वारा उस व्यक्ति के मन में पवित्र प्रेम डाला जाता है जो कभी भी निराश नहीं होता (रोमियों 5:5)।

22. धार्मिकता, शान्ति और आनन्द

एक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा यह प्रकट करता है कि परमेश्वर के राज्य में वास्तविक एवं महत्वपूर्ण आशीषें आत्मिक आशीषें, भौतिक नहीं (रोमियों 14:17)।

23. सशक्तिकरण

पवित्र आत्मा विश्वासी को सृष्टि प्रदान करता है कि विश्वासी की आशा निरन्तर बढ़ती जाये (रोमियों 15:13)। ताकि वह उस सुसमाचार को जो शाश्वत और स्वर्गीय है लोगों को सुना सकें (1 पतरस 1:12)।

24. शुद्ध करना

हम विश्वासी अलग किये गये लोग हैं जो शुद्ध किये गये ताकि हम अपने परमेश्वर को स्तुति रूपी बलिदान चढ़ायें और अन्य अच्छे कार्य करें (रोमियों 15:16, इब्रानियों 13:15–16)। इस विशुद्धिकरण में नैतिक विषय भी जुड़े हैं धीरे–धीरे आत्मिक उन्नति के क्षेत्र में रूक जाते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:1–8)। हमारे विशुद्धिकरण का एक भाग यह है कि हम पवित्र आत्मा को कार्य करने दें, ताकि जैसा वह पवित्र है वैसे ही हमें भी पवित्र बना सके (1 पतरस 1:16)।

25. सहभागिता

पवित्र आत्मा ही है जो विश्वासियों के मध्य सहभागिता स्थापित करता है। यह सहभागिता प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से और पिता के प्रेम के कारण बनी रहती है (2 कुरिन्थियों 13:14)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 5 ख

2. नीचे दिये गये पदों को पढ़कर पवित्र आत्मा की भूमिका वर्णन करें:

क. अय्यूब 33:4
ख. यूहन्ना 16:13
ग. 1 कुरिन्थियों 2:12–16
घ. 2 पतरस 1:21
ङ. लूका 4:18
च. लूका 1:27 और 35
छ. यूहन्ना 16:8
ज. तीतुस 3:5
झ. मत्ती 3:11
ञ. इफिसियों
ट. यूहन्ना 14:16–17
ठ. इफिसियों 5:18
ड. इफिसियों 6:18
ढ. रोमियों 8:16–17
ण. रोमियों 8:26
त. 1 कुरिन्थियों 12:11 और 18
थ. यूहन्ना 14:26
द. गलातियों 5:22–23
ध. 1 थिस्सलुनीकियों 1:6
न. रोमियों 5:5
य. रोमियों 14:17
र. रोमियों 15:13
ल. रोमियों 15:16
व. 2 कुरिन्थियों 13:14

ग. पवित्रात्मा का निम्नांकित रूपों में भी वर्णन किया गया है:

- **एक और सहायक** यूहन्ना 14:16 में यीशु ने पवित्रात्मा के सात्वना और प्रोत्साहन देने वालों के रूप में वर्णन किया।
- **सर्वशक्तिमान की सांस** अय्यूब 32:8; 33:4 के अनुसार परमेश्वर की सांस जो मनुष्यों को जीवन देने की सामर्थ रखता है।
- **दान** प्रेरितों के काम 2:38, 8:19, 20, 14:15 सभी के अनुसार इसे परमेश्वर की ओर से दान कहा गया है।
- **सहायक** यूहन्ना 14:26 के अनुसार पवित्रात्मा का वह स्वरूप जो लोगों को सत्य सिखाने को उत्साहित है।
- वाचा एक बयाना जो हमारे उद्धार के चिन्ह के रूप में हमें दिया गया है। 2 कुरिन्थियों 1:22, 5:5; इफिसियों के नाम पौलुस की पत्री 1:14।
- **प्रतिज्ञात** पवित्रात्मा की हुई वह शक्ति है जो परमेश्वर की योजना के अंतर्गत ही आती है। प्रेरितों के काम 2:33 इफिसियों 1:13।
- **लेपालकपन की आत्मा** पवित्रात्मा इस रूप में हमें परमेश्वर के परिवार में ले आने की भूमिका अदा करता है। रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री 8:15।
- **न्याय करने वाली और भस्म करने वाली आत्मा** इस रूप में वह परमेश्वर के जैसे धार्मिकता और न्याय का पालन करता है (यशायाह 4:4)।
- **मसीह का आत्मा**–मसीह के आत्मा के रूप यह यीशु मसीह की मानवता की भूमिका को दर्शाता है (रोमियों 8:9; फिलिप्पियों 1:19; 1 पतरस 1:11)।

- **युक्ति और पराक्रम की आत्मा** इस रूप में पवित्रात्मा उन लोगों को जो जरूरतमंद है, दया दिखाता और सहारा देता है (यशायाह 11:2)।
- **विश्वास की आत्मा** इस रूप में पवित्र आत्मा अपने आपको विश्वास करने योग्य प्रमाणित करता है (1 पतरस 4:14)।
- **महिमा का आत्मा** यह रूप पवित्रात्मा के अपने ही महिमामय स्वरूप को प्रकट करता है (1 पतरस 4:14)।
- **परमेश्वर का आत्मा** यह रूप पवित्र आत्मा के अपने ही दैवीय स्वरूप को प्रकट करता है (उत्पत्ति 1:2, निर्गमन 31:3, गिनती 24:2, 1 शमूएल 10:10, 11:6, 19:20, 23; 2 इतिहास 15:1, 24:20, अय्यूब 33:4, भजन संहिता 106:33, यहेजकेल 11:24, मत्ती 3:16, 12:28, रोमियों 8:9, 14, 1 कुरिन्थियों 2:11, 14, 7:40, 12:3, इफिसियों 4:30, फिलिप्पियों 3:3, 1 यूहन्ना 4:2)।
- **एक दैवीय आत्मा** यह रूप उसके ही ईश्वरीय प्रवृति को प्रकट करता है (उत्पत्ति 41:38)।
- **एक अनुग्रह करने वाली और प्रार्थना सिखाने वाली आत्मा** यह रूप पवित्रात्मा के उस स्वाभाव को प्रकट करता है जो अनुग्रह करता है और सदा प्रार्थना को सुनने के लिये इच्छुक रहता है (जकर्याह 12:10)।
- **उसके पुत्र का आत्मा** यह रूप परमेश्वर के त्रिएकत्व को प्रकट करता है (गलतियों 4:6)।
- **पवित्रता का आत्मा** अर्थात् वह सिर्फ एक आत्मा ही नहीं जो कि पवित्र है बल्कि यह पवित्रता के वास्तविकता को भी प्रकट करता है (रोमियों 1:4)।
- **न्याय करने वाली आत्मा और भस्म करने वाली आत्मा** यह रूप पवित्रात्मा के न्याय करने और दंड देने के स्वाभाव को दर्शाता है (यशायाह 4:4)।
- **न्याय करने वाली आत्मा** यह रूप उसके न्यायी निष्पक्ष स्वाभाव को दर्शाता है (यशायाह 28:6)।
- **ज्ञान और परमेश्वर के भय की आत्मा** यह रूप परमेश्वर के उस ज्ञान को जो वह देता है और उस आदर को दिखाता है जो उस ज्ञान के द्वारा परमेश्वर के प्रति हमारे मनों में आता है (यशायाह 11:2)।
- **जीवन की आत्मा** इस रूप में परमेश्वर का आत्मा लोगों को अध्यात्मिक जीवन प्रदान करता है (रोमियों 8:2)।
- **हमारे परमेश्वर की आत्मा** यह स्वरूप पवित्रात्मा की उस भूमिका को प्रकट करता है जो वह कलीसिया के जीवन में करता है (1 कुरिन्थियों 6:11)।
- **जीवित परमेश्वर की आत्मा** इस रूप में परमेश्वर जो जीवित है, मूर्तियों से बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि मूर्तियां तो बेजान है (2 कुरिन्थियों 3:3)।
- **प्रभु का आत्मा** यह रूप पवित्रात्मा के उस सहायक के रूप को दर्शाता है जो अपने स्वामी की सहायता के लिये है (लूका 4:18; प्रेरितों के काम 5:9, 8:39, 2 कुरिन्थियों 3:17)।
- **प्रभु परमेश्वर का आत्मा** इस रूप में पवित्रात्मा अपने स्वामी परमेश्वर के सहायक के रूप में दिखाई देता है (यशायाह 61:1)।
- **सत्य का आत्मा** क्योंकि उसमें झूठ नहीं (यूहन्ना 14:17, 15:26, 16:13, 1 यूहन्ना 4:6)।
- **बुद्धि और समझ की आत्मा** – ये उसकी योग्यता के विषय संदर्भ देता है कि परमेश्वर के वचन का सही इस्तेमाल और जीवन में लागू करने का है (यशायाह 11:2)।
- **बुद्धि और प्रगट करने की आत्मा** – उसकी एक को परमेश्वर के वचन को सही तरह से अगुवाई करने में करता जिससे मसीह के विषय जान सकें (इफिसियों 1:17)।
- **सर्वशक्तिमान की आवाज** – परमेश्वर के वचन में उसके संचार की भूमिका (यहेजकेल 1:24)।
- **प्रभु की आवाज** – सर्वोच्च अधिकार के विषय में बताना (यशायाह 6:8)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 5, भाग 5 ग

3. **आत्मा के व्यक्ति के विषय विभिन्न वर्णनों को लें जो "भाग ग" में सूची में दिये गये हैं और नीचे आत्मा की गतिविधियों से सम्बन्ध जोड़ो। ये फिर इन वर्णनों को एक से अधिक वर्ग में संबंधित करेंगे। आप शायद इन गतिविधियों को क,ख,ग, आदि में चिन्ह करना चाहें।**

   क. उसकी भूमिका

   ख. उसका व्यक्तित्व

अध्याय 6

परमेश्वर के उत्पादन की धार्मिक शिक्षाएं

भाग 1
सृष्टि (कोस्मोलोजी)

बाइबल का प्रथम वचन बताता है कि ***आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की*** (उत्पत्ति 1:1)। इब्रानी शब्द का अर्थ यदि देखें तो सृष्टि करने का अर्थ होता है कुछ नया सृजन अर्थात् कुछ नहीं से कुछ बनाना। केवल परमेश्वर ही "बारा" वस्तुओं को संसार में लाया।

परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया यह सच्चाई कई बाइबल संदर्भों द्वारा मिलता है (यशायाह 40:26–28; 42:5, 45:12, 18)। इस तथ्य को हमें मानना ही पड़ता है क्योंकि यह मानव जाति के सबसे बड़े प्रश्न का उत्तर देता है मनुष्य जाति की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका उत्तर है–परमेश्वर ने सृष्टि की।

इब्रानियों की पुस्तक बताती है कि ***संसार की सृष्टि परमेश्वर के वचनों से हुई*** (इब्रानियों 11:3)। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने कहा और हो गया। परमेश्वर के अधिकार एवं सामर्थ से सृष्टि बनाई गई न कि विकास के चरणों से (भजन संहिता 33:6, 148:4–5)।

बाइबल यह भी बताती है कि परमेश्वर ने संपूर्ण प्राणियों को रचा (उत्पत्ति 1:21)। मनुष्यों के प्राण को भी (उत्पत्ति 1:27, 5:2, 6:7, यशायाह 45:12) और फिर सृजन के कार्य से विश्राम किया (उत्पत्ति 2:3–4)। भविष्य में एक दिन यह निश्चय ही नए स्वर्ग एवं पृथ्वी (यशायाह 65:17, 2 पतरस 3:10–13; प्रकाशितवाक्य 21:1) की रचना करेगा।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 6, भाग 1

1. **पढ़ें उत्पत्ति 1:1 – स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि किसने की?**
2. **पढ़ें इब्रानियों 11:3 – परमेश्वर ने उन्हें कैसे बनाया?**
3. **पढ़ें उत्पत्ति 1:2–31 – परमेश्वर ने और कुछ क्या सृजा?**
4. **पढ़ें 2 पतरस 3:10–13 और प्रकाशितवाक्य 21:1 – परमेश्वर भविष्य में और क्या सृजेगा?**

भाग 2
स्वर्गदूत (एन्जीलोजी)

क. उसका व्यक्तित्व

मानव जाति को छोड़कर बुद्धिमान जीवी भी है यह बाइबल बताती है और वे हैं स्वर्गदूत। इनका वचन में कई बार, उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य में मिलता है। एंजल शब्द का अर्थ इब्रानी में (मलाचिएक) और यूनानी भाषा में (एगीलोस) इसका अर्थ हैं। "संदेशवाहक"। ये जीवी सोचने की संबंधी बनाने एवं बुद्धिमानी भी रखते हैं (मत्ती 8:29, 2 कुरिन्थियों 11:3, 1 पतरस 1:12) वे संवेदनशील है (लूका 2:13, याकूब 3:19, प्रकाशितवाक्य 12:17), चुनाव करने की क्षमता रखते हैं। (लूका 8:28–31, 2 तीमुथियुस 2:26, यूहदा 7) ये व्यक्तिगत जीव हैं।

स्वर्गदूत, आत्मिक जीव हैं (इब्रानियों 1:14 वे परमेश्वर की आज्ञा से मानव रूप धारण कर सकते हैं (लूका 2:9, 24:4)। ये अलौकिक जीव हैं जिनको मनुष्यों से ऊपर का दर्जा दिया गया है (इब्रानियों 2:7)। इसलिये वे मनुष्यों से ज्यादा शक्तिशाली एवं बुद्धिमान हैं (प्रकाशितवाक्य 10:1–3)। तौभी वे सब बातें जान नहीं सकते और पूरी नहीं रख सकते, न वे परमेश्वर के समान हर जगह उपस्थित हो सकते (1 पतरस 1:12, मत्ती 25:41)।

धर्मशास्त्र में हमें केवल 3 नाम दिये गये हैं – वे हैं मीकाएल (दानिय्येल 10:13, 21, 12:1) (यहूदा 1:9, प्रकाशितवाक्य 12:7) जिब्राएल (दानिय्येल 8:16, 9:21, लूका 1:19, 26) और शैतान (प्रकाशितवाक्य 12:9)।

ख. उन्हें बनाने वाला (सृष्टिकर्ता)

स्वर्गदूतों को परमेश्वर ने बनाया (भजन संहिता 148:2–5)। इससे कुछ पहले जब परमेश्वर ने पृथ्वी को रहने लायक स्थान बना (अय्यूब 38:7)। इसलिये कि स्वर्गदूत अपने समान संतान पैदा नहीं करते (लूका 20:35) और उसकी मृत्यु नहीं होती (लूका 20:36)। उनकी संख्या वैसी ही रहती है। हमें नहीं बताया गया है कि वे कितने हैं पर हमें यह ज्ञात है कि उनकी संख्या बहुत अधिक है (इब्रानियों 12:22, प्रकाशितवाक्य 5:11)।

हम इस बात को मानते एवं जानते हैं कि परमेश्वर ही सिद्ध है बिना पाप का है (मत्ती 5:48, 2 कुरिन्थियों 5:21)। वह सिद्ध है इसलिये हर एक रचना जो ईश्वर रचता है वह भी सिद्ध है (भजन 5:4)। शैतान भी पापरहित सृजा गया पर उसने परमेश्वर का विरोध करने का चुनाव किया (यहेजकेल 28:12–15, यशायाह 14:12–24)।

कुछ लागों को यह विश्वास है कि स्वर्गदूत मनुष्य है जिनकी मृत्यु हो गई लेकिन यह बात स्पष्ट है कि वे मनुष्यों से पहले सृजे गए और वे मनुष्य नहीं हैं जो मृतक हैं लेकिन वे भिन्न और विशिष्ट कृतियां हैं।

ग. उनका संगठन

हमें ज्ञात है कि स्वर्गदूतों की पदवी है और संगठन भी है उनकी एक सभा है (भजन संहिता 89:5,7)। वे युद्ध के लिए संगठित होते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:7)।

सबसे ऊंची पदवी का स्वर्गदूत प्रधान स्वर्गदूत है उनके नाम का अर्थ है शासक स्वर्गदूत मीकाईल जो प्रमुख राजकुमार कहलाता है (दानिय्येल 10:13)। वह भी एक प्रधान स्वर्गदूत है। उसके विषय में यह बयान मिलता है कि वह परमेश्वर के स्वर्गदूतों की अगुवाई करता है जब शैतान के विरुद्ध युद्ध होता है (प्रकाशितवाक्य 12:7)। इससे यह प्रदर्शित होता है कि वह एकमात्र प्रधानदूत है। उसका पास एक स्पष्ट स्वर है (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

हम यह भी देखते हैं कि स्वर्गदूतों को शासक भी कहा गया है (रोमियों 8:38, इफिसियों 1:21, 2:2, 3:10, 6:12, कुलुस्सियों 1:16, 2:10, 15, 1 पतरस 3:22)। प्रधानताएं (2 पतरस 2:11 या सिंहासन (इफिसियों 1:21, कुलुस्सियों 1:10, 2 पतरस 2:10, यहूदा 1:8)। उपरोक्त संदर्भों उन दूतों की स्थिति एवं कार्यों के विषय में बताते हैं जो स्वर्गदूतों के क्षेत्र में होते हैं।

दो और भी, समूह के स्वर्गदूत है जो सरूफ़ीम और करूबीम कहलाते हैं। सरूफिमियों का वर्णन बाइबल के एक ही अध्याय में मिलता है। इनके छः पंख और एक मानवीय शरीर है। यशायाह 6:2,6)। इनके नाम का अर्थ है जलाना। इनका कार्य है– आग के द्वारा साफ करना।

करूबीम एक अन्य प्रकार के स्वर्गदूत हैं, वे कुछ ऊंचा पद रखते हैं क्योंकि उनमें से एक शैतान था (यहेजकेल 28:14,16)। आदम और हव्वा के पत्ते के साथ जब उन्हें अदन की वाटिका के बाहर निकाला गया तब करूबीम का उपयोग लोगों को अदन की वाटिका में जाने से रोकने एवं जीवन के वृक्ष के समीप जाने से रोकने के लिए किया गया (उत्पत्ति 3:24)।

करूबीम तम्बू में वाचा के संदूक के एक भाग बनाकर उपयोग के लिये रचे गये थे (निर्गमन 25:18–22)। पदों (निर्गमन 26:1) और (निर्गमन 26:31) के भी वे भाग थे मूसा परमेश्वर की आवाज अनुग्रह के सिंहासन के ऊपर से एवं दोनों करूबीम के बीच से सुनते थे (गिनती 7:89)।

करुबीम सुलैमान के मंदिर के भी जरूरी भाग थे। दो करूबीम जैतून की लकड़ी से बनाये गये थे और उन पर सोना चढ़ा था और ये करुबीम 15 फीट ऊंचे थे (1 राजा 6:23–28)। उनके पंख वाचा के संदूक के ऊपर फैले थे (1 राजा 8:6–7) और इन्हें दीवरों पर भी काढ़ा गया था। भीतरी भाग के दरवाजों पर भी (1 राजा 6:29–55)। उन्हें मंदिर के लकड़ी के सामानों पर भी स्थान दिया गया था (1 राजा 7:29, 36)।

यहेबजकेल के एक दर्शन में करुबीम परमेश्वर के सिंहासन के कमरे को स्थानान्तरित करता है (यहेजकेल 10:1–22)। धर्मशास्त्र के हिस्सों से यह स्पष्ट है जो उनके विषय वर्णन किया गया है कि करुबीम का इतिहास में महत्वपूर्ण भाग है, भले ही वह आसानी से समझा नहीं गया है। उनकी भूमि अभी समाप्त नहीं हो गई है क्योंकि वे हजार वर्ष के मन्दिर का हिस्सा होंगे – जो अभी होने वाला है (यहेजकेल 41:18,20,25)।

करुबीम के विषय जो बात स्पष्ट है वो ये है कि वे परमेश्वर की योजना के विशेष और महत्वपूर्ण भाग हैं। हम उनकी भूमिका के विषय आगे विस्तार से बतायेंगे।

घ. इन स्वर्गदूतों की सेवकाई

मानव इतिहास अनेकों घटनाओं में स्वर्गदूतों का समावेश था और वे उपस्थित हैं। जब परमेश्वर ने पृथ्वी को रहने योग्य बनाया तो वे स्तुति एवं आनन्द मना रहे थे (अय्यूब 38:6–7)। मूसा की व्यवस्था देते समय भी वे विद्यमान थे (गलातियों 3:19, इब्रानियों 2:2) और बहुधा परमेश्वर की सच्चाइयों के प्रगटीकरण में भी सम्भागी थे (दानिय्येल 7:15–27, 8:13–26, 9:20–27, लूका 1:1, 22:6,8)। वे केवल इस्राएल के लिए ही नहीं (दानिय्येल 12:1)। लेकिन अन्य देशों के लिए भी चिन्तित हैं (दानिय्येल 4:17, 10:21, 11:1, प्रकाशितवाक्य 8:9–16)।

स्वर्गदूतों ने यीशु के जन्म की पूर्व घोषणा की (मत्ती 1:20)। यीशु के माता–पिता को मिस्र भागने की चेतावनी दी (मत्ती 2:13–15)। उन्हें बताया कि वे मिस्र से कब लौटें (मत्ती 2:19–21)। शैतान की परीक्षा के तुरंत बाद यीशु की सेवा पहल की (मत्ती 4:11)। गतसमनी के बगीचे में (लूका 92:43)। यीशु के साथ थे; यीशु के जी उठने पर (मत्ती 28:1,2) और पिता के पास स्वर्गारोहण के समय (प्रेरित 1:10–11)।

स्वर्गदूत प्रारंभिक कलीसियाओं के समय भी बड़े सक्रिय थे। प्रचारकों को निर्देशित करना और वे जो सुसमाचार सुनने के लिये तैयार थे (प्रेरित 8:26, 10:3)। जिन्हें निर्देशों की आवश्यकता थी उन्हें निर्देश न देना प्रेरित 12:5–10)। लोगों को खतरे से बचाना (प्रेरित 12:11)। वे यीशु के पुर्नरागमन के समय की परिस्थितियों में भी शामिल रहेंगे (मत्ती 25:31, 2 थिस्सलुनीकियों 1:7) न्याय के समय की (प्रकाशितवाक्य 7:1,8:2)।

स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति करते हैं (भजन संहिता 148:1–2, यशायाह 6:3) आराधना करते है (इब्रानियों 1:6, प्रकाशितवाक्य 5:8–13) और परमेश्वर के निर्देशों का वहन करते हैं (भजन संहिता 103:20, प्रकाशितवाक्य 22:9)।

स्वर्गदूत अधर्मियों के न्याय में भी भूमिका अदा करते हैं। वे न्याय के आने की घोषणा करते हैं (उत्पत्ति 19:13, प्रकाशितवाक्य 14:6–7, 19:17–18)। परमेश्वर के निर्देश अनुसार न्याय चुकाते हैं (प्रेरित 12:23, प्रकाशितवाक्य 16:1) और अन्त में धर्मियों को अधर्मियों से अलग करने में इस्तेमाल लिये जायेंगे (मत्ती 13:39–40)।

स्वर्गदूत अभी भी विश्वासियों की सहायता करते हैं (इब्रानियों 1:14)। और वास्तव में उनसे सीखते हैं (इफिसियों 3:8–10, 1 पतरस 1:10–12) विशेष परिस्थितियों में वे आकर हमें हमारी आवश्यकताओं में प्रोत्साहित कर सकते हैं (प्रेरित 27:23–24)। जब हम मरते हैं तो स्वर्गदूत हमें स्वर्गीय घर ले जायेंगे (लूका 16:22)।

ङ. शैतान

1. शैतान क्या है

शैतान व्यक्तिगत जीव है। उसके पास बुद्धिमानी है, (2 कुरिन्थियों 11:3) संवेदनाएं (प्रकाशितवाक्य 12:17, लूका 22:31) और चुनाव करने की क्षमता है (यशायाह 14:12–14, 2 तीमुथियुस 2:26)। कुछ लोगों का मत है शैतान व्यक्तिगत नहीं पर दुष्ट का प्रभाव है। यीशु ने यह स्पष्ट किया कि शैतान अपनी क्रियाओं हेतु जिम्मेदार है और एक दिन उसे आग की झील का दण्ड मिलेगा (मत्ती 25:41)। एक प्रभाव को दण्डित करना संभव नहीं है। इसलिए उसके अस्तित्व को नकारना यीशु की सच्चाई पर संदेह करना होगा। शैतान ने मनुष्यों में परमेश्वर के वचन पर शंका उत्पन्न करने का तरीका अपनाया है (उत्पत्ति 3:1–5)।

2. क्या हुआ

शैतान सबसे उच्च पद का करूबीम था जो सिद्ध बनाया गया था पर उसने पाप किया (यहेजकेल 28:12–15) जहां "सूर का राजा" को उदाहरण के लिये इस्तेमाल किया गया है हमें सिखाने के लिये कि शैतान को क्या हुआ। सूर के राजा उसके ऊपर लगाये हुए थे (28:13) और ये कि उसने अपने भक्त की प्रतिष्ठा की (28:18)। ये संकेत देता है कि वह स्वर्गदूतों का महायाजक था। जैसे महायाजक और उसके "व्यापार की बहुतायत से" (उसके पदोन्नति का संदर्भ देता है) वह स्थिरता से स्वर्गदूतों के एक तिहाई की अगुवाई कर सकता था जो दूसरे स्वर्गदूत भटक गये थे (प्रकाशितवाक्य 12:14)।

शैतान ने परमेश्वर को बदलने का निश्चय किया। ये उसके वर्णन में पाया जाता है (यशायाह 14:12–14) उसका मुख्य पाप घमण्ड था (1 तीमुथियुस 3:6) और पांच वर्णनों में पाया जाता है स्वयं की इच्छा में (मैं क्या चाहता हूं, कोई परवाह नहीं परमेश्वर क्या चाहता है) यशायाह में रिकार्ड किया गया है। शैतान वो है जिसने पाप उत्पन्न किया (यहेजकेल 28:15) और उसके लिये जिम्मेवार है (मत्ती 25:41) यह उसके हृदय से आया (यशायाह 14:13)।

शैतान की स्वयं की इच्छा का पहला प्रदर्शन ये है ***"मैं स्वर्ग में चढ़ूंगा"*** जो उसके लक्ष्य को संदर्भ देता है कि परमेश्वर के तुल्य हो जाऊं। उसका दूसरा वर्णन, ***"मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के सितारे से ऊंचा करूंगा"*** ये उसकी अभिलाषा को दर्शाता है कि वह स्वर्ग में सब स्वर्गदूतों पर शासन करना चाहता था। तीसरा वर्णन, ***"मैं उत्तर के पहाड़ों पर बैठूंगा"*** ये बाबुलियों के देवताओं का सन्दर्भ देता है कि वे संसार पर राज्य करें। उसकी चौथी इच्छा, ***"मैं बादलों की सर्वोच्य ऊंचाई पर चढ़ूंगा"*** उस महिमा की चाह जो परमेश्वर की है (जो अक्सर बादलों से जुड़ी है) पांचवा वर्णन, ***"मैं अपने आपको सबसे उच्च की तरह बनाऊंगा"।*** उसकी अधिकार की इच्छा और कि परमेश्वर का स्थान ले लूं।

शैतान के पाप के असली कारणों को सीखने के बाद – ये देखना आसान है कि हमें क्यों निर्देश दिया गया है, ***"विरोध और झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो"*** (फिलिप्पियों 2:3)। यदि हमारे अन्दर घमण्ड है और स्वयं की इच्छा तो हम शैतान का अनुसरण कर रहे हैं।

3. शैतान के नाम और शीर्षक

शैतान को भोर का तारा कहा गया (यशायाह 14:12)। इसका अर्थ है कि ज्योति को ले जाने वाला लैटिन भाषा में लूसीफर यीशु मसीह ही वास्तविक भोर का तारा है (प्रकाशितवाक्य 22:16)। यह प्रमाणित होता है शैतान अपने गिराये जाने के समय से यीशु की बराबरी करना चाहता है।

उसे शैतान कहते हैं। यह नाम इब्रानी भाषा के शब्द से आया है जिसका अर्थ है वह जो विरोध करता है, (गिनती 22:12–32, 1 शमूएल 29:4, 2 शमूएल 19:22, 1 राजा 5:4, 1:14, 23,25, 1 इतिहास 21:1, अय्यूब 1:67, 8,9, 12, 2:1, 2,3,4,5,6,7 भजन संहिता 109:6, जर्कयाह 3:1–2, मत्ती 4:10, 12:26, 16:23, मरकुस 1:13, 3:23, 36, 4:15, 8:33, लूका 10:18, 11:18, 13:16, 22:3, 31, यूहन्ना 13:7, प्रेरित 5:3, 26:18)। शैतान लगातार विश्वासियों पर दोष लगाता है (प्रकाशितवाक्य 12:10) पर प्रभु मसीह बचाते हैं (1 यूहन्ना 2:1–2)। शैतान लोगों को पाप करने हेतु परीक्षा करता है (उत्पत्ति 3:1–5, मत्ती 4:3, 1 थिस्सलुनीकियों 3:5, प्रेरित 5:3, 1 कुरि 7:5)।

वह दुष्ट कहलाता है वह शीर्षक ग्रीक शब्द डाइबोलोस शब्द का अर्थ झूठा जो किसी के विषय में झूठ बोलता है। मत्ती 4:1, 5,8,11,13:9, 25:41, लूका 4:2, 3,6, 13, 8:12, यूहन्ना 6:70, 8:44, 13:2, प्रेरित 10:38, 13:10, इफिसियों 4:27, 6:11, 1 तीमुथियुस 3:6,7।

वह पुराना सर्प कहलाता है दुष्टात्माई और चालाकी से भरा (उत्पत्ति 3:1,2,4,13,14, 2 कुरिन्थियों 11:3, प्रकाशितवाक्य 12, 9, 14, 15, 20:2।

वह महान लाल सर्प कहलाता है (प्रकाशितवाक्य 12:3,4,7,9,13,16,17, 13:2, 4,11,16:13, 20:2) वह बालजबूल कहलाता है जिसका अर्थ गोबर के ढेरों का स्वामी (मत्ती 10:25, 12:24, 27, मरकुस 3:22, लूका 11:15,18,19)।

पौलुस प्रेरित ने उसे एक बार बलियाल कहा जिसका अर्थ दुष्टात्मा एवं जिसकी कोई भी कीमत न हो (2 कुरिन्थियों 6:15)।

यह ***संसार का शासक*** कहलाता है (यूहन्ना 13:31)। इस ***संसार का ईश्वर*** (2 कुरिन्थियों 4:4)। ***आकाश की सेनाओं का सरदार*** (इफिसियों 2:2) ***वह आत्मा जो आज्ञा न मानने वालों में अब भी कार्य करता है*** (इफिसियों 2:2)। ये सभी संदर्भ यह बताते हैं कि वह ईश्वर विरोधी है।

4. उसके वर्तमान क्रियाकलाप

शैतान की पूरी योजना यह है कि परमेश्वर की बनाई हुई योजनाओं को नष्ट करना। जिसके द्वारा वह अपनी इच्छा पूर्ण कर लें (यशायाह 14:12–14)। परमेश्वर की योजना को ध्वस्त करें–परमेश्वर को छोड़ना। इस कार्य के लिये उसे किसी भी दुष्ट शक्ति का भी उपयोग क्यों न करना पड़े (1 तीमुथियुस 1) और मानव जाति को भी 2 कुरिन्थियों 11:13–15)।

शैतान परमेश्वर की योजना पर हमला करने की योजना बनाता है – साधारण पद्धतियों को शामिल करता परमेश्वर के विरोध में। ये साधारण पद्यति यूनानी शब्द संसार के लिये आता है जो "कोसमोस" है; "कोसमोस" का मुख्य विचार "आज्ञा" से है।

अपनी योजनाओं में कामयाब होने के लिये यह सबसे पहले मनों को अंधा करता है (2 कुरिन्थियों 4:4)। जिससे अविश्वासी यीशु मसीह के सुसमाचार को ग्रहण न करें एवं उन सत्य के वचनों की चोरी कर लेता है। जो उन्होंने प्रभु के विषय में सुना था (लूका 8:12)। ***लोग भक्ति का भेष तो धरेंगे लेकिन शक्ति को नहीं मानेंगे*** (2 तीमुथियस 3:5)। बाहरी रूप से ऐसे लोग मसीही दिखेंगे लेकिन भीतर से शैतान (मत्ती 23:25–26)। शैतान एक व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य से जाने से रोकने का भरपूर प्रयास करता है (कुलुस्सियों 1:13, 1 यूहन्ना 2:15–17)।

जब एक व्यक्ति यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करता है और जब वह संसार को जीत लेता है तो शैतान उसे अकेला नहीं छोड़ता। वह एक चोर की नाईं चोरी करने, घात और हत्या करने आता है (यूहन्ना 10:10)। वह मानव जाति से चिढ़ता है (भजन संहिता 69:1–4, मत्ती 10:22)।

मुख्य बात जो वह नष्ट करना चाहता है वह है मसीही गवाही, जिससे दूसरे लोग परमेश्वर के राज्य में आना नहीं चाहेंगे। वह विश्वासी की परीक्षा करता है कि वह संसार के सदृष्य व उसके स्तर का हो (1 थिस्सलुनीकियों 3:5, 1 यूहन्ना 2:15–17)। वह विश्वासी की अनैतिक कार्य करने की परीक्षा में डालता है (1 कुरिन्थियों 7:5)।

"सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाये" (1 पतरस 5:8)। इसका मतलब है वह किसी की खोज में है जो उसकी परीक्षा का शिकार बन कर गिर जायेगा जिससे वह भाइयों को दोष लगा सके (प्रकाशितवाक्य 12:10)। वह अपना पूरा जोर विश्वासी पर लगायेगा और परमेश्वर का चेला होने से रोक लगा सके (लूका 22:31)।

विश्वासी को ये दिमाग में रखना चाहिये कि शैतान अपने स्वाभाव के अनुसार (यूहन्ना 8:44) सही चाल नहीं चलता। वह किसी को भी इस्तेमाल कर सकता है कि उसका उद्देश्य पूरा हो सके।

च. शैतान के दूत

शैतान के दूत वे हैं जो उसके साथ जाना चाहते हैं और वह एक तिहाई दूतों को शामिल करता है (प्रकाशितवाक्य 12:4) ये स्वर्गदूत या तो दुष्टात्माएं या अशुद्ध आत्माएं कहलाती हैं। वे ऐसी जीव हैं जिन्होंने उससे विरोध किया क्योंकि वह उनका सरदार है (मत्ती 12:24)। ग्रीक शब्द में डीमन का अर्थ है निचले स्तर के देवी देवता, अशुद्ध आत्माएं वे हैं जो पाप में एवं दुष्टात्मा में संलग्न है। दुष्ट शक्तियां शरीर से मजबूत है वे अपने अंदर कोई शक्तियों को समा के रखती है (मरकुस 5:3, प्रेरित 19:16)।

शैतान के दूत बुद्धिमान भी हैं जब उन्होंने यीशु को पहचाना (मरकुस 1:24) उन्हें अपने स्वयं और वास स्थान पर स्मरण आया (मत्ती 8:29) और स्वयं के सिद्धान्त एवं पदोन्नति के सिद्धांत मालूम है (1 तीमुथियुस 4:1–3)। वे उद्धार की योजना जो जानते हैं पर ग्रहण नहीं करते (याकूब 2:9)।

शैतान के दूतों की गतिविधियां हर चीज़ को शामिल करती जो परमेश्वर का विरोध करती हैं। वह उसकी प्रकाशित इच्छा को नष्ट करना चाहते हैं।

दुष्ट शक्तियां सभी प्रकार की मूर्तिपूजा और जादुई कला में संलग्न हैं (प्रेरित 16:16)। मूर्तिपूजा तब प्रदर्शित होती है जब एक व्यक्ति अपने और परमेश्वर के बीच किसी भी वस्तु को लाता है। मूर्ति लकड़ी या पत्थर की हो सकती है। यह एक व्यक्ति भी हो सकता है जब मसीह विरोधी के आराधक उस समय दिखेंगे (प्रकाशितवाक्य 135) मनुष्य यहां तक की (यूहन्ना 5:39,40)। दुष्टशक्ति यह चाहती है कि उसके आराधक किसी की भी पूजा करें केवल जीवते परमेश्वर की नहीं।

दुष्ट शक्तियां झूठा धर्म भी प्रेरित करते हैं। झूठा धर्म विश्वास का एक ऐसा तंत्र हैं जो ऐसे उद्धारक की आराधना करवाता है जिसकी कोई महत्ता नहीं है (1 यूहन्ना 4:1–4) कार्यों के द्वारा उद्धार (1 तीमुथियुस 4:3–4, इफिसियों 2:8–9) एक ऐसी स्वतंत्रता जो पापमय क्रियायें करें और यह घोषणा करें कि बुराई ही भलाई है (प्रकाशितवाक्य 2:20–24, गलातियों 5:13, रोमियों 6:1)।

दुष्ट शक्तियां शारीरिक बीमारियां लाती हैं (मत्ती 9:33) या मानसिक समस्याएं (मरकुस 5:4–5) लेकिन सभी बीमारियां शैतानिक क्रियाओं के कारण नहीं है। बाइबल स्वभाविक बीमारियों और शैतानिक बीमारियों के मध्य भेद बनाती है (मत्ती 4:24, 1:32, 34, लूका 7:21, 9:1)।

दुष्ट शक्तियां मनुष्यों को ग्रसित कर लेती है (लूका 8:28–31) और जानवार को भी ग्रसित करती है (लूका 8:32–33)। ग्रसित होने का अर्थ है शारीरिक नियंत्रण करना। इस मनुष्य के भीतर जाकर शारीरिक नियंत्रण करना। इसीलिये हमें यह स्पष्ट रीति से बता दिया गया है कि ***वह जो तुममें वास करता है (पवित्र आत्मा) वह बड़ा है उससे जो संसार में है*** (1 यूहन्ना 4:4)। हमें यह नहीं मालूम है कि शैतान स्वयं स्वर्गदूत का रूप धारण करता है (2 कुरिन्थियों 11:13–15)। यह निर्णय लेना है कि कोई आत्मा यीशु मसीह को प्रभु होने से इंकार तो नहीं करती है (1 यूहन्ना 4:1–4)।

शैतान एक विश्वासी को धोखा देने का कई विधियां उपयोग करता है (2 कुरिन्थियों 2:11)। वह हमें प्रसिद्धि (पहचान) भाग्य (रुपया या धन) सामर्थ्य (अधिकार) या सुख के साधन पेश करेगा। उसकी चाल यह है कि वो विश्वासी को वो सब देना हो जो प्रभु उसे पहले ही दे चुके हैं परमेश्वर का पुत्र (1 यूहन्ना 3:11)। उसे भाग्य भी दे दिया क्योंकि अनन्त जीवन उसका है और स्वर्गीय देश की सदस्यता (इफिसियों 2:19, 20), उसने सामर्थ दी है क्योंकि उसका अब प्रभु से मेल हो गया है (रोमियों 8:12) उसने सुख सुविधा दी है। ***जिसमें वह ऐसी शांति जो समझ से परे है प्राप्त करें*** (फिलिप्पियों 4:7)।

जब हम शैतान के तरीकों के विषय में सीख रहे हैं तो हमें सावधान होना चाहिये क्योंकि यदि वह हमको परमेश्वर की पद्यति से अधिक उसकी पद्यति का अध्ययन करें तो वह विजय हासिल कर लेगा। शैतान अपनी पद्यति पर हजारों साल से कार्य कर रहा है और बहुत सी भीड़ मुकाबले के लिये तैयार कर रहा है। मुकाबले का पता करने का सबसे उत्तम तरीका ये है कि सही चीज़ को मालूम करो जिससे तुरन्त पहचान सको।

यदि हम या तो शैतान को देखने में या उसके दुष्ट आत्माओं को अपने जीवनों में देखने में असफल हों तो हम उसके संघर्ष में परमेश्वर और शैतान के बीच फंस जाते हैं – प्रेरित पौलुस स्पष्टता से हमें चितौनी देता है:–

> ***"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेवाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर रूको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रहो"*** (इफिसियों 6:12–13)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 6, भाग 2

1. नीचे दिये गये हिस्से को पढ़ें और बतायें कि स्वर्गदूतों की क्या विशेषता हैं:

क. 1 पतरस 1:12

ख. लूका 2:13

ग. यहूदा 6

2. पढ़ें लूका 24:4–क्या स्वर्गदूत मनुष्य का रूप ले सकते हैं?

3. पढ़ें इब्रानियों 2:6–7 – क्या वर्तमान में मानव ऊंचा व नीचा है उन सृष्टि से?

4. पढ़ें भजन 148:2–5। किसने स्वर्गदूतों को बनाया?
5. पढ़ें लूका 20:35 – क्या उनके बच्चे हैं?
6. पढ़ें इफिसियों 6:12। क्या शैतान के दूतों की संस्था है और उनके पद है?
7. पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:7 – कौन सा स्वर्गदूत परमेश्वर की सेनाओं का अगुवा हैं?
8. किस प्रकार के स्वर्गदूत का वर्णन धर्मशास्त्र में आया है, करूबीम और सरूफीम?
9. पढ़ें इब्रानियों 1:14। स्वर्गदूतों की प्राथमिक भूमिका क्या है?
10. पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:7–9। शैतान कौन है?
11. पढ़ें मत्ती 25:41। शैतान का अन्तिम अन्त क्या है?
12. पढ़ें यशायाह 14:12–14। शैतान का मूल पाप में क्या शामिल है?
13. "शैतान" नाम का क्या अर्थ है?
14. "शैतान" शीर्षक का क्या अर्थ है?
15. उसका वर्णन "सर्प" से क्या अर्थ है?
16. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 11:13–15। शैतान और उसके कार्यकर्ता धोखा देने के लिये क्या इस्तेमाल करते हैं?
17. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:4; शैतान और उसकी सेना क्या प्राप्त करना चाहती है?
18. शैतान के दूतों के दो मुख्य शीर्षक क्या हैं?
19. पढ़ें 1 यूहन्ना 4:1–4। कौन सा महत्वपूर्ण कारण है कि आत्मा सच्ची या झूठी है?
20. पढ़ें इफिसियों 6:12–13। विश्वासी की असली लड़ाई किसके विरुद्ध है?

भाग 3

मनुष्य (एन्थ्रोपोलॉजी)

क. मनुष्य की रचना

मनुष्य की सृजना की योजना परमेश्वर पिता, पुत्र एवं पवित्र आत्मा (जो परमेश्वर के रूप में दिखाएं गये हैं) ने की। यह योजना वचन के इस पद में प्रमाणित है आओ, हम मनुष्य को अपनी समानता में लाएं (उत्पत्ति 1:26)। त्रिएकत्व के प्रत्येक रूप मनुष्य को बनाने में सलंग्न थे।

यह योजना मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाने की थी, स्वरूप के लिए दो शब्द टेलीम इब्रानी भाषा में और ग्रीक भाषा में "डकीन" मनुष्य की वस्तुओं से संबंधित है समानता के लिये दो शब्द इब्रानी में डेमुथ और होमोयोसिस यूनानी में मनुष्य के अवास्तुविय भाग से है। मनुष्य जीवित, बुद्धिमान, नैतिक एवं निर्णय लेने की क्षमता रखेगा ये सब परमेश्वर के समान होगी पर परमेश्वर नहीं। अतः वह परमेश्वर में संगति कर पायेगा।

परमेश्वर पिता ने स्वयं पहला मनुष्य, आदम बनाया। उसने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से बनाया और ***उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और आदम जीवित प्राणी बना*** (उत्पति 2:7)। प्राणी शब्द का अर्थ इब्रानी भाषा में अर्थात् प्राण होता है। परमेश्वर ने वस्तु वाला भाग वस्तु अर्थात् भूमि के मिट्टी से बनाया। उसने उसके प्राण को वस्तु नहीं पर कुछ नहीं से बनाया (उत्पत्ति 1:27) फिर दोनों को मिलाकर मनुष्य बना था।

यह बात स्मरण रखें कि आदम एक मात्र ऐसी विशिष्ट रचना है जो स्वाभाविक रूप में जन्म नहीं लेकिन वह एक वयस्क पुरुष के रूप में रहा जिसके पास विवेक था, आदम वाटिका में रखा गया और उसने सब जंतुओं के नाम रखे (उत्पत्ति 2:8,19)।

परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है (उत्पत्ति 2:18)। इसलिये परमेश्वर ने यह निर्णय लिया कि वह आदम के लिए एक सहायक बनाएगा। उसका नाम नारी रखा जाएगा। क्योंकि वह पुरुष में से निकाली गई है। (उत्पत्ति 2:18–23) उसका नाम हव्वा रखा जायेगा ***क्योंकि वह सबकी माता कहलाएगी*** (उत्पत्ति 3:20)।

परमेश्वर ने आदम की पसली से हव्वा को बनाया अर्थात् उसने कुछ ऐसे तत्व का प्रयोग किया जो पहले से पृथ्वी पर विद्यमान था और उसे जीवन दिया (उत्त्पत्ति 2:21–23)। स्त्री एवं पुरुष दोनों सीधे, विशिष्ट एवं तुरंत किए जाने वाली सृष्टि हैं। वे एक निम्न कोटि के जीवन से उद्भभाव नहीं हुए थे।

परमेश्वर ने जानवर भी बनाये ***"धरती की धूल से"*** और उन्हें जीवन दिया (उत्पत्ति 2:19)। जानवरों को ***"परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनाया गया"*** जबकि कोई बहस नहीं कि उनके पास जीवन है और कुछ बहस करें कि उनके पास कुछ हद तक बुद्धि है, उनके पास नैतिक निर्णय करने की योग्यता नहीं है (सही और गलत के बीच का निर्णय) वे जीवित हैं पर कारण देने की योग्यता नहीं है (2 पतरस 2:12, यहूदा 1:10)।

ख. मनुष्य का पतन

आदम और हव्वा जिन्हें परमेश्वर ने बनाया वे अदन की वाटिका में रहते थे (उत्पत्ति 2:10, 15)। मनुष्य का कार्य था वाटिका की देखभाल और उसे बढ़ाना (उत्पत्ति 2:15)। परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि सब फलों को रख सकते हो केवल भरे बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को न खाना यह वृक्ष जीवन के वृक्ष के पास ही लगा था (उत्पत्ति 2:16)। परमेश्वर ने कहा था कि यदि वह इस वृक्ष के फल को खाएगा तो निश्चय ही मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

उत्पत्ति 2:17 संकेत देता है कि परमेश्वर के वचन के उल्लंघन की सज़ा उसके शरीर और आत्मा को प्रभावित करेगा (इब्रानी लेख वास्तव में उसी शब्द को दोहराता है और हकीकत में कहता है, "मरने के लिये, तुम मर जाओगे")।

"सर्प" (शैतान के द्वारा निवास किया गया प्रकाशितवाक्य 12:9) वह स्त्री के माध्यम से पुरुष के पास जाने योग्य हो गया था – वह हव्वा को धोखा देने योग्य था (2 कुरिन्थियों 11:3, 1 तीमुथियुस 2:14)। जिससे उसने मना किये फल को ले लिया। हव्वा ने तब फल को आदम को दिया और उसने भी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया (उत्पत्ति 3:6)।

आइये घटना को और अधिक विस्तार से संक्षिप्त रूप में देखेंगे जिसने मानव का पतन किया। नोट करें कि सर्प स्त्री के पास पहुंचा जो उस समय पुरुष के साथ नहीं थी। पुरुष को पूरे बाग का अधिकार था क्योंकि उसे उसकी "रखवाली" करनी थी (उत्पत्ति 2:15) दोनों पुरुष और स्त्री को बताया गया था कि विशेष फल को न खाना (उत्पत्ति 3:1)। सर्प उसके पीछे गया जो आसानी से फंदे में फंस सकता था।

सर्प ने एक प्रश्न से अपने वार्तालाप को प्रारंभ किया जो परमेश्वर की आज्ञा के ठीक विपरीत था। सर्प ने पूछा कि परमेश्वर ने क्या किसी भी वृक्ष का फल खाने से मना किया है (उत्पत्ति 3:1)। इस बेतुके प्रश्न से एक बात स्पष्ट थी कि यदि वे वाटिका का फल नहीं खा सकते तो उन्हें भोजन खाने के लिए वाटिका से बाहर जाना पड़ेगा। इस प्रश्न से परमेश्वर की भलाई पर प्रहार किया गया। यह प्रश्न ऐसा बनाया गया था। जिसके पता चले कि स्त्री को क्या मालूम है और उसने परमेश्वर की आज्ञा को कितनी गंभीरता से लिया।

सर्प के प्रति स्त्री की प्रतिक्रिया साफ प्रगट थी (उत्पत्ति 3:2–3)। वह सर्प के बयान की सही करना चाहती थी और उत्तर देती है। एक समस्या है कि वह वो शब्दों को इस्तेमाल करती है जो परमेश्वर की आज्ञा के नहीं हैं और इस प्रकार उसने उसमें जोड़ दिया, "मत छूना" कुछ लोग सोचते हैं कि आदम ने इस आज्ञा को जब हव्वा को बताया तो जोड़ दिया होगा। चाहे ये आदम था या हव्वा किसने शब्द जोड़ दिया – परिणाम तो एक ही है – उन्होंने परमेश्वर के वचन में जोड़ना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार उसकी परिपूर्णता पर प्रश्न पूछ रहे थे। शैतान ने उस अतिरिक्त बात को समाप्त कर सीधे परमेश्वर की सजा की चुनौती दी (उत्पत्ति 3:4) और उसके उद्देश्य को (उत्पत्ति 3:5) उसने "अच्छे और बुरे" के ज्ञान को प्रस्तुत किया – ऐसे कि परमेश्वर ने छिपा रखा कि इस लाभ को वे न जानें।

स्मरण करें कि "अच्छा" पहले ही से बताया गया जो परमेश्वर करता है (उत्पत्ति 1:4, 10,12, 18,21, 25,31; 2:9,12)। जिस प्रकार के "अच्छे" जिसे जानना नहीं है तो ऐसी चीज़ों में शामिल होना चाहिये जिसमें परमेश्वर का भाग न हो पर वे दूसरों के लिये हानिकारक नहीं हैं। उदाहरण के लिये एक प्यासे व्यक्ति को पीने का पानी दे कि उसकी पहचान एक सहायता करने वाले की तरह हो न कि इसलिये पानी पिलाता क्योंकि ये परमेश्वर की इच्छा है (मरकुस 9:41)। ये "अच्छा" कार्य है जो परमेश्वर को अलग रखता है जैसा हमने चर्चा की है – शैतान की इच्छा संसार में ऐसी बात उत्पन्न करने की है जिसमें परमेश्वर बाहर हो।

सर्प ने स्त्री की दृष्टि की ज्ञानेन्द्री और उसकी बुद्धि को भ्रष्ट किया (उत्पत्ति 3:6)। इस समय स्त्री ने विश्वास से चलना छोड़ दिया। परमेश्वर पर विश्वास करना छोड़कर स्त्री अपने में विश्वास करने लगी। शैतान ने कहा कि तुम परमेश्वर के तुल्य बुद्धिमान हो जाओ (उत्पत्ति 3:5)। यदि स्त्री परमेश्वर के तुल्य बुद्धिमान होती, तो वह परमेश्वर पर आश्रित नहीं होती और और स्वयं अपने लिये नियम बनाती।

यशायाह 14:12–14 के अनुसार शैतान अपने ईश्वरत्व को देना चाह रहा था जिसे पाने की उसे स्वयं आशा थी। हमें मालूम कि ***विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है।*** स्त्री ने जब उसे भले बुरे के ज्ञान के फल को खाया तब उसका भरोसा परमेश्वर पर नहीं था। शैतान ने स्त्री को यह विश्वास रहने के द्वारा धोखा दिया कि परमेश्वर वास्तव में अच्छा है, उसे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। और यह बिना विश्वास के इस जीवन का आनन्द उठा सकती है (2 कुरिन्थियों 11:3)।

तब धर्मशास्त्र कहता है कि ***उसने अपने पति को भी उस फल को खाने के लिये दिया*** (2 उत्पत्ति 3:6)। इस बीच आदम और हव्वा के किसी भी वार्तालाप का बयान धर्मशास्त्र में नहीं मिलता। केवल इस बात के लिए कि शैतान ने आदम को धोखा नहीं दिया (1 तीमुथियुस 2:14)। आदम ने एक चैतन्य चुनाव किया कि वचन कहता है उसने खाया, दोनों ने पाप किया लेकिन परिणाम भिन्न थे।

आदम और स्त्री ने एकदम जान लिया कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है और डर गये। अब वे अपने नंगेपन से शर्मिंदा थे (उत्पत्ति 2:25, 3:7) और अपनी शर्म की समस्या का समाधान अंजीर के पत्तों को जोड़कर वस्त्र बना लिये (उत्पत्ति 3:7) और तब परमेश्वर को अपने को छिपाने का प्रयास किया (उत्पत्ति 3:8)। ये मनुष्य का अपने आप को बचाने का पहला प्रयत्न था।

ग. मनुष्य के पतन के परिणाम

सर्प को स्वयं ही सर्वप्रथम इसका परिणाम भुगतना पड़ा कि वह संसार में मिट्टी चाटते अपना जीवन व्यतीत करेगा (उत्पत्ति 3:14)। सर्प शैतान नहीं था लेकिन शैतान सर्प था। शैतान इधर उधर पृथ्वी पर डोरा डालता था (अय्यूब 1:6, 2:1)। वह स्वर्ग में भी भाइयों पर दोष लगाने वाला था (प्रकाशितवाक्य 12:10, उत्पत्ति 3:14)।

इसलिये कि शैतान ही था जिसने सर्प को बात करने में समर्थ किया, उसका भी न्याय मिला, उसके और स्त्री के वंश से लगातार संघर्ष बना रहेगा (उत्पत्ति 3:15)। ये वास्तव में पहला हवाला मसीह के प्रति है। ये उसके विशेष जन्म के विषय बताता है – साधारणतः बीज पुरुष के लिये ही बताया जाता है (उत्पत्ति 12:7, 22:17, 18) कि मसीह एक कुंवारी से जन्मेगा जो धर्मशास्त्र में स्पष्ट बताया गया है (यशायाह 7:14)। ये भविष्यवाणी है जिसके चारों ओर और भी भविष्यवाणियां सम्बंधित हैं (प्रकाशितवाक्य 12:4–5)। सर्प मसीह की ऐड़ी को डसेगा (जो वास्तव में क्रूस की तस्वीर है) पर मसीह सर्प के सिर को कुचलेगा (जो विजय का संकेत देता है)।

पाप का पहला परिणाम : दोष की भावना (उत्पत्ति 3:7, अपने नंगेपन पर शर्म आना और सहभागिता से दूर होना (उत्पत्ति 3:18)। ***स्त्री के लिए दुःख से जच्चा की पीड़ा सहना*** (उत्पत्ति 3:16)। आदम ने हव्वा पर दोष लगाया (उत्पत्ति 3:17)। इससे स्पष्ट होता है कि आदम को हव्वा की बातें नहीं सुनना था यहां पर यह बात हो सकती है कि पुरुष सोचे कि स्त्री की कभी नहीं सुनना चाहिए। यह गलत है क्योंकि परमेश्वर ने ही इब्राहीम से कहा अपनी पत्नी की सुनना (उत्पत्ति 21:12)। आदम का पाप स्त्री को सुनने से नहीं था वरन् फल खाने के स्वयं के कारण था। इसका परिणाम यह हुआ कि वह परिश्रम करके अपनी रोटी खायेगा (उत्पत्ति 3:17,19)।

पाप के कारण आदम की आत्मिक मृत्यु हुई उसकी परमेश्वर से सहभागिता टूटी। आदम की शारीरिक मृत्यु 930 वर्षों बाद हुई। ईश्वर के अनुग्रह से आदम और हव्वा को जानवरों के चमड़े का वस्त्र बलिदान करके उसका चमड़ा पहनाया गया। यह यीशु का प्रतीकात्मक चिन्ह है कि वह हमारे पापों के लिये बलिदान होगा (इब्रानियों 10:10,12)।

जब आदम और हव्वा को परमेश्वर ने कपड़े पहना दिये उसके बाद वे वाटिका से बाहर भेज दिये गये (उत्पत्ति 3:22–24)। ये किया जाना था। ये निश्चय करना कठिन नहीं हैं कि क्यों परमेश्वर ने ऐसा किया – जब हम ये अहसास करते कि मनुष्य का पतन हो गया है और ऐसी पतन की दशा में सर्वदा रहना अच्छा नहीं है – श्राप के आधीन। विश्वासियों के लिये मृत्यु अच्छी होगी क्योंकि वे एक नये देह में जी उठेंगे वह शुद्ध पवित्र और मसीह की तरह सिद्ध होगी (1 यूहन्ना 3:2) और स्वर्ग में ले जाई जायेगी जहां जीवन का वृक्ष है और कोई श्राप नहीं है (प्रकाशितवाक्य 22:2–3)।

घ. मनुष्य का स्वाभाव

1. देह

देह को परमेश्वर ने मिट्टी से अपने स्वरूप में रचा। फिर हव्वा को आदम में से निकाला आदम और हव्वा के शारीरिक संबंध से उनकी संतान उत्पन्न हुई। इसलिये हव्वा को ***आदि माता*** कहा गया (उत्पत्ति 3:20)।

शरीर के कई अंग हैं और सभी के कार्य अलग – अलग है। सभी अंगों के अलग अलग कार्य हैं अर्थात् हाथ का कार्य पैर नहीं कर सकता, न आंख का कार्य कान। हमारी शारीरिक देह को इस प्रकार से आकार दिया गया है कि वह हमें आत्मिक शरीर अर्थात् कलीसिया के विषय में समझाए (रोमियों 12:4–5)। सभी विश्वासी आत्मिक देह के भाग हैं और सबकी महत्वपूर्ण पर देह में विभिन्न कार्य हैं (1 कुरिन्थियों 12)।

यीशु ने अपनी देह को हम मनुष्य के पाप हेतु बलिदान करके चढ़ाया (कुरिन्थियों 11:24) और परमेश्वर पिता से हमारा मेल करवाया ताकि हम ***पवित्र, निष्कलंक और निष्पाप ठहरें*** (कुलुस्सियों 1:21,22)। प्रभु ने हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर कीमत चुकाई (1 पतरस 2:24)।

इसी प्रकार यीशु की नकल (1 कुरिन्थियों 11:1) करने में हमें भी अपने अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना है (रोमियों 12:1–2)। यीशु हमारी देह में महिमा पाए (फिलिप्पियों 1:20)।

इस देह को प्रभु की सेवा में समर्पित करना है क्योंकि जो कुछ इस देह के द्वारा हम करते हैं उसका लेख लिया जायेगा (2 कुरिन्थियों 5:10)। एक छोटा अंग जीभ है जिस पर लगाम लगाना है (याकूब 3:2–5)। हमारा शरीर मसीह को यीशु की मृत्यु का संदेश प्रसारित करने के लिये उपयोगी होना चाहिये जिससे हमको जीवन मिले (2 कुरिन्थियों 4:10)।

एक दिन ये संसार की देह नई देह में बदल जायेगी – जो कभी भी नहीं मरेगी (1 कुरिन्थियों 15:40–44)। ये मसीह यीशु की देह के समान पुनः जी उठी और महिमामय देह होगी (फिलिप्पियों 3:20–21)। ये नई देह हमें पूरी तरह से और प्रभु यीशु मसीह के साथ पूर्ण रूप से सम्बन्धित होगी (2 कुरिन्थियों 5:6–8)।

2. आत्मा

प्राण मनुष्य का निराकार भाग है। यह न देखा जा सकता है, न छुआ, स्वाद लिया और ना सूंघा जा सकता है। शरीर प्राण के बगैर जीवित नहीं रह सकता (उत्पत्ति 35:18)। बहुधा यह इब्री शब्द न्रेफेश और ग्रीक शब्द सूचे का अर्थ इसका अर्थ जीवन या व्यक्ति भी है।

जब आदम की रचना हुई तब बाइबल बताती है (उत्पत्ति 2:7, 1 कुरिन्थियों 15:45) कि ***यहोवा ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया और उसके नयनों ने जीवन का श्वांस फूंका और मनुष्य जीवित प्राणी बना*** (प्राण) परमेश्वर ने आदम और हव्वा के नथनों में श्वांस फूंका और उनके द्वारा उसे दूसरे प्राणियों को दिया (निर्गमन 1:5, उत्पत्ति 1:20, 21, 24, 30, 2:19)।

परमेश्वर के पास भी प्राण है (मत्ती 12:18, इब्रानियों 10:38) और मनुष्य परमेश्वर की समानता में सृजा गया है।

हमें इस बात को ध्यान में रखना है कि मनुष्य का प्राण नैतिक निर्णय ले सकता है (सही या बुरे का चुनाव) इसलिये जब प्राण में निर्णयात्मक क्षमता है तो इसका उद्धार जरूरी है (भजन संहिता 3:18–19, प्रेरित 2:41, इब्रानियों 10:39, याकूब 1:21, 1 पतरस 1:8–9) और पापों की क्षमा (भजन संहिता 41:4)। यीशु ने केवल अपनी देह लेकिन प्राण भी खोये, और मानव जगत के लिये दे दिया।

(मत्ती 20:28, मरकुस 3:4, यूहन्ना 10:11, 15, 17, 15:13) इसलिये हमारे प्राणों का चरवाहा और रखवाला (1 पतरस 2:25) कहलाया। यदि अविश्वास के कारण हमारे प्राणों का उद्धार न हो तो वह नरक में नाश होगा (मत्ती 10:28, 16:26)।

कुछ निर्णय जो मानव को लेने की आवश्यकता है उसमें प्रेमी परमेश्वर शामिल हैं (व्यवस्थाविवरण 6:5, 10:12–13, 30:6) अपने सृष्टिकर्ता पर पूर्ण भरोसा रखना जैसा हम करते जो ठीक है (1 पतरस 4:19) और अपने जीवनों को भाइयों के लिये बलिदान करते हैं (1 यूहन्ना 3:16)। मनुष्य की आत्मा है जहां अनैतिकता के विरुद्ध युद्ध है (1 पतरस 2:11) और जहां झूठे शिक्षक आत्मिकता को अस्थिर बनाता हैं (2 पतरस 2:12–14)।

प्राण ही वह स्थान जहां से भावनाएं उपजती हैं। प्राण सहानुभूति देख सकता है (अय्यूब 30:25), कड़वाहट (2 राजा 4:27) गहरा दर्द अनुभव कर सकता है (भजन संहिता 43:5, यिर्मयाह 137, मत्ती 26:38), बेचा जा सकता है (लूका 2:35, (रोमियों 2:9), घृणा 2 शमूएल 5:8, प्रेम कर सकता है श्रेष्ठगीत 1:7, 3:1–4), परमेश्वर की महिमा कर सकता है (लूका 1:46), प्रश्न रह सकता है (लूका 12:19)।

3. मनुष्य की आत्मा

इब्रानी भाषा में 'रूएच; ग्रीक भाषा में 'न्यूमा' शब्द आत्मा के लिए उपयोग किया गया है। यह शब्द वचन में हवा, श्वांस और पवित्र आत्मा, मनुष्य का आत्मा, अशुद्ध आत्मा के रूप में बहुधा उपयोग किया गया है।

मनुष्य का आत्मा आत्मिक जीवन का बल है और यह मनुष्य के निराकार भाग का एक हिस्सा है। इसका प्रारंभ परमेश्वर से हुआ (सभोपदेशक 12:67, जर्कयाह 12:1, इब्रानियों 12:9)। विशिष्ट रूप से पवित्र आत्मा (यूहन्ना 3:6, 6:23)। मनुष्य का आत्मा जीवन के लिये आवश्यक है (लूका 8:55, याकूब 5:26)।

मनुष्य की आत्मा कई गुणों से भरा है जिसे हम इस अध्ययन में वचन से देखेंगे। परमेश्वर का वचन बताता है कि मनुष्य का आत्मा उसके हृदय और प्राण से भिन्न है (इब्रानियों 4:12)।

मनुष्य के आत्मा के चार कार्य हैंः

क. निर्देशों का ग्रहण करना

अनुग्रह (गलातियों 6:18, फिलेमोन 1:25), नैतिक सत्य (मलाकी 2:15–16), प्रकाशन (इफिसियों 1:16, 7), उत्तेजित करना (प्रेरित 17:16), हिलाया जाना (1 इतिहास 5:26, एज्रा 1:1,5)।

ख. निर्देशों को जांचना

घटनाओं को ग्रहण करना (अय्यूब 6:4), विचारों को जानना (1 कुरिन्थियों 2:11), मन में विचार करना (भजन संहिता 77:6), समझना (अय्यूब 20:3, 32:8), जांचने में बुद्धिमानी (निर्गमन 28:3, व्यवस्थाविवरण 34:9, इफिसियों 1:16–17)।

ग. निर्णय करना

चुनाव करता है, पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित हों (प्रेरित 20:22–23), परमेश्वर के प्रति समर्पण (31:5), विश्वास होना (2 कुरिन्थियों 4:13–14), पश्चात्तापी (यशायाह 57:15, 66:2), परमेश्वर के विरोध में फिर जाना (अय्यूब 15:13), परमेश्वर के प्रति योग्य होना (भजन संहिता 78:8)।

घ. प्रतिक्रिया

जब उपरोक्त सभी बातें हो तो मनुष्य का आत्मा विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया दिखाता है।

- वह क्रोधित होता है। न्यायियों 8:23, सभोपदेशक 7:8, 10:4
- एकदम क्रोधित होता है। नीतिवचन 14:29
- वेदना या संतापित होता है। अय्यूब 7:11
- जिद्दी होता है। भजन संहिता 76:12, नीतिवचन 16:18 सभोपदेशक 7:8
- टूट सकता है – भजन संहिता 51:17, नीतिवचन 15:13, 17:22, 18:14, यशायाह 65:14
- शांत रहता है – नीतिवचन 17:27
- उभारना – अय्यूब 32:18
- पिस जाता है – सभोपदेशक 34:16, नीतिवचन 15:4
- कपटी से भरा– भजन – संहिता 32:2
- प्रदूषित किया जा सकता है – 2 कुरिन्थियों 7:1
- निराश हो सकता है – निर्गमन 6:9
- गलती कर सकता है – यशायाह 29:24
- परमेश्वर की उपस्थिति का आभास कर सकता है – (2 तीमुथियुस 4:22)
- अपने आपको व्यक्त कर सकता है – (नीतिवचन 29:11)
- बेहोश हो सकता है (भजन संहिता 77:3, भजन संहिता 143:7)
- मनुष्य के प्रति विश्वासयोग्य हो सकता है (नीतिवचन 1:13)
- गर्मजोशी (प्रेरित 18:25)
- मूर्ख (यहेजकेल 13:3)
- सज्जन (1 कुरिन्थियों 4:21, गलातियों 6:1)
- प्रभु को समर्पित किया जा सकता है (प्रेरित 7:54)
- दुःखी होता है (यशायाह 54:6)
- कठोरतया (2:36)
- पवित्र (1 कुरिन्थियों 7:34)
- सम्मानित (2 कुरिन्थियों 12:18)
- नम्र (नीतिवचन 16:29)
- जलन रखता है (गिनती 5:14)
- परमेश्वर की इच्छा में रह सकता है (1 पतरस 4:6)
- सच्चा हो सकता है (इब्रानियों 12:23)
- सिद्ध हो सकता है (इब्रानियों 12:23)
- मनुष्यों को प्रेरित करता है (निर्गमन 35:21, नीतिवचन 16:2)
- प्रेरित हो सकता है (यूहन्ना 13)।
- नया बन सकता है (यहेजकेल 11:19, 18:31, 35:26)
- दुःखित हो सकता है (1 शमूएल 1:15)
- व्याकुल हो सकता है (भजन संहिता 141:3)

- योजना बनाता है (प्रेरित 19:21)
- गरीब हो सकता है (मत्ती 5:3)
- प्रार्थना कर सकता है (1 कुरिन्थियों 14:14–16)
- संरक्षित किया जा सकता है (अय्यूब 10:12)
- शांत रह सकता है (1 पतरस 3:4, यशायाह 19:3, यिर्मयाह 51:1)
- तरोताजा हो सकता है (2 कुरिन्थियों 7:13)
- आनन्दित होता है (लूका 1:47)
- नया बनता है (इफिसियों 4:21–24)
- आराम चाहिये (2 कुरिन्थियों 2:13)।
- जागृत होता है (उत्पत्ति 45:27)
- स्वयं के द्वारा नियंत्रित होता है (नीतिवचन 16:32)
- उदास होता है (1 राजा 21:5)
- परमेश्वर को ढूंढ़ता है (यशायाह 26:9)
- सेवा करता है (रोमियों 1:9)
- बीमारी को सहन करता है (नीतिवचन 18:14)
- क्लेशित होता है (मरकुस 8:12)
- अटल रहता है (भजन संहिता 15:10)
- बलवंत रहता है (लूका 1:80)
- दूसरों के अधीन (1 कुरिन्थियों 14:31–32)
- आधीन (इब्रानियों 12:9)
- अनियंत्रित होता है (नीतिवचन 25:18)
- परमेश्वर के साथ एक हो सकता है (1 कुरिन्थियों 6:17)
- अन्य विश्वासियों से एक हो सकता है (फिलिप्पियों 1:27)
- दुर्बल (यहोशू 2:1)
- राजी होता है (भजन संहिता 51:10–12)
- आराधना करता है (यूहन्ना 4:23)
- उद्धार पर छाप लगाता है (रोमियों 8:16)

4. हृदय

इब्रानी शब्द 'लेभ' और ग्रीक शब्द 'कार्डिया' इन शब्दों का वचन में करीब 1,000 बार उपयोग हुआ है। शरीर के अन्दर के अंगों के लिये शब्द कम ही इस्तेमाल किये जाते हैं जो रक्त को नाड़ियों में धकेलते हैं (2 शमूएल 18:14, 2 राजा 9:24) बल्कि शब्द ये संकेत करते हैं गतिविधि का केन्द्र आंतरिक मानव में है।

जब हम विभिन्न तरीके देखते हैं – बाइबल में शब्द "गर्मी" इस्तेमाल हुआ है इसके चार अर्थ निकलते हैं।

क. बुद्धि का केन्द्र है

हृदय बुद्धि का केन्द्र है, हृदय मूल्यांकन कर सकता है (व्यवस्थाविवरण 8:5), प्रशंसा कर सकता है (भजन संहिता 119:11) और ये योजना बना सकता है (इब्रानियों 4:12), इसके साथ साथ हृदय की हर एक बुरे विचार और कार्यों का स्रोत भी है (1 मत्ती 15:19–20)।

ख. भावनाओं का केन्द्र है

भावनाओं का केंद्र भी हृदय को माना जाता है। हृदय प्रेम करता है (व्यवस्थाविवरण 6:50), इच्छाओं को व्यक्त करता है (भजन संहिता 37:4), आनन्दित और मग्न होते हैं (भजन संहिता 104:15, यशायाह 30:29, कुलुस्सियों 36) दुखित होता है (नहेम्याह 2:3, रोमियों 9:2), छिद जाता है (भजन संहिता 73:21) और अपने आपको दोषी भी ठहराता है (अय्यूब 27:6)।

ग. इच्छाओं का केंद्र है

हृदय परमेश्वर को खोजता है (व्यवस्थाविवरण 4:29) हृदय बदलता है (निर्गमन 14:5), और परमेश्वर के प्रति अपने आपको कठोर भी करता है (निर्गमन 8:15, इब्रानियों 4:7)।

घ. आत्मिक जीवन का केन्द्र है

परमेश्वर का वचन कहता है धार्मिकता के लिये मनुष्य हृदय से विश्वास करें (रोमियों 10:9–10)। एक विश्वासी के लिये हृदय पुत्र (यीशु) का और पवित्रात्मा का घर है (1 पतरस 3:15, इफिसियों 3:17, 2 कुरिन्थियों 1:22)।

5. विवेक

पुराना नियम में विवेक शब्द को हृदय इस्तेमाल किया है, और नया नियम ये शब्द का प्रयोग है। यूनानी भाषा में कहते हैं उसका अर्थ है कि विषय में जानना या के विषय में स्वयं जानना। विवेक मनुष्य को उसे सिखाये हुए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है, विवेक हमें सही या गलत को नहीं सिखाता है जब कोई किसी को गुमराह करते हैं तब उसके अच्छा विवेक भी गलत हो जाता है।

यदि एक व्यक्ति को परमेश्वर के वचन के अनुसार सही या गलत को सिखा दिया जाये तो उसका विवेक भी सही बन सकता है, भले वह उद्धार नहीं भी पाये हो (यूहन्ना 8:9, रोमियों 2:15)। जब एक व्यक्ति परमेश्वर के वचन को ठुकराता है तब उसका विवेक ऐसा हो जाता है मानों ***जलते हुए लोहे से दागा गया हो*** (1 तीमुथियुस 4:2)। और जब वह परमेश्वर की आज्ञा से मुंह मोड़ता है तो उसका विवेक अशुद्ध हो जाता है (तीतुस 1:15), परन्तु विवेक का दोष दूर भी कर सकते हैं (इब्रानियों 10:22)।

एक विश्वासी के जीवन के हर क्षेत्र में सही कार्य को करने के लिये उसका विवेक पर पवित्रात्मा दबाव डालता है और आधीन रहने के लिये, आज्ञा का पालन करने के लिये प्रेरित करता है (रोमियों 13:5, 1 पतरस 2:19) और वचन कहता है किसी निर्बल व्यक्ति के विवेक को चोट नहीं पहुंचाना चाहिये (1 कुरिन्थियों 8:7, 10,12)।

6. मन

मन के लिये यूनानी शब्द है 'नाओस' इंद्रियों (ज्ञानेद्रियों का) का केन्द्र के रूप में मन कार्य करने लगते हैं और मन में ही सभी भावनाएं और बुद्धि मिल जाते हैं और किसी बात का मूल्यांकन और निष्कर्ष निकालने में वही कार्य होता है। मनुष्य के क्रियाकलापों का वह दिमागी कार्य हो या आत्मिक कार्य हो, भौतिक बातों के लिए हो या आध्यात्मिक बातों के लिये हो केन्द्र स्थान मन है। इस संबंध में वेंस लिखते हैं:–

> मन विवेक का परावर्तक स्थान है, इसमें प्रत्यक्ष ज्ञान, समझ, अनुभव, न्याय और निर्णय सभी उपलब्ध है। यूनानी शब्द डियानोइया मन से संबंधित है जिसका अर्थ है इससे होकर सोचना और एक शब्द है ईनोइया इसका अर्थ एक उपाय, एक उद्देश्य, या एक इरादा। यद्यपि मन और हृदय एक दूसरे में गहरा संबंध रहता है तो भी दोनों अलग–अलग है (इब्रानियों 8:10,16)।

विश्वासी और अविश्वासी दोनों के मन पाये जाते हैं (रोमियों 14:5)। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर की ओर से मिला हुआ इस मन को किस प्रकार इस्तेमाल करते हैं और सोचते हैं (इफिसियों 4:17–18, इब्रानियों 4:12)। यूनानी भाषा में मन के लिए जो शब्द है जिसका अर्थ है परिकल्पना या धारणा। प्रभु का भी "एनोइआ" का मतलब एक "विचार" या "इरादा" जबकि दिल और दिमाग करीब से सम्बंधित हैं वे भिन्न हैं (इब्रानियों 8:10, 16)।

जबकि दिमाग की विचारधारा के विषय पुराने नियम में चर्चा की गई है वहां कोई इब्रानी शब्द नहीं है पर इसे हृदय प्राण और आत्मा के रूप में चर्चा की गई है। इसलिये हम यूनानी के इस्तेमाल किये शब्द से दिमाग को समझने के लिये निकालेंगे।

दोनों विश्वासी और अविश्वासी के पास दिमाग है (रोमियों 14:5)। ये परमेश्वर के लिये महत्वपूर्ण है कि एक कैसे सोचता है और दिमाग जिसे परमेश्वर ने दिया कैसे इस्तेमाल करता है (इफिसियों 4:17–18)। इब्रानियों 4:12 जहां "एनोइया" को इस्तेमाल किया गया और अनुवाद "इरादा" किया गया है।

जबकि प्रभु के पास "दिमाग" है और हमें जानने की जरूरत है (रोमियों 11:34, 1 कुरिन्थियों 2:16) उसने हमें दिमाग दिया है कि उससे प्रेम करें (मत्ती 22:37; मरकुस 12:30, लूका 10:27) और उसे समझें (लूका 24:45)। मसीही का दिमाग इस प्रकार बनाया गया है कि वह सत्य को जाने जो पिता और पुत्र में पाया जाता है (1 यूहन्ना 5:20, जहां "डायानोइया" को अनुवाद "समझ" में किया गया है)।

परमेश्वर ने हमें जो मन दिया है वह सही ढंग से सोच सकता है। इस बात से यह साबित होता है कि मन गणित के सूत्रों को हल कर सकता है (प्रकाशितवाक्य 13:18) और तर्कसंगत विचारों का परिणाम भी रख सकता है। इस प्रकार की समझ और योग्यता के आधार पर हम यह रीति से समझ सकते हैं कि किस रीति से इसका मार्गदर्शन करता है, ऐसे एक व्यक्ति का विवेक स्थापित होता है (रोमियों 7:23–25)। इस व्यक्तिगत विकास दूसरों को भी मार्गदर्शन करने में सहायक होती है (1 कुरिन्थियों 14:19) मन हमेशा अपने आप में, परमेश्वर से और दूसरों के साथ ईमानदार होना चाहिये (2 पतरस 3:1) मन को इस तरह से तैयार किया है कि वह हर क्षेत्र में कार्य कर सकता है (1 कुरिन्थियों 14:5)।

हमारे मन को परमेश्वर की सेवा में भी लगा सकता है (मरकुस 12:30)। मन परमेश्वर के विरुद्ध होकर वह पतित व्यक्ति भी बन सकता है और यह इसलिये होता है कि परमेश्वर के स्तर को त्यागने का परिणाम है (रोमियों 1:28, 1 तीमुथियुस 6:5, 2 तीमुथियुस 3:8), मन परमेश्वर का विरोधी भी हो सका है (कुलुस्सियों 1:21) मन दूषित भी हो सकता है (तीतुस 1:15)।

जब एक विश्वासी घमण्डी और शरीर के कार्यों के बारे में सोचने वाला बनता है तब उसका मन अनुत्पादक हो सकता है (1 कुरिन्थियों 14:14, लूका 1:1, इफिसियों 2:3)। जब गलत उपदेशों को सही मानते हैं तब मन विचलित हो सकता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:3) यहां पर शब्द दिया गया है जिसका अर्थ संयम।

कृतज्ञता के साथ हमें इस बात का स्मरण रखना है, कि परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए हमारी मन को नया भी बना सकते हैं (रोमियों 12:2)। उसके लिये हम पापमय क्रियाकलापों से दूर रहें (इफिसियों 4:22–24) और कार्य के लिए तैयार रहें (1 पतरस 1:13) अनचाहे कष्ट सहने को तैयार रहें (4:1) यहां का अर्थ है उद्देश्य एवं परमेश्वर की दी हुई शांति के द्वारा सुरक्षित रहें (फिलिप्पियों 4:7)।

7. देह (शरीर)

एक जीवित प्राणी का भौतिक स्वभाव को प्रकट करने के लिए शब्द शरीर (देह) का प्रयोग किया है, उसका बाहरी कवच (उत्पत्ति 2:21, निर्गमन 12:8, लूका 24:39) या फिर उसका भौतिक ढांचा भी कह सकता है (उत्पत्ति 6:17, 19, 1 कुरिन्थियों 15:39, इब्रानियों 5:7)। बाइबल में इस शब्द का तात्पर्य मनुष्य का भौतिक और अभौतिक अंगों का संबंध हैं।

परमेश्वर, यीशु मसीह के रूप में देहधारी हुआ (यूहन्ना 1:14; 1 तीमुथियुस 3:16), इसका मतलब परमेश्वर पूर्ण रूप से मनुष्य बना। पापमय शरीर के समानता में वह आया परन्तु उसमें पाप नहीं था (रोमियों 8:3)। वह एक ही समय में दाऊद का प्रभु और दाऊद का संतान भी था (मत्ती 22:45)। प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों का हरने के लिए आया इसलिये इसके द्वारा हमें परमेश्वर से मेल हो गया (इफिसियों 2:14–15, कुलुस्सियों 1:22–23) और उसने शैतान की शक्ति को तोड़ दिया (इब्रानियों 2:14)। परमेश्वर का वचन कहता है झूठे उपदेशक आयेंगे जो कहेगा यीशु मसीह के रूप में आया ही नहीं (1 यूहन्ना 4:2, 2 यूहन्ना 1:7)।

परमेश्वर का देह रूप में आने की आवश्यकता को पुराना नियम हमें बताता है। मंदिर और तम्बू का परदा इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर के साथ मनुष्य को अनन्त जीवन देने के लिए प्रभु यीशु को देह रूप में आना कितना अनिवार्य था (इब्रानियों 10:19–20, मत्ती 27:51)। मरु भूमि का मन्ना भी जो इस्राएल के लोगों को चालीस साल तक खिलाया वह भी मसीह यीशु के देह रूप में आने के कारण होने वाली छुटकारा और उद्धार को दर्शाता है। यह हमें अनुग्रह से मिलता है और हम विश्वास से उसमें सहभागी होते हैं (निर्गमन 16:31–35, यूहन्ना 6:51–56)। दाऊद का भजन कहता है वह अपने पवित्र जन को सड़ने नहीं देगा यह भाग मसीह यीशु का पुनरुत्थान को दर्शाता है। भजन 16:10, प्रेरित 2:31 और परमेश्वर की प्रार्थना का उत्तर (इब्रानियों 5:7)।

मसीह यीशु का देहरूप में आने का नमूना और उनका कष्ट सहना मनुष्य के लिए एक अनुकरणीय बात है (1 पतरस 4:1–2)। मनुष्य के देह के विषय में वचन कहता है कि वह पाप का वास स्थान है और वह हमेशा पवित्रात्मा के विरुद्ध युद्ध करता रहता है (गलातियों 5:16–17)।

परमेश्वर के वचन में देह के स्वभाव के संबंध में वर्णन किया है। आत्मा के बिना देह मरा हुआ है (यूहन्ना 6:63) देह, देह को जन्म देती है परन्तु उसमें पवित्रात्मा जीवन देता है (यूहन्ना 3:6)। हम अपने देह से प्रेम करते हैं, पालन पोषण करते हैं (इफिसियों 5:28–29)।

उद्धार के पहले देह परीक्षा में स्थित नहीं रह सकता है। मनुष्य का साधारण जीवन देह के बिना संभव नहीं है (इफिसियों 2:3)। इसलिये मनुष्य के विचार उसे देह पर असर डालता है (इफिसियों 2:3, कुलुस्सियों 2:18)। जो लोग अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते हैं वे लोग प्रभुता को तुच्छ जानते हैं (2 पतरस 2:9–10)। इसलिये मसीही

लोग उसके अधिकारियों के अधीन में रहना सीखते हैं (इफिसियों 6:5)। देह निरन्तर परमेश्वर के विरुद्ध होने के कारण (रोमियों 7:5) अधिकारियों का अंगीकार एक युद्ध सा लगता है।

शरीर के अनुसार हमें दूसरों को न्याय नहीं करना चाहिये (यूहन्ना 8:15)। शरीर के कामों के अनुसार हमें दूसरों का आदर भी नहीं करना चाहिये (कुरिन्थियों 5:16) धार्मिकता में, रीति रिवाज के संबंध में, वंश में, नागरिकता के विषय में और अन्य विषयों में हमें शरीर पर घमण्ड नहीं करना चाहिये (फिलिप्पियों 3:2–7)। हमें अपने देह में रहते समय परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बिताना चाहिये (1 पतरस 4:6)।

शरीर विभिन्न मामलों में कमजोर है, पाप से लड़ नहीं सकता है (रोमियों 2:16)। शरीर के द्वारा होने वाला पाप कई स्वर्गीय आशीषों की रूकावट के कारण है (गलातियों 5:19–21) शरीर प्रतिदिन मुर्झा जाता है (1 पतरस 1:24–25)। झूठे उपदेशक इन शारीरिक अभिलाषाओं को प्रलोभन देते हैं (2 पतरस 2:18–19)।

शरीर कई बार लैंगिग क्षेत्र में कमजोर पड़ जाता है एक स्त्री और पुरुष का शरीर में एक होना। कई बार इस शरीर पराये शरीर के पीछे मोहित होकर भागता है जिसे व्यभिचार में पड़ जाता है और साथ साथ अन्य कई लैंगिक पापों में भी फंस जाता है (मरकुस 10:8, यूहदा 1:7)। इस प्रकार के पाप जान बूझकर कई बार शरीर को नाश की ओर ले जाता है (1 कुरिन्थियों 5:5)।

शरीर की एक और कमजोरी यह है कि वह अतिवेग से बदलता है (2 कुरिन्थियों 1:17)। इस प्रकार का बदलाव एक विश्वासी के विश्वास जीवन में अस्थिरता लाता है। यदि हम हमारे मन को क्षणिक प्रेरणा से बदलेंगे रहेगा तो हम एक असमंजस और अव्यवस्थित जीवन जीने को बाध्य हो जायेंगे।

शरीर सीमित है और जो शरीर के लिए किया गया है वह आत्मिकता को नहीं बढ़ाता (उदाहरण खतना जैसे कार्य, रोमियों 2:28) रीति–रिवाज शरीर के सीमाओं या कमजोरियों को नहीं हटाता (कुलुस्सियों 2:23, 1 पतरस 3:21)।

व्यवस्था का पालन करने से कोई धर्मी नहीं ठहरता (रोमियों 3:19–20) और केवल शरीर भलाई को उत्पन्न नहीं करता (रोमियों 7:18)। परमेश्वर की आशीषें केवल शरीर और लहू के लिये नहीं (1 कुरिन्थियों 15:20) है। शरीर को स्वर्गीय प्रकाशन की जरूरत है (मत्ती 16:17)।

एक विश्वासी को हमेशा शरीर से लड़ते रहना है। जब एक व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है तो वह इस बात को अंगीकार करता है कि यीशु मसीह उसके पापों के लिये मरा (गलातियों 5:24)। एक परिपक्क आत्मिक व्यक्ति ही इस बात को समझ सकता है (गलातियों 5:24)। एक अपरिपक्व विश्वासी सोचता है कि वह हमेशा के लिए परमेश्वर के हाथ में सुरक्षित है (यूहन्ना 10:27–30) और वह यीशु मसीह के द्वारा स्वतंत्र किया गया है। इस विचार को उसको शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है (गलातियों 5:13)।

इस युद्ध का एक और भाग स्वतंत्र इच्छा है (यूहन्ना 1:12–13)। एक विश्वासी को निर्णय लेना है कि वह शारीरिक इच्छाओं को पूरा करेंगे या फिर पवित्रात्मा की अगुवाई अनुसार चलेंगे (रोमियों 8:3–13)। पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा ही हम शारीरिक अभिलाषाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं (गलातियों 3:3, 5:16)। आत्मिक युद्ध जिसको हमें सामना करने का वह दूसरे किसी शरीर से नहीं परन्तु शैतान और उसकी सेनाओं से है (इफिसियों 6:12)।

हमारी आत्मिक यात्रा का एक मुख्य भाग यह है कि शरीर को दूषित करने वाले तमाम बातों से दूर रहकर एक पवित्र जीवन बितायें (2 कुरिन्थियों 7:1)। हमें निरन्तर प्रयास करना चाहिये कि शारीरिक अभिलाषाओं को दूर करें और यीशु मसीह को हमारे हृदय में जीवित रहने दें (रोमियों 13:4)। ताकि हमारे शरीर के द्वारा यीशु मसीह प्रगट हो (2 कुरिन्थियों 4:11)। यीशु मसीह के ऊपर अटूट विश्वास से ही यह संभव होगा (गलातियों 2:20) और हमारा शरीर मसीह यीशु के लिए समर्पित होगा (कुलुस्सियों 1:24)।

हम यह भी ध्यान रखें कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है और वह हमारे शरीर में एक कांटा दिया है कि हम घमण्ड न करें (2 कुरिन्थियों 12:7)।

8. पापमय स्वभाव

पापमय स्वभाव का अर्थ है आदम का पाप हरेक मानव जाति में व शान्ति हुआ, इसका तात्पर्य है यीशु मसीह को छोड़कर हरेक मानव पापमय स्वाभाव के अधीन है (रोमियों 4:12–14, 18–19), पापमय स्वभाव शरीर का एक भाग है और हरेक व्यक्ति को पाप के लिये प्रेरित करता है।

मनुष्य के पापमय स्वभाव के विषय में हम अगले अध्याय में अध्ययन करेंगे अर्थात् परमेश्वर की योजना।

9. इच्छा

मनुष्य की इच्छा को सूचित करने के लिए दो यूनानी शब्दों का इस्तेमाल किया है 'तेलया' अर्थ है इच्छा, दूसरा शब्द 'बोलूमा' परमेश्वर की इच्छा और योजना को प्रगट करता है और मनुष्य परमेश्वर की समानता और स्वरूप में बनाया गया है।

मनुष्य की इच्छा मजबूत और स्वतंत्र है। यहां तक कि मनुष्य परमेश्वर के विरुद्ध में भी कार्य करते है (यहोशू 24:15), ***शरीर और मन की मनसाएं पूरी करते हैं*** (इफिसियों 2:3)। पाप और पापमय स्वभाव से लड़ने के लिए मनुष्य की इच्छा अकेले काफी नहीं है (रोमियों 7:15–21) पवित्रात्मा हमें शक्ति देता है कि ***हम सभी कार्य कर सकें*** (फिलिप्पियों 4:13)।

मनुष्य की इच्छा कितनी भी मजबूत हो वह मनुष्य को उद्धार नहीं कर सकता (यूहन्ना 1:12–13)। यीशु मसीह पर विश्वास करके उस वरदान को प्राप्त करना है जो मसीह यीशु देता है (यूहन्ना 1:12–13; प्रेरितों के काम 4:12)। जब एक व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र मसीह यीशु पर विश्वास करता है तो वह उद्धार पाता है (यूहन्ना 6:39–40)।

परमेश्वर चाहता है की मनुष्य का भी इच्छा उसकी जैसे हो। मसीह यीशु ने इस बात को सिखाया और पिता की इच्छा के अनुसार कार्य भी किया (यूहन्ना 5:36, 6:38, 39)। दाऊद को परमेश्वर के मन के अनुसार व्यक्ति का दर्जा इसलिये मिला कि वह परमेश्वर के इच्छानुसार कार्य करता था, भले वह कई बार पराजित हुआ हो (प्रेरितों के काम 13:22)।

परमेश्वर एक शैक्षणिक योग्यता को नहीं चाहता है परन्तु एक बदला हुआ जीवन चाहता है। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने वाला ज्ञान के लिए अध्ययन करें और उसे अनुसार न चलें तो उसका जीवन में वह मिथ्या ही होगा।

परमेश्वर के वचन में हम देखते हैं कि मनुष्य अपना मन निम्न बातों में लगा सकते हैं, अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए (मत्ती 1:19) कानूनी बातों के मामले में (मत्ती 5:40), अन्य लोगों से उद्धार लेने में (मत्ती 5:42) और हम यह भी देखते हैं कि मनुष्य यीशु के पीछे भी चल सकता है (मत्ती 16:24–25), मसीह यीशु में आत्मिक जीवन जी सकते हैं, (2 तीमुथियुस 3:12) और अन्य लोगों के साथ व्यवहार भी रख सकते हैं (मत्ती 7:12)।

जब इच्छा एक कदम आगे बढ़ती है तो वह एक योजना बन जाता है। उसके लिये यूनानी शब्द "बौलूमा" है। उसका अर्थ वह इच्छा जो योजना में परिवर्तित हो जाता है। इस शब्द का कई प्रकार से अनुवादित किया है। परन्तु हरेक एक ही निष्कर्ष पर पहुंचता है कि इच्छा जो योजना में परिवर्तित होता है। परमेश्वर की इच्छा जो योजना में बदला है (रोमियों 9:19)। उसमें पुत्र की अहम भूमिका है (मत्ती 11:27)।

हमारे अन्दर की इच्छा विकसित होकर योजना का रूप लेती है जिससे हम दूसरों को बचा सकते हैं उसी समय (प्रेरितों के काम 27:43) दूसरों को चोट भी पहुंचा सकते हैं (यूहन्ना 11:53, 12:10, प्रेरितों के काम 5:33) और अपने आपको भी बचा सकते हैं (प्रेरितों के काम 27:39), यात्रा के लिये योजना बना सकते हैं (प्रेरितों के काम 15:37), उस योजना में वास्तविकता का भी पता लगा सकता है (प्रेरितों का 23:8) और युद्ध के लिये भी योजना बना सकता है (लूका 14:31)। इच्छा आगे बढ़कर पाप के लिये योजना बनाना है (1 पतरस 4:3)। ये योजना शारीरिक भी हो सकता है या फिर परमेश्वर की ओर से भी हो सकता है (2 कुरिन्थियों 1:17)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 6, भाग 3

1. **पढ़ें उत्पत्ति 1:26 – मनुष्य किसके स्वरूप में बनाया गया है?**
2. **पढ़ें उत्पत्ति 2:7 – मानव परमेश्वर के श्वांस से क्या बन गया?**
3. **पढ़े उत्पत्ति 2:18 – स्त्री को क्यों बनाया गया?**
4. **पढ़ें 2 पतरस 2:12 और यहूदा 1:10 मानव क्या करता है जो जानवर नहीं करते?**
5. **पढ़ें उत्पत्ति 2:16–17 – आदम को क्या मनाही थी?**
6. **पढ़ें उत्पत्ति 2:17 – सजा क्या थी?**
7. **पढ़ें उत्पत्ति 3:8–19 – जब पुरुष और स्त्री ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया तो कैसे उनका जीवन बदल गया?**

8. नीचे दिये गये हिस्से पढ़ें और मनुष्य के स्वाभाव की विशेषता बतायें:

क. उत्पत्ति 2:7

ख. याकूब 2:26

ग. रोमियों 10:9—10

घ. 1 तीमुथियुस 4:10

ङ. रोमियों 12:2

च. उत्पत्ति 2:21

छ. रोमियों 5:12—14

ज. यूहन्ना 1:12—13

भाग 4
स्वर्गदूतों का संघर्ष

इस अध्ययन श्रृंखला में परमेश्वर और शैतान के बीच का संघर्ष के विषय में कई बार वर्णन किया है। इस लड़ाई में स्वर्गदूतों की संघर्ष के नाम से जाना जाता है। इस संघर्ष का विस्तृत विवरण बहुत लंबा और इस अध्ययन क्षेत्र के बाहर है फिर भी रुपरेखा का अवलोकन करना अनिवार्य है। ताकि हम कुछ सवालों का उत्तर दे सकें, उदाहरण के लिए है मानव जाति इस पृथ्वी पर क्यों?

मनुष्य की सृष्टि के पहले परमेश्वर ने और कुछ जीव बनाए वह थे स्वर्गदूत, उसमें प्रमुख था लूसीफर जिसने परमेश्वर का स्थान हथियाने का प्रयास किया (यशायाह 14:12–14)। लूसीफर ने पाप किया (यहेजकेल 28:11–19) और इबलीस या शैतान बन गया (प्रकाशितवाक्य 12:9)। शैतान और उसकी अनुयायियों के लिए आग की झील तैयार किया गया है (मत्ती 25:41)।

परमेश्वर के इस निर्णय में अभी अमल नहीं हुआ है। यीशु मसीह के 1000 वर्ष के राज्य के बाद इस बाद पर अमल करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:14)। परमेश्वर और शैतान की इस लड़ाई में मनुष्य बीच में है इसलिए इस संघर्षों में मनुष्य की अहम भूमिका है।

इफिसियों 6:12 में प्रेरित पौलुस इसकी पुष्टि करते हुए कहता है, कि ***"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।*** एक विश्वासी का वास्तविक लड़ाई शैतान और उसकी शक्ति से है न कि अन्य मानव से है। इस लड़ाई में भाग लेने के लिए ***परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सके*** (इफिसियों 6:13)।

इस संघर्षों में हमारा सही भागीदारी अभी नहीं मालूम है परंतु एक एक करके सब कुछ खुलासा एक दिन हो जायेगा (1 कुरिन्थियों 13:12)। अभी हमें जितना जानकारी है उतना काफी है हमें केवल विश्वास ही से चलना है (इब्रानियों 11:6) और हमें आपस में और परमेश्वर से भी प्रेम करना है (मरकुस 12:29–31)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 6, भाग 4

1. **पढ़ें यशायाह 14:12–14। शैतान का मूल पाप क्या था?**
2. **पढ़ें यहेजकेल 28:11–19। शैतान का मूल पद क्या था?**
3. **पढ़ें मत्ती 25:41 – आग की झील किस अभिप्राय से बनाई गई है?**
4. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:14। शैतान और उसके दूत कब आग की झील में डाले जायेंगे?**
5. **पढ़े यूहन्ना 16:11 – शैतान को पहले ही क्या हो गया है?**
6. **जबकि शैतान का न्याय पहले ही किया जा चुका है और उसकी सजा सुनाई जा चुकी है पर फिर भी पालन नहीं हुई तो हम किस निष्कर्ष पर पहुंचें?**
7. **जबकि शैतान का पतन जब उसने आदम और हव्वा को बहकाया तब ही हो चुका था तो शैतान के पतन के समय का निचोड़ हम कैसे निकालें?**
8. **जबकि मनुष्य शैतान के न्याय और सजा के दिये जाने के बीच में है तो मनुष्य के अस्तित्व का क्या निष्कर्ष है?**
9. **पढ़ें इफिसियों 6:1–18। शैतान की युक्तियों से लड़ने के लिये एक मसीही को क्या करना है?**

अध्याय 7

परमेश्वर की योजनाओं का सिद्धान्त

भाग 1

प्रकाशन : बाइबल (बिबलियोग्राफी)

बाइबल स्वयं परमेश्वर का मानव के लिये लिखित भाग है। उसने अपने आपको उसके द्वारा जो उसने बनाया – प्रकट किया है (रोमियों 1:20)। शब्द "प्रगटीकरण" का मतलब है कि एक परत को उघाड़कर ये दिखाना कि क्या ढांपा गया है उसे जानें और देखे"। परमेश्वर ने अपने आपको अपने लिखित वचन के द्वारा प्रगट किया और "दिखाया"। परमेश्वर ने अपने आपको पूरे इतिहास में बहुत से लोगों पर प्रगट किया और उन्हें उठाया कि उसके स्वयं प्रगटीकरण को लिख लें। इसे "प्रेरणा" कहा गया।

इसलिये कि परमेश्वर ने इस प्रकाशन को और प्रेरणा को निर्देशित व निरीक्षण किया ये बिना त्रुटि के मूल रूप में लिखा गया इसलिये परमेश्वर के वचन के अनुसार, बाइबल के पास उसका अधिकार है और इस प्रकार वह सब आत्मिक मामलों में हमारा अगुवाई करने वाला है।

1450–400 ईसा पूर्व से परमेश्वर ने बहुत से विभिन्न 39 लेखकों की पुस्तक लिखने के लिये प्रेरित किया, जो एक साथ इक्ट्ठा की गई और वह पुराना नियम कहलाया। ईस्वी. 46–96 से उसने और भी बहुत से लेखकों को अतिरिक्त 27 पुस्तकें लिखने के लिये प्रेरित किया जो नया नियम बन गया। इन सब पुस्तकों को मिला दिया जाना धर्मशास्त्र की पुस्तकों का संग्रह कहलाया। वचन अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को स्पष्ट होना चाहिये कि जब से परमेश्वर ने इन विभिन्न लेखकों को प्रेरित किया कि स्वयं को मानव पर प्रगट करें जिससे कि मानव के पास लिखित अधिकार हो, एकत्रित की गई पुस्तकों जो संग्रह बनाती है वही होगी जिसकी इच्छा की गई।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 7, भाग 1

1. **पढ़ें रोमियों 1:20। उसकी सृष्टि के माध्यम से परमेश्वर के विषय क्या स्पष्ट देखा गया।**
2. **"प्रगटीकरण" को समझाओ।**
3. **"प्रेरणा" को समझाओ।**
4. **परमेश्वर के वचन के अनुसार बाइबल क्या है?**
5. **आत्मिक मामलों में आपका मार्गदर्शन क्या है?**
6. **पुराने और नये नियम का मिलाया जाना क्या कहलाता है?**
7. **पढ़ें यूहन्ना 17:17, परमेश्वर का वचन क्या है?**
8. **पढ़ें भजन 119 और परमेश्वर के वचन के विषय में ध्यान दें।**

भाग 2

समस्या : पाप (पाप का सिद्धान्त)

क. भूमिका

साधारण रीति से पाप का अर्थ होता है ईश्वर के द्वारा स्थापित किये गये स्तर को तिरस्कृत करना या ईश्वरीय मापदण्ड का उल्लंघन करना। परमेश्वर के वचन के द्वारा यह प्रमाणित होता है कि पाप को पहचानने के लिये एक निश्चित मापदण्ड को परमेश्वर ने स्थापित किया है क्योंकि यह स्तर नहीं होता तो हम पाप को नहीं जानते, और उसका अस्तित्व भी नहीं होता (रोमियों 4:5, 5:13)। इब्रानियों और यूनानी भाषा में पाप के लिए जो शब्द आया है वह है (CHATA या HAMARITA) इसका अर्थ है "निशाना चूक जाना"। पाप, निशाना चूका हुआ तीर के समान है। एक व्यक्ति अपने निशाने से भले एक बिन्दु भी हट जाने से वह अपने निशाने से चूक जाते हैं।

ख. परमेश्वर के वचन में पाये जाने वाले तीन प्रकार के पाप

1. बोया गया पाप

आदम के पाप का परिणाम हरेक मानव को अपने जन्म के समय से लेकर भुगतना पड़ता है। ये शब्द "बोया गया" का अर्थ है आदम के पाप के परिणामस्वरूप उसके संतानों पर भी आ गया (रोमियों 5:12) में लिखा है, ***"इसलिये जैसा एक मनुष्य द्वारा (अर्थात् आदम) पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सबने पाप किया"।*** रोमियों 5:18–19 में इस विषय में फिर से लिखा है कि ***"जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निर्मित्त धर्मी ठहराये जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।"*** आदम का पाप और उसका दण्ड आदम से लेकर मनुष्य जाति के हरेक व्यक्तियों में हस्तान्तरित होते आया है।

यहां एक बात महत्वूपर्ण है कि ये पाप पिता के द्वारा वंश में हस्तान्तरित होते आया है लेकिन यीशु मसीह का एक सांसारिक पिता नहीं था, इसलिये आदम के द्वारा "थोपा गया" इस पाप के अधीन में यीशु मसीह का नाम नहीं आयेगा क्योंकि वह एक स्वर्गीय जन था।

2. जन्मजात पाप

बोया गया पाप का परिणाम यह है कि हरेक व्यक्ति एक ऐसे स्वभाव के अधीन हो जाता है कि जिसके द्वारा वह पाप करता है इसे "पाप का स्वभाव" या "पुराना" मनुष्यत्व" कहते हैं। पाप के दण्ड को दूर करने के बाद भी पापमय स्वभाव मनुष्य के अन्दर मृत्यु तक बना रहता है (रोमियों 6:6, 8:1)।

रोमियों की पत्री में प्रेरित पौलुस ने पापमय स्वभाव के विरुद्ध में जो लड़ाई की है उसको इस प्रकार वर्णन किया है, ***"जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं कि व्यवस्था भली है। तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मुझ में बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमें अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।"***

इस भाग में से हमें यह ज्ञात हो जाता हैं कि पौलुस भी कहीं अपने निशाने से चूक गया था। वह कहता है कि यह आत्मा के विरुद्ध की लड़ाई है (गलातियों 5:16–17)। इसलिए एक विश्वासी को चाहिये कि वह प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करने के पश्चात अपने ***"पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो"*** (इफिसियों 4:20–22)।

परन्तु एक बात विशेष ध्यान देने के योग्य है कि यीशु मसीह में न तो थोपा गया पाप था और न ही जन्मजात पाप था।

3. व्यक्तिगत पाप

परमेश्वर के आज्ञा के उल्लंघन के कारण व्यक्ति पाप होता है। यद्यपि हम मूसा के द्वारा दिये गये व्यवस्थाओं के अधीन में नहीं है तो भी उसमें दिये गये नैतिक सिद्धांत अभी भी हमारे लिये लागू होता है। प्रेरित पौलुस अपनी पत्री में इस

प्रकार लिखा है (1 तीमुथियुस 1:8–10) कि ***"पर हम जानते हैं, कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिए नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, मां–बाप के घात करने वालों, हत्यारों, व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचने वालों, झूठों और झूठी शपथ खाने वालों और इनको छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है।" इसके अलावा अन्य पाप को "शरीर के काम" के नाम से दर्शाया है*** (गलतियों 5:19–21) इस प्रकार से लिखा है, ***"शरीर के काम तो प्रगट है, अर्थात् व्याभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ति, पूजा, टोना, बैर, झगड़ा ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवाला, लीला क्रीड़ा और इनके ऐसे काम और काम है, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूं, जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।"***

ग. व्यक्तिगत पाप तीन प्रकार के हैं

1. मानसिक पाप

मानसिक पाप का तात्पर्य एक व्यक्ति के सोच–विचार से है। मत्ती 5:28 में यीशु मसीह कहता है कि ***"जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका"।*** हमारे मन में भी, विचारों में भी पाप उत्पन्न हो सकता है। हमारे विचार पवित्र नहीं होने के कारण वह पाप गिना जाता है और परमेश्वर की आज्ञा है कि ***"तुम पवित्र बनो क्योंकि मैं*** (परमेश्वर) ***पवित्र हूं"*** (1 पतरस 1:16)। मूसा के द्वारा दिये गये दस आज्ञाओं में भी ***"लालच नहीं करना"*** (निर्गमन 20:17) कहा गया है जो मानसिक पाप की श्रेणी में आता है।

मानसिक पाप भी व्यक्तिगत पाप के समान "प्रेम की व्यवस्था" का उल्लंघन है। एक उदाहरण याकूब 2:8–9 में हमें मिलता है, ***"यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार कि "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" सचमुच उस राज्य व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो। पर यदि तुम पक्षपात करते हो तो पाप करते हो, और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है"।***

अधिकांश अवसरों में मानसिक पाप कार्य के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

2. जीभ के द्वारा पाप

व्यक्तिगत पाप के दूसरे प्रकार का आशय एक व्यक्ति की बोली से है। याकूब की पत्री में एक बड़े लेखांश में वह जीभ के बुराइयों का विवरण दिया है (3:1–10)। जीभ के द्वारा होने वाली पाप के विषय में 9वीं आज्ञा स्पष्टता से कहता है, कि ***"तू किसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना"*** (निर्गमन 20:16)। दूसरों की बातों के द्वारा चोट पहुंचाने वालों का स्वामी शैतान (विरोधी) है जिसको दुष्ट (बुराई करने वाला) भी कहता है। जीभ के द्वारा जो पाप होता है उसका मुख्य स्वभाव यह है कि जो बातें बोलते हैं उसमें न परमेश्वर के प्रति प्रेम है और न एक दूसरे के प्रति।

3. प्रत्यक्ष पाप

व्यक्तिगत पाप के तीसरे प्रकार का मतलब व्यक्ति के कर्मों से संबंधित है। इसका सटीक उदाहरण हमें 6वीं, 7वीं और 8 वीं आज्ञाओं में हमें मिलता है।

1) "हत्या न करना"

2) "व्यभिचार न करना" और

3) "चोरी न करना"

याकूब की पत्री 4:17 में कहता है, ***"इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है"।***

एक महत्वपूर्ण बात और है जो ध्यान रखने योग्य है कि कुछ और भी पाप हैं जो इन तीनों प्रकार के पापों में शामिल होते हैं। प्रभु यीशु ने कहा कि एक व्यक्ति की हत्या करने के लिये उस हत्या की क्रिया से ही नहीं परन्तु अपने मन और जीभ से भी उसकी हत्या कर सकते हो (मत्ती 5:21–23)।

यीशु मसीह ने किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत पाप नहीं किया था (1 पतरस 2:22)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 7, भाग 2

1. पढ़ें रोमियों 4:15 और 5:13। पाप होने के लिये क्या होना चाहिये?

2. पढ़ें रोमियों 5:12 और 5:18–19। आदम के मूल पाप का परिणाम क्या है और क्यों?

3. **पढ़ें रोमियों 7:16–18। पाप का स्वाभाव कहां रहता है?**

4. **पढ़ें गलतियों 5:19–21। व्यक्तिगत पाप क्या कहलाते हैं?**

5. **पढ़ें मत्ती 5:28। ये किस प्रकार के पाप का वर्णन करता है?**

6. **पढ़ें याकूब 3:1–10। ये हिस्सा किस प्रकार के पाप का वर्णन करता है?**

7. **पढ़ें निर्गमन 20:13–15। ये पद किस प्रकार के पाप बताते हैं?**

8. **विभिन्न प्रकार के पाप गलातियों 5:19–21 में दिये गये हैं। पता करें कि क्या वो प्रारम्भिक रूप से मानसिक, मौखिक या खुल्मखुल्ला है। कुछ एक से अधिक होगा। अधिक अतिरिक्त बयान शब्दों के जहां आवश्यक है दिया गया है।**

   क. अनैतिकता
   ख. अशुद्धता (रीति रिवाज द्वारा अशुद्ध करना)
   ग. कामुकता (असाधारण सैक्स)
   घ. मूर्तिपूजा
   ङ. जादू–टोना
   च. छिपी इच्छा (शक्ति के लिये छिपी इच्छा)
   छ. झगड़ा (बहस)
   ज. जलन (व्यक्तिगत लाभ के लिये गलत जोश)
   झ. क्रोध का भड़कना
   ञ. झगड़े (स्वयं की इच्छा पूर्ति के लिये)
   ट. व्यर्थ बंटवारा
   ठ. विभाजन (झूठी धार्मिक शिक्षा से विभाजन)
   ड. ईर्ष्या (दूसरे सम्पत्ति के लिये जलन)
   ढ. पियक्कड़पन
   ण. पान गोष्ठी (शराब की पार्टी)

भाग 3

समाधान : उद्धार

क. भूमिका

प्रभु यीशु मसीह को छोड़कर हरेक मानव की एक समस्या थी पाप की समस्या, पाप के बंधन से छुटकारा पाना हरेक मनुष्य के लिये अतिआवश्यक है। परमेश्वर ने अपनी प्रभुता और सर्वशक्ति से एक योजना तैयार की ताकि हरेक व्यक्ति उद्धार प्राप्त कर सके। इस योजना में बहुत बड़ा मूल्य चुकाना था – वह था प्रभु यीशु मसीह का जीवन। पाप का प्रायश्चित प्रभु यीशु ने अपना बहुमूल्य जीवन देकर चुका दिया। यह कार्य अन्य लोगों के लिए असंभव था। विश्वास के द्वारा हरेक मनुष्य यीशु मसीह के उस बलिदान में शामिल हो सकते हैं (2 कुरिन्थियों 8:9)।

ख. सुसमाचार

सुसमाचार का अर्थ है "अच्छी खबर" सुसमाचार का सरल भाषा यह है कि "उद्धार मात्र विश्वास के द्वारा केवल मसीह यीशु में है"। प्रेरितों के काम 16:30 में एक रोमी बन्दीगृह सरदार ने पौलुस से सवाल करता है कि "उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं"? पौलुस का उत्तर था, "मसीह यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पायेगा" (16:31)। उद्धार पाने के लिये एक ही कार्य करना है वह है यीशु मसीह पर विश्वास करना (यूहन्ना 3:16, 18, 36)। यीशु के नाम के अलावा मनुष्यों के बीच में उद्धार प्राप्त करने के लिये और कोई नाम नहीं दिया गया है (प्रेरितों के काम 4:12)।

परमेश्वर की इच्छा यह है कि हरेक मनुष्य उद्धार पाये (1 तीमुथियुस 2:4, 2 पतरस 3:9)। इसलिये प्रभु यीशु ने सारे मानव जाति के लिए मूल्य चुकाया (यूहन्ना 12:32)। पवित्रात्मा संसार को पाप के विषय में और यीशु मसीह के द्वारा जो मुक्ति है उसके विषय में समझाता है (यूहन्ना 16:7–15)। जब एक व्यक्ति मसीह यीशु को ग्रहण करता है तो वह इस प्राथमिक तत्व को ग्रहण करता है कि प्रभु यीशु परमेश्वर, जो मनुष्य बन कर इस संसार में आया (यूहन्ना 1:1, 14)। पाप के लिये मरा, गाड़ा गया (इस बात का सबूत है कि वह सचमुच मर गया था) तीसरे दिन जी उठा (2 कुरिन्थियों 15:3–5)।

ग. अनुग्रह

"अनुग्रह" का अर्थ यह है कि हमें कुछ मिल गया जिसके लिए न तो हम योग्य थे और न हमने परिश्रम किया। यदि हम कुछ पैसे कमाते हैं तो वह मजदूरी कहलायेगा और हमने उस मजदूरी के आधार पर वहां कार्य किया है। उद्धार पाने के लिए हमने जो अनुग्रह पाया वह परमेश्वर का वरदान है, वचन कहता है, ***"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें"।*** परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के कारण हमें उद्धार प्रदान किया जो हम विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं (प्रेरितों के काम 20:24)।

मसीह यीशु अपने आप में अनुग्रह का सटीक नमूना है (यूहन्ना 1:14–17)।

घ. विश्वास

विश्वास का मतलब है भरोसा। यह विशेषता विश्वास करने वालों में नहीं परन्तु विश्वास में पाया जाता है। इसलिए उद्धार मसीह यीशु को अंगीकार करने को कहते हैं – वह एक कार्य नहीं है।

मनुष्य होने के कारण हम उद्धार को प्राप्त करना चाहते हैं। कई लोग अज्ञानता के कारण यही धारणा बना चुके हैं कि उद्धार क्रिया कर्मों से ही मिलती है और ये बात भूल जाते हैं कि उद्धार मात्र मसीह पर विश्वास करने से मिल जाता है। यह एक सत्य है कि ***"हम भले काम के लिये बनाये गये हैं"*** (इफिसियों 2:10)। हमें उद्धार पाने के लिए नहीं परन्तु उद्धार के परिणाम के रूप में भले काम करना चाहिये।

एक बार प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों के अनन्त जीवन के विषय में सिखा रहे थे (यूहन्ना 6:26–27)। तब लोगों ने सवाल किया कि ***"परमेश्वर का कार्य करने के लिये हमें क्या करना चाहिये"?*** (यूहन्ना 6:28) अन्त में यीशु ने कहा, ***"परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर जिसने उसे भेजा है विश्वास करो"।*** यीशु का कहने का अर्थ था कि यदि तुम विश्वास

करते हो तो उद्धार का कार्य करना पड़ेगा, तब उस विश्वास को "कार्य" का नाम दें। यदि हमारा विश्वास "कार्य" होता (विश्वास "कार्य" नहीं है) तो वह कार्य परमेश्वर के उद्धार के कार्य के ऊपर प्रभावशाली हो जाता है कि वह महत्वपूर्ण हो जायें।

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को विश्वास करने की योग्यता प्रदान करता है साथ साथ चुनने की क्षमता भी। यह इस कारण हो सका है कि ***"वह अपने समानता और स्वरूप में रचा गया है"*** (उत्पत्ति 1:26–27)। यद्यपि मनुष्य को पूरी आजादी है चुनने की तो भी वह हमेशा सही नहीं चुनता है। इस चुनने का अधिकार हरेक व्यक्ति को उसके निर्णय को जिम्मेदार ठहराता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में निर्णय लेने में स्वतंत्र होने के कारण जो मसीह यीशु को नहीं चुना वह उसके विरोध में निर्णय लिया (मत्ती 12:30, यूहन्ना 3:18)। मसीह को चुनने से उद्धार और स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त होता है और मसीह के विरुद्ध निर्णय लेने से अपने लिए नाश और अनन्त जीवन नरक में बिताना पड़ता है (यूहन्ना 3:36)।

ङ. मन फिराना

मन फिराने का अर्थ है कि मन को बदलना अर्थात् एक विश्वास से दूसरे विश्वास की ओर अपने मन को परिवर्तित करना। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक अविश्वासी यीशु मसीह के विषय में अपनी सोच को बदले ताकि नाश न हो (2 पतरस 3:9, प्रेरितों के काम 20:21)। उन्हें ये समझना है कि उनके पापों के लिये वे प्रायश्चित नहीं कर सकते हैं बल्कि यीशु मसीह ने उनके लिए मूल्य चुका दिया है (लूका 24:45–57)। इस प्रकार से परिवर्तित मन मसीही जीवन की नींव है (इब्रानियों 6:1)।

विश्वासियों को भी मन फिराना है जब उन्हें लगेगा कि जो कुछ बातें उन्होंने विश्वास किया था वह सत्य नहीं है (2 तीमुथियुस 2:24–25) या फिर जिस पाप को वे पाप नहीं समझ रहे थे (2 कुरिन्थियों 7:9–10) वह सब परमेश्वर के सामने अंगीकार करना है (1 यूहन्ना 1:9)।

च. धार्मिकता

धार्मिकता का अर्थ है एक व्यक्ति के धर्म के कार्यों को घोषित करना। पापी होने के कारण मनुष्य धर्मी नहीं है और न ही वह उस धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है जिसके बिना पवित्र परमेश्वर से संबंध संभव नहीं हो सकता है (यशायाह 64:6, रोमियों 3:20)। यहां एक गंभीर समस्या है परमेश्वर के उपस्थिति को प्राप्त करने के लिए अधर्मी मनुष्य कैसे धर्मी बन सकते हैं? इसका उत्तर नीचे दिये पदों से प्राप्त है।

मुख्य बात इस संबंध में रोमियों की पत्री में पाया जाता है (3:19, 4:5), (1) व्यवस्था के कारण कोई भी व्यक्ति धर्मी नहीं ठहर सकता है (3:20, गलातियों 2:16, 3:24), (2) अनुग्रह के द्वारा प्राप्त होने वाला दान है धार्मिकता, जो मसीह यीशु के बलिदान परमेश्वर की धार्मिकता के सारे मापदण्डों को पूरा करता है (3:24), (3) विश्वास के द्वारा यीशु मसीह में धर्मी ठहराया जाना (3:26)। जो व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास रखता है उसको यीशु की धार्मिकता दिया जाता है और वह धर्मी ठहराता है।

वह धार्मिकता अनुग्रह के द्वारा मसीह यीशु पर विश्वास करने से मिलती है और परमेश्वर पिता से हम इस कारण मेल करते हैं और परमेश्वर की दी हुई शान्ति हमें मिलती है (रोमियों 5:1)। इस कारण हम उसके क्रोध से बच गये (रोमियों 5:9) और हमें पाप की दण्ड से भी मुक्त किया (रोमियों 6:7) और मसीह के साथ वारिस बनाया (तीतुस 3:4–7)।

छ. पवित्रीकरण

पवित्रीकरण का अर्थ है कि पवित्र होने के लिए अलग हो जाना। पवित्रता का माप परमेश्वर की धार्मिकता है। मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा एक व्यक्ति जब धर्मी ठहराये जाते हैं तो वह मसीह यीशु के द्वारा पवित्र भी किये जाते हैं। (प्रेरितों के काम 26:18, इब्रानियों 2:11) और उसके एक बार के बलिदान के द्वारा (इब्रानियों 10:10–14, 13:12) और पवित्रात्मा के द्वारा वह (2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 1 पतरस 1:2) हमेशा के लिये धर्मी ठहर जाते हैं। विश्वासी बनने के बाद इस पवित्रता के बारे में हमें दूसरों को गवाही देना चाहिए (इब्रानियों 12:14)।

इस प्राथमिक पवित्रता का यह मतलब नहीं है कि एक विश्वासी का जीवन आगे भी पापरहित रहेगा। कुरिन्थियों की कलीसिया के लोग जीवन के हर क्षेत्र में गलतियां कर चुके थे उसके बावजूद मसीह यीशु में पवित्र किये गये और "संत" का दर्जा प्राप्त हुआ (1 कुरिन्थियों 1:2, 30, 6:9–12)।

विश्वासियों को चाहिये कि वह मसीह यीशु को अपना पवित्रता का आधार बनायें (1 थिस्सलुनीकियों 4:3, 4, 7, इफिसियों 5:25–26, 1 पतरस 3:15)। यह पवित्रीकरण उस समय की प्रक्रिया है जब वह प्रभु यीशु मसीह को अंगीकार करता है (रोमियों

6:19, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। इस प्रक्रिया से यह है कि परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के पश्चात् अपने जीवन को पवित्र होने के लिये स्वामी के आगे समर्पित करते हैं ताकि हरेक भले काम के लिये योग्य बन सकें (रोमियों 15:15—16)। जो लोग इस कार्य को नहीं करते हैं वे परमेश्वर के अनुग्रह को तुच्छ जानते हैं और परमेश्वर से और ज्यादा अनुशासनों का सामना करते हैं (इब्रानियों 10:29)।

ज. क्षमा

क्षमा शब्द का अर्थ है "दूर भेजना"। यूनानी भाषा में "अफिमी" कहते हैं जिसका सरल अर्थ है "त्यागना" (मत्ती 4:20, 22, 5:24)। जैसे एक व्यक्ति एक जगह को छोड़कर दूसरे जगह चले जाते हैं वैसे ही हम पाप के बोझ को एक जगह में छोड़ दिये हैं अब उस बोझ को आगे उठाने की जरूरत नहीं है (इब्रानियों 12:2)। यीशु मसीह के आने के पहले पाप और अधर्म के विषय में कहते थे कि वे "ढांक दिये गये", इसका अर्थ है पाप अभी भी उसी स्थान पर है परन्तु ढ़का हुआ है (भजन संहिता 31:1, रोमियों 4:7)। "प्रायश्चित" शब्द का अर्थ है "ढांक देना"। परन्तु कलवरी क्रूस पर मसीह यीशु के बलिदान के द्वारा पाप को "दूर भेज दिया गया" या "हटा दिया गया" और हमें क्षमा प्राप्त हुई (मत्ती 26:27—28)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के संदेश का मुख्य अंश था पाप की क्षमा। यीशु मसीह ने भी इसी विषय को महत्व दिया (लूका 3:3—4, 4:18—19, प्रेरितों के काम 5:31)।

उद्धार के लिए पापों की क्षमा अनिवार्य है (लूका 1:77)। परमेश्वर ने हमें जो क्षमा किया उसका आधार प्रभु यीशु मसीह का बलिदान है जिसके द्वारा उसने पापों का कर्ज चुका दिया कि मनुष्य का संबंध परमेश्वर के साथ पुनः स्थापित हो सके (इफिसियों 1:7, कलुस्सियों 1:13—14, इब्रानियों 9:22)। जब एक व्यक्ति मसीह पर विश्वास करता है तो उसका पाप क्षमा किया जाता है (प्रेरितों के काम 10:43, 26:18)। इसलिए अब और कोई बलिदान बाकी नहीं रहा (इब्रानियों 10:17—18)।

अनुग्रह के कारण जब हमें पापों की क्षमा प्राप्त हुई तो परमेश्वर ने हमारे पापों को दूर फेंक दिया है, उतना ही नहीं पापों को मिटा दिया गया है। हम कहते हैं कि ***"उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया (यूनानी भाषा में "मिटा दिया" कहते हैं) और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है"*** (कुलुस्सियों 2:13—14)। सच्चाई यह है कि हमारे पापों को "पीछे डाल दिया गया ही नहीं अब वह शेष नहीं रहा, और हम प्रभु के सम्मुख विश्रान्ति के दिन के योग्य बन जाते हैं (प्रेरितों के काम 3:19)।

विश्वासियों को परमेश्वर के सदृश बनना है और मसीह की सी चाल चलना है और उसके लिये एक क्षमा करने वाला आत्मा आवश्यक होता है (इफिसियों 5:1, 1 कुरिन्थियों 11:1, मत्ती 18:21—22)। यह महत्वपूर्ण है कि विश्वासियों को क्षमा करने वाला होना चाहिये क्योंकि यीशु मसीह का महान आदेश का एक भाग भी पाप की क्षमा का प्रचार है (लूका 24:46—47, प्रेरितों के काम 10:43, 13:38) और जो हम सिखाते हैं उसको करने की इच्छा हमें होना चाहिये।

विश्वासियों को चाहिये कि वह अपने पापों को परमेश्वर के सामने अंगीकार करें और पाप की क्षमा पाकर शुद्ध हो जायें (1 यूहन्ना 1:6—10)। तब ही वह अपने मसीह जीवन में बढ़ सकते हैं। यीशु मसीह ने हमारे पापों के लिये क्रूस पर मूल्य चुका दिया है इसलिये हम क्षमा पाये हुए लोग हैं। जब एक विश्वासी अपने पापों से पश्चाताप करता है तब वह पहचान लेता है कि उसका कर्ज चुका दिया गया है।

छ. अक्षम्य पाप (पवित्रात्मा का निन्दा करना)

यह एक ऐसा पाप है जो क्षमा के योग्य नहीं है अर्थात् पवित्रात्मा की निन्दा करना (मत्ती 12:31—32)। परमेश्वर की निन्दा का अर्थ है वह जो है, नहीं कहना, जब एक व्यक्ति परमेश्वर के विषय में (जो बातें सच है) कहता है कि वह ऐसा नहीं है तो वह परमेश्वर की निन्दा करता है। पवित्रात्मा अर्थात् सत्य का आत्मा यीशु को मसीह के रूप में प्रगट करता है (यूहन्ना 14:6, 16:13)। तो यदि कोई यीशु को मसीहा के रूप में मानने से इंकार करता है तो वह यह दावा करता है कि परमेश्वर यीशु के विषय में झूठ बोलता है (1 यूहन्ना 5:10)। जैसे हम जानते हैं कि जब तक एक व्यक्ति जीवित है उसके पास यह अवसर होता है कि वह मसीह को स्वीकार करें। इन बातों को स्मरण रखकर हम यह कह सकते हैं "पवित्रात्मा का निन्दा करना"। यीशु मसीह के विषय में आत्मा को झूठा ठहराना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के विरूद्ध अपशब्दों का इस्तेमाल करना है (मत्ती 26:74 — पतरस द्वारा यीशु का इंकार) परन्तु यह एक प्रकार का अविश्वास है जो जीवन के अन्त

तक के लिये रह जाता है। इस प्रकार का पाप करने वाला यीशु मसीह को अंगीकार करने में और उसके कार्यों पर विश्वास करने में बलवा करते हैं और उसके परिणामस्वरूप वह अनन्त काल के लिए नरक की ओर जाता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 7, भाग 3

1. पढ़ें यूहन्ना 3:16, 18 और 36, उद्धार के लिये क्या आवश्यक है?
2. पढ़ें यूहन्ना 1:1, 14 और 1 कुरिन्थियों 15:3–5, एक को मसीह यीशु के लिये क्या विश्वास करना चाहिये?
3. पढ़ें 1 तीमुथियुस 2:4 और 2 पतरस 3:9, मनुष्य के उद्धार के लिये परमेश्वर की क्या इच्छा है?
4. पढ़ें इफिसियों 2:8–9, मनुष्य कैसे बचाया गया?
5. विश्वास क्या है और उसका उच्चतम स्थान क्या हैं?
6. पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:24–25, गलत सोच को ठीक करने के लिये क्या जरूरी हैं?
7. पढ़ें रोमियों 3:20 और गलातियों 2:16 और 3:24, हमें क्या परमेश्वर के सामने धार्मिक घोषित करता है और क्या नहीं?
8. पढ़ें 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 और 1 पतरस 1:2, जो मसीह में विश्वास करते उन्हें कौन शुद्ध करता है?
9. पढ़ें इफिसियों 1:7 और कुलुस्सियों 1:13–14, विश्वासी को क्यों क्षमा किया गया है?
10. पढ़ें मत्ती 12:31–32, यूहन्ना 14:17, यूहन्ना 16:13 और 1 यूहन्ना 5:10, पवित्र आत्मा की निन्दा क्या है?

भाग 4
सुरक्षा : परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

क. भूमिका

जब एक व्यक्ति मसीह यीशु पर विश्वास करके उद्धार पाता है तब उसके मन में कई प्रकार के सवाल उठते हैं, जैसेः उद्धार के बाद पाप करने से क्या होगा? क्या हमें फिर से उद्धार प्राप्त करना पड़ेगा? मसीह जीवन हमें कैसे बिताना चाहिये – परमेश्वर के सुरक्षित प्रेम में या हमारा उद्धार को खोने के डर से? हम कैसे जान सकते हैं कि हम अनन्त जीवन के भागी हैं या नहीं? इन सवालों के उत्तर के लिए इस भाग का अध्ययन सहायक बनेगा।

ख. पूर्व नियति और पूर्व ज्ञान

पूर्व ज्ञान का अर्थ है "पहले से जानना"। यीशु मसीह को जगत की उत्पत्ति से पहले से जाना गया है (1 पतरस 1:20)। पूर्व नियति यूनानी भाषा से लिया गया शब्द है "PROORIDZO" जिसका अर्थ है "पहले से चिन्हित करना"।

परमेश्वर के वचन से यह प्रगट है कि परमेश्वर का पूर्वज्ञान उसकी पूर्व योजना से संबंध रखता है (रोमियों 8:29–30, 1 पतरस 1:1–2)। परमेश्वर का सर्वज्ञान घटित होने का निर्णयों को भी और हरेक संभावनाओं को भी जानना है। परमेश्वर की महानता इस बात से प्रगट होती है कि परमेश्वर ने एक योजना बनाई जिसमें उसने मनुष्य और स्वर्गदूत को स्वतंत्र इच्छा प्रदान किया है और यह योजना अभी भी पूरी नहीं हुई है।

परमेश्वर के वचन की भविष्यवाणियां उसके कुछ पूर्व ज्ञान को दर्शाती हैं (2 पतरस 3:17)। घटित होने वाले कुछ घटनाओं को हम पहले से ही जान लेते हैं इस कारण हम यह निर्णय ले सकते हैं कि हमें परमेश्वर के तरफ रहना है या शैतान की तरफ।

ग. प्रतिज्ञा पत्र

"व्याख्या के प्राथमिक सिद्धांत" की आठवीं सिद्धांत में विभिन्न प्रकार के नौ प्रतिज्ञा पत्रों के बारे में विचार किया गया है जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच की वाचाएं हैं। उनमें कुछ मनुष्य की आज्ञाकारिता की शर्त पर आधारित हैं और अन्य कुछ बेशर्त थीं जो परमेश्वर की निष्ठा पर आधारित था। इन प्रतिज्ञाओं में एक विश्वासी की वर्तमान की और अनन्त जीवन की सुरक्षाओं के वायदे पाये जाते हैं। अध्ययनकर्ता को चाहिये कि इन प्रतिज्ञा पत्रों में दिये गये सूचनाओं का पुनः अवलोकन करें और परमेश्वर के वायदों पर आधारित इन सुरक्षाओं का विचार करें।

घ. अनन्त सुरक्षा

अनन्त सुरक्षा का मतलब है कि उद्धार कभी भी नष्ट नहीं होता है (उद्धार को हम नहीं खो सकते हैं)। पूर्व में वर्णित सिद्धांतों का वर्णन इस बात की पुष्टि करता है कि हम इस शीर्षक पर विचार विमर्श करते हैं तो न्यायोचित कारणों पर मनन करना महत्वपूर्ण होगा। पवित्रशास्त्र के इस वचन को जब हम महत्व देते हैं कि हमारा उद्धार खो नहीं सकता तो वचन की बातों को हमें सच मानना होगा जब तक वचन खुद होकर इस विषय में छूट नहीं देते। उदाहरण में ***"सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है"*** (रोमियों 3:23)। इस विषय में केवल एक ही व्यक्ति छूटता है, ***"जिसने कोई पाप नहीं किया है"*** और वह है यीशु मसीह (1 पतरस 2:22)। ये पहुंच जो सब कारणों से कुछ हिस्से तक जो कम करने के कारण जाने जाते हैं, ये कम करने के कारण सही निष्कर्ष की ओर ले जाते हैं जैसे, "यदि सबने पाप किया है केवल मसीह को छोड़ तब उसका मतलब होता है कि मैंने पाप किया है" दूसरी ओर प्रवेश करने वाले कारण यह सब में कारण दिखाते हैं (इसलिये कि मैंने पाप किया है तो सबने पाप किया है) ये कारण लगभग सही है पर केवल मसीह को छोड़कर जो दिखाता है ये स्पष्ट सीमा है। यदि ये सब छोड़ दिया गया तो बड़ी भूल की जा सकती है।

हमारी अनन्त सुरक्षा के सबूत चार भिन्न पहुंच को इस्तेमाल करेंगेः

1. तर्क संगत पहुंच

आइये, अनन्त सुरक्षा के लिये तीन तर्क संगत पहुंच के उदाहरण को देखें। पहला, जबकि उद्धार कर्मों से नहीं विश्वास

के द्वारा अनुग्रह से है तब उद्धार कर्मों के द्वारा खोया नहीं जा सकता जैसे पाप (इफिसियों 2:8–9)। दूसरा – जबकि "नया जन्म" हमें "परमेश्वर का पुत्र" बनाता है तब हमारी असफलताएं उसको नहीं बदल सकती जो हमारा पिता है (यूहन्ना 1:12–13, 2 तीमुथियुस 2:13)। तीसरा – जबकि हम परमेश्वर के शत्रु थे उसने हमारे लिये बहुत कुछ किया – हमें बचाकर तो अब वह हमारे लिये कम नहीं करेगा कि हमें बाहर निकालकर बचा लिया (रोमियों 5:9–10)।

2. स्थिति अवस्थानुसार पहुंच

अनन्त सुरक्षा के लिये स्थिति अनुसार पहुंच उस तथ्य पर आधारित है जिसमें विश्वासी "मसीह यीशु में" पाया जाता है और जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं (रोमियों 8:1)। मसीह में विश्वासी के लिये पिता का प्रेम पिता के पुत्र के प्रेम के लिये बराबर है इसलिये कि अब हम उसके पुत्र हैं (यूहन्ना 1:12–13, रोमियों 8:38–39, गलातियों 3:26, इफिसियों 1:5–8)। वास्तव में हम पहले ही मसीह पुनरुत्थान के बारे में बांटते हैं जो मृत्यु का विषय नहीं है (इफिसियों 2:6)। दूसरा महत्वपूर्ण देखना ये है कि "सिर" अपनी देह के सदस्यों को नहीं निकाल सकता और देह को पूर्ण पाये (1 कुरिन्थियों 12:13)। हम हमेशा उसके भाग होंगे।

3. बचाव की पहुंच

अनन्त सुरक्षा की बचाव की पहुंच मसीह के वर्तमान समय के परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठने के आधार पर है। जो हमारा बिचवई है जो शैतान से लड़ता है (1 यूहन्ना 2:1–2, प्रकाशितवाक्य 12:10)। वह मानव और परमेश्वर के मध्य बिचवई था जिसने मनुष्य के लिये बेहतर वाचा प्राप्त की (गलातियों 3:20, 1 तीमुथियुस 2:5, इब्रानियों 8:6, 9:15, 12:24)। वह अब अपने चुने हुओं के लिये उन्हें बचाने के लिये विनती करता है (रोमियों 8:31–39)। "यदि कोई उसकी भेड़ों को उसके हाथ से छीनने" का प्रयास करता है तो सर्वशक्तिमान पिता और पुत्र पर हमला करता है (यूहन्ना 10:27–29)। (लेखक का नोट : जो मुझे सुरक्षित लगता है)।

4. आत्मिक पहुंच

अनन्त सुरक्षा की आत्मिक पहुंच हमारे कार्य और पवित्र आत्मा के साथ के सम्बन्धों पर आधारित हैं। पवित्र आत्मा बिना उद्धार पाये विश्वासियों को लेता है जो "प्रदूषित बीज" से शरीर में उत्पन्न हुए हैं और मसीह पर विश्वास के कारण बचाये जाते हैं (1 कुरिन्थियों 15:42, 52, 1 पतरस 1:22–25, यूहन्ना 11:25–26)। बहुत से वरदान हमें दिये गये हैं जो पवित्र आत्मा के द्वारा आते हैं (रोमियों 11:29)। पवित्र आत्मा उद्धार में विश्वासी के अन्दर बास करता है और विश्वासी के पुनरुत्थान का दाम अदा करता है (रोमियों 8:9, 1 यूहन्ना 2:27, 2 कुरिन्थियों 1:22)। पवित्र आत्मा उनको बपतिस्मा देता है जो मसीह के साथ मिल जाते हैं और विश्वासी पर छुटकारे के दिन में छाप लगाता है (2 कुरिन्थियों 1:21–22, इफिसियों 1:13, 14, 4:30)।

ङ. दत्तक ग्रहण

यीशु मसीह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है (यूहन्ना 3:16)। विश्वास के द्वारा जब हम मसीह यीशु के सहभागिता में आ गये हैं तब हम परमेश्वर के दत्तक पुत्र गिने जाते हैं। इस प्रकार का अधिकार समूचे इस्राएलियों के लिये था परन्तु बहुतों ने उसे ठुकरा दिया (रोमियों 9:3–4)।

अब एक विश्वासी को परमेश्वर पिता के साथ पुत्र के समान गहरा संबंध रखने का अवसर है यह जानकर कि वह मसीह के संगी वारिस है (रोमियों 8:15–17, गलतियों 4:4–7)। एक दिन हमें इस दत्तक ग्रहण के द्वारा मिलने वाली आशीषों का ज्ञान हो जायेगा (रोमियों 8:22–23)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 7, भाग 4

1. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:13, क्या लोग निश्चय कर सकते हैं कि उनका उद्धार हो गया है?

2. पढ़ें रोमियों 8:29–30 और 1 पतरस 1:1–2, परमेश्वर की घटनाओं के विषय में पहले से क्या दृढ़ इच्छा है?

3. पढ़ें यूहन्ना 10:27–29, यीशु की "भेड़ों" को जो वायदा किया गया कौन हैं?

4. पढ़ें इफिसियों 2:8–9 और रोमियों 11:29, जबकि उद्धार एक वरदान है, क्या परमेश्वर इसे वापस ले लेगा?

5. पढ़ें यूहन्ना 1:12–13 और 2 तीमुथियुस 2:13, यदि विश्वासी – बिना विश्वास के हो गया तो क्या वह परमेश्वर का पुत्र कहलाना बंद कर देगा?

6. पढ़ें रोमियों 5:9—10 और लूका 6:31—36, क्या जब हम परमेश्वर के शत्रु थे तभी उसने हमारा उद्धार किया? सबसे अधिक प्रेम प्रदर्शित करने का क्या करने देता है?

7. क्या ये बात बनेगी जबकि उसने हम शत्रु थे तब ही बचा लिया और अपनी संतान बनाया तो क्या अब वह हमें निकाल देगा?

8. पढ़ें रोमियों 8:1, हमारा मसीह में जो स्थान है, जो अब नहीं रहता?

भाग 5
भविष्यकाल : भविष्यवाणी (एस्कातोलोजी)

क. भूमिका

परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से सदियों के लिए योजनाएं तैयार की है और होने वाले मुख्य घटनाओं के विषय में हमें पहले से सूचित किया है। कुछ घटनाओं के विषय में विस्तार से भी बताया है। अब हमारा कर्तव्य है कि हम विश्वास करें कि आने वाले दिनों की एक–एक घटनाओं को परमेश्वर ने अपने हाथ में (या अधीन में) रखा है।

परमेश्वर के वचन में भविष्यवाणी एक महत्वपूर्ण विषय है। 1189 अध्यायों में से 271 अध्याय भविष्यवाणियों से भरा पड़ा है अर्थात् पवित्र शास्त्र की लगभग एक चौथाई भाग में भविष्यवाणियां हैं। इसके अलावा और भी कुछ अध्यायों में कुछ पद भविष्यवाणियों से संबंधित हैं, इन कारणों से भविष्यवाणियों का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

जब, भविष्यवाणियों का अध्ययन करेंगे तो अध्ययनकर्ता को सबसे पहले उन घटनाओं को निर्धारण करना होगा जो अभी तक पूरा नहीं हुआ हो, ये उसके अध्ययन के लिए मददगार साबित होगा। इस पुस्तक के चौथी अध्याय में 15वें सिद्धांत को स्मरण करें ("व्याख्या का प्राथमिक सिद्धांत") जिसमें कुछ भविष्यवाणियां पूरी हुईं परन्तु कुछ अभी तक अधूरी हैं।

इस विषय के संबंध में विभिन्न घटनाओं का जो भविष्य की घटनाओं संबंधित है, समझना जरूरी है।

ख. छुटकारा

भविष्यवाणी और छुटकारे का अध्ययन एक दूसरे से संबंधित है। अध्ययनकर्ता के लिये यह उत्तम होगा कि वह पूर्व में दिये गये "व्याख्या के प्राथमिक सिद्धांत – 13 का पुर्नावलोकन करें।

इतिहास में छुटकारे का समय, वह समय था जिसमें परमेश्वर ने लोगों को विभिन्न जिम्मेदारियां दी थीं। इसी समय में याजकपन का अन्त हुआ और व्यवस्था को भी अनुग्रह में बदला गया (इब्रानियों 7:12)।

अन्यजातियों का युग आदम का पाप करने के बाद से आरम्भ होकर इस्राएली लोगों का मिस्र से छूटने तक का समय है। इस्राएलियों का युग मिस्र में से निकलते वक्त से आंरभ करके पेन्तिकुस्त के दिन तक रहा, ये पूर्ण रूप से उस समय समाप्त होगा जो "महाक्लेशकाल" के नाम से जानने वाला "7 साल" के बाद या दानिय्येल के पुस्तक के अनुसार "70 सप्ताह" के बाद (दानिय्येल 9:24–27)।

अभी हम कलीसियाई युग में है जो पेन्तिकुस्त के दिन से प्रारंभ हुआ और कलीसिया का उठा लिये जाने के दिन समाप्त होगा।

सहस्त्राब्दी युग (हजार साल का राज्य) यीशु मसीह का द्वितीय आगमन से आरंभ करके विरोधी शैतान का अन्तिम बलवा के समय तक रहेगा।

ग. कलीसिया का उठा लिया जाना

कलीसिया का उठा लिया जाने को "रेप्चर" कहते हैं वह यूनानी भाषा का "रेपर" शब्द से आया है, और यूनानी भाषा में "हरपड़ो" कहते हैं जिसका वर्णन 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में मिलता है। हिन्दी में इसका अर्थ है "पकड़ लिया जाना"।

"रैप्चर" के समय, मसीह यीशु मरे हुए विश्वासियों को पुनःजीवित करेगा और जो जीवित विश्वासी है उनका रूपान्तरण करके अपने पास मध्यावकाश में उठा लेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:14–17)। यह रूपान्तरण पलक झपकते ही होगा (1 कुरिन्थियों 15:51–52)।

"रैप्चर" के साथ कलीसियाई युग का अन्त होगा और साथ – साथ महाक्लेशकाल का आरंभ होगा।

घ. महाक्लेश काल

यह शब्द "ट्रिब्यूलेशन" यूनानी भाषा में से आया है। यूनानी भाषा में "थिलिप्स" कहते हैं जिसका अर्थ है "दबाव"। ऐसा दबाव

है कि जैसे एक व्यक्ति मान लें अपने पांवों से अंगूर को कुचलने पर क्या स्थिति रहेगी? इस कालावधि में भयंकर क्लेश होगा जो अभी तक संसार में लोगों ने नहीं देखा हो। इसका विवरण प्रकाशितवाक्य 6–19 तक अध्यायों में दिया गया है।

महाक्लेशकाल का कालावधि सात साल तक रहेगा, जिसको "दानिय्येल की 70 सप्ताह" के नाम से भी जाना जाता है (दानिय्येल 9:24–27)। परमेश्वर ने दानिय्येल नबी को एक दर्शन दिया जिसमें परमेश्वर अपनी प्रजा यहूदियों के लिये "70 सप्ताह" के नाम से कुछ सालों को ठहराया गया था उसमें 69 सप्ताह का समय पूरा हो गया अर्थात् जब यीशु मसीह उस गदही की बच्ची के ऊपर सवार होकर यरूशलेम को गया था (क्रूसीकरण के पहले का समय)। 70वीं सप्ताह का समय उन सात साल का समय होगा जो प्रभु यीशु मसीह का द्वितीय आगमन से (रैप्चर के बाद का 7 साल) समाप्त होगा।

ङ. द्वितीय आगमन

सात साल के महाक्लेश काल के तुरन्त बाद प्रभु यीशु मसीह का दोबारा आगमन होगा (मत्ती 24:29)। उस समय का आगमन "रैप्चर" के समय से (कलीसिया का उठा लिये जाने के समय से) भिन्न होगा। इस समय यीशु मसीह अपना पांव इस पृथ्वी पर रखेगा जबकि "रेप्चर" के समय वह बादलों पर आयेगा (जकर्याह 14:1–6, प्रेरितों के काम 1:11)।

प्रभु यीशु मसीह के इस द्वितीय आगमन में वह अपने सब विरोधियों को हराकर हजार साल इस पृथ्वी पर राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 19:20, 20:6)। सबसे पहले यीशु मसीह जैतून पहाड़ पर अपना पांव रखेगा और वह पहाड़ दो भागों में विभाजित होगा उसके बाद बचे हुए इस्राएलियों को छुड़ायेगा (जकर्याह 14:1–6) और पश्चिम के राजा को नाश करेगा, स्वर्ग से आग गिरकर उत्तर के राजा को भी नाश करेगी, (यहेजकेल 38,39)। दक्षिण के राजा को पहले से ही नाश कर चुका था। इसलिये पूर्व के राजाओं से लड़ने के लिये अपना कमर कसेगा (यशायाह 63:1–6, प्रकाशितवाक्य 14:20)।

च. सहस्त्राब्दी राज्य

यीशु मसीह के इस पृथ्वी में का हजार साल के शासन काल को "सहस्त्राब्दी राज्य" कहते हैं (प्रकाशितवाक्य 20:6)। इस विषय के संबंध में और भी कई भागों में हम अध्ययन करते हैं।

सहस्त्राब्दी राज्य में इब्राहिम का और दाऊद का और नई व्यवस्था की भी वाचाएं पूरी होंगी और जो श्राप जो आदम के समय पाप के कारण मानव जाति के ऊपर पड़ा था, वह भी समाप्त हो जायेगीं (उत्पत्ति 3:17–19)।

इस शासन काल की विशेषताएं निम्न हैं: (1) युद्ध नहीं होगा (यशायाह 2:4, मीका 4:3)। (2) जानवरों के बीच शत्रुता नहीं होगी (यशायाह 11:6–9, 35:9, 65:25)। (3) बीमारी और विकलांगता नहीं होगी और आयु लम्बी रहेगी (यशायाह 29:17–19) (4) कोई भी प्रकार का न सामाजिक, न आर्थिक और न राजनीतिक संगठन होगा (यशायाह 14:3–6)। (5) जनसंख्या बढ़ेगी (यिर्मयाह 30:20)। (6) मज़दूरी (यिर्मयाह 31:5, यशायाह 62:8–9, 65:21, 23)। (7) आर्थिक सम्पन्नता (यशायाह 35:1,2,7) और (8) प्रभु से ज्योति (जर्कयाह 14:6–7) हजार वर्ष का राज्य यहूदी और अन्यजातियों द्वार किया जायेगा जो महान क्लेश से "भेड़ों" की नाईं बच जायेंगे (मत्ती 25:31–46)। तो वहां मानव जाति पाप के साथ होगी जो हजार वर्ष की राज्य के दौरान होंगे। उनसे जो बच्चे उत्पन्न होंगे उनके उद्धार की आवश्यकता होगी आत्मिक विशेषता में ये शामिल है (1) धार्मिकता (मलाकी 4:2, भजन 89:14, (2) प्रभु का पूरा ज्ञान (यशायाह 11:9), (3) पवित्र आत्मा की भरपूरी (योएल 2:28–29), (4) प्रसन्नता (यशायाह 9:3–4) और (5) न्याय (यशायाह 9:7, 11:5, 32:16, 42:1–4; 65:25)।

मसीह का राज्य समस्त संसार का होगा (दानिय्येल 7:14, मीका 4:1–2, सपन्याह 3:9–10, भजन 72:8) एक संयुक्त सरकार के साथ (यहेजकेल 37:24–28) अपराध समाप्त हो जायेंगे (भजन 72:1–4, प्रकाशितवाक्य 19:15)। यरूशेलम संसार की सरकार का केन्द्र होगा (यशायाह 2:2–4, यिर्मयाह 31:6, मीका 4:1, सपन्याह 2:10–11) और परमेश्वर के द्वारा बचाये जायेंगे (यशायाह 11:9) आसानी से मिल सकेंगे (यशायाह 35:8–9) और बहुत बढ़ जायेंगे (यिर्मयाह 31:38–40, यहेजकेल 48:30, जकर्याह 14:10), यरुशलेम आराधना का केन्द्र होगा (यिर्मयाह 30:16–21, 31:6,23, योएल 3:17, जकर्याह 8:8, 20) हजार वर्षीय मंदिर का केन्द्र (यहेजकेल 40:1–46:24) और यहोयादा के याजकपन की अगुवाई में चलेंगे (यहेजकेल 43:19, 44:15)।

छ. महान श्वेत सिंहासन का न्याय

हजार वर्ष के राज्य के और शैतान के छोड़ देने के बाद महान श्वेत सिंहासन का न्याय होगा। उसे अनुमति होगी कि वह देशों को भरमा सके और गोग और मागोग के विद्रोही की अगुवाई करें (प्रकाशितवाक्य 20:7–8)। वे जिनका उद्धार नहीं हुआ

है वे उसके शिकार बन जायेंगे। इस समय प्रभु शैतान के सब हमले समाप्त करेगा और स्वर्ग से आग आयेगी और शैतान और झूठा भविष्यद्वक्ता आग की झील में डाले जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:9–10)।

उन घटनाओं के बाद अविश्वासी पुनः जी उठेंगे कि अपने अन्तिम न्याय का "श्वेत सिंहासन" के सामने करेंगे और वे आग की झील में डाले जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)।

ज. सनातन राज्य

"सनातन राज्य" का अर्थ है "प्रभु कस दिन" (2 पतरस 3:12)। "महान श्वेत सिंहासन" के सामने न्याय के बाद, वर्तमान समय के आकाश और पृथ्वी को नाश करने के बाद जब नया आकाश और नई पृथ्वी के साथ सनातन राज्य का आरंभ होगा (यशायाह 65:17, 66:22, 2 पतरस 3:12–13, प्रकाशितवाक्य 21:1)। नई पृथ्वी में नया यरूशलेम भी रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:2–5)। इस्राएल के 12 गोत्रों के ऊपर बारह प्रेरित लोग राज्य करेंगे। नये यरूशलेम में कोई मन्दिर नहीं होगा क्योंकि यीशु मसीह – मेमना जो है वह ही ज्योति रहेगी (प्रकाशितवाक्य 21:22–23)। वहां एक "जीवन की नदी" होगी जो सिंहासन में से निकलकर, नगर की सड़क के बीचों बीच बहती है और नदी के दोनों पार जीवन का पेड़ मिलेगा जिसमें बारह प्रकार के फल लगता है और वह हर महीने में फलता है (प्रकाशितवाक्य 22:1–2)।

इस सनातन राज्य में पाप नहीं रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:24–27)। जिन लोगों ने मसीह यीशु पर विश्वास नहीं किया और पाप क्षमा की प्राप्ति नहीं पाए वे लोग इस नए आकाश, नई पृथ्वी और नए यरूशलेम में प्रवेश नहीं कर पायेंगे। वे अपने सनातन काल आग की झील में बितायेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:8)। जो लोग "जय पायेंगे" वे ही जीवित परमेश्वर के साथ उस अनन्त आशीष के भागी होंगे। परमेश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमें विजय दिया, ***"जो इस संसार पर जय प्राप्त करता है और वह विजय हमारा विश्वास है"*** (1 यूहन्ना 5:4–5)।

कृपया ध्यान रखें, प्रकाशित वाक्य 2:18 में दिये गये पापों के कारण वे लोग स्वर्ग में सनातन आनन्द से वंचित न रहेंगे परन्तु यीशु मसीह में विश्वास नहीं करके पापों से मुक्ति नहीं पाने के कारण आग की झील में डाल दिये जायेंगे।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 7, भाग 5

1. **पढ़ें इब्रानियों 7:12, जब रिहाई या छुटकारा बदल जाता है तो क्या होता है?**
2. **पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 4:14–17, कलीसिया के उठाये जाने के समय विश्वासी कहां मिलेंगे?**
3. **पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:51–52, कितना शीघ्र कलीसिया का उठाया जाना होगा?**
4. **पढ़ें यूहन्ना 14:1–3, कलीसिया के उठाये जाने के बाद कलीसिया कहां होगी?**
5. **पढ़ें दानिय्येल 9:24–27, 70 सप्ताह, 7 वर्ष अभी पूरे नहीं हुए हैं, इस समय को क्या कहते हैं?**
6. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 19:11–16, मत्ती 24:29–30 और जकर्याह 14:1–6, महाक्लेश के बाद मसीह क्या करेगा?**
7. **कलीसिया के उठाये जाने और मसीह के पुनः आगमन के बीच स्थान का क्या फर्क होगा?**
8. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 10:20 – दूसरे आगमन पर कौन आग की झील में डाला जायेगा?**
9. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:1–3, दूसरे आगमन पर कौन छोड़ दिया जायेगा?**
10. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:4–6, मसीह का राज्य पृथ्वी पर कब तक रहेगा?**
11. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:7–10, हजार वर्ष के बाद, शैतान थोड़े समय के लिये छोड़ा जायेगा, विद्रोह करेगा और तब दोबारा हराया जाकर उसका अन्त हो जायेगा।**
12. **पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20:11–15, महान श्वेत सिंहासन के न्याय के बाद जिनका नाम "जीवन की पुस्तक" में लिखा हुआ न मिला तो उनका अन्त क्या होगा?**
13. **पढ़ें 2 पतरस 3:10–13 और प्रकाशितवाक्य 21:1, महान श्वेत सिंहासन के न्याय के बाद क्या होगा?**

अध्याय 8

परमेश्वर के अभिप्राय की धार्मिक शिक्षाएं

भाग 1
व्यक्तिगत मसीही जीवन (होडोलॉजी)

क. भूमिका

हर एक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की योजना है कि वह उसके पुत्र प्रभु यीशु के स्वरूप में बदल जाए (रोमियों 8:29)। उसने तीन अवस्थाएं स्थापित की हैं ताकि प्रत्येक व्यक्ति उसके उद्देश्यों का अवधारणा करने के लिए परिवर्तन के एक क्रम से गुजरे। इसे अवस्था 1, 2, 3 कह सकते हैं।

अवस्था 1: यह उस समय दिखाई पड़ती है जब एक अविश्वासी यीशु पर विश्वास करता है (प्रेरित 16:31)। वह उस व्यक्ति का अनन्त उद्धार पाने का क्षण होता है।

अवस्था 2: यह एक प्रक्रिया है जो उस समय दिखाई पड़ती है जब एक व्यक्ति उद्धार पाता है और मृत्यु या कलीसिया के उठाए जाने तक।

अवस्था 3 : यह शारीरिक मृत्यु से आरंभ होती है और कलीसिया के उठाए जाने से लगातार अनन्त काल तक होती है।

यह ऐच्छिक परिवर्तन यीशु के स्वरूप में तब तक पूर्ण रूप से स्थापित नहीं होगा जब तक हम अवस्था 3 में नहीं पहुंचते। यीशु के स्वरूप में बदलने का अर्थ है उसके समान व्यवहार होना, बगैर लालच के, नम्र, त्याग से भरा (फिलिप्पियों 2:5–8)। यह परिवर्तन तब होगा जब हम जांचेंगे कि ***हम अपनी बुलाहट के योग्य चाल चलते हैं*** या नहीं (इफिसियों 4:1–3)।

तथ्य ये है कि विश्वासी के जीवन में कई हिस्से हैं जिन्हें पहचानना महत्वपूर्ण है इसलिये कि ये व्यक्ति को परमेश्वर का वचन समझने में सहायता करेगा। जब हम प्रश्न पूछते हैं कि "कौन" हमें निश्चय करना है कि यदि परमेश्वर विश्वासियों से बातें कर रहा है या अविश्वासियों से उस हिस्से को जिसे देखना है उसमें सही तरह से हस्तक्षेप करना इस बात को दिमाग में रखें जैसे हम आत्मिक विषय को देखते हैं।

ख. मसीही जीवन के तेरह तत्व

1. विश्वास

साधारणतः विश्वास किसी व्यक्ति पर या किसी पर भरोसा रखना है। यह विश्वास है कि व्यक्ति या वस्तु आपकी आवश्यकता या इच्छा पूर्ण करेगा। एक व्यक्ति ऐसा सोचे या विश्वास करें कि मनुष्य एक दूसरा स्वर्ग और पृथ्वी बना सकता है ठीक वैसा जिसमें हम रहते हैं तो ऐसे विश्वास की कोई कीमत नहीं है।

ऐसे व्यक्ति पर विश्वास जिसे स्थापित करने का ज्ञान और योग्यता दोनों हैं, ऐसा विश्वास का मूल्य है, ***"अब विश्वास आशा की हुई बातों का निश्चय और अनदेखी बातों का प्रमाण है, क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई है विश्वास ही से हम जान पाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है वह देखी हुई वस्तुओं से बना है"*** (इब्रानियों 11:1–3)।

विश्वास एक अविश्वासी को विश्वासी बनाने के लिए आवश्यक है। यह विश्वास पवित्र आत्मा से हमारा रिश्ता बनाता है (गलातियों 3:2–3, 14)।

मसीही जीवन में (2 पहलू) क्योंकि बिना उसके प्रसन्न करना असम्भव है (इब्रानियों 11:6, 2 कुरिन्थियों 5:7)। जब वह हम में पाता है तो आनन्दित होता है (मत्ती 8:5–10)। विश्वास वो है जो संसार को जीत लेता है – शैतान की पद्यति को (1 यूहन्ना 5:4–5) विश्वास की जांच होगी कि हम बच्चे से बड़े हो जायें (याकूब 1:3) हमारे विश्वास का बना रहना पवित्र आत्मा के साथ सम्बन्ध में बढ़ने का कारण होता है (गलातियों 3:4–5)। विश्वास हमेशा मसीही जीवन की नींव है (2 पतरस 1:5–9)।

जब हम मसीह के साथ पुनरुत्थित देह में होते हैं तो फिर विश्वास की जरूरत नहीं होगी क्योंकि जैसा वह है हम उसे वैसा ही देखेंगे (1 यूहन्ना 3:2)।

2. आत्मिकता

आत्मिकता शब्द इस्तेमाल होता है – सम्बन्धों की गहराई को बताने में जो परमेश्वर पवित्र आत्मा के साथ है। इसलिये इसे विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा पर आधारित होना चाहिये। एक अविश्वासी का पवित्र आत्मा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है (1 कुरिन्थियों 2:14) इसलिये कोई आत्मिक नहीं होता।

क. अन्दर वास करता है

कलीसिया युग का विश्वासी बीते युगों के विश्वासियों से फर्क होता है उस बात में कि पवित्र आत्मा ने विश्वासियों पर कार्य किया है। वह विश्वासी के अन्दर कार्य करता है – परमेश्वर (यीशु) के वचन के अनुसार (यूहन्ना 14:17)। विश्वासियों के अन्दर पवित्र आत्मा की उपस्थिति उद्धार का सबूत है (रोमियों 8:9)।

पवित्र आत्मा का अन्दर वास करना एक वरदान है जो उद्धार के समय दिया जाता है (रोमियों 5:5, प्रेरित 11:16–17, 1 कुरिन्थियों 2:12) और एक वरदान के रूप में इसे रद्द नहीं किया जा सकता (रोमियों 11:29)। इसलिये जब व्यक्ति पाप करता तो पवित्र आत्मा नहीं छोड़ देता – ये इससे साबित होता है कि यद्यपि कुरिन्थियों के लोग जिन्हें "शारीरिक" कहा गया है (1 कुरिन्थियों 3:3) और पाप में लगे हैं (1 कुरिन्थियों 5:5)। सबके अंदर पवित्र आत्मा वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16, 6:19)।

ख. भरना

जबकि शब्द आत्मिकता हमारे पवित्र आत्मा के साथ के सम्बन्ध को बताता है, "पवित्र आत्मा की भरपूरी" हमारी आत्मिकता की शुरुआत है। हमें भरपूरी के लिये खोजना चाहिये और पवित्र आत्मा से हर समय समर्थ होना चाहिये जिससे वह हमारे द्वारा "फल उत्पन्न कर सके" (गलातियों 5:22–23)।

धर्मशास्त्र में पवित्र आत्मा की भरपूरी का परिचय एक विशेष रूप से समर्थ होकर विशेष काम कर सकता है। पर ये प्रतिदिन का मसीही जीवन का लगातार काम को दिखाना है। मसीही जीवन में पवित्र आत्मा की भरपूरी पहले इस्तेफनुस में देखा गया जिसका चुनाव विधवाओं की सेवा करने के लिये किया गया था (प्रेरित 6:5)। इस अर्थ के विस्तार की अपेक्षा की जानी है – जब हम ये देखते हैं कि कलीसिया एक "बच्चे" की तरह आरम्भ हुई है और तब परिपक्व होने के लिये प्रोत्साहित की गई है (इफिसियों 4:11–16)।

पवित्र आत्मा की भरपूरी जो सुसमाचार और प्रेरितों की पुस्तक से बाहर वर्णन किया गया है पौलुस जो आज्ञा देता है, ***"दाखरस से मतवाले न बनो क्योंकि इससे लुचपन होता है पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ"*** (इफिसियों 5:18)। ये विरोधाभास ये संकेत करता है कि पवित्र आत्मा की भरपूरी में ये प्रक्रिया शामिल है क्योंकि एक दाखरस से एकाएक नशे में नहीं होता। प्रक्रिया के विचार को पौलुस के पहले लिखने के इस्तेमाल में जहां शब्द "भरना" आया है (लेख यूनानी में) जो इफिसियों 1:23, 3:19, और 4:10 में पाया गया है। पौलुस की आज्ञा पवित्र आत्मा की भरपूरी की लगातार बने रहने के महत्व को लिये चलती है जो लगातार पहचान और पाप के अंगीकार को शामिल करती है।

ये विश्वास करते हुए कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है। लगातार बने रहने की महत्व भी हमारी "आत्मिकता" से सीधा सम्बन्ध रखती है।

सच्ची आत्मिकता में अनुग्रह और विश्वास है। हमें बताया गया है, ***"जैसे तुमने प्रभु यीशु को ग्रहण कर लिया है उसी में चलते रहो, उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ और जैसा सिखाये गये विश्वास में दृढ़ होते जाओ और अत्यन्त धन्यवाद करो"*** (इफिसियों 2:8–9)। हमें और भी स्पष्टता से निर्देशित किया गया है कि आत्मिकता जो मसीहियों को परिपक्वता की ओर ले जाती है ये विश्वास की चाल पर आधारित है (गलातियों 3:2–3) और बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है (इब्रानियों 11:6)।

अन्त में, पवित्र आत्मा की भरपूरी विश्वासी को समर्थ बनाता है जिससे वे यीशु मसीह में और भी अधिक परिपक्व हो जायें।

ग. खेदित करना

जब विश्वासी पाप करता है तब पवित्र आत्मा खेदित होता है (इफिसियों 4:30)। जितने लंबे समय तक हम बिना अंगीकार किए हुए पाप को अपने जीवन में स्थान देते हैं उतना ही ज्यादा आत्मा खेदित होता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)।

जब विश्वासी पाप करता है वह पवित्र आत्मा को खेदित करता व शोकित करता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। जब तक विश्वासी उस पाप का अंगीकार नहीं करता तब तक पवित्र आत्मा शोकित रहता है। यह शब्द बताता है कि विश्वासी के व्यक्तिगत जीवन में क्या घटित होता है।

3. पापों का अंगीकार

परमेश्वर के वचन से यह बात स्पष्ट है कि जब हम उद्धार पाते हैं तब हमारे पाप क्षमा किये जाते हैं और यह भी है कि एक विश्वासी पाप करेगा (रोमियों 7:14–25)। हमारे उद्धार का पाप कोई मुद्दा नहीं है। विश्वासी के जीवन में पाप उसके परमेश्वर से संबंध में आघात पहुंचाता है और दूसरों को भी आघात पहुंचाता है।

संगति को आसान शब्दों में बताया जाता है कि दूसरों के साथ बांटना। यहां तक कि अविश्विासी भी एक दूसरे के साथ संगति कर सकते हैं, जब विश्वासी या अविश्वासी संगति के नियम को तोड़ते हैं, वे दूसरे के साथ समन्वय को तोड़ते हैं। मसीही होने के नाते हमें परमेश्वर के साथ संगति करती है।

दूसरें से और परमेश्वर से अपना संबंध कैसे पुनः स्थापित करना है इसका वर्णन 1 यूहन्ना 1:5–10 में मिलता है।

पद 5 – संगति के लिये जीवन स्तर बना देता है, ये कहता है, ***"जो समाचार हमने उससे सुना और तुम्हें सुनाते हैं वह ये है कि परमेश्वर की ज्योति है तो पाप के प्रति सत्य है।***

पद 6 – संगति के जांच बैठाता है, वह कहता है, ***"यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अंधकार में चलें तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते"।*** इसका मतलब है कि हमारे विचार, बोलना और कार्यों की परमेश्वर की ज्योति में जांच होनी चाहिये।

पद 7 – संगति के लिये दशा ठहराती है, वह कहता है, ***"पर यदि जैसा वह ज्योति में है वैसे हम भी ज्योति में चलें तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है"।*** हमारे विचार, बोल और कार्य जो मसीह की तरह हैं एक दूसरे के साथ संगति लाते हैं और लगातार पाप से शुद्ध करता है।

पद 8 – पाप के धोखे को उजागर करता है, वह कहता है, ***"यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं तो अपने आप को धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं"।*** इस पद में शब्द "हम" विश्वासियों को शामिल करता है क्योंकि यूहन्ना ने अपने आपको झुण्ड में शामिल कर लिया है। जब एक व्यक्ति विश्वास करता है कि वे पाप रहित सिद्धता में पहुंच गया है तो वह व्यक्ति को धोखा दिया गया है।

पद 9 – पाप का समाधान देता है, ये कहता है, ***"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है"।*** यूनानी शब्द मान लेने के लिये (होमोलाजियो) का अनुवाद का मतलब है स्वीकार करना और परमेश्वर के साथ सहमत होना कि विचार, बोल या कार्य हकीकत में पाप है। कृपाकर के नोट करें कि ये कोई नुस्खा नहीं कि परमेश्वर पाप को क्षमा करें जब हृदय में पश्चाताप नहीं है तो परमेश्वर की निन्दा नहीं होना चाहिये (गलातियों 6:6)। कारण कि एक पाप अंगीकार करेगा जीवित परमेश्वर के सामने क्योंकि व्यक्ति को विश्वास है कि वह कर सकता और क्षमा करेगा। ये पद परमेश्वर की ओर से वायदा है जिसे मसीहियों को जानना चाहिये, विश्वास कर इस्तेमाल करें।

पद 10– बयान करता जो पाप को नहीं पहचानते कहता है, ***"यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं हैं"।*** ये पद कहता है कि यदि हम उस पाप को न पहचाने जो हमारे जीवन में रहता है तो परमेश्वर को झूठा कहते हैं और उसके वचन को नहीं समझते।

जब हम इन सब पदों को देखते हैं तो पाते हैं कि परमेश्वर के साथ आत्मिक संगति (पद 6) और दूसरे विश्वासी (पद 7) पाप के कारण घायल हैं। इस पाप को परमेश्वर के सामने पहचाना जाना चाहिये (पद 9) परमेश्वर विश्वास योग्य और धर्मी है, जिससे क्षमा हो सकती है और संगति पुनः बनाई जा सकती है।

कृपा कर नोट करें कि पाप का अनन्त का परिणाम जो हैं जिन्हें क्षमा किया गया है। विश्वासी को फिर भी ऐसे परिणाम का सामना करना पड़ सकता है। आदम और हव्वा को क्षमा कर दिया गया था पर फिर भी अदन की वाटिका से निकाल दिये गये थे।

4. आत्मिक वरदान

आत्मिक वरदान परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यता है जो प्रभु की देह में सेवा के लिए विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिये

दी जाती है। यह एक ग्रीक शब्द से बना है जिसका अर्थ है "अनुग्रह के परिणामस्वरूप दिया हुआ" (करिज्मा)। यह मानवीय योग्यता के कारण दिया हुआ वरदान नहीं है जो स्वाभाविक जन्म लेने के कारण मिलता है इसे प्रभु यीशु मसीह स्थापित करते हैं (इफिसियों 4:11)। और पवित्र आत्मा उद्धार के समय परिणाम के अनुरूप बांटता है (1 कुरिन्थियों 12:11, 18) पूरी देह को (इफिसियों 2:20)। हर व्यक्ति के पास एक वरदान होता है (1 पतरस 4:10) पर सभी वरदान नहीं (1 कुरिन्थियों 12)।

ये जानना महत्वपूर्ण है कि सभी वरदानों को प्रेम में कार्य करना है (1 कुरिन्थियों 13) और वे इस प्रकार बनाये गये हैं कि दूसरों की सेवा करें (1 पतरस 4:10)। पौलुस प्रेरित ने 1 कुरिन्थियों में स्पष्ट कर दिया है कि भले ही वो आत्मिक वरदान हैं पवित्र आत्मा के द्वारा दिये गये हैं वे शारीरिक तरह से इस्तेमाल किये जा सकते हैं कि दूसरे का ध्यान खींचें या हठीले बन जायें (1 कुरिन्थियों 12)। आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल गड़बड़ी और विभाजन के लिये नहीं पर कलीसिया के बनाने में होना चाहिये (1 कुरिन्थियों 14:12,33)।

नये नियम में पांच स्थान हैं जहां आत्मिक वरदानों का बयान नाम से किया गया है। 1 कुरिन्थियों 12:8–10 में हम ज्ञान के वचन को पाते हैं, बुद्धि के वचन, विश्वास, चंगाई, आश्चर्यकर्म, भविष्यवाणी आत्मा की पहचान, भाषायें और भाषाओं का अनुवाद। **1 कुरिन्थियों 12:28** में हम पाते हैं कि प्रेरित, भविष्यवाणी, शिक्षा, आश्चर्यकर्म, चंगाई, सहायता, प्रबन्धन और भाषाएं। **इफिसियों 4:11** में हम पाते हैं प्रेरित, भविष्यवाणी, सुसमाचार प्रचार और पास्टर – शिक्षा। **1 पतरस 4:11** में संचार और सेवाएं दी गई हैं आत्मिक वरदानों की दो आधारभूत वर्ग। **रोमियों 12:6–8** में हमें उन विशेष वरदानों की सूची दी गई है।

कृपाकर ये जानिये कि आत्मिक वरदान कलीसिया के लिये दिये गये थे जो पेन्तिकोस्त के दिन आरम्भ हुए (प्रेरित 2)। कुछ वरदान नींव डालने के लिये बनाये गये थे (इफिसियों 2:20)। जिससे कलीसिया आरम्भ हो सके, बनाई जा सके और स्थापित की जा सके (1 कुरिन्थियों 14:40)। ये वरदान "चिन्ह" कहलाये और अविश्वासियों को प्रचार करने के लिये बनाये गये और कि नये विश्वासियों को स्थिर करें (1 कुरिन्थियों 14:20–22)। जब तक कि धर्मशास्त्र इस वितरण के लिये लिखी जा सके। वे अस्थाई थे और उनके पूरा होने के बाद आवश्यक नहीं थे। इसलिये वे गायब हो गये (1 कुरिन्थियों 13:8–10)।

निम्न लिखित चार्ट कुछ समय के लिये दिये गये वरदानों को दर्शाता है जो अब कलीसियाई युग में आत्मिक वरदान नहीं हैं।

अल्पकालिक आत्मिक वरदान जो कलीसियाई काल के लिए दिये गए	
बुद्धि का वचन (1 कुरिन्थियों 12:8)	अलौकिक निर्देशन जिसमें कलीसिया को सत्य लागू करना सिखाया जाए।
विश्वास का वरदान (1 कुरिन्थियों 12:9)	अलौकिक परमेश्वर पर महान विश्वास जब परिस्थितियां बिल्कुल प्रतिकूल दिख रही हों (1 कुरिन्थियों 13:2; प्रेरित 12:1–19)।
ज्ञान का वचन (1 कुरिन्थियों 12:8)	कलीसिया के लिए प्रत्यक्ष जानकारी यह अलौकिक उच्चारण है भविष्यद्वाणी के स्वाभाव का नहीं और उस समय तक मार्गदर्शन करेगा जब तक नया नियम पूर्ण न हो जायें।
चंगाई (1 कुरिन्थियों 12:9, 28)	व्यक्तियों की विभिन्न शारीरिक दशाओं से अलौकिक, तुरंत, पूर्ण शारीरिक चंगाई।
आश्चर्यकर्म (1 कुरिन्थियों 12:10,28)	सामान्य प्राकृतिक नियमों को दर किनार करने के लिए अलौकिक तरीका जिसका संबंध चंगाई और दुष्ट शक्तियों को निकालने से हैं (प्रेरित 19:11–12)।
भविष्यद्वाणी (1 कुरिन्थियों 12:10,28; रोमियों 12:6; इफिसियों 4:11)	ऐसी अलौकिक योग्यता जिसमें कलीसिया के लिए पूर्वकालिक जानकारी हो, पास और दूर के भविष्य के लिए (प्रेरित 11:27–28)।
आत्माओं की परख का वरदान (1 कुरिन्थियों 12:10)	प्राथमिक अलौकिक वरदान जिसका उपयोग झूठे शिक्षक और झूठे भविष्यद्वक्ताओं का मूल्यांकन करने के लिये किया जाता है (1 कुरिन्थियों 14:32)।

अन्य भाषा (1 कुरिन्थियों 12:10, 28)	अलौकिक योग्यता जिसमें ऐसी भाषा बोलना जो पहले कभी नहीं सीखी गई हो।
अन्य भाषा का अनुवाद (1 कुरिन्थियों 12:10)	ऐसी भाषाओं का अनुवाद करने की अलौकिक योग्यता जो पहले कभी नहीं सीखी गयी।
प्रेरित (1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 4:11)	एक आत्मिक वरदान जो बारह पुरुषों को दिया गया (प्रकाशितवाक्य 21:14)। जो स्वयं यीशु के द्वारा पकड़े गये (लूका 6:13–16, प्रेरित 9:15, गलती 1:1)।

हमें बताया गया है कि भविष्यवाणी का वरदान, "भाषायें" और "ज्ञान का वचन" जब सिद्ध आयेगा तो वह मिट जायेगा (1 कुरिन्थियों 13:8–10)। जबकि ये वरदान समाप्त हो जायेंगे तब "आत्माओं की पहचान" और "भाषाओं का अनुवाद" वह भी लोप हो जायेगा। क्योंकि वे पहले वर्णन किये वरदानों से मिल गये। बुद्धि का वरदान और विश्वास भी दूसरे वरदानों के साथ कार्य करते दिखाये गये हैं। ये नोट करें कि ये सब वरदान संचार के सम्बन्ध में हैं। जब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी गई है तो कलीसिया के लिये भविष्यवाणी बन्द कर दी गई थी (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)। इसलिये "सिद्ध" को पूरा होना है। परमेश्वर ने स्वांस की, परमेश्वर का प्रेरणा वाले वचन। कोई नई जानकारी कलीसिया को जरूरी नहीं थी – लिखित वचन प्रगट किया गया और नया नियम बन गया।

प्रकाशितवाक्य 21:14 संकेत करता है कि केवल 12 चेले थे (प्रेरित) जबकि ये स्पष्ट है कि दूसरे लोगों ने अपने कार्य क्षेत्र खोले जो "प्रेरित" कहलाये – इसका मतलब ये नहीं कि उनके पास सब वरदान हैं (गलातियों 1:19 प्रभु का भाई उन 12 में नहीं था) ये स्पष्ट है कि ये आत्मिक वरदान अस्थाई था।

"चंगाई" और "आश्चर्यकर्म" के वरदान भी अस्थाई थे जैसा उन्हें नये नियम के इस्तेमाल में देखा जाता है। परमेश्वर अभी भी लोगों को चंगा करता और आश्चर्यकर्म करता है, पर व्यक्तिगत दिये गये आत्मिक वरदान के द्वारा नहीं। प्रभु अभी भी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है (याकूब 5:16) पर वरदान का कार्य करना उस पर निर्भर करता है कि वो किसके पास है। जिनके पास चंगाई का वरदान है प्रभु को पुकार सकते थे और चंगाई होगी (प्रेरित 3:6–8, 5:12–16, 9:34)। वरदान प्रारम्भिक कलीसिया में ध्यान खींचने और जीवित मसीह के संदेश की पुष्टि के लिये किये जाते थे (प्रेरित 8:1–8, 39, 13:4–12, 14:1–4, 19:11–12)। विश्वासियों का एक दूसरे से प्रेम करना ध्यान खींचने का परिपक्व तरीका है कि मसीह के सन्देश को पाये (यूहन्ना 13:34–35)।

हम ये जानते हैं कि पौलुस प्रेरित के पास चंगाई का वरदान था (प्रेरित 20:8–12, 28:8) और फिर भी उसके जीवन में बाद में अपने प्रिय मित्र इफ्रादीतुस को चंगा करने में असफल था (फिलिप्पियों 2:25–27)। या स्वयं को (2 कुरिन्थियों 12:7–9)। जबकि वरदान ने प्रेरित को छोड़ दिया, जो कलीसिया का मुख्य व्यक्ति था, तो सब को ही छोड़ दिया होगा।

दूसरे वरदान कलीसिया के कार्य करने के लिये बनाये गये थे जब उन्होंने "बालकपन" की स्थिति पार कर ली (1 कुरिन्थियों 13:10–13) और इसलिये स्थाई है। ये वरदानों को शामिल करते जो परमेश्वर के वचन को बताते और दूसरों की सेवा करते हैं (1 पतरस 4:10–11)।

निम्न लिखित चार्ट कुछ समय के लिये दिये गये वरदानों को दर्शाता है जो अब कलीसियाई युग में आत्मिक वरदान नहीं हैं।

पूर्णकालिक आत्मिक वरदान जो कलीसियाई काल के लिए दिये गए	
शिक्षा देना (1 कुरिन्थियों 12:28; रोमियों 12:7)	एक ऐसी आलौकिक योग्यता जिसमें परमेश्वर के वचन को दूसरों तक फैलाया जाये।
सहायता (1 कुरिन्थियों 12:28)	दूसरों की सेवा करने का वरदान यह कई क्षेत्रों में उपयोग किया जा सकता है, जैसे – भोजन बनाकर दूसरों को खिलाना (प्रेरित 6:1–6)।
व्यवस्था करना (1 कुरिन्थियों 12:28)	एक ऐसी अलौकिक योग्यता जिसमें परमेश्वर के द्वारा दिये संसाधनों का कलीसिया में वितरण एवं ठीक व्यवस्था करना।
सेवा करना (रोमियों 12:7; 1 पतरस 4:11)	एक अलौकिक योग्यता जिसमें कलीसिया के भौतिक क्रियाओं को व्यवहारिक रूप में करना।
उत्साहित करना (1 रोमियों 12:28)	अलौकिक योग्यता द्वारा प्रभु की देह में लोगों की आवश्यकता पहचानकर प्रोत्साहन देना।

देना (रोमियों 12:8)	एक अलौकिक योग्यता जिसमें एक व्यक्ति अपने साधनों को ऊंचे अनुपात में दूसरों की सहायता के लिए उदारता से और निःस्वार्थ रूप में दें। स्वेच्छा से अपने साधनों को दे एक नियंत्रित भाग ही नहीं।
अगुवाई करना (रोमियों 12:8)	एक ऐसी अलौकिक योग्यता जिसमें कलीसियाई सेवा में व्यक्तियों को सही सही रूप में मार्गदर्शन देना एवं दिशा निर्देश देना ताकि सब सिद्ध बनें।
दया करना (रोमियों 12:8)	वह आत्मिक सेवा जिसमें पहचान कर उन लोगों की सहायता करना जिन्हें आत्मिक एवं शारीरिक आवश्यकताएं हैं।
सुसमाचार प्रचार की सेवा (इफिसियों 4:11)	वह अलौकिक योग्यता जिसमें व्यक्तियों या समूह को यीशु का सुसमाचार प्रगट करना ताकि वे स्पष्ट रूप से समझ सकें।
पासबान – शिक्षक (इफिसियों 4:11)	एक अलौकिक योग्यता के द्वारा परमेश्वर की भेड़ों को चराना वचन की शिक्षा देना और वचन जीवन में लागू करना।

5. धार्मिकता

हमने देखा है कि परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता उसके पुत्र यीशु पर विश्वास करने के द्वारा हमें दे दी है इसे "नया ठहराना" कहते हैं। अब नया विश्वासी यह प्रयास करता है कि उसके जीवन के स्तर परमेश्वर के स्तर पर आधारित हों अर्थात् क्या गलत है और क्या सही हैं। एक विश्वासी का जीवन परमेश्वर के दिये हुए स्तर पर आधारित होता है।

धार्मिकता का अर्थ पाप की अनुपस्थिति ही नहीं पर हृदय और क्रिया कलापों का परिवर्तन जो परमेश्वर के साथ समझौते में है (फिलिप्पियों 2:5–8)। कई क्रिया कलाप जैसे दयालु होना, शत्रुओं से प्रेम करना, गरीबों की सहायता करना ही परमेश्वर के स्तर के अनुरूप उसकी धार्मिकता के भाग हैं (इब्रानियों 11:32–33)।

विश्वासी को धार्मिकता पर चलना चाहिये (1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 2:22–23), धार्मिकता को समझने के लिये परमेश्वर के सभी वचन महत्वपूर्ण हैं (2 तीमुथियुस 3:16–17) और इसलिये नये विश्वासियों के लिये समझना और स्वीकार करना कठिन है (इब्रानियों 5:12–14)।

परमेश्वर के वचन का पालन करना साधारण आज्ञा पालन करना नहीं है उसकी आज्ञा के पालन करने में कि मनुष्यों को प्रभावित करें (मत्ती 6:1)। फरीसी अपनी "धार्मिकता" इस प्रकार करते थे कि दूसरे इसे देखें, वे अपनी परम्पराओं को भी माना करते थे जिस पर वे विश्वास करते थे कि जो धर्मशास्त्र के बराबर है (मत्ती 7:1–8)। एक जब परमेश्वर के वचन से बाहर जाता है और धार्मिकता का स्तर बना लेता है ये "कानूनियत" कहलाता था (जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं) और वह धार्मिकता नहीं है जो परमेश्वर हमसे चाहता है।

पवित्र आत्मा हर एक व्यक्ति को धार्मिकता की कमी के लिये कायल करता है (यूहन्ना 16:8–10)। अविश्वासी के लिये पवित्र आत्मा ये प्रगट करता है कि धार्मिकता की कमी पवित्र परमेश्वर के साथ की संगति को रोक देगा। विश्वास के द्वारा मसीह यीशु में अविश्वासी बचाया जाता है (इफिसियों 2:8–9)। धार्मिक घोषित किये जाने पर वह परमेश्वर के साथ संगति कर सकता है। विश्वासी को उसके जीवन में पाप के लिये पवित्र आत्मा कायल करता है और अंगीकार की आवश्यकता को बताता है जिससे संगति पुनः हो सके (1 यूहन्ना 1:6–10)। धार्मिकता जो विश्वासी खोजता वह पवित्र आत्मा लाता है और परमेश्वर के राज्य में जीने का एक महत्वपूर्ण भाग है (रोमियों 14:16–17)। ये धार्मिकता मसीह यीशु की ज्योति का फल है जो सिद्धता से दैविय जीवन जिया (इफिसियों 5:6–10)।

यीशु हमें बताता है कि यदि हम धार्मिकता के लिये भूखे और प्यासे होंगे तो हम तृप्त किये जायेंगे और धन्य होंगे (मत्ती 5:6)। धार्मिकता वो इच्छा है जिसे हमें होना चाहिये ये उसका सम्मान करती है जिसने हमें आत्मिक मृत्यु से जिलाया (रोमियों 6:12–13) अविश्वासी आत्मिक रूप से मृतक हैं जब तक कि वे प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता ग्रहण नहीं कर लेते (रोमियों 6:23)। अविश्वासी होकर हम सब पाप के दास थे पर अब विश्वासी होकर हम धार्मिकता के दास बन गये (रोमियों 6:16–19)।

शैतान और उसकी सेना धार्मिकता के दासों को गड़बड़ी में डालने और धोखा देने का प्रयास करते हैं (2 कुरिन्थियों 11:13–15)। वे एक तरीका इस्तेमाल करते हैं कि वे जो वास्तव में धार्मिक जीवन जीते हैं उन पर क्लेश डालते हैं (मत्ती 5:10, 1 पतरस 3:14)। अपने जीवन में सच्चे धार्मिक बनना एक युद्ध है, पर एक को अनन्त में मुकुट दिया जायेगा (2 तीमुथियुस 4:6–8)। इस युद्ध में प्रभु के द्वारा प्रशिक्षित हो जाओ और अपनी आत्मा में सच्ची शान्ति महसूस करो (इब्रानियों 12:11)।

6. प्रार्थना

प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर से बातचीत करना। प्रार्थना का अभ्यास जरूरी है। यह एक अवसर है क्योंकि इसके द्वारा परमेश्वर के महापवित्र स्थान में पहुंचते हैं (इब्रानियों 4:16)।

निरंतर प्रार्थना करना उन लोगों का चरित्र है जो परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवन में ढूंढ़ते हैं (प्रेरित 2:42)। जब यीशु के पहले चेलों ने इस आवश्यकता को देखा कि सीखें कि प्रार्थना कैसे करनी चाहिये (लूका 11:1), यीशु ने उन्हें "प्रभु की प्रार्थना" सिखाई (लूका 11:2–4)। प्रार्थना स्वर्गीय स्थानों में शैतान से लड़ने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण औजार है (इफिसियों 6:18)। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हमें पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर पिता से प्रार्थना करना चाहिए।

प्रार्थना में साधारणतः पांच बातें शामिल हैं – प्रार्थना की प्रथम बात–पापों का अंगीकार करना है (भजन 66:18–20, यशायाह 59:2, मत्ती 6:14, 1 यूहन्ना 1:9)। ये निश्चय करेगा कि क्या कोई चीज़ हमें परमेश्वर की संगति में हानि कर रहा है। दूसरा – प्रशंसा है (मत्ती 21:16, लूका 19:37, रोमियों 14:11, 15:11, इफिसियों 1:6, 12,14, इब्रानियों 13:15)। प्रशंसा वह पहचान है कि परमेश्वर कौन है। तीसरी बात–धन्यवाद देना है, ये उसकी पहचान और प्रशंसा है कि उसने क्या किया है (इफिसियों 5:20, 1 थिस्सलुनीकियों 5:18)। चौथी बात हैं गिड़गिड़ाकर विनती करना जिसका मतलब है दूसरों के लिये प्रार्थना करना (इफिसियों 6:18, इब्रानियों 7:25) और पांचवी बात–विनती करना है जिसका मतलब है स्वयं के लिये प्रार्थना करना (इब्रानियों 4:16)।

आप किसी भी समय अपने पापों का अंगीकार कर सकते हैं – बिना अतिरिक्त प्रार्थना के आप धन्यवाद कर दूसरों के लिये या अपने लिये भी प्रार्थना कर सकते हैं।

7. बढ़ना (वृद्धि)

जब हम इस संसार में पैदा होते हैं तो एक बच्चे के समान होते हैं उसी प्रकार हमारा नया जन्म तब होता है जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। जैसा एक बालक बड़ा होकर व्यस्क बनता है वैसे ही आत्मिक जीवन में भी हम बढ़ते हैं। हम सिद्ध होने के लिए बुलाये गये हैं अपने पिता के समान (मत्ती 5:48)। यह इस जीवन में कभी पूरा नहीं होता (फिलिप्पियों 3:12–15)।

हमारी बढ़ौतरी का पहला विषय ये है कि क्या हम अपने जीवनों को "जीवित और बलिदान करके चढ़ायेगे या नहीं" मतलब कि अपने जीवनों को उसकी सेवा में लगायेंगे (रोमियों 12:1–2)। हमें बढ़ने के लिये हमारा पिता बहुत सी परीक्षाएं लाता है (याकूब 1:2–4)। ये हमारे उस पर के भरोसे की है उसने कलीसिया को भी बहुत से वरदान हमें परिपक्व होने के लिये दिये हैं (इफिसियों 4:11–14)।

सिद्धता का अर्थ होता है ***"बालकपन के कार्यों से दूर रहो"*** (1 कुरिन्थियों 13:11)। एक सिद्ध व्यक्ति क्रिया–कलापों में वृद्धि कर चुका होता है (मत्ती 19:21) बोली (याकूब 3:1–2) और विचारों में (1 कुरिन्थियों 14:20)। यदि बालकपन की बातें जैसे स्वार्थीपन, घातक बोली, व्यर्थ की बातें और पापमय विचार (घमंड़) हमारे जीवन में दिखाई पड़ रहे हैं तो हम अभी भी बालक हैं और सिद्ध नहीं हैं।

सिद्धता के कई गुण हैं जैसे – अपस्वार्थी (मत्ती 19:21), नम्रता (फिलिप्पियों 3:12–15), प्रचारकीय (कुलुस्सियों 1:28) यह अन्य लोगों के लिए मध्यस्त की प्रार्थना करता है। सिद्धता यह निर्देशित करती है कि एक व्यक्ति परमेश्वर की प्रशंसा करने में उसके स्वर तक धार्मिकता में बढ़ चुका है (इब्रानियों 5:12–14)।

परिपक्व व्यक्ति ने परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करना सीख लिया है (2 कुरिन्थियों 12:9)। ये जानकर कि हर भली वस्तु उसकी ओर से आती है (याकूब 1:17)। हमारा जीवन कितना परिपक्व हो गया है उसको जानने के लिये कि हमने कितना अपना प्रेम परमेश्वर के सम्बन्ध में किये जिससे वो हमारे जीवन से भय निकालता है (1 यूहन्ना 4:17–19)।

8. प्रेम

यीशु मसीह ने स्वयं कहा कि प्रेम मसीही जीवन का सबसे प्रमुख भाग है मरकुस रचित सुसमाचार में यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:4–5 के अनुसार कहा कि यह सबसे बड़ी आज्ञा है और लैव्यव्यवस्था 19:18 को दूसरी बड़ी आज्ञा कहा (मरकुस 12:31) उससे हमें प्रेम करना है क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया (1 यूहन्ना 4:19)। यदि हम उससे प्रेम करते हैं तो अपने भाइयों से भी प्रेम करेंगे (1 यूहन्ना 4:20–21)। प्रेम जिसके लिये हम बुलाये गये हैं वह साधारण प्रेम नहीं है जो मनुष्य एक दूसरे के लिये रखता है पर वह प्रेम जो पवित्र आत्मा से आता है (गलतियों 5:22) ना ये भावना से प्रेरित होता – भले ही भावना शामिल हो।

प्रेम का बाइबल (बयान) वर्णन करती है उसे मात्र परिभाषित नहीं करती। 1 कुरिन्थियों 13 में एक अति उत्तम भाग प्रेम के विषय में मिलता है इस अध्याय में पौलुस ने 16 बातें प्रेम के विषय में वर्णन किया है (1 कुरिन्थियों 13:4–8)। यदि हमें प्रेम को परखना है तो हम एक प्रश्न स्वयं से पूछें, क्या मैं ऐसा कर पाता हूं? क्या मैं धीरजवंत हूं? यदि उत्तर "नहीं" है तो एक के जीवन में प्रेम की कमी है। बहुत सी दूसरी योग्यता और कार्य रोमियों 12:19–21 में दिये गये हैं।

संसार उस प्रेम का शत्रु है जो परमेश्वर हमसे चाहता है। संसार अक्सर उसका संदर्भ देता है जिसमें शैतान हमें परमेश्वर की इच्छा से अलग करने का प्रयास करता है, जब हम संसार की चीज़ों से प्रेम करने लगते हैं तो परमेश्वर से पूर्ण प्रेम नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 2:15)।

9. दुःख उठाना

दुःख उठाने का अर्थ है दर्द से गुजरना। यह शारीरिक और मानसिक दोनों हो सकता है। वचन में हम पाते हैं कि यीशु सबसे बड़ी पीड़ा से गुजरा ताकि हमारे पापों का दण्ड क्रूस पर उठा ले (1 पतरस 2:21–24, 4:1, 5:1)। वह इसलिये जगत में आया कि दुष्टों के हाथ से दुःख सहा (1 पतरस 2:21–24)।

पहले हमारा परिचय मसीही परिपक्वता से कराया गया था। अन्याय से यातना सहना हमारी परिपक्वता की जांच का एक भाग है (1 पतरस 5:10)। परमेश्वर हमारी गवाही और धीरज का प्रतिफल अनन्त में देगा (1 पतरस 2:19–20, 2 कुरिन्थियों 4:17)। हमारी गवाही हमारे उस पर भरोसा करने उस यातना के दौरान है (1 पतरस 4:19)।

यह आशीष है यदि हम धार्मिकता के लिए दुःख उठाते हैं (1 पतरस 3:14–17, 4:14)। अन्यायी दुःख उन लोगों के द्वारा विश्वासियों के जीवन में आता है जो उच्च पद में हैं विश्वासी पर दुःख इसलिये आता है क्योंकि वह यीशु के पीछे चलने वाला है।

प्रेरित पतरस ने यीशु मसीह के दुःख को प्रत्यक्ष रूप में देखा था (1 पतरस 5:1) और उसने हमसे कहा कि दुःख में भी आनन्द करो (1 पतरस 4:13–16)। इसका अर्थ यह है कि जब संसार ने यीशु मसीह से घृणा की तो वे उसके पीछे चलने वालों से भी घृणा करेंगे (यूहन्ना 15:18–20, 1 पतरस 4:12)। उसके दुःख में भागी होने से हमें उस दर्द का आभास होता है जो उसने क्रूस पर हमारे लिये सहा।

हमें इस प्रकार के क्लेश से शर्माना नहीं चाहिये (1 पतरस 4:16) और ये जानना चाहिये कि दूसरे मसीही इस पीड़ा को धीरज से सह रहे हैं (1 पतरस 5:9) और हम अपने आपको परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरा रहे हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:5)। हमें इस क्लेश से डरना नहीं है (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

पतरस ने भी हमें चुनौती दी है कि जब हम पाप के लिये भोगते हैं तो मानते हैं कि ये सही क्लेश है और मसीही जीवन में नहीं चाहिये होती (1 पतरस 4:15)। कोई भी पाप क्लेश का हकदार है (लूका 13:1–5)।

10. अनुशासन

शब्द "अनुशासन" ("पैडियो" यूनानी में) इसमें काफी पीड़ा को शामिल करता है ऐच्छिक ट्रेनिंग के लिये। उदाहरण के लिये इसे लूका 23:16–22 में इस्तेमाल किया गया है एक कैदी को पीटने का जिससे वे अपना तरीका बदल देंगे (वह कैदी प्रभु यीशु था जिसे पिलातुस अनुशासित करना चाहता था और छोड़ना चाहता था) इसमें ये भी शामिल है शिक्षा का विचार (प्रेरित 7:22, 22:3)। जब प्रभु कलीसिया युग में दूसरों को प्रशिक्षित करने में रखता है इसे सावधानी से करना है (2 तीमुथियुस 2:24–26)।

अनुशासन क्लेश के सहने के बराबर है – दोनों में पीड़ा शामिल है। जबकि यातना में दोनों हकदार और पीड़ा शामिल है, अनुशासन में पीड़ा ट्रेनिंग के लिये जरूरी है। हमारी ट्रेनिंग में बिना हक की पीड़ा चरित्र को बनाने या सही पीड़ा अपने दिमाग को बदलने या पापमय कामों को बदलने में आती है (1 तीमुथियुस 1:18–20)।

परमेश्वर का अनुशासन चरित्र निर्माण के लिये है जैसा एक पिता अपने बच्चे की ट्रेनिंग में चाहता है (इफिसियों 6:4, इब्रानियों 12:7)। ये लगातार धार्मिक कार्य बनाये रखने के लिये और परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल करते हैं (2 तीमुथियुस 3:16–17)। अनुशासन में जाते समय ये आनन्द का समय नहीं है पर इसका नतीजा मूल्यवान है (इब्रानियों 12:11), जो दाम पाप के लिये अदा किया जाना है हमें इस ट्रेनिंग के महत्व को पहचानने में अगुवाई करता है (तीतुस 2:11–12)।

संसारिक पिताओं की तरह कौन क्रोध में अनुशासन करेगा – हमारा स्वर्गीय पिता अपने प्रेम से अनुशासन लाता है (प्रकाशितवाक्य 3:19)। जब वह हमें प्रशिक्षित करता है ये इसलिये है कि ये उसका हमारे लिये प्रेम है इसलिये हमें

निराश नहीं होना चाहिये जब वह हमें सुधारता है (इब्रानियों 12:5)। परमेश्वर का अभिप्राय हमें अनुशासित करने का है कि हम संसार के साथ पहचान में न जायें (1 कुरिन्थियों 11:31–32)। और इसलिये विश्वासी को परमेश्वर के सुधार करने का स्वागत करना चाहिये (इब्रानियों 12:8)।

11. बाइबल अध्ययन

वचन के अध्ययन को हम अनदेखा नहीं कर सकते क्योंकि यही एक पथ प्रदर्शक किताब है जो परमेश्वर के साथ संबंध बनाने में अगुवाई करता है (1 कुरिन्थियों 2:16)।

12. आराधना करना

आराधना का अर्थ है यीशु की जय मनाना। यीशु ही सारे आदर, महिमा और स्तुति के योग्य है (प्रकाशितवाक्य 5:1–7)। स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा होती है (प्रकाशितवाक्य 4:9–11)।

सारा संसार जो अविश्वासी है वह उन वस्तुओं की उपासना एवं सेवा करता है जिसे मनुष्य ने बनाया है और (कुलुस्सियों 2:18) उस बनाने वाले की उपासना नहीं करता (रोमियों 1:25)। वे उस स्थान की भी उपासना करते हैं जहां उन बनाई हुई वस्तुओं को स्थापित किया गया है (यूहन्ना 4:20–22)।

सच्ची आराधना पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा हमारे जीवन में होती है, इस आराधना के केवल यीशु ही योग्य है (यूहन्ना 4:23–24, फिलिप्पियों 3:2–3)। इसके लिए हमें प्रभु के वचन को विश्वास से ग्रहण करने के द्वारा (इब्रानियों 11:21) अपने अपने शरीरों के जीवित पवित्र एवं भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना है (रोमियों 12:1–2)।

13. चेले (शिष्य) बनाना

महान आदेश में यीशु ने निर्देश दिया कि ***जाओ और सारे देश के लोगों को चेला बनाओ*** (मत्ती 28:18)। एक शिष्य विद्यार्थी है वचन का और उसने यीशु के पीछे चलने का चुनाव किया है, शिष्य केवल वह नहीं जो बचाया हुआ है लेकिन ऐसा विश्वासी है जो परमेश्वर के वचन को इसलिये सीख रहा है ताकि वैसा ही जीए (यूहन्ना 7:17)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 8, भाग 1

1. मसीही जीवन के पहलू के सम्बन्ध में:

क. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:30–31, जब व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है तो कौन सा पहले उसके जीवन में आता है?

ख. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 3:18, व्यक्ति के जीवन में बदलाव कैसे मसीह के स्वरूप में बदल जाता है?

ग. पढ़ें 1 यूहन्ना 3:2, जब हम मसीह को देखेंगे तब क्या बदलाव होगा?

2. पढ़ें इब्रानियों 11:6, विश्वासी को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये क्या करना है?

3. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 2:14–15, आत्मिक चीज़ें समझने के लिये क्या आवश्यक है?

क. पढ़ें यूहन्ना 14:7। पवित्र आत्मा कहां बसता है?

ख. पढ़ें गलातियों 3:2–3। आत्मिकता के लिये क्या आवश्यक है?

ग. पढ़ें इफिसियों 4:30 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:19। पाप विश्वासी के जीवन में क्या दो चीज़ें कर सकता है?

4. पढ़ें 1 यूहन्ना 1:5–10। क्या एक विश्वासी पाप करेगा, यदि हां तो क्या किया जाये?

5. पढ़ें 1 पतरस 4:10। हर विश्वासी क्या प्राप्त करता है?

क. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:1–3। आत्मिक वरदान के प्रयोग के लिये क्या प्रस्तुत किया जाये उसकी व्यक्तिगत मूल्य के लिये?

ख. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:8–11। ये क्या बताता कि कुछ वरदान का क्या होगा?

ग. पढ़ें यूहन्ना 13:34–35 और 1 पतरस 4:10 – जो वरदान हमको दिया गया है "एक दूसरे से प्रेम करो" के मुख्य अभिप्राय की तुलना करो।

6. पढ़ें रोमियों 6:16–19। हमें किसका दास बनाना है?

7. प्रार्थना के पांच बातों के सम्बन्ध में

क. पढ़ें 1 यूहन्ना 1:9 – यहां क्या बात बताई गई है?

ख. पढ़ें रोमियों 14:11 और 15:11। इस हिस्से में क्या बताया गया है?

ग. पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 5:18। यहां क्या चीज़ दी गई है?

घ. पढ़ें इफिसियों 6:18। यहां क्या चीज़ दी गई है?

ङ. पढ़ें इब्रानियों 4:16। यहां क्या बात कहीं गई है?

8. पढ़ें 1 पतरस 2:2 और 2 पतरस 3:18। उद्धार के बाद मसीही को क्या करना है?

9. पढ़ें मरकुस 12:29–31। परमेश्वर की सबसे मुख्य दो आज्ञाएं क्या हैं?

10. पढ़ें 1 पतरस 2:19–20 और 1 पतरस 5:10 विश्वासी को क्या सहता है?

11. पढ़ें इब्रानियों 12:6–7। परमेश्वर हमें कैसे प्रशिक्षित करता है?

12. पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16–17। क्या परमेश्वर के वचन का अध्ययन लाभदायक है?

13. पढ़ें यूहन्ना 4:23–24 और फिलिप्पियों 3:2–3। हमें कैसे परमेश्वर की आराधना करनी चाहिये?

14. पढ़ें मत्ती 28:18–20। मसीह के चेलों को क्या करना है?

भाग 2
सम्मिलित मसीही जीवन (इक्लीसियोलॉजी)

क. शिक्षा देना

जब यीशु ने महान आदेश दिया तो उसके एक भाग में यह निर्देश दिया कि ***जो आज्ञा मैंने तुम्हें दी है उन्हें मानना सिखाओ*** (मत्ती 28:20)। यीशु एक शिक्षक थे (मत्ती 4:32, 5:2, 7:29, 9:35, 11:1, 13:54, 21:23, 22:16, 26:55, 28:15, प्रेरित 1:1)। शिक्षा देने का अर्थ है निर्देश देना जबकि वचन प्रचार करने से उन्नति होती है (कुलुस्सियों 1:28, 3:16)। ये दोनों कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जब पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया तो दूसरों को शिक्षा देने के लिये कहा ताकि वे भी अन्य लोगों को सिखा सकें (1 तीमुथियुस 4:11, 6:2, 2 तीमुथियुस 2:2)। इस प्रकार परमेश्वर का वचन एक वंश से दूसरे वंश तक पहुंचता है।

कुछ विश्वासियों को शिक्षा देने का वरदान है (रोमियों 12:7)। सभी विश्वासी शिक्षा देने के लिए बुलाये गये हैं (इब्रानियों 5:12—14)।

ख. संगति

संगति प्रथम शताब्दी की कलीसिया का प्रमुख भाग था (प्रेरित 2:42)। इसका अर्थ भौतिक वस्तुओं को ही आपस में बांटना नहीं पर आत्मिक वस्तुएं भी (रोमियों 15:26, 2 कुरिन्थियों 8:4, 9:13, इब्रानियों 13:16, 1 यूहन्ना 1:3, 7)। संगति का अर्थ एक साथ परमेश्वर की आराधना करना भी था जब हम व्यक्तिगत आराधना करते हैं, तो एक साथ आराधना करते हैं तो एक साथ आराधना के लिये प्रेरित होते हैं।

आत्मिक संगति का आधार है यीशु से संगति रखना (2 कुरिन्थियों 6:14, 1 यूहन्ना 1:7) और यह तभी सम्भव है जब हम पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित हों और उससे संगति रखें (1 कुरिन्थियों 13:14)। ये विश्वास में बनाया गया है (फिलेमोन 1:6) और मसीह की देह में एकता लाती है (फिलिप्पियों 2:1—2) हमें इसकी संगति में बुलाया है (1 कुरिन्थियों 1:9)। जब हम अंधकार में चल रहे हैं तो पूरा नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 1:6)।

हमारी संगति की नेंव प्रभु की मेज़ पर चित्रित की गई है अक्सर इसे "प्रभु भोज" कहा जाता है जो हमें उसके व्यक्ति व काम को याद दिलाता है (1 कुरिन्थियों 10:16)। ये उसकी यातना के साथ संगति में बनाई गई है (फिलिप्पियों 3:10)।

एक विश्वासी होने के नाते जब असहमति समाप्त कर दी गई तब संगति पुनः हो सकी (गलातियों 2:9) और जब हम एक साथ सुसमाचार फैलाने में कार्य करते (फिलिप्पियों 1:5) संगति का मतलब है जिससे प्रेम के सम्बन्ध विकसित हो सकेंगे।

हमने पहले मसीही जीवन में प्रेम का महत्व देखा है। हमें दूसरों से और परमेश्वर से प्रेम करना है। नया नियम चेलों को अपने पड़ोसी से प्रेम करने के बारे में बहुत सी जानकारी देता है — जो परमेश्वर को प्रेम करने में आवश्यक है (1 यूहन्ना 4:20)। अपने समान पड़ोसी को प्रेम करना "राजकीय व्यवस्था" कहा जाता है (याकूब 2:8) ये सबसे कम है जो विश्वासी से उम्मीद की जाती है — जबकि अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना है (लूका 6:35)। जैसा हम चाहते हैं कि लोग हम से व्यवहार करें, हमें भी वैसा ही करना चाहिये (मत्ती 7:12)।

नीचे दिये गये सिद्धान्त हमारे एक दूसरे के साथ के सम्बन्ध को बताते हैं। उन्हें विवाह के साथ सम्बन्ध आरम्भ करना चाहिये और तब परिवार में बढ़ाना चाहिये, हमारी कलीसिया के परिवार में, परमेश्वर के परिवार और उनके साथ भी जिनका उद्धार नहीं हुआ है। नये नियम में बहुत से सिद्धान्त हैं जो सम्बन्ध बनायेंगे। एक विश्वासी जो परिपक्व नहीं है इन सिद्धान्तों को देखेगा और आशा करेगा कि दूसरे इसका उपयोग करें पर अपनी व्यक्तिगत जिम्मेवारी नहीं समझेगा — भले ही दूसरे भी नहीं करते। एक परिपक्व विश्वासी उन्हें करेगा क्योंकि ये करना ठीक है और स्वार्थ के रूप में इस्तेमाल नहीं करने का प्रयास करना चाहिये।

"एक दूसरे" की सहभागिता के कुछ सिद्धान्त देखें:

- हमें एक दूसरे के प्रति **समर्पित** होना चाहिये (रोमियों 12:10)। जिसका मतलब है कि हमें एक दूसरे के प्रति कोमल प्रेम विकसित करना है इसमें दूसरों के कल्याण की बातें भी हैं।
- हमें एक दूसरे का **सम्मान** करना है मतलब कि हम परमेश्वर के सामने दूसरे के मूल्य को समझते हैं (रोमियों 12:10)।
- एक दूसरे के प्रति एक सा **सोचना** है – मतलब दूसरे लोगों को अपने समान पहचानें परमेश्वर की दया के पाने वाले (रोमियों 12:16, 15:5)।
- हमें एक दूसरे को **स्वीकार** करना है जैसा मसीह ने हमें स्वीकार किया (रोमियों 15:7) जैसा प्राणियों को अनुग्रह की आवश्यकता है।
- हमें एक दूसरे को **चितौनी** दी है हम आत्मिक खतरे को आते देखते हैं (रोमियों 15:14)।
- हमें एक दूसरे का **अभिवादन** करना चाहिये (रोमियों 16:16, 1 कुरिन्थियों 16:20, 2 कुरिन्थियों 13:12, 1 पतरस 5:14) "पवित्र चुम्बन" के साथ इसका मतलब है व्यक्ति की उपस्थिति स्वीकार करना।
- हमें एक दूसरे की **सेवा** करनी चाहिये (यूहन्ना 13:14, गलतियों 5:13)। ये उदाहरण एक दूसरे के पैर धोकर दिखाया गया है।
- दूसरों को अपने से अधिक **महत्वपूर्ण समझना** चाहिये (फिलिप्पियों 2:3)।
- हमें एक दूसरे का **भार उठाना** चाहिये (गलातियों 6:2)। जिसका मतलब उनके जीवनों में पाप से निपटने में सहायता करना।
- हमें एक दूसरे को **सहना** है मतलब एक दूसरे के साथ धीरज धरें (इफिसियों 4:2, कुलुस्सियों 3:13)।
- हमें एक दूसरे को **समर्पित** करना है मतलब दूसरे की जरूरत को पहले समझना है (इफिसियों 5:21)।
- हमें एक दूसरे को **प्रोत्साहित** करना चाहिये – वे जो आत्मिक रूप से नीचे हैं उन्हें मदद करना (रोमियों 1:12, 1 थिस्सलुनीकियों 4:18, 5:11, इब्रानियों 3:13, 10:25)।
- हमें एक दूसरे के साथ **शान्ति** से रहना है (मरकुस 9:50)। हमें अपने कार्य और मत द्वारा झगड़ा पैदा नहीं करना है।
- हमें एक दूसरे के सामने **पाप** मान लेना है (याकूब 5:16)। इसका मतलब जिस व्यक्ति के साथ गलत किया – जो सम्बन्ध में हानि पैदा करते हैं।
- हमें एक दूसरे के लिये **प्रार्थना** करना है (याकूब 5:16)।
- हमें एक दूसरे को **क्षमा करना** है जैसा प्रभु ने हमें क्षमा किया (कुलुस्सियों 3:13)।
- हमें एक दूसरे की **भलाई खोजना** है – मतलब कि हर व्यक्ति का सम्बन्ध परमेश्वर से बना रहे (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)।
- हमें एक दूसरे को **प्रेम और भले काम** के लिये उत्साहित करना है (इब्रानियों 10:24)। इसमें सोचना शामिल है कि दूसरे की कैसे सहायता की जाये।
- हमें एक दूसरे के लिये **ठहरना** चाहिये (1 कुरिन्थियों 11:33)। दूसरे विश्वासियों के साथ आनन्द में शामिल होना।
- हमें एक दूसरे पर **दया करना** चाहिये – मतलब कड़वाहट को निकालना, क्रोध और दूसरे की हानि न करना (इफिसियों 4:31–32)।
- हमें एक दूसरे की **देखभाल** करनी है (1 कुरिन्थियों 12:25)। जिसका मतलब है हम मसीह की देह के दूसरे अंगों के प्रति चिन्तित हैं।
- हमें एक दूसरे की **सेवा पहचाननी** है (लूका 7:32)। हमें मनुष्य की पहचान के लिये सेवा नहीं करनी चाहिये, पर परमेश्वर के परिवार में एक दूसरे की सेवा पहचानना है।
- हमें एक दूसरे की **पहुंनाई** करनी चाहिए (1 पतरस 4:9)। हमें अजनबी को अराधना में स्वागत करना चाहिये।
- हमें एक दूसरे के प्रति **नम्र बनना** चाहिये ये हमारे व्यवहार को बताता है (1 पतरस 5:5)।
- हमें एक दूसरे के साथ **संगति** करना चाहिये (1 यूहन्ना 1:7)।
- हमें एक दूसरे को **बनाना** है (रोमियों 14:19, 1 थिस्सलुनीकियों 5:11)। जिसमें प्रोत्साहन और दूसरों के लिये निर्देश शामिल हैं।

ग. सुसमाचार प्रचार

मसीह यीशु का सुसमाचार फैलाना ही सुसमाचार प्रचार है। ये शुभ समाचार को घोषित करता है कि यीशु ही परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1)। जो मनुष्य बन गया (यूहन्ना 1:14)। संसार के पापों के दाम चुकाने के लिये मर गया (1 यूहन्ना 2:1–2) और तब पुनः जीवित हो गया (1 कुरिन्थियों 15:1–3)। जिससे कि जो उस पर विश्वास करें अनन्त जीवन पायें (यूहन्ना 3:16)। ये शुभ समाचार नहीं है कि हम सब पापी हैं (रोमियों 3:23)। शुभ समाचार ये है कि जो ऋण हमारे पापों के कारण आया (रोमियों 6:23) अदा कर दिया गया (गलातियों 3:13)।

दोनों प्रकार के चर्च स्थानीय और संसार को दूसरों को शुभ संदेश देने की इच्छा होना चाहिये। हमें जो ज्योति और सत्य दिया गया उसे छिपाना नहीं चाहिये (मत्ती 5:14, रोमियों 1:16)।

परमेश्वर हमें सुसमाचार प्रस्तुत करने के तरीकों में स्वतंत्रता देता है। ये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक किया जाये (प्रेरित 8) या झुण्ड में (प्रेरित 2) महत्वपूर्ण ये हैं कि चर्च परमेश्वर के वचन को उसके राज्य के निमंत्रण को देकर फैलाता है। सबसे मज़बूत हथियार सुसमाचार सुनाने का एक दूसरे से प्रेम करना है।

घ. सेवकाई

ये वो सेवकाई है जो दूसरों की आत्मिक, शारीरिक और भावनाओं की आवश्यकताओं की पहचानती और उनकी सहायता खोजती है (प्रेरित 11:29, 2 कुरिन्थियों 8:3–5)। ये मसीह यीशु के राजदूत का कार्य है और मेल मिलाप का सन्देश खोये हुए और मरते हुए संसार के पास ले जायें (2 कुरिन्थियों 5:18–21)। यदि व्यक्ति का मेल मिलाप परमेश्वर के साथ हो जाये तो व्यक्ति संसार की कानूनियत से स्वतंत्र हो सकता है। इसलिये सेवकाई भी स्वतंत्रता का संदेश ले जाती है (1 तीमुथियुस 4:4–6)। हम विश्वासी होकर हमें स्वतंत्र किया गया है (गलातियों 5:1) और अब अपनी स्वतंत्रता को दूसरों की सेवा के लिये इस्तेमाल करते हैं (इब्रानियों 6:10–12)।

सेवा करने के अवसर प्रभु ने दिये हैं (प्रेरितों के काम 20:24, 1 कुरिन्थियों 12:4–6)। विश्वासियों को इन अवसरों को अपने परमेश्वर के दिये गये वरदानों को एक दूसरे की सेवा में इस्तेमाल करने के लिये इस्तेमाल करना चाहिये। सेवकाई मसीही जीवन का एक आवश्यक भाग है (1 पतरस 4:10–11)। जिसमें हमें लगातार भाग लेना चाहिये (रोमियों 12:7)। सावधान होकर सेवकाई को बदनाम न करें और इस प्रकार प्रभु यीशु को भी (2 कुरिन्थियों 6:3)।

सेवकाइयों को साथ काम करना सीखना चाहिये। डीकन्स का प्रथम चुनाव कलीसिया में था और अधिक योग्य सेवकाई के लिये। प्रेरितों ने पहचान किया कि कलीसिया की सभी आवश्यकताएं अकेले नहीं पूरी की जा सकती है इसलिये मंडली से विधवाओं की देखभाल करने के लिये लोगों के चुनाव करने को कहा गया (प्रेरित 6:1–6)। विभिन्न सेवकाइयां एक साथ काम कर रही हैं लोगों की आवश्यकता पूरी की जा रही हैं।

प्रभु ने कलीसिया में अगुवाई की सेवा स्थापित की है ये दूसरे लोगों को सेवक बनाने के लिये सुसज्जित करना था। प्रेरित पौलुस ने ये लिखा हैः–

> ***"और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जायें और सेवा का काम किया जाये और मसीह की देह उन्नति पाये, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जायें और एक सिद्ध मनुष्य न बन जायें और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जायें"*** (इफिसियों 4:11–13)।

कलीसिया की अगुवाई की जिम्मेवारी ये है कि विश्वासियों को दूसरों की आत्मिक, शारीरिक, भावनात्मक सेवा करने के लिये तैयार करें जिससे दूसरों को सुसमाचार सुनाया जा सके और मसीह यीशु के साथ सम्बन्ध में परिपक्व हो सकें। प्रेम से की गई सेवकाई शक्तिशाली सुसमाचार प्रचार का हथियार है जो कलीसिया को दिया गया है (यूहन्ना 13:1–35)।

ङ. **एकता**

व्यक्तिगत कलीसियाओं को मसीह की देह में एकता होना चाहिये (इफिसियों 4:13)। यीशु ने उस रात क्रूस के पहले उसने प्रार्थना की कि उसके अनुयायी एक हों और कहा,

> ***मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता, मुझ में है और मैं तुझ मैं हूं वैसे ही वे भी हम में हों इसलिये कि जगत प्रतीति करें कि तू ही ने मुझे भेजा है और वो महिमा जो तूने मुझे दी मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। मैं उनमें और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जायें और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा और जैसा तूने मुझ से प्रेम रखा वैसा उनसे प्रेम रखा"*** (यूहन्ना 17:20–23)।

जबकि सब विश्वासी में पवित्र आत्मा बसता है ठीक उस समय जब वे यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं एकता उस समय स्थापित होती है कि तथ्य ये है कि एक ही आत्मा है (इफिसियों 4:4) और हम सब उसके द्वारा भरे गये हैं (देखें पवित्र आत्मा की भरपूरी का हिस्सा); पौलुस प्रेरित ने हमें इस पवित्र आत्मा के साथ की एकता के विषय में सिखाया कि अपनी बुलाहट के अनुसार उसमें चलते रहें (इफिसियों 4:1–3)। इसका मतलब है कि हमारा चलना विश्वास पर आधारित और अनुग्रह के अनुसार है (इफिसियों 8–9)। जबकि मसीह में हमारा स्थान हमें जोड़े रहता है एक सामान्य उद्धार के द्वारा, हमें मसीह की देह में एकता ढूंढनी है जो प्रेम पर आधारित है, जिससे कि सभी अविश्वासी जानेंगे कि हम यीशु मसीह के चेले हैं (यूहन्ना 13:34–35)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 8, भाग 2

1. **पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:2, कलीसिया में क्या महत्वपूर्ण है?**
2. **पढ़ें 1 तीमुथियुस 6:3, अच्छी शिक्षा का मूल्यांकन कैसे करें?**
3. **पढ़ें इब्रानियों 5:12, वे जो बहुत समय से विश्वासी हैं उन्हें क्या करना है?**
4. **पढ़ें 1 यूहन्ना 1:3 और 7, कलीसिया के लिये क्या महत्वपूर्ण दिखाया गया है?**
5. **नीचे दिये हिस्सों में संगति के कौन से सिद्धान्त सिखाये गये हैं?**
   - क. यूहन्ना 13:34–35
   - ख. रोमियों 12:10
   - ग. रोमियों 15:7
   - घ. गलातियों 5:13
   - ङ. फिलिप्पियों 2:3
   - च. गलातियों 6:2
   - छ. इब्रानियों 3:13 और 10:25
   - ज. कुलुस्सियों 3:13
   - झ. इफिसियों 4:31–32
   - ञ. 1 पतरस 4:9
   - ट. रोमियों 14:19
6. **पढ़ें मत्ती 5:14 और रोमियों 1:16, कलीसिया को क्या करना चाहिये?**
7. **पढ़ें गलातियों 5:1 और 5:13, हमें क्यों स्वतंत्र किया गया है?**
8. **पढ़ें इफिसियों 4:13, हर एक स्थानीय चर्च का क्या उद्देश्य होना चाहिये?**
9. **पढ़ें यूहन्ना 17:20–23, मसीह की उसके अनुयायियों के लिये क्या इच्छा है?**

अध्याय 9

लागू करना

परिचय

यह भाग बाइबल अध्ययन को तैयार करने के लिये एक व्यवहारिक तरीका प्रस्तुत करेगा। यह तरीका उस सिद्धान्त पर आधारित है कि बहुत से शिक्षकों ने परमेश्वर का वचन प्रभावित रूप से सिखाने के लिये प्रयोग किया है। यद्यपि तरीका बदल सकता है, अध्याय 4 के अनुवाद के आधारभूत सिद्धान्त का पालन करें।

जब हम इस अध्याय को तैयार करते हैं तो हमें पहले शैक्षिक अनुशासन की महत्वपूर्णता पर ध्यान देना चाहिये और महसूस करना चाहिए कि पवित्र आत्मा की सेवकाई को सिखाने का स्थान शैक्षिक अनुशासन ना लें। पवित्र आत्मा वह है जो **"सत्य का मार्ग बताएगा"** (यूहन्ना 16:13)। मनुष्य द्वारा बताया गया कोई भी तरीका इसकी गारन्टी नहीं लेता।

हमें हमेशा विश्वास में चलना चाहिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि हमें परमेश्वर के वचन का ज्ञान मिलना है (कुलुस्सियों 2:6)। मसीही परिपक्वता शारीरिक अनुसरण से नहीं पर विश्वास द्वारा आती है (गलातियों 3:2–5)। शैतान हम पर हमले की कोशिश करता है ताकि पवित्र आत्मा के विश्वास से बढ़कर अपने तरीकों व ज्ञान पर विश्वास करें (यूहन्ना 5:39–47)। बिना मसीही प्रेम के ज्ञान, फिर भी, घमण्ड लाती है जो अपरिपक्वता की विशेषता है (1 कुरिन्थियों 8:1)।

इससे फर्क नहीं पड़ता कि हम मसीही जीवन में क्या खोजते हैं, हमें प्रार्थना से आरम्भ करना चाहिए पापों के अंगीकार के साथ (1 कुरिन्थियों 11:31, नीतिवचन 28:13; 1 यूहन्ना 1:9), फिर प्रार्थना करनी चाहिए। हमें एकाग्रता, समझ और अवरोधन के लिये प्रार्थना करनी चाहिए इससे पहले कि किसी भी अध्याय को शुरु करें।

भाग 1
पुस्तक से परिचित होना

क. परिचय

अध्ययन के लिए पुस्तक का चुनाव करने के बाद हमें उसे साधारण रूप से कई बार पढ़ना चाहिए, जैसे कोई अखबार का लेख या कोई और पुस्तक। यह तरीका इस बात से हमें अवगत कराता है कि पुस्तक का आधारभूत विषय क्या है और इसमें धर्म–विज्ञान से जुड़े गहरे प्रश्न नहीं है।

कई बार पुस्तक को पढ़ने के बाद हमें सहायता मिलती है कि पुस्तक का विषय क्या है। हमें प्रसांगिक रूप से आकस्मिक रूप से विषय याद आता है। पुस्तक को पद ब पद अध्ययन करने से ही विषय को गहरे रूप से समझा जा सकता है।

हमें बाइबल की विभिन्न पुस्तकों को भूगौलिक व ऐतिहासिक रूप से जानने की आवश्यकता है। यह अध्ययन 1 थिस्सलुनीकियों में ध्यान दिलाएगा। विद्यार्थी की सहायता के लिए, हमने थिस्सलुनीका के शहर की पृष्ठभूमि की जानकारी उपलब्ध कराई है। इस प्रकार की जानकारी अतिरिक्त बाइबल–आधारित स्रोत से मिलती है। बाइबल शब्द कोष और बाइबल परिचय द्वारा ये जानकारी मिल सकती हैं।

ख. थिस्सलुनीका का भूगोल व इतिहास

थिस्सलुनीका समुद्र के किनारे स्थिर शहर था जो आज के ग्रीस के उत्तर पश्चिम में थेरमिक खाड़ी में स्थित था। यह मकीदूनिया के रोमी क्षेत्र में स्थित था ये गर्म मौसम और बन्दरगाह के लिए प्रसिद्ध था, जहां बड़े–बड़े जहाज लंगर डालते थे। उन दिनों में मकीदूनिया का भरा–पूरा व सबसे बड़ा शहर था।

थिस्सलुनीका की खोज ई.पू. 315 में कैसेन्डर ने की थी जो एन्टीपेटर का पुत्र था, यह खोज एलैक्जैन्डर महान की मृत्यु ई. पू. 323, के कुछ ही वर्ष बाद हुई। एलैक्जैन्डर की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए बहुत बड़ा संघर्ष हुआ, एन्टीपेटर शाही परिवार का वफादार था, उसने इस शहर का नाम अपने पुत्र कैसेन्डर की पत्नी के नाम पर रखा, थिस्सलुनीका जो एलैक्जैन्डर महान की आधी–बहन थी।

थिस्सलुनीका शहर यूनान का व्यापारिक शहर था पर प्रभावशाली यहूदी समाज द्वारा। अब यह सलोनीका का यूनानी शहर है।

ग. कलीसिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः प्रेरित 17:1–9

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कलीसिया की स्थापना हुई थी जो मकीदूनिया के दर्शन का परिणाम है (प्रेरित 16:9)। पौलुस के साथ सिलास (जो उसका इब्री नाम है, रोमी नाम सिलवानुस था), तीमुथियुस और लूका था। वे उस मार्ग से यात्रा कर रहे थे जो पूर्व से पश्चिम को मिलाता था। यह झुण्ड थिस्सलुनीका में फिलिप्पी, अम्फिपुलिस, अपुल्लोनिया होकर आया (प्रेरित 17:1)।

पौलुस ने तीन सब्त के दिन सिनेगोग में सिखाया (प्रेरित 17:2) कि यीशु मसीह ने पुराने नियम की भविष्यवाणी पूरी की है और वह मसीहा है (प्रेरित 17:3)। इसके परिणाम स्वरूप बहुतों ने उसे ग्रहण किया (प्रेरित 17:4)।

पौलुस ने नए विश्वासियों के साथ ज्यादा समय बिताया। परिणामस्वरूप, यहूदी लोग घृणा से भर उठे और झुण्ड बनाकर प्रचारकों के पीछे पड़ गए (प्रेरितों 17:5)। वे पौलुस को लेने के लिए यासोन के घर गए पर वहां पर नहीं मिला (प्रेरित 17:6)। वे यासोन को हाकिम के पास ले गए और पौलुस की शिक्षा का बखान करने लगे (प्रेरित 17:7)। विरोधी दल इतना मजूबत हो गया कि उन्हें बिरीया जाना पड़ा (प्रेरित 17:8–10)।

घ. लेखन काल और समय

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा जो अंताःकिया के उपदेश के बाद ईस्वी 49 में हुआ। थिस्सलुनीका को छोड़ने के बाद, पौलुस ने कुछ समय बिरीया में और एथेने में उपदेश दिया और कुरिन्थि को जाकर 18 महीने वहां रहा (प्रेरित 18:11)। पौलुस ने तीमुथियुस को थिस्सलुनीका भेजा कि वहां की कलीसिया का समाचार लाए (1 थिस्सलुनीकियों 3:2)। तीमुथियुस की रिपोर्ट के आधार पर पौलुस ने लगभग ईस्वी 50 में थिस्सलुनीकियों को लिखा। जो पौलुस की दूसरी पत्री है (पहली गलातियों की पत्री)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 1

2 थिस्सलुनीकियों के बारे में जो अध्याय 3 में जानकारी है उसे पढ़ें।

भाग 2

पुस्तक की रूपरेखा बनाना

जब हम पुस्तक को नज़दीक से जानने की तैयारी में हैं तो हमें इसकी रूपरेखा बनानी चाहिये। हमें मुख्य बातों से आरम्भ करके छोटी–छोटी बातों तक विश्लेषण करना चाहिए। तर्क है कि जितनी हम नज़दीक से और सूक्ष्म दृष्टि से हम इस पुस्तक का अवलोकन करेंगे उतनी ही विस्तार व स्पष्टता हमें प्राप्त होगी। परमेश्वर का वचन भी ऐसा ही है। यह बड़ा चित्र यीशु मसीह है। यह लिखित वचन जीवित वचन का दर्शन है (यूहन्ना 5:39–47)। जितना हम नजदीक से देखेंगे उतना अधिक यीशु मसीह के बारे में पहचानेंगे।

हम जानकारियों में इतना ना उलझ जायें कि हम मुख्य बातों को ना पहचान सकें। यदि हम ऐसा करते हैं तो ***"मच्छर को तो छान डालते हैं परन्तु ऊंट को निगल जाते हैं"*** (मत्ती 23:24)। जिसका मतलब हमने सबसे महत्वपूर्ण अर्थ को छोड़ दिया।

जब पुस्तक की रूपरेखा बनाते हैं तो पहले हमें यह निर्णय लेना चाहिए कि इस पुस्तक को खण्डों में कैसे व्यवस्थित करें। बाइबल के कई अनुवादकों ने इस बात की ओर ध्यान दिया। सबसे पहले उन पदों का चयन करते हैं जो एक खण्ड में शामिल कर सकें। अनुवादनीय नियमों का ध्यान रखें और देखें कि आप इस नियमों का पालन करते हैं कि नहीं तब इसके अनुसार बढ़ें।

उदाहरणस्वरूप, 1 थिस्सलुनीकियों का खण्ड विभाजन निम्न प्रकार से हैं:–

1. 1:1
2. 1:2–10
3. 2:1–12
4. 2:13–16
5. 2:17–20
6. 3:1–10
7. 3:11–13
8. 4:1–8
9. 4:9–12
10. 4:13–18
11. 5:1–11
12. 5:12–22
13. 5:23–28

उसके बाद एक–एक खण्ड का शीर्षक दिया जाता है। जब हम गहराई से अध्ययन करते हैं तो विषय के आधार पर शीर्षक बदल जाता है। इस कारण एक ही शीर्षक पर हम निर्भर नहीं होते। हमारा कार्य शिक्षाप्रद व सरल होना चाहिये।

1 थिस्सलुनीकियों के खण्ड विभाजन की रूपरेखा निम्न प्रकार से है:

1.	1:1	अभिनन्दन व नमस्कार
2.	1:2–10	उनके आदर्श के लिये धन्यवाद
3.	2:1–12	पौलुस का पद
4.	2:13–16	उनकी उत्सुकता के लिये धन्यवाद
5.	2:17–20	पौलुस का उनको देखने की इच्छा
6.	3:1–10	पौलुस को उनकी उन्नति के बारे में जानना
7.	3:11–13	पौलुस की आशा उनकी आत्मिक उन्नति हेत्
8.	4:1–8	उनके शुद्धिकरण के लिये पौलुस की इच्छा
9.	4:9–12	उनके प्रेम के बारे में पौलुस की प्रशंसा

10. 4:13—18 मसीह में मरा हुआ
11. 5:1—11 परमेश्वर का दिन
12. 5:12—22 प्रयोगात्मक उपदेश
13. 5:23—28 विदाई

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 2

2 थिस्सलुनीकियों के निम्नलिखित खण्ड विभाजन का शीर्षक बनाएं

1. 1:1—2

2. 1:3—12

3. 2:1—17

क. 2:1—12
ख. 2:13—15
ग. 2:16—17

4. 3:1—15

क. 3:1—5
ख. 3:6—13
ग. 3:14—15

भाग 3
अपने अध्ययन क्षेत्र को छोटा बनाना

इस भाग में एक–एक खण्ड के विश्लेषण के बारे में सीखेंगे। उदाहरण स्वरूप 1 थिस्सलुनीकियों के पहले अध्याय के प्रथम खण्डों का अध्ययन करेंगे।

क. अभिनन्दन व नमस्कार – 1 थिस्सलुनीकियों 1:1

1:1 ***पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है। अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।***

ये आरम्भिक पद हमारे कई प्रश्नों का उत्तर हैं। इस पत्री के लिखने में पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस शामिल हैं। इसलिये हमें पता है कि "कौन" पत्र लिख रहा है। इस पत्र की प्राप्तकर्ता थिस्सलुनीके की कलीसिया है। हमें ये भी पता चलता है कि "किसके" लिये लिखा।

पौलुस इस कलीसिया को परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह "में" करके सम्बोधित करता है। यह सम्बोधन परमेश्वर और विश्वासियों की घनिष्ठता को दर्शाता है।

पौलुस उनके लिए प्रार्थना भी करता है। वह इच्छा दर्शाता है कि अनुग्रह और शान्ति हमेशा उनके साथ रहे।

प्रारम्भ करने के लिये पहले पद में दिए तीन सिद्धान्त हमारे सहायक होंगे।

सिद्धान्त # 1 : परमेश्वर के महान लोग आशा रखते हैं कि और लोग उनके साथ परमेश्वर से सम्बन्ध बनाएं।

सिद्धान्त # 2 : परमेश्वर के लोग एक साथ मिलकर कार्य करते हैं ताकि दूसरों की उन्नति में प्रोत्साहन मिल सकें।

सिद्धान्त # 3 : परमेश्वर के महान लोग चाहते हैं कि जो उनके पास है वे दूसरों के साथ बांटें।

हमारे अध्ययन को संक्षिप्त करने के लिए हम दूसरे खण्ड का विश्लेषण करेंगे।

ख. उनके आदर्शों के लिए धन्यवाद – 1 थिस्सलुनीकियों 1:2–10

1. पहले इन पदों को कई बार पढ़ें:

1:2 ***हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।***

1:3 ***और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।***

1:4 ***और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो।***

1:5 ***क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में बरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गये थे।***

1:6 ***और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।***

1:7 ***यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।***

1:8 ***क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।***

1:9 ***क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ, और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरें ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।***

1:10 ***और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।***

2. **तब, प्रत्येक पद का शीर्षक दें:**

1:2 धन्यवाद की प्रार्थना
हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

1:3 धन्यवाद क्यों – विश्वास, आशा और प्रेम
और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।

1:4 परमेश्वर की बुलाहट को उन तक पहुंचाना
और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो।

1:5 सुसमाचार में जड़ पकड़ना
क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में बरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गये थे।

1:6 सुसमाचार के द्वारा बदलाव
और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।

1:7 बदलाव का पहला परिणाम उदाहरणस्वरूप
यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

1:8 बदलाव का दूसरा परिणाम प्रकट में
क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।

1:9 बदलाव की नींव मूरतों से फिरना
क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ, और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरें ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।

1:10 बदलाव की नींव स्वर्गीय जीवन है
और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 3

1. **2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12 कई बार पढ़ें।**
2. **प्रत्येक पद का शीर्षक दें।**

भाग 4
सम्बन्धों को देखना

क. प्रकट होने वाले विषय वस्तु का प्रतिरूप

1 थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री के प्रथम खण्ड़ों के प्रत्येक पदों के विश्लेषण में प्रकट हुआ शीर्षक निम्नलिखित हैं:

1:2 धन्यवाद की प्रार्थना

1:3 धन्यवाद क्यों – विश्वास, आशा और प्रेम

1:4 परमेश्वर की बुलाहट को उन तक पहुंचाना

1:5 सुसमाचार में जड़ पकड़ना

1:6 सुसमाचार के द्वारा बदलाव

1:7 बदलाव का पहला परिणाम उदाहरणस्वरूप

1:8 बदलाव का दूसरा परिणाम प्रकट में

1:9 बदलाव की नींव मूरतों से फिरना

1:10 बदलाव की नींव स्वर्गीय जीवन है

सुसमाचार के द्वारा उनके जीवन में हुए बदलाव और धन्यवाद के तरीके का अध्ययन आसान है।

ख. पद का बारीकी से अध्ययन करना

1:2 धन्यवाद की प्रार्थना
हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

इस पद में पौलुस हमें बताता है कि उसने क्या किया (धन्यवाद दिया) और कैसे किया (प्रार्थना)।

1:3 धन्यवाद क्यों – विश्वास, आशा और प्रेम
और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।

इस पद में धन्यवाद देने के तीन कारणों का उल्लेख है:

1. उनके विश्वास के कार्य
2. उनका प्यार भरा परिश्रम
3. उनकी आशा में स्थिरता

उनके विश्वास, आशा और प्रेम तीन बातों पर आधारित हैं:

1. यीशु मसीह के साथ उनका संबंध
2. पिता के साथ उनकी घनिष्ठता
3. परमेश्वर के द्वारा उनकी बुलाहट (पद 4)

1:4 परमेश्वर की बुलाहट को उन तक पहुंचाना
और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो।

1:5 सुसमाचार में जड़ पकड़ना
क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में बरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गये थे।

उन्होंने सुसमाचार को ग्रहण किया जो उन तक निम्नलिखित रूप में पहुंचाः

1. वचन में,
2. सामर्थ में,
3. पवित्र आत्मा में,
4. पूर्ण पश्चाताप के साथ
5. अच्छे चाल चलन के व्यक्ति द्वारा

1:6 सुसमाचार के द्वारा बदलाव
और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।

सुसमाचार ने उनको बदल दिया, वे परिपक्व हो गए। वे पौलुस और अन्य अनुयायियों की बात मानने लगे और प्रभु का अनुकरण करने लगे। उन्होंने विरोध के बीच सुसमाचार के आनन्द को ग्रहण किया।

1:7 बदलाव का पहला परिणाम उदाहरणस्वरूप
यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

सुसमाचार के द्वारा हुए बदलाव का पहला परिणाम यह है कि थिस्सलुनीके के लोग अन्य कलीसियाओं के लिए आदर्श बने।

1:8 बदलाव का दूसरा परिणाम प्रकट में
क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।

दूसरा परिणाम यह है कि उनका विश्वास पड़ोस में ही नहीं अपितु दूर – दूर तक फैल गया।

1:9 बदलाव की नींव मूरतों से फिरना
क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ, और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरें ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।

बदलाव की पहली नींव यह थी कि लोग मूरतों से फिरने लगे।

1:10 बदलाव की नींव स्वर्गीय जीवन है
और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।

बदलाव की दूसरी नींव यह थी कि थिस्सलुनीकियों के लोग यीशु मसीह के आने का बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे।

उस प्रभु का जो (1) मर्दों में से जी उठा और (2) हमें आने वाले क्रोध से बचाएगा।

ग. विस्तृत रूपरेखा को निम्न प्रकार से देखा जा सकता हैः

1. धन्यवाद पद 2

2. धन्यवाद क्यों पद 3–4

क. प्यार भरा परिश्रम

ग. आशा में स्थिरता

1. हमारे प्रभु यीशु मसीह में
2. हमारे पिता परमेश्वर की उपस्थिति में
3. उनकी ईश्वरीय बुलाहट में

3. **उनके द्वारा सुसमाचार का अंगीकार पद 5**
   क. वचन में
   ख. सामर्थ में
   ग. पवित्र आत्मा में
   घ. पूर्ण पश्चाताप के साथ
   ङ. अच्छे चालचलन के व्यक्ति द्वारा
4. **सुसमाचार के द्वारा परिवर्तन पद 6**
   क. पौलुस के झुण्ड और प्रभु का अनुकरण
   ख. क्लेशों के बीच आत्मिक आनन्द
5. **परिवर्तन के दो परिणाम पद 7–8**
   क. पड़ोस की कलीसिया के लिए उदाहरण बनना
   ख. विश्वास का बड़ा उदाहरण बनना
6. **बदलाव की दो नींव पद 9–10**
   क. मूरतों से फिरना
   ख. प्रभु के आने का इन्तजार
      1. जो मुरदों में से जी उठा
      2. जो आने वाले क्रोध से हमें बचाएगा।

इस अध्याय में पौलुस प्रेरित थिस्सलुनीके में स्थित कलीसिया की बहुत प्रशंसा करता है। यहां तक कि "नमूना" और "आदर्श" कलीसिया की पदवी देता है। इसमें हम एक "आदर्श" कलीसिया के गुणों को जान सकते हैं, जो आज की आवश्यकता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 4

1. **पद के शीर्षक को देखें और उसके विषय में भी नजर डालें।**
2. **पदों का बारीकी से अध्ययन करें।**
3. **2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12 की अतिरिक्त रूपरेखा बनाएं।**

भाग 5
अप्रत्यक्ष सन्दर्भों का विश्लेषण

अतः हम पद से पद की तुलना अप्रत्यक्ष सन्दर्भ के विश्लेषण द्वारा कर सकते हैं। इन शब्दों को उस सूची से उठा सकते हैं जो निर्धारित सूची में रखे गए हैं। इसके उपयोग से हम बाइबल के अन्य भागों में भी पहुंच सकते हैं।

अलग अलग शब्दक्रमाविका सूची अलग अलग शीर्षक में कार्य करता है। अप्रत्यक्ष सन्दर्भ के विश्लेषण को समझने के लिए पहला कदम यह है कि हम यह समझने की कोशिश करें कि वह किस प्रकार और किस रीति से कार्य करता है। प्रत्येक स्थान में शब्द 'कालोस' जिसका मतलब "अच्छा" है हर शीर्षक में पाया जाता है।

"स्ट्रांग एक्सोसटिव कॉनकोरडेन्स" सबसे अधिक प्रचलित शब्द अनुक्रमणिका है। जिसमें हर एक शब्द का उदाहरण दिया गया है, उदाहरण के लिए हर लेखांश में हिन्दी शब्द "अच्छा" का इस्तेमाल किया जाता है। यूनानी और इब्रानी भाषा में कई शब्द हैं जिसका तात्पर्य हैं "अच्छा"; हर एक संदर्भ में उसका अपना सूक्ष्म भेद और अपना स्थान रहता है।

पवित्र शास्त्र विस्तृत अध्ययन में यह जानना महत्वपूर्ण है कि इस शब्द "अच्छा" के लिए कौन सा शब्द प्रयोग किया गया है। इसलिए "स्ट्रांग्स" ने यूनानी और इब्रानी में अनेकों बाइबल शब्दों का इस्तेमाल किया है।

अच्छाः

मत्ती 3:10 – पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता।

मत्ती 5:45 – वह भले (अच्छे) और बुरे दोनों पर सूर्य उदय करता है।

मत्ती 3:10 में प्रयोग "अच्छा" शब्द यूनानी शब्द है, 'कालोस' जिसका अर्थ हैं स्वभाव से ही अच्छा। दूसरी तरफ, मत्ती 5:45 में प्रयोग "अच्छा" शब्द की यूनानी शब्द है, अगाथोस जिसका अर्थ है जो अच्छा बन सकता है।

विस्तृत बाइबल जानकारी के लिए यूनानी व इब्रानी शब्दकोष का प्रयोग जरूरी है जिसके लिये "लेक्सीकोनस" पुस्तक महत्वपूर्ण है। इस तरह की पुस्तकों का उपयोग हमारे अध्ययन को सरल बना सकता है।

अब हम "अनुकरण" शब्द का अध्ययन करेंगे जो 1 थिस्सलुनीकियों 1:6 में पाया जाता है। कुछ बाइबल अनुवाद में यूनानी भाषा में "मिमिटिस" का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है "अनुयायी"; "अनुकरण" के स्थान पर। यह यूनानी शब्द नए नियम में छः स्थान में पाया जाता है। ये निम्नलिखित पद वही हैंः

1 कुरिन्थियों 4:16, "सो मैं तुम से विनती करता हूं, कि मेरी सी चाल चलो।"

1 कुरिन्थियों 11:1, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।"

इफिसियों 5:1, "इसलिये प्रिय, बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश बनो।"

1 थिस्सलुनीकियों 1:6, "और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।"

1 थिस्सलुनीकियों 2:14, "इसलिये कि तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया, जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था।"

इब्रानियों 6:12, "ताकि तुम आलसी न हो जाओ; बरन उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।"

इस शब्द के अन्य सन्दर्भों के अध्ययन ने हमारे अप्रत्यक्ष सन्दर्भ को और सरल बना दिया है। मुख्य बिन्दु हैंः

- 1 कुरिन्थियों 4:16 में हम देखते हैं कि पौलुस चाहता है कि कुरिन्थ की कलीसिया के लोग उसका अनुकरण करें। पद 14:15 तक के सम्बन्ध में हम देखते हैं कि पौलुस चाहता है वे कैसा अनुकरण करें जैसे एक बच्चा पिता का करता है।
- 1 कुरिन्थियों 11:1 में हम पाते हैं कि पौलुस का अनुकरण एक योग्यता है हमें उसके पापों का या बुरे स्वभावों का अनुकरण नहीं करना चाहिये। जैसे पौलुस ने यीशु मसीह का अनुकरण किया वैसे हम भी करें।

- इफिसियों 5:1, के अनुसार, जैसा एक बच्चा पिता का अनुकरण करता है वैसे ही हम पिता का करें।
- थिस्सलुनीकियों की कलीसिया ने प्रभु और पौलुस का अनुकरण किया। 1 थिस्सलुनीकियों 1:6
- थिस्सलुनीके की कलीसिया ने दुःख सहने के मामले में यहूदिया की कलीसिया का अनुकरण किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:14)। नोट करें कि यह लेख उसी पुस्तक में से लिया गया है।
- यह अनुकरण सेवकाई का महत्वपूर्ण भाग है (इब्रानियों 6:9–12) इन सब लेखांशों के अध्ययन से तीन कार्य करने का प्रोत्साहन हमें मिलता हैः

1. परमेश्वर, यीशु मसीह और पौलुस का अनुकरण करना।
2. जैसे बच्चा पिता का अनुकरण करता है हम भी करें चाहे दुःख में भी हों।
3. दूसरों की सेवा के संबंध में अनुकरण करें।

अब हम अनुकरण के विचार को समझ सकते हैं (संबंध में 1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। क्योंकि हमने तय करना है कि पवित्र शास्त्र इसके विषय में क्या कह रहा है। जब पौलुस थिस्सलुनीकियों को अनुकरण के बारे में आदेश दे रहा था वह उसे भी बता रहा था कि कैसे वह यीशु मसीह का अनुकरण करता है अपनी शारीरिक कमजोरी के बारे में नहीं (रोमियों 7)।

लागू करने के उद्देश्य से हमें पिता और पुत्र के कुछ गुणों में अध्ययन करना है ताकि हम उनका अनुकरण करें। उदाहरण के लिये, हम उनके स्वभाव को लें या फिर प्रतिज्ञा पूरी करने के विषय में या सच्चाई में जीवन बिताने के विषय में (जब हम यीशु के संबंध में सोचते हैं, तो बहुत से विषय है)। शिक्षक के रूप में हमें परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना है कि नए व अपरिपक्व विश्वासी बाइबल की गहन सिद्धान्तों को समझ नहीं सकते (इब्रानियों 5:11–14)। हमें अपने श्रोताओं के स्तर को समझना है और उनके स्तर पर उन्हें सिखाना है।

हमें हमेशा अपने मुख्य विषय और लेखांश पर वापिस आना चाहिए ताकि हम अपने मुख्य विषय से भटक ना जाएं। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया ने प्रभु यीशु मसीह और पौलुस का अनुकरण किया ताकि वे दूसरों के लिए आदर्श बन सकें।

पौलुस इस कलीसिया को आदर्श कलीसिया के नाम से संबोधित करता है। पौलुस थिस्सलुनीकिया (पद 2) को तीन बातों के लिए धन्यवाद देता हैः

1. उनके विश्वास का कार्य
2. उनका प्यार भरा परिश्रम
3. उनकी आशा में स्थिरता

पूरे नये नियम में इन विषयों के लिए संदर्भ हैः कार्य (173), विश्वास (246), परिश्रम (19), प्रेम (115), स्थिरता (32) और आशा (56) इन विषयों पर कोई भी महिनों तक अध्ययन कर सकता है। उपरोक्त बातें एक आदर्श कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 5

भाग 5 और 6 मिले हुए हैं। पूर्ण अध्ययन के लिए विद्यार्थी को शब्दकोष चाहिए। प्रत्येक पद को देखें और 2 थिस्सलुनीकियों 1 से तुलना करें।

भाग 6
अपने अध्ययन का विस्तार करना

परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत करने से पहले एक शिक्षक को उसकी गहराई को निम्न बातों के आधार पर सीखना है। पहले पवित्रात्मा की अगुवाई फिर श्रोताओं की परिपक्वता। यद्यपि, व्यक्तिगत अध्ययन से वचन की गहराइयों तक पहुंचना चाहिये। एक मसीही के रूप में पवित्र आत्मा के साथ हम 1 कुरिन्थियों 2:9–10 के अनुसार खजाने को खोज सकते हैं:

> ***"परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के चित्त पर नहीं चढ़ीं वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार की हैं, परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है"।***

1 थिस्सलुनीकियों 1:3 को विस्तार से देखेंगे कि यूनानी शब्द और उसकी परिभाषा क्या हैं। इस पद के अनुसार:

> ***और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे*** (बहुवचन) ***विश्वास के*** (पिस्टिस = भरोसा) एरगोस = व्यापार, नौकरी) ***और प्रेम का*** (अगापे = जिसे आप पसंद नहीं करते फिर भी करना) ***परिश्रम*** (कोपोस = गरीबी में परिश्रम) ***और हमारे प्रभु यीशु मसीह में*** (एम्प्रोस्थेन = उसके सामने) ***आशा की*** (एल्पिस = आत्म विश्वासपूर्ण अपेक्षा) ***धीरता को*** (हुपोमोन = आन्तरिक, हालात के धीरज) ***लगातार*** (आदीपालेइपो = कमी के कारण नहीं) ***स्मरण करते हैं*** (निमेनियू = याद करना)।

संदर्भ सिद्धान्त : लोगों को बताएं कि हम उनके लिए परमेश्वर को क्यों धन्यवाद दें (पद 2 से तुलना)

मुख्य विषय : एक आदर्श कलीसिया होने के कारण (पद 7), इसका मूल्यांकन विश्वास, आशा और प्रेम में आधारित हैं।

क. कुछ अवलोकन:

1. **प्रत्येक पत्रियों में एक या एक से अधिक गुण पाये जाते हैं चाहे उसका लेखक कोई भी हो।**
2. **ध्यान दें कि "विश्वास का कार्य", "प्यार भरा परिश्रम" और "आशा में स्थिरता" हर पत्र का उद्देश्य है।**
3. **ये तीनों गुण प्रगतिशील हैं।**
4. **ये तीनों एक दूसरे से जुड़े और क्रियाशील है।**
   - क. विश्वास (2 थिस्सलुनीकियों 1:3)।
   - ख. आशा (रोमियों 15:13)।
   - ग. प्रेम (2 थिस्सलुनीकियों 1:3)।
5. **इन गुणों को परमेश्वर द्वारा तैयार किया गया है ताकि उसके अनुसार जीएं।**
   - क. विश्वास (इब्रानियों 11:1)
   - ख. आशा (रोमियों 8:24)।
   - ग. प्रेम (इफिसियों 3:16–19)।
6. **आत्मिक रीति से यदि कोई ठंडा या गुनगुना रहेगा तो नष्ट किया जायेगा (प्रकाशितवाक्य 3:14–20)।**
7. **पौलुस कहता है इन तीनों में सबसे बड़ा प्रेम है, अगर प्रेम नहीं तो कुछ भी नहीं (1 कुरिन्थियों 13:1–3, 13)।**
8. **अगर एक कलीसिया में इनमें से एक भी गुण नहीं पाए गये तो कलीसिया गलातियों के समान पिछड़ी है या कुरिन्थियों के समान व्यभिचारी है या दोनों का मिश्रण है।**

ख. निम्न बातों को समझाने के लिए आपको अपना अध्ययन विस्तृत करना आवश्यक है:

1. **विश्वास का कार्य**
   - क. इसका मतलब विश्वास आपका व्यवसाय बन गया और आपकी जीवन शैली उस पर आधारित है।

ख. यूनानी भाषा में "विश्वास के कार्य" का अर्थ है उन प्रतिकूल परिस्थिति के प्रति आपकी प्रतिक्रिया जो मसीह यीशु में आपका विश्वास बढ़ाए।
ग. कुछ के दृष्टिकोण से विश्वास का कार्य का अर्थ मसीह यीशु का सुसमाचार के कार्य को बढ़ाना है।
घ. "विश्वास" इस शब्द का इस्तेमाल पवित्र शास्त्र में सच्चाई को दर्शाने के लिए किया गया है।
ङ. विश्वास के कार्य के द्वारा हम धर्मी नहीं बनते, जिससे हमें उद्धार मिल सके। (रोमियों 3:27,28, गलातियों 2:16)
च. विश्वास अधर्मी को धर्मी बनाता है (रोमियों 4:5)।
छ. जो व्यक्ति उद्धार पाने के लिये कर्म का सहारा लेता है, वह यीशु मसीह के कार्य में ठोकर का कारण बनता है (रोमियों 9:32)।
ज. विश्वास की महान हस्तियां अपने आपको अगुवे के रूप में नहीं परन्तु सहकर्मी के रूप में मानते थे (2 कुरिन्थियों 1:24)
झ. एक व्यक्ति मसीह यीशु पर विश्वास करके धर्मी ठहराने के बाद उनके द्वारा अनुग्रह का फल प्रगट होना चाहिए (2 कुरिन्थियों 8:7)
ञ. एक विश्वासी अपने कर्मों के द्वारा पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं कर सकता (गलातियों 3:2–5)।
ट. आशा के कारण आत्मिक प्रेम के द्वारा विश्वास कार्य करती है (गलातियों 5:5,6)।
ठ. परन्तु शैतान चाहता है, विश्वास के द्वारा नहीं, परन्तु मनुष्य निर्मित व्यवस्थाओं से उसे प्राप्त करें (गलातियों 5:7–13)।
ड. हमारा विश्वास हमारे अंदर कार्य करने वाले प्रभु यीशु पर होना चाहिए, न कि हम में (फिलिप्पियों 2:12–16, कुलुस्सियों 2:12)।
ढ. हम अन्य विश्वासियों के लिए यह प्रार्थना करें, ताकि वे विश्वास के द्वारा महान कार्य करें (2 थिस्सलुनीकियों 1:11, याकूब 2:14–24)।

सिद्धान्तः एक आदर्श कलीसिया के पास वह विश्वास है जिसके द्वारा परमेश्वर प्रगट रूप में कार्य करें।

2. प्यार भरा परिश्रम

क. नये नियम में यह एकमात्र जगह है जहां यह दोनों शब्द (परिश्रम और प्यार) एक साथ प्रयोग किया गया है।
ख. जीवन का एक परिणाम यह भी है कि अपने परिश्रम द्वारा अपनी पत्नी के साथ आनन्द कर (सभोपदेशक 9:9)।
ग. परिश्रम का दूसरा शब्द थकान को भी दर्शाता है।
घ. यह वह परिश्रम है, जो दूसरों की भलाई के लिए करते हैं (यूहन्ना 4:37–38)।
ङ. यह परिश्रम परमेश्वर में सहभागी होना (1 कुरिन्थियों 3:6–9)।
च. प्रभु की सेवकाई में किया हुआ परिश्रम व्यर्थ नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 15:58)।
छ. परमेश्वर का कार्य स्वेच्छा से होना चाहिए, न कि दबाव से होना चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 2:9, 2 थिस्सलुनीकियो 3:8)।
ज. कोई भी अपने परिश्रम को व्यर्थ होने नहीं देना चाहता (1 थिस्सलुनीकियों 3:5)।
झ. प्रेम के बिना परिश्रम का मूल्य कलीसिया को चुकाना पड़ेगा (प्रकाशितवाक्य 2:2–7)।
ञ. यह प्रेम अगापे (यूनानी शब्द) जिसका अर्थ है, जो सही है, वहीं करें। इस परिश्रम के पीछे एक बहुमूल्य उद्देश्य है।
ट. ये परिश्रम का मतलब अपने शरीरों को जीवित और पवित्र बलिदान करके चढ़ाए (रोमियों 12:1)। इस परिश्रम का मतलब है, दूसरों को अपने से श्रेष्ठ समझना (फिलिप्पियों 2:3), इस परिश्रम का तात्पर्य दोनों महान आज्ञाओं का पालन करना (मरकुस 12:29–31)।

संदर्भ सिद्धान्त : एक आदर्श कलीसिया, परमेश्वर और अन्य लोगों का हर संभव कार्य करने के लिए तैयार रहते हैं।

सिद्धान्त : यह स्वभाव केवल एक पास्टर के लिए नहीं, परन्तु पूरे कलीसिया के लिए भी है।

3. आशा में स्थिरता

क. आशा में "स्थिरता" का अर्थ है – परिस्थितियों के सामने धीरज रखना, जो आशा से उत्पन्न होता है।
ख. यूनानी शब्द एल्पिस जो इसके लिए अनुवाद किया गया है। यह है, कि भविष्य के प्रति चिंतामुक्त।
ग. हमारी आशा मसीह यीशु पर आधारित होना है (1 तीमुथियुस 1:1)।
घ. जितना मसीह यीशु आप में बढ़ेंगे, उतना ही महिमा की आशा आप में बढ़ेगा (कुलुस्सियों 1:27)।
ङ. मसीह यीशु पर आधारित आशा आपको पवित्रता की ओर ले जायेगा (1 यूहन्ना 3:1–3)।

च. विश्वास, आशा और प्रेम तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं (1 पतरस 1:20–22)।
छ. जो लोग धीरज से फल लाते हैं, वे सुसमाचार की महिमा को प्रकट करते हैं (लूका 8:15)।
ज. जो लोग धीरज से भले कामों को प्रगट करते हैं वे अनन्त जीवन के प्रति जागरूक हैं।
झ. आशा को विकसित करने के लिए धीरज का महत्व है (रोमियों 5:15)।
ञ. धीरज और वचन के द्वारा मिला हुआ प्रोत्साहन आशा में बने रहने के लिए सहायक होते हैं (रोमियों 15:4)।
ट. परमेश्वर से प्राप्त हुआ यह धीरज अन्य लोगों के साथ हमारे संबंध को मजबूत करता है (रोमियों 15:5–7)।
ठ. धीरज और परिश्रम ये दोनों गुण एक सेवक में होना चाहिये (2 कुरिन्थियों 6:1–12)।
ड. जब एक कलीसिया धीरज रखता है, तो वह दूसरों को प्रभावित करती है (2 थिस्सलुनीकियों 1:4,3:5)।
ढ. धीरज एक आत्मिक व्यक्ति की पहचान है (1 तीमुथियुस 6:11–12)।
ण. धीरज में आदर्श बनना है (2 तीमुथियुस 3:10–13)।
त. बूढ़े पुरुष को धीरज का नमूना होना चाहिये (तीतुस 2:2)।
थ. विश्वास पर आधारित धीरज परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है (इब्रानियों 10:36–39)।
द. धीरज हमारी दौड़ में महत्वपूर्ण भाग है (इब्रानियों 12:1–3)।
ध. धीरज परिपक्वता का मूल तत्व है (याकूब 1:2–4)।
न. धीरज दोनों महान आज्ञाओं को पूरा करने का आधार है (2 पतरस 1:5–7)।
प. एक कलीसिया जिसमें धीरज हो, और प्रेम न हो, वह खतरनाक है (प्रकाशितवाक्य 2:2–4)।
फ. एक कलीसिया जिसमें प्रेम, विश्वास और सेवा और धीरज हो परन्तु बुराई को सहता हो, वो भी खतरनाक है (प्रकाशितवाक्य 2:19–20)।
ब. आशा जो वर्तमान में प्रकट होता है परन्तु धीरज के साथ पहले से पूर्वानुमान हो जाता है (रोमियों 8:23–26)।
भ. परमेश्वर ने हमें अपने ज्ञान के अनुरूप बनाया है, ताकि हम धीरज रख सकें (कुलुस्सियों 1:9–14)।
म. प्रभु यीशु मसीह का क्रूस पर का धीरज हमारे उद्धार का आधार बना (प्रकाशितवाक्य 3:10–11)।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 6

यह भाग, भाग 5 से जुड़ा है।

भाग 7
बिन्दुओं का निर्माण

परमेश्वर के वचन का शिक्षक होने के कारण आपके पास आपके श्रोताओं से बढ़कर जानकारियां होना चाहिए, आप यदि चाहते हैं, कि आपके संदेश को अन्य लोग भली भांति समझे और स्मरण करें। आप जितना भी स्पष्ट समझाए, फिर भी उलझपन आ ही जाती है। हर संभव प्रयास करें कि संदेश सरल और व्यवहारिक हो।

हमेशा मुख्य बिंदु पर ध्यान केन्द्रित करें। इस सिद्धांत को पूरा करने के लिए उदाहरणों का इस्तेमाल करना। उदाहरण के लिए देखेंः यदि हम एक कील को जो लकड़ी को जोड़ने के लिए इस्तेमाल करते हैं, तो हथौड़े द्वारा जब कील को पड़ता है, तो धीरे–धीरे कील लकड़ी के अंदर जाता है, उसे तब तक मारा जाता है, तब तक कि वह कील पूरा अंदर नहीं जाता। उसी तरह मुख्य बिन्दु को समझने तक उदाहरण का इस्तेमाल होना आवश्यक है।

परमेश्वर का वचन हमने किस प्रकार अध्ययन किया उसका ध्यान दीजिए। सर्वप्रथम पूरे चित्र को सामने रखा और विवरण को खोजा और इस निर्णय में पहुंचना है कि उस विवरण को उस चित्र के साथ कैसे जोड़ना है।

1 थिस्सलुनीकियों में 1:2 मैं पौलुस उन लोगों को धन्यवाद देते हैं, जो मसीह में बढ़ते हैं। पौलुस का एक संदेश है, ***"सब बातों के लिए धन्यवाद"*** और इस प्रकार का सन्देश इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि नये व अपरिपक्व विश्वासी लोग हमेशा अपने कमी की ओर ध्यान देते हैं, जो उनके पास है, उसके प्रति कृतज्ञ नहीं रहते हैं।

एक अवसर पर प्रभु यीशु पांच रोटी दो मछलियों के लिए पिता को धन्यवाद दिया – जो उस समय के भीड़ के लिए अपर्याप्त था और मांगने के बजाय यीशु जो है उसके लिए धन्यवाद दिया और आश्चर्यकर्म प्रगट हुआ।

इस घटना के विषय में हम चारों सुसमाचारों में पढ़ते हैं (मत्ती 14:15–21, मरकुस 6:37, लूका 9:13–17, यूहन्ना 6:5–13)। इन चारों सुसमाचारों में शिकायत करने के बदले यीशु ने उसका धन्यवाद किया। हमें अपने श्रोताओं को चुनौती देना चाहिए, कि हम धन्यवाद देने वाले हैं, या शिकायत करने वाले, हमें अन्य लोगों को भी उदाहरण देना चाहिए। जो इन सन्देशों को सुनेगा, वह व्यक्ति परमेश्वर को धन्यवाद देने का महत्व समझेगा। धन्यवाद के लिए यूनानी शब्द है "EUCHARISTIA" यह दो यूनानी शब्दों का मिश्रण है "EU" और "CHARIS"। "EU" का अर्थ है – अच्छा और "CHARIS" का अर्थ है "अनुग्रह" इसलिये धन्यवाद देने का तात्पर्य है, परमेश्वर के अनुग्रह और अच्छाइयों का अंगीकार करना। जो लोग धन्यवाद देने का महत्व नहीं रखते। वे परमेश्वर के "अनुग्रह" को तुच्छ जानते हैं।

वचन के अध्ययन में उदाहरण का काफी महत्व है। उत्तम उदाहरण किताबी ज्ञान से नहीं आता, परन्तु जीवन का सूक्ष्म निरीक्षण करने से आता है। अध्ययनकर्ता इस बात को भलीभांति समझें कि परमेश्वर उसके जीवन में चारों ओर किस प्रकार से कार्य करता है।

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये : अध्याय 9, भाग 7

2 थिस्सलुनीकियों 1 में आधारित परमेश्वर की महिमा के लिए संदेश तैयार करें।

सम्पादकीय नोट

"बुनियाद" आपको बाइबल की शिक्षा देने के लिए सकारात्मक पहला कदम है। हम आपको आपके मसीही चाल और प्रभु यीशु के कार्य के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमें ज्ञात है कि आप निरंतर प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह में और उसके ज्ञान में बढ़ते जायेंगे (2 पतरस 3:18)। हम आपको प्रोत्साहित करना चाहेंगे कि जो आपने **"बुनियाद"** से सीखा है उसे ले लें और अपने जीवन व सेवकाई में लागू करें। और कोई दूसरी बात इतनी प्रमुख नहीं केवल इसके कि हम यीशु के साथ रोजमर्रे की चाल को बढ़ाएं, और इसे दूसरों के साथ बांटें। यीशु के साथ घनिष्ठता उस समय प्राप्त हो सकती है जब हम बाइबल को बिल्कुल सटीक तरीके से समझ जाए। तत्पश्चात् जो लिखित बातें वचन में हैं वे जीवित वचन को हमारे जीवन से परावर्तित करें।

"बुनियाद" ने आपको उन आधारभूत औजारों से उपलब्ध कराया है जो आपको वचन का एक अच्छा विद्यार्थी और अच्छा अनुवादक बनाता है। हम आपको प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि जो आपने सीखा है उसे ले लें और अन्य मसीहियों को शिक्षा दें और प्रशिक्षित करें। आपको इस बात को जानना जरूरी है कि जब आप सत्य का अनुसरण करेंगे तब आप अनेकों झूठ शिक्षकों को अनावरित करेंगे, वे जो सत्य का रूप बिगाड़ते और वचन की सरलता को गलत अनुवाद और शिक्षा में बदल देते हैं (फिलिप्पियों 3:2)। अपनी आत्मरक्षा करो जैसे बिरिया के लोगों ने किया (प्रेरित 17:11)। उन्होंने जैसा सुना और पढ़ा उसे परखते थे, वे किसी बात को धीरज से ग्रहण करते थे, कि वह सत्य है और सावधानी से वचन में निहित बातों को ग्रहण करते थे।

यह हमारी प्रार्थना है कि आप अपने विश्वास और सेवकाई की यात्रा में लगातार बढ़ें। हम एक बड़ी दुनिया में रहते हैं, और शायद हमारे प्रयास छोटे और महत्वहीन दिखाई पड़ें। परमेश्वर की सारी योजनाओं के अंतर्गत हम उसकी देह (कलीसिया) का निर्माण कर रहे हैं। यीशु के देह के अंग होने के कारण और उसी सेवकाई के समूह में होने के कारण, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम चेले बनाएं और उस विश्वास के संदेश को जिसे प्रभु यीशु मसीह ने हमें दिया है बांटें। जब हम स्वर्ग पहुंचे तो एक साथ बैठकर कई प्रकार से आनन्द करें कि प्रभु ने हम सभी को अपनी महिमा के लिए उपयोग किया। परमेश्वर आपको आपके हर एक उन कार्यों में जो आप करते हैं अशीष दें। और आप निरन्तर परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न करें जो लज्जित होने न पाएं (2 तीमुथियुस 2:15)।

विलेज मिनिस्ट्रीज इन्टरनेशनल

उत्तर

अध्याय 1

भाग 1

व्यक्तिगत तैयारी

अध्याय 1, भाग 1

1. यह उद्धार पाने से पहले अविश्वासी को दर्शाता है (1 कुरिन्थियों 15:44, 46)। यह उस व्यक्ति के बारे में बताता है जो जलन रखने वाला हो स्वार्थी, अक्खड़ और झूठा (याकूब 3:14–15)। यह अन्तिम दिनों के झूठे शिक्षकों के बारे में बताता है (यहूदा 1:18–19)।
2. यह इनके लिए लाभदायक हैं (1) शिक्षा देने (2) जांचने (3) सुधारने और (4) धर्म की शिक्षा देने। उद्देश्य है ***"प्रत्येक सही काम में सुसज्जित होना"।***
3. परमेश्वर उसे देगा जो उसे मांगेगा।
4. हमें बिना शर्माए प्रभु में समर्पित होना है। हमारा उद्देश्य है ***"सत्य वचन को सही तरह पकड़ना"।***
5. क्षमा किया और साफ किया।
6. इसको जीने की इच्छा होनी चाहिए।
7. हमें महिमा में विश्वास के द्वारा चलना है। इसका मतलब है कि हम उद्धार के समय दी गई महिमा की प्रशंसा करते हैं और दूसरों के प्रति कृपालु बनें। जैसे हम अपने उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, हम अपने जीवन के लिए उस पर भरोसा रखते हैं।
8. यह उसमें शान्ति, दाग रहित, द्वारा पाया जाता है। हमें उसकी (1) महिमा और (2) हमारे प्रभु यीशु के ज्ञान में, बढ़ना है।
9. (1) ज्योति में चलना और (2) अपने पापों का अंगीकार।
10. शैतान और उसकी सेना हमारे शत्रु हैं। हमें परमेश्वर के हथियार पहिन कर उनसे लड़ना होगा।
11. (1) विश्वास की एकता को पाना जो परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान पर आधारित है; (2) मसीही परिपक्वता; और (3) मसीह की पूर्णता की महिमा को मापना।

भाग 2

बाइबल

अध्याय 1, भाग 2

1. जो बलिदान चढ़ाते हैं उन्हें सिद्ध करना (पद 1) और पाप को दूर ले जाता है (पद 3)।
2. प्रभु यीशु मसीह को दर्शाने के लिए।
3. (1) शिक्षा देने (2) जांचने (3) सुधारने; और (4) धर्म की शिक्षा देने।
4. (1) विश्वासी को परिपक्व बनाना (2) अच्छे कार्य के लिए विश्वासी को सुसज्जित करना
5. धर्मशास्त्र का सही ज्ञान व्यक्ति को यीशु मसीह के पास लाएगा। जो उस पर विश्वास करते हैं उनको अनन्त जीवन देगा। धर्मशास्त्र अनन्त जीवन नहीं दे सकता।
6. एक के सामने प्रस्ताव रखा जाता है और दूसरे के द्वारा उसे स्वीकार किया जाता है। इस प्रस्ताव में एक वायदा होता है जो संबंध को प्रभावित करता है।
7. (1) नियम (2) इतिहास (3) कविता (4) बड़े भविष्यद्वक्ता और (5) छोटे भविष्यद्वक्ता।
8. हां! ये पद मनुष्य द्वारा बनाए गये हैं।
9. (1) इतिहास (2) पत्रियां और (3) भविष्यवाणी

भाग 3
ऐतिहासिक पुनरावलोकन

अध्याय 1, भाग 3

1. स्वर्ग और पृथ्वी की रचना, उनका विनाश और नये स्वर्ग व नई पृथ्वी की रचना।
2. उसका मूल पाप स्वयं इच्छा है (नोट करें पांचे "मैं करूंगा") और उसकी मंडीय आग की झील है।
3. इसे दोबारा सिद्ध बनाया जाएगा।
4. पहले मनुष्य ने पाप किया। यीशु मसीह ने नहीं।
5. शैतान और उसकी सेना हमारी शत्रु है। परमेश्वर के हथियार पहिन कर हमें उससे लड़ना होगा।
6. एक समय सारी मनुष्य जाति का न्याय होगा।
7. धर्मत्याग पहले है, फिर आर्थिकता।
8. नए स्वर्ग और पृथ्वी में।
9. मसीह के प्रथम आगमन पर उसे सताया और मारा गया। दूसरे आगमन पर वह अपने शत्रुओं पर विजयी होगा। दूसरे आगमन के लिए ही वह मृतकों में से जी उठा।
10. यीशु मसीह सब की सेवा करने आया। मसीह विरोधी स्वयं की सेवा करेगा।
11. हर राष्ट्र के लोगों को शिष्य बनाएं।

भाग 4
एक काल – क्रिया का दृष्टिकोण

अध्याय 1, भाग 4

1. आदम का पतन
   नूह का जल–प्रलय
   अब्राहम से प्रतिज्ञाएं
   इस्राएल का मिस्र से निकलना
   सुलैमान का चौथा वर्ष
   उत्तरी राज्य का पतन
   दक्षिण राज्य का पतन
   मसीह यीशु का जन्म
   मसीह यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान
   बाइबल की अन्तिम पुस्तक
2. उत्पत्ति और अय्यूब
3. निर्गमन– लैव्यव्यवस्था – गिनती – व्यवस्थाविवरण – यहोशू – न्यायियों – रूत – 1 शमूएल – 2 शमूएल – 1 राजा 1–5 – भजन संहिता – 1 इतिहास।
4. 1 राजा 6–22 – 2 राजा – 2 इतिहास – नीतिवचन – सभोपदेशक – श्रेष्ठगीत – ओबद्याह – योएल – योना – आमोस – होशे – मीका – यशायाह – नहूम – सपन्याह – हबक्कूक।
5. यिर्मयाह – विलापगीत – यहेजकेल – दानिय्येल – एज्रा – नहेम्याह – जकर्याह – हाग्गै – मलाकी।
6. मत्ती – लूका – मरकुस – यूहन्ना – प्रेरितों के काम
7. याकूब – गलातियों – 1 थिस्सलुनीकियों – 2 थिस्सलुनीकियों – 1 कुरिन्थियों – 2 कुरिन्थियों – रोमियों – फिलेमोन – इफिसियों – कुलुस्सियों – फिलिप्पियों – 1 तीमुथियुस – तीतुस – 2 तीमुथियुस – इब्रानियों – 1 पतरस – 2 पतरस – यहूदा – 1 यूहन्ना – 2 यूहन्ना – 3 यूहन्ना – प्रकाशितवाक्य।

भाग 5

बाइबल अध्ययन की तैयारी

अध्याय 1, भाग 5

1. कौन = सिदिक्कियाह, नबूकदनेज़र और उसकी सेना।
   क्या = नबूकदनेजर के यरूशलेम की घेराबन्दी की और शहरपनाह को नुकसान पहुंचाया।
   कब = सिदिकिय्याह के राज्य के नौवे वर्ष के दसवें महीने में
   कहां = यरूशलेम
   क्यों = इस पद में उत्तर नहीं मिलता पर कहीं और मिलता है (देखें 40:2–3)।
   कैसे = नबूकदनेजर की सेना ने यरूशलेम की घेराबन्दी की।
2. अपने सारे मन, प्राण, बुद्धि और शक्ति
3. विश्वास और एक दूसरे के लिए प्रेम।

अध्याय 2 अध्याय 3

अध्याय 2 और 3 के लिए कोई उत्तर नहीं दिये गये है, क्योंकि इन पदों को बताने के लिए बहुत से और तरीके हैं जो सही हो सकते हैं।

अध्याय 4

भाग 1

नियम एक

अध्याय 4, भाग 1क

1. यह विद्यार्थियों को करने के लिए है।
2. पद 1 और 4 में, शब्द "प्रभु" उसके अधिकार को बताता है। पर 4 में उसे सिंहासन पर दिखाया गया है जो उसकी प्रभुसत्ता को दर्शाता है। पद 7 में, सीधा विवरण है कि प्रभु धर्मी है। पद 6 में, वह दुष्टों का न्याय करता है। पद 1 में, वह वो है जिसे भजनकार कहता है, मेरा भरोसा परमेश्वर पर है। पद 4 में, वह स्वर्ग में है जो अनन्त जीवन दर्शाता है। पद 6 में, वह दुष्टों पर फंदें बरसायेगा। पद 4 में, वह स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में हैं जो उसकी सर्वव्यापी को दिखाता है। पद 4 और 5 में, उसकी मनुष्य की संतान में नित लगी रहती हैं। पद 7 में, "यहोवा धर्मी है" वाक्य दिखाता है कि वह बदलता नहीं। पद 1 में, भजनकार कहता है कि मेरा भरोसा परमेश्वर पर है क्योंकि वह विश्वासयोग्य है।

अध्याय 4, भाग 1ख

1. यीशु मसीह प्रभु है जो मनुष्य बना।
2. मूसा के दिए नियम के द्वारा भेड़, बकरी का लहू बलिदान के रूप में चढ़ाया जाता था पर यह मनुष्य के पाप की समस्या का समाधान नहीं कर सकता था। सिर्फ यीशु मसीह के बलिदान से यह सम्भव था। वे बलिदान यीशु की छाया मात्र थे।
3. योना को परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों के पास सुसमाचार सुनाने भेजा गया (नीनवे शहर) (योना 1:2), जबकि यीशु यहूदियों का ही नहीं पर अन्यजातियों का भी सुसमाचार है। योना ने दूसरों की सेवा करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया (योना 1:12)। जैसे मसीह ने किया। योना मछली के पेट में तीन दिन व रात रहा (योना 1:17)। वैसे ही यीशु पृथ्वी के अन्दर तीन दिन व रात रहा। योना प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई, मृत्यु, गाड़ा जाना व जी उठने का चित्र है।
4. यीशु प्रभु है वह मनुष्य बना, बैतलेहम में पैदा हुआ (हमें बताया गया है कि इस्राएल के आने वाला राजा का निकलना प्राचीन काल से वरन् अनादिकाल से होता आया है; (मीका 5:2)। यीशु ने कहा कि वह स्वर्ग से आई "रोटी" है (यूहन्ना 6)।
5. यह दिखाता कि यीशु आत्मिक जीवन की पुष्टि करता है। संसार की ज्योति भी यीशु को दर्शाती है।
6. यीशु "परमेश्वर का मेमना" है जिसने मनुष्य जाति के लिए स्वयं का बलिदान दिया।
7. यह विद्यार्थियों को करने के लिए है।

भाग 2
नियम दो

अध्याय 4, भाग 2क

1. क. स्त्री का बीज – उत्पत्ति 3:15 और मत्ती 1:23
   ख. अब्राहम का बीज – उत्पत्ति 12:3 और मत्ती 1:1
   ग. इसहाक का बीज – उत्पत्ति 21:12 और मत्ती 1:2
   घ. याकूब का बीज – उत्पत्ति 35:10–12 और मत्ती 1:2
   ङ. यहूदा की जाति – उत्पत्ति 49:8–11 और मत्ती 1:2
   च. यिशै की ठूंठ – यशायाह 11:1 और मत्ती 1:5–6
   छ. दाऊद का घर – 2 शमूएल 7:12–16 और मत्ती 1:6
   ज. बैतलेहम में जन्मा – मीका 5:2 और मत्ती 2:1
   झ. परमेश्वर और मनुष्य – भजन 110:1 और यूहन्ना 1:1,14
   ञ. इम्मानुएल कहा गया – यशायाह 7:14 और मत्ती 1:23
   ट. नबी – व्यवस्थाविवरण 18:18 और यूहन्ना 7:40
   ठ. याजक – भजन 110:4 और इब्रानियों 5:9–10
   ड. न्यायी – यशायाह 33:22 और यूहन्ना 5:22
   ढ. राजा – यिर्मयाह 23:5 और प्रकाशितवाक्य 19:16
   ण. पवित्र आत्मा का विशेष अभिषेक – यशायाह 11:2 और मत्ती 3:16
   त. परमेश्वर के घर का उत्साह – भजन 69:9 और यूहन्ना 2:17
2. यीशु ने मसीहा के रूप में इन भविष्यवाणियों को पूरा किया।

अध्याय 4, भाग 2ख

1. क. रोमियों 8:35–39 – परमेश्वर के प्रेम से जो प्रभु यीशु मसीह में है हमें कोई अलग नहीं कर सकता।
   ख. यूहन्ना 3:16 – जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करेगा अनन्त जीवन उसका होगा।
   ग. यूहन्ना 3:18 – जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका।
   घ. यूहन्ना 3:36 – जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है, जो विश्वास नहीं करता वह जीवन को नहीं देखेगा।
   ङ. इफिसियों 2:8–10 – विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार हुआ है ताकि विश्वास से भले काम कर सकें।
   च. 1 यूहन्ना 2:1–2 – यदि कोई पाप करें तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् यीशु मसीह।
   छ. तीतुस 3:5 – हम अपने भले कामों द्वारा बचाए नहीं जा सकते।
2. इसमें देखें

अध्याय 4, भाग 2ग

1. क. अब्राहम को एक राष्ट्र का वादा किया गया, मनुष्यों द्वारा पहचान मिली और दूसरों को आशीष देने का कारण बना।
   ख. परमेश्वर ने वादा किया जो अब्राहम को आशीष देगा वह उसे देगा।
   ग. परमेश्वर ने पृथ्वी के प्रत्येक परिवार में आशीष देने का वादा किया।
2. क. अपने देश को छोड़कर उस देश में जाएं जहां के लिए परमेश्वर ने बोला है।
   ख. अपने रिश्तेदारों को छोड़ो।
   ग. अपने पिता के घर को छोड़ो।
3. क्योंकि उसका पिता अब्राहम परमेश्वर का आज्ञाकारी था
4. क्योंकि उसने उसका भरोसा किया।
5. नहीं
6. नहीं
7. हां, यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा (गलातियों 3:26)।

अध्याय 4, भाग 2 घ

1. क. 15:1–11 – उद्धार के सुसमाचार का केन्द्र मसीह का जी उठना है

ख. 15:12–19 – मसीह का पुनरुत्थान हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है
ग. 15:20–28 – विश्वासियों का पुनरुत्थान पड़ाव में आता है
घ. 15:29–34 – पुररुत्थान स्वार्थी उद्देश्य का लाइसेंस नहीं है
ङ. 15:35–49 – पुनरुत्थान प्रकृति द्वारा सिखाया जाता है
च. 15:50–58 – पुनरुत्थान एकदम से होगा

2. विश्वास के लिये (1) पवित्र शास्त्र को पूरा करने के लिए यीशु मरा (2) उसे गाड़ा गया (3) तीसरे दिन जी उठा और (4) अपने शिष्यों को दिखाई दिया

अध्याय 4, भाग 2ङ

1. पुत्र में भरोसा
2. पुत्र में विश्वास
3. हां
4. उनमें चुनने की क्षमता और इच्छा शक्ति थी
5. मनुष्य को चुनना था कि वह आज्ञा माने या ना माने

अध्याय 4, भाग 2च

1. क. अदन की वाचा
   ख. मूसा की वाचा
   ग. पलिश्तियों की वाचा
2. क. आदम की वाचा
   ख. नूह की वाचा
   ग. अब्राहम की वाचा
   घ. दाऊद की वाचा
   ङ. इस्राएल की नई वाचा
   च. कलीसिया के लिए नई वाचा
3. आप विभिन्न वर्णन को चुन सकते हैं

भाग 3

नियम तीन

अध्याय 4, भाग 3क

1. उसकी महिमा
2. विश्वास
3. भले कार्य
4. नहीं
5. हां, यूहन्ना ने जहां "हम" कहा है, उसने स्वयं को भी मिलाया है
6. उन्हें स्वीकार करें
7. परमेश्वर
8. (1) परमेश्वर की प्रशंसा करें और (2) बांटें
9. (1) दया का हृदय रखें (2) भलाई (3) नम्रता (4) सहनशीलता (5) एक दूसरे की सह लें (6) दीनता (7) एक दूसरे को क्षमा करो (8) प्रेम करो (9) मसीह के वचन को अपने में बसने दो (10) एक दूसरे को सिखाओ (11) एक दूसरे को चिताओ (12) धन्यवादी बने रहो (13) सब कुछ प्रभु यीशु के नाम से करो
10. पुरस्कार

अध्याय 4, भाग 3ख

1. स्थिर खड़े रहें और विविधता में सम्मिलित न हों (दासता का बन्धन)
2. एक दूसरे की सेवा करें
3. परमेश्वर की महिमा के लिए सब कार्य करें
4. स्वतंत्रता
5. स्वतंत्रता का नियम

6. स्वतंत्रता के नियम द्वारा न्याय होगा
7. परमेश्वर के सेवकों के समान
8. वे स्वतंत्रता का वायदा करते हैं, परन्तु स्वयं भ्रष्टाचार के दास हैं
9. एक दूसरे की सेवा करने के लिए स्वतंत्रता प्रयोग करनी चाहिए (गलातियों 5:13; 1 पतरस 2:16), सब कार्य परमेश्वर की महिमा के लिए करने चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:28–31)। स्वतंत्रता का अधिकार पवित्र आत्मा द्वारा आता है (2 कुरिन्थियों 3:17)। यह नियम है (याकूब 9:25)। जिसके लिए हमारा न्याय होगा (याकूब 2:12)। झूठे शिक्षक झूठ बोलेंगे (2 पतरस 2:1, 17–19)।

अध्याय 4, भाग 3ग

1. यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा
2. विश्वास में महिमा के द्वारा
3. भले काम
4. ये व्यर्थ है (2:20) और मरा हुआ है (2:26)
5. नहीं
6. हां
7. "व्यक्ति विशेष", जो मानव जाति का हवाला है
8. नहीं
9. मसीह यीशु में विश्वास परमेश्वर के सामने "बचाता" है और न्याय करता है। मसीह में विश्वास द्वारा भले कार्य का परिणाम निकलता है जो अन्य मनुष्यों द्वारा देखा जाता है, एक "बचाया" जाता और "न्याय" किया जाता जो अच्छी गवाही है।

अध्याय 4, भाग 3घ

1. हाँ
2. इसे खोया नहीं जा सकता
3. जो पाप में ग्रसित हैं वे परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे
4. हाँ
5. यीशु मसीह में विश्वास द्वारा विश्वासियों का उद्धार सुरक्षित है। विश्वासियों के लिए विभिन्न प्रकार के परिणाम उपलब्ध हैं। अगर विश्वासी पाप में ग्रसित होता है तो वह अपना "पुरुस्कार" या "उत्तराधिकारिता" खो देगा।
6. परमेश्वर के प्रेम के कारण जीवन के अन्त तक कैद में रहना
7. चरवाहा ईमानदारी व नम्रता और अपने अधिकार में रखने का उदाहरण है
8. मसीह के प्रगटीकरण को प्रेम करना (उसका जीवन और वापसी)।

अध्याय 4, भाग 3ङ

1. व्यवस्था
2. परिवार के अगुवे
3. जो उनके हृदयों में लिखे हैं
4. हारून और उसके पुत्र जो लेवी वंश थे
5. परमेश्वर की व्यवस्था मूसा द्वारा दी गई
6. जो विश्वासी हैं (परमेश्वर पिता द्वारा चुने गए और आत्मा द्वारा पवित्र किए गए ताकि आप यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करें)
7. प्रेम की व्यवस्था
8. लेवी की जाति का सादोक के पुत्र
9. परमेश्वर द्वारा बनाई व्यवस्था
10. ये बलिदान के तरीकों से भिन्न है

अध्याय 4, भाग 3च

1. यह निश्चित है
2. यह व्यक्तिगत व्याख्या का अर्थ नहीं है
3. पवित्र आत्मा द्वारा उभारा व्यक्ति
4. धर्मशास्त्र (यशायाह) पूरा हुआ – मसीहा आया (1) सुसमाचार सुनाने (2) बंधुओं को छुड़ाने (3) अंधों को ज्योति देने (4) टूटे हुओं को संभालने और (5) यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं

5. हाँ
6. हाँ
7. नहीं
8. नहीं
9. नहीं
10. 1 थिस्सलुनीकियों में "बादलों में आगमन" के बारे में बताता है जहां कलीसिया बादलों में उठा ली जाएगी। जकर्याह के पद बताते हैं कि जब वह पृथ्वी पर पांव धरेगा जो उसका दूसरा आगमन होगा। वे भिन्न घटनाएं होंगी।
11. (1) यहूदा की जाति का सिंह (2) दाऊद की जड़ और (3) मेमना

भाग 4

नियम चार

अध्याय 4, भाग 4

वे परमेश्वर के वचन को पूरा करने के इच्छुक होंगे।

अध्याय 4, भाग 4क

1. (1) उलाहना से ऊपर (2) एक पत्नी का पति (3) कोमल (4) समझदार (5) आदरणीय (6) मेहमाननवाजी (7) सिखाने योग्य (8) शराब की लत न होना (9) लड़ाकू न होना (10) नम्र (11) विवाद से परे रहना (12) धन की चाहत से दूर रहना (13) एक जन जो घर की जिम्मेवारी अच्छी से लेता है (14) बच्चों को प्रतिष्ठा में रखना (15) नये धर्म परिवर्तन करने वाले नहीं (16) कलीसिया के बाहर अच्छी प्रतिष्ठा होना
2. निश्चित रूप से, व्यक्ति से व्यक्ति तक यह उत्तर बदलेगा

अध्याय 4, भाग 4ख

1. बुद्धि
2. परमेश्वर के वचन के अध्ययन का परिश्रम
3. निरीक्षक का भर्त्सना के ऊपर
4. हां
5. प्रत्येक विद्यार्थी का उत्तर अलग होगा
6. प्रत्येक विद्यार्थी का उत्तर अलग होगा
7. प्रत्येक विद्यार्थी का उत्तर अलग होगा।

अध्याय 4, भाग 4ग

1. जलन और कलह
2. शरीर के कार्य
3. विभिन्न लेखों का भी अध्ययन किया जा सकता है
4. हमारी अपनी समझ। क्योंकि ज्ञान से घमण्ड आता है
5. हाँ
6. नहीं, क्योंकि यह पक्षपाती है
7. अविरोध
8. स्वयं का मूल्यांकन और पापों का अंगीकरण
9. बुद्धि
10. लेख के विषय को याद करने के लिए सोच–विचार करें
11. संपूर्ण बाइबल परमेश्वर का वचन है
12. परमेश्वर के विचार मनुष्य के विचारों से कहीं महान हैं
13. जलन, स्वार्थी अभिलाषा और घमण्ड

अध्याय 5

भाग 1

त्रिएकत्व

अध्याय 5, भाग 1

1. एक
2. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा
3. वह योजना बनाता है
4. पिता के कार्य करता है
5. पुत्र का प्रगटीकरण
6. पवित्र शास्त्र से दिखाएं कि प्रत्येक का स्वभाव एक है
7. हाँ
8. हाँ
9. हाँ
10. हाँ
11. हाँ
12. हाँ
13. हाँ
14. हाँ
15. हाँ
16. हाँ

भाग 2

परमेश्वर के नाम

अध्याय 5, भाग 2

1. क. परमेश्वर = एलोहीम (3)
   ख. सर्वशक्तिमान परमेश्वर = एल शेदाई (1)
   ग. सर्वोच्च परमेश्वर = एल एलमोन (8)
   घ. अनन्त परमेश्वर = एल ओलाम (7)
   ङ. प्रभु = यहोवा (9)
   च. प्रभु करेगा = यहोवायिरे (10)
   छ. प्रभु मेरा झण्डा है = यहोवानिस्सी (2)
   ज. प्रभु मेरी शक्ति है = यहोवा शालोम (6)
   झ. सेनाओं का यहोवा = यहोवा सबोत (1)
   ञ. प्रभु स्वामी मालिक = अदोनाई (4)
2. क. प्रभु = थियोस (3)
   ख. परमेश्वर = कुरियोस (1)
   ग. स्वामी = डेस्पोटस (2)

भाग 3
परमेश्वर पिता (पैटरीयोलोजी)

अध्याय 5, भाग 3

1. व्यक्तिगत
2. सामूहिक
3. क. सर्वश्रेष्ठता : "महिमा का पिता" – "सर्वोच्च परमेश्वर" – "महिमायुक्त परमेश्वर" – "ईश्वरों का ईश्वर" – "शक्ति का परमेश्वर" – "महान व सर्वशक्तिमान परमेश्वर" – "सब ईश्वरों के ऊपर महान राजा" – "महिमा का राजा" – "सर्वोच्च परमेश्वर" – "शक्ति" – "सर्वोच्च परमेश्वर" – "प्रभु हमारा परमेश्वर" – "तेजस्वी महिमा" – "स्वर्ग का परमेश्वर का तेज" – "तेजस्वी" – "सर्वोच्य" – "मेरा गीत" – "सच्चा परमेश्वर"।

   ख. धर्मीः "पवित्र – जलन रखने वाला और बदला लेने वाला परमेश्वर"

   ग. न्यायी : "विश्वासयोग्य परमेश्वर . . . बिना न्याय के" – जिससे डरा जाए

   घ. प्रेम : "विश्वासयोग्य परमेश्वर" – दया का पिता – "जलन" प्रेम – प्रेमी

   ङ. अनन्त जीवन : "प्राचीन काल के दिन" – "अनन्त परमेश्वर" – "जीवितों का पिता" – "जीवित और सच्चा परमेश्वर"

   च. सर्वशक्मिान : "सर्वशक्तिमान" – "महान व सामर्थी परमेश्वर" – "सर्वशक्तिमान परमेश्वर"

   छ. सर्वव्यापी : सब जगह

   ज. सर्वज्ञता : "बुद्धिमान परमेश्वर"

   झ. अपरिवर्तनीय : "केवल एक परमेश्वर – सिद्ध"

   ञ. सच्चाई से भरा : "सत्य का परमेश्वर"
4. क. अधिकार : "अनन्त राजा" – "पृथ्वी के संपूर्ण राज्य के ऊपर परमेश्वर" – "परमेश्वर जो संकट के प्रति नम्र है" – "स्वर्ग का राजा" – "प्रभु" – "सारी पृथ्वी का प्रभु" – "स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर" – "राजाओं का परमेश्वर" – "हमारा व्यवस्था देने वाला" – "स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार"

   ख. सृष्टिकर्ता : "वास्तुकार" – "निर्माण करने वाला" – "हमारे यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता" – "परमेश्वर मेरा बनाने वाला" – "सबका परमेश्वर" – "सबके हृदय का बनाने वाला" – "हमको बनाने वाला परमेश्वर" – "आपका बनाने वाला" – "सबका कर्त्ता" – "कुम्हार"

   ग. बचाने वाला संभालने वाला : "असहायों का सहारा" – "अनाथों का पिता" – "पुरस्कार का पिता" – "हमारा बदला लेने वाला प्रभु" – "विधवाओं का न्यायी" – "प्रभु हमारी ढाल" – "मेरा वकील" – "मेरे छिपने का स्थान" – "तूफान में शरण स्थान" – "मेरा शरणस्थान और ढाल" – "अपने लोगों की शरण" – "आश्रय" – "मुसीबत में मजबूत सहायता" – "मुसीबत में तुरन्त सहायता"

   घ. उदाहरण : "पवित्र पिता" – "स्वर्ग में स्वामी" – "धर्मी पिता"

   ङ. दानी : ज्योति का पिता – "आत्माओं का पिता" – "जीवित जल का सोता" – "अब्राहम, इसहाक याकूब का परमेश्वर" – "शक्ति का परमेश्वर" – "मेरे उद्धार का परमेश्वर" – "मेरे बल का परमेश्वर" – "परमेश्वर जो उत्साह देता है" – "जिसमें यीशु मृतकों में से जी उठा" – "जो उल्लंघन करने का हटा देता है" – "हमारा छुड़ाने वाला" – "मेरे हृदय की सामर्थ"

   च. न्यायी : "सारी पृथ्वी का न्यायी" – "हमारा न्यायी" – "धर्मी न्यायी"

   छ. अगुवा : "मेरी ज्योति" –"एक शिक्षक"

   झ. प्रेमी : "आपका पति" – "जीवित पिता" – "आपका छुड़ाने वाला" – "जो प्रार्थना सुनता है" – "जो अपनी वाचा और नम्रता को रखता है" – "तरस से भरा और महिमायुक्त परमेश्वर"

   ञ. प्रस्तुतकर्ता व उपलब्ध कराने वाला : "हमारे सोचने व मांगने से पहले उपलब्ध कराने वाला" – "दया का पिता" – "क्षमा का परमेश्वर" – "मेरी सामर्थ का परमेश्वर" – "परमेश्वर हमारा पिता" – "परमेश्वर पिता" – "जो लोगों को अपने विचार बताता है" – "परमेश्वर जो पवित्रीकरण करता है" – "एक सामर्थ"

   त. स्थिर व बचाने वाला : "इस्राएल की महिमा" – "परमेश्वर मेरी चट्टान" – "आशा का परमेश्वर" – "शान्ति और प्रेम का परमेश्वर" – "आत्माओं का परमेश्वर" – "परमेश्वर जो देखता है" – "अनाथों का सहायक" – "जो तसल्ली देता है" – "तुम्हारे बीच में पवित्र" – "प्रभु मेरा झण्डा" – "प्रभु मेरी चट्टान" – "चंगाई देने वाला परमेश्वर" – "मेरा आश्वासन" – "मेरी सहायता" – "मेरी आशा" – "मेरा सहायक" – "हमारा छुपने का स्थान" – "चट्टान जिसमें मैं शरण ले सकता हूं" – "मेरी सामर्थ की चट्टान" – "मेरे उद्धार की चट्टान" – "मेरे उद्धार की सामर्थ" – "मेरी आत्मा को संभालने वाला"

भाग 4

परमेश्वर पुत्र (ख्रीस्टोलोजी)

अध्याय 5, भाग 4

1. मनुष्य बनने से पहले वह अस्तित्व में था
2. मसीह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है
3. उसने कोई पाप नहीं किया
4. मसीह परमेश्वर है (9:6) जो कुंवारी से पैदा हुआ (7:14), यिशै की ठूंठ से (11:1)
5. क. हमारे लिए श्रापित हुआ
   ख. हमें छुड़ाया (पापों का दाम चुकाया)
   ग. परमेश्वर से मेल कराया
   घ. पिता की धार्मिकता व न्याय का अनुलेय किया
6. क. वह वाकई मरा था, वह बेहोशी की अवस्था में नहीं था। उसे कब्र में रखा गया, और कब्र पर पहरेदार नियुक्त हुए
   ख. उसके शरीर पर कफन लपेटा गया
   ग. मसीह के जी उठने के बहुत से गवाह थे
   घ. मसीह का उठा लिया जाना बाइबल का मुख्य उदाहरण है
7. वह पिता के पास दाहिने हाथ में बैठा है
8. क. मध्यस्त के समान कार्य करता है
   ख. वकील के समान कार्य करता है
   ग. बिचवई के समान कार्य करता है
   घ. उच्च याजक है
9. अगुवा
10. भला (यूहन्ना 10:11), महान (इब्रानियों 13:20) और मुख्य (1 पतरस 5:4)
11. क. अस्तित्व से पहले – "अल्फा और ओमेगा" – "हमारे विश्वास का लेखक और सिद्ध" – "उद्धार का लेखक" – "आदि और अन्त" – "आशीषित और सर्वश्रेष्ठ" – "अनन्त पिता" – "अनन्त जीवन" – "आदि और अन्त" – "सारी सृष्टि में पहलौठा" – "आपका सृष्टिकर्ता"।
    ख. परमेश्वर – मनुष्य संयोजक : "परमेश्वर की सृष्टि का आरम्भ" – "प्रभु की शाखा" – "परमेश्वर का मसीह" – "उसमें स्वभाव का प्रतिनिधित्व" – "अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप" – "इम्मानुएल" – "स्वर्ग से मनुष्य" – "सामर्थी परमेश्वर" – "पिता के साथ एक" – "हमारा उद्धारकर्ता प्रभु" – "उसकी महिमा की चमक" – "जीवते परमेश्वर का पुत्र" – "सर्वोच्च परमेश्वर का पुत्र"
    ग. उसकी सिद्धता : "आमीन" – "धर्मी और पवित्र" – "परमेश्वर का पवित्रजन" – "अनिर्वचनीय पुरुस्कार" – "महिमा का परमेश्वर" – "स्वामी" – "हमारा महिमायुक्त परमेश्वर" – "धर्मी न्यायी" – "धर्मी" – "परमेश्वर का पुत्र" – "सत्य रोटी" – "सत्य ज्योति" – "परमेश्वर का वचन"
    घ. उसका जन्म और मृत्यु : "जीवन की रोटी" – "कोने का पत्थर" – "विश्वासयोग्य और सच्चा" – "इस्राएल की महिमा" – "एकलौता पुत्र" – "पवित्र सेवक" – "नासरत का यीशु" – "अन्तिम आदम" – "जीवंत परमेश्वर की ओर से आया मनुष्य" – "तकलीफों का मनुष्य" – "पिता का एकलौता पुत्र" – "दाऊद की जड़" – "सही समय की गवाही"
    ङ. उसकी मृत्यु : "सुगन्धित सुगन्ध" – – "जिसमें उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों से छुटकारा दिया" – "उद्धार का सींग" – "परमेश्वर का मेमना" – "हमारा फसह" – "सबकी फिरौती"
    च. उसका जी उठना : "विश्वासयोग्य गवाह" – "मृतकों में पहिलौठा" – "जो सोए हुए है उनमें पहिलौठा फल" – "पुनरुत्थान और जीवन"
    छ. उसका उठा लिया जाना : "वकील" – "सारी पृथ्वी का परमेश्वर" – "परमेश्वर" – "अच्छा चरवाहा" – "महान सर्वोच्च याजक" – "सारी चीज़ों का वारिस"
    ज. उसकी सेवकाई : "चुना हुआ" – "प्रेरितों" – "परमेश्वर की रोटी" – "दूल्हा" – "भोर का तारा" – "मुख्य चरवाहा" – "मसीह यीशु मेरा प्रभु" – "मसीह यीशु हमारी आशा" – "घर का मुखिया" – "इस्राएल की सांत्वना" – "द्वार" – "अनन्त चट्टान" – "चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र" – "महान ज्योति" – "अच्छा चरवाहा" – "अच्छी

वाचा की गारन्टी" – "हमारी आत्मा का अभिभावक" – "सिर" – "जो अन्य जाति पर राज्य करता है" – "जो पवित्र करता है" – "जो हृदय और मन को जांचता है" – "शरीर का सिर है" – "कलीसिया का सिर है" – "सर्वोच्च अधिकार है" – "इस्राएल की आशा" – "जीवतों और मृतकों का न्यायी" – "राजाओं का राजा" – "राज्यों का राजा" – "जीवन" – "जीवनदायक आत्मा" – "जीवन की ज्योति" – "मनुष्यों की ज्योति" – "संसार की ज्योति" – "जीवता पत्थर" – "प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह" – "प्रभुओं का प्रभु" – "शान्ति का प्रभु" – "फसह का प्रभु" – "सब्त का प्रभु" – "धार्मिकता का प्रभु" – "नई वाचा का मध्यस्थ" – "दयापूर्ण और विश्वासयोग्य महायाजक" – "वाचा का संदेशवाहक" – "मसीहा" – "हमारी शान्ति" – "हमारा उद्धारकर्ता" – "चंगाई देने वाला" – "राजकुमार और उद्धारकर्ता" – "जीवन का राजकुमार" – "शान्ति का राजकुमार" – "राजकुमारों का राजकुमार" – "नबी" – "हमारे पापों आ अनुमूल" – "शुद्ध" – "पृथ्वी के राजा का शासक" – "संसार का उद्धारकर्ता" – "चरवाहा" – "हमारी आत्माओं का चरवाहा" – "लोगों का संकेत" – "अनन्त उद्धार का स्रोत" – "समय की स्थिरता" – "पत्थर" – "राजमिस्त्रियों द्वारा त्यागा पत्थर" – "शिक्षक" – "मार्ग" – "उद्धार का धन" – "बुद्धि" – "जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से बुद्धि बन गया" – "लोगों के लिए गवाही" – "अद्‌भुत परामर्शदाता" – "वचन" – "जीवन का वचन" – "आपका पति" – "आपका छुड़ाने वाला" – "आपका उद्धार"।

भाग 5

पवित्र आत्मा (न्यूमैटोलोजी)

अध्याय 5, भाग 5

1. समझ, अहसास और इच्छा
   - क. उसके पास समझ है
   - ख. उसके पास अहसास है
   - ग. उसके पास इच्छा है
2. क. मनुष्य जाति की उत्पत्ति में उसकी भूमिका थी
   - ख. मनुष्य जाति के प्रगटीकरण में उसकी भूमिका थी
   - ग. हमारी समझ में उसकी भूमिका है
   - घ. धर्मशास्त्र की प्रेरणा में उसकी भूमिका है
   - ङ. चमत्कार में उसकी भूमिका है
   - च. प्रभु यीशु मसीह के जन्म में उसकी भूमिका है
   - छ. पाप के संसार को दोषी ठहरता है
   - ज. जब व्यक्ति बनाया जाता है तो दोबारा जन्म लेता है
   - झ. वह विश्वासी का बपतिस्मा देता है
   - ञ. वह हम पर छाप लगाता है
   - ट. वह विश्वासी में निवास करता है
   - ठ. वह विश्वासी को भर देगा
   - ड. वह प्रार्थना को महत्वपूर्ण है
   - ढ. वह हमें आश्वासन देता है
   - ण. वह हमारे लिए मध्यस्थता का कार्य करता है
   - त. वह हमें उपहार देता है
   - ध. वह हमें शिक्षा देता है
   - न. वह हमारे द्वारा फल उपजाता है
   - प. वह हमारे द्वारा आनन्द उपजाता है
   - फ. वह विश्वासी को प्रेम और आशा देता है
   - ब. वह धार्मिकता शान्ति व आनन्द देता है
   - भ. आशा पाने के लिए सामर्थ देता है
   - म. वह सेवकाई का पवित्रीकरण करता है
   - य. वह विश्वासियों के बीच संगति उत्पन्न करता है
3. क. उसकी भूमिका : "एक और सहायक" – "उपहार" – "सहायक" – "शपथ" – "वायदा" – "गोद लेने की आत्मा" – "मसीह की आत्मा" – "परामर्श और सामर्थ की आत्मा" – "विश्वास की आत्मा" – "महिमा की आत्मा" –

"उसके पुत्र की आत्मा" – "न्याय की आत्मा" – "बुद्धि और परमेश्वर के डर की आत्मा" – "जीवन की आत्मा" – "प्रभु की आत्मा" – "सत्य की आत्मा" – "समझबूझ की आत्मा" – "बुद्धि और प्रगतिकरण की आत्मा" – "सर्वशक्तिमान की आवाज" – "प्रभु की वाणी"।

ख. उसका व्यक्तिगत : "सर्वशक्तिमान की सांस" – "न्याय की आत्मा" – "महिमा की आत्मा" – "परमेश्वर की आत्मा" – "पवित्र आत्मा" – "जीवते प्रभु की आत्मा" – "प्रभु परमेश्वर की आत्मा"

अध्याय 6

भाग 1

सृष्टि (कास्मोलोजी)

अध्याय 6, भाग 1

1. परमेश्वर
2. उसने बोला और कुछ नहीं से सृष्टि की
3. अन्धकार और ज्योति – पद 3–5
   फैलाव – पद 6–8
   समुद्र और सूखी भूमि – पद 9–10
   फूल–पत्ते – पद 11–13
   सूर्य, चांद, सितारे – पद 14–18
   समुद्र के जीव और चिड़िया – पद 19–23
   जानवर और मनुष्य – पद 24–31
4. नया स्वर्ग और पृथ्वी

भाग 2

स्वर्गदूत (एन्जोलोजी)

अध्याय 6, भाग 2

1. क. बुद्धि में निपुण
   ख. महसूस करने वाले
   ग. चुनाव करने वाले
2. हाँ
3. निम्न
4. प्रभु
5. नहीं
6. हाँ
7. मीकाएल
8. करूबीम
9. विश्वासी की सेवा के लिए
10. स्वर्गदूतों का अगुवा जिसने परमेश्वर का विरोध किया
11. आग की झील
12. स्वयं – इच्छा जिसने परमेश्वर का विरोध किया
13. एक जिसने विरोध किया
14. निन्दक
15. वह चालाक और धोखा देने वाला है
16. बहाना बनाता है
17. अविश्वासियों के दिमाग को अन्धा कर देगा
18. अशुद्ध व दुष्टात्माएं
19. संदेश यीशु मसीह को बारे में
20. शैतान की सेना के विरुद्ध

भाग 3

मनुष्य (एन्थ्रोपोलोजी)

अध्याय 6, भाग 3

1. परमेश्वर का
2. जीवित आत्मा
3. मनुष्य का अकेले रहना अच्छा नहीं
4. कारण
5. "भले व बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल" को ना खाना
6. मृत्यु
7. वे परमेश्वर से छिप गए (3:8,10)। वे अपने नंगेपन से शर्माते थे (3:10)। उन्होंने एक दूसरे पर दोष लगाया (3:12–13)। शत्रुता आ गई (3:14–15)। स्त्री को जन्म देने के समय पीड़ा होगी (3:16)। कठोर परिश्रम के बाद ही मनुष्य को खाने को मिलेगा (3:17–19)।
8. क. शरीर और आत्मा
   ख. आत्मा (मनुष्य)
   ग. हृदय
   घ. विवेक
   ङ. दिमाग
   च. शरीर
   छ. आदम से पाप का व्यवहार
   ज. इच्छा

भाग 4

स्वर्गदूतों का संघर्ष

अध्याय 6, भाग 4

1. स्वयं इच्छा
2. वह परमेश्वर के सिंहासन का संरक्षक था
3. शैतान व उसके दूतों के लिए
4. यीशु मसीह के 1000 वर्ष के शासन के बाद
5. उसका न्याय किया गया
6. उसे सजा मिली
7. यह सब आदम और हव्वा से पहले घटा
8. शैतान के आग्रह के साथ हमें कुछ करना है
9. परमेश्वर के सारे हथियार पहिन लो

अध्याय 7

भाग 1

प्रगटिकरण : बाइबल (बिबलियोजी)

अध्याय 7, भाग 1

1. उसके अदृश्य गुण
2. किसी को जानना
3. परमेश्वर का मनुष्य के लिए उद्बोधन था कि स्वयं को उन पर प्रगट करना
4. हमारा अधिकार

5. हमारा मार्गदर्शक
6. बाइबल या धर्मशास्त्र का सिद्धान्त
7. सत्य
8. यहां कोई विशिष्ट उत्तर नहीं दिया गया

भाग 2

समस्या : पाप (हारमारटियोलोजी)

अध्याय 7, भाग 2

1. परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन
2. प्रत्येक मनुष्य के लिए निन्दा का कारण बना, क्योंकि उसका पाप उसकी सन्तानों पर पड़ा
3. हमारे शरीर में
4. शरीर के कार्य
5. मानसिक व्यवहार के पाप
6. जीभ के पाप
7. प्रत्यक्ष पाप
8. क. अनैतिक – मानसिक और प्रत्यक्ष
   ख. अशुद्ध – प्रत्यक्ष
   ग. कामुकता – मानसिक और प्रत्यक्ष
   घ. मूर्तिपूजा – मानसिक और प्रत्यक्ष
   ङ. जादू टोना – मानसिक और प्रत्यक्ष
   च. शत्रुता – मानसिक
   छ. कलह – मौखिक
   ज. जलन – मानिसक
   झ. गुस्से का विस्फोट – मानसिक और मौखिक
   ञ. अलगाव – मानसिक
   त. मतभेद – मानसिक, मौखिक, प्रत्यक्ष
   थ. गुट – मानसिक
   द. घृणा – मानसिक
   ध. पियक्कड़पन – प्रत्यक्ष
   न. पावगोष्ठी – प्रत्यक्ष

भाग 3

समाधान : उद्धार (सोटेरियोलेजी)

अध्याय 7, भाग 3

1. यीशु मसीह में भरोसा
2. वह परमेश्वर है जो मनुष्य बना, हमारे पापों के लिए मरा, गाड़ा गया और तीसरे दिन जी उठा
3. बचाने के लिए और सत्य का पूरा ज्ञान, पश्चाताप करने और दण्ड भोगने के लिए नहीं
4. विश्वास के द्वारा महिमा (यीशु मसीह में)
5. विश्वास भरोसा है, विश्वास का उद्देश्य उसका गुण है
6. मन का बदलना जिसे पश्चाताप कहते हैं
7. यीशु मसीह में विश्वास हमें उचित ठहराता है, ना कि व्यवस्था के कार्य
8. पवित्र आत्मा
9. हमारे पापों का दाम चुका दिया गया है, इसलिए हम छुड़ाए गये हैं
10. पवित्र आत्मा के सन्देश का तिरस्कार कि यीशु ही मसीह है। चूंकि मनुष्य को मरने से पहले पश्चाताप करने की सुविधा है, फिर भी पाप उन्हें बिना कबूल किये मरने देता है कि यीशु ही उद्धारकर्ता है।

भाग 4

सुरक्षा : परमेश्वर का वायदा

अध्याय 7, भाग 4

1. हाँ
2. उसका पूर्वज्ञान
3. कोई भी उससे या उसके पिता से नहीं ले सकता
4. नहीं
5. नहीं
6. हाँ, जब हम उसके शुत्र थे तभी उसने हमें बचाया जो उसके प्रेम का गहरा प्रदर्शन है
7. नहीं
8. दोषी ठहराना
9. कुछ नहीं
10. नहीं
11. लेपालक पुत्र

भाग 5

भविष्य : भविष्वाणी (एस्कातोलोजी)

अध्याय 7, भाग 5

1. याजक पद और व्यवस्था बदलना
2. हवा में
3. पलक झपकते ही
4. अपने पिता के घर में मसीह के साथ
5. दुःख, तकलीफ
6. वह वापिस आएगा और जैतून के पहाड़ पर पैर रखेगा
7. उठा लिये जाने के समय, मसीह पृथ्वी पर पैर नहीं रखेगा पर बादलों पर आयेगा। दूसरे आगमन पर, वह पृथ्वी पर पैर रखेगा
8. दुष्ट और झूठा नबी
9. शैतान
10. 1,000 वर्ष
11. आग की झील में
12. आग की झील में
13. परमेश्वर नए स्वर्ग व पृथ्वी की सृष्टि करेगा

अध्याय 8

भाग 1

व्यक्तिगत मसीही जीवन (होडोलौजी)

अध्याय 8, भाग 1

1. क. पहला चरण – उद्धार
   ख. दूसरा चरण – परिपक्वता की प्रगति
   ग. तीसरा चरण – अनन्तता
2. विश्वास
3. आत्मिकता
   क. विश्वासी के अन्दर
   ख. विश्वास
   ग. पवित्र आत्मा "शान्त" या "शोक" मना सकती है
4. हाँ, विश्वासी को पाप मान लेना चाहिए
5. आत्मिक पुरुस्कार
   क. प्रेम
   ख. वे बन्द हो जायेंगे
   ग. "एक दूसरे से प्रेम करना" अविश्वासी संसार में मसीही को प्रस्तुत करता है। एक दूसरे की सेवा के लिए आत्मिक दावों की आवश्यकता है। अस्थाई दान अविश्वासी संसार में मसीह को प्रस्तुत करना था जबकि कलीसिया को एक दूसरे की सेवा करना सिखाया गया
6. धार्मिकता
7. क. पापों का अंगीकार
   ख. प्रशंसा
   ग. धन्यवादिता
   घ. सन्तों से आवेदन करना जो मध्यस्थता है
   ङ. स्वयं के लिए प्रार्थना करना जो आवेदन है
8. बढ़ें, यीशु मसीह की महिमा और ज्ञान में
9. परमेश्वर की प्रेम करें और एक दूसरे को प्रेम करें
10. अन्यायपूर्ण सताव
11. शिष्यों के द्वारा
12. हाँ
13. आत्मा में और सत्य में
14. जाओ और प्रत्येक राष्ट्र के लोगों को शिष्य बनाओ, उन्हें बपतिस्मा दो और सिखाओ

भाग 2
सामूहिक मसीही जीवन (एकलेस्योलौजी)

अध्याय 8, भाग 2

1. दूसरों को सिखाना कि वे दूसरों को सिखाएं
2. यीशु मसीह के वचन के स्तर द्वारा
3. सिखाना
4. परमेश्वर और एक दूसरे के साथ संगति करना
5. क. एक दूसरे से प्रेम करना
   ख. समर्पित रहें और एक दूसरे का आदर करें
   ग. एक दूसरे को स्वीकारें
   घ. एक दूसरे की सेवा करें
   ङ. स्वयं के प्रति दूसरों पर ध्यान रखना महत्वपूर्ण है
   च. एक दूसरे के भार को उठा लेना
   छ. एक दूसरे को उत्साहित करें
   ज. एक दूसरे को क्षमा करें
   झ. एक दूसरे पर दया करें
   ण. एक दूसरे का अतिथि सत्कार करें
   ट. एक दूसरे को बढ़ाएं
6. मनुष्य जाति के लिए यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाना
7. एक दूसरे की सेवा करना
8. विश्वास में एकता
9. वे एक हों जैसे वह और पिता एक हैं

अध्याय 9
भाग 1–7

इन भागों के उत्तरों में काफी बदलाव है इसलिए हमने इसे नहीं छापा है। आप इसके उत्तर स्वयं खोज सकते हैं।

ग्रन्थ सूची (Bibliography)

यह ग्रन्थ सूची सारे शीर्षक को जोड़ने का प्रयास नहीं करती, जो हमारे पढ़ाई के विषय के योग्य है। जैसे यह अपने में ही एक पुस्तक है। यह प्रमुख अधिकारियों को लेखन सम्बन्धी उनके कार्यों को प्रगट करती है।

आर्चर, ग्लिसन एल. जूनियर, *पुराने नियम के प्रस्तावना का निरीक्षण,* मूडी प्रेस, 1964.

आर्चर, ग्लिसन एल. जूनियर, *पुराने नियम का निरीक्षण,* मूडी प्रेस, शिकागो, 1978।

चाफर, ल्यूईस स्पैरी, *क्रमवार धर्मज्ञान, वाल्यूम I-VIII,* डल्लास सेमेनरी प्रेस, 1947।

ड्यूनैट, वाल्टर एम, *नये नियम की निरीक्षण,* प्रचारकीय शिक्षक प्रशिक्षण समूह, व्हीटन 1967।

गैब्लीन, फ्रैंक ई. सामान्य सम्पादक, *स्पष्टीकृत बाइबल टीका नया नियम,* जॉन्डरवैन, ग्रेन्ड रैफिड्स, 1976–1992।

गिल्जर, नॉरमन एल. *पुराने नियम का एक प्रसिद्ध निरिक्षण* बेकल बुक हाऊस, ग्रेन्ड रेफिड 1977।

हेरिस, आर. लैयर्ड, ग्लीसन, एल. आर्चर, जूनियर और ब्रूस के वॉल्टके, *पुराने नियम के धर्म ग्रन्थ की पुस्तक,* मूडी प्रेस, शिकागो, 1980।

हैरीसन, रोलेन्ड कैनीथ, *पुराने नियम की प्रस्तावना,* विलियम बी. एरडमॉस पब्लिशिंग कम्पनी 1969।

हारटिल, जे. एडविन *बाइबल हरमैन्यूटिक्स के सिद्धान्त* जोन्डरवान पब्लिशिंग हाऊस 1947।

हाईबर्ड, डी. एडमण्ड, *नये नियम की प्रस्तावना,* वाल्यूम I-III मूडी प्रेस, 1975।

होइनर, हैराल्ड डब्ल्यू.। *यीशु मसीह के काल निर्णय के आयाम,* जोन्डरवान पब्लिशिंग हाऊस 1977।

जैनसन, इरविंग एल. *इतिहास के साथ दूसरा राजा, स्वयं अध्ययन मार्गदर्शिका,* मूडी प्रेम।

मैकहेन, जे. ग्रैशेम, *नया नियम, साहित्य और इतिहास की प्रस्तावना,* डब्ल्यू. जॉन कुक द्वारा सम्पादन, ट्रूथ ट्रस्ट का बैनर, एडिनबर्ग 1976।

रैम बर्नार्ड, *बाइबल का प्रोटेस्टेन्ड अनुवाद,* बेकर बुक हाऊस, 1970।

रायर, चार्ल्स सी. *प्राथमिक धर्मज्ञान,* विक्टर बुक्स 1986।

टैन्नी मैरिल सी. *नये नियम का निरीक्षण,* विलियम बी. एरडमान पब्लिशिंग कम्पनी, 1961।

टैन्नी मैरिल सी. *न्यू टैस्टामेन्ट टाइम्स,* विलियम बी. इरडमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1965।

टैन्नी, मैरिल सी. जनरल एडिटर, जोन्डरवान *विक्टोरियल एनसाइक्लोपिडीया ऑफ द बाइबल,* वोल्यूम I-V जॉन्डरवान पब्लिशिंग हाऊग 1978।

थायर, जोसफ हैनरी, थॉयर्स *ग्रीक अंग्रेजी लैक्सिनकन ऑफ द न्यू टैस्टमेन्ट,* एसोसियेटेड पब्लिशर्स एण्ड ऑर्थर्स।

थायले, एडविन आर. *इब्री राजाओं का काल निर्णय,* जोन्डरवान पब्लिशिंग हाऊस, 1977।

थिजन, हेनरी क्लेरेंस, *नया नियम की प्रस्तावना,* इरडमान्स ग्रन्ड रेफिड 1943।

अंगर, मैरिल एफ. इन्ट्रोडक्ट्री *गाइड टू द ओल्ड टैस्टमेन्ट,* जान्डरवान पब्लिशिंग हाऊस 1951।

बाइन, डब्ल्यू. ई. मैरिल, एफ. अंगर और विलियम व्हाइट, एडिटर, *बेबलिकल वर्ड्स की एक्सपोजिटरी डिक्शनरी,* थॉमस नेल्सन, 1985।

वॉलवुर्ड जॉन एफ. रॉय बी. बुक, एडिटर, *बाइबल नॉलेज कॉमेन्ट्री,* विक्टर बुक्स, व्हीटन 1983, 1985 इलेक्ट्रानिक मीडिया।

विल्किनसन, ब्रुस और कैनेथ बोआ, *टॉक थ्रू द ओल्ड टेस्टमेन्ट,* वाल्यूम I थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स।

End Notes

[1] Adapted from J. Edwin Hartill, *Principles of Biblical Hermeneutics,* p. 9.

[2] Bruce Wilkinson and Kenneth Boa, *Talk Thru the Old Testament*, Vol. I, Thomas Nelson Publishers, 1983, p. 39.

[3] Some of the ideas for this chart were drawn from *A Popular Survey of the Old Testament*, by Norman L. Geisler, Baker Book House, Grand Rapids, 1977, p. 83 and *Talk Thru The Bible* by Bruce Wilkinson and Kenneth Boa, Thomas Nelson Publishers, Nashville, 1983, p. 47-49.

[4] Wilkinson and Boa, p. 59.

[5] Notes from the *NIV Study Bible*, Zondervan, 1985, electronic version.

[6] Wilkinson and Boa, p. 72.

[7] Charles Caldwell Ryrie, *Ryrie Study Bible, Expanded Edition*, Moody, electronic media.

[8] John F. Walvoord, Roy B. Zuck, Editors, *The Bible Knowledge Commentary*, Victor Books, Wheaton, 1983,1985, electronic media.

[9] Wilkinson and Boa, p. 84.

[10] Irving L. Jensen, *2 Kings with Chronicles, A Self-Study Guide*, Moody, p. 20.

[11] Charles C. Ryrie, *Ryrie Study Bible, Expanded Edition*, Moody, Chicago, electronic media.

[12] Ibid.

[13] Wilkinson and Boa, p. 100.

[14] Ibid., p. 101.

[15] Ibid., p. 110.

[16] Ibid., p. 117.

[17] Walvoord/Zuck, electronic media.

[18] Wilkinson and Boa, p. 125.

[19] Walvoord/Zuck, electronic media.

[20] Norman L. Geisler, *A Popular survey of the Old Testament*, Baker, Grand Rapids, 1977, p. 180.

[21] Ibid., p. 181.

[22] Ryrie, p. 777.

[23] Archer, Electronic Edition.

[24] Ryrie, p. 831.

[25] Archer, Electronic Media.

[26] Adapted from Archer's *Survey of the Old Testament*, Electronic Media.

[27] Charles L. Feinberg, *Class Notes*, Dallas Theological Seminary, p. 3, 1960's.

[28] Geisler, p. 195-196.

[29] Wilkinson and Boa, p. 164.

[30] Geisler, p. 214.

[31] Ryrie, p. 1032.

[32] R. Laird Harris, L. Archer, Jr. Bruce K. Waltke, *Theological Word Book of the Old Testament*, Vol. 2, p. 544.

[33] Carl Laney, *Bibliotheca Sacra*, Oct.-Dec. 1981, p. 315-316.

[34] Charles C. Ryrie, *The Ryrie Study Bible, Expanded Edition,* Moody Press, 1995, p. 1151.

[35] Norman L. Geisler, *A Popular Survey of the Old Testament*, Baker, Grand Rapids, 1977, p. 227-228.

[36] Ibid., p. 228.

[37] Archer, Electronic Media.

[38] Wilkinson and Boa, p. 200.

[39] Adapted from Wilkinson and Boa, p. 209.

[40] Hebrew class at Dallas Theological Seminary taught by Dr. Robert Chisholm, Spring 1993.

[41] John F. Walvoord, Roy B. Zuck, Editors, *The Bible Knowledge Commentary*, Victor Books, Wheaton, 1983,1985, electronic media.

[42] Wilkinson and Boa, p. 252.

[43] Ibid., p. 263.

[44] Gleason Archer, Electronic Media.

[45] Ibid.

[46] Ibid.

[47] Wilkinson and Boa, p. 296.

[48] Charles C. Ryrie, *Ryrie Study Bible, Expanded Edition*, Moody, p. 1498.

[49] J. Greshem Machen, *The New Testament, An Introduction to Its Literature and History*, edited by W. John Cook, The Banner of Truth Trust, Edinburgh, 1976, p. 16.

[50] Merrill C. Tenney, *New Testament Times*, Eerdmans, Grand Rapids, 1965, p. 107-108.

[51] Charles C. Ryrie, *Ryrie Study Bible, Expanded Edition*, by, Moody, p. 1500.

[52] Ibid., p. 1498.

[53] Ibid., p. 1499.

[54] Bruce Wilkinson and Kenneth Boa, *Talk Thru The Bible*, Thomas Nelson, Nashville, 1983, p. 305.

[55] Charles C. Ryrie, *Ryrie Study Bible, Expanded Edition*, Moody, p. 1509.

[56] John F. Walvoord, Roy B. Zuck, editors, *The Bible Knowledge Commentary*, Victor Books, Wheaton, 1983,1985, electronic media.

[57] Walter M. Dunnett, *New Testament Survey*, Evangelical Teacher Training Association, Wheaton, 1967, p. 17.

[58] Ryrie, p. 1574.

[59] Wilkinson/Boa, p. 321.

[60] Ibid., p. 327.

[61] Ryrie, p. 1614.

[62] Ibid., p. 1614.

[63] Wilkinson/Boa, p. 328.

[64] Ibid., p. 328.

[65] Walvoord/Zuck, electronic media.

[66] Ibid.

[67] Wilkinson/Boa, p. 338.

[68] Walvoord/Zuck, electronic media.

[69] Ibid.

[70] Wilkinson/Boa, p. 353.

[71] Walter M. Dunnett, *New Testament Survey*, Evangelical Teacher Training Association, Wheaton, 1967, p. 40.

[72] J. Sidlow Baxter, *Explore the Book*, p. 63-64.

[73] Ryrie, p. 1786.

[74] Wilkinson/Boa, p. 374.

[75] Henry Clarence Thiessen, *Introduction to the New Testament*, Eerdmans, Grand Rapids, 1943, pp. 202-03.

[76] Gaebelein, electronic media.

[77] Walvoord/Zuck, electronic media.

[78] Frank E. Gaebelein, General Editor, *The Expositor's Bible Commentary, New Testament*, Zondervan, Grand Rapids, 1976-1992, electronic media.

[79] Ryrie, p. 1886-1887.

[80] A.T. Robertson, *Paul and the Intellectuals*, Revelation. and ed. W. C. Strickland (Nashville: Broadman, 1959), p. 12.

[81] Wilkinson/Boa, p. 413.

[82] Dr. S. Lewis Johnson in *Bibliotheca Sacra*, *Studies in the Epistle to the Colossians*, beginning Vol. 118, # 471.

[83] Walvoord/Zuck, electronic media.

[84] Ryrie, p. 1939.

[85] Wilkinson/Boa, p. 444.

[86] Thiessen, p. 271.

[87] Wilkinson/Boa, p. 450.

[88] Walvoord/Zuck, electronic media.

[89] Ryrie, p. 1966.

[90] Wilkinson/Boa, p. 465.

[91] Ryrie, p. 1966.

[92] Ron Blue, *The Bible Knowledge Commentary*.

[93] The *NET Bible*, The Biblical Studies Press.

[94] Walvoord/Zuck, electronic media.

[95] *NIV Study Bible*, electronic Library.

[96] *NET Bible*, electronic media.

[97] Ryrie, p. 2005.

[98] Adapted from R.T. Ketcham, D.D.; found in J. Edwin Hartill's *Principles of Biblical Hermeneutics.*

[99] Charles C. Ryrie, *Basic Theology*, Victor Books, 1986, p. 295.

[100] Ibid., p. 343.

[101] W.E. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Biblical Words*, Thomas Nelson Publishers 1985.

[102] Harris, Archer, Waltke, *Theological Wordbook of the Old Testament*, 1980, Moody Bible Institute, p. 127.

[103] W.E. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Biblical Words*, 1985, Thomas Nelson Publishers, p. 51.

[104] Merrill C. Tenney, General Editor, *Zondervan Pictorial Encyclopedia of the Bible*, Zondervan Publishing House, Grand Rapids, Michigan, 1978, Vol. I p. 505.

[105] W.E. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Biblical Words,* Thomas Nelson Publishers, 1985, p. 685.

[106] Ibid.